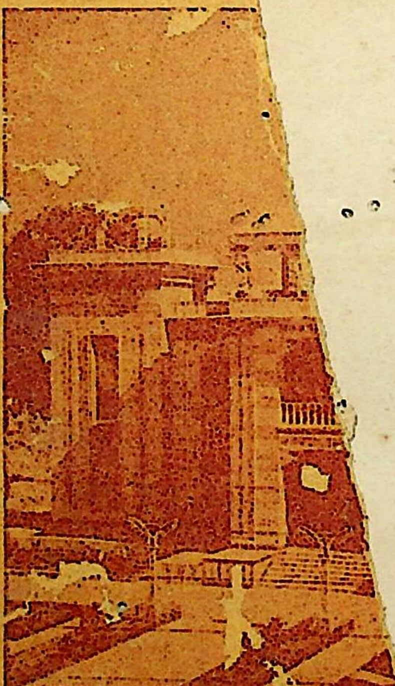
राम



श्रीसत्यनारायण

श्रीठाकुरदास सुरेका दा

श्रीरतनला

द्वारा

सादर सम

रामचरितमानस

प्रणेता

तुलसीदास

सर्वभारतीय काशिराजन्यास

संपादक

विश्वनाथप्रसाद मिश्र

काशिराज संस्करण

प्रकाशक
रमेशचंद्र देव
मंत्री, सर्वभारतीय काशिराज न्यास,
रामनगर दुर्ग,
वाराणसी।

प्रथम संस्करण
२१०००
कागद की जिल्द ६.५०
कपड़े की जिल्द ८.००
राजसंस्करण १५.००

मुद्रक
पृथ्वीनाथ भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस,
वाराणसी।

प्रकाशकीय

सर्वभारतीय काशिराज न्यास के उद्देश्यों में एक यह भी है कि प्राचीन महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का आधुनिक प्रणाली से संपादन कराकर प्रकाशन किया जाय। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए न्यास ने पुराणों के संपादन-प्रकाशन का कार्य आरंभ किया है। संप्रति मत्स्यपुराण का संपादन डा० वी० राघवन् तथा वामनपुराण का संपादन डा० वासुदेवशरण अग्रवाल कर रहे हैं। पुराणवाङ्मय के संबंध में ज्ञातव्य अनेक महत्त्वशाली विषयों से पाठकों को अवगत कराने तथा न्यास की गतिविधि सूचित करने के लिए न्यास ने 'पुराणम्' नाम की अर्द्धवार्षिक पत्रिका का प्रकाशन करना भी आरंभ किया है। अब तक इसके सात अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इसका छठा अंक व्यास-पूर्णिमा-विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है।

संवत् २०१४ में न्यास को उसके अध्यक्ष तत्रभवान् महाराज काशीनरेश डा० श्रीविभूतिनारायणसिंह ने 'रामलीला शती समारोह निधि' सहित उसके तत्त्वावधान में होनेवाले रामचरितमानस के समीक्षात्मक काशिराज संस्करण का भी कार्य सौंप दिया।

भारतीय संस्कृति की जैसी अभिव्यक्ति प्राचीन काल में व्यासप्रणीत पुराणों में हुई है और जिसके विवेचन-विश्लेषण का महनीय कार्य न्यास के पुराणविभाग द्वारा हो रहा है उसी संस्कृति की वैसी ही अभिव्यक्ति मध्यकाल में तुलसीदासप्रणीत रामचरितमानस में भी हुई है। न्यास में हो रहे पुराणसंबंधी अनुसंधान का पूर्ण संवादी 'नानापुराणनिगमागमसंमत' रामचरितमानस के पाठानुसंधान का कार्य भी है इसलिए न्यास में होनेवाले पाठ-समीक्षासंबंधी कार्यों की प्रस्तावना रामचरितमानस के काशिराज संस्करण के सर्वप्रथम प्रकाशन से की जा रही है।

मानस के 'काशिराज संस्करण' का महत्त्वपूर्ण प्रकाशन करते हुए हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है। काशी राज्य ने अतीत में मानससंबंधी अनेक महनीय कार्य किए हैं और वर्तमान में भी उसके द्वारा तत्संबंधी अभिनंदनीय कार्य हो रहे हैं। महाराजा श्रीचेतसिंह द्वारा प्रदत्त भूमि पर तुलसी-मंदिर (तुलसीघाट, वाराणसी) निर्मित है। महाराज श्री उदितनारायणसिंह ने रामनगर में रामलीला का शुभारंभ किया तथा मानस की विशिष्ट टीका रामायणपरिचर्या-परिशिष्टप्रकाश का प्रशंसनीय कार्य महाराज श्रीईश्वरीप्रसादनारायणसिंह के समय में हुआ और उन्हीं की प्रेरणा से मानस के पाठानुसंधान का कार्य भी काशी राज्य में उपलब्ध विशिष्ट हस्तलिखित प्रतियों तथा अन्यत्र से अत्यंत प्रयासपूर्वक संकलित प्राचीन महत्त्वपूर्ण प्रतियों के आधार पर वर्गप्रणाली से आरंभ किया गया था। पश्चिमी देशों में वर्गप्रणाली की जिस समय उद्भावना भी नहीं हुई थी उस समय काशी राज्य में मानस के पाठानुसंधान का कार्य वर्गपद्धति से किया जा रहा था यह अत्यंत विस्मयकारक है और उक्त महाराज की सूझबूझ का ज्वलंत उदाहरण है। मानस की पाठसमीक्षा का वह महत्कार्य अज्ञात कारणों से केवल आरंभ होकर ही रह गया। महाराज श्रीप्रभुनारायणसिंह के समय में उन्हीं के आदेश से रामायणपरिचर्यापरिशिष्टप्रकाश प्रकाशित किया गया। काशी राज्य के वर्तमान महाराज ने

अपने पूर्वजों का पदानुसरण करते हुए मानस के पाठशोध का कार्य विधिवत् पूर्ण कराने का संकल्प किया। उसी का फल है प्रस्तुत काशिराज संस्करण। महाराज के व्यक्तिगत पुस्तकालय सरस्वतीभंडार (रामनगर दुर्ग) के महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों, मुद्रित संस्करणों, ग्रंथों आदि का यथेप्सित उपयोग करने की सुविधा मिल जाने से कार्य वांछित रूप में सुसंपन्न किया जा सका। सर्वभारतीय काशिराज न्यास के न्यासरक्षकों के हम अत्यंत आभारी हैं जिन्होंने इसके प्रकाशन का निश्चय किया और तत्संबंधी समस्त आयोजन को स्वीकृति प्रदान की।

तुलसी-साहित्य के अद्वितीय मर्मज्ञ आचार्य पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र के हम सबसे अधिक ऋणी हैं जिन्होंने संवत् २०१० से इसके संपादन में अपना अमूल्य समय लगाया और जो पिछले छह मास से अहोरात्र अथक परिश्रम करके इस संस्करण को प्रकाश में ले आए। मानसविभाग के उनके सहायकों को भी धन्यवाद जिन्होंने चूडांत श्रम का योगदान किया और इस कार्य के समय से समापन का प्रयास किया। विभागीय व्यवस्थापक और मिश्रजी के प्रमुख सहायक श्रीरामादास शास्त्री को विशेष धन्यवाद जिन्होंने कार्य को यथावत् सुसंपन्न करके अपने सुयोग्य गुरुवर्य का शिष्यत्व भली भाँति निभाया। काशी विश्वविद्यालय के अधिकारियों विशेषतः कुलपति श्रीनटवरलाल हीरालाल भगवती तथा कुलसचिव श्रीशिवनंदनलाल दर से भी हम उपकृत हैं जिन्होंने मिश्रजी की सेवाएँ उन्हें अध्यापन-कार्य से अवकाश देकर न्यास के लिए सुलभ कर दीं।

कलकत्ते के सुप्रसिद्ध सेठ श्रीरतनलाल सुरेका को भी इस अवसर पर धन्यवाद देना कर्त्तव्य है जिन्होंने 'श्रीठाकुरदास सुरेका दातव्य निधि' द्वारा निर्मित हो रहे श्रीसत्यनारायण मानसमंदिर (दुर्गाकुंड, वाराणसी) में संगमरमर की शिलाओं पर 'काशिराज संस्करण' को उत्कीर्ण कराने का सत्संकल्प किया और उसका श्रीगणेश भी कर दिया है। स्वर्गीय श्रीनागेशजी उपाध्याय ने अपना सं० १७६३ का हस्तलेख ही मानस-संपादन कार्य के निमित्त कृपापूर्वक अर्पित कर दिया। हम उनके अत्यंत कृतज्ञ हैं। पेनसिलवानिया विश्वविद्यालय, अमेरिका एवम् ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन के अधिकारियों से भी हम उपकृत हैं जिनकी कृपा से महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों की वांछित माइक्रोफिल्म यथासमय उपलब्ध हो सकी। इस संस्करण की विशिष्ट छपाई का सारा श्रेय भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी के स्वामी श्रीपृथ्वीनाथ भार्गव को है जिन्होंने वांछित मुद्रण की सारी कठिनाइयों का निराकरण किया तथा यथासमय ग्रंथ प्रकाशित करने में पूरा योग दिया। इसके लिए हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं। अंत में हम उन सभी व्यक्तियों और संस्थाओं के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने महत्त्वशाली हस्तलेख देकर इस कार्य को सुसंपन्न करने में सहायता पहुँचाई। हम उन सभी के आभारी हैं जिन्होंने इसमें किसी प्रकार का योगदान करके हमारा हाथ बँटाया।

१ जनवरी, १९६२
रामनगर दुर्ग, वाराणसी

रमेशचंद्र देव
मंत्री
सर्वभारतीय काशिराज न्यास

आत्मनिवेदन

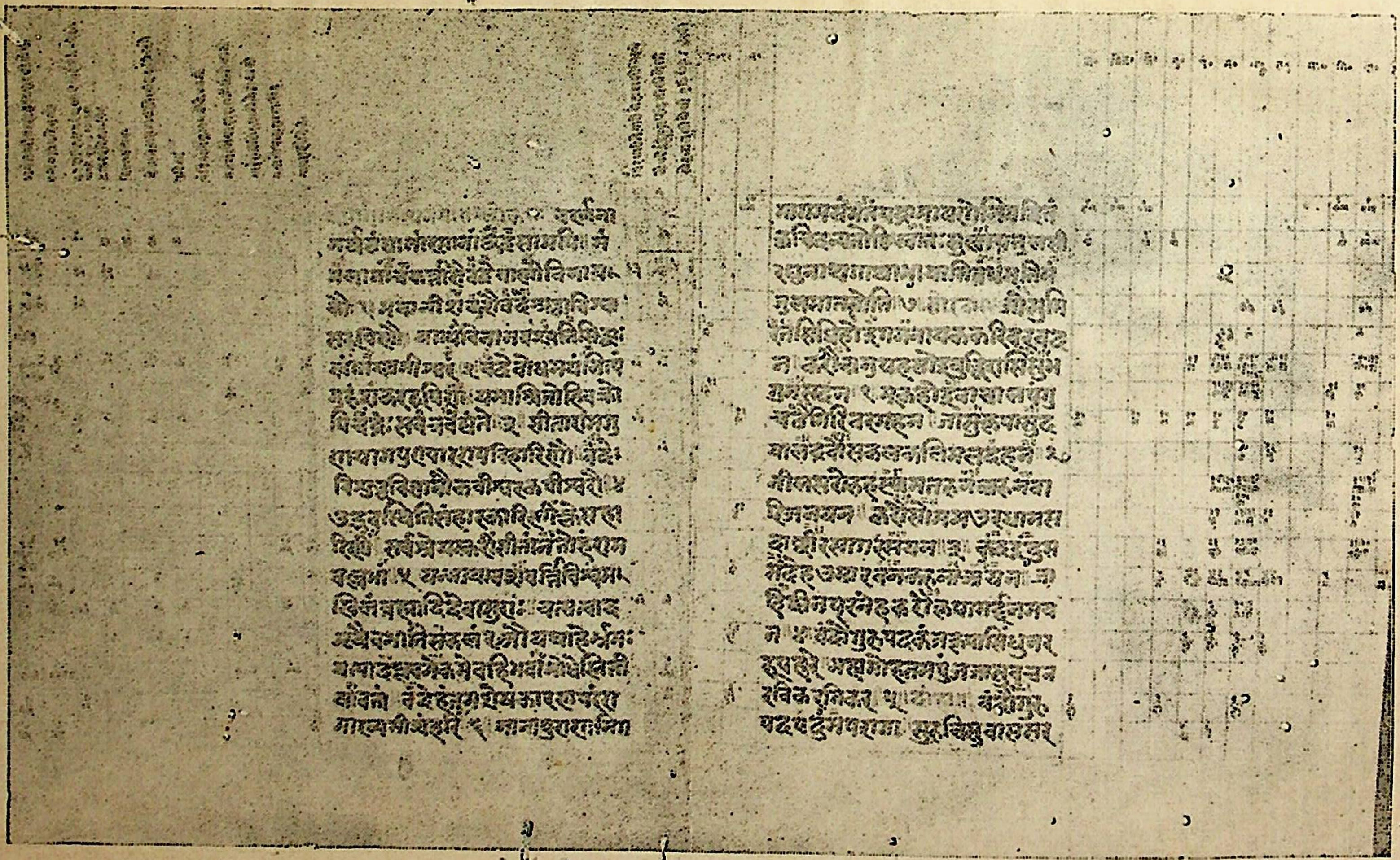
रामचरितमानस के **काशिराज संस्करण** की अपेक्षा क्यों हुई सर्वप्रथम इसी पृच्छा का समाधान विधेय है। तत्रभवान् महाराज काशिराज को संवत् २०१० में जिज्ञासा हुई कि क्या मानस के पाठसंपादन की समस्या सर्वतोभावेन सुलझ गई या अभी उसमें कुछ अवकाश-अंतराल शेष है। जिज्ञासा का हेतु यह था कि काशी राज्य की ओर से बृहत् संभार-पूर्वक रामायणपरिचर्यापरिशिष्टप्रकाश का प्रकाशन महाराज के पूर्वज करा चुके थे और उसकी प्रति अनुपलब्धप्राय थी। महाराज के स्वकीय सरस्वतीभंडार पुस्तकालय में उसकी जो प्रति है वह भी जीर्ण-शीर्ण है और उसके कुछ पत्र त्रुटित हैं। हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति अभिरुचि होने से उसके संवर्धन की उत्कंठा उनके मन में सहज ही उठ खड़ी हुई थी। रामनगर में जो विश्वविख्यात रामलीला होती है उसमें परंपरा से काशिराज नैत्यिक योग्दान करते आए हैं। रामलीलादर्शन के समय स्वयम् महाराज के समक्ष मानस की जो प्रति रहती है वह रामायणपरिचर्यापरिशिष्टप्रकाश है। रामलीला में मानस का पाठ प्रारंभिक रूप में होता है और पाठानंतर लीला, तदंगभूत संवाद आदि होते हैं। लीला में पाठकर्ताओं के अतिरिक्त व्यास भी होते हैं। पाठकर्ताओं के संमुख मानस की जो प्रति रहती है, व्यासों के पास उसकी जो पारंपरिक हस्तलिखित प्रति होती है तथा काशिराज के समक्ष जो उक्त प्रति रहती है सबमें पाठों की एकरूपता न होने से महाराज के मानस में मानस के पाठैक्य का संकल्प जगा और उपर्युक्त जिज्ञासा स्फुरित हुई। हिंदीशिक्षणजन्य संपर्क और मानसमनीषी स्वर्गीय लाला भगवानदीन तथा तुलसीवाङ्मय के आलोचकमूर्धन्य स्वर्गीय पं० रामचंद्र शुक्ल के अंतेवासी के रूप में ख्यात होने के कारण यह शुक्ल जिज्ञासा मुझ दीन से की गई। मैंने इसके निर्णय के लिए तीन मास का समय माँगा। तीन महीने महाराज के पुस्तकालय में सुरक्षित मानस के हस्तलेखों, विविध प्रकाशन-संस्थाओं, संपादकों द्वारा प्रकाशित-संपादित मानस के पाठानुसंधायी विशिष्ट मुद्रित संस्करणों का शिष्यमंडल की सहायता से आलोड़न करता रहा। इस कार्य में मेरी सहायता के लिए महाराज ने श्रीचंद्रधरप्रसादनारायणसिंह (भानुजी) को भी नियोजित कर दिया। शिष्यों के अथक श्रम एवम् भानुजी की विस्मयकारिणी स्मृति, लक्ष्यैकचक्षुता और अनुपम प्रज्ञोपज्ञा के साहाय्य से मानसवाङ्मय के आलोड़नावगाहन का कार्य यथावांछित समय में ही पूर्ण हो गया। हम सबने निष्कर्ष महाराज के संमुख उपस्थित किया और 'मानस-मूलपाठ के क्षेत्र में शोधन करने का अवकाश है' यह मत व्यक्त किया।

सं० २०१० की विजयदशमी से मानस के पाठशोध का कार्य आरब्ध हुआ। काशिराज के स्वकीय पुस्तकालय में संधान के क्रम में देखा गया कि सं० १९०३ में लिखित हस्तलेख पर मानस के पाठशोध का कार्य वर्गप्रणाली से आरंभ किया गया था। यह अत्यंत आश्चर्य का विषय है कि पाठानुसंधान के लिए आधुनिक वर्गप्रणाली (ग्राफपद्धति)

का जो चलन वैज्ञानिक तथा समीक्षात्मक पाठशोध के नाम से पश्चिम की देन के रूप में भारत में ग्रहण किया जा रहा है उसी के समतुल्य वर्गपद्धति पर उक्त पाठशोध का कार्य अतीत में काशी राज्य में करने का प्रयास किया गया। पाठानुसंधान का प्रवर्तनकाल पश्चिमी देशों में विक्रम की बीसवीं शती के द्वितीय चरण के पूर्व नहीं जाता। यह कार्य उसके पूर्व ही आरब्ध हो गया था। इसमें 'रामायणपरिचर्या' आधारग्रंथ के रूप में गृहीत है। 'रामायणपरिचर्यापरिशिष्टप्रकाश' सं० १९५५ में खड्गविलास प्रेस, पटना से प्रकाशित हुआ। इसलिए 'परिचर्या' की हस्तलिखित प्रति का ही इसमें उपयोग किया गया होगा। जिस उक्त प्रति पर कार्य हुआ उसकी अभिधा सरस्वतीभंडार में 'क्रोड़पत्रीय' है। यह नाम कदाचित् इसलिए पड़ा कि इसमें हस्तलेख मध्य (क्रोड़=गोद=मध्य) में रखकर उसके तीन ओर कागद चिपकाकर वर्गाकार चारखाने बनाए गए और प्रतियों का नाम लिखा गया। क्रोड़पत्रीय में जिन प्रतियों को आधार बनाया गया उनका नामोल्लेख यों किया गया है—

			संक्षिप्त नाम
१—अनंत श्रीचरण हस्ताक्षर की पोथी	...		अ०
२—रामायणपरिचर्या	...	„	रा० प०
३—बनवारीदास महंथ श्रीगोसाईंजी के मंदिर के पोथी १७०४ साल की	...	„	ब०
४—जमादार चित्ररूसिंह	...	„	ज०
५—चित्ररामायण	...	„	चित्र०, चि०
६—केदार तेवारीजी की लिखी एक जिल्द में	...	„	के०
७—गुटिका	...	„	गु०
८—पंडित रामगुलामजी के पाठ की	...	„	पं०
९—महंथ रामचरणदास की टीका की	...	„	म०
१०—भाई संतसिंह ज्ञानी के टीका की	...	„	भा०
११—राजा गोपालसरणसिंह	...	„	रा०
१२—मानसदीपिका	...	„	मा०
१३—गिरधारी तेवारी के हाथ की लिखी	...	„	गि०
१४—चौधरी इंद्रदत्तसिंहजी की पोथी	...	„	चौ०
१५—खेदूलाल की पोथी १७७१ साल की	...	„	खे०

'अ०' से तात्पर्य काष्ठजिह्वा स्वामी के स्वाक्षरों में लिखी पोथी से है। स्वामीजी बहुत बड़े महात्मा थे। ये रामनगर में रहते थे और इनका काशिराज पर विशेष अनुग्रह था। ये देवतीर्थ स्वामी और देव स्वामी के नाम से भी ख्यात हैं। वाक्साधना के लिए इन्होंने जिह्वा को काष्ठ से वेष्टित कर रखा था, इसी से काष्ठजिह्वा स्वामी कहे जाते थे। ये शाक्त थे और अत्यंत सिद्ध पुरुष थे। ये तत्कालीन काशीनरेश श्रीईश्वरीप्रसाद-नारायणसिंह के गुरु (तीर्थ) थे। तुलसीदास के मानस (रामायण) पर यथापेक्षित स्थलों पर इन्होंने 'परिचर्या' के नाम से कुछ टिप्पणियाँ लगाई थीं, इसी से इनकी टीका-टिप्पणी



'क्रोड़पत्रीय' के प्रारंभिक दो पृष्ठ।

'रामायणपरिचर्या' नाम से प्रसिद्ध हुई। उक्त क्रोड़पत्रीय में 'रा० प०' से तात्पर्य इसी टीका-ग्रंश से जान पड़ता है। 'रामायणपरिचर्या' को 'परिशिष्ट' नाम से उपबृंहित किया देवतीर्थ स्वामी के सुयोग्य शिष्य काशिराज महाराज श्रीईश्वरीप्रसादनारायणसिंह ने। प्रतीत होता है कि 'परिशिष्ट'-ग्रंश सहित 'रामायणपरिचर्या' का उपयोग इसमें नहीं किया गया। 'रामायणपरिचर्यापरिशिष्ट' पर 'प्रकाश' नाम से विस्तृत टीका परमहंस श्रीहरिहरप्रसाद ने लिखी। सबको एकत्र करके महाराज श्रीप्रभुनारायणसिंह ने इसे संवत् १९५५ में खड्गविलास प्रेस से प्रकाशित कराया। महात्मा देव स्वामी ने किस प्रति को आधार बनाकर स्वकीय हस्तलेख प्रस्तुत किया इसका पता नहीं चलता। पर जो भी हस्तलेख आधार रहा हो वह सं० १९०३ के पूर्व का ही रहा होगा। स्वामी देवतीर्थ ने रामायण (मानस) पर 'परिचर्या' नाम्नी जो टिप्पणी जोड़ी उसमें मानस के जिस प्राचीनतम हस्तलेख का आधार लिया गया होगा उससे प्राचीन किसी हस्तलेख के आधारभूत होने की संभावना 'अ०' के लिए नहीं प्रतीत होती। इसलिए 'रा० प०' के आधारभूत हस्तलेख संबंधी विचार में ही इसके आधारभूत हस्तलेख का विचार भी गतार्थ समझना ही समुचित है। देव स्वामी संस्कृत के उद्भट पंडित थे, इसलिए उनके स्वाक्षर में लिखित पोथी में संस्कृतीकरण की प्रवृत्ति स्थान स्थान पर दृग्गोचर होती है।

'रा० प०' का आधारभूत हस्तलेख कौन सा हो सकता है, इसे लेकर रामनगर के मानसप्रेमियों एवम् मानसमर्मज्ञों में मतभेद रहा है। तुलसीदास के पितृतुल्य संरक्षक एवम् आश्रयदाता भगवान् ब्राह्मण के स्वाक्षर में लिखी पदावली (विनयपत्रिका) की सं० १६६६ की लिखी प्राचीनतम उपलब्ध प्रति रामनगर के जिन स्वर्गीय चौधरी छुन्नीसिंह के पास थी, जिन्होंने भगवान् ब्राह्मण के पुत्र श्रीकृष्णदत्त मिश्र लिखित 'गौतमचंद्रिका' से तुलसीदास का वृत्तांत तीन हस्तलेखों के आधार पर बड़ी विषम परिस्थितियों में संकलित कर रखा था, जिन्हें मानस पूरा का पूरा मुखाग्र था, जो बड़े ही मानसमर्मज्ञ और अध्ययनशील व्यक्ति थे उन्होंने मुद्रित 'रामायणपरिचर्यापरिशिष्टप्रकाश' के निम्नलिखित कवित्त के सहारे यह मान रखा था कि 'परि'* में जिस प्रति का उल्लेख किया गया है वह सं० १७०० की लिखी हुई है—

हनुमंत जन्म दिन गोसांई जी के मंदिर जाइ पूजा करी जाग्रत श्री रामजंत्रराज की।
तहां मरुतनंदन की अर्चा किई तैसी श्रीमहाराज लछमनदास साध सिरताज की।
मुदित मन आज्ञा भई सुद्ध खास पोथी मिली **सतरह सय** साल की लिखी बड़े काज की।
साधु चरन कमल धूरि सीस धरि तिलक करौं संवत युग अंक आठ एक मिती आज की ॥

उनकी स्थापना थी कि गोसाईंजी के मंदिर से जो पोथी मिली सो श्रीलक्ष्मणदास साधु से। इधर क्रोड़पत्रीय में १७०४ की जिस पोथी को आधारभूत प्रतियों में स्थान दिया गया है वह श्रीबनवारीदास महंत के नाम से अभिहित की गई है। अतः मानस के दो प्राचीन हस्तलेख पृथक् पृथक् हैं—एक १७०० का और दूसरा १७०४ का। मुद्रित 'परि' में जो पाठ बहुत्र गृहीत है वह १७०४ की प्रति से मेल खाता है। कहा जा सकता

* नामसंकेत के लिए देखिए आगे पृष्ठ ४६०।

है कि १७०० तथा १७०४ वाली प्रतियों में पाठों की बहुत कुछ एकरूपता रही होगी। उक्त कवित्त में 'सुद्ध खास' विशेषण आया है। काशिराज के सरस्वतीभंडार में १७०४ वाली प्रति 'शुद्ध खास' नाम से ही अंकित है। इसलिए प्रतीत यही होता है कि उक्त कवित्त में १७०० साल की जिस पोथी का संकेत है वह १७०४ वाली ही है। मुद्रित 'परि' में कई स्थलों पर पाठ १७०४ से मेल नहीं भी खाता। इसलिए मतभेद के लिए किंचित् अवकाश देख चौधुरी साहब के प्रीत्यर्थ 'परि' की आधारभूत प्रति को १७०० का ही मानकर उसे इस संस्करण में १७०४ वाली प्रति में गतार्थ नहीं किया गया है। यों स्पष्ट है कि 'अ०' १७०० से पूर्व की लिखित किसी प्रति की अनुलिपि नहीं है।

'ब०' प्रति सं० १७०४ की लिखी है। इसके लिखक श्रीरघु तिवारी हैं। इस प्रति के संबंध में रामनगर में किंवदंती है कि काशिराज ने जब मानस के पाठशोध का कार्य कराना चाहा तो घोषणा की कि जो तुलसीदास के स्वाक्षर में लिखी पोथी लाकर देगा उसे प्रति तोलकर सुवर्ण दिया जाएगा। कहते हैं कि उक्त प्रति तुलसीदास के स्वाक्षर की लिखी बताकर महाराज के संमुख उपस्थित की गई। किंतु छानबीन करने से पता चल गया कि हस्तलेख कर्ता के स्वाक्षर का नहीं है। १७०४ वाले उक्त हस्तलेख के अयोध्याकांड की पुष्पिका में 'लिखितं तुलसीदास' करने के लिए फेरफार किया गया है। पहले पुष्पिका थी 'संवत १७०४ समए अहगन सुदि प्रतिपदा लिखितं रघु तिवारी काश्यां'। इसे यों परिवर्तित किया गया—'संवत १६६१ समए अगहन सुदि प्रतिपदा लिखितं तुलसीदाश'। इस प्रकार दो स्थलों पर हरताल लगाकर परिवर्तन किया गया। एक संवत् के अंकों में दूसरे लिखक के नाम एवम् स्थान पर। दूसरी बार इसमें फिर संशोधन हुआ और पारमार्थिक स्थिति पुनः लाई गई। '१६६१' का फिर '१७०४' बनाया गया और 'तुलसीदाश' को 'रघु तीवारी' किया गया। इन प्रयासों में कैथी वर्तनी का प्रयोग है। प्रतीत होता है कि पहले तुलसीदासलिखित हस्तलेख कहकर केवल अयोध्याकांड ही उपस्थित किया गया। भेद खुल जाने पर पुस्तक तो लौट गई, पर प्रामाणिकता की छाप छोड़ती गई। पुस्तक गोसाईंजी के मंदिर के महंत की थी। कदाचित् कोई सुवर्णलोभी शिष्य चुपके से उक्त कांड उड़ा ले आया। उसी ने सारा फेरफार किया—पहले 'तुलसीदाश' फिर 'रघु तीवारी'। कैथी लिपि का अभ्यस्त व्यक्ति सँभालकर तुलसी तो लिख गया पर 'दास' के बदले 'दाश' लिख बैठा। इस हस्तलेख में कुछ मूल पत्रे नहीं हैं। बालकांड में पत्रसंख्या १, ५२–६६, १०८, १४२–१७५, १८०, १८४, १९०, २०४, २१५–२१९ सब मिलाकर ५५ पन्ने नए हैं, लंकाकांड का आरंभिक पन्ना मात्र नवीन है। उत्तरकांड में प्रारंभिक पन्ना और अंत में ४३–७२ पन्ने नवीन हैं। इस प्रकार ६७३ पन्नों में ८७ पन्ने नवीन हैं। सातो कांड मानस की उपलब्ध प्रतियों में यह सबसे प्राचीन है। इसमें तीन त्रुटियाँ हैं—एक बीच बीच में नए पन्नों से पूर्ति, दूसरी अरण्यकांड में आठ अर्धाली के अनंतर नियमपूर्वक दोहा रखने के प्रयास के कारण प्रक्षिप्ति और तीसरी लंकाकांड में प्रमुख रूप से दोहों में परिवृत्ति। दोहे के विषम चरणों में सामान्यतया १३–१३ मात्राएँ रखी जाती हैं। पर उसका लघु रूप विषम चरणों में १२–१२ ही मात्राएँ लेता है। मलिक मुहम्मद जायसी ने पदमावत में तथा दोहे-चौपाई में रचना करनेवाले हिंदी के अन्य सूफी कवियों

ने दोहे का यह लघु रूप लिया है। इस पर ध्यान न जाने से हिंदी के आलोचकों ने कल्पना की कि जायसी पढ़े-लिखे नहीं थे इसलिए उन्होंने छंदसंबंधी स्खलन किए हैं। एक यह कि चौपाई के चार चरणों का विचार न करके दो दोहों के बीच सात अर्धालियाँ रखीं, होनी चाहिए आठ। दूसरे दोहे के विषम चरणों में १३-१३ मात्राओं के बदले १२-१२ मात्राएँ रख दीं। तुलसीदास को उन्होंने इन अपराधों से मुक्त कर दिया। पर परमार्थतया ऐसा नहीं है। एक तो चौपाई क्या, इसी प्रकार के अन्य छंदों में भी केवल अर्धाली ही पर्याप्त समझी जाती है। चार चरणों से नहीं दो चरणों से, 'अर्ध' से, ही छंद की पूर्णता मान ली जाती है। मानस के अयोध्याकांड में नियमपूर्वक आठ अर्धाली के अनंतर एक दोहा रखने का प्रयास करने पर भी कहीं कहीं सात और कहीं कहीं नौ अर्धालियाँ रखनी पड़ी हैं। फिर अन्य कांडों की क्या कथा। विषम चरणों में १३-१३ मात्राएँ मानस में बहुत्र आई हैं। सांकर्य भी है। पहले चरण में १३ और तीसरे में १२, या इसका विपर्यास है। 'सोरठिया दोहे' या 'सोरठे' के दूसरे-चौथे चरण में मानस में १३-१३ ही मात्राएँ मिलती हैं। इससे निष्कर्ष निकला कि १२ मात्रा वाले दोहे या दोहरे के चरणों से पलटकर सोरठा नहीं बनाया जा सकता। लंकाकांड में 'दोहरे' (विषम चरण में १२ मात्रावाले दोहे) को 'दोहा' (विषम चरणों में १३ मात्रावाला) बनाया गया है।* पर जहाँ सोरठे हैं वहाँ कोई परिवर्तन नहीं है। लंकाकांड में चौपाइयों में भी क्वचित् संशोधन है। जहाँ नवीन पन्ने हैं वहाँ पाठ प्राचीन नहीं है। इस प्रति के संबंध में विचार करने में एक और स्थिति की ओर ध्यान आकृष्ट करना है। मानस की कोई संपूर्ण प्रति बहुत प्राचीन नहीं मिलती। एक एक सोपान या कांड प्राचीनतम अवश्य उपलब्ध होते हैं। इसलिए प्रतीत होता है कि जिस प्रति को इस प्रति के लिखक ने आधार बनाया उसमें विभिन्न कांडों का पाठ पृथक् पृथक् कांडों के प्राचीन हस्तलेखों से आकलित किया गया होगा या स्वयम् रघु तिवारी नें ही ऐसा किया होगा।

प्रश्न होता है कि गृहीत संशोधन कहीं स्वयम् तुलसीदास के ही किए न हों। अरण्य-कांड में जसी परिभृत्ति और उसकी जैसी भाषा है वह तुलसीदास की नहीं हो सकती। लंकाकांड में हुआ संशोधन वैज्ञानिक पाठानुसंधायक तुलसीदास का ही मानते हैं। उनकी उपलब्धि है कि कवि ने मानस में स्वयम् छह बार संशोधन किया। यदि मानस के अन्य सोपानों में कहीं कम मात्रावाले दोहरे न होते तो माना जा सकता था कि लंकाकांड में उनका रहना ठीक नहीं है। पर जब अन्य कांडों में भी छिटफुट रूप में 'दोहरे' मिलते हैं तब विशेष कठिनाई आ खड़ी होती है। यदि लंकाकांड में हुए संशोधन के लिए प्रामाणिक आधार नहीं मिलता तो उसे स्वयम् कवि का किया संशोधन मानने में बाधा है। यह अवश्य सत्य है कि सं० १७०४ के पूर्व ही मानस में संशोधन-परिवर्तन-परिवर्धन हो चला था। सब कुछ होते

---

* दोहरा=विषम चरणों में १२-१२ मात्राएँ, दोहा=विषम चरणों में १३-१३ मात्राएँ, दोही=विषम चरणों में १५-१५ मात्राएँ—

दोहा के तेरहहिं में द्वै द्वै कला बढ़ाइ। कीजै **दोही, दोहरा** एकै एक घटाइ॥

—भिखारीदास, छंदार्णव ७।७।

हुए भी यह कहने में कोई संकोच नहीं कि इस प्रति के पाठ अन्य स्थलों पर अधिकतर पूर्ण विश्वसनीय हैं। मानस की कोई प्रति प्राचीनतम है या नहीं इसके लिए यह प्रति कसौटी है। पर स्वयम् इस प्रति के लिए भी कसौटी अपेक्षित है।

'ज०' प्रति सं० १८२४ की लिखी है। इसके लिखक स्वयम् चिथरूसिंह हैं।

'चि०' काशी राज्य की बहुमूल्य प्रति है। काशिराज के मानसानुराग का यह ज्वलंत उदाहरण है। इसका लिपिकाल सं० १८५१ है और लिखक 'रामचरन' हैं। बाईं ओर मूल पाठ सुलेखित है और दाहिनी ओर मूल में आए प्रसंगों के चित्र अंकित हैं। इसे प्रस्तुत कराने में उस समय लक्षाधिक द्रव्य व्यय किया गया था। मानस के सचित्र संस्करण कई मिलते हैं। पर चित्ररामायण का दूसरा दृष्टांत नहीं है। रामनगर के मानसप्रेमी मानस की तीन प्रकार की टीकाएँ मानते हैं--एक अर्थमय, दूसरी चित्रमय और तीसरी लीलामय।* काशी राज्य के तीनो ही प्रयास अनुपम हैं। 'परि' परम मर्मोद्घाटिनी टीका है और श्रेष्ठ प्रामाणिक टीकाओं में से है। चित्ररामायण अनन्यसाधारण है ही। विस्तृत क्षेत्र और पुष्कल व्यय से होनेवाली रामलीला भी अद्वितीय है। 'चि०' के पाठ सं० १७१४ वाली परंपरा के हैं। १७०४ की परंपरा से इसके पाठ नहीं मिलते।

'के०' किसी अन्य नाम से पुस्तकालय में चढ़ गई है। 'गु०' की भी वही स्थिति है।

'पं०' महत्त्वपूर्ण प्रति है। श्रीरामगुलामजी ने तुलसीदास के प्रामाणिक ग्रंथों के संबंध में अच्छा ऊहापोह करके जो निर्णय किया वही बहुमान्य हुआ। ये मानस के बड़े अच्छे व्यास थे। 'पं०' सं० १७१४ की प्रति की अनुलिपि है और स्वयम् इन्हीं की लिखी है। अरण्यकांड की पुष्पिका से यह स्पष्ट है--'लिखितं रामगुलामेन स्वात्मारार्थं परार्थमिति'। अयोध्याकांड की पुष्पिका उस प्रति का उल्लेख करती है जिससे यह उतारी गई--'लिपी संवत् १७१४ की पोथी पर अब संवत् १८७५'। इस प्रति की वर्तनी में चंद्रविंदु का समुचित व्यवहार है। यह अत्यंत प्रामाणिक और सुलिखित है। सं० १७२१ की जिस परंपरा का ग्रहण भागवतदास छत्री ने अपनी बहुमान्य एवम् बहुप्रचलित प्रति में किया है उसी की प्राचीन पूर्ववर्ती परंपरा इसमें सुरक्षित है।

'म०' हस्तलेख सं० १८७० से १८८६ के बीच लिखा गया है। महंतजी हिंदी के प्रसिद्ध टीकाकार हैं। इसके पाठ परवर्ती परंपरा के हैं। 'भा०' मानस की ख्यात टीका है। इसका हस्तलेख सं० १८७५ से ८९ के बीच का लिखा है। भाईजी ने मानस में क्षेपक मिलाने को अनुचित कहते हुए भी 'गंगोत्पत्ति प्रसंग' क्षेपक रोचक होने से ले लिया है। इसके भी पाठ परवर्ती परंपरा के हैं। 'रा०' हस्तलेख सं० १९१५ का है और लिखक स्वयम् राजाजी हैं। यह भी परवर्ती परंपरा का है। 'मा०' मानस की टीका है, टीकाकार रघुनाथदास वैष्णव हैं। यह महाराज श्रीउदितनारायणसिंह के कनिष्ठ अनुज के आदेशानुसार मुद्रित कराई गई थी। इसके भी पाठ अच्छे हैं। 'गि०' में लिपिकाल नहीं है। पर है यह परवर्ती ही।

---

* पहिलो तिलक रामलीला वर। जिहि लखि परत न तिमिर कूप नर।
दूजो तिलक सकल मन भायो। रामायन सह चित्र लिखायो॥
--ईश्वर कवि, 'मानसदीपिका' भूमिका।

हस्तलेख के पाठ भी परवर्ती ही परंपरा के हैं। 'चौ०' भी किसी अन्य नाम से पुस्तकालय में चढ़ी हुई है। 'ज०' सं० १८२४ की लिखी है। जमादार साहब ही इस प्रति के लिखक हैं।

'खे०' कैथी लिपि की प्रति है। इसके लिखक श्रीमनसाराम हैं जिन्होंने बड़ी सावधानी से हस्तलेख प्रस्तुत किया है। इसके कांडों के लिपिकाल इस प्रकार हैं—सं० १७६८ में किष्किंधा-सुंदर, १७६९ में लंका, १७७० में बाल, १७७१ में उत्तर-अयोध्या। कैथी लिपि में मानस का इतना शुद्ध दूसरा हस्तलेख देखने में नहीं आया। मानस के पाठशोध के लिए कैथी के प्राचीनतम हस्तलेखों का उपयोग अनिवार्य प्रतीत होता है। मानस के जितने पाठानुसंधायी संस्करण प्रकाशित हुए हैं किसी में कैथी के प्राचीन या परवर्ती हस्तलेख को आधाररूप में स्वीकृत नहीं किया गया है। क्रोड़पत्रीय में कैथी के हस्तलेख का उपयोग बुद्धिमत्ता का द्योतक है।

इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि अठारहवीं शताब्दी के प्रथम चरण से लेकर बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण तक के हस्तलेखों को इसमें आधार बनाया गया था। काशी राज्य के हस्तलेखों का आलोड़न करते समय यह भी पता चला कि यहाँ श्रावणकुंज के बालकांड का प्रसिद्ध हस्तलेख और राजापुरवाला अयोध्याकांड का हस्तलेख भी कदाचित् इसी समय मँगाया गया रहा होगा। यहाँ जिसकी अभिधा 'सखाजी की प्रति' है वह श्रावणकुंज के बालकांड की अनुलिपि है। बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में जो व्यक्ति श्रावणकुंज स्थान के महंत थे वे 'सखाजी' के नाम से ख्यात थे। इसमें 'कुंज'* के संशोधित पाठ गृहीत हैं। 'कुंज' में कब तक संशोधन हुआ यह संशोधित पाठरूपों की मूल परंपरा से स्पष्ट हो जाता है, जो १७१४ वाली है। 'कुंज' में आरंभिक ४ पन्ने और पन्ना ९७ सब मिलाकर ५ पन्ने नवीन हैं। 'राजा'* के यहाँ आने के कई प्रमाण हैं। क्रोड़पत्रीय में हरताल लगाकर इसके अनुसार सर्वत्र संशोधन किया गया है। उस समय 'राजा' के कुछ पृष्ठों के फोटो भी लिए गए थे। उनका उपयोग सर्वप्रथम खड्गविलास प्रेस (बाँकीपुर) से सन् १८८९ (सं० १९४६) में प्रकाशित होनवाले संस्करण में हुआ। फिर लाला सीताराम ने 'राजा' की अनुलिपि मुद्रित कराते समय उनका प्रयोग किया। लाला साहब का संस्करण सन् १९२१ (सं० १९७८) में प्रकाशित हुआ। काशी राज्य में उन दस पृष्ठों के फोटो-नेगेटिव अब भी हैं।

'राजा' के यहाँ आने का दूसरा प्रमाण यह है कि मानस की पूर्वोक्त 'शुद्ध खास' ('रघु'*) पर जो वेष्टन है वही 'राजा' का प्रधान वेष्टन है। उस पर स्वामी देवतीर्थ का तुलसीदास की प्रशस्ति में लिखा निम्नलिखित 'पद' कढ़ा हुआ है—

असरन को सरन एक तुलसी के चरन हैं।
रामभक्तिदायक औ ग्यानमान हरन हैं।
भाषा में रामचरित किए ललित बरन हैं।
अगम अरथ सुगम कियो पढत बरन बरन हैं।
बालमीक ब्यास बचन जदपि फलित फरन हैं।
येतश्रो रस तहाँ कहाँ चुअत परन परन हैं।

* नामसंकेत के लिए देखिए आगे पृष्ठ ४६०।

देवरिषि कि आदि कबि कि बेद रूप धरन हैं।
ईनके बस राम सिया लषन तारातरन हैं।।

'राजा' के संबंध में ग्रंथस्वामी ने यह जनश्रुति बताई कि यहाँ मानस की संपूर्ण प्रति थी। चोर उसे चुराकर भागे। चोरों का पीछा किया गया। वे उसे यमुना में फेंक भाग खड़े हुए। प्रति को निकालने के सारे प्रयत्न विफल होने पर काशीनरेश के माध्यम से मछली फँसानेवाला बड़ा जाल मँगवाया गया, जिससे केवल अयोध्याकांड ही सुरक्षित निकाला जा सका, शेष कांड गल गए। अनुश्रुति में सार इतना ही है कि 'राजा' के कारण काशी राज्य से संपर्क हुआ। जनश्रुति यह भी कहती है कि राजापुर में यमुना के कगारे पर का मंदिर (जिसमें तुलसीदास की प्रस्तरमूर्ति है) काशीनरेश का ही बनवाया है।

क्रोड़पत्रीय में पाठशोध का उक्त महनीय कार्य आरब्ध तो हुआ पर अज्ञात कारणों से १०–११ पृष्ठों से अधिक पाठचक्र अंकित नहीं किया जा सका।

प्रकृतमनुसरामः। प्रस्तुत संस्करण पर आइए। मानस-हस्तलेखावगाहन के क्रम में देखा गया कि यों तो पाठवृद्धि और प्रक्षेप की प्रवृत्ति बहुत पहले से है किंतु अतिप्रक्षेप सं० १७८५ से हुआ और सं० १८२० तक पराकाष्ठा पर जा पहुँचा। निश्चय हुआ कि यथाशक्य १७८५ के पूर्ववर्ती हस्तलेखों का ही उपयोग हो। छूट केवल प्राचीन परंपरा सूचक प्रतियों को ही दी जाय। साथ ही कैथी की इसी सीमा के अंतर्गत की प्रतियों का भी अवश्य विनियोग हो। स्थूल रूप में मानसप्रणेता के अवसानकाल के अनंतर एक शतक तक के उत्तरवर्ती हस्तलेखों का न्नियोजन हो और मानस के सर्जनकाल (१६३१) से १७८५ तक संभव हो तो प्रत्येक दशक का एक हस्तलेख अवश्य हो।

मानस के अनुसंधायकों का कहना है कि उसके निर्माण में लगभग तीन वर्ष लगे होंगे। जब उसकी अनुलिपियाँ तीन तीन वर्ष का समय ले लेती हैं तब सृष्टि ने कितना समय लिया होगा, राम जाने। निश्चयपूर्वक यही कहा जा सकता है कि १६४१ विक्रमी के आसपास मानस सर्वजनसुलभ हो गया था। बिहार के बड़इया (पटना) जनपद में मानस के हस्तलेखों की प्राचीन परंपरा संरक्षित की गई है। वहाँ अनेक हस्तलेख हैं और अधिकतर एक ही प्रवाह के हैं। अनुलिपियों में 'अनु, तदनु' का भी उल्लेख है। इनमें सबसे पहली अनुलिपि सं० १६४१ की कही गई है। मानस की यह परंपरा कोदोरामवाली मानी जाती है—

ब्रह्म किसोरीदत्त को ग्रंथकार ही दीन। अल्पदत्त पढ़ि ताहि सों चित्रकूट मो लीन।।
रामप्रसादहि सो दई लहि ता तें सिवलाल। दत्तफनीसहि जानि निज सो दीनी सुखमाल।।

दोहे शिवलाल पाठक के 'मानसमयंक तिलक' के हैं। किशोरीदत्त की १६४१ वाली परंपरा का विशेष माहात्म्य होने से बड़इया की किसी महत्त्वपूर्ण अनुलिपि का उपयोग अनिवार्य प्रतीत हुआ। मूल के सर्जनानंतर यह हुआ **प्रथम दशक** का। द्वितीय दशक का कोई हस्तलेख या उसकी परंपरा नहीं प्राप्त है। पर मानस की **'प्रेमरामायण'** नाम्नी पद्यबद्ध संस्कृत टीका श्रीरामू द्विवेद ने स्वयम् अपने गुरु तुलसीदास के सांनिध्य में की, जिसके सुंदरकांड का अनुलेखन सं० १६६२ में हुआ। द्विवेदजी के ही शब्दों में सुनिए—

भाषारामायणस्यैषा टीका **नीका** मया कृता। नीरसस्य परं **फीका** यो **ही का** कुटिलः सदा।।

संस्कृत-कांचन में हिंदी-शब्दमणि का योग दर्शनीय है। 'शब्दमुक्ता' को 'मानस' से मिलाइए—

निज कवित्त केहि लाग न नीका। सरस होउ अथवा अति फीका ॥
प्रभुपद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी ॥

इसके कर्ता की घोषणा है—

'वंदेहं तुलसीदासं निवासं जानकीपतेः।
यत्प्रसादेन रामूको मूकोपि कवितां गतः ॥

रामू (रामूक) सेवक लिखते हैं—

रामकिंकरेण भाषया कृतं यदद्भुतं काव्यमस्य सेवकेन रामुणापि पद्धतिः।

'रामकिंकर' विशेषण तुलसीदास के लिए प्रयुक्त है। यह पद इस ग्रंथ के सर्गों की पुष्पिकाओं में बहुत्र है—कहीं विशेष्य, कहीं तुलसीदास का और कहीं रामू का विशेषण। क्या 'रामकिंकर' विशेषण-विशेष्य किसी संप्रदाय विशेष की भी सूचना देता है। इसका विचार फिर कभी।

रामूक वंश का परिचय यों देते हैं—

तातः ख्यातमतिर्मुकुंद इति यो विष्णुद्विवेदानुजो, माता यस्य च देवकी सुविदिता धर्मेन्नपूर्णोपमा।

'प्रेमरामायण' किसके लिए और कहाँ लिखा गया इसका संकेत यों है—

शुद्धेंदुस्वच्छकीर्त्तिर्दशरथतनयस्यावबंधप्रबंधं काश्यां दासस्तुलस्या विवृतिमपि तुलारामनाम्नो हिताय।
चक्रे रामूद्विवेदस्तनुमतिरतनुश्लोकवद्धामुपांतेयोध्याकांडे व्यरंसीद्भरतसुचरितेत्रैकविंशोपि सर्गः ॥

काशी में तुलाराम के लिए यह लिखा गया।

सुंदरकांड में अनुलिपिकाल यों है—

पुनर्वसुत्रिमस्तकाक्षिषट्सुधांशु (१६६२) संमिते सुवत्सरेथ कार्त्तिके सितेर्कसंमिते तिथौ।
दले लिलेख सुंदरं तुलाभिधो महेशितुः पुरे हि कांडकं नवं रवेर्हिने द्विजः स्वयम् ॥

पुनर्वसु=२*, त्रिमस्तकाक्षि=६, षट्=६, सुधांशु=१; ('अंकानां वामतो गतिः' से) १६६२ कार्त्तिक मास के सित (उज्ज्वल=शुक्ल) दल (पक्ष) में अर्क (सूर्य=१२) तिथि (द्वादशी) को तुला नाम के द्विज ने महेश के पुर (काशी) में यह नया कांड (सुंदरकांड) रविवार को स्वयम् लिखा। जब अनुलिपिकाल १६६२ है तब ग्रंथ इसके पूर्व अवश्य बन गया होगा। अयोध्याकांड को छठे तथा किष्किधा-सुंदर को सातवें दशक का ही मानें तो सत्रहवीं शती के चतुर्थ दशक में निर्मित हुए ग्रंथ के हस्तलेख एवम् भाषांतर इस प्रकार क्रमशः **पाँचवें, छठे** और **सातवें दशक** के मिल जाते हैं।

इस प्रेमरामायण के केवल तीन ही कांड मिलते हैं—अयोध्या, किष्किंधा और सुंदर। अयोध्याकांड की तीन प्रतियों का पता चला है। एक काशिराज के पुस्तकालय में है। दूसरी रायल एशियाटिक सोसायटी (कलकत्ता) में और तीसरी लंदन के इंडिया आफिस में।

*पुनर्वसु नक्षत्र में विभिन्न मतों के अनुसार २ से ४, ५, ६ तक तारे माने गए हैं। पाणिनि के अनुसार वेद में ही इस शब्द का एकवचन होता है, अन्यत्र नित्य द्विवचन रहता है—छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम् १।२।६१, तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम्। १।२।६३

सोसायटीवाले हस्तलेख में ५७ पन्ने हैं जिनमें से १-१०, १२-२०, ४१-४७, ४८ संख्यक पन्ने नहीं हैं। श्रीहरप्रसाद शास्त्री ने हस्तलेख को ईसाई सत्रहवीं शती का माना है।

प्रेमरामायण में सर्गबद्ध रचना है। प्रत्येक कांड में सर्गों की संख्या यों हैं— अयोध्या-२१, किष्किधा६, सुंदर-६। रामू द्विवेद ने सर्गबद्ध रचना क्यों की, इस पर इतना ही कहना पर्याप्त है कि जो 'मानस' को महाकाव्यपद्धति का ग्रंथ 'सप्त प्रबंध सुभग सोपाना' से सोपान को ही सर्ग समझकर नहीं मानते वे भ्रम में हैं। ऐसे ही भ्रम के निवारणार्थ कर्ता (तुलसीदास) ने सप्तम सोपान (उत्तरकांड) में काकभुशुंडि द्वारा 'तेरिज रामायण'* का कथन करा दिया है, जहाँ का एक एक प्रसंग मानस के सर्ग का सूचक है। तेरिज रामायण के उन्हीं प्रसंगों या सर्गों से रामू द्विवेद के इन सर्गों को मिला देखिए।

प्रेमरामायण की परंपरा इस प्रकार बताई गई है —

प्रेमरामायणं पूर्व्वं यत्कृतं वायुसूनुना लिखित्वा नखटंकैस्तत्कटकेषु महीभृतां।
नाटकं श्रावयामास मुनिं प्राचेतसं मुदा नाभिनंदि तदा तेन निजग्रंथविलोपनात्।
न्यक्षिपन्मारुतिः सिंधौ पर्व्वतान्गर्व्ववर्ज्जितः तदेव तुलसीदासरूपिणा वायुसूनुना।
सुदेशभाषया सर्व्वं निबद्धं पुनरद्भुतं श्रीरामचरणांभोजप्रेमदं क्षेमदं नृणां।
तस्येयं तन्यते टीका तनुश्लोकैर्यथामति भाषावबोधविधुरां विदुषां बोधकारिणी।

हनूमानजी ने रामचरितमूलक जो नाटक बनाया वह 'हनमन्नाटक' है। उसे रामायण के कर्ता वाल्मीकि ने सराहा नहीं। कहीं मेरा ग्रंथ इसके सामने ठहर न सके, विलुप्त न हो जाय, इस आशंका से। नाटक पर्वतों पर लिखा गया था। इस उपेक्षा के कारण हनूमान ने नाटक (गिरिखंडों) को समुद्र में डुबो दिया। वायुपुत्र हनूमान ही तुलसीदास के रूप में जन्मे और सुंदर देशभाषा में उसे पुनः अद्भुत रूप में निबद्ध किया। नाभादास ने 'कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयो' से तुलसीदास को वाल्मीकि का अवतार कहा है। उसके आधार पर मानस के 'यद् रामायणे निगदितम्' को 'वाल्मीकीय रामायणे निगदितम्' समझा जाता रहा है। स्वयम् कर्ता ने 'यद् रामायणे' का संकेत यों दिया है—

'यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशंभुना दुर्गमम्'।

रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा।
ता तें रामचरितमानस बर। धरेउ नाम हिअँ हेरि हरषि हर॥

तुलसीदास को हनूमान का अवतार कहने में भी कुछ रहस्य है, जिस पर विचार फिर कभी।

रामू ने उनकी 'रहनि' का भी वर्णन किया है —के—

गौरं 'रा'पदमात्रसंश्रवणतोप्युद्भूतरोमांकुरं वक्षः श्रीतुलसीप्ररूढगुटिकामालं पटीशालिनं।
वारंवारमिदं पदं 'भरतु मे ठाढ़े'ति गाढं स्वरं गायंतं नररूपिणांकमपि तं वंदेनवद्ये हितं॥

उनका वर्ण गौर है। वे 'राम' शब्द के 'रा' मात्र उच्चारण से पुलकित हो जाते हैं। वक्षःस्थल पर तुलसी की बड़ी बड़ी गुरियों की माला धारण करते हैं, कौपीन पहनते हैं और 'भरतु मे ठाढ़े' पद गाढ़े स्वर में बारंबार पढ़ते हैं। 'भरतु भे ठाढ़े' गीतावली का पद (२।७०) है —

*'प्रथमहि अति अनुराग भवानी' (७।६४।७) से 'जो मैं तुम्ह सन कही भवानी' (७।६८।७) तक। तेरिज=सार-संकलन।

भरतु भए ठाढ़े कर जोरि ।
ह्वै न सकत सामुहें सकुचवस समुझि मातुकृत खोरि ।
फिरिहैं किधौं फिरन कहिहैं, प्रभु कलपि कुटिलता मोरि ।
हृदय सोच जल भरे विलोचन नेह देह भइ भोरि ।
वनवासी पुरलोग महामुनि किए हैं काठ के से कोरि ।
दै दै स्रवन सुनिबे को जहँ तहँ रहे प्रेम मन बोरि ।
तुलसी रामसुभाव सुमिरि उर धरि धीरजहि बहोरि ।
बोले वचन विनीत उचित हित करुनारसहि निचोरि ॥

मानस के केवल पंचम सोपान (सुंदरकांड) की हस्तलिखित प्रति दुलही (लखीमपुर) की सं० १६७२ की है। इसका उपयोग गीता प्रेस वाले संस्करण में सर्वप्रथम किया गया है। तुलसीदास के जीवनकाल का हस्तलेख होने से इसका महत्त्व निर्विवाद है। डा० माताप्रसाद गुप्त ने इसे परित्यक्त कर दिया है, क्योंकि लिपिकाल में केवल संवत् का उल्लेख है, मास-तिथि-वार का नहीं, जिससे जाँच हो सके। मानस का प्राचीन हस्तलेख होने की कसौटी १७०४ का हस्तलेख है, यह कहा जा चुका है। दोनो के पाठ में अत्यधिक साम्य है, कुछ स्थलों को छोड़कर। इसलिए यह हस्तलेख निश्चय ही सत्रहवीं शती के **अष्टम दशक** का है।

राजापुर के अयोध्याकांड में कोई पुष्पिका नहीं है। पर परंपरा से वह प्राचीन माना जाता है। है भी प्राचीन। किंतु किस समय का है यह निर्णीत नहीं है। अनेक दृष्टियों से विचार करने पर यह ख्याति मान्य नहीं हो सकती कि वह कवि के स्वाक्षर में है। मानस के प्राचीनतर हस्तलेखों में उत्तरवर्ती अपभ्रंश के निकट के शब्दरूप मिलते हैं। परवर्ती हस्तलेखों में क्रमशः प्राचीन शब्दरूपों का लोप होता गया है। उक्त हस्तलेख में प्राचीन रूप सर्वापेक्षा अधिक सुरक्षित हैं। अतः यदि वह कवि के जीवनकाल का नहीं तो उसकी मृत्यु के बहुत बाद का भी नहीं हो सकता। इसलिए उसे **नवम दशक** का माना जा सकता है।

श्रावणकुंज-अयोध्या में सुरक्षित मानस के प्रथम सोपान की प्रति यद्यपि सं० १६६१ की कही जाती है तथापि जाँच से वह १६९१ की ठहरती है। इसमें '९' के नीचे कटोरी लगाकर '६' बनाया गया है और '१६' के निछत्र '६' को सछत्र किया गया है। उसी हस्तलेख में छत्रधारी '६' कहीं लिखित नहीं है।

अठारहवीं शती के **प्रथम** एवम् **द्वितीय दशक** के दो (१७०४ वाले और १७१४ की परंपरा वाले) महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों का उल्लेख पहले किया जा चुका है। **तृतीय दशक** का महत्त्वपूर्ण हस्तलेख सं० १७२१ का है, जो भारत कलाभवन (काशी विश्वविद्यालय) में आरक्षित है। इसका उपयोग नागरीप्रचारिणी सभा (वाराणसी) से प्रकाशित और श्रीशंभुनारायण चौबे द्वारा संपादित संस्करण में भरपूर किया गया है। हस्तलेख संप्रति अयोध्याकांड विरहित है। अतः चौबेजी ने इसके संपूर्ण रूप की अनुलिपि (सं० १७६२) का उपयोग किया है। बहुत प्रयास करने पर भी तीसरे दशक का कोई हस्तलेख नहीं प्राप्त हो सका और भारत कलाभवन से भी उक्त प्रति 'निष्क्रमणं निषिद्धं' से संपादनार्थ अनुपलब्ध ही रही। **चतुर्थ दशक** (१७३७) की प्रति राजस्थान पुरातत्त्वमंदिर (जोधपुर) की है और

उत्तरकांड मात्र है। **पंचम दशक** की विशिष्ट प्रति की पुष्पिका यों है—'संवत् १७४३ वैशाष शक्ले द्वादशी वाल्गोविंद सम्मंनेन निज तनय रामनारायनस्य पठनार्थ षडमासेन संपूर्णं लिखितमिती'। इससे विदित है कि १७४२ की कार्त्तिक शुक्ला प्रबोधनी एकादशी से पुत्र-प्रबोधनार्थ यह लिखी जाने लगी थी। इसमें बाल और अयोध्या कांड संक्षिप्त किए गए हैं। अयोध्याकांड की समाप्ति अरण्य का आरंभिक अंश गृहीत करके की गई है। यह प्रति अन्य प्रतियों से भिन्न परंपरा की है। इसमें बालकांड की वंदना 'बंदौं प्रथम महागुरुचरना' से चली है। इस परंपरा की कई प्रतियाँ उपलब्ध होती हैं, सबका विस्तृत विचार इस लघुकाय निवेदन में कथमपि संभव नहीं। **षष्ठ दशक** की कई प्रतियाँ हैं। एक सरस्वतीभंडार (उदयपुर) की, दूसरी मथुरा की, तीसरी पेनसिल्वानिया विश्वविद्यालय (अमेरिका) की, चौथी मयाशंकर याज्ञिक संग्रह (नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी) की।* पहली प्रति प्राचीन परंपरा की है, इसमें अयोध्याकांड के आरंभ में 'ब्रह्माविनय' प्रसंग वाला छोटा सा क्षेपक भी है। दूसरी प्रति अत्यंत भ्रष्ट है। ग्रंथस्वामी ने मूल प्रति आग्रहपूर्वक लौटा ली, अतः उसकी माइक्रोफिल्म से कार्य किया गया। इसकी लिपिभ्रष्टता और माइक्रोफिल्म की अस्पष्टता स्थान स्थान पर संदेहार्थ अवकाश करती रही है। तीसरी प्रति के लिखक 'गुरू अलहबकस' हैं। इन्होंने प्रति लिखी 'अमल श्रीपातिसाह औरंगसाह आलमगीर जागीर साहजादे रफी अलहदा फौजदार नवाव विराहिम (इब्राहीम ?) मोकाम नग्रे सहसाराउ' में।

यह पुष्पिका इस तथ्य का प्रमाण है कि मुसलमान बंधुओं की भी मानस के प्रति अभि-मुखता थी। पुस्तक के पन्ने अस्तव्यस्त हैं, यत्र तत्र खंडित भी हैं। प्रति प्राचीन परंपरा की है और नागराक्षर में यथासाध्य शुद्ध लिखी है। चौथी प्रति याज्ञिकसंग्रह की है और लंकाकांड मात्र है। १७०४ वाली परंपरा से इसका पूरा मेल है। **सप्तक दशक** की भी कई प्रतियाँ हैं। पहली प्रति तुलसीसंग्रहालय (रामवन, सतना) की है। इसमें दो ही कांड हैं। यह १७०४ वाली प्राचीन परंपरा की है। दूसरी प्रति स्वर्गीय पं० नागेश उपाध्याय को अचानक मिल गई थी। प्रति भदैनी (वाराणसी) के हयग्रीवमंदिर की है। दीपावली के गृहपरिष्कारजन्य त्याज्य अंश के साथ प्रति गंगालाभ करने जा रही थी, पर उपाध्यायजी की तीक्ष्ण दृष्टि ने इसे उबार लिया। इसमें अरण्यकांड नहीं है। अनुश्रुति के अनुसार मानस के दो तीन हस्तलेख अठारहवीं शती के सप्तम दशक में गोसाईंजी के मंदिर के पास लोलार्ककुंड (भदैनी, वाराणसी) में लिखे गए थे। कदाचित् उन्हीं में से एक यह भी है। इसमें क्षेपक रखे तो गए हैं पर मूल छंदसंख्या को आहत नहीं किया गया। इसमें पूर्ववर्ती और परवर्ती दोनों परंपराओं का मेल है। तीसरी प्रति कैथी लिपि की है, जिसका संक्षिप्त विवरण ऊपर खेदूलाल की पोथी के अंतर्गत दिया जा चुका है। **अष्टम दशक** के अंतर्गत आनेवाली छह प्रतियाँ हैं। इनमें से पहली-दूसरी रामनगर की ही हैं। ये दोनों पूर्ववर्ती परंपरा की हैं। तीसरी नागरीप्रचारिणी सभा (वाराणसी) के हस्तलिखित ग्रंथों के खोजविभाग की है। प्रति प्राचीन परंपरा की है। चौथी सरस्वतीभंडार, काँकरौली की है और संपूर्ण है।

---

* प्रतियों के लिपिकाल आदि का संक्षिप्त विवरण आगे पृष्ठ ४६० पर देखिए।

इसमें गाढ़ी हरताल लगाकर बहुत्र संशोधन किया गया है। कुछ समयानंतर प्रति लौट गई और माइक्रोफिल्म से पाठशोध किया गया। अतः संशोधन के पूर्व के हरताल से ढके कई पाठ अगृहीत ही रह गए। पाँचवीं रामवन (सतना) की है। परंपरा प्राचीन है। छठी कैथी लिपि की विशिष्ट प्रति है। इसके लिखक ने स्थान स्थान पर लेखनप्रमाद अवश्य किया है, पर इसमें विवदमान प्राचीन पाठों की अच्छी रक्षा भी है। प्रति ब्रिटिश म्यूजियम लंदन की है। लिखक पटनीमल गुरहट्टा (गंगातट, पटना) के हैं। **नवम दशक** की केवल एक ही प्रति है और कैथी लिपि में है। इसमें कैथी लिपि की परंपरा के विरुद्ध ह्रस्व इकार की मात्रा और दंत्य 'स' का भी व्यवहार है।

इस प्रकार कर्ता के साकेतवास से लगभग एक सौ वर्ष पश्चात् तक के हस्तलेखों को लक्ष्य किया गया है। तीन आधारभूत प्रतियों को उनकी विशेषता के कारण ही परवर्ती होने पर भी गृहीत किया गया है। उन्हें अपवाद ही समझना चाहिए। मानस के लेखन से इस प्रकार लगभग डेढ़ सौ वर्ष की सीमा के हस्तलेखों की परंपरा इसमें आधाररूप में रखी गई है। इस सीमा के जितने भी हस्तलेख किसी प्रकार प्राप्त हो सके, संपादनार्थ संकलित किए गए। संकलनार्थ कृत आयास का सौभाग्य एवम् दुर्भाग्य पूर्ण विवरण देकर सुखदुःख के द्वंद्व में ग्रहीताओं को डालना अनर्थक और अप्रयोजनीय है। सात समुद्र पार की प्रतियों की प्राप्ति और पड़ोस की प्रतियों की अप्राप्ति के विरोधाभास द्वारा चाकचिक्य उत्पन्न करना अकांडप्रथन ही होगा। केवल मलीहाबाद की प्रति के संबंध में 'दो बोल' अपेक्षित हैं। इसके लिए कई बार और कई माध्यमों से प्रयास किया गया। पर उसके दर्शन तक न हो सके। इसे बंधुवर श्रीनंददुलारे वाजपेयी ने गीता प्रेस वाले संस्करण का संपादन करते समय देखा था। उन्होंने बताया कि प्रति परवर्ती है और क्षेपकों से अलंकृत है।*

मानस का अध्ययन-मनन प्रणेता के जीवनकाल में ही विस्तृत क्षेत्र में फैल गया था। इसका मुख्य कारण यह था कि स्वयम् कर्ता ने इसके प्रचार-प्रसार के लिए दो प्रकार के सुदृढ़ साधन निकाले। एक मानस की कथा के अनुसार रामलीला का आयोजन और दूसरे उसकी कथा का श्रवण सत्संग के रूप में। भारतीय साहित्य की परंपरा में वाल्मीकि और व्यास दो विशिष्ट प्राचीन साहित्यस्रष्टा हुए। तुलसीदास ने 'व्यास आदि कविपुंगव नाना। जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना' कहते हुए व्यास का उल्लेख वाल्मीकि से भी पहले वंदना के प्रसंग में किया है। व्यासप्रणीत और शुकमुखोद्गीरित श्रीमद्भागवत के द्वारा होनेवाले हरिचरितश्रवण की जो परंपरा व्यासों द्वारा चली उसके अनुगमन पर उन्होंने मानसकथाश्रवण का आरंभ, हो सकता है, पहले किया हो और मानस के आधार पर होनेवाली रामलीला का प्रवर्तन तदनंतर। मानस की रामलीला की जो पद्धति सुप्रचलित है उसमें मानस का पाठ पहले होता

---

* आइ एम नाट प्रिपेयर्ड टु अटैच एनी ग्रेट इंपार्टेंस टु इट, इट बीइंग रिपोर्टेड दैट इट कंटेंस मेनी क्षेपकज़ (इंटरपोलेशंस) [मैं इसे कोई बड़ा महत्त्व देने को प्रस्तुत नहीं। यह विवरण पहले दिया जा चुका है कि इसमें अनेक क्षेपक हैं]।

—श्यामसुंदरदास, खोजरिपोर्ट (काशी नागरीप्रचारिणी सभा), सन् १९०१, पृष्ठ २।

है और पाठानुसारिणी लीला एवम् संवाद तदनंतर। यहाँ भी उसका पाठ्यत्व या श्रव्यत्व प्रथम है, दृश्यत्व तदनंतर। मर्मी सज्जनों को यह बताने की आवश्यकता नहीं कि मानस की रामलीला का अनुधावन वाल्मीकि के पदानुगमन पर ही है। वाल्मीकि का रामायण लव-कुश द्वारा गाया और अभिनीत किया गया था। अनुसंधायक तो इस सीमा तक पहुँचे हैं कि 'लव-कुश' नामों के व्यत्यय और ईकार के अंतःपात से 'कुशीलव' शब्द बना, जो अभिनय-कर्ता नटों का प्रसिद्ध पर्याय है। कदाचित् मानस की सर्वप्रथम कथा स्वयम् रचयिता ने व्यासरूप में कही और मानस की रामलीला भी स्वयम् ही सर्वप्रथम कराई। पौराणिक प्रवाह के अनुसार वाराणसी के दो विभाग हैं—केदारखंड और काशीखंड। दक्षिणी का नाम केदारखंड और उत्तरी का काशीखंड है। केदारखंड की रामलीला के प्रवर्तक स्वयम् तुलसीदास कहे जाते हैं और काशीखंड की रामलीला के स्थापक मेघा भगत। भगतजी इनके मित्र थे और वाराणसी के कमच्छा स्थान में रहा करते थे।* जनश्रुति है कि भगतजी पहले वाल्मीकीय रामायण के अनुसार लीला कराते थे। तुलसीदास के अनुरोध पर मानसानुसारी लीला प्रचारित की। मेघा भगत वाली लीला चित्रकूट (वाराणसी) की रामलीला के नाम से विख्यात है, जिसका भरतमिलाप अत्यंत समारोहपूर्वक होता है और जिसमें काशीनरेश भी दर्शनार्थ गजारूढ़ सपरिकर उपस्थित रहते हैं।

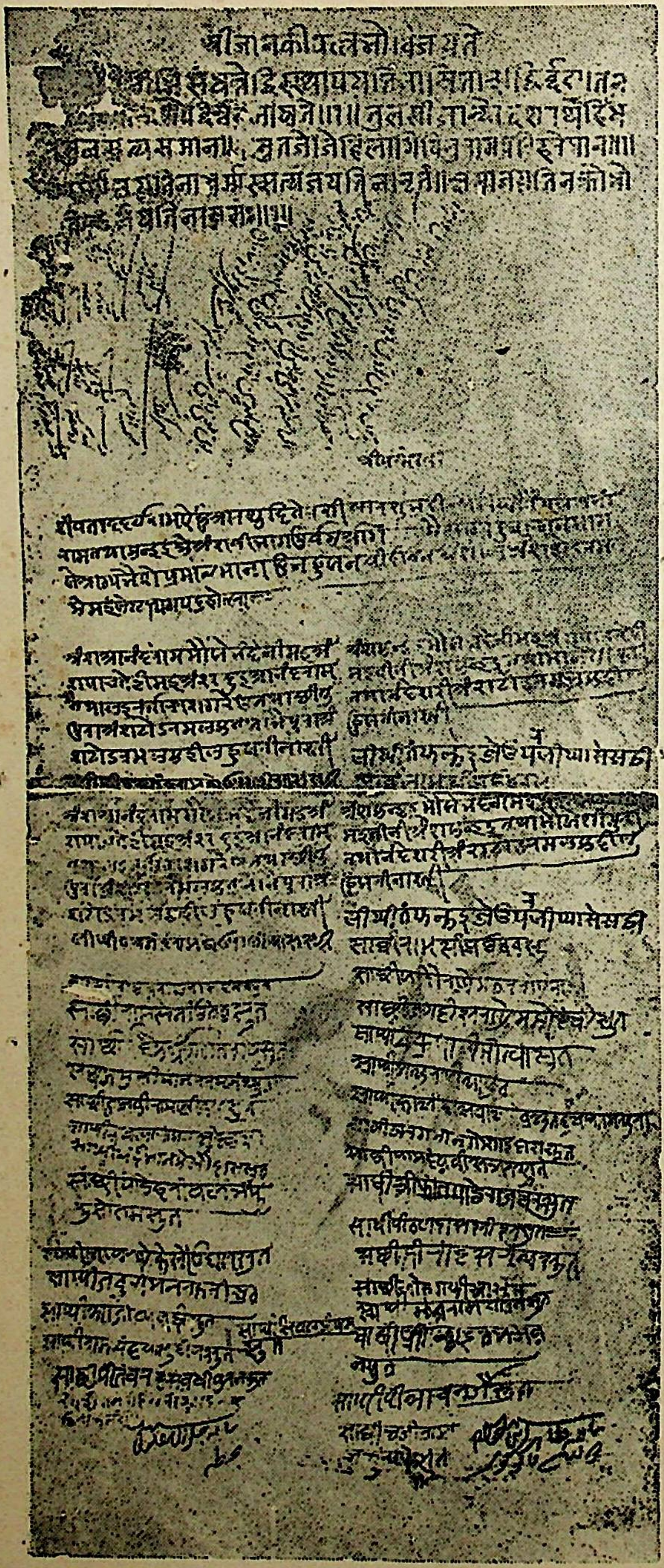
मेघा भगत के लिए मानस की अनुलिपि अवश्य कराई गई होगी। अनुमान से यह अनुलिपि कैथी में हुई होगी। भगतजी के लिए वही लिपि अधिक सुवाच्य रही होगी। तुलसीदास की निजी प्रति नागरी लिपि की थी, यह निःसंदिग्ध है। इस प्रकार लेखक के जीवन्काल में ही मानस के दो प्राचीनतम हस्तलेख हो गए होंगे। इन्हीं दोनों प्राचीन हस्तलेखों की परंपरा आगे चली। कैथी के हस्तलेखों पर से भी नागरी के हस्तलेख लिखे जाते थे और नागरी के हस्तलेखों पर से भी कैथी के हस्तलेख उतरते रहते थे। इससे दोनों लिपियों की वर्तनी का सांकर्य हो गया। कैथी की वर्तनी ने कई महत्त्वपूर्ण पाठांतरों को जन्म दिया।

स्वयम् तुलसीदास के स्वाक्षर का हस्तलेख क्या हुआ। इस प्रश्न का उत्तर कठिन नहीं है। किसी प्राचीन कवि के स्वाक्षर के हस्तलेख नहीं मिलते। सुलेख लिखनेवाले लिखक उस समय लेखन का व्यवसाय ही किया करते थे। सुलिखित हस्तलेख ने कर्तालिखित पांडु-लिपि की उपेक्षा कराई और वह लुप्त हो गई। यह मानस ही नहीं, हिंदी की किसी भी प्राचीन कृति के लिए कठोर सत्य है।

दूसरा प्रश्न यह होता है कि तुलसीदास ने मानस लिखने के अनंतर उसमें कोई संशोधन फिर किया या नहीं। १६३१ से १६८० के दीर्घ अंतराल में संशोधन की संभावना दुरूह नहीं है। पर यह भावना कि उन्होंने मानस में छह बार संशोधन किया अतर्क्य प्रतीत होती है। सिद्ध कवियों की वाणी इतने बार संशोधन का अवकाश देती ही नहीं। कर्तांकृत संशोधन की संभावना के लिए दो-तीन स्थल चुने जा सकते हैं। राजापुर की प्रति में 'तापस-

---

* कमछा के मेघा भगत करि सुरधुनी नहान। तुलसीचरन पखारि गृह भजत राम धनुबान॥
—गौतमचंद्रिका, नागरीप्रचारिणी पत्रिका, सं० २०१२।



पंचनामा

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

द्विशरन्नाभिसंधत्ते द्विस्स्थापयति नाश्रितान् ।। द्विर्द्ददाति न चार्थिभ्यो रामो द्विर्न्नैव भाषते ।।१।।

तुलसी जान्यो दशरथहिं धरमु न सत्य समान ।। रामु तजे जेहि लागि विनु राम परिहरे प्रान ।।१।।

धर्म्मो जयति नाधर्म्मस्सत्यं जयति नानृतं ।। क्षमा जयति न क्रोधो विष्णुर्जयति नासुराः ।।१।।

[शीर्ष पर तुलसीदास के स्वाक्षर में लिखित मंगलवचन]

प्रसंग' गृहीत पद्धति के विपरीत और प्रवहमान कथा के बीच जोड़ा हुआ है। तुलसीदास के प्रत्यक्ष शिष्य रामू द्विवेद के प्रेमरामायण में भी इस प्रसंग का अनुवाद प्राप्त है। इसलिए इसकी प्राचीनता को देखते संभावना होती है कि स्वयम् कर्ता ने ही इसे जोड़ा होगा। प्रस्तुत संस्करण में यह अंश दो तारों (*) के मध्य दिखाया गया है और इसके दोहे की संख्या हस्तलेखों के साक्ष्य पर पृथक् नहीं दी गई है। मानस के प्राचीन हस्तलेखों में जहाँ कोई प्रक्षेप आया है वहाँ मूल की दोहासंख्या अनाहत ही रखी गई है। उक्त प्रसंग में जो 'तापस' आया है उसे कोई अग्नि, कोई उपासक भरत और कोई तुलसीदास मानता है। उसे तुलसीदास मानने की कल्पना ही अधिक सटीक जान पड़ती है। दूसरा स्थल सुंदरकांड के आदि में आई मारुतिवंदना का श्लोक है। इसमें 'दुलही'* का पाठ दो अंशों में अकेला है—एक 'हेमशैल' और दूसरे 'रघुपतिप्रियभक्तं'। दोनों अंशों के पाठ अन्यत्र सर्वत्र क्रमशः 'स्वर्णशैल' और 'रघुपतिवरदूतं' हैं। 'हेमशैल' को 'स्वर्णशैल' कर देने से 'स श' के अनुप्रास का चमत्कार बढ़ता है। 'रघुपतिप्रियभक्तं' में 'संयुक्ताद्यं दीर्घम्' की नीति से 'रघुपतिप्रियभक्तं' पढ़ना पड़ेगा। 'दुलही' के स्वामी ने पहली भेंट में स्वतः बताया कि इस प्रति में स्वयम् तुलसीदास ने अन्यों के सुझाव पर परवर्ती संशोधन किया था, ऐसी पूर्वजों की परंपरागत अनुश्रुति है। पर 'रघुपतिप्रियभक्तं' में 'संयुक्ताद्यं दीर्घम्' की वैकल्पिक स्थिति छंदोमंजरी की साखी पर मानी जा सकती है—

'प्रह्ले वा' इति पुनः पिङ्गलमुनेर्विकल्पविधायकं सूत्रम्। उदाहरणं यथा कुमारे
सा मङ्गलस्नानविशुद्धगात्री गृहीतप्रत्युद्गमनीयवस्त्रा।
निर्वृत्तपर्जन्यजलाभिषेका प्रफुल्लकाशा वसुधेव रेजे॥

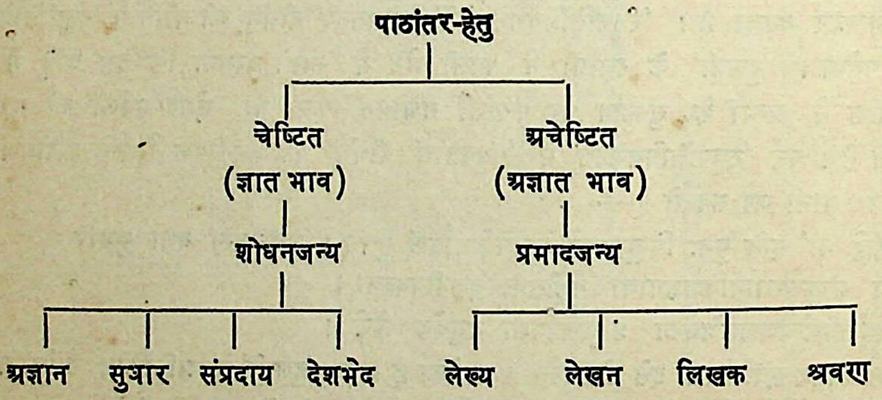
इस प्रकार छंदःशास्त्र इसे दोषमुक्त कर देता है। पर 'दुलही' के अतिरिक्त सर्वत्र संशोधित ही पाठ है। अतः संभावना यही है कि कर्ता को ही किसी कारण संशोधन करना पड़ा। 'राजा' के मंगलाचरण में 'शंकरप्रार्थना' के आदि में 'यस्यांके' एकल पाठ है। अन्यत्र सर्वत्र 'वामांके' है। ऐसा परिवर्तन प्राचीन प्रतियों को मान्य करते हुए तुलसीदासकृत माना जा सकता है। पर पुष्ट प्रमाण के अभाव में बलपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। तुलसीदास-लिखित होने की ख्याति और उनके ही द्वारा संशोधन की प्रसिद्धि 'कुंज' के संबंध में रही है। प्राचीन प्रतियों की महत्ता का द्योतन करने के लिए ऐसी कितनी ही वार्ताएँ बहुत प्रचलित हैं। तुलसीदास के स्वाक्षर में लिखा एक ही अंश माना जा सकता है। वह 'पंचनामा' के शीर्ष पर लिखित मंगलवचन है। तुलसीदास का प्रिय सिरनामा 'श्रीजानकीवल्लभो विजयते' भी यहाँ दर्शनीय है। उन्होंने वाल्मीकीय रामायण की प्रतिलिपि की थी यह भी प्रवाद ही प्रवाद है। सरस्वतीभवन (वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय) वाले हस्तलेख की पुष्पिका एक तो मूल के अक्षरों से भिन्न अक्षरों में है दूसरे उसमें लिखक के 'आदिलशाह' के आश्रित होने का स्पष्ट उल्लेख है—

श्रीमद्येदिलशाहभूमिपसभासभ्येंद्रभूमीसुरश्रेणीमंडनमंडलीदयादानादिभाजिप्रभुः।
वाल्मीकेः कृतिमुत्तमां पुरङ्गोः पुर्यां पुरोगः कृती दत्तात्रेयसमाह्वयो लिपिकृतेः कर्मत्वमाचीकरत्॥

* नामसंकेत के लिए देखिए आगे पृष्ठ ४६०।

प्राचीन काल में जीविकार्थ लेखनकार्य करनेवालों के अतिरिक्त श्रद्धा या आदर बुद्धि से विशिष्ट जन भी प्रतिलिपि या अनुलिपि करते थे। पर 'तुलसीदास' नाम और समय की अनुकूलता मात्र से किसी प्रति का लिखक उन्हें नहीं माना जा सकता।

सामान्यतया किसी स्वलिखित कृति में समर्थ कर्ता भी दीर्घायु होने पर बारंबार संशोधन किया करता था यह धारणा प्रमाणाभाव में पूर्ण सत्य नहीं हो सकती। पाठांतर अधिकतर अन्यों के द्वारा नानाविध हेतुओं से होते या हो जाया करते थे। अनुलिपि करने में दो इंद्रियाँ प्रधान रहती हैं---नेत्र और कर। कभी कभी एक व्यक्ति आधारप्रति से पाठ बोलता चलता है। ऐसी स्थिति में श्रवण की भी सहायता लेनी पड़ती है। कुछ पाठांतर जान-बूझकर किए जाते हैं, कुछ अनजाने हो जाते हैं। अधिकतर पाठांतर प्रमादजन्य होते हैं। पाठांतर के हेतु का बड़ा विस्तार है। थोड़े में उसकी रूपरेखा यों खींची जा सकती है---



आकार-सीमा का प्रतिबंध इन सबके उदाहरणों का आगमन और लेखनी का गमन रोकता है। जब कोई विस्तार ही नहीं तो 'अलमतिविस्तरेण' कैसे कहा जाए।

मानस के संपादित पूर्ववर्ती संस्करण वर्तनी में प्रायः एकरूपता लाने का प्रयास करते रहे हैं। पर विभिन्न स्थलों पर तुकांत में आए एक ही शब्द के दो भिन्न रूप कहते हैं कि कर्ता को वर्तनी की एकरूपता का आग्रह नहीं था। हिंदी में अधुना वर्तनी पर जितना ध्यान दिया जाता है उतना कोई लेखक पहले नहीं रखता था। अतः एकरूपता-संपादन का प्रयास न करके प्राचीन हस्तलेखों के प्रति संमानप्रदर्शन और वैज्ञानिक प्रणाली के पूर्ण अनुधावन की दृष्टि से एक ही शब्द की भिन्न वर्तनी ज्यों की त्यों गृहीत की गई है। कुछ विभेद तो केवल उच्चारण से ही अभेद हो जाते हैं। ऐसा करने से साहित्य, धर्म, विज्ञान की समन्विति का लाभ तो है, पर ग्रहीता की कोई हानि नहीं है। कुछ विभेद ऐसे हैं जिनका अभेद हिंदी-उच्चारण कर देता है। पुरानी हिंदी में 'मागत' और 'माँगत' में रूपभेद है, उच्चारणभेद नहीं। हस्तलेखों के आलोड़न और विश्लेषण के आधार पर कुछ शब्दरूपों एवम् कुछ स्थितियों में विकल्प मानकर वर्तनी रखी गई है। मानस में प्रयुक्त कुछ शब्द ऐसे हैं जिनकी मात्राओं का उच्चारण पूर्वी की सरणि के अनुरूप नहीं है। 'चलै' और 'चलइ' में रूपभेद है,

उच्चारणभेद नहीं। पश्चिमी पद्धति से 'कौन' और 'कवन' की भी ऐसी ही स्थिति है। 'कौन' का पूर्वी उच्चारण 'कउन' होगा। मानस में चाहे 'कौन' लिखा हो, पढ़ना 'कवन' होगा। यह और कुछ नहीं—'औ' के दो प्रकार के उच्चारणों का भेद है। अवधी या पूर्वी में 'औ' का या इसकी मात्रा का उच्चारण 'अउ' है। पर पश्चिमी भाषा में 'अव' है। यही स्थिति 'ऐ' या उसकी मात्रा की है। इस संस्करण में हस्तलेखों के अनुगमन पर रूप ज्यों का त्यों रखा गया है। यहाँ केवल दस शब्दों के उच्चारण दिङ्निर्देशार्थ दिए जाते हैं—

नैन=नयन। बैन=बयन। बैर=बयर। बैस=बयस। मैना=मयना।
सैन=सयन। आरौ=आरव। और=अवर। कौन=कवन। जौन=जवन।

अयोध्याकांड के ११५ वें दोहे में 'अयन, नयन' है, पर तुकांत के अनुरोध से 'ऐन नैन' होना चाहिए। यहाँ 'अयन, नयन' के उच्चारण का रूप बतानेके ही लिए कर्ता ने तथा हस्तलेखों ने ऐसा लिखा है। प्रस्तुत संस्करण में मूर्धन्य 'ष' का ग्रहण 'ख' उच्चारण के लिए है। पर 'ष' वहीं रखा गया है जहाँ संस्कृत मूल शब्द में मूर्धन्य 'ष' है। पुरानी हिंदी में तालव्य 'श' नहीं है। मूर्धन्य 'ष' भी नहीं है। तालव्य का उच्चारण हिंदी में दंत्य 'स' है। पर मूर्धन्य 'ष' के दो उच्चारण हैं—'ख' और 'स'। जहाँ इसका 'स' उच्चारण अभिप्रेत है वहाँ 'ष' रेखांकित है—'ष॒'। संस्कृत शब्द के संयुक्त वर्ण में मूर्धन्य 'ष' का उच्चारण हिंदी पाठ में 'स' ही होगा—दृष्टि=दृस्टि, विष्णु=बिष्नु=बिस्नु इति दिक्। मूर्धन्य 'ष' युक्त संस्कृत शब्दों से बने क्रियारूपों में भी मूर्धन्य 'ष' रहने दिया गया है। मानस में √बरष से बनी क्रिया के 'बरषहिं' और 'बरिष॒हिं' दो रूप मिलते हैं। इससे स्पष्ट है कि जहाँ दंत्य 'स' उच्चारण है वहाँ रूप में विकार भी हुआ है। मानस के ही नहीं हिंदी के अन्य प्राचीन हस्तलेखों में भी एक समस्या और है, जिस पर अभी किसी का ध्यान पूरा पूरा नहीं गया है। 'दच्छ' दो रूपों में लिखा मिलता है—एक 'दच्छ', दूसरे 'दछ'। 'दछ' का उच्चारणानुयायी रूप अन्यों ने 'दच्छ' लिया है। मानस में या अन्यत्र भी संस्कृत के जो अल्पप्राण-महाप्राणसंयुक्त शब्द ज्यों के त्यों लिए गए हैं (जैसे बुद्धि, क्रुद्ध आदि) उनके अतिरिक्त प्राचीन हस्तलेखों में उन शब्दों में अल्पप्राण का प्रयोग नहीं मिलता, दुहरे महाप्राण का प्रयोग अवश्य है। 'लषन' के 'ल' पर बल देने से 'लष्षन' होता है। इसे 'लषन' या 'लष्षन' दो रूपों में लिखा गया है। जहाँ केवल 'लषन' या 'दछ' रहने पर ठीक उच्चारण नहीं हो सकता वहाँ एक चिह्न का प्रयोग किया गया है जिसे उदात्तसूचक नाम दिया गया है। हस्तलेखों में इसके स्थान पर प्रायः बिंदी सी लिखी मिलती है। ७।१२२।४ पर शब्द के दो पाठ मिलते हैं—कुपथ्य और कुपंथ। यहाँ 'कुपंथ' पाठ और कुछ नहीं 'कुपथ्थ' है। इसे 'कुपंथ' रूप में व्यक्त किया गया है।

संस्कृत छंदों और स्तुतियों में संस्कृत की वर्तनी रखी गई हैं। पर हस्तलेखों के साक्ष्य पर 'परसवर्ण' का नियम नहीं रखा गया है, अनुस्वार से ही काम लिया गया है।

हस्तलेखों में सानुनासिक स्थिति के बोध के लिए बिंदु (ं) और चंद्रबिंदु (ँ) दोनो का व्यवहार है। 'पंचनामा' में तुलसीदास के स्वाक्षर में लिखे दोहे में चंद्रबिंदु का ही व्यवहार है। अतः प्रस्तुत संस्करण में चंद्रबिंदु का ही प्रयोग किया गया है। मानस में अपभ्रंश की परंपरा

के कारण तृतीया और सप्तमी के लिए बहुधा सानुनासिक रूप गृहीत हैं। परवर्ती हस्तलेखों में यह सानुनासिकता क्रमशः हटते हटते बहुत कुछ हट गई है। 'पंचनामा' के 'दशरथहिं' में सानुनासिकता बतलाती है कि तुलसीदास की वर्तनी व्याकरणसंमत प्राचीन रूपों के पक्ष में है। चंद्रबिंदु उन्होंने पहले 'थ' पर लगाया, जो तत्त्वतः 'थ' पर लगाने के लिए नहीं था, मात्रा पर ही लगाने के लिए था। नियम है कि ह्रस्व इकार की मात्रा के आगे बिंदु या चंद्रबिंदु लगाते थे और दीर्घ ईकार की मात्रा पर पहले। 'हि' पर पहले ही चंद्रबिंदु लगा देना लेखनप्रणाली के विरुद्ध होने से उसे स्थानांतरित किया गया है। अस्तु। किसी शब्द में सानुनासिकता व्याकरणगत कई स्थितियों की द्योतक होती है। हस्तलेखों के कर्ता बिंदियाँ गिनकर मनमानी भी लगा दिया करते थे। मानस के प्राचीन हस्तलेखों में अपेक्षाकृत ऐसी स्थिति कम है। क्रिया के बहुवचनांत रूप विभिन्न हस्तलेखों का आधार लेकर ठीक कर दिए गए हैं। पर तृतीया और सप्तमी जन्य सानुनासिकता वहीं रखी गई है जहाँ हस्तलेखों में मिल गई है। इस संस्करण में सारा आधार हस्तलेखों का है, केवल आधुनिक रूप में सुवाच्य-सुपाठ्य करने का ही आयोजन किया गया है। उच्चारणसौकर्य के लिए ही कुछ चिह्नों का प्रयोग किया गया है, अन्यथा मूल में आधुनिक विरामचिह्न कहीं नहीं लगाए गए हैं।

हिंदी को अधिक समास रुचिकर नहीं है। इसलिए अधिकतर षष्ठी तत्पुरुष और अपेक्षित होने पर छोटे बहुव्रीहि समास को समस्त पद के रूप में व्यक्त किया गया है। शब्दों को कहीं कहीं अनिवार्यतया मिलाना था, नहीं तो 'सदा सिव' और 'सदासिव' में कैसे भेद होता। पाठ को सुबोध करने और अर्थबोधक स्थिति में लाने के जितने विनियोग किए गए उन सबका आख्यान विस्तृत विवरण की आकांक्षा करता है। इसलिए विराट् रूप के संवरण के अतिरिक्त यहाँ कोई गति नहीं है।

अपभ्रंश के अकारांत पुंलिंग शब्दों में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में लगनेवाली 'उकार' की मात्रा* और तृतीया-सप्तमी के लिए सानुनासिक † रूपों का व्यवहार अनुलिपिकर्ताओं के लिए कष्टद रहा है। परवर्ती काल में धीरे धीरे इनका अधिकतर परित्याग कर दिया गया। तुलसीदास के स्वाक्षर में लिखे 'पंचनामा' के दोहे से स्पष्ट है कि वे उकारांत रूपों के ग्रहण के पक्ष में थे। अतः इन रूपों का चयन और ग्रहण किया गया है। संपादक ने अपनी ओर से कुछ नहीं किया। जो हस्तलेखों में मिला उसी का व्याकरणसंमत होने पर संग्रह किया गया। शब्दों, विशेषणों आदि को उकारांत रूप में रखने की कर्ता की पद्धति विश्लेषणसापेक्ष है। उसका विस्तार यहाँ परित्यक्त किया जाता है। पर जब कोई कहता है कि तुलसीदास 'गुरु' शब्द को 'गुर' नहीं लिख सकते और जब कोई धमकाता है कि यदि 'राम' को 'रामु' लिखा जाएगा तो 'जान आदिकवि नामप्रतापू। भयेउ सुद्ध करि उलटा जापू' से संगति न होगी, क्योंकि 'राम' का ही उलटा तो 'मरा' होगा, 'रामु' से तो 'मुरा' हो जाएगा, तब कहनेवालों का अतिचार उचित नहीं लगता। 'राम' प्रातिपदिक रूप से ही प्रयोजन है, संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश-हिंदी सर्वत्र; 'रामः' या 'रामु' सुबंत रूप से नहीं। यह रामु भी तो 'रामः'

* स्यमोरस्योत्—सिद्धहेमशब्दानुशासन, ४।४३२। † आट्टो णानुस्वारौ—वही, ४।३४२।

का ही विकास है—'रामः' का 'रामो', फिर 'रामु'। यदि संस्कृत 'रामः' का उलटा किया जाए तो 'मःरा=महरा' उच्चारण होगा, मरा नहीं। देश्य भाषा का शब्दरूप 'गुर' ही है, जो 'निगुरा' में देश्य रूप में ही उपस्थित है। प्राचीन हस्तलेखों के अनुसार मानस में 'गुरु' शब्द प्रथमा और द्वितीया में 'रामु' की भाँति प्रयुक्त है।

अंत में गृहीत पाठ के आधार के विवेचन पर आइए। बालकांड में 'कुंज' और 'रघु' मुख्य आधार हैं। जहाँ इन दोनो में से किसी में नवीन पन्ने हैं वहाँ शेष प्रतियों के सहारे पाठ का चयन एक ही से किया गया है। अयोध्याकांड में 'राजा' और 'रघु' के सहारे निर्धारण किया गया है। विवदमान पाठों के लिए प्रेमरामायण की सहायता ली गई है। अरण्यकांड में 'रघु' की 'बढ़ोतरी' परित्यक्त की गई है, पर वर्तनी के लिए वही प्रति प्राचीनतम रूप वाली दिखी। यही स्थिति 'किष्किधा' की है। 'सुंदर' में 'रघु' और 'दुलही' का योग है। 'लंका' में आधारभूत प्रतियों में प्राचीनतम होने पर भी १७०४ ('रघु') का परित्याग कर १७१४ की परंपरा ('राम') के पाठ लिए गए हैं। इस कांड में 'रघु' में दोहों में ही नहीं अन्यत्र भी संशोधन भासित होता है। पाठ और वर्तनी के निर्धारण में 'बाल, नाग, मन' को सहायक रखा गया है। उत्तरकांड के अंत में भी 'राम, बाल, नाग, मन' के सहारे कार्य किया गया है, क्योंकि 'रघु' में वहाँ नवीन पन्ने हैं।

पहले कहा जा चुका है कि मानस के हस्तलेख पूर्ववर्ती और परवर्ती परंपरा के हैं। जहाँ पूर्ववर्ती परंपरा में किसी चौपाई का अभाव है और परवर्ती परंपरा में उसका सद्भाव, वहाँ उसे बड़े कोष्ठक '[ ]' से घेरकर मूल के साथ ही रखा गया है। ऐसा उन्हीं स्थलों पर किया गया है जहाँ छूट जाने की अधिकाधिक संभावना है और 'बढ़ोतरी' परंपरा की अधिकतर विशिष्ट प्रतियों में उपलब्ध है। अन्यत्र की बढ़ोतरी मूल में संनिविष्ट नहीं की गई है।

संक्षेपार्थ हस्तलेखों के नामसंकेत की पद्धति संप्रति अधिकतर अंकों (१, २, ३, ४ आदि) और अक्षरों (क, ख, ग, घ आदि) की है। इनमें से अंकों वाली पद्धति अपेक्षाकृत विशेष अशुद्धिविधायिनी है। तुलसीदास ने जो 'अंक अगुन आखर सगुन' कहा है सो यहाँ भी ठीक है। अगुण की अपेक्षा सगुण का ग्रहण ही श्रेयोमार्ग है। पर इस 'प्रपंच' में केवल 'अक्षर' से कार्यसिद्धि नहीं होती। नाम के बिना रूपबोध नहीं होता—'रूप बिसेष नाम बिनु जानें। करतलगत न परहिं पहिचानें'। अतः नाम के आदि या अंत के प्रायः दो अक्षर लेकर नाम-संकेत बनाए गए हैं। नाम किसका रखा जाए। इसमें थोड़ी भावुकता से काम लिया गया है। जिन लिखकों ने वर्षों परिश्रम करके मानस के हस्तलेख लिखे, संकेत में सर्वप्रथम उनके नाम का उपयोग समुचित जान पड़ा। मानस के प्राचीनतम हस्तलेख कोरे लिपि-जीवियों के लिखे नहीं हैं। जहाँ लिखक का नाम नहीं वहाँ ग्रंथस्वामी का नाम चुना गया। प्रसिद्धि होने पर स्थान विशेष का नाम भी गृहीत हुआ है।

'परिशिष्ट' में आधारभूत प्रतियों के 'संक्षिप्त पाठभेद' के अतिरिक्त बढ़ोतरी, अभाव-सूचक सारणी और प्रक्षेपों का संकलन है। मूल के स्रोतों का समावेश फिर भी नहीं किया जा सका। पाठांतर में हस्तलेख के रूप को यथासाध्य ज्यों का त्यों व्यक्त किया गया है। पर कैथी और नागरी की प्रतियों की लेखशैली में भिन्नता होने के कारण विवदमान रूपों

के अतिरिक्त दोनों वर्तनियों की एकवाक्यता मान ली गई है। कैथी में दंत्य 'स' को 'श' लिखते हैं। उसमें दीर्घ और ह्रस्व इकार की मात्रा के लिए दीर्घ का ही व्यवहार होता है। दीर्घ और ह्रस्व उकार की मात्रा के लिए ह्रस्व का ही प्रयोग करते हैं। 'माया' को 'माआ', 'लज्जा' को 'लज्या' आदि लिखने का चलन है। 'य' के लिए 'ऐ' होता है–

इ, ई	=	इ	उ, ऊ	=	ऊ
ए, ऐ	=	ऐ	ि, ी	=	ी
य	=	ऐ, अ	ु, ू	=	ु
या	=	आ			

प्रक्षेपों में सुझाव बड़े कोष्ठकों '[ ]' के भीतर रखे गए हैं। पाठ के अधिक शब्द छोटे कोष्ठक '( )' से आवृत हैं।

अब इस संस्करण की प्रयासजन्य उपलब्धियों का दिङ्निर्देश मात्र कर देना शेष है। मानस के पाठशोध के लिए किए गए कई स्तुत्य प्रयास हैं—

संस्करण		संवत्
भागवतदास, सरस्वती यंत्रालय, काशी	...	१९४२
रामदीनसिंह, खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर	...	१९४६
कोदोराम, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई	...	१९५२
रामायणपरिचर्यापरिशिष्टप्रकाश, खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर		१९५५
नागरीप्रचारिणी सभा, इंडियन प्रेस, प्रयाग	...	१९५९
तुलसीग्रंथावली (प्रथम भाग), श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस, काशी		१९८०
रामदास गौड़, वणिक् प्रेस, कलकत्ता	...	१९८०
मानसपीयूष, श्रीसीताराम प्रेस, काशी	...	१९८१
विजयानंद त्रिपाठी, लीडर प्रेस, इलाहाबाद	...	१९९३
गीता प्रेस, गोरखपुर	...	१९९७
शंभुनारायण चौबे, हितचिंतक प्रेस, काशी	...	२००५
माताप्रसाद गुप्त, हिंदीसाहित्य प्रेस, प्रयाग	...	२००६

इनमें से अधुनातन चार ही प्रयासों के संबंध में किंचिन्मात्र कहकर संतोष किया जाता है, क्योंकि प्राचीन ग्रंथों के संपादन में इधर जिस विशेष प्रकार की सरणि का अनुसरण किया जाने लगा है उसका अल्पानल्प स्पर्श इन्हीं चारो में दृग्गोचर होता है। विशेष प्रकार की आधुनिक सरणि पर संपादित ग्रंथों के ऐसे संस्करण को 'वैज्ञानिक और समीक्षात्मक संस्करण' नाम से अभिहित किया जाता है। संस्कृत के प्रसिद्ध महाग्रंथों वाल्मीकीय रामायण और महाभारत के ऐसे संस्करणों का संपादन-प्रकाशन हो रहा है। देखादेखी हिंदी में भी इस प्रकार के संस्करणों के संपादन-प्रकाशन का उन्मेष होने लगा है। रामचरितमानस-ऐसे हिंदी सर्वोत्कृष्ट माने जानेवाले ग्रंथ के ऐसे संस्करणों के संपादन-प्रकाशन की ओर हिंदीवालों का ध्यान आरंभ में ही जाना स्वाभाविक है। नागरीप्रचारिणी सभा (वाराणसी) द्वारा प्रकाशित और श्रीशंभुनारायण चौबे द्वारा संपादित संस्करण में संपादक ने सं० १७२१ में लिखित मानस

के हस्तलेख को प्रमुख स्थान दिया है। चौबेजी ने 'मक्षिकास्थाने मक्षिका' रखने का प्रयास किया है। श्रीविजयानंद त्रिपाठी द्वारा संपादित संस्करण में पाठ को संपादित करने और उसमें एकरूपता लाने का भी कुछ प्रयत्न है। गीता प्रेस के संस्करण में एकरूपता-संपादन का भरपूर उद्योग है। इसमें बाल और अयोध्या कांड के अतिरिक्त अन्य कांडों में सं० १७२१ वाली परंपरा का ही प्रधानतया ग्रहण है। डा० माताप्रसाद गुप्त ने स्वकीय संस्करण में वर्तमान वैज्ञानिक पद्धति का पूर्णतया सहारा लिया है और शाखाभेद का उल्लेख करते हुए पाठांतर दिए हैं। मानस के पाठों के संबंध में इन्होंने एक पुस्तक ही प्रकाशित की है।

हिंदी के प्राचीन ग्रंथों के संपादन में संस्कृत-ग्रंथों के संपादन के अनुभव सर्वत्र सहायक नहीं हो सकते। हिंदी की कुछ समस्याएँ संस्कृत से भिन्न हैं। हिंदी की सबसे बड़ी समस्या है मात्रिक छंद की। संस्कृत में छंद वर्णवृत्त हैं। वहाँ छंद में नियत आरोह-अवरोह होता है। इसलिए एक शब्द के स्थान पर दूसरा शब्द रख देने पर अन्यत्र प्रायः परिवर्तन करने की अपेक्षा पाठ-परिवर्तनकर्ता को नहीं हुआ करती। पर हिंदी में किसी शब्द को परिवर्तित करने में प्रवाह पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए बहुत से स्थलों पर पुष्कल परिवर्तन कर देना पड़ता है। अन्य समस्या हस्तलेखों के प्राप्त करने की है। संस्कृत के उक्त दो महाग्रंथों के संपादन में जैसा संभार किया गया है वैसा हिंदी के किसी ग्रंथ के संपादन के लिए आज तक नहीं हो सका और न निकटभविष्य में होने की संभावना है। मानस के काशिराज संस्करण के संपादन में वर्तमान काशीनरेश के व्यक्तिगत प्रभाव से प्राचीनतम दुर्लभ हस्तलेख मूलरूप में, प्रतिच्छायारूप में, अनुलिपिरूप में, जिस रूप में भी मिल सके, उपलब्ध किए जा सके। इसलिए हिंदी में सर्वाधिक संभार से सर्वप्रथम यही संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

मानस के वैज्ञानिक या अवैज्ञानिक संपादन में अभी तक एक बात पर अधिक ध्यान नहीं रखा गया है। किसी प्राचीन हस्तलेख में यथास्थान संशोधन भी होते हैं। संशोधन दो प्रकार के होते हैं। एक तो मूल हस्तलेख के लिखिया या लिखक द्वारा किया गया और दूसरा परवर्ती काल में किसी अन्य द्वारा किया गया। जहाँ संशोधन के पूर्व का पाठ स्पष्ट है वहाँ तो संपादकों ने उसका ठीक उपयोग किया है, अन्यत्र उन्होंने परवर्ती संशोधित पाठ को भी मूल मान लिया है। ऐसा करने में मानस का मूल पाठ उपलब्ध करने में यथास्थान यथेप्सित लाभ नहीं हुआ। अतः मानस के संपादन की अपेक्षा इन संस्करणों के प्रकाशित होने पर भी बनी हुई थी।

यहाँ यह उल्लेख भी कर देना है कि प्राचीन हस्तलेखों में बहुधा कुछ पन्ने किसी कारण लुप्त हो जाते हैं। उनके स्थान पर नए पन्ने जोड़े जाते हैं। इन पन्नों में पाठ परवर्ती ही रखे जा सकते थे। पिछले संस्करणों में इस पर भी ध्यान नहीं दिया गया है। मानस के संपादन में इसी प्रकार की जो अन्य अनेक समस्याएँ हैं उन सबका विस्तृत विवेचन इस अल्प निवेदन में संभव नहीं। यहाँ इतना ही कहा जा सकता है कि कोरी वैज्ञानिक प्रक्रिया से मानस क्या, हिंदी के किसी ग्रंथ का ठीक संपादन नहीं हो सकता। उसके लिए साहित्यिक संपादन की सरणि का परित्याग अहितकर है। वैज्ञानिक प्रक्रिया भारतीय दार्शनिक दृष्टि से विज्ञान होने से जड़ है। साहित्यिक प्रक्रिया दर्शन होने से चेतन है। मूल ग्रंथ के लेखक से लेकर संपादक

तक सभी चेतन प्राणी होते हैं। जड़ की गतिविधि जितनी व्यवस्थित होती है उतनी चेतन की नहीं। अतः चेतन का प्रयास सर्वत्र नियत नहीं होता। वैज्ञानिक प्रक्रिया शब्द पर अधिक ध्यान देती है और साहित्यिक प्रक्रिया शब्द पर ध्यान देते हुए भी अर्थ पर विशेष दृष्टि रखती है। साहित्य शब्द और अर्थ का संपृक्त रूप होता है। अतः शब्द और अर्थ दोनो पर समान दृष्टि ही प्राचीन ग्रंथों के संपादन में उपयोगी हो सकती है। वैज्ञानिक सरणि के नियम का इतना ही सदुपयोग या पालन हो सकता है कि संपादक किसी शब्द को हस्तलेखों में न मिलने पर अर्थबल पर बदल न सके। हिंदी में प्राचीन ग्रंथों के संपादन की साहित्यिक सरणि के प्रवर्तक काशी विश्वविद्यालय के दिवंगत प्राध्यापक आदरणीय लाला भगवानदीन, पंडित रामचंद्र शुक्ल और बाबू श्यामसुंदरदास थे। इनके संपादित ग्रंथों में कुछ ऐसी अच्छाइयाँ हैं जो वैज्ञानिक संपादनों में नहीं रह गई हैं। अतः दोनो सरणियों के तुल्यबल संयोजन से ही सर्वोत्तम कार्य हो सकने की अधिक संभावना है। प्रस्तुत संस्करण में इसी का विनियोग किया गया है।

अब दो-चार उपलब्धियों पर आइए। प्रथम सोपान में दुर्जनों की शंसा या अभिशंसा करते हुए लिखा गया है—

बायस पलिअहिं अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा॥

अर्धाली के 'बायस' के बदले प्राचीन हस्तलेखों में संशोधन के पूर्व का पाठ 'पायस' है। यद्यपि इस अर्धाली में 'बायस' और 'कागा' से होनेवाली द्विरुक्ति का परिहार करने के लिए पर्यायवाची शब्दों का व्यवहार है तथापि यहाँ दो बार उल्लेख की कोई आवश्यकता है नहीं। अनुराग से पालने में 'निरामिषत्व' का ग्रहण दूरारूढ़ है। 'पायस' (खीर) के द्वारा 'निरामिष' की प्रतिद्वंद्विता ठीक ठीक होती है। 'पायस' और 'पलिअहिं' में 'प' का अनुप्रास भी है जिसकी दाद अलंकारप्रेमी देंगे, सो अलग ही। उक्त चारो संस्करणों में 'बायस' ही पाठ गृहीत है। जिन प्राचीनतम हस्तलेखों को उन्होंने आधार बनाया उन्हीं में संशोधन के पूर्व उक्त पाठ है, जिस पर ध्यान नहीं गया।

कैथी लिपि के कारण मानस की निम्नलिखित अर्धाली के दो पाठ हो गए—

तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी। **धिग** धर्मध्वज **धंधक** धोरी॥

प्राचीन पाठ 'धीग धरमध्वज धंध्रक धोरी' है। 'धीग' को कैसे 'धिग' पढ़ लिया गया यह कैथी लिपि बता देगी। वहाँ 'धीग' को 'धीग' और 'धिग' दोनो पढ़ सकते हैं। जिसने 'धीग' को 'धिग' पढ़ा उसने मानस के नियम के विरुद्ध 'धर्मध्वज' को भी पढ़ा। मानस में संस्कृत के दो शब्दों के समस्त होने पर 'संयुक्ताद्यं दीर्घम्' का नियम हिंदी पाठ में नहीं है। 'धंध्रक' शब्द के 'र' को अनावश्यक समझकर 'धंधक' कर दिया गया। इसके अर्थ में आज भी मतभेद है। यह 'धँधरक' का खिंचा रूप है, जिसका दूसरा रूप पूर्वी भाषाओं में 'ढँगरच' चलता है। 'ढंग' या 'ढोंग' रचनेवाला इसका अर्थ होता है। केवल श्रीविजयानंद त्रिपाठी ने अर्थानुसारी पाठ 'धँधरच' रखा है, शेष में 'धंध्रक' का 'र' भी हट गया है। इसका कारण यह है कि बालकांड की सबसे प्राचीन उपलब्ध प्रति 'कुंज' में परवर्ती संशोधित पाठ 'धंधक' है। उसी में संशोधन के पूर्व का पाठ 'धंध्रक' ही है। 'धंधक' का अर्थ झगड़ा, बखेड़ा, द्वंद्व करनेवाला लगाया गया है।

मानस-रूपक में मानसर के चारो ओर की अमराई का उल्लेख करते हुए उसमें होनेवाले 'फूल फल' तथा 'आस्वाद' का रूपक इस प्रकार बाँधा गया है—

सम जम नियम फूल फल ज्ञाना । हरिपद रति रस वेद बखाना ॥

इस अर्धाली के 'रति रस' के स्थान पर 'कुंज' में केवल 'रस' है। इस प्रकार उसमें दो मात्राएँ कम हो गई हैं। 'रघु' में 'रस वर' है। 'रस' मात्र से पूर्ति न होते देख ऐसा किया गया। यह विचार किया ही नहीं गया कि इससे रूपक खंडित हो रहा है। 'कुंज' में पहले संशोधन में यही परवर्ती पाठ (रस वर) लिया गया। सं० १७१४ के आसपास इस पाठ पर फिर विचार हुआ तो उसका संशोधन 'रति रस' किया गया। संशोधक ने रूपक का विचार कर 'रति' शब्द बढ़ाया। 'कुंज' में 'रस' के पहले 'रति' शब्द भी बढ़ा दिया गया। इस प्रकार उसका दूसरा संशोधित पाठ हुआ 'हरिपद रति रस बर वेद बखाना'। इस प्रकार दो मात्राएँ बढ़ गई। सं० १७४३ के लगभग इस पर ध्यान जाने पर फिर संशोधन किया गया और रूपक का ध्यान नहीं रखा गया। संशोधक ने दो 'र' कम कर दिए। वहाँ पाठ हो गया 'हरिपद रति सब वेद बखाना'। इसमें संदेह नहीं कि इन सबमें सर्वोत्तम पाठ 'हरिपद रति रस' ही है। पर मूल लेखक का यह पाठ नहीं है। ऐसी धारणा लेखनसरणि पर विचार करने से प्रतीत होती है। 'कुंज' में संशोधन के पूर्व जो पाठ है उसमें लिखक ने सामान्यतया होनेवाली एक भूल कर दी है। यदि कहीं एक ही आकार-प्रकार के दो शब्द होते हैं तो लिखक भूलकर उनमें से एक ही का ग्रहण करता है। एक ही आकार-प्रकार के शब्द दो बार लिखना लोगों को अभी तक कम पसंद है, लाघव की प्रक्रिया के लिए अब भी 'धीरे धीरे' के बदले 'धीरे २' लिखा जाता है। हस्तलेखों में भी कहीं कहीं दूसरी विधि से यही सरणि अपनाई जाती है। जिस शब्द को दो बार पढ़ना होता है उस पर कोई द्विरुक्तिबोधक चिह्न लगा देते हैं। यहाँ मूल पाठ 'हरिपद रस रस बेद बखाना' जान पड़ता है। दो बार 'रस' शब्द आ जाने से एक 'रस' छूट गया अथवा द्विरुक्तिबोधक चिह्न लगाना लिखक भूल गया। 'रस' का अर्थ प्रेम होता ही है। दो बार 'रस' शब्द से यमकालंकार की जो छटा आती है उसकी प्रशंसा किए बिना साहित्यशास्त्राभ्यासी नहीं रह सकते। इस पाठ के पक्ष में यह भी कहा जा सकता है कि दो बार 'रस' कहने में कथ्य पर जितना बल पड़ता है उतना 'रति रस' कहने से नहीं। वैज्ञानिक पद्धति 'रस रस' ग्रहण के पक्ष में नहीं हो सकती। क्योंकि यह पाठ किसी हस्तलेख में नहीं है। बहुत पहले ही किसी प्रकार यह पाठ छूट गया। प्रस्तुत संस्करण में उक्त संभाव्य पाठ नहीं लिया गया। उसका यहाँ केवल सुझाव ही दिया जा रहा है।

राम के विवाह में जानेवाली बरात में हाथियों के प्रस्थान पर यह अर्धाली है—

चले मत्त गज घंट बिराजी । मनहु सुभग सावन घनराजी ॥

इस अर्धाली में 'घंट बिराजी' व्याकरणविरुद्ध है। 'बिराजी' क्रिया 'घंटि बिराजी' पाठ चाहती है। पर हाथी के गले में 'घंटी'! किसी किसी ने मात्राधिक्य का विचार न कर 'घंटा' पाठ भी धर दिया है। संशोधन के पूर्व दो प्राचीनतम प्रतियों में 'घय' पाठ है। इसी 'घय' को न समझने के कारण 'घंट' संशोधन किया गया। उपरिलिखित पाठ उक्त सभी अधुनातन संस्करणों में गृहीत है। यहाँ वास्तविकता क्या है उस पर दृष्टि जाते ही प्रकृत

पाठ सामने आ जाता है। संशोधन के पूर्व 'कुंज' एवम् 'रघु' में 'घय' है। संशोधन के पूर्व का 'घय' पाठ तत्त्वतः लिखावट की त्रुटि है। मूल पाठ 'घटा' है। 'टा' लिखने में 'ट' की टाँग आकार की पाई से जा मिली और 'घटा' के साथ दुर्घटना घटित हो गई। 'घय' को अनर्थक समझकर 'घंट' बनाया गया। व्याकरण के घटाटोप पर भी किसी नें ध्यान नहीं दिया। संस्कृत में गजघटा-घनघटा का यगपत् वर्णन अनेकत्र है। तुलसीदास ने उसी का अनुग्रहण किया है। यह पाठ तीन ही हस्तलेखों में मिलता है। ये तीनों वाराणसी क्या, उत्तरप्रदेश के बाहर के हैं।

तुलसीदास द्वारा प्रयुक्त संस्कृत शब्दों को ठीक से न समझने से भी परिवर्तन किया गया है। पार्वती सप्तर्षियों से कहती हैं—

देखहु मुनि अविबेकु हमारा। चाहिअ **सदासिवहि** भरतारा॥

'शिव' का एक नाम 'सदाशिव' भी है। इस शब्द का प्रयोग मानस में अन्यत्र है—

विनती सुनहुँ सदासिव मोरी।

'सदा' शिव से पृथक् होकर 'भरतारा' से संबद्ध हो गया। अतः अर्थ को सुस्पष्ट करने के लिए पाठभेद करके व्यत्यय कर दिया गया और नया पाठ हो गया—'चाहिअ सिवहि सदा भरतारा'। पूर्ण वैज्ञानिक संपादन ने यही पाठ ठीक माना है।

कुछ विचार छंदःशुद्धि पर भी। अन्यत्र कलियुगवर्णन में एक चरण अर्थ न बैठने के कारण छंदोविरुद्ध रखा गया है—

बहु दाम सँवारहिं धाम जती। विषया हरि लीन्हि रही बिरती॥

गीता प्रेस और मानसपीयूष ने 'रही' के बदले 'न रहि' पाठ लिया है। इससे छंदोभंग होता है। छंद 'तोटक' है जिसमें चार 'सगण' होते हैं। 'रही' का अर्थ ठीक नहीं लगाया गया। यहाँ 'रही' का अर्थ 'रह गई' नहीं है, 'थी' है। जो 'विरति थी' उसे 'विषय' ने हर लिया। रही सही विरति भी जाती रही।

इसी प्रकार संस्कृत रूपों को बनाए रखने से भी छंदोबाधा उपस्थित हुई है। सामान्यतया निम्नलिखित में कोई बाधा नहीं जान पड़ती—

राम मार्गन गन चले लहलहात जनु ब्याल। (६।९१।१४)

'मार्गन' (भगण) रूप के पढ़ने से काम बन जाता है। पर 'मार्गन' के बदले रेफरहित 'मागन' जैसा रूप रखा जाए तो प्रवाह खंडित होने लगता है। इसलिए यहाँ 'राम मारगन गन' पढ़ने से ही काम चलेगा। यही 'कार्मुक' (६।९३।५) की भी स्थिति है। पूरी मात्रा 'कारमुक' पढ़ने से ही बैठेगी। 'न यावद् उमानाथपादारविंदं' को 'न यावदुमानाथपादारविंदं' लिखने से वर्णन्यूनता होती है।

मानस का काशिराज संस्करण पहले केवल संक्षिप्त पाठांतर सहित ही प्रकाशित होनेवाला था। कार्य एक वर्ष में समाप्त हो गया था। महत्त्वपूर्ण अन्य प्रतियों के संधान ने लगभग एक वर्ष का अवरोध ला दिया। प्रतियों के मिल जाने पर सारा संपादन नए सिरे से करना पड़ा, जिसमें ५–६ महीने लग गए। कार्य समाप्त होते न होते विस्तृत पाठचक्र की पद्धति पर चलने का निश्चय किया गया। संवत् २०१३ से नवीन सरणि से पाठसंकलन होने लगा।

पहले यह कार्य 'रामलीलाशतीसमारोह निधि' के अंतर्गत हो रहा था। सं० २०१४ में काशीनरेश ने सर्वभारतीय काशिराज न्यास को निधिसहित सब कुछ सौंप दिया। उसी समय विस्तृत रूप में संस्करण प्रकाशित करने की योजना बनी।

पाठसंग्रह हो जाने पर सं० २०१८ के मध्य निर्णय किया गया कि मानस का मूल पाठ, और हो सके तो वृहत् पाठांतर वाला खंड भी, प्रकाशित कर दिया जाए। पाठांतरों का यथावांछित संकलन करके उस खंड को प्रकाशित कर देने में बाधा यह खड़ी हुई कि पर्याप्त पाठसंग्राहक ही उपलब्ध न हो सके। इसलिए निश्चय हुआ कि मानस का मूल पाठ संक्षिप्त भमिका, संक्षिप्त पाठभेद, बढ़ोतरी, अभावसूचक सारणी और आधारभूत हस्तलेखों के प्रक्षेपों सहित प्रकाशित हो। इसी अंतिम निश्चय के अनुसार छह मास में ही सारा कार्य समेटना पड़ा। बढ़ोतरी और प्रक्षेप के पाठभेदों का संग्रह संनिविष्ट नहीं किया गया। मुद्रण के लिए यथालब्ध अपेक्षित चिह्न आदि की व्यवस्था कर मूल पाठ मुद्रित किया जाने लगा। नियुक्त अक्षरशोधक ने प्रतिश्रुत होने पर भी मुद्रणारंभ के अवसर पर उत्तरदायित्व का भार वहन करने में निःसंकोच असमर्थता व्यक्त कर दी। मानसविभाग के कार्यकर्ताओं को यह बोझ भी सभालना पड़ा। कार्यकर्ताओं के मुद्रणसंबंधी पूर्वानुभवराहित्य ने भी समन्विति-साहित्य का जैसा संघटन कर दिया उसमें हुई कठिनाइयों के लिए यही कहा जा सकता है कि 'जानैं वेई दिन राति बखाने तें जाय परै दिन राति को अंतर'।

भारतीय परंपरा में कृतज्ञताज्ञप्ति परम धर्म है। आब्रह्मस्तंबपर्यंत सभी के उपकारों के लिए कृतज्ञताप्रकाशन यहाँ प्रमुख कर्तव्य माना जाता रहा है। प्रस्तुत लघुकाय निवेदन में नामोल्लेखपूर्वक सबके प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति की पूरी समाई न होने से विवशता यहाँ भी संक्षेपसरणि का ही अवलंबन कर रही है। सर्वप्रथम मानसप्रणेता तुलसीदास को शतशः प्रणतियाँ, जिनके लोकहृदयाह्लादकारक दिव्य प्रणयन ने ही ऐसा सत्कार्य करने-कराने का सुअवसर समुपस्थित किया। तदनंतर आधारभूत हस्तलेखों के उन लिखकों के प्रति निष्कपट विनति जिन्होंने प्रतियों को शुद्ध रूप में प्रस्तुत करने में धर्मबुद्धि की प्रेरणा से यथासामर्थ्य कोई कोर-कसर नहीं रहने दी। जिन सज्जनों एवम् संस्थाओं ने संपादन-यज्ञ की पूर्णाहुति के लिए वांछित प्रतियाँ प्रदत्त की उन्हें अनेकानेक धन्यवाद।

महाराज काशीनरेश श्रीविभूतिनारायणसिंह सर्वाधिक साधुवाद के भाजन हैं जिन्होंने अपने पूर्वजों के मानसानुराग का रिक्थ योग्यतापूर्वक सँजोया है। श्रीचंद्रधरप्रसादनारायणसिंह (भानुजी) परमाशीर्वाद के पात्र हैं जिनके मानसाभिनिवेश के कारण होनेवाली बाधाओं की अँधियाली निर्बाध ज्योत्स्ना में परिणत होती रही है। मानसविभाग के उपस्थापक प्रिय शिष्य श्रीरामादास शास्त्री एम० ए० अनंताशीर्वादार्ह हैं, जिन्होंने छाया की भाँति अनुगमन करते हुए स्वकीय श्रमशीलता से निरुपाधिक 'लिखक' से सोपाधिक 'सहायक' होकर संपादनकाल की कठिनाइयों की दुष्कृति से परित्राण किया। वर्तमान संपादन-सहायक सर्वश्री भर्ग्यनाथ दुबे एम० ए०, साहित्याचार्य श्रीनरेश झा काव्यतीर्थ, गंगाप्रसाद वाजपेयी पाठशास्त्री तथा भूतपूर्व संपादन-सहायक एवम् पाठसंग्राहक सर्वश्री रामनरेश वर्मा (प्राध्यापक, हिंदीविभाग, काशी विश्वविद्यालय), कृष्णकुमार वाजपेयी साहित्यान्वेषक, रामबली पांडेय एम० ए०, श्रीप्रसाद

एम० ए०, साहित्याचार्य चंद्रशेखर मिश्र एम० ए०, साहित्य-वेदांताचार्य कृष्णाचरण चौधरी एम० ए०, चंद्रभूषण मिश्र बी० ए०, स्वर्गीय चंद्रशेखर शुक्ल बी० ए० आदि सभी साधुवादार्ह हैं जो सत्यशीलता, निःस्पृहता, परानुरक्ति एवम् दत्तचित्तता से दत्त कार्य सुसंपन्न कर मानस-संपादन-सागर में तरणतारण सुयश के भागी हुए। अंत में काशिराज न्यास के कुशल मंत्री श्रीरमेशचंद्र देव को उनके परिकर सहित पुष्कल धन्यवाद, जिनकी विमुग्धकारिणी व्यवस्था ने संपादनकाल में सकंटकता से मार्ग को सतत निरवरोध रखा।

इसमें अज्ञात रूप से घटित स्खलनों, प्रमादों एवम् अपराधों के लिए संस्कारार्थी, परिष्कारार्थी और क्षमार्थी हूँ। यदि इस संस्करण से ग्रहीताओं का तोष-परितोष-संतोष हुआ तो मैं आश्वस्त, कृतकार्य और सफलकृत्य होऊँगा।

विवाहपंचमी, आग्रहायण,
सं० २०१८ वैक्रम,
वाणी-वितान भवन,
ब्रह्मनाल, वाराणसी।

विश्वनाथप्रसाद मिश्र

अनुक्रमणिका

रामचरितमानस

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसामपि ।
मंगलानां च कर्त्तारौ वंदे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥
भवानीशंकरौ वंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यंति सिद्धाः स्वांतस्थमीश्वरं ॥ २ ॥
वंदे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणं ।
यमाश्रितो हि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र वंद्यते ॥ ३ ॥
सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ।
वंदे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥
उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीं ।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं रामवल्लभां ॥ ५ ॥
यन्मायावशवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवांभोधेस्तितीर्षावतां
वंदेहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिं ॥ ६ ॥
नानापुराणनिगमागमसंमतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि ।
स्वांतःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथाभाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति ॥ ७ ॥

सोरठा। जो सुमिरत सिधि होइ गननायक करिबर बदन ।
करौ अनुग्रह सोइ बुद्धिरासि सुभ गुन सदन ॥ १ ॥
मूक होइ बाचाल पंगु चढ़ै गिरिबर गहन ।
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवौ सकल कलिमल दहन ॥ २ ॥
नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन ।
करौ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन ॥ ३ ॥
कुंद इंदु सम देह उमारमन करुना अयन ।
जाहि दीन पर नेह करौ कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥

बंदौं गुरपद कंज कृपासिंधु नररूप हरि ।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबिकर निकर ।। ५ ।।
बंदौं गुरपद पदुम परागा । सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ।।
अमिअ मूरिमय चूरनु चारू । समन सकल भवरुज परिवारू ।।
सुकृत संभु तन बिमल बिभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ।।
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी । किएँ तिलकु गुनगन बसकरनी ।।
श्रीगुरपद नख मनिगन जोती । सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती ।।
दलन मोह तम सो सुप्रकासू । बड़ेँ भाग उर आवइ जासू ।।
उघरहिँ बिमल बिलोचन ही के । मिटहिँ दोष दुख भव रजनी के ।।
सूझहिँ रामचरित मनि मानिक । गुपुत प्रगट जहँ जो जेहिँ खानिक ।।
दोहा । जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखहिँ सैल बन भूतल भूरि निधान ।। १ ।।
गुरपद रज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिअ दृगदोष बिभंजन ।।
तेहि करि बिमल बिबेक बिलोचन । बरनउँ रामचरित भवमोचन ।।
बंदौं प्रथम महीसुरचरना । मोहजनित संसय सब हरना ।।
सुजनसमाज सकल गुन खानी । करौं प्रनाम सप्रेम सुबानी ।।
साधु सरिस सुभचरित कपासू । निरस बिसद गुनमय फल जासू ।।
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । बंदनीय जेहिँ जग जसु पावा ।।
मुद मंगल मय संतसमाजू । जो जग जंगम तीरथराजू ।।
रामभगति जहँ सुरसरिधारा । सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा ।।
बिधि निषेध मय कलिमल हरनी । करमकथा रबिनंदिनि बरनी ।।
हरि हर कथा बिराजति बेनी । सुनत सकल मुद मंगल देनी ।।
बटु बिस्वासु अचल निज धरमा । तीरथ साज समाज सुकरमा ।।
सबहि सुलभ सब दिन सब देसा । सेवत सादर समन कलेसा ।।
अकथ अलौकिक तीरथराऊ । देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ ।।
दोहा । सुनि समुझहिँ जन मुदित मन मज्जहिँ अति अनुराग ।
लहहिँ चारि फल अछत तनु साधुसमाज प्रयाग ।। २ ।।
मज्जनफलु पेखिअ ततकाला । काक होहिँ पिक बकउ मराला ।।

सुनि आचरज करै जनि कोई। सतसंगति महिमा नहिँ गोई॥
बालमीकि नारद घटजोनी। निज निज मुखनि कही निज होनी॥
जलचर थलचर नभचर नाना। जे जड़ चेतन जीव जहाना॥ ४
मति कीरति गति भूति भलाई। जब जेहिँ जतन जहाँ जेहिँ पाई॥
सो जानब सतसंग प्रभाऊ। लोकहुँ बेद न आन उपाऊ॥
बिनु सतसंग बिबेक न होई। रामकृपा बिनु सुलभ न सोई॥
सतसंगति मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सब साधन फूला॥ ८
सठ सुधरहिँ सतसंगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई॥
बिधिबस सुजन कुसंगति परहीँ। फनिमनि सम निज गुन अनुसरहीँ॥
बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी। कहत साधुमहिमा सकुचानी॥
सो मो सन कहि जात न कैसैँ। साकबनिक मनिगन गुन जैसैँ॥ १२
दोहा। बंदौँ संत समानचित हित अनहित नहिँ कोउ।
अंजलिगत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोउ॥
संत सरलचित जगतहित जानि सुभाउ सनेहु।
बालबिनय सुनि करि कृपा रामचरन रति देहु॥ ३॥ १६
बहुरि बंदि खलगन सति भाएँ। जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ॥
परहित हानि लाभ जिन्ह केरेँ। उजरे हरष बिषाद बसेरेँ॥
हरि हर जस राकेस राहु से। पर अकाज भट सहसबाहु से॥
जे परदोष लखहिँ सहसाँखी। परहित घृत जिन्ह के मन माँखी॥ ४
तेज कृसानु रोष महिषेसा। अघ अवगुन धन धनी धनेसा॥
उदय केतु सम हित सब ही के। कुंभकरन सम सोवत नीके॥
पर अकाज लगि तनु परिहरहीँ। जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीँ॥
बंदौँ खल जस सेष सरोषा। सहस बदन बरनइँ परदोषा॥ ८
पुनि प्रनवौँ पृथुराज समाना। पर अघ सुनइ सहस दस काना॥
बहुरि सक्र सम बिनवौँ तेही। संतत सुरानीक हित जेही॥
बचन बज्र जेहि सदा पिआरा। सहस नयन परदोष निहारा॥
दोहा। उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिँ खल रीति। १२
जानि पानि जुग जोरि जनु बिनती करइ सप्रीति॥ ४॥

मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा। तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा॥
पायस पलिअहिँ अति अनुरागा। होहिँ निरामिष कबहुँ कि कागा॥
बंदौं संत असज्जन चरना। दुखप्रद उभय बीच कछु बरना॥
बिछुरत एक प्रान हरि लेई। मिलत एक दुख दारुन देई॥ ४
उपजहिँ एक संग जग माहीँ। जलज जोँक जिमि गुन बिलगाहीँ॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू। जनक एक जग जलधि अगाधू॥
भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुजस अपलोक बिभूती॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू। गरल अनल कलिमलसरि ब्याधू॥ ८
गुन अवगुन जानत सब कोई। जो जेहि भाव नीक तेहि सोई॥

दोहा। भलो भलाइहि पै लहै लहै निचाइहिँ नीचु।
सुधा सराहिअ अमरता गरल सराहिअ मीचु॥ ५॥

खल अघ अगुन साधु गुन गाहा। उभय अपार उदधि अवगाहा॥
तेहि तेँ कछु गुन दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने॥
भलेउ पोच सब बिधि उपजाये। गनि गुन दोष बेद बिलगाये॥
कहहिँ बेद इतिहास पुराना। बिधिप्रपंचु गुन अवगुन साना॥ ४
दुख सुख पाप पुन्य दिन राती। साधु असाधु सुजाति कुजाती॥
दानव देव ऊँच अरु नीचू। अमिअ सुजीवनु माहुरु मीचू॥
माया ब्रह्म जीव जगदीसा। लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा॥
कासी मग सुरसरि कविनासा। मरु मारव महिदेव गवासा॥ ८
सरग नरक अनुराग बिरागा। निगम अगम गुन दोष बिभागा॥

दोहा। जड़ चेतन गुन दोष मय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन ग्रहहिँ पय परिहरि बारि बिकार॥ ६॥

अस बिबेक जब देइ बिधाता। तब तजि दोष गुनहिँ मनु राता॥
काल सुभाउ करम बरिआई। भलेउ प्रकृतिबस चुकइ भलाईँ॥
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीँ। दलि दुख दोष बिमल जसु देहीँ॥
खलउ करहिँ भल पाइ सुसंगू। मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू॥ ४
लखि सुबेष जग बंचक जेऊ। बेषप्रताप पूजिअहिँ तेऊ॥
उघरहिँ अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू॥

कियेहु कुबेषु साधु सनमानू। जिमि जग जामवंत हनुमानू॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहुँ बेद बिदित सब काहू॥
गगन चढ़इ रज पवनप्रसंगा। कीचहि मिलइ नीच जल संगा॥
साधु असाधु सदन सुक सारीं। सुमिरहिँ राम्र देहिँ गनि गारीं॥
धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई॥
सोइ जल अनल अनिल संघाता। होइ जलद जग जीवनदाता॥

दोहा। ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग।
होहिँ कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिँ सुलच्छन लोग॥
सम प्रकास तम पाख दुहुँ नामभेद बिधि कीन्ह।
ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह॥
जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदौं सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि॥
देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब।
बंदौं किंनर रजनिचर कृपा करहु अब सर्ब॥ ७॥

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ बासी॥
सीय राम मय सब जग जानी। करौं प्रनाम जोरि जुग पानी॥
जानि कृपाकर किंकर मोहू। सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू॥
निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं। तातें बिनय करौं सब पाहीं॥
करन चहौं रघुपति गुन गाहा। लघु मति मोरि चरित अवगाहा॥
सूझ न एकौ अंग उपाऊ। मन मति रंक मनोरथ राऊ॥
मति अति नीचि ऊँचि रुचि आछी। चहिअ अमिअ जग जुरै न छाछी॥
छमिहहिँ सज्जन मोरि ढिठाई। सुनिहहिँ बालबचन मन लाई॥
जौं बालक कह तोतरि बाता। सुनहिँ मुदित मन पितु अरु माता॥
हँसिहहिँ कूर कुटिल कुबिचारी। जे परदूषन भूषन धारी॥
निज कबित्त केहि लाग न नीका। सरस होउ अथवा अति फीका॥
जे परभनिति सुनत हरषाहीं। ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं॥
जग बहु नर सर सरि सम भाई। जे निज बाढ़ि बढ़हिँ जल पाई॥
सज्जन सकृत सिंधु सम कोई। देखि पूर बिधु बाढ़ै जोई॥

दोहा। भाग छोट अभिलाषु बड़ करउँ एक बिस्वास।
पैहहिँ सुख सुनि सुजन सब खल करिहहिँ उपहास ॥ ८ ॥
खलपरिहास होइ हित मोरा। काक कहहिँ कलकंठ कठोरा ॥
हंसहि बक गादुर चातकही। हँसहिँ मलिन खल बिमल बतकही ॥
कबितरसिक न रामपद नेहू। तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू ॥
भाषाभनिति भोरि मति मोरी। हँसिबे जोग हँसें नहिँ खोरी ॥
प्रभुपद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहिँ कथा सुनि लागिहि फीकी ॥
हरि हर पद रति मति न कुतरकी। तिन्ह कहुँ मधुर कथा रघुबर की ॥
रामभगति भूषित जिअ जानी। सुनिहहिँ सुजन सराहि सुबानी ॥
कबि न होउँ नहि बचन प्रबीनू। सकल कला सब बिद्या हीनू ॥
आखर अरथ अलंकृति नाना। छंद प्रबंध अनेक बिधाना ॥
भावभेद रसभेद अपारा। कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा ॥
कबितबिबेक एक नहि मोरें। सत्य कहौं लिखि कागर कोरें ॥
दोहा। भनिति मोरि सब गुन रहित बिस्वबिदित गुन एक।
सो बिचारि सुनिहहिँ सुमति जिन्ह कें बिमल बिबेक ॥ ९ ॥
एहि महु रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥
मंगलभवन अमंगलहारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥
भनिति बिचित्र सुकबिकृत जोऊ। राम नाम बिनु सोह न सोऊ ॥
बिधुबदनी सब भाँति सँवारी। सोह न बसन बिना बर नारी ॥
सब गुन रहित कुकबिकृत बानी। राम नाम जस अंकित जानी ॥
सादर कहहिँ सुनहिँ बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुनग्राही ॥
जदपि कबित रस एकौ नाहीँ। रामप्रताप प्रगट एहि माहीँ ॥
सोइ भरोस मोरें मन आवा। केहिँ न सुसंग बड़त्तनु पावा ॥
धूमौ तजै सहज करुआई। अगरुप्रसंग सुगंध बसाई ॥
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी। रामकथा जग मंगलकरनी ॥
छंद। मंगलकरनि कलिमलहरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।
गति कूर कबिता सरित की ज्यौं सरित पावन पाथ की ॥
प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी।

भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी ॥

दोहा। प्रिय लागिहि अति सबहि मम भनिति रामजस संग।
दारु बिचारु कि करइ कोउ बंदिअ मलयप्रसंग ॥ १६
स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान।
गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान ॥१०॥

मनि मानिक मुकुता छबि जैसी। अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी ॥
नृपकिरीट तरुनीतनु पाई। लहहिं सकल सोभा अधिकाई ॥
तैसेहि सुकबि कबित बुध कहहीं। उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं ॥
भगतिहेतु बिधिभवन बिहाई। सुमिरत सारद आवति धाई ॥ ४
रामचरित सर बिनु अन्हवायँ। सो श्रम जाइ न कोटि उपायँ ॥
कबि कोबिद अस हृदयँ बिचारी। गावहिं हरिजस कलिमलहारी ॥
कीन्हे प्राकृत जन गुन गाना। सिर धुनि गिरा लगत पछिताना ॥
हृदय सिंधु मति सीप समाना। स्वाती सारद कहहिं सुजाना ॥ ८
जौं बरषै बर बारि बिचारू। होहिं कबित मुकुतामनि चारू ॥

दोहा। जुगुति बेधि पुनि पोहिअहिं रामचरित बर ताग।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग ॥११॥

जे जनमे कलिकाल कराला। करतब बायस बेष मराला ॥
चलत कुपंथ बेदमग छाँडे। कपट कलेवर कलिमल भाँडे ॥
बंचक भगत कहाइ राम के। किंकर कंचन कोह काम के ॥
तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी। धींग धरमध्वज धंधक धोरी ॥ ४
जौं अपने अवगुन सब कहऊँ। बाढ़ै कथा पार नहि लहऊँ ॥
तातें मैं अति अलप बखाने। थोरे महुँ जानिहहिं सयाने ॥
समुझि बिबिध बिधि बिनती मोरी। कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी ॥
एतेहु पर करिहहिं ते असंका। मोहि तें अधिक जे जड़ मति रंका ॥ ८
कबि न होउँ नहिं चतुर कहावौं। मति अनुरूप रामगुन गावौं ॥
कहँ रघुपति के चरित अपारा। कहँ मति मोरि निरत संसारा ॥
जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं। कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥
समुझत अमित रामप्रभुताई। करत कथा मन अति कदराई ॥ १२

दोहा। सारद सेष महेस विधि आगम निगम पुरान।
नेति नेति कहि जासु गुन करहिँ निरंतर गान ॥१२॥

सब जानत प्रभुप्रभुता सोई। तदपि कहेँ बिनु रहा न कोई ॥
तहाँ वेद अस कारन राखा। भजनप्रभाउ भाँति बहु भाषा ॥
एक अनीह अरूप अनामा। अज सच्चिदानंद परधामा ॥
ब्यापक बिस्वरूप भगवाना। तेहिँ धरि देह चरित कृत नाना ॥ ४
सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी ॥
जेहि जन पर ममता अति छोहू। जेहिँ करुना करि कीन्ह न कोहू ॥
गई बहोर गरीबनिवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू ॥
बुध बरनहिँ हरिजस अस जानी। करहिँ पुनीत सुफल निज बानी ॥ ८
तेहि बल मैं रघुपति गुन गाथा। कहिहउँ नाइ रामपद माथा ॥
मुनिन्ह प्रथम हरिकीरति गाई। तेहि मग चलत सुगम मोहि भाई ॥

दोहा। अति अपार जे सरितबर जौँ नृप सेतु कराहिँ।
चढ़ि पिपीलिकउ परम लघु बिनु श्रम पारहि जाहिँ ॥१३॥ १२

एहि प्रकार बल मनहि देखाई। करिहौँ रघुपतिकथा सुहाई ॥
ब्यास आदि कबिपुंगव नाना। जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना ॥
चरन कमल बंदौँ तिन्ह केरे। पूरहुँ सकल मनोरथ मेरे ॥
कलि के कबिन्ह करौँ परनामा। जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा ॥ ४
जे प्राकृत कबि परम सयाने। भाषा जिन्ह हरिचरित बखाने ॥
भये जे अहहिँ जे होइहहिँ आगेँ। प्रनवौँ सबहि कपट सब त्यागेँ ॥
होहु प्रसन्न देहु बरदानू। साधुसमाज भनिति सनमानू ॥
जो प्रबंध बुध नहिँ आदरहीँ। सो श्रम बादि बाल कबि करहीँ ॥ ८
कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई ॥
राम सुकीरति भनिति भदेसा। असमंजस अस मोहि अँदेसा ॥
तुम्हरी कृपाँ सुलभ सोउ मोरेँ। सिअनि सुहावनि टाट पटोरेँ ॥
[करहु अनुग्रह अस जिअ जानी। बिमल जसहि अनुहरै सुबानी ॥] १२

दोहा। सरल कबित कीरति बिमल सोइ आदरहिँ सुजान।
सहज बयर बिसराइ रिपु जो सुनि करहिँ बखान ॥

सो न होइ बिनु बिमल मति मोहि मतिबल अति थोर।
करहु कृपा हरिजस कहउँ पुनि पुनि करउँ निहोर॥
कबि कोबिद रघुबरचरित मानस मंजु मराल।
बालबिनय सुनि सुरुचि लखि मो पर होहु कृपाल॥
सोरठा। बंदौं मुनिपद कंजु रामायन जेहिं निरमयेउ।
सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूषन सहित॥
बंदौं चारिउ बेद भव बारिधि बोहित सरिस।
जिन्हहि न सपनेहु खेद बरनत रघुबर बिसद जसु॥
बंदौं बिधिपद रेनु भवसागर जेहिं कीन्ह जहँ।
संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल बिष बारुनी॥
दोहा। बिबुध बिप्र बुध ग्रह चरन बंदि कहौं कर जोरि।
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि॥१४॥
पुनि बंदौं सारद सुरसरिता। जुगल पुनीत मनोहर चरिता॥
मज्जन पान पाप हर एका। कहत सुनत एक हर अबिबेका॥
गुर पितु मातु महेस भवानी। प्रनवौं दीनबंधु दिनदानी॥
सेवक स्वामि सखा सियपी के। हित निरुपधि सब बिधि तुलसी के॥
कलि बिलोकि जगहित हर गिरिजा। साबर मंत्रजाल जिन्ह सिरिजा॥
अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रगट प्रभाउ महेसप्रतापू॥
सो उमेस मोहि पर अनुकूला। करिहि कथा मुद मंगल मूला॥
सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ। बरनउँ रामचरित चित चाऊ॥
भनिति मोरि सिवकृपा बिभाती। ससिसमाज मिलि मनहुँ सुराती॥
जे एहि कथहि सनेह समेता। कहिहहिँ सुनिहहिँ समुझि सचेता॥
होइहहिँ रामचरन अनुरागी। कलिमल रहित सुमंगल भागी॥
दोहा। सपनेहु साचेहु मोहि पर जौँ हर गौरि पसाउ।
तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ॥१५॥
बंदौँ अवध पुरी अति पावनि। सरजू सरि कलिकलुष नसावनि॥
प्रनवौँ पुर नर नारि बहोरी। ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी॥
सियनिंदक अघ ओघ नसाए। लोक बिसोक बनाइ बसाए॥

वंदौं कौसल्या दिसि प्राची। कीरति जासु सकल जग माची॥ ४
प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू। बिस्व सुखद खल कमल तुसारू॥
दसरथ राउ सहित सब रानी। सुकृत सुमंगल मूरति मानी॥
करौं प्रनाम करम मन बानी। करहु कृपा सुतसेवक जानी॥
जिन्हहिं बिरचि बड़ भयेउ बिधाता। महिमा अवधि राम पितु माता॥ ८
सोरठा। बंदौं अवधभुआल सत्य प्रेम जेहि रामपद।
बिछुरत दीनदयाल प्रिय तनु तृन इव परिहरेउ॥१६॥
प्रनवौं परिजन सहित बिदेहू। जाहि रामपद गूढ़ सनेहू॥
जोग भोग महँ राखेउ गोई। राम बिलोकत प्रगटेउ सोई॥
प्रनवौं प्रथम भरत के चरना। जासु नेम ब्रत जाइ न बरना॥
रामचरन पंकज मन जासू। लुबुध मधुप इव तजै न पासू॥ ४
बंदौं लछिमनपद जलजाता। सीतल सुभग भगत सुखदाता॥
रघुपतिकीरति बिमल पताका। दंड समान भयेउ जस जाका॥
सेष सहस्रसीस जग कारन। जो अवतरेउ भूमिभय टारन॥
सदा सो सानुकूल रह मो पर। कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर॥ ८
रिपुसूदनपद कमल नमामी। सूर सुसील भरत अनुगामी॥
महावीर बिनवौं हनुमाना। राम जासु जस आपु बखाना॥
सोरठा। प्रनवौं पवनकुमार खल बनपावक ज्ञानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥१७॥ १२
कपिपति रिंछ निसाचर राजा। अंगदादि जे कीस समाजा॥
बंदौं सब के चरन सुहाये। अधम सरीर राम जिन्ह पाये॥
रघुपतिचरन उपासक जेते। खग मृग सुर नर असुर समेते॥
बंदौं पद सरोज सब केरे। जे बिनु काम राम के चेरे॥ ४
सुक सनकादि भगत मुनि नारद। जे मुनिवर बिज्ञानबिसारद॥
प्रनवौं सबहि धरनि धरि सीसा। करहु कृपा जन जानि मुनीसा॥
जनकसुता जगजननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की॥
ताके जुग पद कमल मनावौं। जासु कृपा निर्मल मति पावौं॥ ८
पुनि मन बचन कर्म रघुनायक। चरन कमल बंदौं सब लायक॥

राजिवनयन धरेँ धनु सायक । भगत बिपति भंजन सुखदायक ॥

दोहा । गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न ।
बंदौं सीता राम पद जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न ॥१८॥ १२

बंदौं नाम राम रघुबर को । हेतु कृसानु भानु हिमकर को ॥
बिधि हरि हर मय बेद प्रान सो । अगुन अनूपम गुननिधान सो ॥
महामंत्र जोइ जपत महेसू । कासीं मुकुतिहेतु उपदेसू ॥
महिमा जासु जान गनराऊ । प्रथम पूजिअत नामप्रभाऊ ॥ ४
जान आदिकबि नामप्रतापू । भयेउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥
सहस नाम सम सुनि सिववानी । जपि जेईं पियसंग भवानी ॥
हरषे हेतु हेरि हर ही को । किये भूषनु तियभूषन ती को ॥
नामप्रभाउ जान सिव नीको । कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥ ८

दोहा । बरषा रितु रघुपतिभगति तुलसी सालि सुदास ।
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास ॥१९॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ । बरन बिलोचन जनजियँ जोऊ ॥
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू । लोक लाहु परलोक निबाहू ॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके । राम लखन सम प्रिय तुलसी के ॥
बरनत बरनप्रीति बिलगाती । ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती ॥ ४
नर नारायन सरिस सुभ्राता । जगपालक बिसेषि जनत्राता ॥
भगति सुतिअ कल करनबिभूषन । जगहित हेतु बिमल बिधु पूषन ॥
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के । कमठ सेष सम धर बसुधा के ॥
जनमन मंजु कंज मधुकर से । जीह जसोमति हरि हलधर से ॥ ८

दोहा । एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ ।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ ॥२०॥

समुझत सरिस नाम अरु नामी । प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥
नाम रूप दुइ ईस उपाधी । अकथ अनादि सुसामुझि साधी ॥
को बड़ छोट कहत अपराधू । सुनि गुन भेदु समुझिहहिं साधू ॥
देखिअहि रूप नाम आधीना । रूपज्ञान नहि नाम बिहीना ॥ ४
रूप बिसेष नाम बिनु जानें । करतलगत न परहिं पहिचानें ॥

सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखें। आवत हृदयँ सनेह बिसेषें ॥
नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानी ॥
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी ॥ ८
दोहा। राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भीतर बाहरहुँ जौं चाहसि उजिआर ॥२१॥
नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी। बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी ॥
ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा ॥
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ। नाम जीह जपि जानहु तेऊ ॥
साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ ॥ ४
जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥
रामभगत जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥
चहू चतुर कहुँ नाम अधारा। ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा ॥
चहुँ जुग चहुँ श्रुति नामप्रभाऊ। कलि बिसेषि नहि आन उपाऊ ॥ ८
दोहा। सकल कामना हीन जे रामभगति रस लीन।
नाम पेम पीयूष हद तिन्हहुँ किए मन मीन ॥२२॥
अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥
मोरें मत बड़ नामु दुहू तें। किये जेहि जुग निज बस निज बूते ॥
प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की। कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की ॥
एकु दारुगत देखिअ एकू। पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू ॥ ४
उभय अगम जुग सुगम नाम तें। कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें ॥
ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन घन आनँद रासी ॥
अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी ॥
नामनिरूपन नामजतन तें। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें ॥ ८
दोहा। निरगुन तें येहि भाँति बड़ नामप्रभाउ अपार।
कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार ॥२३॥
राम भगतहित नरतनु धारी। सहि संकट किये साधु सुखारी ॥
नामु सप्रेम जपत अनयासा। भगत होहिं मुद मंगल बासा ॥
राम एक तापसतिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥

रिषिहित राम सुकेतुसुता की । सहित सेन सुत कीन्हि बिबाकी ।। ४
सहित दोष दुख दास दुरासा । दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा ।।
भंजेउ राम आपु भवचापू । भवभय भंजन नामप्रतापू ।।
दंडक बनु प्रभु कीन्ह सुहावन । जनमन अमित नाम किये पावन ।।
निसिचर निकर दले रघुनंदन । नामु सकल कलिकलुष निकंदन ।। ८

दोहा । सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ ।
नाम उधारे अमित खल बेदबिदित गुनगाथ ।।२४।।

राम सुकंठ बिभीषन दोऊ । राखे सरन जान सबु कोऊ ।।
नाम गरीब अनेक नेवाजे । लोक बेद बर बिरिद बिराजे ।।
राम भालु कपि कटकु बटोरा । सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा ।।
नामु लेत भव सिंधु सुखाहीँ । करहु बिचारु सुजन मन माहीँ ।। ४
राम सकुल रन रावनु मारा । सीय सहित निज पुर पगु धारा ।।
राजा रामु अवध रजधानी । गावत गुन सुर मुनि बर बानी ।।
सेवक सुमिरत नामु सप्रीती । बिनु श्रम प्रबल मोहदलु जीती ।।
फिरत सनेहँ मगन सुख अपनेँ । नामप्रसाद सोच नहि सपनेँ ।। ८

दोहा । ब्रह्म राम तेँ नामु बड़ बरदायक बरदानि ।
रामचरित सत कोटि महँ लिये महेस जियँ जानि ।।२५।।

नामप्रसाद संभु अबिनासी । साजु अमंगल मंगलरासी ।।
सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी । नामप्रसाद ब्रह्मसुख भोगी ।।
नारद जानेउ नामप्रतापू । जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू ।।
नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू । भगतसिरोमनि भे प्रहलादू ।। ४
ध्रुव सगलानि जपेउ हरिनाऊँ । पायेउ अचल अनूपम ठाऊँ ।।
सुमिरि पवनसुत पावन नामू । अपने बस करि राखे रामू ।।
अपरु अजामिलु गजु गनिकाऊ । भये मुकुत हरिनाम प्रभाऊ ।।
कहउँ कहाँ लगि नामबड़ाई । रामु न सकहिँ नामगुन गाई ।। ८

दोहा । नामु राम को कलपतरु कलि कल्याननिवासु ।
जो सुमिरत भयो भाँग तेँ तुलसी तुलसीदासु ।।२६।।

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका । भये नाम जपि जीव बिसोका ।।

बेद पुरान संत मत एहू। सकल सुकृत फल रामसनेहू॥
ध्यानु प्रथम जुग मखबिधि दूजें। द्वापर परितोषत प्रभु पूजें॥
कलि केवल मलमूल मलीना। पाप पयोनिधि जनमन मीना॥ ४
नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जगजाला॥
राम नाम कलि अभिमतदाता। हित परलोक लोक पितु माता॥
नहि कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू॥
कालनेमि कलि कपटनिधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू॥ ८
दोहा। राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल॥२७॥
भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ॥
सुमिरि सो नाम रामगुन गाथा। करौं नाइ रघुनाथहि माथा॥
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती। जासु कृपाँ नहि कृपा अघाँती॥
राम सुस्वामि कुसेवकु मो सो। निज दिसि देखि दयानिधि पोसो॥ ४
लोकहुँ बेद सुसाहिब रीती। बिनय सुनत पहिचानत प्रीती॥
गनी गरीब ग्राम नर नागर। पंडित मूढ़ मलीन उजागर॥
सुकबि कुकबि निज मति अनुहारी। नृपहि सराहत सब नर नारी॥
साधु सुजान सुसील नृपाला। ईस अंस भव परम कृपाला॥ ८
सुनि सनमानहि सबहि सुबानी। भनिति भगति नति गति पहिचानी॥
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ। जानसिरोमनि कोसलराऊ॥
रीझत राम सनेह निसोतें। को जग मंद मलिनमति मो तें॥
दोहा। सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिं राम कृपालु। १२
उपल किये जलजान जेहिं सचिव सुमति कपि भालु॥
हौंहु कहावत सबु कहत राम सहत उपहास।
साहिब सीतानाथ सो सेवक तुलसीदास॥२८॥
अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी। सुनि अघ नरकहुँ नाक सँकोरी॥
समुझि सहम मोहि अपडर अपने। सो सुधि राम कीन्हि नहि सपने॥
सुनि अवलोकि सुचित चख चाही। भगति मोरि मति स्वामि सराही॥
कहत नसाइ होइ हिअँ नीकी। रीझत राम जानि जन जी की॥ ४

रहति न प्रभुचित चूक किये की। करत सुरति सय बार हिये की॥
जेहि अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली। फिरि सुकंठ सोइ कीन्हि कुचाली॥
सोइ करतूति बिभीषन केरी। सपनेहु सो न राम हियँ हेरी॥
ते भरतहि भेंटत सनमाने। रामसभाँ रघुबीर बखाने॥ ८

दोहा। प्रभु तरुतर कपि डार पर ते किये आपु समान।
तुलसी कहूँ न राम से साहिब सीलनिधान॥
राम निकाईं रावरी है सब ही को नीक।
जौं यह साँची है सदा तौ नीको तुलसी क॥ १२
एहिं बिधि निज गुन दोष कहि सबहि बहुरि सिरु नाइ।
बरनउँ रघुबर बिसद जसु सुनि कलिकलुष नसाइ॥२९॥

जागबलिक जो कथा सुहाई। भरद्वाज मुनिबरहि सुनाई॥
कहिहौँ सोइ संवाद बखानी। सुनहु सकल सज्जन सुखु मानी॥
संभु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा॥
सोइ सिव कागभुसुंडिहि दीन्हा। रामभगत अधिकारी चीन्हा॥ ४
तेहि सन जागबलिक पुनि पावा। तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा॥
ते श्रोता बकता समसीला। सबदरसी जानहिँ हरिलीला॥
जानहिँ तीनि काल निज ज्ञाना। करतलगत आमलक समाना॥
औरौ जे हरिभगत सुजाना। कहहिँ सुनहिँ समुझहिँ बिधि नाना॥ ८

दोहा। मैँ पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत।
समुझी नहिँ तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत॥
श्रोता बकता ज्ञाननिधि कथा राम कै गूढ़।
किमि समुझौँ मैँ जीव जड़ कलिमल ग्रसित बिमूढ़॥३०॥ १२

तदपि कही गुर बारहि बारा। समुझि परी कछु मति अनुसारा॥
भाषाबद्ध करबि मैँ सोई। मोरे मन प्रबोध जेहि होई॥
जस कछु बुधि बिबेक बल मेरेँ। तस कहिहौँ हियँ हरि केँ प्रेरेँ॥
निज संदेह मोह भ्रम हरनी। करौँ कथा भव सरिता तरनी॥ ४
बुध बिश्राम सकल जन रंजनि। रामकथा कलिकलुष बिभंजनि॥
रामकथा कलि पन्नग भरनी। पुनि बिबेक पावक कहुँ अरनी॥

रामकथा कलि कामद गाई । सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ॥
सोइ बसुधातल सुधातरंगिनि । भय भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि ॥ ८
असुरसेन सम नरक निकंदिनि । साधु बिबुध कुल हित गिरिनंदिनि ॥
संतसमाज पयोधि रमा सी । बिस्वभार भर अचल छमा सी ॥
जमगन मुह मसि जग जमुना सी । जीवन मुकुति हेतु जनु कासी ॥
रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी । तुलसिदास हित हिय हुलसी सी ॥ १२
सिवप्रिय मेकल सैल सुता सी । सकल सिद्धि सुख संपति रासी ॥
सदगुन सुरगन अंब अदिति सी । रघुबरभगति प्रेम परमिति सी ॥

दोहा । रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु ॥३१॥ १६

रामचरित चिंतामनि चारू । संत सुमति तिअ सुभग सिँगारू ॥
जगमंगल गुनग्राम राम के । दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥
सदगुर ग्यान बिराग जोग के । बिबुधबैद भव भीम रोग के ॥
जननि जनक सिअ राम पेम के । बीज सकल ब्रत धरम नेम के ॥ ४
समन पाप संताप सोक के । प्रिय पालक परलोक लोक के ॥
सचिव सुभट भूपति बिचार के । कुंभज लोभ उदधि अपार के ॥
काम कोह कलिमल करिगन के । केहरिसावक जन मन बन के ॥
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के । कामद घन दारिद दवारि के ॥ ८
मंत्र महामनि बिषय ब्याल के । मेटत कठिन कुअंक भाल के ॥
हरन मोह तम दिनकर कर से । सेवक सालि पाल जलधर से ॥
अभिमतदानि देवतरुबर से । सेवत सुलभ सुखद हरि हर से ॥
सुकबि सरद नभ मन उड़गन से । रामभगत जन जीवन धन से ॥ १२
सकल सुकृत फल भूरि भोग से । जग हित निरुपधि साधु लोग से ॥
सेवक मन मानस मराल से । पावन गंग तरंग माल से ॥

दोहा । कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाषंड ।
दहन राम गुनग्राम जिमि इंधन अनल प्रचंड ॥ १६
रामचरित राकेसकर सरिस सुखद सब काहु ।
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिसेषि बड़ लाहु ॥३२॥

कीन्हि प्रस्न जेहिँ भाँति भवानी। जेहिँ बिधि संकर कहा बखानी॥
सो सब हेतु कहब मैं गाई। कथा प्रबंध बिचित्र बनाई॥
जेहिँ यह कथा सुनी नहि होई। जनि आचरजु करै सुनि सोई॥
कथा अलौकिक सुनहिँ जे ज्ञानी। नहिँ आचरजु करहिँ अस जानी॥ ४
रामकथा कै मिति जग नाही। असि प्रतीति तिन्ह के मन माही॥
नाना भाँति राम अवतारा। रामायन सत कोटि अपारा॥
कलपभेद हरिचरित सुहाए। भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए॥
करिअ न संसय अस उर आनी। सुनिअ कथा सादर रति मानी॥ ८

दोहा। राम अनंत अनंत गुन अमित कथा बिस्तार।
सुनि आचरजु न मानिहहिँ जिन्ह के बिमल बिचार॥३३॥

येहिँ बिधि सब संसय करि दूरी। सिर धरि गुरपद पंकज धूरी॥
पुनि सबही बिनवौँ कर जोरी। करत कथा जेहि लाग न खोरी॥
सादर सिवहि नाइ अब माथा। बरनौँ बिसद राम गुन गाथा॥
संवत सोरह सै एकतीसा। करौँ कथा हरिपद धरि सीसा॥ ४
नौमी भौम बार मधु मासा। अवधपुरीँ यह चरित प्रकासा॥
जेहि दिन रामजनम श्रुति गावहिँ। तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिँ॥
असुर नाग खग नर मुनि देवा। आइ करहिँ रघुनायकसेवा॥
जन्म महोत्सव रचहिँ सुजाना। करहिँ राम कल कीरति गाना॥ ८

दोहा। मज्जहिँ सज्जनबृंद बहु पावन सरजू नीर।
जपहिँ राम धरि ध्यान उर सुंदर स्याम सरीर॥ ३४॥

दरस परस मज्जन अरु पाना। हरै पाप कह बेद पुराना॥
नदी पुनीत अमित महिमा अति। कहि न सकै सारदा बिमल मति॥
रामधामदा पुरी सुहावनि। लोक समस्त बिदित अति पावनि॥
चारि खानि जग जीव अपारा। अवध तजेँ तनु नहिँ संसारा॥ ४
सब बिधि पुरी मनोहर जानी। सकल सिद्धि प्रद मंगलखानी॥
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा। सुनत नसाहिँ काम मद दंभा॥
रामचरितमानस एहि नामा। सुनत श्रवन पाइअ बिश्रामा॥
मन करि बिषय अनल बन जरई। होइ सुखी जौँ येहिँ सर परई॥ ८

रामचरितमानस मुनि भावन। बिरचेउ संभु सुहावन पावन॥
त्रिबिध दोष दुख दारिद दावन। कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन॥
रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा॥
तातें रामचरितमानस बर। धरेउ नाम हिअँ हेरि हरषि हर॥ १२
कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुनहु सुजन मन लाई॥

दोहा। जस मानस जेहिं बिधि भयेउ जग प्रचार जेहिं हेतु।
अब सोइ कहउँ प्रसंग सब सुमिरि उमा बृषकेतु॥३५॥

संभुप्रसाद सुमति हिअँ हुलसी। रामचरितमानस कबि तुलसी॥
करइ मनोहर मति अनुहारी। सुजन सुचित सुनि लेहुँ सुधारी॥
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू। बेद पुरान उदधि घन साधू॥
बरषहिँ राम सुजस बर बारी। मधुर मनोहर मंगलकारी॥ ४
लीला सगुन जो कहहिँ बखानी। सोइ स्वच्छता करै मलहानी॥
प्रेम भगति जो बरनि न जाई। सोइ मधुरता सुसीतलताई॥
सो जल सुकृत सालि हित होई। रामभगत जन जीवन सोई॥
मेधा महि गत सो जल पावन। सकिलि श्रवन मग चलेउ सुहावन॥ ८
भरेउ सुमानस सुथल थिराना। सुखद सीतरुचि चारु चिराना॥

दोहा। सुठि सुंदर संवाद बर बिरचे बुद्धि बिचारि।
तेइ एहिँ पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि॥३६॥

सप्त प्रबंध सुभग सोपाना। ज्ञान नयन निरखत मन माना॥
रघुपतिमहिमा अगुन अबाधा। बरनब सोइ बर बारि अगाधा॥
राम सीअ जस सलिल सुधा सम। उपमा बीचिबिलास मनोरम॥
पुरइनि सघन चारु चौपाईं। जुगुति मंजु मनि सीप सुहाईं॥ ४
छंद सोरठा सुंदर दोहा। सोइ बहुरंग कमलकुल सोहा॥
अरथ अनूप सुभाव सुभासा। सोइ पराग मकरंद सुबासा॥
सुकृतपुंज मंजुल अलिमाला। ज्ञान बिराग बिचार मराला॥
धुनि अवरेब कबित गुन जाती। मीन मनोहर ते बहु भाँती॥ ८
अरथ धरम कामादिक चारी। कहब ज्ञान बिज्ञान बिचारी॥
नव रस जप तप जोग बिरागा। ते सब जलचर चारु तड़ागा॥

सुकृती साधु नाम गुन गाना। ते बिचित्र जलबिहग समाना॥
संतसभा चहुँ दिसि अँवराई। श्रद्धा रितु बसंत सम गाई॥ १२
भगतिनिरूपन बिबिध बिधाना। छमा दया दम लता बिताना॥
सम जम नियम फूल फल ग्याना। हरिपद रति रस बेद बखाना॥
औरौ कथा अनेक प्रसंगा। तेइ सुक पिक बहु बरन बिहंगा॥
दोहा। पुलक बाटिका बाग बन सुख सुबिहंग बिहारु। १६
माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु॥३७॥
जे गावहिँ यह चरित सँभारे। तेइ येहि ताल चतुर रखवारे॥
सदा सुनहिँ सादर नर नारी। तेइ सुरबर मानस अधिकारी॥
अति खल जे बिषई बग कागा। एहिँ सर निकट न जाहिँ अभागा॥
संबुकि भेक सेवार समाना। इहाँ न बिषय कथा रस नाना॥ ४
तेहि कारन आवत हिअँ हारे। कामी काक बलाक बिचारे॥
आवत येहिँ सर अति कठिनाई। रामकृपा बिनु आइ न जाई॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराला। तिन्ह के बचन बाघ हरि ब्याला॥
गृहकारज नाना जंजाला। तेइ अति दुर्गम सैल बिसाला॥ ८
बन बहु बिषम मोह मद माना। नदीँ कुतर्क भयंकर नाना॥
दोहा। जे श्रद्धा संबल रहित नहि संतन्ह कर साथ।
तिन्ह कहुँ मानस अगम अति जिन्हहिँ न प्रिय रघुनाथ॥३८॥
जौँ करि कष्ट जाइ पुनि कोई। जातहिँ नीँद जुड़ाई होई॥
जड़ता जाड़ बिषम उर लागा। गएहुँ न मज्जन पाव अभागा॥
करि न जाइ सर मज्जन पाना। फिरि आवै समेत अभिमाना॥
जौँ बहोरि कोउ पूछन आवा। सरनिंदा करि ताहि बुझावा॥ ४
सकल बिघ्न ब्यापहिँ नहिँ तेही। राम सुकृपा बिलोकहिँ जेही॥
सोइ सादर सर मज्जनु करई। महा घोर त्रयताप न जरई॥
ते नर यह सर तजहिँ न काऊ। जिन्ह के रामचरन भल भाऊ॥
जो नहाइँ चह एहिँ सर भाई। सो सतसंग करौ मन लाई॥ ८
अस मानस मानसचख चाही। भइ कबिबुद्धि बिमल अवगाही॥
भयेउ हृदयँ आनंद उछाहू। उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रबाहू॥

चली सुभग कबिता सरिता सो । राम बिमल जस जल भरिता सो ॥
सरजू नाम सुमंगलमूला । लोक बेद मत मंजुल कूला ॥ १२
नदी पुनीत सु मानसनंदिनि । कलिमल त्रिन तरु मूल निकंदिनि ॥
दोहा । श्रोता त्रिविध समाज पुर ग्राम नगर दुहुँ कूल ।
संतसभा अनुपम अवध सकल सुमंगलमूल ॥३८॥
रामभगति सुरसरितहि जाई । मिली सुकीरति सरजु सुहाई ॥
सानुज राम समर जसु पावन । मिलेउ महानदु सोन सुहावन ॥
जुग बिच भगति देवधुनि धारा । सोहति सहित सुबिरति बिचारा ॥
त्रिविध ताप त्रासक तिमुहानी । रामसरूप सिंधु समुहानी ॥ ४
मानसमूल मिली सुरसरिही । सुनत सुजनमन पावन करिही ॥
बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा । जनु सरि तीर तीर बनु बागा ॥
उमा महेस बिवाह बराती । ते जलचर अगनित बहु भाँती ॥
रघुबर जनम अनंद बधाई । भवर तरंग मनोहरताई ॥ ८
दोहा । बालचरित चहुँ बंधु के बनज बिपुल बहुरंग ।
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारि बिहंग ॥४०॥
सीयस्वयंबर कथा सुहाई । सरित सुहावनि सो छबि छाई ॥
नदी नाव पटु प्रस्न अनेका । केवट कुसल उतर सबिबेका ॥
सुनि अनुकथन परस्पर होई । पथिकसमाज सोह सरि सोई ॥
घोर धार भृगुनाथरिसानी । घाट सुबद्ध राम बर बानी ॥ ४
सानुज राम बिवाह उछाहू । सो सुभ उमग सुखद सब काहू ॥
कहत सुनत हरषहिँ पुलकाहीँ । ते सुकृती मन मुदित नहाहीँ ॥
रामतिलक हित मंगल साजा । परबजोग जनु जुरे समाजा ॥
काई कुमति केकई केरी । परी जासु फलु बिपति घनेरी ॥ ८
दोहा । समन अमित उतपात सब भरतचरित जप जाग ।
कलि अघ खल अवगुन कथन ते जलमल बग काग ॥४१॥
कीरति सरित छहूँ रितु रूरी । समय सुहावनि पावनि भूरी ॥
हिम हिमसैलसुता सिव ब्याहू । सिसिर सुखद प्रभु जनम उछाहू ॥
बरनब राम बिवाह समाजू । सो मुद मंगल मय रितुराजू ॥

ग्रीषम दुसह राम बनगवनू। पंथकथा खर आतप पवनू॥ ४
बरषा घोर निसाचररारी। सुरकुल सालि सुमंगलकारी॥
रामराज सुख बिनय बड़ाई। बिसद सुखद सोइ सरद सुहाई॥
सतीसिरोमनि सिय गुन गाथा। सोइ गुन अमल अनूपम पाथा॥
भरतसुभाउ सुसीतलताई। सदा एकरस बरनि न जाई॥ ८

दोहा। अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परसपर हास।
भायप भलि चहुँ बंधु की जल माधुरी सुबास॥४२॥

आरति बिनय दीनता मोरी। लघुता ललित सुबारि न थोरी॥
अदभुत सलिल सुनत गुनकारी। आस पिआस मनोमल हारी॥
राम सुपेमहि पोषत पानी। हरत सकल कलिकलुष गलानी॥
भवश्रम सोषक तोषक तोषा। समन दुरित दुख दारिद दोषा॥ ४
काम कोह मद मोह नसावन। बिमल बिबेक बिराग बढ़ावन॥
सादर मज्जन पान किए तेँ। मिटहिँ पाप परिताप हिए तेँ॥
जिन्ह एहिँ बारि न मानस धोए। ते कायर कलिकाल बिगोए॥
तृषित निरखि रबिकर भव बारी। फिरिहहिँ मृग जिमि जीव दुखारी॥ ८

दोहा। मति अनुहारि सुबारि गुन गन गनि मन अन्हवाइ।
सुमिरि भवानी संकरहि कह कबि कथा सुहाइ॥
अब रघुपतिपद पंकरुह हिअँ धरि पाइ प्रसाद।
कहौँ जुगल मुनिबर्ज कर मिलन सुभग संबाद॥४३॥ १२

भरद्वाज मुनि बसहिँ प्रयागा। तिन्हहिँ रामपद अति अनुरागा॥
तापस सम दम दया निधाना। परमारथपथ परम सुजाना॥
माघ मकरगत रबि जब होई। तीरथपतिहि आव सब कोई॥
देव दनुज किंनर नर श्रेनी। सादर मज्जहिँ सकल त्रिबेनी॥ ४
पूजहिँ माधवपद जलजाता। परसि अखयबटु हरषहिँ गाता॥
भरद्वाज आश्रम अति पावन। परम रम्य मुनिबर मन भावन॥
तहाँ होइ मुनि रिषय समाजा। जाहिँ जे मज्जन तीरथराजा॥
मज्जहिँ प्रात समेत उछाहा। कहहिँ परसपर हरि गुन गाहा॥ ८

दोहा। ब्रह्मनिरूपन धर्मबिधि बरनहिँ तत्वबिभाग।
कहहिँ भगति भगवंत कै संजुत ज्ञान बिराग ॥४४॥

एहिँ प्रकार भरि माघ नहाहीँ। पुनि सब निज निज आश्रम जाहीँ॥
प्रति संबत अति होइ अनंदा। मकर मज्जि गवनहिँ मुनिबृंदा॥
एक बार भरि मकर नहाए। सब मुनीस आश्रमन्ह सिधाए॥
जागबलिक मुनि परम बिबेकी। भरद्वाज राखे पद टेकी॥ ४
सादर चरन सरोज पखारे। अति पुनीत आसन बैठारे॥
करि पूजा मुनि सुजसु बखानी। बोले अति पुनीत मृदु बानी॥
नाथ एक संसउ बड़ मोरेँ। करगत बेदतत्व सबु तोरेँ॥
कहत सो मोहि लागत भय लाजा। जौ न कहौँ बड़ होइ अकाजा॥ ८

दोहा। संत कहहिँ असि नीति प्रभु श्रुति पुरान मुनि गाव।
होइ न बिमल बिबेक उर गुर सन कियँ दुराव ॥४५॥

अस बिचारि प्रगटौँ निज मोहू। हरहु नाथ करि जन पर छोहू॥
राम नाम कर अमित प्रभावा। संत पुरान उपनिषद गावा॥
संतत जपत संभु अबिनासी। सिव भगवान ज्ञान गुन रासी॥
आकर चारि जीव जग अहहीँ। कासीँ मरत परमपद लहहीँ॥ ४
सोपि राममहिमा मुनिराया। सिव उपदेसु करत करि दाया॥
रामु कवन प्रभु पूछौँ तोही। कहिय बुझाइ कृपानिधि मोही॥
एक राम अवधेसकुमारा। तिन्ह कर चरित बिदित संसारा॥
नारिबिरह दुखु लहेउ अपारा। भएउ रोषु रन रावनु मारा॥ ८

दोहा। प्रभु सोइ रामु कि अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि।
सत्यधाम सर्वज्ञ तुम्ह कहहु बिबेकु बिचारि ॥४६॥

जैसेँ मिटै मोर भ्रम भारी। कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी॥
जागबलिक बोले मुसुकाई। तुम्हहि बिदित रघुपतिप्रभुताई॥
रामभगत तुम्ह क्रम मन बानी। चतुराई तुम्हारि मैँ जानी॥
चाहहु सुनै रामगुन गूढ़ा। कीन्हिहु प्रस्न मनहु अति मूढ़ा॥ ४
तात सुनहु सादर मनु लाई। कहहुँ राम कै कथा सुहाई॥
महामोहु महिषेसु बिसाला। रामकथा कालिका कराला॥

रामकथा ससिकिरन समाना। संत चकोर करहिँ जेहि पाना॥
ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी। महादेव तब कहा बखानी॥ ८
दोहा। कहौँ सो मति अनुहारि अब उमा संभु संवाद।
भएउ समय जेहि हेतु जेहि सुनु मुनि मिटिहि बिषाद॥४७॥
एक बार त्रेता जुग माहीँ। संभु गए कुंभज रिषि पाहीँ॥
संग सती जगजननि भवानी। पूजे रिषि अखिलेस्वर जानी॥
रामकथा मुनिबर्ज बखानी। सुनी महेस परम सुखु मानी॥
रिषि पूछी हरिभगति सुहाई। कही संभु अधिकारी पाई॥ ४
कहत सुनत रघुपति गुन गाथा। कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा॥
मुनि सन बिदा मागि त्रिपुरारी। चले भवन सँग दच्छकुमारी॥
तेहि अवसर भंजन महिभारा। हरि रघुबंस लीन्ह अवतारा॥
पितावचन तजि राजु उदासी। दंडक बन बिचरत अबिनासी॥ ८
दोहा। हृदय बिचारत जात हर केहि बिधि दरसनु होइ।
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गएँ जान सबु कोइ॥
सोरठा। संकर उर अति छोभु सती न जानहि मरमु सोइ।
तुलसी दरसनलोभु मन डरु लोचन लालची॥४८॥
रावन मरनु मनुजकर जाचा। प्रभु बिधिबचनु कीन्ह चह साचा॥
जौ नहि जाउँ रहै पछितावा। करत बिचारु न बनत बनावा॥
एहि बिधि भए सोचबस ईसा। तेहीँ समय जाइ दससीसा॥
लीन्ह नीच मारीचहि संगा। भएउ तुरत सोइ कपट कुरंगा॥ ४
करि छलु मूढ़ हरी बैदेही। प्रभुप्रभाउ तस बिदित न तेही॥
मृग बधि बंधुसहित हरि आए। आश्रमु देखि नयन जलु छाए॥
बिरहबिकल नर इव रघुराई। खोजत बिपिन फिरत दोउ भाई॥
कबहूँ जोग बियोग न जाकेँ। देखा प्रगट बिरहदुखु ताकेँ॥ ८
दोहा। अति बिचित्र रघुपतिचरित जानहिँ परम सुजान।
जे मतिमंद बिमोहबस हृदय धरहिँ कछु आन॥४९॥
संभु समय तेहि रामहि देखा। उपजा हिय अति हरषु बिसेषा॥
भरि लोचन छबिसिंधु निहारी। कुसमय जानि न कीन्हि चिन्हारी॥

जय सच्चिदानंद जगपावन। अस कहि चलेउ मनोजनसावन॥
चले जात सिव सती समेता। पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता॥ ४
सतीँ सो दसा संभु कै देखी। उर उपजा संदेहु बिसेषी॥
संकरु जगतबंद्य जगदीसा। सुर नर मुनि सब नावत सीसा॥
तिन्ह नृपसुतहि कीन्ह परनामा। कहि सच्चिदानंद परधामा॥
भए मगन छबि तासु बिलोकी। अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी॥ ८

दोहा। ब्रह्म जो ब्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद॥५०॥

बिष्नु जो सुर हित नरतनु धारी। सोउ सर्बज्ञ जथा त्रिपुरारी॥
खोजै सो कि अज्ञ इव नारी। ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी॥
संभुगिरा पुनि मृषा न होई। सिव सर्बज्ञ जान सबु कोई॥
अस संसय मन भएउ अपारा। होइ न हृदय प्रबोधप्रचारा॥ ४
जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी। हर अंतरजामी सब जानी॥
सुनहि सती तव नारिसुभाऊ। संसय अस न धरिय उर काऊ॥
जासु कथा कुंभज रिषि गाई। भगति जासु मैं मुनिहि सुनाई॥
सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा। सेवत जाहि सदा मुनि धीरा॥ ८

छंद। मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीँ।
कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीँ।
सोइ रामु ब्यापक ब्रह्म भुवननिकाय पति मायाधनी।
अवतरेउ अपनेँ भगत हित निज तंत्र नित रघुकुलमनी॥ १२

सोरठा। लाग न उर उपदेसु जदपि कहेउ सिव बार बहु।
बोले बिहसि महेसु हरिमाया बलु जानि जिय॥५१॥

जौ तुम्हरेँ मन अति संदेहू। तौ किन जाइ परीछा लेहू॥
तब लगि बैठ अहौँ बट छाहीँ। जब लगि तुम्ह ऐहहु मोहि पाहीँ॥
जैसेँ जाइ मोह भ्रम भारी। करेहु सो जतनु बिबेकु बिचारी॥
चलीँ सती सिव आयसु पाई। करहिँ बिचारु करौँ का भाई॥ ४
इहाँ संभु अस मन अनुमाना। दच्छसुता कहुँ नहि कल्याना॥
मोरेहु कहेँ न संसय जाहीँ। बिधि बिपरीत भलाई नाहीँ॥

होइहि सोइ जो राम रचि राखा। को करि तर्क बढ़ावै साखा॥
अस कहि लगे जपन हरिनामा। गई सती जहँ प्रभु सुखधामा॥ ८

दोहा। पुनि पुनि हृदय विचारु करि धरि सीता कर रूप।
आगे होइ चलि पंथ तेहि जेहिं आवत नरभूप॥५२॥

लछिमन दीख उमाकृत बेषा। चकित भए भ्रम हृदय बिसेषा॥
कहि न सकत कछु अति गंभीरा। प्रभुप्रभाउ जानत मतिधीरा॥
सतीकपटु जानेउ सुरस्वामी। सबदरसी सब अंतरजामी॥
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना। सोइ सर्बज्ञ रामु भगवाना॥ ४
सती कीन्ह चह तहहुँ दुराऊ। देखहु नारिसुभाव प्रभाऊ॥
निज माया बलु हृदय बखानी। बोले बिहसि रामु मृदु बानी॥
जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू। पितासमेत लीन्ह निज नामू॥
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू। बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू॥ ८

दोहा। रामबचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोचु।
सती सभीत महेस पहिं चलीं हृदय बड़ सोचु॥५३॥

मैं संकर कर कहा न माना। निज अज्ञानु राम पर आना॥
जाइ उतरु अब देहौं काहा। उर उपजा अति दारुन दाहा॥
जाना राम सतीं दुखु पावा। निज प्रभाउ कछु प्रगटि जनावा॥
सतीं दीख कौतुकु मग जाता। आगें रामु सहित श्री भ्राता॥ ४
फिरि चितवा पाछें प्रभु देखा। सहित बंधु सिय सुंदर बेषा॥
जहँ चितवहि तहँ प्रभु आसीना। सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रबीना॥
देखे सिव बिधि बिष्नु अनेका। अमित प्रभाउ एक तें एका॥
बंदत चरन करत प्रभुसेवा। बिबिध बेष देखे सब देवा॥ ८

दोहा। सती बिधात्री इंदिरा देखीं अमित अनूप।
जेहिं जेहिं बेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप॥५४॥

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते। सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते॥
जीव चराचर जो संसारा। देखे सकल अनेक प्रकारा॥
पूजहिं प्रभुहि देव बहु बेषा। रामरूप दूसर नहि देखा॥
अवलोके रघुपति बहुतेरे। सीता सहित न बेष घनेरे॥ ४

४

सोइ रघुबर सोइ लछिमनु सीता। देखि सती अति भईं सभीता॥
हृदय कंप तन सुधि कछु नाहीं। नयन मूदि बैठीं मग माहीं॥
बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी। कछु न दीख तहँ दच्छकुमारी॥
पुनि पुनि नाइ रामपद सीसा। चलीं तहाँ जहँ रहे गिरीसा॥ ८

दोहा। गईं समीप महेस तब हँसि पूछी कुसलात।
लीन्हि परीछा कवन बिधि कहहु सत्य सब बात॥५५॥

सतीं समुझि रघुबीरप्रभाऊ। भयबस सिव सन कीन्ह दुराऊ॥
कछु न परीछा लीन्हि गोसाईं। कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि नाईं॥
जो तुम्ह कहा सो मृषा न होई। मोरें मन प्रतीति अति सोई॥
तब संकर देखेउ धरि ध्याना। सतीं जो कीन्ह चरित सबु जाना॥ ४
बहुरि राममायहि सिरु नावा। प्रेरि सतिहि जेहिं झूठ कहावा॥
हरि इच्छा भावी बलवाना। हृदय बिचारत संभु सुजाना॥
सतीं कीन्ह सीता कर बेषा। सिव उर भएउ बिषाद बिसेषा॥
जौं अब करौं सती सन प्रीती। मिटै भगतिपथु होइ अनीती॥ ८

दोहा। परम पुनीत न जाइ तजि किएँ प्रेमु बड़ पापु।
प्रगटि न कहत महेसु कछु हृदय अधिक संतापु॥५६॥

तब संकर प्रभुपद सिरु नावा। सुमिरत रामु हृदय अस आवा॥
एहिं तन सतिहि भेट मोहि नाहीं। सिव संकल्पु कीन्ह मन माहीं॥
अस बिचारि संकरु मतिधीरा। चले भवन सुमिरत रघुबीरा॥
चलत गगन भै गिरा सुहाई। जय महेस भलि भगति दृढ़ाई॥ ४
अस पन तुम्ह बिनु करै को आना। रामभगत समरथ भगवाना॥
सुनि नभगिरा सती उर सोचा। पूछा सिवहि समेत सकोचा॥
कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला। सत्यधाम प्रभु दीनदयाला॥
जदपि सती पूछा बहु भाँती। तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती॥ ८

दोहा। सतीं हृदय अनुमान किय सबु जानेउ सर्बग्य।
कीन्ह कपटु मैं संभु सन नारि सहज जड़ अग्य॥

सोरठा। जलु पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति कि रीति भलि।
बिलग होइ रसु जाइ कपट खटाई परत पुनि॥५७॥ १२

हृदय सोचु समुझत निज करनी। चिंता अमित जाइ नहि बरनी॥
कृपासिंधु सिव परम अगाधा। प्रगट न कहेउ मोर अपराधा॥
संकररुख अवलोकि भवानी। प्रभु मोहि तजेउ हृदय अकुलानी॥
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई। तपै अवा इव उर अधिकाई॥ ४
सतिहि ससोच जानि बृषकेतू। कही कथा सुंदर सुखहेतू॥
बरनत पंथ बिबिध इतिहासा। बिस्वनाथ पहुँचे कैलासा॥
तहँ पुनि संभु समुझि पन आपन। बैठे बटतर करि कमलासन॥
संकर सहज सरूपु सँभारा। लागि समाधि अखंड अपारा॥ ८

दोहा। सती बसहिँ कैलास तब अधिक सोचु मन माहिं।
मरमु न कोऊ जान कछु जुग सम दिवस सिराहिं॥५८॥

नित नव सोचु सती उर भारा। कब जैहौँ दुखसागर पारा॥
मैँ जो कीन्ह रघुपति अपमाना। पुनि पतिबचनु मृषा करि जाना॥
सो फलु मोहि बिधाता दीन्हा। जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा॥
अब बिधि अस बूझिअ नहि तोही। संकरबिमुख जिआवसि मोही॥ ४
कहि न जाइ कछु हृदय गलानी। मन महु रामहि सुमिर सयानी॥
जौ प्रभु दीनदयालु कहावा। आरतिहरन बेद जसु गावा॥
तौ मैँ बिनय करौँ कर जोरी। छूटौ बेगि देह यह मोरी॥
जौ मोरेँ सिवचरन सनेहू। मन क्रम बचन सत्य ब्रतु एहू॥ ८

दोहा। तौ सबदरसी सुनिय प्रभु करौ सो बेगि उपाइ।
होइ मरनु जेहि बिनहि श्रम दुसह बिपत्ति बिहाइ॥५९॥

एहि बिधि दुखित प्रजेसकुमारी। अकथनीय दारुन दुखु भारी॥
बीतेँ संबत सहस सतासी। तजी समाधि संभु अबिनासी॥
राम नाम सिव सुमिरन लागे। जानेउ सतीँ जगतपति जागे॥
जाइ संभुपद बंदनु कीन्हा। सनमुख संकर आसनु दीन्हा॥ ४
लगे कहन हरिकथा रसाला। दच्छ प्रजेस भये तेहि काला॥
देखा बिधि बिचारि सब लायक। दच्छहि कीन्ह प्रजापतिनायक॥
बड़ अधिकार दच्छ जब पावा। अति अभिमानु हृदयँ तब आवा॥
नहि कोउ अस जनमा जग माही। प्रभुता पाइ जाहि मद नाही॥ ८

दोहा। दच्छ लिए मुनि बोलि सब करन लगे बड़ जाग।
नेवते सादर सकल सुर जे पावत मखभाग ॥६०॥

किंनर नाग सिद्ध गंधर्बा। बधुन्ह समेत चले सुर सर्बा ॥
बिष्नु बिरंचि महेसु बिहाई। चले सकल सुर जान बनाई ॥
सतीं बिलोके ब्योम बिमाना। जात चले सुंदर बिधि नाना ॥
सुरसुंदरीं करहिं कल गाना। सुनत श्रवन छूटहिं मुनिध्याना ॥ ४
पूछेउ तब सिव कहेउ बखानी। पिताजग्य सुनि कछु हरषानी ॥
जौ महेसु मोहि आयसु देहीं। कछु दिन जाइ रहौं मिस एहीं ॥
पतिपरित्याग हृदय दुखु भारी। कहै न निज अपराध बिचारी ॥
बोलीं सती मनोहर बानी। भय संकोच प्रेम रस सानी ॥ ८

दोहा। पिताभवन उत्सव परम जौ प्रभु आयसु होइ।
तौ मैं जाउँ कृपायतन सादर देखन सोइ ॥६१॥

कहेहु नीक मोरेहुँ मन भावा। यह अनुचित नहि नेवत पठावा ॥
दच्छ सकल निज सुता बोलाईं। हमरें बयर तुम्हौं बिसराईं ॥
ब्रह्मसभाँ हम सन दुखु माना। तेहि तें अजहुँ करहि अपमाना ॥
जौ बिनु बोलें जाहु भवानी। रहै न सीलु सनेहु न कानी ॥ ४
जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा। जाइअ बिनु बोलेहु न सँदेहा ॥
तदपि बिरोध मान जहँ कोई। तहाँ गए कल्यान न होई ॥
भाँति अनेक संभु समुझावा। भावीबस न ग्यानु उर आवा ॥
कह प्रभु जाहु जो बिनहि बोलाएँ। नहि भलि बात हमारें भाएँ ॥ ८

दोहा। कहि देखा हर जतन बहु रहै न दच्छकुमारि।
दिए मुख्य गन संग तब बिदा कीन्ह त्रिपुरारि ॥६२॥

पिताभवन जब गईं भवानी। दच्छत्रास काहु न सनमानी ॥
सादर भलेहि मिली एक माता। भगिनी मिलीं बहुत मुसुकाता ॥
दच्छ न कछु पूछी कुसलाता। सतिहि बिलोकि जरे सब गाता ॥
सतीं जाइ देखेउ तब जागा। कतहु न दीख संभु कर भागा ॥ ४
तब चित चढ़ेउ जो संकर कहेऊ। प्रभु अपमानु समुझि उर दहेऊ ॥
पाछिल दुखु न हृदय अस ब्यापा। जस यह भएउ महा परितापा ॥

जद्यपि जग दारुन दुख नाना । सब तें कठिन जाति अवमाना ॥
समुझि सो सतिहि भएउ अति क्रोधा । बहु बिधि जननी कीन्ह प्रबोधा ॥ ८
दोहा । सिव अपमानु न जाइ सहि हृदय न होइ प्रबोध ।
सकल सभहि हठि हटकि तब बोलीं बचन सक्रोध ॥६३॥
सुनहु सभासद सकल मुनिंदा । कही सुनी जिन्ह संकरनिंदा ॥
सो फलु तुरत लहब सब काहूँ । भली भाँति पछिताब पिताहूँ ॥
संत संभु श्रीपति अपबादा । सुनिअ जहाँ तहँ असि मरजादा ॥
काटिअ तासु जीभ जो बसाई । श्रवन मूदि न त चलिअ पराई ॥ ४
जगदातमा महेसु पुरारी । जगतजनक सब के हितकारी ॥
पिता मंदमति निंदत तेही । दच्छ सुक्र संभव यह देही ॥
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू । उर धरि चंद्रमौलि बृषकेतू ॥
अस कहि जोग अगिनि तनु जारा । भएउ सकल मख हाहाकारा ॥ ८
दोहा । सतीमरनु सुनि संभुगन लगे करन मख खीस ।
जग्यबिधंस बिलोकि भृगु रच्छा कीन्हि मुनीस ॥६४॥
समाचार सब संकर पाए । बीरभद्रु करि कोपु पठाए ॥
जग्यबिधंस जाइ तिन्ह कीन्हा । सकल सुरन्ह बिधिवत फलु दीन्हा ॥
भै जगबिदित दच्छगति सोई । जसि कछु संभुबिमुख कै होई ॥
यह इतिहास सकल जग जानी । ताते मैं संछेप बखानी ॥ ४
सतीं मरत हरि सन बरु मागा । जनम जनम सिवपद अनुरागा ॥
तेहि कारन हिमगिरिगृह जाई । जनमी पारबती तनु पाई ॥
जब तें उमा सैलगृह जाईं । सकल सिद्धि संपति तहँ छाईं ॥
जहँ तहँ मुनिन्ह सु आश्रम कीन्हे । उचित बास हिमभूधर दीन्हे ॥ ८
दोहा । सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति ।
प्रगटीं सुंदर सैल पर मनि आकर बहु भाँति ॥६५॥
सरिता सब पुनीत जलु बहहीं । खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं ॥
सहज बयरु सब जीवन्ह त्यागा । गिरि पर सकल करहिं अनुरागा ॥
सोह सैल गिरिजा गृह आएँ । जिमि जनु रामभगति के पाएँ ॥
नित नूतन मंगल गृह तासू । ब्रह्मादिक गावहिं जसु जासू ॥ ४

नारद समाचार सब पाए। कौतुकहीँ गिरिगेह सिधाए॥
सैलराज बड़ आदर कीन्हा। पद पखारि वर आसनु दीन्हा॥
नारि सहित मुनिपद सिरु नावा। चरनसलिल सबु भवनु सिचावा॥
निज सौभाग्य बहुत गिरि बरना। सुता बोलि मेली मुनिचरना॥ ८
दोहा। त्रिकालग्य सर्वग्य तुम्ह गति सर्वत्र तुम्हारि।
कहहु सुता के दोष गुन मुनिवर हृदय बिचारि॥६६॥
कह मुनि बिहसि गूढ़ मृदु बानी। सुता तुम्हारि सकल गुन खानी॥
सुंदर सहज सुसील सयानी। नाम उमा अंबिका भवानी॥
सब लच्छन संपन्न कुमारी। होइहि संतत पिअहि पिआरी॥
सदा अचल एहि कर अहिवाता। एहि तेँ जसु पैहहिँ पितु माता॥ ४
होइहि पूज्य सकल जग माही। एहि सेवत कछु दुर्लभ नाही॥
एहि कर नामु सुमिरि संसारा। त्रिय चढ़िहहिँ पतिब्रत असिधारा॥
सैल सुलच्छन सुता तुम्हारी। सुनहु जे अब अवगुन दुइ चारी॥
अगुन अमान मातु पितु हीना। उदासीन सब संसय छीना॥ ८
दोहा। जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल बेष।
अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि परी हस्त असि रेख॥६७॥
सुनि मुनिगिरा सत्य जिय जानी। दुखु दंपतिहि उमा हरषानी॥
नारदहूँ यह भेदु न जाना। दसा एक समुझब बिलगाना॥
सकल सखीँ गिरिजा गिरि मैना। पुलक सरीर भरे जल नैना॥
होइ न मृषा देवरिषि भाषा। उमा सो बचनु हृदय धरि राखा॥ ४
उपजेउ सिवपद कमल सनेहू। मिलन कठिन मन भा संदेहू॥
जानि कुअवसरु प्रीति दुराई। सखि उछंग बैठी पुनि जाई॥
झूठि न होइ देवरिषि बानी। सोचहिँ दंपति सखीँ सयानी॥
उर धरि धीर कहै गिरिराऊ। कहहु नाथ का करिअ उपाऊ॥ ८
दोहा। कह मुनीस हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार।
देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार॥६८॥
तदपि एक मैँ कहौँ उपाई। होइ करै जौ दैउ सहाई॥
जस बरु मैँ बरनेउँ तुम्ह पाहीँ। मिलिहि उमहि तस संसय नाहीँ॥

जे जे बर के दोष बखाने । ते सब सिव पहिं मैं अनुमाने ॥
जौ बिवाहु संकर सन होई । दोषौ गुन सम कह सबु कोई ॥ ४
जौ अहिसेज सयन हरि करहीं । बुध कछु तिन्ह कर दोषु न धरहीं ॥
भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं । तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाहीं ॥
सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई । सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई ॥
समरथ कहुँ नहि दोषु गोसाईं । रबि पावक सुरसरि की नाईं ॥ ८
दोहा । जौ अस हिसिषा करहिं नर जड़ बिबेक अभिमान ।
परहिं कलप भरि नरक महु जीव कि ईस समान ॥६९॥
सुरसरिजल कृत बारुनि जाना । कबहुँ न संत करहिं तेहि पाना ॥
सुरसरि मिलें सो पावन जैसें । ईस अनीसहि अंतरु तैसें ॥
संभु सहज समरथ भगवाना । एहिं बिवाह सब बिधि कल्याना ॥
दुराराध्य पै अहहिं महेसू । आसुतोष पुनि किएँ कलेसू ॥ ४
जौ तपु करै कुमारि तुम्हारी । भाविउ मेटि सकहिं त्रिपुरारी ॥
जद्यपि बर अनेक जग माही । एहि कहँ सिव तजि दूसर नाही ॥
बरदायक प्रनतारतिभंजन । कृपासिंधु सेवक मन रंजन ॥
इंछित फल बिनु सिव अवराधें । लहिअ न कोटि जोग जप साधें ॥ ८
दोहा । अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहि दीन्हि असीस ।
होइहि यह कल्यान अब संसय तजहु गिरीस ॥७०॥
कहि अस ब्रह्मभवन मुनि गएऊ । आगिल चरित सुनहु जस भएऊ ॥
पतिहि एकांत पाइ कह मैना । नाथ न मैं समुझे मुनिबैना ॥
जौ घरु बरु कुलु होइ अनूपा । करिअ बिवाहु सुता अनुरूपा ॥
न त कन्या बरु रहउ कुआरी । कंत उमा मम प्रानपिआरी ॥ ४
जौ न मिलिहि बरु गिरिजहि जोगू । गिरि जड़ सहज कहिहि सबु लोगू ॥
सोइ बिचारि पति करेहु बिवाहू । जेहि न बहोरि होइ उर दाहू ॥
अस कहि परी चरन धरि सीसा । बोले सहित सनेह गिरीसा ॥
बरु पावक प्रगटै ससि माही । नारदबचनु अन्यथा नाही ॥ ८
दोहा । प्रिया सोचु परिहरहु सबु सुमिरहु श्रीभगवान ।
पारबतिहि निरमएउ जेहि सोइ करिहि कल्यान ॥७१॥

अब जौ तुम्हहि सुता पर नेहू। तौ अस जाइ सिखावहु देहू॥
करै सो तपु जेहि मिलहिँ महेसू। आन उपाय न मिटिहि कलेसू॥
नारदबचन सगर्भ सहेतू। सुंदर सब गुन निधि बृषकेतू॥
अस बिचारि तुम्ह तजहु असंका। सबहि भाँति संकरु अकलंका॥ ४
सुनि पतिबचन हरषि मन माहीँ। गई तुरत उठि गिरिजा पाहीँ॥
उमहि बिलोकि नयन भरे बारी। सहित सनेह गोद बैठारी॥
बारहि बार लेति उर लाई। गदगद कंठ न कछु कहि जाई॥
जगतमातु सर्बग्य भवानी। मातुसुखद बोलीँ मृदु बानी॥ ८
दोहा। सुनहि मातु मैँ दीख अस सपन सुनावौँ तोहि।
सुंदर गौर सुबिप्रबर अस उपदेसेउ मोहि॥७२॥
करहि जाइ तपु सैलकुमारी। नारद कहा सो सत्य बिचारी॥
मातु पितहि पुनि यह मत भावा। तपु सुखप्रद दुख दोष नसावा॥
तपबल रचै प्रपंचु बिधाता। तपबल बिष्नु सकल जग त्राता॥
तपबल संभु करहिँ संघारा। तपबल सेषु धरै महिभारा॥ ४
तप अधार सब सृष्टि भवानी। करहि जाइ तपु अस जिय जानी॥
सुनत बचन बिसमित महतारी। सपन सुनाएउ गिरिहि हँकारी॥
मातु पितहि बहु बिधि समुझाई। चलीँ उमा तप हित हरषाई॥
प्रिय परिवार पिता अरु माता। भए बिकल मुख आव न बाता॥ ८
दोहा। बेदसिरा मुनि आइ तब सबहि कहा समुझाइ।
पारबतीमहिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ॥७३॥
उर धरि उमा प्रानपतिचरना। जाइ बिपिन लागीँ तपु करना॥
अति सुकुमार न तनु तपजोगू। पतिपद सुमिरि तजेउ सबु भोगू॥
नित नव चरन उपज अनुरागा। बिसरी देह तपहि मनु लागा॥
संबत सहस मूल फल खाए। सागु खाइ सत बरष गवाए॥ ४
कछु दिन भोजनु बारि बतासा। किए कठिन कछु दिन उपवासा॥
बेलपाती महि परै सुखाई। तीनि सहस संबत सोइ खाई॥
पुनि परिहरे सुखानेउ परना। उमहि नामु तब भएउ अपरना॥
देखि उमहि तप खीन सरीरा। ब्रह्मगिरा भै गगन गभीरा॥ ८

दोहा। भएउ मनोरथ सुफल तव सुनु गिरिराजकुमारि।
परिहरु दुसह कलेस सब अब मिलिहहिं त्रिपुरारि ॥७४॥
अस तपु काहु न कीन्ह भवानी। भए अनेक धीर मुनि ज्ञानी॥
अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी। सत्य सदा संतत सुचि जानी॥
आवै पिता बोलावन जबहीं। हठ परिहरि घर जाएहु तबहीं॥
मिलहिं तुम्हहि जब सप्त रिषीसा। जानेहु तब प्रमान बागीसा॥ ४
सुनत गिरा विधि गगन बखानी। पुलक गात गिरिजा हरषानी॥
उमाचरित सुंदर मैं गावा। सुनहु संभु कर चरित सुहावा॥
जब तेँ सतीँ जाइ तनु त्यागा। तब तेँ सिवमन भएउ बिरागा॥
जपहिं सदा रघुनायकनामा। जहँ तहँ सुनहिं राम गुन ग्रामा॥ ८
दोहा। चिदानंद सुखधाम सिव बिगत मोह मद काम।
बिचरहिं महि धरि हृदय हरि सकल लोक अभिराम ॥७५॥
कतहु मुनिन्ह उपदेसहिं ज्ञाना। कतहु रामगुन करहिं बखाना॥
जदपि अकाम तदपि भगवाना। भगत बिरह दुख दुखित सुजाना॥
एहि बिधि गएउ कालु बहु बीती। नित नै होइ रामपद प्रीती॥
नेमु प्रेमु संकर कर देखा। अविचल हृदय भगति कै रेखा॥ ४
प्रगटे रामु कृतज्ञ कृपाला। रूप सील निधि तेज बिसाला॥
बहु प्रकार संकरहि सराहा। तुम्ह बिनु अस ब्रतु को निरबाहा॥
बहु बिधि राम सिवहि समुझावा। पारवती कर जन्मु सुनावा॥
अति पुनीत गिरिजा कै करनी। बिस्तर सहित कृपानिधि बरनी॥ ८
दोहा। अब बिनती मम सुनहु सिव जौ मो पर निजु नेहु।
जाइ बिवाहहु सैलजहि यह मोहि मागेँ देहु ॥७६॥
कह सिव जदपि उचित अस नाहीँ। नाथबचन पुनि मेटि न जाहीँ॥
सिर धरि आएसु करिअ तुम्हारा। परम धरमु यह नाथ हमारा॥
मातु पिता गुर प्रभु कै बानी। बिनहि बिचार करिअ सुभ जानी॥
तुम्ह सब भाँति परम हितकारी। अज्ञा सिर पर नाथ तुम्हारी॥ ४
प्रभु तोषेउ सुनि संकरबचना। भक्ति बिबेक धर्म जुत रचना॥
कह प्रभु हर तुम्हार पन रहेऊ। अब उर राखेहु जो हम कहेऊ॥

अंतरधान भए अस भाषी। संकर सोइ मूरति उर राखी॥
तबहि सप्तरिषि सिव पहि आए। बोले प्रभु अति बचन सुहाए॥ ८

दोहा। पारबती पहि जाइ तुम्ह प्रेमपरिछा लेहु।
गिरिहि प्रेरि पठएहु भवन दूरि करेहु संदेहु॥७७॥

रिषिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी। मूरतिमंत तपस्या जैसी॥
बोले मुनि सुनु सैलकुमारी। करहु कवन कारन तपु भारी॥
केहि अवराधहु का तुम्ह चहहू। हम सन सत्य मरमु किन कहहू॥
[सुनत रिषिन्ह के बचन भवानी। बोलीँ गूढ़ मनोहर बानी॥] ४
कहत मरमु मनु अति सकुचाई। हसिहहु सुनि हमारि जड़ताई॥
मनु हठ परा न सुनै सिखावा। चहत बारि पर भीति उठावा॥
नारद कहा सत्य सोइ जाना। बिनु पंखन्ह हम चहहिँ उड़ाना॥
देखहु मुनि अबिबेकु हमारा। चाहिअ सदासिवहि भरतारा॥ ८

दोहा। सुनत बचन बिहसे रिषय गिरिसंभव तव देहु।
नारद कर उपदेसु सुनि कहहु बसेउ किसु गेहु॥७८॥

दच्छसुतन्ह उपदेसेन्हि जाई। तिन्ह फिरि भवनु न देखा आई॥
चित्रकेतु कर घरु उन्ह घाला। कनककसिपु कर पुनि अस हाला॥
नारदसिख जे सुनहिँ नर नारी। अवसि होहिँ तजि भवनु भिखारी॥
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा। आपु सरिस सबही चँह कीन्हा॥ ४
तेहि के बचन मानि बिस्वासा। तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा॥
निर्गुन निलज कुबेष कपाली। अकुल अगेह दिगंबरु ब्याली॥
कहहु कवन सुखु अस बरु पाएँ। भल भूलिहु ठग के बौराएँ॥
पंच कहेँ सिव सती बिवाही। पुनि अवडेरि मराएन्हि ताही॥ ८

दोहा। अब सुख सोवत सोचु नहि भीख मागि भव खाहिँ।
सहज एकाकिन्ह के भवन कबहुँ कि नारि खटाहिँ॥७९॥

अजहूँ मानहु कहा हमारा। हम तुम्ह कहुँ बरु नीक बिचारा॥
अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला। गावहिँ बेद जासु जसु लीला॥
दूषन रहित सकल गुन रासी। श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी॥
अस बरु तुम्हहि मिलाउब आनी। सुनत बिहसि कह बचन भवानी॥ ४

सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा। हठ न छूट छूटै बरु देहा॥
कनकौ पुनि पषान तें होई। जारेहु सहजु न परिहर सोई॥
नारदबचन न मैं परिहरऊँ। बसौ भवनु उजरौ नहि डरऊँ॥
गुर के वचन प्रतीति न जेही। सपनेहु सुगम न सुख सिधि तेही॥ ८
दोहा। महादेव अवगुनभवन बिष्नु सकल गुन धाम।
जेहि कर मनु रम जाहि सन तेहि तेही सन काम॥८०॥
जौ तुम्ह मिलतेहु प्रथम मुनीसा। सुनतिउँ सिख तुम्हारि धरि सीसा॥
अब मैं जन्मु संभु हित हारा। को गुन दूषन करै बिचारा॥
जौ तुम्हरें हठ हृदय बिसेषी। रहि न जाइ बिनु किएँ बरेखी॥
तौ कौतुकिअन्ह आलसु नाहीं। बर कन्या अनेक जग माहीं॥ ४
जन्म कोटि लगि रगर हमारी। बरौं संभु न त रहौं कुआरी॥
तजौं न नारद कर उपदेसू। आपु कहहिं सत बार महेसू॥
मैं पाँ परौं कहै जगदंबा। तुम्ह गृह गवनहु भएउ बिलंबा॥
देखि प्रेमु बोले मुनि ज्ञानी। जय जय जगदंबिके भवानी॥ ८
दोहा। तुम्ह माया भगवान सिव सकल जगत पितु मातु।
नाइ चरन सिर मुनि चले पुनि पुनि हरषत गातु॥८१॥
जाइ मुनिन्ह हिमवंतु पठाए। करि बिनती गिरिजहि गृह ल्याए॥
बहुरि सप्तरिषि सिव पहि जाई। कथा उमा कै सकल सुनाई॥
भए मगन सिव सुनत सनेहा। हरषि सप्तरिषि गवने गेहा॥
मनु थिरु करि तब संभु सुजाना। लगे करन रघुनायकध्याना॥ ४
तारकु असुर भएउ तेहि काला। भुज प्रताप बल तेज बिसाला॥
तेहि सब लोक लोकपति जीते। भए देव सुख संपति रीते॥
अजर अमर सो जीति न जाई। हारे सुर करि बिबिध लराई॥
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे। देखे बिधि सब देव दुखारे॥ ८
दोहा। सब सन कहा बुझाइ बिधि दनुजनिधन तब होइ।
संभु सुक्र संभूत सुत एहि जीतै रन सोइ॥८२॥
मोर कहा सुनि करहु उपाई। होइहि ईस्वर करिहि सहाई॥
सतीं जो तजी दच्छमख देहा। जनमी जाइ हिमाचलगेहा॥

तेहि तपु कीन्ह संभु पति लागी। सिव समाधि बैठे सबु त्यागी॥
जदपि अहै असमंजस भारी। तदपि बात एक सुनहु हमारी॥ ४
पठवहु कामु जाइ सिव पाहीं। करै छोभु संकरमन माहीं॥
तब हम जाइ सिवहि सिर नाई। करवाउब बिवाहु बरिआई॥
एहि बिधि भलेहि देवहित होई। मत अति नीक कहै सबु कोई॥
अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अति हेतू। प्रगटेउ बिषमबान झषकेतू॥ ८

दोहा। सुरन्ह कही निज बिपति सब सुनि मन कीन्ह बिचार।
संभुबिरोध न कुसल मोहि बिहसि कहेउ अस मार॥८३॥

तदपि करब मैं काजु तुम्हारा। श्रुति कह परम धरम उपकारा॥
परहित लागि तजै जो देही। संतत संत प्रसंसहिँ तेही॥
अस कहि चलेउ सबहि सिरु नाई। सुमनधनुष कर सहित सहाई॥
चलत मार अस हृदय बिचारा। सिवबिरोध ध्रुव मरनु हमारा॥ ४
तब आपन प्रभाउ बिस्तारा। निज बस कीन्ह सकल संसारा॥
कोपेउ जबहि बारिचरकेतू। छन महु मिटे सकल श्रुतिसेतू॥
ब्रह्मचर्ज ब्रत संजम नाना। धीरज धरम ज्ञान बिज्ञाना॥
सदाचार जप जोग बिरागा। सभय बिबेककटकु सबु भागा॥ ८

छंद। भागेउ बिबेकु सहाय सहित सो सुभट संजुगमहि मुरे।
सदग्रंथ पर्वत कंदरन्हि महु जाइ तेहि अवसर दुरे।
होनिहार का करतार को रखवार जग खरभरु परा।
दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहुँ कोपि कर धनु सरु धरा। १२

दोहा। जे सजीव जग अचर चर नारि पुरुष अस नाम।
ते निज निज मरजाद तजि भए सकल बस काम॥८४॥

सब के हृदय मदन अभिलाषा। लता निहारि नवहिँ तरु साखा॥
नदीँ उमगि अंबुधि कहुँ धाईँ। संगम करहिँ तलाव तलाईँ॥
जहँ असि दसा जड़न्ह कै बरनी। को कहि सकै सचेतन करनी॥
पसु पच्छी नभ जल थल चारी। भए कामबस समय बिसारी॥ ४
मदन अंध ब्याकुल सब लोका। निसि दिनु नहि अवलोकहिँ कोका॥
देव दनुज नर किंनर ब्याला। प्रेत पिसाच भूत बेताला॥

इन्ह कै दसा न कहेउँ बखानी। सदा काम के चेरे जानी॥
सिद्ध बिरक्त महामुनि जोगी। तेपि कामबस भए बियोगी॥ ८
छंद। भए कामबस जोगीस तापस पावँरन्हि की को कहे।
देखहिँ चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे।
अबला बिलोकहिँ पुरुषमय जगु पुरुष सब अबलामयं।
दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अयं॥ १२
सोरठा। धरी न काहूँ धीर सब के मन मनसिज हरे।
जे राखे रघुबीर ते उबरे तेहि काल महु॥८५॥
उभय घरीँ अस कौतुक भएऊ। जब लगि कामु संभु पहि गएऊ॥
सिवहि बिलोकि ससंकेउ मारू। भएउ जथाथिति सबु संसारू॥
भए तुरत जग जीव सुखारे। जिमि मद उतरि गएँ मतवारे॥
रुद्रहि देखि मदन भय माना। दुराधरष दुर्गम भगवाना॥ ४
फिरत लाज कछु करि नहि जाई। मरनु ठानि मन रचेसि उपाई॥
प्रगटेसि तुरत रुचिर रितुराजा। कुसुमित नव तरुराजि बिराजा॥
बन उपवन बापिका तड़ागा। परम सुभग सब दिसा बिभागा॥
जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा। देखि मुएँहु मन मनसिज जागा॥ ८
छंद। जागै मनोभव मुएँहु मन बनसुभगता न परै कही।
सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही।
बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा।
कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहिँ अपछरा॥ १२
दोहा। सकल कला करि कोटि बिधि हारेउ सेन समेत।
चली न अचल समाधि सिव कोपेउ हृदयनिकेत॥८६॥
देखि रसाल बिटप बर साखा। तेहि पर चढ़ेउ मदनु मन माखा॥
सुमन चाप निज सर संधाने। अति रिस ताकि श्रवन लगि ताने॥
छाड़े बिषम बिसिष उर लागे। छूटि समाधि संभु तब जागे॥
भएउ ईसमन छोभु बिसेषी। नयन उघारि सकल दिसि देखी॥ ४
सौरभ पल्लव मदनु बिलोका। भएउ कोपु कंपेउ त्रैलोका॥
तब सिव तीसर नयन उघारा। चितवत कामु भएउ जरि छारा॥

हाहाकार भएउ जग भारी। डरपे सुर भए असुर सुखारी ॥
समुझि कामसुखु सोचहिं भोगी। भए अकंटक साधक जोगी ॥ ८

छंद। जोगी अकंटक भए पतिगति सुनत रति मुरुछित भई।
रोदति बदति बहु भाँति करुना करत संकर पहिं गई।
अति प्रेम करि बिनती बिबिध बिधि जोरि कर सन्मुख रही।
प्रभु आसुतोष कृपाल सिव अबला निरखि बोले सही ॥ १२

दोहा। अब तें रति तव नाथ कर होइहि नामु अनंगु।
बिनु बपु ब्यापिहि सबहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंगु ॥८७॥

जब जदुबंस कृष्न अवतारा। होइहि हरन महा महिभारा ॥
कृष्नतनय होइहि पति तोरा। बचनु अन्यथा होइ न मोरा ॥
रति गवनी सुनि संकरबानी। कथा अपर अब कहौं बखानी ॥
देवन्ह समाचार सब पाए। ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाए ॥ ४
सब सुर बिष्नु बिरंचि समेता। गए जहाँ सिव कृपानिकेता ॥
पृथक पृथक तिन्ह कीन्हि प्रसंसा। भए प्रसन्न चंद्र अवतंसा ॥
बोले कृपासिंधु बृषकेतू। कहहु अमर आए केहि हेतू ॥
कह बिधि तुम्ह प्रभु अंतरजामी। तदपि भगतिबस बिनवौं स्वामी ॥ ८

दोहा। सकल सुरन्ह कें हृदय अस संकर परम उछाहु।
निज नयनन्हि देखा चहहिं नाथ तुम्हार बिबाहु ॥८८॥

यह उत्सव देखिअ भरि लोचन। सोइ कछु करहु मदन मद मोचन ॥
कामु जारि रति कहुँ बरु दीन्हा। कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा ॥
सासति करि पुनि करहिं पसाऊ। नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ ॥
पारबतीं तपु कीन्ह अपारा। करहु तासु अब अंगीकारा ॥ ४
सुनि बिधिबिनय समुझि प्रभुबानी। ऐसेइ होउ कहा सुखु मानी ॥
तब देवन्ह दुंदुभीं बजाईं। बरषि सुमन जय जय सुरसाईं ॥
अवसरु जानि सप्तरिषि आए। तुरतहि बिधि गिरिभवन पठाए ॥
प्रथम गए जहँ रहीं भवानी। बोले मधुर बचन छल सानी ॥ ८

दोहा। कहा हमार न सुनेहु तब नारद कें उपदेस।
अब भा झूठ तुम्हार पन जारेउ कामु महेस ॥८९॥

सुनि बोलीं मुसुकाइ भवानी। उचित कहेहु मुनिबर बिज्ञानी॥
तुम्हरें जान कामु अब जारा। अब लगि संभु रहे सबिकारा॥
हमरें जान सदा सिव जोगी। अज अनवद्य अकाम अभोगी॥
जौं मैं सिव सेए अस जानी। प्रीति समेत कर्म मन बानी॥ ४
तौ हमार पन सुनहु मुनीसा। करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा॥
तुम्ह जो कहा हर जारेउ मारा। सोइ अति बड़ अबिबेकु तुम्हारा॥
तात अनल कर सहज सुभाऊ। हिम तेहि निकट जाइ नहि काऊ॥
गएँ समीप सो अवसि नसाई। असि मन्मथ महेस कै नाई॥ ८

दोहा। हिय हरषे मुनिबचन सुनि देखि प्रीति बिस्वास।
चले भवानिहि नाइ सिर गए हिमाचल पास॥९०॥

सबु प्रसंगु गिरिपतिहि सुनावा। मदनदहन सुनि अति दुखु पावा॥
बहुरि कहेउ रति कर बरदाना। सुनि हिमवंत बहुत सुखु माना॥
हृदय बिचारि संभुप्रभुताई। सादर मुनिबर लिए बोलाई॥
सुदिनु सुनखतु सुघरी सोचाई। बेगि बेदबिधि लगन धराई॥ ४
पत्री सप्तरिषिन्ह सोइ दीन्ही। गहि पद बिनय हिमाचल कीन्ही॥
जाइ बिधिहि तिन्ह दीन्हि सो पाती। बाचत प्रीति न हृदय समाती॥
लगन बाचि अज सबहि सुनाई। हरषे मुनि सब सुरसमुदाई॥
सुमनबृष्टि नभ बाजन बाजे। मंगल कलस दसहु दिसि साजे॥ ८

दोहा। लगे सँवारन सकल सुर बाहन बिबिध बिमान।
होहिं सगुन मंगल सुभद करहिं अपछरा गान॥९१॥

सिवहि संभुगन करहिं सिंगारा। जटा मुकुट अहि मौरु सँवारा॥
कुंडल कंकन पहिरे ब्याला। तन बिभूति पट केहरिछाला॥
ससि ललाट सुंदर सिर गंगा। नयन तीनि उपबीत भुजंगा॥
गरल कंठ उर नर सिर माला। असिव बेष सिवधाम कृपाला॥ ४
कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा। चले बसहँ चढ़ि बाजहिं बाजा॥
देखि सिवहि सुरत्रिय मुसुकाहीं। बर लायक दुलहिनि जग नाहीं॥
बिष्नु बिरंचि आदि सुरब्राता। चढ़ि चढ़ि बाहन चले बराता॥
सुरसमाज सब भाँति अनूपा। नहि बरात दूलह अनुरूपा॥ ८

दोहा। बिष्नु कहा अस बिहसि तब बोलि सकल दिसिराज।
बिलग बिलग होइ चलहु सब निज निज सहित समाज ॥९२॥

बर अनुहारि बरात न भाई। हसी करैहहु परपुर जाई ॥
बिष्नुबचन सुनि सुर मुसुकाने। निज निज सेन सहित बिलगाने ॥
मनही मन महेसु मुसुकाहीं। हरि के बिंग्य बचन नहि जाहीं ॥
अति प्रिय बचन सुनत प्रिय केरे। भृंगिहि प्रेरि सकल गन टेरे ॥ ४
सिव अनुसासन सुनि सब आए। प्रभुपद जलज सीस तिन्ह नाए ॥
नाना बाहन नाना बेषा। बिहसे सिव समाज निज देखा ॥
कोउ मुखहीन बिपुल मुख काहू। बिनु पद कर कोउ बहु पद बाहू ॥
बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना। रिष्टपुष्ट कोउ अति तन खीना ॥ ८

छंद। तन खीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन गति धरें।
भूषन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तन भरें।
खर स्वान सुअर सृकाल मुख गनबेष अगनित को गने।
बहु जिनस प्रेत पिसाच जोगि जमाति बरनत नहि बने ॥ १२

सोरठा। नाचहिँ गावहिँ गीत परम तरंगी भूत सब।
देखत अति बिपरीत बोलहिँ बचन बिचित्र बिधि ॥९३॥

जस दूलहु तसि बनी बराता। कौतुक बिबिध होहिँ मग जाता ॥
इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना। अति बिचित्र नहि जाइ बखाना ॥
सैल सकल जहँ लगि जग माहीँ। लघु बिसाल नहि बरनि सिराहीँ ॥
बन सागर सब नदीँ तलावा। हिमगिरि सब कहुँ नेवत पठावा ॥ ४
कामरूप सुंदर तन धारी। सहित समाज सहित बर नारी ॥
गए सकल तुहिनाचलगेहा। गावहिँ मंगल सहित सनेहा ॥
प्रथमहि गिरि बहु गृह सँवराए। जथाजोगु तहँ तहँ सब छाए ॥
पुरसोभा अवलोकि सुहाई। लागै लघु बिरंचिनिपुनाई ॥ ८

छंद। लघु लाग बिधि की निपुनता अवलोकि पुरसोभा सही।
बन बाग कूप तड़ाग सरिता सुभग सब सक को कही।
मंगल बिपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीँ।
बनिता पुरुष सुंदर चतुर छबि देखि मुनिमन मोहहीँ ॥ १२

दोहा। जगदंबा जहँ अवतरी सो पुरु बरनि कि जाइ।
रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख नित नूतन अधिकाइ ॥९४॥
नगर निकट बरात सुनि आई। पुर खरभरु सोभा अधिकाई॥
करि बनाव सजि बाहन नाना। चले लेन सादर अगवाना॥
हिय हरषे सुर सेन निहारी। हरिहि देखि अति भए सुखारी॥
सिवसमाज जब देखन लागे। बिडरि चले बाहन सब भागे॥
धरि धीरजु तहँ रहे सयाने। बालक सब लै जीव पराने॥
गए भवन पूछहिँ पितु माता। कहहिँ बचन भयकंपित गाता॥
कहिअ काह कहि जाइ न बाता। जम कर धार किधौँ बरिआता॥
बरु बौराह बसह असवारा। ब्याल कपाल बिभूषन छारा॥
छंद। तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा।
सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि बिकट मुख रजनीचरा।
जो जिअत रहिहि बरात देखत पुन्य बड़ तेहि कर सही।
देखिहि सो उमाबिबाहु घर घर बात असि लरिकन्ह कही॥
दोहा। समुझि महेससमाज सब जननि जनक मुसुकाहिँ।
बाल बुझाए बिबिध बिधि निडर होहु डरु नाहिँ॥९५॥
लै अगवान बरातहि आए। दिए सबहि जनवास सुहाए॥
मैना सुभ आरती सँवारी। संग सुमंगल गावहिँ नारी॥
कंचनथार सोह बर पानी। परिछन चली हरहि हरषानी॥
बिकट बेष रुद्रहि जब देखा। अबलन्ह उर भय भएउ बिसेषा॥
भागि भवन पैठीँ अति त्रासा। गए महेसु जहाँ जनवासा॥
मैना हृदय भएउ दुखु भारी। लीन्ही बोलि गिरीसकुमारी॥
अधिक सनेह गोद बैठारी। स्याम सरोज नयन भरे बारी॥
जेहि बिधि तुम्हहि रूपु अस दीन्हा। तेहि जड़ बरु बाउर कस कीन्हा॥
छंद। कस कीन्ह बरु बौराह बिधि जेहि तुम्हहि सुंदरता दई।
जो फलु चहिअ सुरतरुहि सो बरबस बबूरहि लागई।
तुम्ह सहित गिरि तेँ गिरौँ पावक जरौँ जलनिधि महुँ परौँ।
घरु जाउ अपजसु होउ जग जीवत बिबाहु न हौँ करौँ॥

दोहा। भईं बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि।
करि बिलापु रोदति बदति सुतासनेहु सँभारि ॥८६॥

नारद कर मैं काह बिगारा। भवनु मोर जिन्ह बसत उजारा॥
अस उपदेसु उमहि जिन्ह दीन्हा। बौरे बरहि लागि तपु कीन्हा॥
साचेहु उन्ह कें मोह न माया। उदासीन धनु धामु न जाया॥
पर घर घालक लाज न भीरा। बाँझ कि जान प्रसव कै पीरा॥ ४
जननिहि बिकल बिलोकि भवानी। बोली जुत बिबेक मृदु बानी॥
अस बिचारि सोचहि मति माता। सो न टरै जो रचै बिधाता॥
करम लिखा जौ बाउर नाहू। तौ कत दोसु लगाइअ काहू॥
तुम्ह सन मिटहिं कि बिधि के अंका। मातु ब्यर्थ जनि लेहु कलंका॥ ८

छंद। जनि लेहु मातु कलंकु करुना परिहरहु अवसरु नहीं।
दुखु सुखु जो लिखा लिलार हमरें जाब जहँ पाउब तहीं।
सुनि उमाबचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं।
बहु भाँति बिधिहि लगाइ दूषन नयन बारि बिमोचहीं॥ १२

दोहा। तेहि अवसर नारद सहित अरु रिषि सप्त समेत।
समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत ॥८७॥

तब नारद सबही समुझावा। पूरुब कथा प्रसंगु सुनावा॥
मयना सत्य सुनहु मम बानी। जगदंबा तव सुता भवानी॥
अजा अनादि सक्ति अबिनासिनि। सदा संभु अरधंग निवासिनि॥
जग संभव पालन लय कारिनि। निज इच्छा लीला बपु धारिनि॥ ४
जनमीं प्रथम दच्छगृह जाई। नामु सती सुंदर तनु पाई॥
तहँहु सती संकरहि बिबाहीं। कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं॥
एक बार आवत सिवसंगा। देखेउ रघुकुल कमल पतंगा॥
भएउ मोहु सिवकहा न कीन्हा। भ्रमबस बेषु सीअ कर लीन्हा॥ ८

छंद। सियबेषु सतीं जो कीन्ह तेहि अपराध संकर परिहरीं।
हरबिरह जाइ बहोरि पितु कें जग्य जोगानल जरीं।
अब जनमि तुम्हरें भवन निज पति लागि दारुन तपु किया।
अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्बदा संकरप्रिया॥ १२

दोहा। सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा बिषाद।
छन महु ब्यापेउ सकल पुर घर घर यह संबाद॥ ८८॥

तब मयना हिमवंतु अनंदे। पुनि पुनि पारबतीपद बंदे॥
नारि पुरुष सिसु जुवा सयाने। नगर लोग सब अति हरषाने॥
लगे होन पुर मंगल गाना। सजे सबहि हाटकघट नाना॥
भाँति अनेक भई जेवनारा। सूपसास्त्र जस कछु ब्यवहारा॥
सो जेवनार कि जाइ बखानी। बसहिँ भवन जेहि मातु भवानी॥
सादर बोले सकल बराती। बिष्नु बिरंचि देव सब जाती॥
बिबिध पाँति बैठी जेवनारा। लागे परुसन निपुन सुआरा॥
नारिबृंद सुर जेवत जानी। लगीँ देन गारीँ मृदु बानी॥

छंद। गारीँ मधुर स्वर देहिँ सुंदरि बिंग्य बचन सुनावहीँ।
भोजनु करहिँ सुर अति बिलंबु बिनोदु सुनि सचु पावहीँ।
जेवत जो बढ़्यो अनंदु सो मुख कोटिहूँ न परै कह्यो।
अचवाइ दीन्हे पान गवने बास जहँ जाको रह्यो॥

दोहा। बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहुँ लगन सुनाई आइ।
समय बिलोकि बिवाह कर पठए देव बोलाइ॥ ८९॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे। सबहि जथोचित आसन दीन्हे॥
बेदी बेदबिधान सँवारी। सुभग सुमंगल गावहिँ नारी॥
सिंघासनु अति दिब्य सुहावा। जाइ न बरनि बिरंचि बनावा॥
बैठे सिव बिप्रन्ह सिरु नाई। हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई॥
बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाईँ। करि सिंगारु सखीँ लै आईँ॥
देखत रूपु सकल सुर मोहे। बरनैँ छबि अस जग कबि को है॥
जगदंबिका जानि भवभामा। सुरन्ह मनहि मन कीन्ह प्रनामा॥
सुंदरतामरजाद भवानी। जाइ न कोटिहु बदन बखानी॥

छंद। कोटिहु बदन नहि बनै बरनत जगजननि सोभा महा।
सकुचहिँ कहत श्रुति सेष सारद मंदमति तुलसी कहा।
छबिखानि मातु भवानि गवनीँ मध्य मंडप सिव जहाँ।
अवलोकि सकहि न सकुच पतिपद कमल मनु मधुकरु तहाँ॥

दोहा। मुनि अनुसासन गनपतिहि पूजेउ संभु भवानि।
कोउ सुनि संसय करै जनि सुर अनादि जिय जानि ॥१००॥

जसि बिवाह कै बिधि श्रुति गाई। महामुनिन्ह सो सब करवाई ॥
गहि गिरीस कुस कन्या पानी। भवहि समरपीं जानि भवानी ॥
पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा। हिय हरषे तब सकल सुरेसा ॥
बेदमंत्र मुनिबर उच्चरहीं। जय जय जय संकर सुर करहीं ॥ ४
बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना। सुमनबृष्टि नभ भै बिधि नाना ॥
हर गिरिजा कर भएउ बिवाहू। सकल भुवन भरि रहा उछाहू ॥
दासी दास तुरग रथ नागा। धेनु बसन मनि बस्तु बिभागा ॥
अन्न कनकभाजन भरि जाना। दाइज दीन्ह न जाइ बखाना ॥ ८

छंद। दाइज दियो बहु भाँति पुनि कर जोरि हिमभूधर कह्यो।
का देउँ पूरनकाम संकरचरन पंकज गहि रह्यो।
सिव कृपासागर ससुर कर संतोषु सब भाँतिहि कियो।
पुनि गहे पद पाथोज मयना प्रेम परिपूरन हियो ॥ १२

दोहा। नाथ उमा मम प्रान सम गृहकिंकरी करेहु।
छमेहु सकल अपराध अब होइ प्रसन्न बरु देहु ॥१०१॥

बहु बिधि संभु सासु समुझाई। गवनीं भवन चरन सिरु नाई ॥
जननीं उमा बोलि तब लीन्ही। लै उछंग सुंदर सिख दीन्ही ॥
करेहु सदा संकर पद पूजा। नारिधरमु पतिदेउ न दूजा ॥
बचन कहत भरे लोचन बारी। बहुरि लाइ उर लीन्हि कुमारी ॥ ४
कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं। पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं ॥
भै अति प्रेम बिकल महतारी। धीरजु कीन्ह कुसमय बिचारी ॥
पुनि पुनि मिलति परति गहि चरना। परम प्रेमु कछु जाइ न बरना ॥
सब नारिन्ह मिलि भेटि भवानी। जाइ जननि उर पुनि लपटानी ॥ ८

छंद। जननिहि बहुरि मिलि चलीं उचित असीस सब काहूँ दईं।
फिरि फिरि बिलोकति मातु तन तब सखीं लै सिव पहिं गईं।
जाचक सकल संतोषि संकरु उमा सहित भवन चले।
सब अमर हरषे सुमन बरषि निसान नभ बाजे भले ॥ १२

दोहा। चले संग हिमवंत तब पहुचावन अति हेतु।
विविध भाँति परितोषु करि बिदा कीन्ह बृषकेतु ॥१०२॥

तुरत भवन आए गिरिराई। सकल सैल सर लिए बोलाई ॥
आदर दान विनय बहु माना। सब कर बिदा कीन्ह हिमवाना॥
जबहि संभु कैलासहि आए। सुर सब निज निज लोक सिधाए ॥
जगत मातु पितु संभु भवानी। तेहिं सिंगारु न कहउँ बखानी ॥
करहिं विविध विधि भोग विलासा। गनन्ह समेत बसहिं कैलासा ॥
हर गिरिजा बिहार नित नएऊ। एहि विधि विपुल काल चलि गएऊ ॥
तब जनमेउ षटबदन कुमारा। तारकु असुरु समर जेहिं मारा ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। षन्मुखजन्मु सकल जग जाना ॥

छंद। जगु जान षन्मुखजन्मु कर्मु प्रतापु पुरुषारथु महा।
तेहि हेतु मैं बृषकेतुसुत कर चरित संछेपहि कहा।
यह उमा संभु बिवाहु जे नर नारि कहहिं जे गावहीं।
कल्यान काज बिवाह मंगल सर्वदा सुखु पावहीं॥

दोहा। चरितसिंधु गिरिजारमन बेद न पावहिं पारु।
बरनै तुलसीदासु किमि अति मतिमंद गवाँरु ॥१०३॥

संभुचरित सुनि सरस सुहावा। भरद्वाज मुनि अति सुखु पावा ॥
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी। नयनन्हि नीरु रोमावलि ठाढ़ी ॥
प्रेम बिबस मुख आव न बानी। दसा देखि हरषे मुनि ग्यानी ॥
अहो धन्य तव जन्मु मुनीसा। तुम्हहि प्रान सम प्रिय गौरीसा ॥
सिवपद कमल जिन्हहि रति नाहीं। रामहि ते सपनेहु न सोहाहीं ॥
बिनु छल बिस्वनाथपद नेहू। रामभगत कर लच्छन एहू ॥
सिव सम को रघुपति ब्रत धारी। बिनु अघ तजी सती असि नारी ॥
पनु करि रघुपतिभगति देखाई। को सिव सम रामहि प्रिय भाई ॥

दोहा। प्रथमहि मैं कहि सिवचरित बूझा मरमु तुम्हार।
सुचि सेवक तुम्ह राम के रहित समस्त बिकार ॥१०४॥

मैं जाना तुम्हार गुन सीला। कहौं सुनहु अब रघुपतिलीला ॥
सुनु मुनि आजु समागम तोरें। कहि न जाइ जस सुखु मन मोरें ॥

रामचरित अति अमित मुनीसा । कहि न सकहिँ सत कोटि अहीसा ॥
तदपि जथाश्रुत कहौँ बखानी । सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी ॥
सारद दारुनारि सम स्वामी । रामु सूत्रधर अंतरजामी ॥
जेहि पर कृपा करहिँ जनु जानी । कबि उर अजिर नचावहिँ बानी ॥
प्रनवौँ सोइ कृपाल रघुनाथा । बरनौँ बिसद तासु गुनगाथा ॥
परम रम्य गिरिबरु कैलासू । सदा जहाँ सिव उमा निवासू ॥

दोहा । सिद्ध तपोधन जोगि जन सुर किंनर मुनि बृंद ।
बसहिँ तहाँ सुकृती सकल सेवहिँ सिव सुखकंद ॥१०५॥

हरि हर बिमुख धर्मरति नाहीँ । ते नर तहँ सपनेहु नहि जाहीँ ॥
तेहि गिरि पर बट बिटप बिसाला । नित नूतन सुंदर सब काला ॥
त्रिबिध समीर सुसीतलि छाया । सिव बिश्राम बिटप श्रुति गाया ॥
एक बार तेहि तर प्रभु गएऊ । तरु बिलोकि उर अति सुखु भएऊ ॥
निज कर डासि नागरिपुछाला । बैठे सहजहि संभु कृपाला ॥
कुंद इंदु दर गौर सरीरा । भुज प्रलंब परिधन मुनिचीरा ॥
तरुन अरुन अंबुज सम चरना । नखदुति भगत हृदय तम हरना ॥
भुजग भूति भूषन त्रिपुरारी । आननु सरद चंद छबि हारी ॥

दोहा । जटा मुकुट सुरसरित सिर लोचन नलिन बिसाल ।
नीलकंठ लावन्यनिधि सोह बालबिधु भाल ॥१०६॥

बैठे सोह कामरिपु कैसेँ । धरेँ सरीरु सांतरसु जैसेँ ॥
पारबती भल अवसरु जानी । गईँ संभु पहि मातु भवानी ॥
जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा । बाम भाग आसनु हर दीन्हा ॥
बैठीँ सिव समीप हरषाई । पूरुब जन्म कथा चित आई ॥
पतिहिय हेतु अधिक अनुमानी । बिहसि उमा बोलीँ प्रिय बानी ॥
कथा जो सकल लोक हितकारी । सोइ पूछन चह सैलकुमारी ॥
बिस्वनाथ मम नाथ पुरारी । त्रिभुवन महिमा बिदित तुम्हारी ॥
चर अरु अचर नाग नर देवा । सकल करहिँ पद पंकज सेवा ॥

दोहा । प्रभु समरथ सर्बग्य सिव सकल कला गुन धाम ।
जोग ग्यान बैराग्य निधि प्रनत कलपतरु नाम ॥१०७॥

जौ मो पर प्रसन्न सुखरासी। जानिय सत्य मोहि निज दासी॥
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना। कहि रघुनाथकथा बिधि नाना॥
जासु भवनु सुरतरु तर होई। सहि कि दरिद्रजनित दुखु सोई॥
ससिभूषन अस हृदय बिचारी। हरहु नाथ मम मतिभ्रम भारी॥ ४
प्रभु जे मुनि परमारथवादी। कहहिँ राम कहुँ ब्रह्म अनादी॥
सेस सारदा बेद पुराना। सकल करहिँ रघुपति गुन गाना॥
तुम्ह पुनि राम राम दिन राती। सादर जपहु अनंग अराती॥
रामु सो अवध नृपति सुत सोई। की अज अगुन अलखगति कोई॥ ८
दोहा। जौ नृपतनय तौ ब्रह्म किमि नारिबिरह मति भोरि।
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि॥१०८॥
जौ अनीह ब्यापक बिभु कोऊ। कहहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ॥
अज्ञ जानि रिस उर जनि धरहू। जेहि बिधि मोह मिटै सोइ करहू॥
मैँ बन दीखि रामप्रभुताई। अति भय बिकल न तुम्हहि सुनाई॥
तदपि मलिन मन बोधु न आवा। सो फलु भली भाँति हम पावा॥ ४
अजहूँ कछु संसउ मन मोरेँ। करहु कृपा बिनवौँ कर जोरेँ॥
प्रभु तब मोहि बहु भाँति प्रबोधा। नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा॥
तब कर अस बिमोह अब नाहीँ। रामकथा पर रुचि मन माहीँ॥
कहहु पुनीत राम गुन गाथा। भुजगराजभूषन सुरनाथा॥ ८
दोहा। बंदौँ पद धरि धरनि सिरु बिनय करौँ कर जोरि।
बरनहु रघुबर बिसद जसु श्रुतिसिद्धांत निचोरि॥१०९॥
जदपि जोषिता नहि अधिकारी। दासी मन क्रम बचन तुम्हारी॥
गूढ़ौ तत्व न साधु दुरावहिँ। आरत अधिकारी जहँ पावहिँ॥
अति आरति पूछौँ सुरराया। रघुपतिकथा कहहु करि दाया॥
प्रथम सो कारन कहहु बिचारी। निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी॥ ४
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा। बालचरित पुनि कहहु उदारा॥
कहहु जथा जानकी बिवाही। राज तजा सो दूषन काही॥
बन बसि कीन्हे चरित अपारा। कहहु नाथ जिमि रावन मारा॥
राज बैठि कीन्ही बहु लीला। सकल कहहु संकर सुखसीला॥ ८

दोहा। बहुरि कहहु करुनायतन कीन्ह जो अचरज राम।
प्रजा सहित रघुबंसमनि किमि गवने निज धाम ॥११०॥
पुनि प्रभु कहहु सो तत्व बखानी। जेहि बिज्ञान मगन मुनि ज्ञानी ॥
भगति ज्ञान बिज्ञान बिरागा। पुनि सब बरनहु सहित बिभागा ॥
औरौ रामरहस्य अनेका। कहहु नाथ अति बिमल बिबेका ॥
जो प्रभु मैं पूछा नहि होई। सोउ दयाल राखहु जनि गोई ॥
तुम्ह त्रिभुवनगुर बेद बखाना। आन जीव पावर का जाना ॥
प्रस्न उमा कै सहज सुहाई। छल बिहीन सुनि सिव मन भाई ॥
हरहिय रामचरित सब आए। प्रेम पुलक लोचन जल छाए ॥
श्रीरघुनाथरूप उर आवा। परमानंद अमित सुख पावा ॥
दोहा। मगन ध्यानरस दंड जुग पुनि मन बाहेर कीन्ह।
रघुपतिचरित महेस तब हरषित बरनै लीन्ह ॥१११॥
झूठेउ सत्य जाहि बिनु जाने। जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने ॥
जेहि जाने जग जाइ हेराई। जागे जथा सपन भ्रम जाई ॥
बंदौं बालरूप सोइ रामू। सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू ॥
मंगलभवन अमंगलहारी। द्रवौ सो दसरथ अजिर बिहारी ॥
करि प्रनाम रामहि त्रिपुरारी। हरषि सुधा सम गिरा उचारी ॥
धन्य धन्य गिरिराजकुमारी। तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी ॥
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा। सकल लोक जगपावनि गंगा ॥
तुम्ह रघुबीरचरन अनुरागी। कीन्हिहु प्रस्न जगतहित लागी ॥
दोहा। रामकृपा तें पारबति सपनेहु तव मन माहि।
सोक मोह संदेह भ्रम मम बिचार कछु नाहि ॥११२॥
तदपि असंका कीन्हिहु सोई। कहत सुनत सब कर हित होई ॥
जिन्ह हरिकथा सुनी नहि काना। श्रवनरंध्र अहिभवन समाना ॥
नयनन्हि संतदरस नहि देखा। लोचन मोरपंख कर लेखा ॥
ते सिर कटु तुंबरि समतूला। जे न नमत हरि गुर पद मूला ॥
जिन्ह हरिभगति हृदय नहि आनी। जीवत सव समान तेइ प्रानी ॥
जो नहि करै राम गुन गाना। जीह सो दादुरजीह समाना ॥

कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती । सुनि हरिचरित न जो हरषाती ॥
गिरिजा सुनहु राम कै लीला । सुरहित दनुज बिमोहनसीला ॥ ८

दोहा । रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुखदानि ।
सतसमाज सुरलोक सब को न सुनै अस जानि ॥११३॥

रामकथा सुंदर करतारी । संसय बिहग उड़ावनिहारी ॥
रामकथा कलि बिटप कुठारी । सादर सुनु गिरिराजकुमारी ॥
राम नाम गुन चरित सुहाए । जनम करम अगनित श्रुति गाए ॥
जथा अनंत राम भगवाना । तथा कथा कीरति गुन नाना ॥ ४
तदपि जथाश्रुत जसि मति मोरी । कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी ॥
उमा प्रस्न तव सहज सुहाई । सुखद संतसंमत मोहि भाई ॥
एक बात नहि मोहि सोहानी । जदपि मोहबस कहेहु भवानी ॥
तुम्ह जो कहा राम कोउ आना । जेहि श्रुति गाव धरहिँ मुनि ध्याना ॥ ८

दोहा । कहहिँ सुनहिँ अस अधम नर ग्रसे जे मोह पिसाच ।
पाखंडी हरिपद बिमुख जानहिँ झूठ न साच ॥११४॥

अज्ञ अकोविद अंध अभागी । काई बिषय मुकुर मन लागी ॥
लंपट कपटी कुटिल बिसेषी । सपनेहु संतसभा नहि देखी ॥
कहहिँ ते बेद असंमत बानी । जिन्ह के सूझ लाभु नहि हानी ॥
मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना । रामरूप देखहिँ किमि दीना ॥ ४
जिन्ह के अगुन न सगुन बिबेका । जल्पहिँ कल्पित बचन अनेका ॥
हरिमाया बस जगत भ्रमाहीँ । तिन्हहिँ कहत कछु अघटित नाहीँ ॥
बातुल भूत बिबस मतवारे । ते नहि बोलहिँ बचन बिचारे ॥
जिन्ह कृत महामोह मद पाना । तिन्ह कर कहा करिअ नहिँ काना ॥ ८

सोरठा । अस निज हृदय बिचारि तजु संसय भजु रामपद ।
सुनु गिरिराजकुमारि भ्रम तम रबिकर बचन मम ॥११५॥

सगुनहि अगुनहि नहि कछु भेदा । गावहिँ मुनि पुरान बुध बेदा ॥
अगुन अरूप अलख अज जोई । भगत प्रेम बस सगुन सो होई ॥
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसेँ । जलु हिम उपल बिलग नहिँ जैसेँ ॥
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा । तेहि किमि कहिअ बिमोहप्रसंगा ॥ ४

राम सच्चिदानंद दिनेसा। नहिँ तहँ मोह निसा लवलेसा॥
सहज प्रकासरूप भगवाना। नहिँ तहँ पुनि बिज्ञान बिहाना॥
हरष बिषाद ज्ञान अज्ञाना। जीवधर्म अहमिति अभिमाना॥
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानंद परेस पुराना॥ ८

दोहा। पुरुष प्रसिद्ध प्रकासनिधि प्रगट परावर नाथ।
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिव नाएउ माथ॥११६॥

निज भ्रम नहिँ समुझहिँ अज्ञानी। प्रभु पर मोह धरहिँ जड़ प्रानी॥
जथा गगन घनपटल निहारी। झाँपेउ भानु कहहिँ कुबिचारी॥
चितव जो लोचन अंगुलि लाएँ। प्रगट जुगल ससि तेहि कैँ भाएँ॥
उमा रामबिषइक अस मोहा। नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा॥ ४
बिषय करन सुर जीव समेता। सकल एक तेँ एक सचेता॥
सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवधपति सोई॥
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ज्ञान गुन धामू॥
जासु सत्यता तेँ जड़ माया। भास सत्य इव मोह सहाया॥ ८

दोहा। रजत सीप महुँ भास जिमि जथा भानुकर बारि।
जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ भ्रम न सकै कोउ टारि॥११७॥

एहि बिधि जग हरि आश्रित रहई। जदपि असत्य देत दुख अहई॥
जौँ सपनेँ सिर काटै कोई। बिनु जागेँ न दूरि दुख होई॥
जासु कृपा अस भ्रम मिटि जाई। गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई॥
आदि अंत कोउ जासु न पावा। मति अनुमानि निगम अस गावा॥ ४
बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु करम करै बिधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी॥
तन बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहै घ्रान बिनु बास असेषा॥
असि सब भाँति अलौकिक करनी। महिमा जासु जाइ नहिँ बरनी॥ ८

दोहा। जेहि इमि गावहिँ बेद बुध जाहि धरहिँ मुनि ध्यान।
सोइ दसरथसुत भगतहित कोसलपति भगवान॥११८॥

कासी मरत जंतु अवलोकी। जासु नाम बल करौँ बिसोकी॥
सोइ प्रभु मोर चराचरस्वामी। रघुबर सब उर अंतरजामी॥

बिबसहु जासु नाम नर कहहीँ। जनम अनेक रचित अघ दहहीँ॥
सादर सुमिरन जे नर करहीँ। भववारिधि गोपद इव तरहीँ॥
राम सो परमातमा भवानी। तँहँ भ्रम अति अविहित तव बानी॥
अस संसय आनत उर माहीँ। ज्ञान बिराग सकल गुन जाहीँ॥
सुनि सिव के भ्रमभंजन बचना। मिटि गै सब कुतरक कै रचना॥
भइ रघुपतिपद प्रीति प्रतीती। दारुन असंभावना बीती॥

दोहा। पुनि पुनि प्रभुपद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि।
बोलीँ गिरिजा वचन बर मनहुँ प्रेमरस सानि॥११९॥

ससिकर सम सुनि गिरा तुम्हारी। मिटा मोह सरदातप भारी॥
तुम्ह कृपाल सबु संसउ हरेऊ। रामस्वरूप जानि मोहि परेऊ॥
नाथकृपा अब गएउ बिषादा। सुखी भइउँ प्रभुचरन प्रसादा॥
अब मोहि आपनि किंकरि जानी। जदपि सहज जड़ नारि अयानी॥
प्रथम जो मैँ पूछा सोइ कहहू। जौँ मो पर प्रसन्न प्रभु अहहू॥
राम ब्रह्म चिनमय अविनासी। सर्ब रहित सब उर पुर बासी॥
नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू। मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतू॥
उमाबचन सुनि परम बिनीता। रामकथा पर प्रीति पुनीता॥

दोहा। हिय हरषे कामारि तब संकर सहज सुजान।
बहु बिधि उमहि प्रसंसि पुनि बोले कृपानिधान॥

सोरठा। सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल।
कहा भुसुंडि बखानि सुना बिहगनायक गरुड़॥
सो संबाद उदार जेहिँ बिधि भा आगे कहब।
सुनहु राम अवतार चरित परम सुंदर अनघ॥
हरि गुन नाम अपार कथा रूप अगनित अमित।
मैँ निज मति अनुसार कहौँ उमा सादर सुनहु॥१२०॥

सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाए। बिपुल बिसद निगमागम गाए॥
हरि अवतार हेतु जेहि होई। इदमित्थं कहि जाइ न सोई॥
राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी। मत हमार अस सुनहि सयानी॥
तदपि संत मुनि बेद पुराना। जस कछु कहहिँ स्वमति अनुमाना॥

तस मैं सुमुखि सुनावौं तोही। समुझि परै जस कारन मोही॥
जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
करहिं अनीति जाइ नहि बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जनपीरा॥ ८

दोहा। असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुतिसेतु।
जग बिस्तारहिं बिसद जस रामजन्म कर हेतु॥१२१॥

सोइ जस गाइ भगत भव तरहीं। कृपासिंधु जन हित तनु धरहीं॥
रामजनम कें हेतु अनेका। परम बिचित्र एक तें एका॥
जनम एक दुइ कहौं बखानी। सावधान सुनु सुमति भवानी॥
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ। जय अरु बिजय जान सब कोऊ॥ ४
बिप्रस्राप तें दूनौ भाई। तामस असुरदेह तिन्ह पाई॥
कनककसिपु अरु हाटकलोचन। जगतबिदित सुरपति मद मोचन॥
बिजई समर बीर बिख्याता। धरि बराहबपु एक निपाता॥
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा। जन प्रहलाद सुजस बिस्तारा॥ ८

दोहा। भए निसाचर जाइ तेइ महाबीर बलवान।
कुंभकरन रावन सुभट सुरबिजई जग जान॥१२२॥

मुकुत न भए हते भगवाना। तीनि जनम द्विजबचन प्रवाना॥
एक बार तिन्ह के हित लागी। धरेउ सरीर भगत अनुरागी॥
कस्यप अदिति तहाँ पितु माता। दसरथ कौसल्या बिख्याता॥
एक कलप एहि बिधि अवतारा। चरित पवित्र किए संसारा॥ ४
एक कलप सुर देखि दुखारे। समर जलंधर सन सब हारे॥
संभु कीन्ह संग्राम अपारा। दनुज महाबल मरै न मारा॥
परम सती असुराधिपनारी। तेहि बल ताहि न जितहिं पुरारी॥

दोहा। छल करि टारेउ तासु ब्रत प्रभु सुरकारज कीन्ह। ८
जब तेहि जानेउ मरम तब श्राप कोप करि दीन्ह॥१२३॥

तासु श्राप हरि दीन्ह प्रवाना। कौतुकनिधि कृपाल भगवाना॥
तहाँ जलंधर रावन भएऊ। रन हति राम परमपद दएऊ॥
एक जनम कर कारन एहा। जेहि लगि राम धरी नरदेहा॥

प्रति अवतार कथा प्रभु केरी। सुनु मुनि बरनी कबिन्ह घनेरी ॥ ४
नारद श्राप दीन्ह एक बारा। कलप एक तेहि लगि अवतारा ॥
गिरिजा चकित भई सुनि बानी। नारद विष्नुभगत पुनि ज्ञानी ॥
कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा। का अपराध रमापति कीन्हा ॥
यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी। मुनिमन मोह आचरज भारी ॥ ८
दोहा। बोले बिहसि महेस तब ज्ञानी मूढ़ न कोइ।
जेहि जस रघुपति करहिँ जब सो तस तेहि छन होइ ॥

सोरठा। कहौँ राम गुन गाथ भरद्वाज सादर सुनहु।
भवभंजन रघुनाथ भजु तुलसी तजि मान मद ॥१२४॥ १२
हिमगिरिगुहा एक अति पावनि। बह समीप सुरसरी सुहावनि ॥
आश्रम परम पुनीत सुहावा। देखि देवरिषिमन अति भावा ॥
निरखि सैल सरि बिपिन बिभागा। भएउ रमापतिपद अनुरागा ॥
सुमिरत हरिहि श्रापगति बाधी। सहज बिमल मन लागि समाधी ॥ ४
मुनिगति देखि सुरेस डेराना। कामहि बोलि कीन्ह सनमाना ॥
सहित सहाय जाहु मम हेतू। चलेउ हरषि हिय जलचरकेतू ॥
सुनासीरमन महु असि त्रासा। चहत देवरिषि मम पुर बासा ॥
जे कामी लोलुप जग माहीँ। कुटिल काक इव सबहि डेराहीँ ॥ ८
दोहा। सूख हाड़ लै भाग सठ स्वान निरखि मृगराज।
छीनि लेइ जनि जान जड़ तिमि सुरपतिहि न लाज ॥१२५॥
तेहि आश्रमहि मदन जब गएऊ। निज माया बसंत निरमएऊ ॥
कुसुमित बिबिध बिटप बहु रंगा। कूजहिँ कोकिल गुंजहिँ भृंगा ॥
चली सुहावनि त्रिबिध बयारी। कामकृसानु बढ़ावनिहारी ॥
रंभादिक सुरनारि नवीना। सकल असमसर कला प्रबीना ॥ ४
करहिँ गान बहु तान तरंगा। बहु बिधि क्रीड़हिँ पानि पतंगा ॥
देखि सहाय मदन हरषाना। कीन्हेसि पुनि प्रपंच बिधि नाना ॥
कामकला कछु मुनिहि न ब्यापी। निज भय डरेउ मनोभव पापी ॥
सीम कि चाँपि सकै कोउ तासू। बड़ रखवार रमापति जासू ॥ ८

दोहा। सहित सहाय सभीत अति मानि हारि मन मयन।
गहेसि जाइ मुनिचरन कहि सुठि आरत मृदु बयन ॥१२६॥

भएउ न नारदमन कछु रोषा। कहि प्रिय बचन काम परितोषा ॥
नाइ चरन सिरु आएसु पाई। गएउ मदन तब सहित सहाई ॥
मुनि सुसीलता आपनि करनी। सुरपतिसभाँ जाइ सब बरनी ॥
सुनि सब के मन अचरजु आवा। मुनिहि प्रसंसि हरिहि सिरु नावा ॥ ४
तब नारद गवने सिव पाहीँ। जिता काम अहमिति मन माहीँ ॥
मारचरित संकरहि सुनाए। अति प्रिय जानि महेस सिखाए ॥
बार बार बिनवौँ मुनि तोही। जिमि यह कथा सुनायहु मोही ॥
तिमि जनि हरिहि सुनावहु कबहूँ। चलेहु प्रसंग दुराएहु तबहूँ ॥ ८

दोहा। संभु दीन्ह उपदेस हित नहि नारदहि सोहान।
भरद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान ॥१२७॥

राम कीन्ह चाहहिँ सोइ होई। करै अन्यथा अस नहि कोई ॥
संभुवचन मुनिमन नहि भाए। तब बिरंचि के लोक सिधाए ॥
एक बार करतल बर बीना। गावत हरिगुन गानप्रबीना ॥
छीरसिंधु गवने मुनिनाथा। जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथा ॥ ४
हरषि मिले उठि रमानिकेता। बैठे आसन रिषिहि समेता ॥
बोले बिहसि चराचरराया। बहुते दिनन कीन्हि मुनि दाया ॥
कामचरित नारद सब भाषे। जद्यपि प्रथम बरजि सिव राखे ॥
अति प्रचंड रघुपति कै माया। जेहि न मोह अस को जग जाया ॥ ८

दोहा। रूख बदन करि बचन मृदु बोले श्रीभगवान।
तुम्हरे सुमिरन तेँ मिटहिँ मोह मार मद मान ॥१२८॥

सुनु मुनि मोह होइ मन ताकेँ। ज्ञान बिराग हृदय नहिँ जाकेँ ॥
ब्रह्मचरज ब्रत रत मतिधीरा। तुम्हहि कि करै मनोभव पीरा ॥
नारद कहेउ सहित अभिमाना। कृपा तुम्हारि सकल भगवाना ॥
करुनानिधि मन दीख बिचारी। उर अंकुरेउ गर्ब तरु भारी ॥ ४
बेगि सो मैँ डारिहौँ उखारी। पन हमार सेवकहितकारी ॥
मुनि कर हित मम कौतुक होई। अवसि उपाय करबि मैँ सोई ॥

तब नारद हरिपद सिर नाई। चले हृदय अहमिति अधिकाई ॥
श्रीपति निज माया तब प्रेरी। सुनहु कठिन करनी तेहि केरी ॥ ८
दोहा। बिरचेउ मग महु नगर तेहि सत जोजन बिस्तार।
श्रीनिवासपुर तें अधिक रचना बिबिध प्रकार ॥१२९॥
बसहिं नगर सुंदर नर नारी। जनु बहु मनसिज रति तनुधारी ॥
तेहि पुर बसै सीलनिधि राजा। अगनित हय गय सेन समाजा ॥
सत सुरेस सम बिभव बिलासा। रूप तेज बल नीति निवासा ॥
बिस्वमोहनी तासु कुमारी। श्री बिमोह जिसु रूपु निहारी ॥ ४
सोइ हरिमाया सब गुन खानी। सोभा तासु कि जाइ बखानी ॥
करै स्वयंबर सो नृपबाला। आए तहँ अगनित महिपाला ॥
मुनि कौतुकी नगर तेहि गएऊ। पुरबासिन्ह सब पूछत भएऊ ॥
सुनि सब चरित भूपगृह आए। करि पूजा नृप मुनि बैठाए ॥ ८
दोहा। आनि देखाई नारदहि भूपति राजकुमारि।
कहहु नाथ गुन दोष सब एहि के हृदय बिचारि ॥१३०॥
देखि रूप मुनि बिरति बिसारी। बड़ी बार लगि रहे निहारी ॥
लच्छन तासु बिलोकि भुलाने। हृदय हरष नहिं प्रगट बखाने ॥
जो एहि बरै अमर सोइ होई। समरभूमि तेहि जीत न कोई ॥
सेवहिं सकल चराचर ताही। बरै सीलनिधि कन्या जाही ॥ ४
लच्छन सब बिचारि उर राखे। कछुक बनाइ भूप सन भाषे ॥
सुता सुलच्छन कहि नृप पाहीं। नारद चले सोच मन माहीं ॥
करौं जाइ सोइ जतन बिचारी। जेहि प्रकार मोहि बरै कुमारी ॥
जप तप कछु न होइ तेहि काला। हे बिधि मिलै कवन बिधि बाला ॥ ८
दोहा। एहि अवसर चाहिअ परम सोभा रूप बिसाल।
जो बिलोकि रीझै कुअँरि तब मेलइ जयमाल ॥१३१॥
हरि सन मागौं सुंदरताई। होइहि जात गहरु अति भाई ॥
मोरें हित हरि सम नहि कोऊ। एहि औसर सहाय सोइ होऊ ॥
बहु बिधि बिनय कीन्हि तेहि काला। प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला ॥
प्रभु बिलोकि मुनिनयन जुड़ाने। होइहि काजु हिएँ हरषाने ॥ ४

अति आरति कहि कथा सुनाई। करहु कृपा करि होहु सहाई॥
आपन रूप देहु प्रभु मोही। आनि भाँति नहि पावौं ओही॥
जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा॥
निज माया बल देखि बिसाला। हिय हसि बोले दीनदयाला॥ ८

दोहा। जेहि बिधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार।
सोइ हम करब न आन कछु बचन न मृषा हमार॥१३२॥

कुपथ माँग रुजब्याकुल रोगी। बैद न देइ सुनहु मुनि जोगी॥
एहि बिधि हित तुम्हार मैं ठएऊ। कहि अस अंतरहित प्रभु भएऊ॥
माया बिबस भए मुनि मूढ़ा। समुझी नहि हरिगिरा निगूढ़ा॥
गवने तुरत तहाँ रिषिराई। जहाँ स्वयंबरभूमि बनाई॥ ४
निज निज आसन बैठे राजा। बहु बनाव करि सहित समाजा॥
मुनिमन हरष रूप अति मोरें। मोहि तजि आनहि बरिहि न भोरें॥
मुनिहित कारन कृपानिधाना। दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना॥
सो चरित्र लखि काहु न पावा। नारद जानि सबहिँ सिर नावा॥ ८

दोहा। रहे तहाँ दुइ रुद्रगन ते जानहि सब भेउ।
बिप्रबेष देखत फिरहिँ परम कौतुकी तेउ॥१३३॥

जेहि समाज बैठे मुनि जाई। हृदय रूप अहमिति अधिकाई॥
तहँ बैठे महेसगन दोऊ। बिप्रबेष गति लखै न कोऊ॥
करहिँ कूटि नारदहि सुनाई। नीकि दीन्हि हरि सुंदरताई॥
रीझिहि राजकुअँरि छबि देखी। इन्हहि बरिहि हरि जानि बिसेषी॥ ४
मुनिहि मोह मन हाथ पराएँ। हसहिँ संभुगन अति सचु पाएँ॥
जदपि सुनहिँ मुनि अटपटि बानी। समुझि न परै बुद्धि भ्रम सानी॥
काहु न लखा सो चरित बिसेषा। सो सरूप नृपकन्या देखा॥
मर्कटबदन भयंकर देही। देखत हृदय क्रोध भा तेही॥ ८

दोहा। सखी संग लै कुअँरि तब चलि जनु राजमराल।
देखत फिरै महीप सब कर सरोज जयमाल॥१३४॥

जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेहि न बिलोकी भूली॥
पुनि पुनि मुनि उकसहिँ अकुलाहीँ। देखि दसा हरगन मुसुकाहीँ॥

धरि नृपतनु तहँ गएउ कृपाला। कुअँरि हरषि मेलेउ जयमाला॥
दुलहिनि लै गे लच्छिनिवासा। नृपसमाज सब भएउ निरासा॥ ४
मुनि अति विकल मोह मति नाठी। मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी॥
तब हरगन बोले मुसुकाई। निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई॥
अस कहि दोउ भागे भय भारी। बदन दीख मुनि बारि निहारी॥
बेषु बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा। तिन्हहि सराप दीन्ह अति गाढ़ा॥ ८

दोहा। होहु निसाचर जाइ तुम्ह कपटी पापी दोउ।
हँसेहु हमहिँ सो लेहु फल बहुरि हँसेहु मुनि कोउ॥१३५॥

पुनि जल दीख रूप निज पावा। तदपि हृदय संतोष न आवा॥
फरकत अधर कोप मन माहीँ। सपदि चले कमलापति पाहीँ॥
देहौँ श्राप कि मरिहौँ जाई। जगत मोरि उपहास कराई॥
बीचहिँ पंथ मिले दनुजारी। संग रमा सोइ राजकुमारी॥ ४
बोले मधुर बचन सुरसाईँ। मुनि कहँ चले बिकल की नाईँ॥
सुनत बचन उपजा अति क्रोधा। मायावस न रहा मन बोधा॥
परसंपदा सकहु नहि देखी। तुम्हरेँ इरिषा कपट बिसेषी॥
मथत सिंधु रुद्रहि बौराएहु। सुरन्ह प्रेरि बिष पान कराएहु॥ ८

दोहा। असुर सुरा बिष संकरहि आपु रमा मनि चारु।
स्वारथ साधक कुटिल तुम्ह सदा कपटब्यवहारु॥१३६॥

परम स्वतंत्र न सिर पर कोई। भावै मनहि करहु तुम्ह सोई॥
भलेहि मंद मंदेहि भल करहू। बिसमय हरष न हिअँ कछु धरहू॥
डहकि डहकि परिचेहु सब काहू। अति असंक मन सदा उछाहू॥
कर्म सुभासुभ तुम्हहि न बाधा। अब लगि तुम्हहि न काहू साधा॥ ४
भले भवन अब बायन दीन्हा। पावहुगे फल आपन कीन्हा॥
बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा। सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा॥
कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी। करिहहिँ कीस सहाय तुम्हारी॥
मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी। नारिबिरह तुम्ह होब दुखारी॥ ८

दोहा। श्राप सीस धरि हरषि हिय प्रभु बहु बिनती कीन्हि।
निज माया कै प्रबलता करषि कृपानिधि लीन्हि॥१३७॥

जब हरि माया दूरि निवारी। नहि तहँ रमा न राजकुमारी ।।
तब मुनि अति सभीत हरिचरना। गहे पाहि प्रनतारतिहरना ।।
मृषा होउ मम श्राप कृपाला। मम इच्छा कह दीनदयाला ।।
मैं दुर्बचन कहे बहुतेरे। कह मुनि पाप मिटिहि किमि मेरे ।। ४
जपहु जाइ संकर सत नामा। होइहि हृदय तुरत बिश्रामा ।।
कोउ नहि सिव समान प्रिय मोरेँ। असि परतीति तजहु जनि भोरेँ ।।
जेहि पर कृपा न करहिँ पुरारी। सो न पाव मुनि भगति हमारी ।।
अस उर धरि महि बिचरहु जाई। अब न तुम्हहि माया नियराई ।। ८

दोहा। बहु बिधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु तब भये अंतरधान।
सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गान ।।१३८।।

हरगन मुनिहि जात पथ देखी। बिगत मोह मन हरष बिसेषी ।।
अति सभीत नारद पहि आए। गहि पद आरत बचन सुनाए ।।
हरगन हम न बिप्र मुनिराया। बड़ अपराध कीन्ह फल पाया ।।
श्राप अनुग्रह करहु कृपाला। बोले नारद दीनदयाला ।। ४
निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ। बैभव बिपुल तेज बल होऊ ।।
भुजबल बिस्व जितब तुम्ह जहिआ। धरिहहिँ बिष्नु मनुजतनु तहिआ ।।
समर मरन हरिहाथ तुम्हारा। होइहहु मुकुत न पुनि संसारा ।।
चले जुगल मुनिपद सिर नाई। भए निसाचर कालहि पाई ।। ८

दोहा। एक कलप एहिँ हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार।
सुररंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भुविभार ।।१३८।।

एहि बिधि जनम करम हरि केरे। सुंदर सुखद बिचित्र घनेरे ।।
कलप कलप प्रति प्रभु अवतरहीँ। चारु चरित नाना बिधि करहीँ ।।
तब तब कथा मुनीसन्ह गाई। परम पुनीत प्रबंध बनाई ।।
बिबिध प्रसंग अनूप बखाने। करहिँ न सुनि आचरजु सयाने ।। ४
हरि अनंत हरिकथा अनंता। कहहिँ सुनहिँ बहु बिधि सब संता ।।
रामचंद्र के चरित सुहाए। कलप कोटि लगि जाहिँ न गाए ।।
यह प्रसंग मैं कहा भवानी। हरिमाया मोहहिँ मुनि ग्यानी ।।
प्रभु कौतुकी प्रनत हितकारी। सेवत सुलभ सकल दुखहारी ।। ८

सोरठा। सुर नर मुनि कोउ नाहिँ जेहि न मोह माया प्रबल।
अस बिचारि मन माहिँ भजिअ महामायापतिहि ॥१४०॥

अपर हेतु सुनु सैलकुमारी। कहौँ बिचित्र कथा बिस्तारी॥
जेहि कारन अज अगुन अरूपा। ब्रह्म भएउ कोसलपुर भूपा॥
जो प्रभु बिपिन फिरत तुम्ह देखा। बंधु समेत धरेँ मुनिबेषा॥
जासु चरित अवलोकि भवानी। सतीसरीर रहिहु बौरानी॥ ४
अजहु न छाया मिटति तुम्हारी। तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी॥
लीला कीन्हि जो तेहि अवतारा। सो सब कहिहौँ मति अनुसारा॥
भरद्वाज सुनि संकरबानी। सकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी॥
लगे बहुरि बरनै बृषकेतू। सो अवतार भएउ जेहि हेतू॥ ८

दोहा। सो मैं तुम्ह सन कहौँ सबु सुनु मुनीस मन लाइ।
रामकथा कलिमलहरनि मंगलकरनि सुहाइ ॥१४१॥

स्वायंभू मनु अरु सतरूपा। जिन्ह तेँ भै नरसृष्टि अनूपा॥
दंपति धरम आचरन नीका। अजहु गाव श्रुति जिन्ह कै लीका॥
नृप उत्तानपाद सुत तासू। ध्रुव हरिभगत भएउ सुत जासू॥
लघु सुत नाम प्रियब्रत ताही। बेद पुरान प्रसंसहिँ जाही॥ ४
देवहूति पुनि तासु कुमारी। जो मुनि कर्दम कै प्रिय नारी॥
आदिदेव प्रभु दीनदयाला। जठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला॥
सांख्य सास्त्र जिन्ह प्रगट बखाना। तत्वबिचार निपुन भगवाना॥
तेहि मनु राज कीन्ह बहु काला। प्रभु आयसु सब बिधि प्रतिपाला॥ ८

सोरठा। होइ न बिषय बिराग भवन बसत भा चौथ पन।
हृदय बहुत दुख लाग जनम गएउ हरिभगति बिनु ॥१४२॥

बरबस राज सुतहि तब दीन्हा। नारि समेत गवन बन कीन्हा॥
तीरथ बर नैमिष बिख्याता। अति पुनीत साधक सिधिदाता॥
बसहिँ तहाँ मुनि सिद्ध समाजा। तहँ हिअ हरषि चलेउ मनु राजा॥
पंथ जात सोहहिँ मतिधीरा। ज्ञान भगति जनु धरेँ सरीरा॥ ४
पहुचे जाइ धेनुमति तीरा। हरषि नहाने निरमल नीरा॥
आए मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी। धरमधुरंधर नृपरिषि जानी॥

जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाए। मुनिन्ह सकल सादर करवाए॥
कृस सरीर मुनिपट परिधाना। सतसमाज नित सुनहिँ पुराना॥ ८
दोहा। द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहिँ सहित अनुराग।
वासुदेवपद पंकरुह दंपतिमन अति लाग॥१४३॥
करहिँ अहार साक फल कंदा। सुमिरहिँ ब्रह्म सच्चिदानंदा॥
पुनि हरि हेतु करन तप लागे। बारि अधार मूल फल त्यागे॥
उर अभिलाष निरंतर होई। देखिअ नयन परम प्रभु सोई॥
अगुन अखंड अनंत अनादी। जेहि चिंतहिँ परमारथवादी॥ ४
नेति नेति जेहि बेद निरूपा। निजानंद निरुपाधि अनूपा॥
संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना। उपजहिँ जासु अंस तेँ नाना॥
ऐसेउ प्रभु सेवकबस अहई। भगत हेतु लीलातनु गहई॥
जौ यह बचन सत्य श्रुति भाषा। तौ हमार पूजिहि अभिलाषा॥ ८
दोहा। एहि बिधि बीते बरष षट सहस बारि आहार।
संबत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार॥१४४॥
बरष सहस दस त्यागेउ सोऊ। ठाढ़े रहे एक पद दोऊ॥
बिधि हरि हर तप देखि अपारा। मनु समीप आए बहु बारा॥
माँगहु बर बहु भाँति लोभाए। परम धीर नहि चलहिँ चलाए॥
अस्थि मात्र होइ रहे सरीरा। तदपि मनाग मनहि नहि पीरा॥ ४
प्रभु सर्बज्ञ दास निज जानी। गति अनन्य तापस नृप रानी॥
माँगु माँगु बरु भै नभबानी। परम गभीर कृपामृत सानी॥
मृतकजिआवनि गिरा सुहाई। श्रवनरंध्र होइ उर जब आई॥
हृष्टपुष्ट तन भए सुहाए। मानहु अबहि भवन तेँ आए॥ ८
दोहा। श्रवन सुधा सम बचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात।
बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदय समात॥१४५॥
सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू। बिधि हरि हर बंदित पदरेनू॥
सेवत सुलभ सकल सुखदायक। प्रनतपाल सचराचरनायक॥
जौ अनाथहित हम पर नेहू। तौ प्रसन्न होइ यह बर देहू॥
जो सरूप बस सिवमन माहीँ। जेहि कारन मुनि जतन कराहीँ॥ ४

जो भुसुंडिमन मानस हंसा । सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा ॥
देखहिँ हम सो रूप भरि लोचन । कृपा करहु प्रनतारतिमोचन ॥
दंपतिबचन परम प्रिय लागे । मृदुल बिनीत प्रेमरस पागे ॥
भगतबछल प्रभु कृपानिधाना । बिस्वबास प्रगटे भगवाना ॥ ८
दोहा । नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम ।
लाजहिँ तनसोभा निरखि कोटि कोटि सत काम ॥१४६॥
सरदमयंक बदन छबिसीवाँ । चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवाँ ॥
अधर अरुन रद सुंदर नासा । बिधुकर निकर बिनिंदक हासा ॥
नव अंबुज अंबकछबि नीकी । चितवनि ललित भावँती जी की ॥
भृकुटि मनोजचाप छबि हारी । तिलक ललाट पटल दुतिकारी ॥ ४
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा । कुटिल केस जनु मधुपसमाजा ॥
उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला । पदिक हार भूषन मनिजाला ॥
केहरि कंधर चारु जनेऊ । बाहुबिभूषन सुंदर तेऊ ॥
करिकर सरिस सुभग भुजदंडा । कटि निषंग कर सर कोदंडा ॥ ८
दोहा । तड़ित बिनिंदक पीत पट उदर रेख बर तीनि ।
नाभि मनोहर लेति जनु जमुनभवर छबि छीनि ॥१४७॥
पद राजीव बरनि नहिँ जाहीँ । मुनिमन मधुप बसहिँ जेन्ह माहीँ ॥
बाम भाग सोभति अनुकूला । आदिसक्ति छबिनिधि जगमूला ॥
जासु अंस उपजहिँ गुनखानी । अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी ॥
भृकुटिबिलास जासु जग होई । राम बाम दिसि सीता सोई ॥ ४
छबिसमुद्र हरिरूप बिलोकी । एकटक रहे नयनपट रोकी ॥
चितवहिँ सादर रूप अनूपा । तृप्ति न मानहिँ मनु सतरूपा ॥
हरष बिबस तनदसा भुलानी । परे दंड इव गहि पद पानी ॥
सिर परसे प्रभु निज कर कंजा । तुरत उठाए करुनापुंजा ॥ ८
दोहा । बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहि जानि ।
माँगहु बर जोइ भाव मन महादानि अनुमानि ॥१४८॥
सुनि प्रभुबचन जोरि जुग पानी । धरि धीरजु बोलीँ मृदु बानी ॥
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे । अब पूरे सब काम हमारे ॥

एक लालसा बड़ि उर माहीँ। सुगम अगम कहि जाति सो नाहीँ॥
तुम्हहिँ देत अति सुगम गोसाईँ। अगम लाग मोहि निज कृपनाईँ॥ ४
जथा दरिद्र बिबुधतरु पाई। बहु संपति माँगत सँकुचाई॥
तासु प्रभाउ जान नहि सोई। तथा हृदय मम संसय होई॥
सो तुम्ह जानहु अंतरजामी। पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी॥
सकुच बिहाइ माँगु नृप मोही। मोरेँ नहिँ अदेय कछु तोही॥ ८
दोहा। दानिसिरोमनि कृपानिधि नाथ कहौँ सतिभाउ।
चाहौँ तुम्हहिँ समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ॥१४९॥
देखि प्रीति सुनि बचन अमोले। एवमस्तु करुनानिधि बोले॥
आपु सरिस खोजौँ कहँ जाई। नृप तव तनय होब मैँ आई॥
सतरूपहि बिलोकि कर जोरेँ। देबि माँगु बरु जो रुचि तोरेँ॥
जो बरु नाथ चतुर नृप माँगा। सोइ कृपाल मोहि अति प्रिय लागा॥ ४
प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई। जदपि भगतिहित तुम्हहिँ सोहाई॥
तुम्ह ब्रह्मादि जनक जगस्वामी। ब्रह्म सकल उर अंतरजामी॥
अस समुझत मन संसय होई। कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सोई॥
जे निज भगत नाथ तव अहहीँ। जो सुख पावहिँ जो गति लहहीँ॥ ८
दोहा। सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरन सनेहु।
सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रभु हमहिँ कृपा करि देहु॥१५०॥
सुनि मृदु गूढ़ रुचिर बचरचना। कृपासिंधु बोले मृदु बचना॥
जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीँ। मैँ सो दीन्ह सब संसय नाहीँ॥
मातु बिबेक अलौकिक तोरेँ। कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरेँ॥
बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी। अवर एक बिनती प्रभु मोरी॥ ४
सुतबिषैक तव पद रति होऊ। मोहि बड़ मूढ़ कहै किन कोऊ॥
मनि बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना। मम जीवन तिमि तुम्हहिँ अधीना॥
अस बरु माँगि चरन गहि रहेऊ। एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ॥
अब तुम्ह मम अनुसासन मानी। बसहु जाइ सुरपति रजधानी॥ ८
सोरठा। तहँ करि भोग बिसाल तात गएँ कछु काल पुनि।
होइहहु अवध भुआल तब मैँ होब तुम्हार सुत॥१५१॥

इच्छामय नरबेष सँवारेँ। होइहौँ प्रगट निकेत तुम्हारेँ ॥
अंसन्ह सहित देह धरि ताता। करिहौँ चरित भगत सुखदाता ॥
जे सुनि सादर नर बड़भागी। भव तरिहहिँ ममता मद त्यागी ॥
आदिसक्ति जेहि जग उपजाया। सोउ अवतरिहि मोरि यह माया ॥ ४
पूरब मैं अभिलाष तुम्हारा। सत्य सत्य पन सत्य हमारा ॥
पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना। अंतरधान भए भगवाना ॥
दंपति उर धरि भगतकृपाला। तेहि आस्रम निवसे कछु काला ॥
समय पाइ तनु तजि अनयासा। जाइ कीन्ह अमरावति बासा ॥ ८
दोहा। यह इतिहास पुनीत अति उमहि कही बृषकेतु।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि रामजनम कर हेतु ॥१५२॥
सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी। जो गिरिजा प्रति संभु बखानी ॥
बिस्वबिदित एक कैकय देसू। सत्यकेतु तहँ बसै नरेसू ॥
धरमधुरंधर नीतिनिधाना। तेज प्रताप सील बलवाना ॥
तेहि कें भए जुगल सुत बीरा। सब गुन धाम महा रनधीरा ॥ ४
राजधनी जो जेठ सुत आही। नाम प्रतापभानु अस ताही ॥
अपर सुतहि अरिमर्दन नामा। भुजबल अतुल अचल संग्रामा ॥
भाइहि भाइहि परम समीती। सकल दोष छल बरजित प्रीती ॥
जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा। हरि हित आपु गवन बन कीन्हा ॥ ८
दोहा। जब प्रतापरबि भएउ नृप फिरी दोहाई देस।
प्रजापाल अति बेदबिधि कतहुँ नहीं अघलेस ॥१५३॥
नृप हितकारक सचिव सयाना। नाम धरमरुचि सुक्र समाना ॥
सचिव सयान बंधु बलबीरा। आपु प्रतापपुंज रनधीरा ॥
सेन संग चतुरंग अपारा। अमित सुभट सब समर जुझारा ॥
सेन बिलोकि राउ हरषाना। अरु बाजे गहगहे निसाना ॥ ४
बिजय हेतु कटकई बनाई। सुदिन साधि नृप चलेउ बजाई ॥
जहँ तहँ परीं अनेक लराईं। जीते सकल भूप बरिआईं ॥
सप्त दीप भुजबल बस कीन्हे। लै लै दंड छाड़ि नृप दीन्हे ॥
सकल अवनिमंडल तेहि काला। एक प्रतापभानु महिपाला ॥ ८

दोहा। स्ववस बिस्व करि बाहुबल निज पुर कीन्ह प्रवेसु।
अरथ धरम कामादि सुख सेवै समय नरेसु ॥१५४॥

भूप प्रतापभानु बल पाई। कामधेनु भै भूमि सुहाई ॥
सब दुख बरजित प्रजा सुखारी। धरमसील सुंदर नर नारी ॥
सचिव धरमरुचि हरिपद प्रीती। नृपहित हेतु सिखव नित नीती ॥
गुर सुर संत पितर महिदेवा। करै सदा नृप सब कै सेवा ॥ ४
भूपधरम जे बेद बखाने। सकल करै सादर सुख माने ॥
दिन प्रति देइ बिबिध बिधि दाना। सुनै सास्त्र बर बेद पुराना ॥
नाना बापी कूप तड़ागा। सुमन बाटिका सुंदर बागा ॥
बिप्रभवन सुरभवन सुहाए। सब तीरथन्ह बिचित्र बनाए ॥ ८

दोहा। जहँ लगि कहे पुरान श्रुति एक एक सब जाग।
बार सहस्र सहस्र नृप किए सहित अनुराग ॥१५५॥

हृदय न कछु फल अनुसंधाना। भूप बिबेकी परम सुजाना ॥
करै जे धरम करम मन बानी। बासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी ॥
चढ़ि बर बाजि बार एक राजा। मृगया कर सब साजि समाजा ॥
बिंध्याचल गभीर बन गएऊ। मृग पुनीत बहु मारत भएऊ ॥ ४
फिरत बिपिन नृप दीख बराहू। जनु बन दुरेउ ससिहि ग्रसि राहू ॥
बड़ बिधु नहिँ समात मुख माहीँ। मनहुँ क्रोधबस उगिलत नाहीँ ॥
कोल कराल दसनछबि गाई। तनु बिसाल पीवर अधिकाई ॥
घुरुघुरात हय आरौ पाएँ। चकित बिलोकत कान उठाएँ ॥ ८

दोहा। नील महीधर सिखर सम देखि बिसाल बराहु।
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हाँकि न होइ निबाहु ॥१५६॥

आवत देखि अधिक रव बाजी। चलेउ बराह मरुतगति भाजी ॥
तुरत कीन्ह नृप सरसंधाना। महि मिलि गएउ बिलोकत बाना ॥
तकि तकि तीर महीस चलावा। करि छल सुअर सरीर बचावा ॥
प्रकटत दुरत जाइ मृग भागा। रिसबस भूप चलेउ सँग लागा ॥ ४
गएउ दूरि घन गहन बराहू। जहँ नाहिन गज बाजि निबाहू ॥
अति अकेल बन बिपुल कलेसू। तदपि न मृगमग तजै नरेसू ॥

कोल विलोकि भूप वड़ धीरा। भागि पैठ गिरिगुहा गभीरा॥
अगम देखि नृप अति पछिताई। फिरेउ महावन परेउ भुलाई॥ ८

दोहा। खेदखिन्न छुद्धित तृषित राजा वाजि समेत।
खोजत व्याकुल सरित सर जल विनु भएउ अचेत॥१५७॥

फिरत विपिन आश्रम एक देखा। तहँ वस नृपति कपटमुनि वेषा॥
जासु देस नृप लीन्ह छड़ाई। समर सेन तजि गएउ पराई॥
समय प्रतापभानु कर जानी। आपन अति असमय अनुमानी॥
गएउ न गृह मन वहुत गलानी। मिला न राजहि नृप अभिमानी॥ ४
रिस उर मारि रंक जिमि राजा। विपिन वसै तापस के साजा॥
तासु समीप गवन नृप कीन्हा। यह प्रतापरवि तेहिँ तव चीन्हा॥
राउ तृषित नहि सो पहिचाना। देखि सुवेष महामुनि जाना॥
उतरि तुरग तेँ कीन्ह प्रनामा। परम चतुर न कहेउ निज नामा॥ ८

दोहा। भूपति तृषित विलोकि तेहिँ सरवरु दीन्ह देखाइ।
मज्जन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरषाइ॥१५८॥

गै श्रम सकल सुखी नृप भएऊ। निज आश्रम तापस लै गएऊ॥
आसन दीन्ह अस्त रवि जानी। पुनि तापस वोलेउ मृदु वानी॥
को तुम्ह कस वन फिरहु अकेलेँ। सुंदर जुवा जीव परहेलेँ॥
चक्रवर्ति के लच्छन तोरेँ। देखत दया लागि अति मोरेँ॥ ४
नाम प्रतापभानु अवनीसा। तासु सचिव मैँ सुनहु मुनीसा॥
फिरत अहेरेँ परेउँ भुलाई। वड़ेँ भाग देखेउँ पद आई॥
हम कहँ दुर्लभ दरस तुम्हारा। जानत हौँ कछु भल होनिहारा॥
कह मुनि तात भएउ अँधियारा। जोजंन सत्तरि नगरु तुम्हारा॥ ८

दोहा। निसा घोर गंभीर वन पंथ न सुनहु सुजान।
वसहु आजु अस जानि तुम्ह जाएहु होत विहान॥
तुलसी जसि भवतब्यता तैसी मिलै सहाइ।
आपुनु आवै ताहि पहि ताहि तहाँ लै जाइ॥१५९॥ १२

भलेहि नाथ आयसु धरि सीसा। वाँधि तुरग तरु वैठ महीसा॥
नृप वहु भाँति प्रसंसेउ ताही। चरन वंदि निज भाग्य सराही॥

६

पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई। जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई ॥
मोहि मुनीस सुत सेवक जानी। नाथ नाम निज कहहु बखानी ॥ ४
तेहि न जान नृप नृपहि सो जाना। भूप सुहृद सो कपट सयाना ॥
बैरी पुनि छत्री पुनि राजा। छल बल कीन्ह चहै निज काजा ॥
समुझि राजसुख दुखित अराती। अवा अनल इव सुलगै छाती ॥
सरल बचन नृप के सुनि काना। बयर सँभारि हृदय हरषाना ॥ ८
दोहा। कपट बोरि बानी मृदुल बोलेउ जुगुति समेत।
नाम हमार भिखारि अब निर्धन रहित निकेत ॥१६०॥
कह नृप जे बिज्ञाननिधाना। तुम्ह सारिखे गलित अभिमाना ॥
सदा रहहिं अपनपौ दुराएँ। सब बिधि कुसल कुबेष बनाएँ ॥
तेहि तें कहहिं संत श्रुति टेरें। परम अकिंचन प्रिय हरि केरें ॥
तुम्ह सम अधन भिखारि अगेहा। होत बिरंचि सिवहि संदेहा ॥ ४
जोसि सोसि तव चरन नमामी। मो पर कृपा करिअ अब स्वामी ॥
सहज प्रीति भूपति कै देखी। आपु बिषय बिस्वास बिसेषी ॥
सब प्रकार राजहि अपनाई। बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥
सुनु सतिभाउ कहौं महिपाला। इहाँ बसत बीते बहु काला ॥ ८
दोहा। अब लगि मोहि न मिलेउ कोउ मैं न जनावौं काहु।
लोकमान्यता अनल सम कर तप कानन दाहु ॥
सोरठा। तुलसी देखि सुबेषु भूलहि मूढ़ न चतुर नर।
सुंदर केकिहि पेखु बचन सुधा सम असन अहि ॥१६१॥ १२
तातें गुपुत रहौं जग माहीं। हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं ॥
प्रभु जानत सब बिनहि जनाएँ। कहहु कवन सिधि लोक रिझाएँ ॥
तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरें। प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरें ॥
अब जौं तात दुरावौं तोही। दारुन दोष घटै अति मोही ॥ ४
जिमि जिमि तापसु कथै उदासा। तिमि तिमि नृपहि उपज बिस्वासा ॥
देखा स्ववस कर्म मन बानी। तब बोला तापस बगध्यानी ॥
नाम हमार एकतनु भाई। सुनि नृप बोलेउ पुनि सिरु नाई ॥
कहहु नाम कर अरथ बखानी। मोहि सेवक अति आपन जानी ॥ ८

दोहा। आदिसृष्टि उपजी जबहि तब उतपति भै मोरि।
नाम एकतनु हेतु तेहिं देह न धरी बहोरि ॥१६२॥
जनि आचरजु करहु मन माहीं। सुत तप तें दुर्लभ कछु नाहीं॥
तपबल तें जग सृजै विधाता। तपबल विष्नु भए परित्राता॥
तपबल संभु करहिं संघारा। तप तें अगम न कछु संसारा॥
भएउ नृपहि सुनि अति अनुरागा। कथा पुरातन कहै सो लागा॥
करम धरम इतिहास अनेका। करै निरूपन बिरति बिबेका॥
उदभव पालन प्रलय कहानी। कहेसि अमित आचरज बखानी॥
सुनि महीप तापसबस भएऊ। आपन नाम कहन तब लएऊ॥
कह तापस नृप जानौं तोही। कीन्हेहु कपट लाग भल मोही॥
सोरठा। सुनु महीस असि नीति जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप।
मोहि तोहि पर अति प्रीति सोइ चतुरता बिचारि तव ॥१६३॥
नाम तुम्हार प्रतापदिनेसा। सत्यकेतु तव पिता नरेसा॥
गुरप्रसाद सब जानिअ राजा। कहिय न आपन जानि अकाजा॥
देखि तात तव सहज सुधाई। प्रीति प्रतीति नीति निपुनाई॥
उपजि परी ममता मन मोरें। कहौं कथा निज पूँछे तोरें॥
अब प्रसन्न मैं संसय नाहीं। माँगु जो भूप भाव मन माहीं॥
सुनि सुबचन भूपति हरषाना। गहि पद बिनय कीन्हि बिधि नाना॥
कृपासिंधु मुनि दरसन तोरें। चारि पदारथ करतल मोरें॥
प्रभुहि तथापि प्रसन्न बिलोकी। माँगि अगम बरु होउँ असोकी॥
दोहा। जरा मरन दुख रहित तनु समर जितै जिनि कोउ॥
एकछत्र रिपुहीन महि राज कलप सत होउ ॥१६४॥
कह तापस नृप ऐसेइ होऊ। कारन एक कठिन सुनु सोऊ॥
कालौ तुअ पद नाइहि सीसा। एक बिप्रकुल छाड़ि महीसा॥
तपबल बिप्र सदा बरिआरा। तिन्ह कें कोप न कोउ रखवारा॥
जौं बिप्रन्ह बस करहु नरेसा। तौ तुअ बस बिधि बिष्नु महेसा॥
चल न ब्रह्मकुल सन बरिआई। सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई॥
बिप्रश्राप बिनु सुनु महिपाला। तोर नास नहि कवनेहु काला॥

हरषेउ राउ बचन सुनि तासू। नाथ न होइ मोर अब नासू॥
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना। मो कहुँ सर्व काल कल्याना॥ ८

दोहा। एवमस्तु कहि कपटमुनि बोला कुटिल बहोरि।
मिलब हमार भुलाब निज कहहु त हमहि न खोरि॥१६५॥

तातेँ मैं तोहि बरजौँ राजा। कहेँ कथा तव परम अकाजा॥
छठेँ श्रवन यह परत कहानी। नास तुम्हार सत्य मम बानी॥
यह प्रगटेँ अथवा द्विजश्रापा। नास तोर सुनु भानुप्रतापा॥
आन उपाय निधन तव नाहीँ। जौँ हरि हर कोपहिँ मन माहीँ॥ ४
सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा। द्विज गुर कोप कहहु को राखा॥
राखै गुर जौँ कोप बिधाता। गुरबिरोध नहि कोउ जग त्राता॥
जौँ न चलब हम कहेँ तुम्हारेँ। होउ नास नहिँ सोच हमारेँ॥
एकहि डर डरपत मन मोरा। प्रभु महिदेवश्राप अति घोरा॥ ८

दोहा। होहिँ बिप्र बस कवन बिधि कहहु कृपा करि सोउ।
तुम्ह तजि दीनदयाल निज हितू न देखौँ कोउ॥१६६॥

सुनु नृप बिबिध जतन जग माहीँ। कष्टसाध्य पुनि होहिँ कि नाहीँ॥
अहै एक अति सुगम उपाई। तहाँ परंतु एक कठिनाई॥
मम आधीन जुगुति नृप सोई। मोर जाब तव नगर न होई॥
आजु लगेँ अरु जब तेँ भएउँ। काहू के गृह ग्राम न गएउँ॥ ४
जौँ न जाउँ तव होइ अकाजू। बना आइ असमंजस आजू॥
सुनि महीस बोलेउ मृदु बानी। नाथ निगम असि नीति बखानी॥
बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीँ। गिरि निज सिरनि सदा तृन धरहीँ॥
जलधि अगाध मौलि बह फेनू। संतत धरनि धरत सिर रेनू॥ ८

दोहा। अस कहि गहे नरेस पद स्वामी होहु कृपाल।
मोहि लागि दुख सहिअ प्रभु सज्जन दीनदयाल॥१६७॥

जानि नृपहि आपन आधीना। बोला तापस कपट प्रबीना॥
सत्य कहौँ भूपति सुनु तोही। जग नाहिन दुर्लभ कछु मोही॥
अवसि काज मैं करिहौँ तोरा। मन तन बचन भगत तैँ मोरा॥
जोग जुगुति तप मंत्र प्रभाऊ। फलै तबहि जब करिअ दुराऊ॥ ४

जौँ नरेस मैँ करौँ रसोई। तुम्ह परुसहु मोहि जान न कोई॥
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई। सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई॥
पुनि तिन्ह कँ गृह जेवँ जोऊ। तँव वस होइ भूप सुनु सोऊ॥
जाइ उपाय रचहु नृप एहू। संवत भरि संकलप करेहू॥ ८

दोहा। नित नूतन द्विज सहस सत बरेहु सहित परिवार।
मैँ तुम्हरे संकलप लगि दिनहि करबि जेवनार॥१६८॥

एहि विधि भूप कष्ट अति थोरेँ। होइहहिँ सकल विप्र बस तोरेँ॥
करिहहिँ विप्र होम मख सेवा। तेहि प्रसंग सहजेहि बस देवा॥
और एक तोहि कहौँ लखाऊ। मैं एहि वेष न आउव काऊ॥
तुम्हरे उपरोहित कहुँ राया। हरि आनव मैँ करि निज माया॥ ४
तपबल तेहि करि आपु समाना। रखिहौँ इहाँ वरष परवाना॥
मैँ धरि तासु वेषु सुनु राजा। सब विधि तोर सँवारब काजा॥
गै निसि बहुत सयन अब कीजै। मोहि तोहि भूप भेँट दिन तीजै॥
मैँ तपबल तोहि तुरग समेता। पहुचैहौँ सोवतहि निकेता॥ ८

दोहा। मैँ आउब सोइ वेषु धरि पहिचानेहु तब मोहि।
जब एकांत बोलाइ सब कथा सुनावौँ तोहि॥१६९॥

सयन कीन्ह नृप आयसु मानी। आसन जाइ बैठ छलज्ञानी॥
श्रमित भूप निद्रा अति आई। सो किमि सोव सोच अधिकाई॥
कालकेतु निसिचर तहँ आवा। जेहि सूकर होइ नृपहि भुलावा॥
परम मित्र तापस नृप केरा। जानै सो अति कपट घनेरा॥ ४
तेहि के सत सुत अरु दस भाई। खल अति अजय देवदुखदाई॥
प्रथमहि भूप समर सब मारे। बिप्र संत सुर देखि दुखारे॥
तेहि खल पाछिल बयरु सँभारा। तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा॥
जेहि रिपुछय सोइ रचेन्हि उपाऊ। भावीबस न जान कछु राऊ॥ ८

दोहा। रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिअ न ताहु।
अजहुँ देत दुख रबि ससिहि सिर अवसेषित राहु॥१७०॥

तापस नृप निज सखहि निहारी। हरषि मिलेउ उठि भएउ सुखारी॥
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई। जातुधान बोला सुख पाई॥

अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेसा। जौ तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा॥
परिहरि सोच रहहु तुम्ह सोई। बिन औषध बिआधि बिधि खोई॥ ४
कुल समेत रिपु मूल बहाई। चौथें दिवस मिलब मैं आई॥
तापस नृपहि बहुत परितोषी। चला महाकपटी अति रोषी॥
भानुप्रतापहि बाजि समेता। पहुचाएसि छन माझ निकेता॥
नृपहि नारि पहि सयन कराई। हय गृह बाँधेसि बाजि बनाई॥ ८

दोहा। राजा के उपरोहितहि हरि लै गएउ बहोरि।
लै राखेसि गिरिखोह महुँ माया करि मति भोरि॥१७१॥

आपु बिरचि उपरोहितरूपा। परेउ जाइ तेहि सेज अनूपा॥
जागेउ नृप अनभएँ बिहाना। देखि भवन अति अचरजु माना॥
मुनिमहिमा मन महुँ अनुमानी। उठेउ गवहिँ जेहिँ जान न रानी॥
कानन गएउ बाजि चढ़ि तेहीँ। पुर नर नारि न जानेउ केहीँ॥ ४
गएँ जाम जुग भूपति आवा। घर घर उत्सव बाज बधावा॥
उपरोहितहि देख जब राजा। चकित बिलोक सुमिरि सोइ काजा॥
जुग सम नृपहि गए दिन तीनी। कपटी मुनि पद रह मति लीनी॥
समय जानि उपरोहित आवा। नृपहि मतेँ सब कहि समुझावा॥ ८

दोहा। नृप हरषेउ पहिचानि गुरु भ्रमबस रहा न चेत।
बरे तुरत सत सहस बर बिप्र कुटुंब समेत॥१७२॥

उपरोहित जेवनार बनाई। छ रस चारि बिधि जसि श्रुति गाई॥
मायामय तेहिँ कीन्हि रसोई। बिंजन बहु गनि सकै न कोई॥
बिबिध मृगन्ह कर आमिष राँधा। तेहि महुँ बिप्रमाँसु खल साँधा॥
भोजन कहुँ सब बिप्र बोलाए। पद पखारि सादर बैठाए॥ ४
परुसन जबहि लाग महिपाला। भै अकासबानी तेहि काला॥
बिप्रबृंद उठि उठि गृह जाहू। है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू॥
भएउ रसोईं भूसुरमाँसू। सब द्विज उठे मानि बिस्वासू॥
भूप बिकल मति मोह भुलानी। भावीबस न आव मुख बानी॥ ८

दोहा। बोले बिप्र सकोप तब नहि कछु कीन्ह बिचार।
जाइ निसाचर होहु नृप मूढ़ सहित परिवार॥१७३॥

छत्रबंधु तैं बिप्र बोलाई। घालै लिए सहित समुदाई॥
ईस्वर राखा धरम हमारा। जैहसि तैं समेत परिवारा॥
संबत मध्य नास तव होऊ। जलदाता न रहिहि कुल कोऊ॥
नृप सुनि श्राप बिकल अति त्रासा। भै बहोरि बर गिरा अकासा॥ ४
बिप्रहु श्राप बिचारि न दीन्हा। नहि अपराध भूप कछु कीन्हा॥
चकित बिप्र सब सुनि नभबानी। भूप गएउ जहँ भोजनखानी॥
तहँ न असन नहि बिप्र सुआरा। फिरेउ राउ मन सोच अपारा॥
सब प्रसंग महिसुरन्ह सुनाई। त्रसित परेउ अवनी अकुलाई॥ ८

दोहा। भूपति भावी मिटै नहि जदपि न दूषन तोर।
किएँ अन्यथा होइ नहि बिप्रश्राप अति घोर॥१७४॥

अस कहि सब महिदेव सिधाए। समाचार पुरलोगन्ह पाए॥
सोचहिँ दूषन दैवहि देहीँ। बिरचत हंस काग किय जेहीँ॥
उपरोहितहि भवन पहुचाई। असुर तापसहि खबरि जनाई॥
तेहि खल जहँ तहँ पत्र पठाए। सजि सजि सेन भूप सब धाए॥ ४
घेरेन्हि नगर निसान बजाई। बिबिध भाँति नित होइ लराई॥
जूझे सकल सुभट करि करनी। बंधु समेत परेउ नृप धरनी॥
सत्यकेतुकुल कोउ नहिँ बाँचा। बिप्रश्राप किमि होइ असाँचा॥
रिपु जिति सब नृप नगर बसाई। निज पुर गवने जय जसु पाई॥ ८

दोहा। भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम।
धूरि मेरु सम जनक जम ताहि ब्याल सम दाम॥१७५॥

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा। भएउ निसाचर सहित समाजा॥
दस सिर ताहि बीस भुजदंडा। रावन नाम बीर बरिबंडा॥
भूप अनुज अरिमर्दन नामा। भएउ सो कुंभकरन बलधामा॥
सचिव जो रहा धरमरुचि जासू। भएउ बिमात्र बंधु लघु तासू॥ ४
नाम बिभीषन जेहि जग जाना। बिष्नुभगत बिज्ञाननिधाना॥
रहे जे सुत सेवक नृप केरे। भए निसाचर घोर घनेरे॥
कामरूप खल जिनस अनेका। कुटिल भयंकर बिगत बिबेका॥
कृपा रहित हिंसक सब पापी। बरनि न जाइ बिस्वपरितापी॥ ८

दोहा। उपजे जदपि पुलस्त्यकुल पावन अमल अनूप।
तदपि महीसुर स्राप बस भए सकल अघरूप ॥१७६॥

कीन्ह बिबिध तप तीनिहुँ भाई। परम उग्र नहिँ बरनि सो जाई ॥
गएउ निकट तप देखि बिधाता। माँगहु बर प्रसन्न मैँ ताता ॥
करि बिनती पद गहि दससीसा। बोलेउ बचन सुनहु जगदीसा ॥
हम काहू के मरहिँ न मारे। बानर मनुज जाति दुइ बारे ॥ ४
एवमस्तु तुम्ह बड़ तप कीन्हा। मैँ ब्रह्मा मिलि तेहि बर दीन्हा ॥
पुनि प्रभु कुंभकरन पहि गएऊ। तेहि बिलोकि मन बिसमय भएऊ ॥
जौँ एहिँ खल नित करब अहारू। होइहि सब उजारि संसारू ॥
सारद प्रेरि तासु मति फेरी। माँगेसि नीँद मास षट केरी ॥ ८

दोहा। गए बिभीषन पास पुनि कहेउ पुत्र बर मागु।
तेहि माँगेउ भगवंतपद कमल अमल अनुरागु ॥१७७॥

तिन्हहिँ देइ बर ब्रह्म सिधाए। हरषित ते अपने गृह आए ॥
मयतनुजा मंदोदरि नामा। परम सुंदरी नारि ललामा ॥
सोइ मय दीन्हि रावनहिँ आनी। होइहि जातुधानपति जानी ॥
हरषित भएउ नारि भलि पाई। पुनि दोउ बंधु बिआहेसि जाई ॥ ४
गिरि त्रिकूट एक सिंधु मझारी। बिधिनिर्मित दुर्गम अति भारी ॥
सोइ मय दानव बहुरि सँवारा। कनकरचित मनिभवन अपारा ॥
भोगावति जसि अहिकुलबासा। अमरावति जसि सक्रनिवासा ॥
तिन्ह तेँ अधिक रम्य अति बंका। जग बिख्यात नाम तेहि लंका ॥ ८

दोहा। खाईँ सिंधु गभीर अति चारिहुँ दिसि फिरि आव।
कनककोट मनिखचित दृढ़ बरनि न जाइ बनाव ॥
हरिप्रेरित जेहि कलप जोइ जातुधानपति होइ।
सूर प्रतापी अतुल बल दल समेत बस सोइ ॥१७८॥ १२

रहे तहाँ निसिचर भट भारे। ते सब सुरन्ह समर संघारे ॥
अब तहँ रहहिँ सक्र के प्रेरे। रच्छक कोटि जच्छपति केरे ॥
दसमुख कतहुँ खबरि असि पाई। सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई ॥
देखि बिकट भट बड़ि कटकाई। जच्छ जीव लै गए पराई ॥ ४

फिरि सब नगर दसानन देखा। गएउ सोच सुख भएउ बिसेषा॥
सुंदर सहज अगम अनुमानी। कीन्हि तहाँ रावन रजधानी॥
जेहि जस जोग बाँटि गृह दीन्हे। सुखी सकल रजनीचर कीन्हे॥
एक बार कुबेर पर धावा। पुष्पक जान जीति लै आवा॥ ८

दोहा। कौतुकहीं कैलास पुनि लीन्हिसि जाइ उठाइ।
मनहुँ तौलि निज बाहुबल चला बहुत सुख पाइ॥१७८॥

सुख संपति सुत सेन सहाई। जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई॥
नित नूतन सब बाढ़त जाई। जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई॥
अतिबल कुंभकरन अस भ्राता। जेहि कहुँ नहि प्रतिभट जग जाता॥
करै पान सोवै षट मासा। जागत होइ तिहूँ पुर त्रासा॥ ४
जौं दिन प्रति अहार कर सोई। बिस्व बेगि सब चौपट होई॥
समर धीर नहि जाइ बखाना। तेहि सम अमित बीर बलवाना॥
बारिदनाद जेठ सुत तासू। भट महुँ प्रथम लीक जग जासू॥
जेहि न होइ रन सनमुख कोई। सुरपुर नितहि परावन होई॥ ८

दोहा। कुमुख अकंपन कुलिसरद धूमकेतु अतिकाय।
एक एक जग जीति सक ऐसे सुभटनिकाय॥१८०॥

कामरूप जानहिँ सब माया। सपनेहुँ जिन्ह के धरम न दाया॥
दसमुख बैठ सभाँ एक बारा। देखि अमित आपन परिवारा॥
सुतसमूह जन परिजन नाती। गनै को पार निसाचरजाती॥
सेन बिलोकि सहज अभिमानी। बोला बचन क्रोध मद सानी॥ ४
सुनहु सकल रजनीचर जूथा। हमरे बैरी बिबुधबरूथा॥
ते सनमुख नहिँ करहिँ लराई। देखि सबल रिपु जाहिँ पराई॥
तेन्ह कर मरन एक बिधि होई। कहौँ बुझाइ सुनहु अब सोई॥
द्विजभोजन मख होम सराधा। सब कै जाइ करहु तुम्ह बाधा॥ ८

दोहा। छुधाछीन बलहीन सुर सहजेहि मिलिहहिँ आइ।
तब मारिहौँ कि छाड़िहौँ भली भाँति अपनाइ॥१८१॥

मेघनाद कहुँ पुनि हँकरावा। दीन्ही सिख बलु बयरु बढ़ावा॥
जे सुर समर धीर बलवाना। जिन्ह कें लरिबे कर अभिमाना॥

तिन्हहिँ जीति रन आनेसु बाँधी । उठि सुत पितु अनुसासन काँधी ॥
एहि विधि सबही अज्ञा दीन्ही । आपुन चलेउ गदा कर लीन्ही ॥
चलत दसानन डोलति अवनी । गर्जत गर्भ स्रवहिँ सुररवनी ॥
रावन आवत सुनेउ सकोहा । देवन्ह तके मेरु गिरि खोहा ॥
दिगपालन्ह के लोक सुहाए । सूने सकल दसानन पाए ॥
पुनि पुनि सिंघनाद करि भारी । देइ देवतन्ह गारि पचारी ॥
रनमद मत्त फिरइ जग धावा । प्रतिभट खोजत कतहुँ न पावा ॥
रवि ससि पवन बरुन धनधारी । अगिनि काल जम सब अधिकारी ॥
किंनर सिद्ध मनुज सुर नागा । हठि सब ही के पंथहि लागा ॥
ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि तनुधारी । दसमुख बसवर्ती नर नारी ॥
आयसु करहिँ सकल भयभीता । नवहिँ आइ नित चरन बिनीता ॥

दोहा । भुजबल बिस्व बस्य करि राखेसि कोउ न सुतंत्र ।
मंडलीकमनि रावन राज करै निज मंत्र ॥
देव जच्छ गंधर्ब नर किंनर नाग कुमारि ॥
जीति बरीँ निज बाहुबल बहु सुंदर बर नारि ॥१८२॥

इंद्रजीत सन जो कछु कहेऊ । सो सब जनु पहिलेहिँ करि रहेऊ ॥
प्रथमहिँ जिन्ह कहुँ आयसु दीन्हा । तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा ॥
देखत भीम रूप सब पापी । निसिचरनिकर देवपरितापी ॥
करहिँ उपद्रव असुरनिकाया । नाना रूप धरहिँ करि माया ॥
जेहि बिधि होइ धर्म निर्मूला । सो सब करहिँ बेदप्रतिकूला ॥
जेहि जेहि देस धेनु द्विज पावहिँ । नगर गाउँ पुर आगि लगावहिँ ॥
सुभ आचरन कतहुँ नहि होई । देव बिप्र गुरु मान न कोई ॥
नहिँ हरिभगति जज्ञ तप ज्ञाना । सपनेहुँ सुनिय न बेद पुराना ॥

। छंद ।

जप जोग बिरागा तप मख भागा श्रवन सुनै दससीस ।
आपुन उठि धावै रहै न पावै धरि सब घालै खीस ।
अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिअ नहि कान ।
तेहि बहु बिधि त्रासै देस निकासै जो कह बेद पुरान ॥

सोरठा। बरनि न जाइ अनीति घोर निसाचर जो करहिँ।
हिंसा पर अति प्रीति तिन्ह के पापहि कवनि मिति ॥१८३॥

बाढ़े खल बहु चोर जुआरा। जे लंपट परधन परदारा॥
मानहिँ मातु पिता नहिँ देवा। साधुन्ह सन करवावहिँ सेवा॥
जिन्ह के यह आचरन भवानी। ते जानेहु निसिचर सब प्रानी॥
अतिसै देखि धर्म कै ग्लानी। परम सभीत धरा अकुलानी॥ ४
गिरि सरि सिंधु भार नहि मोही। जस मोहि गरुव एक परद्रोही॥
सकल धर्म देखै विपरीता। कहि न सकै रावनभय भीता॥
धेनुरूप धरि हृदय विचारी। गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी॥
निज संताप सुनायेसि रोई। काहू तेँ कछु काज न होई॥ ८

छंद। सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि सर्बा गे बिरंचि के लोक।
सँग गोतनुधारी भूमि बिचारी परम बिकल भय सोक।
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मोर कछू न बसाइ।
जा करि तैँ दासी सो अबिनासी हमरेउ तोर सहाइ॥ १२

सोरठा। धरनि धरहि मन धीर कह बिरंचि हरिपद सुमिरु।
जानत जन की पीर प्रभु भंजिहि दारुन बिपति ॥१८४॥

बैठे सुर सब करहिँ बिचारा। कहँ पाइअ प्रभु करिय पुकारा॥
पुर बैकुंठ जान कह कोई। कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई॥
जाके हृदय भगति जसि प्रीती। प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहि रीती॥
तेहि समाज गिरिजा मैँ रहेऊँ। अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ॥ ४
हरि ब्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तेँ प्रगट होहिँ मैँ जाना॥
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीँ। कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीँ॥
अग जग मय सब रहित बिरागी। प्रेम तेँ प्रभु प्रगटै जिमि आगी॥
मोर बचन सब के मन माना। साधु साधु करि ब्रह्म बखाना॥ ८

दोहा। सुनि बिरंचि मन हरष तन पुलकि नयन बह नीर।
अस्तुति करत जोरि कर सावधान मतिधीर ॥१८५॥

छंद। जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंत।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंत।

पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानै कोइ ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करौ अनुग्रह सोइ ।
जय जय अबिनासी सब घट बासी ब्यापक परमानंद ।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं माया रहित मुकुंद ।
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगतमोह मुनिबृंद ।
निसिबासर ध्यावहिँ गुनगन गावहिँ जयति सच्चिदानंद ।
जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा ।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिय भगति न पूजा ।
जो भवभय भंजन मुनिमन रंजन गंजन बिपतिबरूथ ।
मन बच क्रम जानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथ ।
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहि जान ।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवौ सो श्रीभगवान ।
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंज ।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथपद कंज ॥

। दोहा ।

जानि सभय सुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह ।
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह ॥१८६॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा । तुम्हहिँ लागि धरिहौँ नरबेसा ॥
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा । लेहौँ दिनकरबंस उदारा ॥
कस्यप अदिति महा तप कीन्हा । तिन्ह कहुँ मैँ पूरब बर दीन्हा ॥
ते दसरथ कौसल्या रूपा । कोसलपुरी प्रगट नरभूपा ॥
तिन्ह कँ गृह अवतरिहौँ जाई । रघुकुलतिलक सो चारिउ भाई ॥
नारदबचन सत्य सब करिहौँ । परमसक्ति समेत अवतरिहौँ ॥
हरिहौँ सकल भूमि गरुआई । निर्भय होहु देवसमुदाई ॥
गगन ब्रह्मबानी सुनि काना । तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना ॥
तब ब्रह्मा धरिनिहि समुझावा । अभय भई भरोस जिय आवा ॥
दोहा । निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहै सिखाइ ।
बानरतनु धरि धरि महि हरिपद सेवहु जाइ ॥१८७॥

गए देव सब निज निज धामा। भूमि सहित मन कहुँ बिस्रामा॥
जो कछु आयसु ब्रह्मा दीन्हा। हरषे देव बिलंब न कीन्हा॥
बनचरदेह धरी छिति माहीँ। अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीँ॥
गिरि तरु नख आयुध सब बीरा। हरिमारग चितवहिँ मतिधीरा॥ ४
गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी। रहे निज निज अनीक रचि रूरी॥
यह सब रुचिर चरित मैँ भाषा। अब सो सुनहु जो बीचहिँ राखा॥
अवधपुरी रघुकुलमनि राऊ। बेदबिदित तेहि दसरथ नाऊ॥
धर्मधुरंधर गुननिधि ज्ञानी। हृदय भगति मति सारँगपानी॥ ८

दोहा। कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरिपद कमल बिनीत॥१८८॥

एक बार भूपतिमन माहीँ। भै गलानि मोरे सुत नाहीँ॥
गुरगृह गए तुरत महिपाला। चरन लागि करि बिनय बिसाला॥
निज दुख सुख सब गुरहि सुनाएउ। कहि बसिष्ठ बहु बिधि समुझाएउ॥
धरहु धीर होइहहिँ सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगतभय हारी॥ ४
सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम सुभ जज्ञ करावा॥
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हे। प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हे॥
जो बसिष्ठ कछु हृदय बिचारा। सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा॥
यह हबि बाँटि देहु नृप जाई। जथाजोग जेहि भाग बनाई॥ ८

दोहा। तब अदृस्य भए पावक सकल सभहि समुझाइ।
परमानंद मगन नृप हरष न हृदय समाइ॥१८९॥

तबहिँ राय प्रिय नारि बोलाईँ। कौसल्यादि तहाँ चलि आईँ॥
अर्ध भाग कौसल्यहि दीन्हा। उभय भाग आधे कर कीन्हा॥
कैकेई कहँ नृप सो दएऊ। रह्यो सो उभय भाग पुनि भएऊ॥
कौसल्या कैकेई हाथ धरि। दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि॥ ४
एहिँ बिधि गर्भ सहित सब नारी। भईँ हृदयँ हरषित सुख भारी॥
जा दिन तेँ हरि गर्भहि आए। सकल लोक सुख संपति छाए॥
मंदिर महुँ सब राजहिँ रानी। सोभा सील तेज की खानी॥
सुखजुत कछुक काल चलि गएऊ। जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भएऊ॥ ८

दोहा। जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हरषजुत रामजन्म सुखमूल ॥१८०॥

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता॥
मध्य दिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोकबिश्रामा॥
सीतल मंद सुरभि बह बाऊ। हरषित सुर संतन्ह मन चाऊ॥
बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा। स्रवहिं सकल सरिताम्रृतधारा॥ ४
सो अवसर बिरंचि जब जाना। चले सकल सुर साजि बिमाना॥
गगन बिमल संकुल सुरजूथा। गावहिं गुन गंधर्बबरूथा॥
बरषहिं सुमन सुअंजलि साजी। गहगहि गगन दुंदभी बाजी॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा। बहु बिधि लावहिं निज निज सेवा॥ ८

दोहा। सुरसमूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिश्राम॥१८१॥

छंद। भए प्रगट कृपाला परम दयाला कौसल्याहितकारी।
हरषित महतारी मुनिमनहारी अद्भुत रूप बिचारी।
लोचन अभिरामं तनु घनस्यामं निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी। ४
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंत।
माया गुन ज्ञानातीत अमाना बेद पुरान भनंत।
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संत।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भए प्रगट श्रीकंत। ८
ब्रह्मांडनिकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै।
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुतप्रेम लहै। १२
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूप।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूप।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूप।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भव कूप। १६

दोहा। बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥१९२॥

सुनि सिसुरुदन परम प्रिय बानी। संभ्रम चलि आईं सब रानी ॥
हरषित जहँ तहँ धाईं दासी। आनँद मगन सकल पुरबासी ॥
दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना ॥
परम प्रेम मन पुलक सरीरा। चाहत उठन करत मति धीरा ॥ ४
जाकर नाम सुनत सुभ होई। मोरें गृह आवा प्रभु सोई ॥
परमानंद पूरि मन राजा। कहा बोलाइ बजावहु बाजा ॥
गुर बसिष्ठ कहँ गएउ हँकारा। आए द्विजन सहित नृपद्वारा ॥
अनुपम बालक देखिन्हि जाई। रूपरासि गुन कहि न सिराई ॥ ८

दोहा। नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह।
हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह ॥१९३॥

ध्वज पताक तोरन पुर छावा। कहि न जाइ जेहिं भाँति बनावा ॥
सुमनबृष्टि अकास तें होई। ब्रह्मानंद मगन सब लोई ॥
बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाईं। सहज सिंगार किएँ उठि धाईं ॥
कनककलस मंगल भरि थारा। गावत पैठहिं भूपदुआरा ॥ ४
करि आरति नेवछावरि करहीं। बार बार सिसुचरनन्हि परहीं ॥
मागध सूत बंदि गन गायक। पावन गुन गावहिं रघुनायक ॥
सर्बस दान दीन्ह सब काहू। जेहिं पावा राखा नहिं ताहू ॥
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा। मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा ॥ ८

दोहा। गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटेउ सुषमाकंद।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद ॥१९४॥

कैकयसुता सुमित्रा दोऊ। सुंदर सुत जनमत भैं ओऊ ॥
वोह सुख संपति समय समाजा। कहि न सकै सारद अहिराजा ॥
अवधपुरी सोहै येहिं भाँती। प्रभुहि मिलन आई जनु राती ॥
देखि भानु जनु मन सँकुचानी। तदपि बनी संध्या अनुमानी ॥ ४
अगर धूप बहु जनु अँधिआरी। उड़ै अबीर मनहुँ अरुनारी ॥
मंदिर मनिसमूह जनु तारा। नृपगृह कलस सो इंदु उदारा ॥

भवन बेदधुनि अति मृदु बानी। जनु खग मुखर समय जनु सानी॥
कौतुक देखि पतंग भुलाना। एक मास तेइँ जात न जाना॥ ८
दोहा। मासदिवस कर दिवस भा मरम न जानै कोइ।
रथ समेत रबि थाकेउ निसा कवन बिधि होइ॥१८५॥
यह रहस्य काहू नहिँ जाना। दिनमनि चले करत गुनगाना॥
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा। चले भवन बरनत निज भागा॥
औरौ एक कहौं निज चोरी। सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी॥
काकभुसुंडि संग हम दोऊ। मनुजरूप जानै नहि कोऊ॥ ४
परमानंद प्रेम सुख फूले। बीथिन्ह फिरहिँ मगन मन भूले॥
यह सुभ चरित जान पै सोई। कृपा राम कै जापर होई॥
तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा। दीन्ह भूप जो जेहिँ मन भावा॥
गज रथ तुरग हेम गो हीरा। दीन्हे नृप नाना बिधि चीरा॥ ८
दोहा। मन संतोष सबन्हि के जहँ तहँ देहिँ असीस।
सकल तनय चिरजीवहु तुलसिदास के ईस॥१८६॥
कछुक दिवस बीते येहिँ भाँती। जात भ जानिय दिन अरु राती॥
नामकरन कर अवसरु जानी। भूप बोलि पठए मुनि ज्ञानी॥
करि पूजा भूपति अस भाषा। धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा॥
इन्ह के नाम अनेक अनूपा। मैं नृप कहव स्वमति अनुरूपा॥ ४
जो आनंदसिंधु सुखरासी। सीकर तेँ त्रैलोक सुपासी॥
सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा॥
बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई॥
जाके सुमिरन तेँ रिपुनासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा॥ ८
दोहा। लच्छनधाम रामप्रिय सकल जगत आधार।
गुर बसिष्ठ तेहि राखा लछिमन नाम उदार॥१८७॥
धरे नाम गुर हृदय बिचारी। बेदतत्व नृप तव सुत चारी॥
मुनिधन जनसरवस सिवप्राना। बाल केलि रस तेहिँ सुख माना॥
बारेहि तेँ निज हित पति जानी। लछिमन रामचरन रति मानी॥
भरत सत्रुहन दूनौ भाई। प्रभु सेवक जसि प्रीति बड़ाई॥ ४

स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी। निरखहिँ छबि जननी तृन तोरी ॥
चारिउ सील रूप गुन धामा। तदपि अधिक सुखसागर रामा ॥
हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासा। सूचत किरन मनोहर हासा ॥
कबहुँ उछंग कबहुँ बर पलना। मातु दुलारै कहि प्रिय ललना ॥ ८

दोहा। ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद।
सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या के गोद ॥१९८॥

काम कोटि छबि स्याम सरीरा। नील कंज बारिद गंभीरा ॥
अरुन चरन पंकज नखजोती। कमलदलन्हि बैठे जनु मोती ॥
रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहे। नूपरधुनि सुनि मुनिमन मोहे ॥
कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा। नाभि गभीर जान जिहिँ देखा ॥ ४
भुजं बिसाल भूषन जुत भूरी। हिय हरिनख अति सोभा रूरी ॥
उर मनिहार पदिक की सोभा। बिप्रचरन देखत मन लोभा ॥
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई। आनन अमित मदनछबि छाई ॥
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे। नासा तिलक को बरनै पारे ॥ ८
सुंदर श्रवन सुचारु कपोला। अति प्रिय मधुर तोतरे बोला ॥
[नील जलज दोउ नयन बिसाला। बिकट भृकुटि लटकनि बर माला ॥]
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे। बहु प्रकार रचि मातु सँवारे ॥
पीत झगुलिआ तनु पहिराई। जानु पानि बिचरनि मोहि भाई ॥ १२
रूप सकहिँ नहिँ कहि श्रुति सेषा। सो जानै सपनेहुँ जेहि देखा ॥

दोहा। सुखसंदोह मोहपर ज्ञान गिरा गोतीत।
दंपति परम प्रेम बस कर सिसुचरित पुनीत ॥१९९॥

एहि बिधि राम जगत पितु माता। कोसलपुरबासिन्ह सुखदाता ॥
जिन्ह रघुनाथचरन रति मानी। तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी ॥
रघुपतिबिमुख जतन कर कोरी। कवन सकै भवबंधन छोरी ॥
जीव चराचर बस कै राखे। सो माया प्रभु सोँ भय भाखे ॥ ४
भृकुटिबिलास नचावै ताही। अस प्रभु छाड़ि भजिय कहु काही ॥
मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहहिँ रघुराई ॥
एहिँ बिधि सिसुबिनोद प्रभु कीन्हा। सकल नगरबासिन्ह सुख दीन्हा ॥

लै उछंग कबहुँक हलरावै। कबहुँ पालने घालि झुलावै॥ ८
दोहा। प्रेममगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान॥२००॥
एक बार जननी अन्हवाए। करि सिंगार पलना पौढ़ाए॥
निज कुल इष्टदेव भगवाना। पूजाहेतु कीन्ह अस्नाना॥
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा। आपु गई जहँ पाक बनावा॥
बहुरि मातु तहवाँ चलि आई। भोजन करत देखि सुत जाई॥ ४
गै जननी सिसु पहिँ भयभीता। देखा बाल तहाँ पुनि सूता॥
बहुरि आइ देखा सुत सोई। हृदयँ कंप मन धीर न होई॥
इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा। मतिभ्रम मोर कि आन बिसेषा॥
देखि राम जननी अकुलानी। प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी॥ ८
दोहा। देखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड।
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड॥२०१॥
अगनित रबि ससि सिव चतुरानन। बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन॥
काल कर्म गुन ज्ञान सुभाऊ। सोउ देखा जो सुना न काऊ॥
देखी माया सब बिधि गाढ़ी। अति सभीत जोरेँ कर ठाढ़ी॥
देखा जीव नचावै जाही। देखी भगति जो छोरै ताही॥ ४
तन पुलकित मुख बचन न आवा। नयन मूँदि चरननि सिरु नावा॥
बिसमयवंत देखि महतारी। भए बहुरि सिसुरूप खरारी॥
अस्तुति करि न जाइ भय माना। जगतपिता मैं सुत करि जाना॥
हरि जननी बहु बिधि समुझाई। यह जनि कतहुँ कहसि सुनु माई॥ ८
दोहा। बार बार कौसल्या बिनय करै कर जोरि।
अब जनि कबहूँ ब्यापै प्रभु मोहि माया तोरि॥२०२॥
बालचरित हरि बहु बिधि कीन्हा। अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा॥
कछुक काल बीते सब भाई। बड़े भए परिजन सुखदाई॥
चूड़ाकरन कीन्ह गुर जाई। बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई॥
परम मनोहर चरित अपारा। करत फिरत चारिउ सुकुमारा॥ ४
मन क्रम बचन अगोचर जोई। दसरथ अजिर बिचर प्रभु सोई॥

भोजन करत बोल जब राजा। नहि आवत तजि बालसमाजा॥
कौसल्या जब बोलन जाई। ठुमुकु ठुमुकु प्रभु चलहिँ पराई॥
निगम नेति सिव अंतु न पावा। ताँहि धरै जननी हठि धावा॥ ८
धूसर धूरि भरे तनु आए। भूपति बिहसि गोद बैठाए॥
दोहा। भोजन करत चपल चित इत उत अवसरु पाइ।
भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ॥२०३॥
बालचरित अति सरल सुहाए। सारद सेष संभु श्रुति गाए॥
जिन्ह कर मन इन्ह सन नहि राता। ते जन बंचित किए बिधाता॥
भए कुमार जबहि सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुर पितु माता॥
गुरगृह गए पढ़न रघुराई। अलप काल बिद्या सब आई॥ ४
जाकी सहज स्वास श्रुति चारी। सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी॥
बिद्या बिनय निपुन गुनसीला। खेलहिँ खेल सकल नृपलीला॥
करतल बान धनुष अति सोहा। देखत रूप चराचर मोहा॥
जिन्ह बीथिन्ह बिहरैँ सब भाई। थकित होहिँ सब लोग लुगाई॥ ८
दोहा। कोसलपुरबासी नर नारि बृद्ध अरु बाल।
प्रानहुँ तेँ प्रिय लागत सब कहुँ राम कृपाल॥२०४॥
बंधु सखा सँग लेहिँ बोलाई। बन मृगया नित खेलहिँ जाई॥
पावन मृग मारहिँ जिय जानी। दिन प्रति नृपहि देखावहिँ आनी॥
जे मृग रामबान के मारे। ते तनु तजि सुरलोक सिधारे॥
अनुज सखा सँग भोजन करहीँ। मातु पिता अज्ञा अनुसरहीँ॥ ४
जेहिँ बिधि सुखी होहिँ पुरलोगा। करहिँ कृपानिधि सोइ संजोगा॥
बेद पुरान सुनहिँ मन लाई। आपु कहहिँ अनुजन्ह समुझाई॥
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिँ माथा॥
आयसु माँगि करहिँ पुरकाजा। देखि चरित हरषै मन राजा॥ ८
दोहा। व्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप।
भगतहेतु नाना बिधि करत चरित्र अनूप॥२०५॥
यह सब चरित कहा मैं गाई। आगिलि कथा सुनहु मन लाई॥
बिस्वामित्र महामुनि ज्ञानी। बसहिँ बिपिन सुभ आश्रम जानी॥

जहँ जप जज्ञ जोग मुनि करहीँ। अति मारीच सुबाहुहि डरहीँ॥
देखत जज्ञ निसाचर धावहिँ। करहिँ उपद्रव मुनि दुख पावहिँ॥
गाधितनय मन चिंता ब्यापी। हरि बिनु मरहिँ न निसिचर पापी॥
तब मुनिवर मन कीन्ह बिचारा। प्रभु अवतरेउ हरन महिभारा॥
एहूँ मिस देखौँ पद जाई। करि बिनती आनौँ दोउ भाई॥
ज्ञान बिराग सकल गुन अयना। सो प्रभु मैँ देखब भरि नयना॥
दोहा। बहु बिधि करत मनोरथ जात लागि नहिँ बार।
करि मज्जन सरऊजल गए भूपदरबार॥२०६॥
मुनि आगमन सुना जब राजा। मिलन गएउ लै बिप्रसमाजा॥
करि दंडवत मुनिहि सनमानी। निज आसन बैठारेन्हि आनी॥
चरन पखारि कीन्हि अति पूजा। मो सम आजु धन्य नहि दूजा॥
बिबिध भाँति भोजन करवावा। मुनिबर हृदय हरष अति पावा॥
पुनि चरननि मेले सुत चारी। राम देखि मुनि देह बिसारी॥
भए मगन देखत मुखसोभा। जनु चकोर पूरन ससि लोभा॥
तब मन हरषि बचन कह राऊ। मुनि अस कृपा न कीन्हिहु काऊ॥
केहि कारन आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लावौँ बारा॥
असुरसमूह सतावहिँ मोही। मैँ जाचन आएउँ नृप तोही॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचरबध मैँ होब सनाथा॥
दोहा। देहु भूप मन हरषित तजहु मोह अज्ञान।
धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौँ इन्ह कहँ अति कल्यान॥२०७॥
सुनि राजा अति अप्रिय बानी। हृदय कंप मुखदुति कुमुलानी॥
चौथैँ पन पाएउँ सुत चारी। बिप्र बचन नहिँ कहेहु बिचारी॥
माँगहु भूमि धेनु धन कोसा। सर्बस देउँ आजु सहरोसा॥
देह प्रान तेँ प्रिय कछु नाहीँ। सोउ मुनि देउँ निमिष एक माहीँ॥
सब सुत प्रीय प्रान की नाईँ। राम देत नहि बनै गोसाईँ॥
कहँ निसिचर अति घोर कठोरा। कहँ सुंदर सुत परम किसोरा॥
सुनि नृपगिरा प्रेमरस सानी। हृदय हरष माना मुनि ज्ञानी॥
तब बसिष्ठ बहु बिधि समुझावा। नृपसंदेह नास कहँ पावा॥

अति आदर दोउ तनय बोलाए। हृदय लाइ बहु भाँति सिखाए॥
मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ। तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ॥
दोहा। सौंपे भूप रिषिहि सुत बहु बिधि देइ असीस।
जननीभवन गए प्रभु चले नाइ पद सीस॥ १२
सोरठा। पुरुषसिंह दोउ बीर हरषि चले मुनिभय हरन।
कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्व कारन करन॥२०८॥
अरुन नयन उर बाहु बिसाला। नील जलज तनु स्याम तमाला॥
कटि पट पीत कसे बर भाथा। रुचिर चाप सायक दुहुँ हाथा॥
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई। बिस्वामित्र महानिधि पाई॥
प्रभु ब्रह्मन्य देव मैं जाना। मोहि निति पिता तजेउ भगवाना॥ ४
चले जात मुनि दीन्हि देखाई। सुनि ताड़का क्रोध करि धाई॥
एकहि बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा॥
तब रिषि निज नाथहि जिय चीन्ही। बिद्यानिधि कहुँ बिद्या दीन्ही॥
जा तें लाग न छुधा पिपासा। अतुलित बल तनु तेज प्रकासा॥ ८
दोहा। आयुध सर्ब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि।
कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि॥२०८॥
प्रात कहा मुनि सन रघुराई। निर्भय जज्ञ करहु तुम्ह जाई॥
होम करन लागे मुनिझारी। आपु रहे मख की रखवारी॥
सुनि मारीच निसाचर क्रोही। लै सहाय धावा मुनिद्रोही॥
बिनु फर बान राम तेहि मारा। सत जोजन गा सागरपारा॥ ४
पावकसर सुबाहु पुनि मारा। अनुज निसाचरकटकु सँघारा॥
मारि असुर द्विज निर्भयकारी। अस्तुति करहिं देव मुनि झारी॥
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया। रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया॥
भगतिहेतु बहु कथा पुराना। कहे बिप्र जद्यपि प्रभु जाना॥ ८
तब मुनि सादर कहा बुझाई। चरित एक प्रभु देखिअ जाई॥
धनुषजज्ञ करि रघुकुलनाथा। हरषि चले मुनिबर के साथा॥
आश्रम एक दीख मग माहीं। खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं॥
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कही बिसेषी॥ १२

दोहा। गौतमनारि श्रापबस उपलदेह धरि धीर।
चरनकमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर ॥२१०॥

छंद। परसत पद पावन सोकनसावन प्रगट भई तपपुंज सही।
देखत रघुनायक जनसुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही।
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहि आवै बचन कही।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुग नयनन्हि जलधार बही। ४
धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा रघुपति कृपा भगति पाई।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ज्ञानगम्य जय रघुराई।
मैं नारि अपावन प्रभु जगपावन रावनरिपु जनसुखदाई।
राजीव बिलोचन भवभय मोचन पाहि पाहि सरनहि आई। ८
मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना।
देखेउँ भरि लोचन हरि भवमोचन इहै लाभ संकर जाना।
बिनती प्रभु मोरी मैं मतिभोरी नाथ न मागौं बर आना।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना। १२
जेहि पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी।
सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी।
एहि भाँति सिधारी गौतमनारी बार बार हरिचरन परी।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पतिलोक अनंद भरी॥ १६

दोहा। अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल।
तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल ॥२११॥

चले राम लछिमन मुनिसंगा। गए जहाँ जगपावनि गंगा॥
गाधिसूनु सब कथा सुनाई। जेहि प्रकार सुरसरि महि आई॥
तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाए। बिबिध दान महिदेवन्हि पाए॥
हरषि चले मुनिबृंद सहाया। बेगि बिदेहनगर निअराया॥ ४
पुररम्यता राम जब देखी। हरषे अनुज समेत बिसेषी॥
बापी कूप सरित सर नाना। सलिल सुधा सम मनिसोपाना॥
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा। कूजत कल बहु बरन बिहंगा॥
बरन बरन बिकसे बनजाता। त्रिबिध समीर सदा सुखदाता॥ ८

दोहा। सुमन वाटिका बाग बन बिपुल बिहंग निवास।
फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँ पास ॥२१२॥
बनै न बरनत नगरनिकाई। जहाँ जाइ मन तहँ लोभाई ॥
चारु बजारु बिचित्र अँबारी। मनिमय बिधि जनु स्वकर सँवारी ॥
धनिक बनिक बर धनद समाना। बैठे सकल बस्तु लै नाना ॥
चौहट सुंदर गली सुहाई। संतत रहहिं सुगंध सिंचाई ॥
मंगलमय मंदिर सब केरें। चित्रित जनु रतिनाथ चितेरें ॥
पुर नर नारि सुभग सुचि संता। धरमसील ग्यानी गुनवंता ॥
अति अनूप जहँ जनकनिवासू। बिथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू ॥
होत चकित चित कोट बिलोकी। सकल भुवन सोभा जनु रोकी ॥
दोहा। धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति।
सियनिवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति ॥२१३॥
सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा। भूप भीर नट मागध भाटा ॥
बनी बिसाल बाजि गज साला। हय गय रथ संकुल सब काला ॥
सूर सचिव सेनप बहुतेरे। नृपगृह सरिस सदन सब केरे ॥
पुर बाहेर सर सरित समीपा। उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा ॥
देखि अनूप एक अँवराई। सब सुपास सब भाँति सुहाई ॥
कौसिक कहेउ मोर मनु माना। इहाँ रहिअ रघुबीर सुजाना ॥
भलेहि नाथ कहि कृपानिकेता। उतरे तहँ मुनिबृंद समेता ॥
बिस्वामित्रु महामुनि आए। समाचार मिथिलापति पाए ॥
दोहा। संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुर बर गुर ग्याति।
चले मिलन मुनिनायकहि मुदित राउ येहि भाँति ॥२१४॥
कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा। दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा ॥
बिप्रबृंद सब सादर बंदे। जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे ॥
कुसल प्रस्न कहि बारहि बारा। बिस्वामित्र नृपहि बैठारा ॥
तेहि अवसर आए दोउ भाई। गए रहे देखन फुलवाई ॥
स्याम गौर मृदु बयस किसोरा। लोचन सुखद बिस्व चित चोरा ॥
उठे सकल जब रघुपति आए। बिस्वामित्र निकट बैठाए ॥

भये सब सुखी देखि दोउ भ्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता ॥
मूरति मधुर मनोहर देखी। भयेउ बिदेहु बिदेहु बिसेषी ॥ ८
दोहा। प्रेम मगन मनु जानि नृपु करि बिबेकु धरि धीर।
बोलेउ मुनिपद नाइ सिरु गदगद गिरा गभीर ॥२१५॥
कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक। मुनिकुलतिलक कि नृपकुलपालक ॥
ब्रह्मु जो निगम नेति कहि गावा। उभय बेष धरि की सोइ आवा ॥
सहज बिराग रूप मनु मोरा। थकित होत जिमि चंद चकोरा ॥
ता ते प्रभु पूछौं सति भाऊ। कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥ ४
इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा। बरबस ब्रह्मसुखहि मनु त्यागा ॥
कह मुनि बिहसि कहेहु नृप नीका। बचन तुम्हार न होइ अलीका ॥
ये प्रिय सबहि जहाँ लगि प्रानी। मन मुसुकाहिँ रामु सुनि बानी ॥
रघुकुलमनि दसरथ के जाए। मम हित लागि नरेस पठाए ॥ ८
दोहा। रामु लखनु दोउ बंधु बर रूप सील बल धाम।
मख राखेउ सबु साखि जगु जिते असुर संग्राम ॥२१६॥
मुनि तव चरन देखि कह राऊ। कहि न सकौँ निज पुन्यप्रभाऊ ॥
सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता। आनँदहू के आनँददाता ॥
इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि। कहि न जाइ मन भाव सुहावनि ॥
सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू। ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ॥ ४
पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू। पुलक गात उर अधिक उछाहू ॥
मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसू। चलेउ लवाइ नगर अवनीसू ॥
सुंदर सदनु सुखद सब काला। तहाँ बासु लै दीन्ह भुआला ॥
करि पूजा सब बिधि सेवकाई। गयेउ राउ गृह बिदा कराई ॥ ८
दोहा। रिषयसंग रघुबंसमनि करि भोजनु बिश्रामु।
बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवसु रहा भरि जामु ॥२१७॥
लखनहृदय लालसा बिसेषी। जाइ जनकपुर आइअ देखी ॥
प्रभुभय बहुरि मुनिहि सकुचाहीँ। प्रगट न कहहिँ मनहि मुसुकाहीँ ॥
राम अनुज मन की गति जानी। भगतबछलता हिय हुलसानी ॥
परम बिनीत सकुचि मुसुकाई। बोले गुर अनुसासन पाई ॥ ४

नाथ लखनु पुरु देखन चहहीँ। प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीँ॥
जौं राउर आयेसु मैं पावउँ। नगर देखाइ तुरत लै आवउँ॥
सुनि मुनीसु कह बचन सप्रीती। कस न राम तुम्ह राखहु नीती॥
धरमसेतु पालक तुम्ह ताता। प्रेम बिबस सेवकसुखदाता॥ ८
दोहा। जाइ देखि आवहु नगरु सुखनिधान दोउ भाइ।
करहु सुफल सब के नयन सुंदर बदन देखाइ॥२१८॥
मुनिपद कमल बंदि दोउ भ्राता। चले लोकलोचन सुखदाता॥
बालकबृंद देखि अति सोभा। लगे संग लोचन मनु लोभा॥
पीत बसन परिकर कटि भाथा। चारु चाप सर सोहत हाथा॥
तन अनुहरत सुचंदनखोरी। स्यामल गौर मनोहर जोरी॥ ४
केहरि कंधर बाहु बिसाला। उर अति रुचिर नागमनि माला॥
सुभग सोन सरसीरुह लोचन। बदन मयंक ताप त्रय मोचन॥
कानन्हि कनकफूल छबि देहीँ। चितवत चितहि चोरि जनु लेहीँ॥
चितवनि चारु भृकुटि बर बाँकी। तिलकरेख सोभा जनु चाँकी॥ ८
दोहा। रुचिर चौतनी सुभग सिर मेचक कुंचित केस।
नख सिख सुंदर बंधु दोउ सोभा सकल सुदेस॥२१९॥
देखन नगरु भूपसुत आए। समाचार पुरबासिन्ह पाए॥
धाए धाम काम सब त्यागी। मनहु रंक निधि लूटन लागी॥
निरखि सहज सुंदर दोउ भाई। होहिँ सुखी लोचनफल पाई॥
जुवतीँ भवनझरोखन्हि लागीँ। निरखहिँ रामरूप अनुरागीँ॥ ४
कहहिँ परसपर बचन सप्रीती। सखि इन्ह कोटि काम छबि जीती॥
सुर नर असुर नाग मुनि माहीँ। सोभा असि कहुँ सुनिअति नाहीँ॥
बिष्नु चारि भुज बिधि मुख चारी। बिकट बेष मुख पंच पुरारी॥
अपर देउ अस कोउ न आही। यह छबि सखी पटतरिय जाही॥ ८
दोहा। बय किसोर सुषमासदन स्याम गौर सुखधाम।
अंग अंग पर वारिअहिँ कोटि कोटि सत काम॥२२०॥
कहहु सखी अस को तनुधारी। जो न मोह येह रूप निहारी॥
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी। जो मैं सुना सो सुनहु सयानी॥

ए दोऊ दसरथ के ढोटा। बाल मरालन्हि के कल जोटा॥
मुनि कौसिक मख के रखवारे। जिन्ह रन अजिर निसाचर मारे॥ ४
स्याम गात कल कंज बिलोचन। जो मारीच सुभुज मदु मोचन॥
कौसल्यासुत सो सुखखानी। नामु रामु धनु सायक पानी॥
गौर किसोर बेषु बर काछें। कर सर चाप राम के पाछें॥
लछिमनु नामु राम लघु भ्राता। सुनु सखि तासु सुमित्रा माता॥ ८
दोहा। बिप्रकाजु करि बंधु दोउ मग मुनिबधू उधारि।
आए देखन चापमख सुनि हरषीं सब नारि॥२२१॥
देखि रामछबि कोउ एक कहई। जोगु जानकिहि येह बरु अहई॥
जौ सखि इन्हहि देख नरनाहू। पन परिहरि हठि करै बिवाहू॥
कोउ कह ए भूपति पहिचाने। मुनि समेत सादर सनमाने॥
सखि परंतु पनु राउ न तजई। बिधिबस हठि अबिबेकहि भजई॥ ४
कोउ कह जौ भल अहइ बिधाता। सब कहँ सुनिअ उचित फलदाता॥
तौ जानकिहि मिलिहि बरु एहू। नाहिन आलि इहाँ संदेहू॥
जौ बिधिबस अस बनै सँजोगू। तौ कृतकृत्य होइ सब लोगू॥
सखि हमरें आरति अति तातें। कबहुँक ए आवहिं येहि नातें॥ ८
दोहा। नाहि त हम कहुँ सुनहु सखि इन्ह कर दरसनु दूरि।
येह संघटु तब होइ जब पुन्य पुराकृत भूरि॥२२२॥
बोली अपर कहेहु सखि नीका। येहि बिआह अति हित सब ही का॥
कोउ कह संकरचाप कठोरा। ए स्यामल मृदु गात किसोरा॥
सबु असमंजस अहइ सयानी। येह सुनि अपर कहै मृदु बानी॥
सखि इन्ह कहँ कोउ कोउ अस कहहीं। बड़ प्रभाउ देखत लघु अहहीं॥ ४
परसि जासु पद पंकज धूरी। तरी अहल्या कृत अघ भूरी॥
सो कि रहिहि बिनु सिवधनु तोरें। येह प्रतीति परिहरिअ न भोरें॥
जेहि बिरंचि रचि सीय सँवारी। तेहि स्यामल बरु रचेउ बिचारी॥
तासु बचन सुनि सब हरषानी। असेइ होउ कहहिं मृदु बानी॥ ८
दोहा। हिय हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृंद।
जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ तहँ तहँ परमानंद॥२२३॥

पुर पूरुब दिसि गे दोउ भाई। जहँ धनुमख हित भूमि बनाई॥
अति बिस्तार चारु गच ढारी। बिमल बेदिका रुचिर सँवारी॥
चहुँ दिसि कंचनमंच बिसाला। रचे जहाँ बैठहिं महिपाला॥
तेहि पाछे समीप चहुँ पासा। अपर मंच मंडली बिलासा॥ ४
कछुक ऊँचि सब भाँति सुहाई। बैठहिं नगर लोग जहँ जाई॥
तिन्ह कँ निकट बिसाल सुहाए। धवल धाम बहु बरन बनाए॥
जहँ बैठे देखहिँ सब नारीँ। जथाजोगु निज कुल अनुहारीँ॥
पुरबालक कहि कहि मृदु बचना। सादर प्रभुहि देखावहिँ रचना॥ ८
दोहा। सब सिसु येहि मिस प्रेमबस परसि मनोहर गात।
तन पुलकहिँ अति हरषु हिय देखि देखि दोउ भ्रात॥२२४॥
सिसु सब राम प्रेमबस जाने। प्रीति समेत निकेत बखाने॥
निज निज रुचि सब लेहिँ बोलाई। सहित सनेह जाहिँ दोउ भाई॥
रामु देखावहिँ अनुजहि रचना। कहि मृदु मधुर मनोहर बचना॥
लव निमेष महु भुवननिकाया। रचै जासु अनुसासन माया॥ ४
भगतिहेतु सोइ दीनदयाला। चितवत चकित धनुषमख साला॥
कौतुकु देखि चले गुर पाहीँ। जानि बिलंबु त्रास मन माहीँ॥
जासु त्रास डर कहुँ डर होई। भजनप्रभाउ देखावत सोई॥
कहि बातैँ मृदु मधुर सुहाई। किए बिदा बालक बरिआई॥ ८
दोहा। सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ।
गुरपद पंकज नाइ सिर बैठे आयेसु पाइ॥२२५॥
निसि प्रबेस मुनि आयेसु दीन्हा। सबहीँ संध्याबंदनु कीन्हा॥
कहत कथा इतिहास पुरानी। रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी॥
मुनिबर सयन कीन्हि तब जाई। लगे चरन चापन दोउ भाई॥
जिन्ह के चरन सरोरुह लागी। करत बिबिध जप जोग बिरागी॥ ४
तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते। गुरपद कमल पलोटत प्रीते॥
बार बार मुनि अज्ञा दीन्ही। रघुबर जाइ सयन तब कीन्ही॥
चापत चरन लखनु उर लाएँ। सभय सप्रेम परम सचु पाएँ॥
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता। पौढ़े धरि उर पद जलजाता॥ ८

दोहा। उठे लखनु निसि बिगत सुनि अरुनसिखाधुनि कान।
गुर ते पहिलेहि जगतपति जागे रामु सुजान ॥२२६॥

सकल सौच करि जाइ नहाए। नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए ॥
समय जानि गुर आयेसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥
भूपबागु बर देखेउ जाई। जहँ बसंत रितु रही लोभाई ॥
लागे बिटप मनोहर नाना। बरन बरन बर बेलि बिताना ॥ ४
नव पल्लव फल सुमन सुहाए। निज संपति सुररूख लजाए ॥
चातक कोकिल कीर चकोरा। कूजत बिहग नटत कल मोरा ॥
मध्य बाग सरु सोह सुहावा। मनिसोपान बिचित्र बनावा ॥
बिमल सलिलु सरसिज बहु रंगा। जलखग कूजत गुंजत भृंगा ॥ ८

दोहा। बागु तड़ागु बिलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत।
परम रम्य आरामु येहु जो रामहि सुख देत ॥२२७॥

चहुँ दिसि चितइ पूछि मालीगन। लगे लेन दल फूल मुदित मन ॥
तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥
संग सखीं सब सुभग सयानी। गावहिँ गीत मनोहर बानी ॥
सर समीप गिरिजागृहु सोहा। बरनि न जाइ देखि मनु मोहा ॥ ४
मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता। गईं मुदित मन गौरिनिकेता ॥
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग बरु मागा ॥
एक सखी सियसंगु बिहाई। गई रही देखन फुलवाई ॥
तेहि दोउ बंधु बिलोके जाई। प्रेम बिबस सीता पहि आई ॥ ८

दोहा। तासु दसा देखी सखिन्ह पुलक गात जलु नयन।
कहु कारनु निज हरष कर पूछहिँ सब मृदु बयन ॥२२८॥

देखन बागु कुअँर दुइ आए। बय किसोर सब भाँति सुहाए ॥
स्याम गौर किमि कहउँ बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी ॥
सुनि हरषीँ सब सखीँ सयानी। सियहिय अति उतकंठा जानी ॥
एक कहइ नृपसुत तेइ आली। सुने जे मुनिसँग आए काली ॥ ४
जिन्ह निज रूप मोहनी डारी। कीन्हे स्वबस नगर नर नारी ॥
बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू। अवसि देखिअहि देखन जोगू ॥

तासु बचन अति सियहि सोहाने। दरस लागि लोचन अकुलाने॥
चली अग्र करि प्रिय सखि सोई। प्रीति पुरातन लखै न कोई॥ ८

दोहा। सुमिरि सीय नारदबचन उपजी प्रीति पुनीत।
चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत॥२२९॥

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन राम हृदय गुनि॥
मानहु मदन दुंदुभी दीन्ही। मनसा बिस्वबिजय कहँ कीन्ही॥
अस कहि फिरि चितये तेहि ओरा। सियमुख ससि भये नयन चकोरा॥
भये बिलोचन चारु अचंचल। मनहु सकुचि निमि तजे द्रिगंचल॥ ४
देखि सीयसोभा सुखु पावा। हृदय सराहत बचनु न आवा॥
जनु बिरंचि सब निज निपुनाई। बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई॥
सुंदरता कहुँ सुंदर करई। छबिगृह दीपसिखा जनु बरई॥
सब उपमा कबि रहे जुठारी। केहि पटतरौं बिदेहकुमारी॥ ८

दोहा। सियसोभा हिय बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि॥२३०॥

तात जनकतनया येह सोई। धनुषजग्य जेहि कारन होई॥
पूजन गौरि सखीं लै आई। करत प्रकासु फिरहि फुलवाई॥
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा॥
सो सबु कारन जान बिधाता। फरकहिँ सुभद अंग सुनु भ्राता॥ ४
रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ। मनु कुपंथ पगु धरै न काऊ॥
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी। जेहि सपनेहु परनारि न हेरी॥
जिन्ह कै लहहिँ न रिपु रन पीठी। नहि पावहिँ परतिय मनु डीठी॥
मंगन लहहिँ न जिन्ह कै नाहीँ। ते नरबर थोरे जग माहीँ॥ ८

दोहा। करत बतकही अनुज सन मन सियरूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छबि करै मधुप इव पान॥२३१॥

चितवति चकित चहूँ दिसि सीता। कहँ गये नृपकिसोर मनु चिंता॥
जहँ बिलोक मृग सावक नैनी। जनु तहँ बरिस कमल सित श्रेनी॥
लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए॥
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने॥ ४

थके नयन रघुपतिछबि देखेँ। पलकन्हिहूँ परिहरीँ निमेषैँ ॥
अधिक सनेह देह भै भोरी। सरदससिहि जनु चितव चकोरी ॥
लोचनमग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥
जब सिय सखिन्ह प्रेमबस जानीँ। कहि न सकहिँ कछु मन सकुचानीँ ॥
दोहा। लताभवन तेँ प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलदपटल बिलगाइ ॥२३२॥
सोभासीवँ सुभग दोउ बीरा। नील पीत जलजाभ सरीरा ॥
मोरपंख सिर सोहत नीके। गुच्छ बीच बिच कुसुमकली के ॥
भाल तिलक श्रमबिंदु सुहाए। श्रवन सुभग भूषनछबि छाए ॥
बिकट भृकुटि कच घूघरवारे। नव सरोज लोचन रतनारे ॥
चारु चिबुक नासिका कपोला। हास बिलास लेत मनु मोला ॥
मुखछबि कहि न जाइ मोहि पाहीँ। जो बिलोकि बहु काम लजाहीँ ॥
उर मनिमाल कंबु कल ग्रीवा। काम कलभ कर भुज बलसीवा ॥
सुमन समेत बाम कर दोना। साँवर कुअँर सखी सुठि लोना ॥
दोहा। केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान।
देखि भानुकुलभूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान ॥२३३॥
धरि धीरजु एक आलि सयानी। सीता सन बोली गहि पानी ॥
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूपकिसोर देखि किन लेहू ॥
सकुचि सीय तब नयन उघारे। सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे ॥
नख सिख देखि राम कै सोभा। सुमिरि पितापनु मनु अति छोभा ॥
परबस सखिन्ह लखी जब सीता। भये गहरु सब कहहिँ सभीता ॥
पुनि आउब येहि बेरिआँ काली। अस कहि मन बिहसी एक आली ॥
गूढ़ गिरा सुनि सिय सँकुचानी। भयेउ बिलंबु मातुभय मानी ॥
धरि बड़ि धीर रामु उर आने। फिरी अपनपउ पितुबस जाने ॥
दोहा। देखन मिस मृग बिहग तरु फिरै बहोरि बहोरि।
निरखि निरखि रघुबीरछबि बाढ़ै प्रीति न थोरि ॥२३४॥
जानि कठिन सिवचाप बिसूरति। चली राखि उर स्यामल मूरति ॥
प्रभु जब जात जानकी जानी। सुख सनेह सोभा गुन खानी ॥

परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही। चारु चित्त भीती लिखि लीन्ही॥
गई भवानीभवन बहोरी। बंदि चरन बोलीं कर जोरी॥ ४
जय जय गिरिबरराजकिसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी॥
जय गजबदन षड़ानन माता। जगतजननि दामिनिदुति गाता॥
नहि तव आदि अंत अवसाना। अमित प्रभाउ बेदु नहि जाना॥
भव भव बिभव पराभव कारिनि। बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि॥ ८

दोहा। पतिदेवता सुतीय महु मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष॥२३५॥

सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी पुरारिपिआरी॥
देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे॥
मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सब ही कें॥
कीन्हेउ प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेहीं॥ ४
बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी॥
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ॥
सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मनकामना तुम्हारी॥
नारदबचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहि मनु राचा॥ ८

छंद। मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुनानिधानु सुजान सीलु सनेह जानत रावरो।
येहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषी अलीं।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चलीं॥ १२

सोरठा। जानि गौरि अनुकूल सियहिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥२३६॥

हृदय सराहत सीयलोनाई। गुर समीप गवने दोउ भाई॥
रामु कहा सबु कौसिक पाहीं। सरल सुभाउ छुआ छल नाहीं॥
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही। पुनि असीस दुहुँ भाइन्ह दीन्ही॥
सफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भये सुखारे॥ ४
करि भोजनु मुनिबर बिज्ञानी। लगे कहन कछु कथा पुरानी॥
बिगत दिवसु गुर आएसु पाई। संध्या करन चले दोउ भाई॥

प्राची दिसि ससि उयेउ सुहावा। सियमुख सरिस देखि सुखु पावा ॥
बहुरि विचारु कीन्ह मन माहीँ। सीयबदन सम हिमकर नाहीँ ॥ ८
दोहा। जनमु सिंधु पुनि बंधु बिषु दिन मलीन सकलंकु।
सियमुख समता पाव किमि चंदु बापुरो रंकु ॥२३७॥
घटै बढ़ै बिरहिनि दुखदाई। ग्रसै राहु निज संधिहि पाई ॥
कोक सोकप्रद पंकजद्रोही। अवगुन बहुत चंद्रमा तोही ॥
बैदेहीमुख पटतर दीन्हे। होइ दोषु बड़ अनुचित कीन्हे ॥
सिय मुखछबि बिधुब्याज बखानी। गुर पहि चले निसा बड़ि जानी ॥ ४
करि मुनिचरन सरोज प्रनामा। आयेसु पाइ कीन्ह बिश्रामा ॥
बिगत निसा रघुनायक जागे। बंधु बिलोकि कहन अस लागे ॥
उयेउ अरुन अवलोकहु ताता। पंकज कोक लोक सुखदाता ॥
बोले लखनु जोरि जुग पानी। प्रभुप्रभाउ सूचक मृदु बानी ॥ ८
दोहा। अरुनोदय सकुचे कुमुद उड़गन जोति मलीन।
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भये नृपति बलहीन ॥२३८॥
नृप सब नखत करहिँ उजिआरी। टारि न सकहिँ चाप तम भारी ॥
कमल कोक मधुकर खग नाना। हरषे सकल निसा अवसाना ॥
ऐसेहि प्रभु सब भगत तुम्हारे। होइहहिँ टूटैँ धनुष सुखारे ॥
उएउ भानु बिनु श्रम तम नासा। दुरे नखत जग तेजु प्रकासा ॥ ४
रबि निज उदय ब्याज रघुराया। प्रभुप्रतापु सब नृपन्ह देखाया ॥
तव भुजबल महिमा उदघाटी। प्रगटी धनुबिघटन परिपाटी ॥
बंधुबचन सुनि प्रभु मुसुकाने। होइ सुचि सहज पुनीत नहाने ॥
नित्यक्रिया करि गुर पहि आए। चरन सरोज सुभग सिर नाए ॥ ८
सतानंदु तब जनक बोलाए। कौसिक मुनि पहि तुरत पठाए ॥
जनकबिनय तिन्ह आइ सुनाई। हरषे बोलि लिए दोउ भाई ॥
दोहा। सतानंदपद बंदि प्रभु बैठे गुर पहि जाइ।
चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बोलाइ ॥२३९॥ १२
सीयस्वयंबरु देखिअ जाई। ईसु काहि धौँ देइ बड़ाई ॥
लखन कहा जसभाजनु सोई। नाथ कृपा तव जा पर होई ॥

हरषे मुनि सब सुनि बर बानी। दीन्हि असीस सबहि सुखु मानी॥
पुनि मुनिवृंद समेत कृपाला। देखन चले धनुष मखसाला॥ ४
रंगभूमि आए दोउ भाई। असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई॥
चले सकल गृहकाज बिसारी। बाल जुवान जरठ नर नारी॥
देखी जनक भीर भै भारी। सुचि सेवक सब लिए हकारी॥
तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू। आसन उचित देहु सब काहू॥ ८
दोहा। कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह बैठारे नर नारि।
उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि॥२४०॥
राजकुअँर तेहि अवसर आए। मनहु मनोहरता तन छाए॥
गुनसागर नागर बर बीरा। सुंदर स्यामल गौर सरीरा॥
राजसमाज बिराजत रूरे। उड़गन महु जनु जुग बिधु पूरे॥
जिन्ह के रही भावना जैसी। प्रभुमूरति तिन्ह देखी तैसी॥ ४
देखहिँ रूप महा रनधीरा। मनहु बीररसु धरे सरीरा॥
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी। मनहु भयानक मूरति भारी॥
रहे असुर छलछोनिप बेषा। तिन्ह प्रभु प्रगट काल सम देखा॥
पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई। नरभूषन लोचनसुखदाई॥ ८
दोहा। नारि बिलोकहिँ हरषि हिय निज निज रुचि अनुरूप।
जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप॥२४१॥
बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीसा। बहु मुख कर पग लोचन सीसा॥
जनकजाति अवलोकहिँ कैसे। सजन सगे प्रिय लागहिँ जैसे॥
सहित बिदेह बिलोकहिँ रानी। सिसु सम प्रीति न जाति बखानी॥
जोगिन्ह परम तत्व मय भासा। सांत सुद्ध सम सहज प्रकासा॥ ४
हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता। इष्टदेव इव सब सुख दाता॥
रामहि चितव भाय जेहि सीया। सो सनेहु सुखु नहि कथनीया॥
उर अनुभवति न कहि सक सोऊ। कवन प्रकार कहै कबि कोऊ॥
जेहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ। तेहि तस देखेउ कोसलराऊ॥ ८
दोहा। राजत राजसमाज महु कोसलराजकिसोर।
सुंदर स्यामल गौर तन बिस्वबिलोचन चोर॥२४२॥

सहज मनोहर मूरति दोऊ। कोटि काम उपमा लघु सोऊ॥
सरदचंद निंदक मुख नीके। नीरज नयन भावते जी के॥
चितवनि चारु मारमनु हरनी। भावति हृदय जाति नहिं बरनी॥
कल कपोल श्रुतिकुंडल लोला। चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला॥ ४
कुमुदबंधुकर निंदक हाँसा। भृकुटी बिकट मनोहर नासा॥
भाल बिसाल तिलक झलकाहीं। कच बिलोकि अलि अवलि लजाहीं॥
पीत चौतनी सिरन्हि सुहाई। कुसुमकली बिच बीच बनाई॥
रेखैं रुचिर कंबु कल गीवा। जनु त्रिभुवनसुषमा की सीवा॥ ८

दोहा। कुंजरमनि कंठा कलित उरन्हि तुलसिकामाल।
बृषभ कंध केहरि ठवनि बलनिधि बाहु बिसाल॥२४३॥

कटि तूनीर पीत पट बाँधे। कर सर धनुष बाम बर काँधे॥
पीत जग्य उपवीत सुहाए। नख सिख मंजु महाछबि छाए॥
देखि लोग सब भये सुखारे। एकटक लोचन चलत न तारे॥
हरषे जनकु देखि दोउ भाई। मुनिपद कमल गहे तब जाई॥ ४
करि बिनती निज कथा सुनाई। रंग-अवनि सब मुनिहि देखाई॥
जहँ जहँ जाहिँ कुअँर बर दोऊ। तहँ तहँ चकित चितव सबु कोऊ॥
निज निज रुख रामहि सबु देखा। कोउ न जान कछु मरमु बिसेषा॥
भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ। राजा मुदित महासुखु लहेऊ॥ ८

दोहा। सब मंचन्ह तेँ मंचु एकु सुंदर बिसद बिसाल।
मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल॥२४४॥

प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे। जनु राकेस उदय भये तारे॥
असि प्रतीति सब के मन माहीँ। राम चाप तोरब सक नाहीँ॥
बिनु भंजेहु भवधनुषु बिसाला। मेलिहि सीय राम उर माला॥
अस बिचारि गवनहु घर भाई। जसु प्रतापु बलु तेजु गवाई॥ ४
बिहसे अपर भूप सुनि बानी। जे अबिबेक अंध अभिमानी॥
तोरेहु धनुषु ब्याहु अवगाहा। बिनु तोरे को कुअँरि बिआहा॥
एक बार कालउ किन होऊ। सिय हित समर जितब हम सोऊ॥
येह सुनि अवर महिप मुसुकाने। धरमसील हरिभगत सयाने॥ ८

सोरठा। सीय बिआहबि राम गरबु दूरि करि नृपन्ह के।
जीति को सक संग्राम दसरथ के रनबाँकुरे ॥२४५॥

व्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई। मनमोदकन्हि कि भूख बताई ॥
सिखि हमारि सुनि परम पुनीता। जगदंबा जानहु जिय सीता ॥
जगतपिता रघुपतिहि बिचारी। भरि लोचन छबि लेहु निहारी ॥
सुंदर सुखद सकल गुन रासी। ए दोउ बंधु संभु उर बासी ॥ ४
सुधासमुद्र समीप बिहाई। मृगजलु निरखि मरहु कत धाई ॥
करहु जाइ जा कहुँ जोई भावा। हम तौ आजु जनमफलु पावा ॥
अस कहि भले भूप अनुरागे। रूप अनूप बिलोकन लागे ॥
देखहिँ सुर नभ चढ़े बिमाना। बरषहिँ सुमन करहिँ कल गाना ॥ ८

दोहा। जानि सुअवसरु सीय तब पठई जनक बोलाइ।
चतुर सखीँ सुंदर सकल सादर चलीँ लवाइ ॥२४६॥

सियसोभा नहि जाइ बखानी। जगदंबिका रूप गुन खानी ॥
उपमा सकल मोहि लघु लागी। प्राकृत नारि अंग अनुरागी ॥
सिय बरनिय तेइ उपमा देई। कुकबि कहाइ अजसु को लेई ॥
जौ पटतरिअ तीय सम सीया। जग असि जुवति कहाँ कमनीया ॥ ४
गिरा मुखर तन अरध भवानी। रति अति दुखित अतनु पति जानी ॥
बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही। कहिअ रमा सम किमि बैदेही ॥
जौ छबिसुधा पयोनिधि होई। परम रूप मय कच्छपु सोई ॥
सोभा रजु मंदरु सिंगारू। मथै पानि पंकज निज मारू ॥ ८

दोहा। येहि बिधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुख मूल।
तदपि सकोच समेत कबि कहहिँ सीय समतूल ॥२४७॥

चली संग लै सखीँ सयानी। गावत गीत मनोहर बानी ॥
सोह नवल तनु सुंदर सारी। जगतजननि अतुलित छबि भारी ॥
भूषन सकल सुदेस सुहाए। अंग अंग रचि सखिन्ह बनाए ॥
रंगभूमि जब सिय पगु धारीँ। देखि रूप मोहे नर नारीँ ॥ ४
हरषि सुरन्ह दुंदभीँ बजाई। बरषि प्रसून अपछरा गाई ॥
पानि सरोज सोह जयमाला। अवचट चितए सकल भुआला ॥

सीय चकित चित रामहि चाहा। भये मोहबस सब नरनाहा ॥
मुनि समीप देखे दोउ भाई। लगे ललकि लोचन निधि पाई ॥ ८
दोहा। गुरजन लाज समाजु बड़ देखि सीय सकुचानि।
लागि बिलोकन सखिन्ह तन रघुबीरहि उर आनि ॥२४८॥
रामरूपु अरु सियछवि देखेँ। नर नारिन्ह परिहरीँ निमेषँ ॥
सोचहिँ सकल कहत सकुचाहीँ। बिधि सन बिनय करहिँ मन माहीँ ॥
हरु बिधि बेगि जनकजड़ताई। मति हमारि असि देहि सुहाई ॥
बिनु बिचार पनु तजि नरनाहू। सीय राम कर करै बिबाहू ॥ ४
जगु भल कहिहि भाव सब काहू। हठ कीन्हे अंतहु उर दाहू ॥
येहि लालसा मगन सबु लोगू। बरु साँवरो जानकीजोगू ॥
तब बंदीजन जनक बोलाए। बिरिदावली कहत चलि आए ॥
कह नृपु जाइ कहहु पन मोरा। चले भाट हिय हरषु न थोरा ॥ ८
दोहा। बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल।
पन बिदेह कर कहहिँ हम भुजा उठाइ बिसाल ॥२४९॥
नृपभुज बलु बिधु सिवधनु राहू। गरुअ कठोर बिदित सब काहू ॥
रावनु बानु महाभट भारे। देखि सरासनु गवहिँ सिधारे ॥
सोइ पुरारिकोदंडु कठोरा। राजसमाज आजु जोइ तोरा ॥
त्रिभुवनजय समेत बैदेही। बिनहि बिचार बरै हठि तेही ॥ ४
सुनि पन सकल भूप अभिलाषे। भट मानी अतिसय मन माखे ॥
परिकर बाँधि उठे अकुलाई। चले इष्टदेवन्ह सिर नाई ॥
तमकि ताकि तक सिवधनु धरहीँ। उठइ न कोटि भाँति बलु करहीँ ॥
जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीँ। चाप समीप महीप न जाहीँ ॥ ८
दोहा। तमकि धरहिँ धनु मूढ़ नृप उठै न चलहिँ लजाइ।
मनहु पाइ भटबाहु बलु अधिकु अधिकु गरुआइ ॥२५०॥
भूप सहस दस एकहि बारा। लगे उठावन टरै न टारा ॥
डगै न संभुसरासनु कैसेँ। कामीबचन सतीमनु जैसेँ ॥
सब नृप भये जोगु उपहासी। जैसे बिनु बिराग संन्यासी ॥
कीरति बिजय बीरता भारी। चले चापकर बरबस हारी ॥ ४

श्रीहत भये हारि हिय राजा। बैठे निज निज जाइ समाजा॥
नृपन्ह विलोकि जनकु अकुलाने। बोले बचन रोष जनु साने॥
दीप दीप के भूपति नाना। आए सुनि हम जो पनु ठाना॥
देव दनुज धरि मनुजसरीरा। विपुल बीर आए रनधीरा॥ ८

दोहा। कुअँरि मनोहर विजय वड़ि कीरति अति कमनीय।
पावनिहार विरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय॥२५१॥

कहहु काहि येहु लाभु न भावा। काहुँ न संकरचाप चढ़ावा॥
रहौ चढ़ाउब तोरब भाई। तिलु भरि भूमि न सकै छड़ाई॥
अब जनि कोउ माखै भट मानी। बीरविहीन मही मैं जानी॥
तजहु आस निज निज गृह जाहू। लिखा न विधि वैदेहिविवाहू॥ ४
सुकृतु जाइ जौ पनु परिहरऊँ। कुअँरि कुआँरि रहउ का करऊँ॥
जौ जनतेउँ बिनु भट भुवि भाई। तौ पनु करि होतेउँ न हसाई॥
जनकबचन सुनि सब नर नारी। देखि जानकिहि भये दुखारी॥
माखे लखनु कुटिल भैं भौहैं। रदपट फरकत नयन रिसौहैं॥ ८

दोहा। कहि न सकत रघुबीरडर लगे बचन जनु बान।
नाइ रामपद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान॥२५२॥

रघुबंसिन्ह महु जहँ कोउ होई। तेहि समाज अस कहै न कोई॥
कही जनक जसि अनुचित बानी। विद्यमान रघुकुलमनि जानी॥
सुनहु भानुकुल पंकज भानू। कहौं सुभाउ न कछु अभिमानू॥
जौ तुम्हारि अनुसासनि पावौं। कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं॥ ४
काचे घट जिमि डारौं फोरी। सकौं मेरु मूलक जिमि तोरी॥
तव प्रताप महिमा भगवाना। को बापुरो पिनाक पुराना॥
नाथ जानि अस आयेसु होऊ। कौतुकु करौं बिलोकिअ सोऊ॥
कमलनाल जिमि चाप चढ़ावौं। जोजन सत प्रमान लै धावौं॥ ८

दोहा। तोरौं छत्रकदंड जिमि तव प्रताप बल नाथ।
जौ न करौं प्रभुपद सपथ कर न धरौं धनु भाथ॥२५३॥

लखन सकोप बचन जे बोले। डगमगानि महि दिग्गज डोले॥
सकल लोग सब भूप डेराने। सियहिय हरषु जनकु सकुचाने॥

गुर रघुपति सब मुनि मन माहीँ। मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीँ ॥
सयनहि रघुपति लखनु नेवारे। प्रेम समेत निकट बैठारे ॥ ४
बिस्वामित्रु समय सुभ जानी। बोले अति सनेहमय बानी ॥
उठहु राम भंजहु भवचापा। मेटहु तात जनकपरितापा ॥
सुनि गुरबचन चरन सिरु नावा। हरषु बिषादु न कछु उर आवा ॥
ठाढ़े भये उठि सहज सुभाए। ठवनि जुवा मृगराजु लजाए ॥ ८

दोहा। उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बालपतंग।
बिकसें संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ॥२५४॥

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी ॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
भये बिसोक कोक मुनि देवा। बरिसहिँ सुमन जनावहिँ सेवा ॥
गुरपद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आएसु मागा ॥ ४
सहजहि चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजर गामी ॥
चलत रामु सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भये सुखारी ॥
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौँ कछु पुन्यप्रभाउ हमारे ॥
तौ सिवधनु मृनाल की नाईँ। तोरहुँ रामु गनेस गोसाईँ ॥ ८

दोहा। रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ।
सीतामातु सनेहबस बचन कहै बिलखाइ ॥२५५॥

सखि सब कौतुकु देखनिहारे। जेउ कहावत हितू हमारे ॥
कोउ न बुझाइ कहै गुर पाहीँ। ए बालक असि हठ भलि नाहीँ ॥
रावन बान छुआ नहि चापा। हारे सकल भूप करि दापा ॥
सो धनु राजकुअँर कर देहीँ। बाल मराल कि मंदर लेहीँ ॥ ४
भूपसयानप सकल सिरानी। सखि बिधिगति कछु जाति न जानी ॥
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी ॥
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा। सोखेउ सुजसु सकल संसारा ॥
रबिमंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु तिभुवनतम भागा ॥ ८

दोहा। मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब ॥२५६॥

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे॥
देवि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुषु राम सुनु रानी॥
सखीबचन सुनि भै परतीती। मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती॥
तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदय बिनवति जेहि तेही॥ ४
मनही मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी॥
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चापगरुआई॥
गननायक बरदायक देवा। आजु लगे कीन्हिउ तुअ सेवा॥
बार बार बिनती सुनि मोरी। करहु चापगुरुता अति थोरी॥ ८

दोहा। देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिलोचन प्रेमजल पुलकावली सरीर॥२५७॥

नीके निरखि नयन भरि सोभा। पितुपनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा॥
अहह तात दारुनि हठ ठानी। समुझत नहि कछु लाभु न हानी॥
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुधसमाज बड़ अनुचित होई॥
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा। कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा॥ ४
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा। सिरससुमन कन बेधिअ हीरा॥
सकल सभा कै मति भै भोरी। अब मोहि संभुचाप गति तोरी॥
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी। होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी॥
अति परिताप सीयमन माहीँ। लव निमेष जुग सय सम जाहीँ॥ ८

दोहा। प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिजमीन जुग जनु बिधुमंडल डोल॥२५८॥

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी। प्रगट न लाज निसा अवलोकी॥
लोचनजलु रह लोचनकोना। जैसे परम कृपन कर सोना॥
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरजु प्रतीति उर आनी॥
तन मन बचन मोर पनु साचा। रघुपतिपद सरोज चितु राचा॥ ४
तौ भगवानु सकल उर बासी। करिहि मोहि रघुबर कै दासी॥
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलै न कछु संदेहू॥
प्रभु तन चितै प्रेमतन ठाना। कृपानिधान राम सबु जाना॥
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसें। चितव गरुरु लघु ब्यालहि जैसें॥ ८

दोहा। लखन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हरकोदंड।
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मंड ॥२५९॥
दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला॥
रामु चहहिं संकरधनु तोरा। होहु सजग सुनि आयेसु मोरा॥
चाप समीप रामु जब आए। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए॥
सब कर संसउ अरु अज्ञानू। मंद महीपन्ह कर अभिमानू॥ ४
भृगुपति केरि गरबगरुआई। सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई॥
सिय कर सोचु जनक पछितावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा॥
संभुचाप बड़ बोहितु पाई। चढ़े जाइ सब संगु बनाई॥
रामबाहु बल सिंधु अपारू। चहत पारु नहि कोउ कड़हारू॥ ८
दोहा। राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेषि ॥२६०॥
देखी बिपुल बिकल बैदेही। निमिष बिहात कलप सम तेही॥
तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा। मुयेँ करै का सुधातड़ागा॥
का बरषा सब कृषी सुखानें। समय चुकें पुनि का पछितानें॥
अस जिय जानि जानकी देखी। प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी॥ ४
गुरहि प्रनामु मनहिँ मन कीन्हा। अति लाघव उठाइ धनु लीन्हा॥
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयेऊ। पुनि नभ धनु मंडल सम भयेऊ॥
लेत चढ़ावत खैचत गाढ़ें। काहु न लखा देख सबु ठाढ़ें॥
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा॥ ८
छंद। भरे भुवन घोर कठोर रव रबिबाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले।
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे सकल बिकल बिचारहीँ।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीँ। १२
सोरठा। संकरचापु जहाजु सागरु रघुबरबाहु बलु।
बूड़ सो सकल समाजु चढ़ा जो प्रथमहि मोहबस ॥२६१॥
प्रभु दोउ चापखंड महि डारे। देखि लोग सब भये सुखारे॥
कौसिकरूप पयोनिधि पावन। प्रेम बारि अवगाह सुहावन॥

रामरूप राकेसु निहारी। बढ़त बीचि पुलकावलि भारी॥
बाजे नभ गहगहे निसाना। देववधू नाचहिँ करि गाना॥ ४
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा। प्रभुहि प्रसंसहिँ देहिँ असीसा॥
बरिसहिँ सुमन रंग बहु माला। गावहिँ किंनर गीत रसाला॥
रही भुवन भरि जय जय बानी। धनुषभंग धुनि जात न जानी॥
मुदित कहहिँ जहँ तहँ नर नारी। भंजेउ राम संभुधनु भारी॥ ८

दोहा। बंदी मागध सूत गन बिरिद बदहिँ मतिधीर।
करहिँ निछावरि लोग सब हय गय धन मनि चीर॥२६२॥

झाँझि मृदंग संख सहनाई। भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई॥
बाजहिँ बहु बाजने सुहाए। जहँ तहँ जुवतिन्ह मंगल गाए॥
सखिन्ह सहित हरषी अति रानी। सूखत धान परा जनु पानी॥
जनक लहेउ सुखु सोचु बिहाई। पैरत थकेँ थाह जनु पाई॥ ४
श्रीहत भये भूप धनु टूटेँ। जैसे दिवस दीप छबि छूटेँ॥
सीयसुखहि बरनिय केहि भाती। जनु चातकी पाइ जलु स्वाती॥
रामहि लखनु बिलोकत कैसेँ। ससिहि चकोरकिसोरकु जैसेँ॥
सतानंद तब आयेसु दीन्हा। सीता गमनु राम पहि कीन्हा॥ ८

दोहा। संग सखीँ सुंदर चतुर गावहिँ मंगलचार।
गवनी बाल मराल गति सुषमा अंग अपार॥२६३॥

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसे। छबिगन मध्य महाछबि जैसे॥
कर सरोज जयमाल सुहाई। बिस्वबिजय सोभा जेहि छाई॥
तन सकोचु मन परम उछाहू। गूढ़ प्रेमु लखि परै न काहू॥
जाइ समीप रामछबि देखी। रहि जनु कुअँरि चित्र अवरेखी॥ ४
चतुर सखीँ लखि कहा बुझाई। पहिरावहु जयमाल सुहाई॥
सुनत जुगल कर माल उठाई। प्रेम बिबस पहिराइ न जाई॥
सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला॥
गावहिँ छबि अवलोकि सहेली। सिय जयमाल राम उर मेली॥ ८

सोरठा। रघुबर उर जयमाल देखि देव बरिसहिँ सुमन।
सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रबि कुमुदगन॥२६४॥

पुर अरु ब्योम बाजने बाजे। खल भये मलिन साधु सब राजे॥
सुर किंनर नर नाग मुनीसा। जय जय जय कहि देहिँ असीसा॥
नाचहिँ गावहिँ बिबुधबधूटीँ। बार बार कुसुमांजलि छूटीँ॥
जहँ तहँ बिप्र बेदधुनि करहीँ। बंदी बिरिदावलि उच्चरहीँ॥ ४
महि पाताल नाक जसु ब्यापा। राम बरी सिय भंजेउ चापा॥
करहिँ आरती पुर नर नारी। देहिँ निछावरि बित्त बिसारी॥
सोहत सीय राम कै जोरी। छबि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी॥
सखीँ कहहिँ प्रभुपद गहु सीता। करति न चरन परस अति भीता॥ ८

दोहा। गौतमतिय गति सुरति करि नहि परसति पग पानि।
मन बिहसे रघुबंसमनि प्रीति अलौकिक जानि॥२६५॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे। क्रूर कपूत मूढ़ मन माखे॥
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे। जहँ तहँ गाल बजावन लागे॥
लेहु छड़ाइ सीय कह कोऊ। धरि बाँधहु नृपबालक दोऊ॥
तोरे धनुषु चाड़ नहि सरई। जीवत हमहि कुअँरि को बरई॥ ४
जौ बिदेहु कछु करै सहाई। जीतहु समर सहित दोउ भाई॥
साधु भूप बोले सुनि बानी। राजसमाजहि लाज लजानी॥
बलु प्रतापु बीरता बड़ाई। नाक पिनाकहि संग सिधाई॥
सोइ सूरता कि अब कहुँ पाई। असि बुधि तौ बिधि मुहु मसि लाई॥ ८

दोहा। देखहु रामहि नयन भरि तजि इरिषा मदु कोहु।
लखनरोषु पावकु प्रबलु जानि सलभ जनि होहु॥२६६॥

बैनतेयबलि जिमि चह कागू। जिमि ससु चहै नाग अरि भागू॥
जिमि चह कुसल अकारन कोही। सब संपदा चहै सिवद्रोही॥
लोभलोलुप कल कीरति चहई। अकलंकता कि कामी लहई॥
हरिपद बिमुख परम गति चाहा। तस तुम्हार लालचु नरनाहा॥ ४
कोलाहलु सुनि सीय सकानी। सखी लवाइ गईं जहँ रानी॥
रामु सुभाय चले गुर पाहीँ। सियसनेहु बरनत मन माहीँ॥
रानिन्ह सहित सोचबस सीया। अब धौँ बिधिहि काह करनीया॥
भूपबचन सुनि इत उत तकहीँ। लखनु राम डर बोलि न सकहीँ॥ ८

दोहा। अरुन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप।
मनहु मत्त गज गन निरखि सिंघकिसोरहु चोप ॥२६७॥

खरभरु देखि बिकल पुरनारी। सब मिलि देहिं महीपन्ह गारी॥
तेहि अवसर सुनि सिवधनु भंगा। आयेउ भृगुकुल कमल पतंगा॥
देखि महीप सकल सकुचाने। बाज झपट जनु लवा लुकाने॥
गौरि सरीर भूति भल भ्राजा। भाल बिसाल त्रिपुंड़ बिराजा॥
सीस जटा ससिबदनु सुहावा। रिसबस कछुक अरुन होइ आवा॥
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते। सहजहु चितवत मनहु रिसाते॥
बृषभ कंध उर बाहु बिसाला। चारु जनेउ माल मृगछाला॥
कटि मुनिबसन तून दुइ बाँधें। धनु सर कर कुठारु कल काँधें॥

दोहा। सांत बेषु करनी कठिन बरनि न जाइ सरूप।
धरि मुनितनु जनु बीररसु आयेउ जहँ सब भूप ॥२६८॥

देखत भृगुपतिबेषु कराला। उठे सकल भयबिकल भुआला॥
पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा॥
जेहि सुभाय चितवहिं हितु जानी। सो जानै जनु आइ खुटानी॥
जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा॥
आसिष दीन्हि सखीं हरषानीं। निज समाज लै गईं सयानीं॥
बिस्वामित्रु मिले पुनि आई। पद सरोज मेले दोउ भाई॥
रामु लखनु दसरथ के ढोटा। दीन्हि असीस देखि भल जोटा॥
रामहि चितइ रहे थकि लोचन। रूपु अपार मारमद मोचन॥

दोहा। बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीर।
पूछत जानि अजान जिमि ब्यापेउ कोपु सरीर ॥२६९॥

समाचार कहि जनक सुनाए। जेहि कारन महीप सब आए॥
सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चापखंड महि डारे॥
अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा॥
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटौं महि जहँ लहि तव राजू॥
अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥
सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी॥

मन पछिताति सीयमहतारी । बिधि अब सँवरी बात बिगारी ॥
भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता । अरध निमेष कलप सम बीता ॥ ८
दोहा । सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु ।
हृदय न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु ॥२७०॥
नाथ संभुधनु भंजनिहारा । होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥
आयेसु काह कहिअ किन मोही । सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई । अरिकरनी करि करिअ लराई ॥
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥ ४
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा । न त मारे जैहहिँ सब राजा ॥
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने । बोले परसुधरहि अवमाने ॥
बहु धनुही तोरी लरिकाईं । कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं ॥
येहि धनु पर ममता केहि हेतू । सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू ॥ ८
दोहा । रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न सँभार ।
धनुही सम तिपुरारिधनु बिदित सकल संसार ॥२७१॥
लखन कहा हसि हमरे जाना । सुनहु देव सब धनुष समाना ॥
का छति लाभु जून धनु तोरेँ । देखा राम नयन के भोरेँ ॥
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू । मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू ॥
बोले चितै परसु की ओरा । रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ॥ ४
बालकु बोलि बधौँ नहि तोही । केवल मुनि जड़ जानहि मोही ॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही । बिस्वबिदित छत्रियकुल द्रोही ॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही । बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ॥
सहसबाहुभुज छेदनिहारा । परसु बिलोकु महीपकुमारा ॥ ८
दोहा । मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर ।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ॥२७२॥
बिहसि लखनु बोले मृदु बानी । अहो मुनीसु महाभट मानी ॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू । चहत उड़ावन फूँकि पहारू ॥
इहाँ कुम्हड़बतिआ कोउ नाहीं । जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥
देखि कुठारु सरासन बाना । मैं कछु कहा सहित अभिमाना ॥ ४

भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई॥
बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहू पा परिअ तुम्हारें॥
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा॥ ८

दोहा। जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गभीर॥२७३॥

कौसिक सुनहु मंद येहु बालकु। कुटिलु कालबस निज कुल घालकु॥
भानुबंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुसु अबुधु असंकू॥
कालकवलु होइहि छन माहीं। कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं॥
तुम्ह हटकहु जौ चहहु उबारा। कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा॥ ४
लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा॥
अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी॥
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू॥
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा॥ ८

दोहा। सूर समर करनी करहिँ कहि न जनावहिँ आपु।
बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिँ प्रतापु॥२७४॥

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा॥
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर घोरा॥
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू॥
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब येहु मरनिहार भा साँचा॥ ४
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिँ न साधू॥
खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही॥
उतर देत छोड़ौं बिनु मारे। केवल कौसिक सील तुम्हारे॥
न त येहि काटि कुठार कठोरे। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरे॥ ८

दोहा। गाधिसूनु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।
अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ॥२७५॥

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहि जान बिदित संसारा॥
माता पितहि उरिन भये नीकें। गुररिनु रहा सोचु बड़ जी कें॥

सो जनु हमरेहि माथेँ काढ़ा। दिन चलि गये ब्याज बड़ बाढ़ा॥
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली॥
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा॥
भृगुबर परसु देखावहु मोही। बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही॥
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े॥
अनुचित कहि सबु लोगु पुकारे। रघुपति सयनहि लखनु नेवारे॥

दोहा। लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु॥२७६॥

नाथ करहु बालक पर छोहू। सूध दूधमुख करिअ न कोहू॥
जौ पै प्रभुप्रभाउ कछु जाना। तौ कि बराबरि करै अयाना॥
जौ लरिका कछु अचगरि करहीँ। गुर पितु मातु मोद मन भरहीँ॥
करिअ कृपा सिसु सेवक जानी। तुम्ह समसील धीर मुनि ग्यानी॥
रामबचन सुनि कछुक जुड़ाने। कहि कछु लखनु बहुरि मुसुकाने॥
हसत देखि नख सिख रिस ब्यापी। राम तोर भ्राता बड़ पापी॥
गौर सरीर स्यामु मन माहीँ। कालकूटमुख पयमुख नाहीँ॥
सहज टेढ़ अनुहरै न तोही। नीचु मीचु सम देख न मोही॥

दोहा। लखन कहेउ हसि सुनहु मुनि क्रोधु पाप कर मूल।
जेहि बस जन अनुचित करहिँ चरहिँ बिस्वप्रतिकूल॥२७७॥

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया। परिहरि कोपु करिअ अब दाया॥
टूट चाप नहि जुरिहि रिसानेँ। बैठिअ होइहिँ पाय पिरानेँ॥
जौ अति प्रिय तौ करिअ उपाई। जोरिअ कोउ बड़ गुनी बोलाई॥
बोलत लखनहि जनकु डेराहीँ। मष्ट करहु अनुचित भल नाहीँ॥
थर थर काँपहिँ पुर नर नारी। छोट कुमार खोट बड़ भारी॥
भृगुपति सुनि सुनि निरभय बानी। रिस तन जरै होइ बलहानी॥
बोले रामहि देइ निहोरा। बचौं बिचारि बंधु लघु तोरा॥
मनु मलीन तनु सुंदर कैसे। बिषरस भरा कनकघटु जैसे॥

दोहा। सुनि लछिमन बिहसे बहुरि नयन तरेरे राम।
गुर समीप गवने सकुचि परिहरि बानी बाम॥२७८॥

अति बिनीत मृदु सीतल बानी। बोले रामु जोरि जुग पानी॥
सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना। बालकबचनु करिअ नहि काना॥
बररै बालकु एकु सुभाऊ। इन्हहि न संत बिदूषहिं काऊ॥
तेहिं नाही कछु काज बिगारा। अपराधी मैं नाथ तुम्हारा॥
कृपा कोपु बधु बंध गोसाईं। मो पर करिअ दास की नाईं॥
कहिअ बेगि जेहि बिधि रिस जाई। मुनिनायक सोइ करौं उपाई॥
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे। अजहुँ अनुज तव चितव अनैसे॥
येहि के कंठ कुठारु न दीन्हा। तौ मैं काह कोपु करि कीन्हा॥

दोहा। गर्भ स्रवहिं अवनिप रवनि सुनि कुठारगति घोर।
परसु अछत देखौं जिअत बैरी भूपकिसोर॥२७९॥

बहै न हाथु दहै रिस छाती। भा कुठारु कुंठित नृपघाती॥
भयेउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ। मोरे हृदय कृपा कसि काऊ॥
आजु दया दुखु दुसह सहावा। सुनि सौमित्रि बिहसि सिरु नावा॥
बाउ कृपामूरति अनुकूला। बोलत बचन झरत जनु फूला॥
जौं पै कृपा जरिहि मुनि गाता। क्रोधु भये तनु राख बिधाता॥
देखु जनक हठि बालकु एहू। कीन्ह चहत जड़ जमपुर गेहू॥
बेगि करहु किन आँखिन्ह ओटा। देखत छोट खोट नृपढोटा॥
बिहसे लखनु कहा मन माहीं। मूदे आँखि कतहुँ कोउ नाहीं॥

दोहा। परसुराम तब राम प्रति बोले उर अति क्रोधु।
संभुसरासनु तोरि सठ करसि हमार प्रबोधु॥२८०॥

बंधु कहै कटु संमत तोरे। तू छलबिनय करसि कर जोरे॥
करु परितोषु मोर संग्रामा। नाहि त छाड़ु कहाउब रामा॥
छलु तजि करहि समरु सिवद्रोही। बंधु सहित न त मारौं तोही॥
भृगुपति बकहिं कुठार उठाए। मन मुसुकाहिं रामु सिर नाए॥
गुनह लखन कर हम पर रोषू। कतहुँ सुधाइहु ते बड़ दोषू॥
टेढ़ जानि सब बंदे काहू। बक्र चंद्रमहि ग्रसै न राहू॥
राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा। कर कुठारु आगे येह सीसा॥
जेहि रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी। मोहि जानिअ आपन अनुगामी॥

दोहा। प्रभुहि सेवकहि समरु कस तजहु बिप्रबर रोसु।
बेषु बिलोके कहेसि कछु बालकहू नहि दोसु ॥२८१॥

देखि कुठारु बान धनु धारी। भै लरिकहि रिस बीरु बिचारी ॥
नामु जान पै तुम्हहि न चीन्हा। बंससुभाय उतरु तेहिँ दीन्हा ॥
जौँ तुम्ह औतेहु मुनि की नाईं। पदरज सिर सिसु धरत गोसाईं ॥
छमहु चूक अनजानत केरी। चहिअ बिप्र उर कृपा घनेरी ॥ ४
हमहि तुम्हहि सरिबरि कसि नाथा। कहहु न कहा चरन कहँ माथा ॥
राम मात्र लघु नाम हमारा। परसु सहित बड़ नाम तोहारा ॥
देव एकु गुनु धनुष हमारे। नव गुन परम पुनीत तुम्हारे ॥
सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे। छमहु बिप्र अपराध हमारे ॥ ८

दोहा। बार बार मुनि बिप्रबर कहा राम सन राम।
बोले भृगुपति सरुष हसि तहूँ बंधु सम बाम ॥२८२॥

निपटहि द्विज करि जानहि मोही। मैँ जस बिप्र सुनावौँ तोही ॥
चाप स्रुवा सर आहुति जानू। कोपु मोर अति घोर कृसानू ॥
समिधि सेन चतुरंग सुहाई। महा महीप भये पसु आई ॥
मैँ येहि परसु काटि बलि दीन्हे। समर जग्य जय कोटिन्ह कीन्हे ॥ ४
मोर प्रभाउ बिदित नहि तोरेँ। बोलसि निदरि बिप्र के भोरेँ ॥
भंजेउ चापु दापु बड़ बाढ़ा। अहमिति मनहु जीति जगु ठाढ़ा ॥
राम कहा मुनि कहहु बिचारी। रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी ॥
छुअतहि टूट पिनाक पुराना। मैँ केहि हेतु करौँ अभिमाना ॥ ८

दोहा। जौ हम निदरहिँ बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ।
तौ अस को जग सुभटु जेहि भयबस नावहिँ माथ ॥२८३॥

देव दनुज भूपति भट नाना। समबल अधिक होउ बलवाना ॥
जौ रन हमहि पचारै कोऊ। लरहिँ सुखेन कालु किन होऊ ॥
छत्रियतनु धरि समर सकाना। कुलकलंकु तेहि पावर आना ॥
कहौँ सुभाउ न कुलहि प्रसंसी। कालहु डरहिँ न रन रघुबंसी ॥ ४
बिप्रबंस कै असि प्रभुताई। अभय होइ जो तुम्हहि डेराई ॥
सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के। उघरे पटल परसुधरमति के ॥

राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु मिटै मोर संदेहू॥
देत चापु आपुहि चलि गएऊ। परसुराममन बिसमय भयेऊ॥ ८

दोहा। जाना रामप्रभाउ तब पुलक प्रफुल्लित गात।
जोरि पानि बोले बचन हृदय न प्रेमु अमात॥२८४॥

जय रघुबंस बनज बन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृसानू॥
जय सुर बिप्र धेनु हितकारी। जय मद मोह कोह भ्रम हारी॥
बिनय सील करुना गुन सागर। जयति बचनरचना अति नागर॥
सेवकसुखद सुभग सब अंगा। जय सरीरछबि कोटि अनंगा॥ ४
करौं काह मुख एक प्रसंसा। जय महेसमन मानस हंसा॥
अनुचित बहुत कहेउँ अज्ञाता। छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता॥
कहि जय जय जय रघुकुलकेतू। भृगुपति गये बनहि तपहेतू॥
अपभय कुटिल महीप डेराने। जहँ तहँ कायर गवहिँ पराने॥ ८

दोहा। देवन्ह दीन्ही दुंदभी प्रभु पर बरषहिँ फूल।
हरषे पुर नर नारि सब मिटी मोहमय सूल॥२८५॥

अति गहगहे बाजने बाजे। सबहि मनोहर मंगल साजे॥
जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनी। करहिँ गान कल कोकिलबयनी॥
सुखु बिदेह कर बरनि न जाई। जन्मदरिद्र मनहु निधि पाई॥
बिगत त्रास भइ सीय सुखारी। जनु बिधु उदयँ चकोरकुमारी॥ ४
जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा। प्रभुप्रसाद धनु भंजेउ रामा॥
मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाई। अब जो उचित सो कहिअ गोसाईं॥
कह मुनि सुनु नरनाथ प्रबीना। रहा बिबाहु चाप आधीना॥
टूटतहीँ धनु भयेउ बिबाहू। सुर नर नाग बिदित सब काहू॥ ८

दोहा। तदपि जाइ तुम्ह करहु अब जथा बंसब्यवहारु।
बूझि बिप्र कुलबृद्ध गुर बेद बिदित आचारु॥२८६॥

दूत अवधपुर पठवहु जाई। आनहिँ नृप दसरथहि बोलाई॥
मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला। पठए दूत बोलि तेहि काला॥
बहुरि महाजन सकल बोलाए। आइ सबन्हि सादर सिर नाए॥
हाट बाट मंदिर सुरबासा। नगरु सँवारहु चारिहु पासा॥ ४

हरषि चले निज निज गृह आए । पुनि परिचारक बोलि पठाए ॥
रचहु विचित्र वितान बनाई । सिर धरि बचन चले सचु पाई ॥
पठए बोलि गुनी तिन्ह नाना । जे वितानबिधि कुसल सुजाना ॥
बिधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा । बिरचे कनककदलि के खंभा ॥ ८
दोहा । हरितमनिन्ह के पत्र फल पदुमराग के फूल ।
रचना देखि बिचित्र अति मनु बिरंचि कर भूल ॥२८७॥
बेनु हरित मनि मय सब कीन्हे । सरल सपरब परहिँ नहि चीन्हे ॥
कनककलित अहिबेलि बनाई । लखि नहि परै सपरन सुहाई ॥
तेहि के रचि पचि बंध बनाए । बिच बिच मुकुतादाम सुहाए ॥
मानिक मरकत कुलिस पिरोजा । चीरि कोरि पचि रचे सरोजा ॥ ४
किए भृंग बहुरंग बिहंगा । गुंजहिँ कूजहिँ पवनप्रसंगा ॥
सुरप्रतिमा खंभन्ह गढ़ि काढ़ी । मंगल द्रब्य लिये सब ठाढ़ी ॥
चौकैं भाँति अनेक पुराई । सिंधुर मनि मय सहज सुहाई ॥
दोहा । सौरभ पल्लव सुभग सुठि किए नीलमनि कोरि । ८
हेमबौरु मरकतघवरि लसति पाटमय डोरि ॥२८८॥
रचे रुचिर बर बंदनिवारे । मनहु मनोभव फंद सँवारे ॥
मंगल कलस अनेक बनाए । ध्वज पताक पट चमर सुहाए ॥
दीप मनोहर मनिमय नाना । जाइ न बरनि बिचित्र बिताना ॥
जेहि मंडप दुलहिनि बैदेही । सो बरनै असि मति कबि केही ॥ ४
दूलहु रामु रूप गुन सागर । सो बितानु तिहुँ लोक उजागर ॥
जनकभवन कै सोभा जैसी । गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी ॥
जेहि तेरहुति तेहि समय निहारी । तेहि लघु लगहिँ भुवन दस चारी ॥
जो संपदा नीचगृह सोहा । सो बिलोकि सुरनायक मोहा ॥ ८
दोहा । बसै नगर जेहि लच्छि करि कपटनारि बर बेषु ।
तेहि पुर कै सोभा कहत सकुचहिँ सारद सेषु ॥२८९॥
पहुचे दूत रामपुर पावन । हरषे नगर बिलोकि सुहावन ॥
भूपद्वार तिन्ह खबरि जनाई । दसरथ नृप सुनि लिए बोलाई ॥
करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही । मुदित महीप आपु उठि लीन्ही ॥

वारि बिलोचन बाँचत पाती। पुलक गात आई भरि छाती॥ ४
रामु लखनु उर कर बर चीठी। रहि गये कहत न खाटी मीठी॥
पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची। हरषी सभा बात सुनि साँची॥
खेलत रहे तहाँ सुधि पाई। आए भरतु सहित हित भाई॥
पूछत अति सनेह सकुचाई। तात कहाँ तें पाती आई॥ ८

दोहा। कुसल प्रानप्रिय बंधु दोउ अहहिँ कहहु केहि देस।
सुनि सनेहँ साने बचन बाची बहुरि नरेस॥२९०॥

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता। अधिक सनेहु समात न गाता॥
प्रीति पुनीत भरत कै देखी। सकल सभा सुखु लहेउ बिसेषी॥
तब नृप दूत निकट बैठारे। मधुर मनोहर बचन उचारे॥
भैआ कहहु कुसल दोउ बारे। तुम्ह नीकेँ निज नयन निहारे॥ ४
स्यामल गौर धरे धनु भाथा। बय किसोर कौसिक मुनि साथा॥
पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभाऊ। प्रेम बिबस पुनि पुनि कह राऊ॥
जा दिन तेँ मुनि गए लवाई। तब ते आजु साँचि सुधि पाई॥
कहहु बिदेह कवन बिधि जाने। सुनि प्रिय बचन दूत मुसुकाने॥ ८

दोहा। सुनहु महीपति मुकुटमनि तुम्ह सम धन्य न कोउ।
रामु लखनु जिन्ह के तनय बिस्वबिभूषन दोउ॥२९१॥

पूछन जोगु न तनय तुम्हारे। पुरुषसिंघ तिहुँ पुर उजिआरे॥
जिन्ह के जस प्रताप के आगे। ससि मलीन रबि सीतल लागे॥
तिन्ह कहँ कहिअ नाथ किमि चीन्हे। देखिय रबि कि दीप कर लीन्हे॥
सीयस्वयंबर भूप अनेका। समिटे सुभट एक तेँ एका॥ ४
संभुसरासनु काहुँ न टारा। हारे सकल बीर बरिआरा॥
तीनि लोक महँ जे भट मानी। सभ कै सकति संभुधनु भानी॥
सकै उठाइ सरासुर मेरू। सोउ हिय हारि गयेउ करि फेरू॥
जेहिँ कौतुक सिवसैलु उठावा। सोउ तेहिँ सभा पराभउ पावा॥ ८

दोहा। तहाँ राम रघुबंसमनि सुनिअ महा महिपाल।
भंजेउ चाप प्रयास बिनु जिमि गजु पंकजमाल॥२९२॥

सुनि सरोष भृगुनायकु आए। बहुत भाँति तिन्ह आँखि देखाए॥

देखि रामबलु निज धनु दीन्हा। करि बहु बिनय गवनु बन कीन्हा॥
राजन रामु अतुलबल जैसें। तेजनिधान लखनु पुनि तैसें॥
कंपहिं भूप बिलोकत जाकें। जिमि गज हरिकिसोर के ताकें॥ ४
देव देखि तव बालक दोऊ। अब न आँखि तर आवत कोऊ॥
दूत बचनरचना प्रिय लागी। प्रेम प्रताप बीररस पागी॥
सभा समेत राउ अनुरागे। दूतन्ह देन निछावरि लागे॥
कहि अनीति ते मूदहिं काना। धरमु बिचारि सबहि सुखु माना॥ ८

दोहा। तब उठि भूप बसिष्ठ कहुँ दीन्हि पत्रिका जाइ।
कथा सुनाई गुरहि सब सादर दूत बोलाइ॥२८३॥

सुनि मुनि बोले अति सुखु पाई। पुन्यपुरुष कहुँ महि सुखछाई॥
जिमि सरिता सागर महु जाहीं। जद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमि सुख संपति बिनहि बोलाए। धरमसील पहिं जाहिं सुभाए॥
तुम्ह गुर बिप्र धेनु सुर सेवी। तसि पुनीत कौसल्या देवी॥ ४
सुकृत तुम्ह समान जग माहीं। भयेउ न है कोउ होनेउ नाहीं॥
तुम्ह ते अधिक पुन्य बड़ काकें। राजन राम सरिस सुत जाकें॥
बीर बिनीत धरम ब्रत धारी। गुनसागर बर बालक चारी॥
तुम्ह कहुँ सर्ब काल कल्याना। सजहु बरात बजाइ निसाना॥ ८

।दोहा।

चलहु बेगि सुनि गुरबचन भलेहि नाथ सिरु नाइ।
भूपति गवने भवन तब दूतन्ह बासु देवाइ॥२८४॥

राजा सबु रनिवासु बोलाई। जनकपत्रिका बाचि सुनाई॥
सुनि संदेसु सकल हरषानी। अपर कथा सब भूप बखानी॥
प्रेमप्रफुल्लित राजहिं रानी। मनहु सिखिनि सुनि बारिदबानी॥
मुदित असीस देहिं गुर नारी। अति आनंद मगन महतारी॥ ४
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती। हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती॥
राम लखन कै कीरति करनी। बारहि बार भूपबर बरनी॥
मुनिप्रसादु कहि द्वार सिधाए। रानिन्ह तब महिदेव बोलाए॥
दिए दान आनंद समेता। चले बिप्रबर आसिष देता॥ ८

सोरठा। जाचक लिए हकारि दीन्हि निछावरि कोटि विधि।
चिरुँ जीवहुँ सुत चारि चक्रवर्ति दसरत्थ के ॥२८५॥
कहत चले पहिरे पट नाना। हरषि हने गहगहे निसाना॥
समाचार सब लोगन्ह पाए। लागे घर घर होन बधाए॥
भुवन चारि दस भरा उछाहू। जनकसुता रघुबीर बिआहू॥
सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे। मग गृह गली सँवारन लागे॥
जद्यपि अवध सदैव सुहावनि। रामपुरी मंगलमय पावनि॥
तदपि प्रीति कै रीति सुहाई। मंगल रचना रची बनाई॥
धज पताक पट चामर चारू। छावा परम विचित्र बजारू॥
कनककलस तोरन मनिजाला। हरद दूब दधि अच्छत माला॥
दोहा। मंगलमय निज निज भवन लोगन्ह रचे बनाइ।
बीथीं सीचीं चतुरसम चौकैं चारु पुराइ ॥२८६॥
जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि। सजि नवसप्त सकल दुति दामिनि॥
बिधुबदनीं मृगबालक लोचनि। निज सरूप रतिमानु बिमोचनि॥
गावहिं मंगल मंजुल बानीं। सुनि कलरव कलकंठि लजानी॥
भूपभवन किमि जाइ बखाना। बिस्वबिमोहन रचेउ बिताना॥
मंगल द्रब्य मनोहर नाना। राजत बाजत बिपुल निसाना॥
कतहुँ बिरिद बंदी उच्चरहीं। कतहुँ बेदधुनि भूसुर करहीं॥
गावहिं सुंदरि मंगल गीता। लै लै नामु रामु अरु सीता॥
बहुत उछाहु भवनु अति थोरा। मानहु उमगि चला चहुँ ओरा॥
दोहा। सोभा दसरथभवन कइ को कबि बरनै पार।
जहाँ सकल सुर सीसमनि राम लीन्ह अवतार ॥२८७॥
भूप भरत पुनि लिये बोलाई। हय गय स्यंदन साजहु जाई॥
चलहु बेगि रघुबीरबराता। सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता॥
भरत सकल साहनी बोलाए। आएसु दीन्ह मुदित उठि धाए॥
रचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे। बरन बरन बर बाजि बिराजे॥
सुभग सकल सुठि चंचल करनी। अय इव जरत धरत पग धरनी॥
नाना जाति न जाहिं बखाने। निदरि पवनु जनु चहत उड़ाने॥

तिन्ह सब छयल भये असवारा। भरत सरिस बय राजकुमारा॥
सब सुंदर सब भूषनधारी। कर सर चाप तून कटि भारी॥ ८
दोहा। छरे छबीले छयल सब सूर सुजान, नवीन।
जुग पदचर असवार प्रति जे असिकला प्रबीन॥२९८॥
बाँधे बिरद बीर रन गाढ़े। निकसि भये पुर बाहेर ठाढ़े॥
फेरहिँ चतुर तुरग गति नाना। हरषहिँ सुनि सुनि पनव निसाना॥
रथ सारथिन्ह बिचित्र बनाए। ध्वज पताक मनि भूषन लाए॥
चवर चारु किंकिनि धुनि करहीँ। भानुजान सोभा अपहरहीँ॥ ४
सावकरन अगनित हय होते। ते तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते॥
सुंदर सकल अलंकृत सोहे। जिन्हहि बिलोकत मुनिमन मोहे॥
जे जल चलहिँ थलहि की नाई। टाप न बूड़ बेग अधिकाई॥
अस्त्र सस्त्र सबु साजु बनाई। रथी सारथिन्ह लिए बोलाई॥ ८
दोहा। चढ़ि चढ़ि रथ बाहेर नगर लागी जुरन बरात।
होत सगुन सुंदर सबहि जो जेहि कारज जात॥२९९॥
कलित करिबरन्हि परी अबारी। कहि न जाहि जेहि भाँति सँवारी॥
चले मत्त गज घटा बिराजी। मनहु सुभग स्रावन घनराजी॥
बाहन अपर अनेक बिधाना। सिबिका सुभग सुखासन जाना॥
तिन्ह चढ़ि चले बिप्रबर बृंदा। जनु तनु धरे सकल श्रुतिछंदा॥ ४
मागध सूत बंदि गुनगायक। चले जान चढ़ि जो जेहि लायक॥
बेसर ऊट बृषभ बहु जाती। चले बस्तु भरि अगनित भाँती॥
कोटिन्ह कावरि चले कहारा। बिबिध बस्तु को बरनैँ पारा॥
चले सकल सेवक समुदाई। निज निज साजु समाजु बनाई॥ ८
दोहा। सब के उर निर्भर हरषु पूरित पुलक सरीर।
कबहि देखिबे नयन भरि रामु लखनु दोउ बीर॥३००॥
गरजहिँ गज घंटाधुनि घोरा। रथरव बाजिहिंस चहुँ ओरा॥
निदरि घनहि घुम्मरहिँ निसाना। निज पराइ कछु सुनिअ न काना॥
महा भीर भूपति के द्वारे। रज होइ जाइ पषान पवारे॥
चढ़ी अटारिन्ह देखहिँ नारी। लिए आरती मंगल थारी॥ ४

गावहिँ गीत मनोहर नाना। अति आनंदु न जाइ बखाना॥
तब सुमंत्र दुइ स्यंदन साजी। जोते रबिहय निंदक बाजी॥
दोउ रथ रुचिर भूप पहि आने। नहि सारद पहि जाहिँ बखाने॥
राजसमाजु एक रथ साजा। दूसर तेजपुंज अति भ्राजा॥ ८

दोहा। तेहि रथ रुचिर बसिष्ठ कहुँ हरषि चढ़ाइ नरेसु।
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि हर गुर गौरि गनेसु॥३०१॥

सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसेँ। सुरगुर संग पुरंदर जैसेँ॥
करि कुलरीति बेदबिधि राऊ। देखि सबहि सब भाँति बनाऊ॥
सुमिरि रामु गुर आयेसु पाई। चले महीपति संख बजाई॥
हरषे बिबुध बिलोकि बराता। बरषहिँ सुमन सुमंगलदाता॥ ४
भयेउ कुलाहल हय गय गाजे। ब्योम बरात बाजने बाजे॥
सुर नर नारि सुमंगल गाई। सरस राग बाजहिँ सहनाई॥
घंट घंटि धुनि बरनि न जाहीँ। सरव करहिँ पाइक फहराहीँ॥
करहिँ बिदूषक कउतुक नाना। हासकुसल कल गान सुजाना॥ ८

दोहा। तुरग नचावहिँ कुअँरबर अकनि मृदंग निसान।
नागर नट चितवहिँ चकित डगहिँ न तालबँधान॥३०२॥

बनै न बरनत बनी बराता। होहिँ सगुन सुंदर सुभदाता॥
चारा चाषु बाम दिसि लेई। मनहु सकल मंगल कहि देई॥
दाहिन काग सुखेत सुहावा। नकुलदरसु सबु काहूँ पावा॥
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी। सघट सबाल आव बर नारी॥ ४
लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा। सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा॥
मृगमाला फिरि दाहिनि आई। मंगलगन जनु दीन्हि देखाई॥
छेमकरी कह छेम बिसेषी। स्यामा बाम सुतरु पर देखी॥
सनमुख आयेउ दधि अरु मीना। कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना॥ ८

दोहा। मंगलमय कल्यानमय अभिमत फल दातार।
जनु सब साचे होन हित भए सगुन एक बार॥३०३॥

मंगल सगुन सुगम सब ताकेँ। सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाकेँ॥
राम सरिस बरु दुलहिनि सीता। समधी दसरथु जनकु पुनीता॥

सुनि अस ब्याहु सगुन सब नाचे। अब कीन्हे बिरंचि हम साचे॥
येहि बिधि कीन्ह बरात पयाना। हय गय गाजहिँ हने निसाना॥ ४
आवत जानि भानुकुलकेतू। सरितन्हि जनक बँधाए सेतू॥
बीच बीच बर बास बनाए। सुरपुर सरिस संपदा छाए॥
असन सयन बर बसन सुहाए। पावहिँ सब निज निज मन भाए॥
नित नूतन सुख लखि अनुकूले। सकल बरातिन्ह मंदिर भूले॥ ८

दोहा। आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निसान।
सजि गज रथ पदचर तुरग लेन चले अगवान॥३०४॥

कनककलस कल कोपर थारा। भाजन ललित अनेक प्रकारा॥
भरे सुधासम सब पकवाने। भाँति भाँति नहि जाहिँ बखाने॥
फल अनेक बर बस्तु सुहाई। हरषि भेँट हित भूप पठाई॥
भूषन बसन महामनि नाना। खग मृग हय गय बहु बिधि जाना॥ ४
मंगल सगुन सुगंध सुहाए। बहुत भाँति महिपाल पठाए॥
दधि चिउरा उपहार अपारा। भरि भरि कावरि चले कहारा॥
अगवानन्ह जब दीख बराता। उर आनंदु पुलक भर गाता॥
देखि बनाव सहित अगवाना। मुदित बरातिन्ह हने निसाना॥ ८

दोहा। हरषि परसपर मिलन हित कछुक चले बगमेल।
जनु आनंदसमुद्र दुइ मिलत बिहाइ सुबेल॥३०५॥

बरषि सुमन सुरसुंदरि गावहिँ। मुदित देव दुंदुभी बजावहिँ॥
बस्तु सकल राखी नृप आगेँ। बिनय कीन्हि तिन्ह अति अनुरागेँ॥
प्रेम समेत राय सबु लीन्हा। भै बकसीस जाचकन्हि दीन्हा॥
करि पूजा मान्यता बड़ाई। जनवासे कहुँ चले लवाई॥ ४
बसन बिचित्र पावड़े परहीँ। देखि धनदु धनमदु परिहरहीँ॥
अति सुंदर दीन्हेउ जनवासा। जहँ सब कहुँ सब भाँति सुपासा॥
जानीँ सिय बरात पुर आई। कछु निज महिमा प्रगटि जनाई॥
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बोलाई। भूपपहुनई करन पठाई॥ ८

दोहा। सिधि सब सिय आयसु अकनि गईँ जहाँ जनवास।
लिये संपदा सकल सुख सुरपुर भोग बिलास॥३०६॥

निज निज बास बिलोकि बराती । सुरसुख सकल सुलभ सब भाँती ॥
बिभवभेद कछु कोउ न जाना । सकल जनक कर करहिं बखाना ॥
सियमहिमा रघुनायक जानी । हरषे हृदय हेतु पहिचानी ॥
पितु आगमनु सुनत दोउ भाई । हृदय न अति आनंदु अमाई ॥
सकुचन्ह कहि न सकत गुर पाहीं । पितुदरसन लालचु मन माहीं ॥
बिस्वामित्र बिनय बड़ि देखी । उपजा उर संतोषु बिसेषी ॥
हरषि बंधु दोउ हृदय लगाए । पुलक अंग अंबक जल छाए ॥
चले जहाँ दसरथु जनवासेँ । मनहु सरोवर तकेउ पिआसेँ ॥

दोहा । भूप बिलोके जबहि मुनि आवत सुतन्ह समेत ।
उठेउ हरषि सुखसिंधु महु चले थाह सी लेत ॥३०७॥

मुनिहि दंडवत कीन्ह महीसा । बार बार पदरज धरि सीसा ॥
कौसिक राउ लिये उर लाई । कहि असीस पूछी कुसलाई ॥
पुनि दंडवत करत दोउ भाई । देखि नृपति उर सुखु न समाई ॥
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे । मृतकसरीर प्रान जनु भेटे ॥
पुनि बसिष्ठपद सिर तिन्ह नाए । प्रेममुदित मुनिबर उर लाए ॥
बिप्रबृंद बंदे दुहुँ भाई । मनभावती असीसैँ पाई ॥
भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा । लिए उठाइ लाइ उर रामा ॥
हरषे लखन देखि दोउ भ्राता । मिले प्रेमपरिपूरित गाता ॥

दोहा । पुरजन परिजन जातिजन जाचक मंत्री मीत ।
मिले जथाबिधि सबहि प्रभु परम कृपाल बिनीत ॥३०८॥

रामहि देखि बरात जुड़ानी । प्रीति कि रीति न जाति बखानी ॥
नृप समीप सोहहिँ सुत चारी । जनु धनु धरमादिक तनुधारी ॥
सुतन्ह समेत दसरथहि देखी । मुदित नगर नर नारि बिसेषी ॥
सुमन बरिसि सुर हनहिँ निसाना । नाकनटी नाचहिँ करि गाना ॥
सतानंदु अरु बिप्र सचिव गन । मागध सूत बिदुष बंदीजन ॥
सहित बरात राउ सनमाना । आयसु मागि फिरे अगवाना ॥
प्रथम बरात लगन तेँ आई । तातेँ पुर प्रमोदु अधिकाई ॥
ब्रह्मानंदु लोगु सब लहहीँ । बढ़हुँ दिवस निसि बिधि सन कहहीँ ॥

दोहा। रामु सीय सोभा अवधि सुकृत अवधि दोउ राज।
जहँ तहँ पुरजन कहहिँ अस मिलि नर नारि समाज ॥३०९॥
जनक सुकृत मूरति बैदेही। दसरथसुकृत रामु धरेँ देही॥
इन्ह सम काहु न सिव अवराधे। काहु न इन्ह समान फल लाधे॥
इन्ह सम कोउ न भयेउ जग माहीँ। है नहि कतहू होनेउ नाहीँ॥
हम सब सकल सुकृत कै रासी। भये जग जनमि जनकपुरबासी॥ ४
जिन्ह जानकी राम छबि देखी। को सुकृती हम सरिस बिसेषी॥
पुनि देखब रघुबीरबिआहू। लेब भली बिधि लोचनलाहू॥
कहहिँ परसपर कोकिलबयनी। येहि बिआह बड़ लाभु सुनयनी॥
बड़े भाग बिधि बात बनाई। नयन अतिथि होइहहिँ दोउ भाई॥ ८
दोहा। बारहि बार सनेहबस जनक बोलाउब सीय।
लेन आइहहिँ बंधु दोउ कोटि काम कमनीय ॥३१०॥
बिबिध भाँति होइहि पहुनाई। प्रिय न काहि अस सासुर माई॥
तब तब राम लखनहि निहारी। होइहहिँ सब पुरलोग सुखारी॥
सखि जस राम लखन कर जोटा। तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा॥
स्याम गौर सब अंग सुहाए। ते सब कहहिँ देखि जे आए॥ ४
कहा एक मैँ आजु निहारे। जनु बिरंचि निज हाथ सँवारे॥
भरतु रामहीँ की अनुहारी। सहसा लखि न सकहिँ नर नारी॥
लखनु सत्रुसूदनु एकरूपा। नख सिख ते सब अंग अनूपा॥
मन भावहिँ मुख बरनि न जाहीँ। उपमा कहुँ त्रिभुवन कोउ नाहीँ॥ ८
छंद। उपमा न कोउ कह दास तुलसी कतहु कबि कोबिद कहैँ।
बल बिनय बिद्या सील सोभा सिंधु इन्ह से एइ अहैँ।
पुरनारि सकल पसारि अंचल बिधिहि बचन सुनावहीँ।
ब्याहिअहुँ चारिउ भाइ येहि पुर हम सुमंगल गावहीँ॥ १२
सोरठा। कहहिँ परसपर नारि बारि बिलोचन पुलक तन।
सखि सबु करब पुरारि पुन्यपयोनिधि भूप दोउ ॥३११॥
येहि बिधि सकल मनोरथ करहीँ। आनँद उमगि उमगि उर भरहीँ॥
जे नृप सीयस्वयंबर आए। देखि बंधु सब तिन्ह सुख पाए॥

कहत रामजसु बिसद बिसाला। निज निज भवन गये महिपाला॥
गये बीति कछु दिन येहि भाती। प्रमुदित पुरजन सकल बराती॥ ४
मंगलमूल लगनदिनु आवा। हिमरितु अगहनु मासु सुहावा॥
ग्रह तिथि नखतु जोगु बर बारू। लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारू॥
पठै दीन्हि नारद सन सोई। गनी जनक के गनकन्ह जोई॥
सुनी सकल लोगन्ह येह बाता। कहहिँ जोतिषी आहि बिधाता॥ ८
दोहा। धेनुधूरि बेला बिमल सकल सुमंगल मूल।
बिप्रन्ह कहेउ बिदेह सन जानि सगुन अनुकूल॥२१२॥
उपरोहितहि कहेउ नरनाहा। अब बिलंब कर कारनु काहा॥
सतानंद तब सचिव बोलाए। मंगल सकल साजि सब ल्याए॥
संख निसान पनव बहु बाजे। मंगल कलस सगुन सुभ साजे॥
सुभग सुआसिनि गावहिँ गीता। करहिँ बेदधुनि बिप्र पुनीता॥ ४
लेन चले सादर येहि भाती। गये जहाँ जनवास बराती॥
कोसलपति कर देखि समाजू। अति लघु लाग तिन्हहि सुरराजू॥
भयेउ समउ अब धारिअ पाऊ। येह सुनि परा निसानहि घाऊ॥
गुरहि पूछि करि कुलबिधि राजा। चले संग मुनि साधु समाजा॥ ८
दोहा। भाग्य बिभव अवधेस कर देखि देव ब्रह्मादि।
लगे सराहन सहस मुख जानि जनम निज बादि॥२१३॥
सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना। बरषहिँ सुमन बजाइ निसाना॥
सिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा। चढ़े बिमानन्हि नाना जूथा॥
प्रेमपुलक तन हृदय उछाहू। चले बिलोकन रामबिआहू॥
देखि जनकपुरु सुर अनुरागे। निज निज लोक सबहि लघु लागे॥ ४
चितवहिँ चकित बिचित्र बिताना। रचना सकल अलौकिक नाना॥
नगर नारि नर रूपनिधाना। सुघर सुधरम सुसील सुजाना॥
तिन्हहि देखि सब सुर सुरनारी। भये नखत जनु बिधु उजिआरी॥
बिधिहि भयेउ आचरजु बिसेषी। निज करनी कछु कतहु न देखी॥ ८
दोहा। सिव समुझाए देव सब जनि आचरज भुलाहु।
हृदय बिचारहु धीर धरि सिय रघुबीर बिआहु॥२१४॥

जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं । सकल अमंगल मूल नसाहीं ॥
करतल होहिं पदारथ चारी । तेइ सिय रामु कहेउ कामारी ॥
येही संभु सुरन्ह समुझावा । पुनि आगे बर बसहु चलावा ॥
देवन्ह देखे दसरथु जाता । महामोद मन पुलकित गाता ॥ ४
साधुसमाज संग महिदेवा । जनु तनु धरे करहिं सुख सेवा ॥
सोहत साथ सुभग सुत चारी । जनु अपबरग सकल तनुधारी ॥
मरकत कनक बरन बर जोरी । देखि सुरन्ह भै प्रीति न थोरी ॥
पुनि रामहि बिलोकि हिय हरषे । नृपहि सराहि सुमन तिन्ह बरषे ॥ ८

दोहा । रामरूपु नख सिख सुभग बारहि बार निहारि ।
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि ॥३१५॥

केकिकंठ दुति स्यामल अंगा । तड़ित बिनिंदक बसन सुरंगा ॥
ब्याहबिभूषन बिबिध बनाए । मंगल सब सब भाँति सुहाए ॥
सरद बिमल बिधु बदनु सुहावन । नयन नवल राजीव लजावन ॥
सकल अलौकिक सुंदरताई । कहि न जाइ मनहीं मन भाई ॥ ४
बंधु मनोहर सोहहिं संगा । जात नचावत चपल तुरंगा ॥
राजकुअँर बर बाजि देखावहिं । बंसप्रसंसक बिरिद सुनावहिं ॥
जेहि तुरंग पर रामु बिराजे । गति बिलोकि खगनायकु लाजे ॥
कहि न जाइ सब भाँति सुहावा । बाजिबेषु जनु काम बनावा ॥ ८

छंद । जनु बाजिबेषु बनाइ मनसिजु राम हित अति सोहई ।
आपने बय बल रूप गुन गति सकल भुवन बिमोहई ।
जगमगत जीनु जराव जोति सो मोति मनि मानिक लगे ।
किंकिनि ललाम लगामु ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे ॥ १२

दोहा । प्रभुमनसहि लयलीन मनु चलत चालि छबि पाव ।
भूषित उड़गन तड़ित घनु जनु बर बरहि नचाव ॥३१६॥

जेहि बर बाजि रामु असवारा । तेहि सारदउ न बरनै पारा ॥
संकरु रामरूप अनुरागे । नयन पंचदस अति प्रिय लागे ॥
हरि हित सहित रामु जब जोहे । रमा समेत रमापति मोहे ॥
निरखि रामछबि बिधि हरषाने । आठै नयन जानि पछिताने ॥ ४

सुरसेनप उर बहुत उछाहू। बिधि ते डेवढ़ लोचनलाहू॥
रामहि चितव सुरेस सुजाना। गौतमश्रापु परम हित माना॥
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं। आजु पुरंदर सम कोउ नाहीं॥
मुदित देवगन रामहि देखी। नृपसमाज दुहुँ हरषु बिसेषी॥ ८

छंद। अति हरषु राजसमाजु दुहुँ दिसि दुंदुभी बाजहिं घनी।
बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी।
येहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं।
रानी सुआसिनि बोलि परिछनि हेतु मंगल साजहीं॥ १२

दोहा। सजि आरती अनेक बिधि मंगल सकल सँवारि।
चलीं मुदित परिछनि करन गजगामिनि बर नारि॥३१७॥

बिधुबदनी सब सब मृगलोचनि। सब निज तनछबि रतिमदु मोचनि॥
पहिरे बरन बरन बर चीरा। सकल बिभूषन सजे सरीरा॥
सकल सुमंगल अंग बनाए। करहिं गान कलकंठि लजाए॥
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं। चालि बिलोकि कामगज लाजहिं॥ ४
बाजहिं बाजन बिबिध प्रकारा। नभ अरु नगर सुमंगलचारा॥
सची सारदा रमा भवानी। जे सुरतिय सुचि सहज सयानी॥
कपटनारि बर बेष बनाई। मिली सकल रनिवासहि जाई॥
करहिं गान कल मंगल बानी। हरष बिबस सब काहु न जानी॥ ८

छंद। को जान केहि आनंदबस सब ब्रह्मु बर परिछन चली।
कल गान मधुर निसान बरषहिं सुमन सुर सोभा भली।
आनंदकंदु बिलोकि दूलहु सकल हिय हरषित भई।
अंभोज अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई॥ १२

दोहा। जो सुखु भा सियमातु मन देखि राम बर बेषु।
सो न सकहिं कहि कलप सत सहस सारदा सेषु॥३१८॥

नयननीरु हटि मंगल जानी। परिछनि करहिं मुदित मन रानी॥
बेदबिहित अरु कुल आचारू। कीन्ह भली बिधि सब ब्यवहारू॥
पंच सबद धुनि मंगल गाना। पट पावड़े परहिं बिधि नाना॥
करि आरती अरघु तिन्ह दीन्हा। राम गमनु मंडप तब कीन्हा॥ ४

दसरथु सहित समाज बिराजे। बिभव बिलोकि लोकपति लाजे॥
समय समय सुर बरषहिँ फूला। सांति पढ़हिँ महिसुर अनुकूला॥
नभ अरु नगर कोलाहल होई। आपनि पर कछु सुनै न कोई॥
येहि बिधि रामु मंडपहि आए। अरघु देइ आसन बैठाए॥ ८

छंद। बैठारि आसन आरती करि निरखि बरु सुखु पावहीँ।
मनि बसन भूषन भूरि वारहिँ नारि मंगल गावहीँ।
ब्रह्मादि सुरबर बिप्रबेष बनाइ कौतुक देखहीँ।
अवलोकि रघुकुल कमल रबि छबि सुफल जीवन लेखहीँ॥ १२

दोहा। नाऊ बारी भाट नट रामनिछावरि पाइ।
मुदित असीसहिँ नाइ सिर हरषु न हृदय समाइ॥३१९॥

मिले जनकु दसरथु अति प्रीती। करि बैदिक लौकिक सब रीती॥
मिलत महा दोउ राज बिराजे। उपमा खोजि खोजि कबि लाजे॥
लही न कतहु हारि हिय मानी। इन्ह सम एइ उपमा उर आनी॥
सामध देखि देव अनुरागे। सुमन बरषि जसु गावन लागे॥ ४
जगु बिरंचि उपजावा जब तेँ। देखे सुने ब्याह बहु तब तेँ॥
सकल भाँति सम साजु समाजू। सम समधी देखे हम आजू॥
देवगिरा सुनि सुंदर साँची। प्रीति अलौकिक दुहुँ दिसि माची॥
देत पावड़े अरघु सुहाए। सादर जनकु मंडपहि ल्याए॥ ८

छंद। मंडपु बिलोकि बिचित्र रचना रुचिरता मुनिमन हरे।
निज पानि जनक सुजान सब कहुँ आनि सिंघासन धरे।
कुल इष्ट सरिस बसिष्ठ पूजे बिनय करि आसिष लही।
कौसिकहि पूजत परम प्रीति कि रीति तौ न परै कही॥ १२

दोहा। बामदेव आदिक रिषय पूजे मुदित महीस।
दिए दिब्य आसन सबहि सब सन लही असीस॥३२०॥

बहुरि कीन्हि कोसलपतिपूजा। जानि ईस सम भाउ न दूजा॥
कीन्हि जोरि कर बिनय बड़ाई। कहि निज भाग्यबिभव बहुताई॥
पूजे भूपति सकल बराती। समधी सम सादर सब भाँती॥
आसन उचित दिये सब काहू। कहउँ काह मुख एक उछाहू॥ ४

सकल बरात जनक सनमानी। दान मान बिनती बर बानी॥
बिधि हरि हरु दिसिपति दिनराऊ। जे जानहिँ रघुबीरप्रभाऊ॥
कपटबिप्र बर बेष बनाए। कौतुक देखहि अति सचु पाए॥
पूजे जनक देव सम जाने। दिए सुआसन बिनु पहिचाने॥ ८

छंद। पहिचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई।
आनंदकंदु बिलोकि दूलहु उभय दिसि आनँदमई।
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दए।
अवलोकि सीलु सुभाउ प्रभु को बिबुध मन प्रमुदित भए। १२

दोहा। रामचंद्रमुख चंद्र छबि लोचन चारु चकोर।
करत पान सादर सकल प्रेमु प्रमोदु न थोर॥३२१॥

समउ बिलोकि बसिष्ठ बोलाए। सादर सतानंदु सुनि आए॥
बेगि कुअँरि अब आनहु जाई। चले मुदित मुनि आयसु पाई॥
रानी सुनि उपरोहितबानी। प्रमुदित सखिन्ह समेत सयानी॥
बिप्रबधूँ कुलबृद्ध बोलाई। करि कुलरीति सुमंगल गाई॥ ४
नारिबेष जे सुरबर बामा। सकल सुभाय सुंदरी स्यामा॥
तिन्हहि देखि सुखु पावहिँ नारी। बिनु पहिचानि प्रानहु तें प्यारी॥
बार बार सनमानहिँ रानी। उमा रमा सारद सम जानी॥
सीय सँवारि समाजु बनाई। मुदित मंडपहि चलीँ लवाई॥ ८

छंद। चलि ल्याइ सीतहि सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी।
नवसत्त साजे सुंदरी सब मत्त कुंजर गामिनी।
कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिँ कामकोकिल लाजहीँ।
मंजीर नूपुर कलित कंकन तालगति बर बाजहीँ॥ १२

दोहा। सोहति बनितावृंद महु सहज सुहावनि सीय।
छबिललना गन मध्य जनु सुषमा तिय कमनीय॥३२२॥

सियसुंदरता बरनि न जाई। लघु मति बहुत मनोहरताई॥
आवत दीखि बरातिन्ह सीता। रूपरासि सब भाँति पुनीता॥
सबहि मनहिँ मन किए प्रनामा। देखि राम भये पूरनकामा॥
हरषे दसरथ सुतन्ह समेता। कहि न जाइ उर आनँदु जेता॥ ४

सुर प्रनामु करि बरिसहिँ फूला। मुनि असीसधुनि मंगलमूला॥
गान निसान कोलाहलु भारी। प्रेम प्रमोद मगन नर नारी॥
येहि बिधि सीय मंडपहि आई। प्रमुदित सांति पढ़हिँ मुनिराई॥
तेहि अवसर कर बिधि ब्यवहारू। दुहुँ कुलगुर सब कीन्ह अचारू॥ ८

छंद। आचारु करि गुर गौरि गनपति मुदित बिप्र पुजावहीँ।
सुर प्रगटि पूजा लेहिँ देहिँ असीस अति सुखु पावहीँ।
मधुपर्क मंगल द्रब्य जो जेहि समय मुनि मन महु चहैँ।
भरे कनक कोपर कलस सो तब लियेहि परिचारक रहैँ। १२
कुलरीति प्रीति समेत रबि कहि देत सबु सादर किये।
येहि भाँति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंघासनु दिये।
सिय राम अवलोकनि परसपर प्रेमु काहु न लखि परै।
मन बुद्धि बर बानी अगोचर प्रगट कबि कैसे करै॥ १६

दोहा। होमसमय तनु धरि अनलु अति सुख आहुति लेहिँ।
बिप्रबेष धरि बेद सब कहि बिवाहबिधि देहिँ॥३२३॥

जनकपाटमहिषी जग जानी। सीयमातु किमि जाइ बखानी॥
सुजसु सुकृत सुख सुंदरताई। सब समेटि बिधि रची बनाई॥
समउ जानि मुनिबरन्ह बोलाई। सुनत सुआसिनि सादर ल्याई॥
जनक बाम दिसि सोह सुनयना। हिमगिरि संग बनी जनु मयना॥ ४
कनककलस मनिकोपर रूरे। सुचि सुगंध मंगल जल पूरे॥
निज कर मुदित राय अरु रानी। धरे राम के आगे आनी॥
पढ़हिँ बेद मुनि मंगल बानी। गगन सुमन झरि अवसरु जानी॥
बरु बिलोकि दंपति अनुरागे। पाय पुनीत पखारन लागे॥ ८

छंद। लागे पखारन पाय पंकज प्रेम तन पुलकावली।
नभ नगर गान निसान जयधुनि उमगि जनु चहुँ दिसि चली।
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव बिराजहीँ।
जे सकृत सुमिरत बिमलता मन सकल कलिमल भाजहीँ। १२
जे परसि मुनिबनिता लही गति रही जो पातकमई।
मकरंदु जिन्ह को संभुसिर सुचिता अवधि सुर बरनई।

करि मधुप मन मुनि जोगि जन जे सेइ अभिमत गति लहैं।
ते पद पखारत भाग्यभाजनु जनकु जय जय सब कहैं।
बर कुअँरि करतल जोरि साखोचारु दोउ कुलगुर करैं।
भयो पानिगहनु बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं।
सुखमूल दूलहु देखि दंपति पुलक तन हुलस्यो हियो।
करि लोक बेद बिधानु कन्यादानु नृपभूषन कियो।
हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि हरिहि श्री सागर दई।
तिमि जनक रामहि सिय समरपी बिस्व कल कीरति नई।
क्यों करै बिनय बिदेहु कियो बिदेहु मूरति साँवरी।
करि होमु बिधिवत गाँठि जोरी होन लागीं भाँवरी।

दोहा। जयधुनि बंदी बेद धुनि मंगल गान निसान।
सुनि हरषहिं बरषहिं बिबुध सुरतरु सुमन सुजान ॥३२४॥

कुअँरु कुअँरि कल भाँवरि देहीं। नयनलाभु सब सादर लेहीं॥
[जाइ न बरनि मनोहर जोरी। जो उपमा कछु कहौं सो थोरी॥
राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं। जगमगाति मनिखंभन माहीं॥]
मनहु मदन रति धरि बहु रूपा। देखत रामबिआहु अनूपा॥
दरसलालसा सकुच न थोरी। प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी॥
भये मगन सब देखनिहारे। जनक समान अपान बिसारे॥
प्रमुदित मुनिन्ह भाँवरी फेरी। नेग सहित सब रीति निबेरी॥
रामु सीयसिर सेंदुर देहीं। सोभा कहि न जाति बिधि केहीं॥
अरुन पराग जलजु भरि नीके। ससिहि भूष अहि लोभ अमी के॥
बहुरि बसिष्ठ दीन्हि अनुसासन। बरु दुलहिनि बैठे एक आसन॥

छंद। बैठे बरासन रामु जानकि मुदित मन दसरथु भये।
तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपनें सुकृत सुरतरु फल नये।
भरि भुवन रहा उछाहु रामबिबाहु भा सबही कहा।
केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक एहु मंगलु महा।
तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याहसाजु सँवारि कै।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुअँरि लई हँकारि कै।

कुसकेतुकन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभा मई।
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दई।
जानकी लघु भगिनी सकल सुंदरि सिरोमनि जानि कै।
सो तनय दीन्ही ब्याहि लखनहि सकल बिधि सनमानि कै।
जेहि नामु श्रुतकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी।
सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी।
अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुचि हिय हरषहीँ।
सब मुदित सुंदरता सराहहिँ सुमन सुरगन बरषहीँ।
सुंदरी सुंदर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीँ।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिभुन्ह सहित बिराजहीँ॥

दोहा। मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि।
जनु पाये महिपालमनि क्रियन्ह सहित फल चारि॥३२५॥

जसि रघुबीर ब्याह बिधि बरनी। सकल कुअँर ब्याहे तेहि करनी॥
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी। रहा कनक मनि मंडपु पूरी॥
कंबल बसन बिचित्र पटोरे। भाँति भाँति बहु मोल न थोरे॥
गज रथ तुरग दास अरु दासी। धेनु अलंकृत कामदुहा सी॥
बस्तु अनेक करिअ किमि लेखा। कहि न जाइ जानहिँ जिन्ह देखा॥
लोकपाल अवलोकि सिहाने। लीन्ह अवधपति सबु सुखु माने॥
दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा। उबरा सो जनवासेहि आवा॥
तब कर जोरि जनकु मृदु बानी। बोले सब बरात सनमानी॥

छंद। सनमानि सकल बरात आदर दान बिनय बड़ाइ कै।
प्रमुदित महा मुनि बृंद बंदे पूजि प्रेम लड़ाइ कै।
सिरु नाइ देव मनाइ सब सन कहत रससंपुट किए।
सुर साधु चाहत भाउसिंधु कि तोष जल अंजलि दिए।
कर जोरि जनकु बहोरि बंधु समेत कोसलराय सोँ।
बोले मनोहर बयन सानि सनेह सील सुभाय सोँ।
संबंध राजन रावरे हम बड़े अब सब बिधि भये।
येहि राजसाज समेत सेवक जानिबे बिनु गथ लये।

ए दारिका परिचारिका करि पालिबीँ करुना नई।
अपराधु छमिबो बोलि पठए बहुत हौँ ढीठ्यौं कई।
पुनि भानुकुलभूषन सकल सनमान निधि समधी किए।
कहि जाति नहि बिनती परस्पर प्रेम परिपूरन हिए।
बृंदारकागन सुमन बरिसहिँ राउ जनवासेहि चले।
दुंदुभी जयधुनि बेदधुनि नभ नगर कौतूहल भले।
तब सखी मंगल गान करत मुनीस आयेसु पाइ कै।
दूलह दुलहिनिन्ह सहित सुंदरि चली कोहबर ल्याइ कै॥

दोहा। पुनि पुनि रामहि चितव सिय सकुचति मनु सकुचै न।
हरत मनोहर मीनछबि प्रेमपिआसे नैन॥३२६॥

स्याम सरीरु सुभाय सुहावन। सोभा कोटि मनोज लजावन॥
जावकजुत पद कमल सुहाए। मुनिमन मधुप रहत जिन्ह छाए॥
पीत पुनीत मनोहर धोती। हरति बालरबि दामिनि जोती॥
कल किंकिनि कटिसूत्र मनोहर। बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर॥
पीत जनेउ महाछबि देई। करमुद्रिका चोरि चितु लेई॥
सोहत ब्याहसाज सब साजे। उर आयत उरभूषन राजे॥
पिअर उपरना काखासोती। दुहुँ आचरन्हि लगे मनि मोती॥
नयन कमल कल कुंडल काना। बदनु सकल सौंदर्ज निधाना॥
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा। भाल तिलकु रुचिरतानिवासा॥
सोहत मौरु मनोहर माथेँ। मंगलमय मुकुतामनि गाथेँ॥

छंद। गाथेँ महामनि मौरु मंजुल अंग सब चित चोरहीँ।
पुरनारि सुरसुंदरी बरहि बिलोकि सब तिन तोरहीँ।
मनि बसन भूषन वारि आरति करहिँ मंगल गावहीँ।
सुर सुमन बरिसहिँ सूत मागध बंदि सुजसु सुनावहीँ।
कोहबरहि आनी कुअँर कुअँरि सुआसिनिन्ह सुख पाइ कै।
अति प्रीति लौकिक रीति लागीँ करन मंगल गाइ कै।
लहकौरि गौरि सिखाव रामहि सीय सन सारद कहैँ।
रनिवासु हास बिलास रस बस जन्म को फलु सब लहैँ।

निज पानिमनि महु देखियति मूरति सुरूपनिधान की।
चालति न भुजबल्ली बिलोकनि बिरह भय बस जानकी।
कौतुक बिनोद प्रमोदु प्रेमु न जाइ कहि जानहिँ अलीँ।
बर कुअँरि सुंदर सकल सखी लवाइ जनवासेहि चलीँ।
तेहि समय सुनिअ असीस जहँ तहँ नगर नभ आनँदु महा।
चिरु जिअहु जोरी चारु चारयो मुदित मन सबही कहा।
जोगींद्र सिद्ध मुनीस देव बिलोकि प्रभु दुंदुभि हनीँ।
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी॥

दोहा। सहित बधूटिन्ह कुअँर सब तब आए पितु पास।
सोभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास॥३२७॥

पुनि जेवनार भई बहु भाँती। पठए जनक बोलाइ बराती॥
परत पावड़े बसन अनूपा। सुतन्ह समेत गवन कियो भूपा॥
सादर सब के पाय पखारे। जथाजोगु पीढ़न्ह बैठारे॥
धोये जनक अवधपतिचरना। सीलु सनेहु जाइ नहि बरना॥
बहुरि रामपद पंकज धोए। जे हरहृदय कमल महु गोए॥
तीनिउ भाइ राम सम जानी। धोये चरन जनक निज पानी॥
आसन उचित सबहि नृप दीन्हे। बोलि सूपकारी सब लीन्हे॥
सादर लगे परन पनवारे। कनककील मनिपान सँवारे॥

दोहा। सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वादु पुनीत।
छन महु सब के परुसि गे चतुर सुआर बिनीत॥३२८॥

पंच कवलि करि जेवन लागे। गारि गान सुनि अति अनुरागे॥
भाँति अनेक परे पकवाने। सुधा सरिस नहि जाहिँ बखाने॥
परुसन लगे सुआर सुजाना। बिंजन बिबिध नाम को जाना॥
चारि भाँति भोजन बिधि गाई। एक एक बिधि बरनि न जाई॥
छ रस रुचिर बिंजन बहु जाती। एक एक रस अगनित भाँती॥
जेवत देहिँ मधुर धुनि गारी। लै लै नाम पुरुष अरु नारी॥
समय सुहावनि गारि बिराजा। हसत राउ सुनि सहित समाजा॥
येहि बिधि सबही भोजनु कीन्हा। आदर सहित आचमनु दीन्हा॥

दोहा। देइ पान पूजे जनक दसरथु सहित समाज।
जनवासेहि गवने मुदित सकल भूप सिरताज ॥३२९॥
नित नूतन मंगल पुर माहीँ। निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीँ॥
बड़े भोर भूपतिमनि जागे। जाचक गुनगन गावन लागे॥
देखि कुअँर वर वधुन्ह समेता। किमि कहि जात मोदु मन जेता॥
प्रातक्रिया करि गे गुर पाहीँ। महा प्रमोदु प्रेमु मन माहीँ॥ ४
करि प्रनामु पूजा कर जोरी। बोले गिरा अमिअ जनु बोरी॥
तुम्हरी कृपा सुनहु मुनिराजा। भयेउँ आजु मैँ पूरनकाजा॥
अब सब बिप्र बोलाइ गोसाईं। देहु धेनु सब भाँति बनाई॥
सुनि गुर करि महिपालबड़ाई। पुनि पठए मुनिबृंद बोलाई॥ ८
दोहा। बामदेउ अरु देवरिषि बालमीकि जाबालि।
आए मुनिबर निकर तब कौसिकादि तपसालि ॥३३०॥
दंड प्रनाम सबहि नृप कीन्हे। पूजि सप्रेम बरासन दीन्हे॥
चारि लच्छ बर धेनु मगाईं। कामसुरभि सम सील सुहाईं॥
सब बिधि सकल अलंकृत कीन्हीं। मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्हीं॥
करत बिनय बहु बिधि नरनाहू। लहेउ आजु जगजीवन लाहू॥ ४
पाइ असीस महीसु अनंदा। लिये बोलि पुनि जाचकबृंदा॥
कनक बसन मनि हय गय स्यंदन। दिये बूझि रुचि रबिकुलनंदन॥
चले पढ़त गावत गुनगाथा। जय जय जय दिनकर कुल नाथा॥
येहि बिधि रामबिआह उछाहू। सकै न बरनि सहस मुख जाहू॥ ८
दोहा। बार बार कौसिकचरन सीसु नाइ कह राउ।
येह सबु सुखु मुनिराज तव कृपा कटाच्छ पसाउ ॥३३१॥
जनक सनेहु सीलु करतूती। नृपु सब भाँति सराह बिभूती॥
दिन उठि बिदा अवधपति मागा। राखहिँ जनकु सहित अनुरागा॥
नित नूतन आदरु अधिकाई। दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई॥
नित नव नगर अनंद उछाहू। दसरथगवनु सोहाइ न काहू॥ ४
बहुत दिवस बीते एहि भाँती। जनु सनेहरजु बँधे बराती॥
कौसिक सतानंद तब जाई। कहा बिदेह नृपहि समुझाई॥

अब दसरथ कहँ आयेसु देहू । जद्यपि छाड़ि न सकहु सनेहू ॥
भलेहि नाथ कहि सचिव बोलाए । कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए ॥ ८
दोहा । अवधनाथु चाहत चलन भीतर करहु जनाउ ।
भए प्रेमबस सचिव सुनि बिप्र सभासद राउ ॥३३२॥
पुरबासी सुनि चलिहि बराता । बूझत बिकल परस्पर बाता ॥
सत्य गवनु सुनि सब बिलखाने । मनहु साँझ सरसिज सकुचाने ॥
जहँ जहँ आवत बसे बराती । तहँ तहँ सिद्ध चला बहु भाँती ॥
बिबिध भाँति मेवा पकवाना । भोजनसाजु न जाइ बखाना ॥ ४
भरि भरि बसह अपार कहारा । पठई जनक अनेक सुसारा ॥
तुरग लाख रथ सहस पचीसा । सकल सँवारे नख अरु सीसा ॥
मत्त सहस दस सिंधुर साजे । जिन्हहि देखि दिसिकुंजर लाजे ॥
कनक बसन मनि भरि भरि जाना । महिषीँ धेनु बस्तु बिधि नाना ॥ ८
दोहा । दाइज अमित न सकिअ कहि दीन्ह बिदेह बहोरि ।
जो अवलोकत लोकपति लोक संपदा थोरि ॥३३३॥
सबु समाजु येहिँ भाँति बनाई । जनक अवधपुर दीन्ह पठाई ॥
चलिहि बरात सुनत सब रानी । बिकल मीनगन जनु लघु पानी ॥
पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीँ । देइ असीस सिखावनु देहीँ ॥
होयेहु संतत पिअहि पिआरी । चिरु अहिवात असीस हमारी ॥ ४
सासु ससुर गुर सेवा करेहू । पतिरुख लखि आयेसु अनुसरेहू ॥
अति सनेह बस सखी सयानी । नारिधरमु सिखवहिँ मृदु बानी ॥
सादर सकल कुअँरि समुझाई । रानिन्ह बार बार उर लाई ॥
बहुरि बहुरि भेटहिँ महतारी । कहहिँ बिरंचि रचा कत नारी ॥ ८
दोहा । तेहि अवसर भाइन्ह सहित रामु भानुकुलकेतु ।
चले जनकमंदिर मुदित बिदा करावन हेतु ॥३३४॥
चारिउ भाइ सुभाय सुहाए । नगर नारि नर देखन धाए ॥
कोउ कह चलन चहत हहिँ आजू । कीन्ह बिदेह बिदा कर साजू ॥
लेहु नयन भरि रूप निहारी । प्रिय पाहुने भूपसुत चारी ॥
को जानै केहि सुकृत सयानी । नयन अतिथि कीन्हे बिधि आनी ॥ ४

मरनसीलु जिमि पाव पिऊषा। सुरतरु लहै जनम कर भूखा॥
पाव नारकी हरिपदु जैसे। इन्ह कर दरसनु हम कहँ तैसे॥
निरखि रामसोभा उर धरहू। निज मन फनि मूरति मनि करहू॥
येहि बिधि सबहि नयनफलु देता। गये कुअँर सब राजनिकेता॥ ८
दोहा। रूपसिंधु सब बंधु लखि हरषि उठेउ रनिवासु।
करहिँ निछावरि आरती महा मुदित मन सासु॥३३५॥
देखि रामछबि अति अनुरागी। प्रेम बिबस पुनि पुनि पद लागी॥
रही न लाज प्रीति उर छाई। सहज सनेहु बरनि किमि जाई॥
भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाए। छ रस असन अति हेतु जेवाए॥
बोले रामु सुअवसरु जानी। सील सनेह सकुच मय बानी॥ ४
राउ अवधपुर चहत सिधाए। बिदा होन हम इहाँ पठाए॥
मातु मुदित मन आयेसु देहू। बालक जानि करब नित नेहू॥
सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू। बोलि न सकहिँ प्रेमबस सासू॥
हृदय लगाइ कुअँरि सब लीन्ही। पतिन्ह सौंपि बिनती अति कीन्ही॥ ८
छंद। करि बिनय सिय रामहि समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै।
बलि जाउँ तात सुजान तुम्ह कहुँ बिदित गति सब की अहै।
परिवारु पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानिबी।
तुलसीस सीलु सनेहु लखि निज किंकरी करि मानिबी॥ १२
सोरठा। तुम्ह परिपूरन काम जानसिरोमनि भावप्रिय।
जन गुन गाहक राम दोषदलन करुनायतन॥३३६॥
अस कहि रही चरन गहि रानी। प्रेम पंक जनु गिरा समानी॥
सुनि सनेह सानी बर बानी। बहु बिधि राम सासु सनमानी॥
राम बिदा मागत कर जोरी। कीन्ह प्रनामु बहोरि बहोरी॥
पाइ असीस बहुरि सिरु नाई। भाइन्ह सहित चले रघुराई॥ ४
मंजु मधुर मूरति उर आनी। भईं सनेह सिथिल सब रानी॥
पुनि धीरजु धरि कुअँरि हँकारी। बार बार भेटहिँ महतारी॥
पहुचावहिँ फिरि मिलहिँ बहोरी। बढ़ी परसपर प्रीति न थोरी॥
पुनि पुनि मिलत सखिन्ह बिलगाई। बाल बच्छ जिमि धेनु लवाई॥ ८

दोहा। प्रेम बिबस नर नारि सब सखिन्ह सहित रनिवासु।
मानहु कीन्ह बिदेहपुर करुना बिरह निवासु ॥३३७॥

सुक सारिका जानकी ज्याए। कनकपिंजरन्हि राखि पढ़ाए॥
ब्याकुल कहहिं कहाँ बैदेही। सुनि धीरजु परिहरै न केही॥
भये बिकल खग मृग एहि भाँती। मनुजदसा कैसें कहि जाती॥
बंधु समेत जनकु तब आए। प्रेम उमगि लोचन जल छाए॥ ४
सीय बिलोकि धीरता भागी। रहे कहावत परम बिरागी॥
लीन्हि राय उर लाइ जानकी। मिटी महा मरजाद ज्ञान की॥
समुझावत सब सचिव सयाने। कीन्ह बिचारु अनवसरु जाने॥
बारहिं बार सुता उर लाई। सजि सुंदर पालकीं मगाई॥ ८

दोहा। प्रेम बिबस परिवारु सबु जानि सुलगन नरेस।
कुअँरि चढ़ाई पालकिन्ह सुमिरे सिद्धि गनेस ॥३३८॥

बहु बिधि भूप सुता समुझाई। नारिधरमु कुलरीति सिखाई॥
दासी दास दिए बहुतेरे। सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे॥
सीय चलत ब्याकुल पुरबासी। होहिं सगुन सुभ मंगलरासी॥
भूसुर सचिव समेत समाजा। संग चले पहुचावन राजा॥ ४
समय बिलोकि बाजने बाजे। रथ गज बाजि बरातिन्ह साजे॥
दसरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे। दान मान परिपूरन कीन्हे॥
चरन सरोज धूरि धरि सीसा। मुदित महीपति पाइ असीसा॥
सुमिरि गजाननु कीन्ह पयाना। मंगलमूल सगुन भये नाना॥ ८

दोहा। सुर प्रसून बरषहिं हरषि करहिं अपछरा गान।
चले अवधपति अवधपुर मुदित बजाइ निसान ॥३३९॥

नृप करि बिनय महाजन फेरे। सादर सकल मागने टेरे॥
भूषन बसन बाजि गज दीन्हे। प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे॥
बार बार बिरिदावलि भाषी। फिरे सकल रामहि उर राखी॥
बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं। जनकु प्रेमबस फिरै न चहहीं॥ ४
पुनि कह भूपति बचन सुहाए। फिरिअ महीस दूरि बड़ि आए॥
राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े। प्रेमप्रबाह बिलोचन बाढ़े॥

तब बिदेहु बोले कर जोरी। बचन सनेह सुधा जनु बोरी॥
करौं कवन बिधि बिनय बनाई। महाराज मोहि दीन्हि बड़ाई॥ ८
दोहा। कोसलपति समधी सजन सनमाने सब भाँति।
मिलनि परसपर बिनय अति प्रीति न हृदय समाति॥३४०॥
मुनिमंडलिहि जनक सिरु नावा। आसिरबादु सबहि सन पावा॥
सादर पुनि भेटे जामाता। रूप सील गुन निधि सब भ्राता॥
जोरि पंकरुह पानि सुहाए। बोले बचन प्रेम जनु जाए॥
राम करौं केहि भाँति प्रसंसा। मुनि महेस मन मानस हंसा॥ ४
करहिँ जोग जोगी जेहि लागी। कोहु मोहु ममता मद त्यागी॥
ब्यापकु ब्रह्म अलखु अबिनासी। चिदानंदु निरगुन गुनरासी॥
मन समेत जेहि जान न बानी। तरकि न सकहिँ सकल अनुमानी॥
महिमा निगमु नेति कहि कहई। जो तिहुँ काल एकरस रहई॥ ८
दोहा। नयनबिषय मो कहुँ भयेउ सो समस्त सुख मूल।
सबइ लाभु जग जीव कहँ भए ईसु अनुकूल॥३४१॥
सबहि भाँति मोहि दीन्हि बड़ाई। निज जन जानि लीन्ह अपनाई॥
होहिँ सहस दस सारद सेषा। करहिँ कलप कोटिक भरि लेखा॥
मोर भाग्य राउर गुन गाथा। कहि न सिराहिँ सुनहु रघुनाथा॥
मैं कछु कहौं एक बल मोरे। तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरे॥ ४
बार बार मागौं कर जोरें। मनु परिहरै चरन जनि भोरें॥
सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे। पूरनकामु रामु परितोषे॥
करि बर बिनय ससुर सनमाने। पितु कौसिक बसिष्ठ सम जाने॥
बिनती बहुरि भरत सन कीन्ही। मिलि सप्रेम पुनि आसिष दीन्ही॥ ८
दोहा। मिले लखन रिपुसूदनहि दीन्हि असीस महीस।
भये परसपर प्रेमबस फिरि फिरि नावहिँ सीस॥३४२॥
बार बार करि बिनय बड़ाई। रघुपति चले संग सब भाई॥
जनक गहे कौसिकपद जाई। चरनरेनु सिर नयनन्ह लाई॥
सुनु मुनीसबर दरसन तोरे। अगमु न कछु प्रतीति मन मोरे॥
जो सुखु सुजसु लोकपति चहहीं। करत मनोरथ सकुचत अहहीं॥ ४

सो सुखु सुजसु सुलभ मोहि स्वामी । सब सिधि तव दरसन अनुगामी ॥
कीन्हि बिनय पुनि पुनि सिरु नाई । फिरे महीसु आसिषा पाई ॥
चली बरात निसान बजाई । मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥
रामहि निरखि ग्राम नर नारी । पाइ नयनफलु होहिँ सुखारी ॥ ८

दोहा । बीच बीच बर बास करि मगलोगन्ह सुख देत ।
अवध समीप पुनीत दिन पहुची आइ जनेत ॥३४३॥

हने निसान पनव बर बाजे । भेरि संख धुनि हय गय गाजे ॥
झाझि बिरव डिंडिमी सुहाई । सरस राग बाजहिँ सहनाई ॥
पुरजन आवत अकनि बराता । मुदित सकल पुलकावलि गाता ॥
निज निज सुंदर सदन सँवारे । हाट बाट चौहट पुर द्वारे ॥ ४
गली सकल अरगजा सिचाई । जहँ तहँ चौकैँ चारु पुराई ॥
बना बजारु न जाइ बखाना । तोरन केतु पताक बिताना ॥
सफल पूगफल कदलि रसाला । रोपे बकुल कदंब तमाला ॥
लगे सुभग तरु परसत धरनी । मनिमय आलबाल कल करनी ॥ ८

दोहा । बिबिध भाँति मंगल कलस गृह गृह रचे सँवारि ।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिँ सब रघुबरपुरी निहारि ॥३४४॥

भूपभवनु तेहि अवसर सोहा । रचना देखि मदनमनु मोहा ॥
मंगल सगुन मनोहरताई । रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई ॥
जनु उछाह सब सहज सुहाए । तनु धरि धरि दसरथगृह आए ॥
देखन हेतु राम बैदेही । कहहु लालसा होहि न केही ॥ ४
जूथ जूथ मिलि चलीँ सुआसिनि । निज छबि निदरहिँ मदनबिलासिनि ॥
सकल सुमंगल सजे आरती । गावहिँ जनु बहु बेष भारती ॥
भूपतिभवन कोलाहलु होई । जाइ न बरनि समउ सुखु सोई ॥
कौसल्यादि राममहतारी । प्रेम बिबस तनदसा बिसारी ॥ ८

दोहा । दिए दान बिप्रन्ह बिपुल पूजि गनेस पुरारि ।
प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि ॥३४५॥

मोद प्रमोद बिबस सब माता । चलहिँ न चरन सिथिल भये गाता ॥
रामदरस हित अति अनुरागीँ । परिछनि साजु सजन सब लागीँ ॥

बिबिध बिधान बाजने बाजे। मंगल मुदित सुमित्रा साजे॥
हरद दूब दधि पल्लव फूला। पान पूगफल मंगलमूला॥
अच्छत अंकुर लोचन लाजा। मंजुर मंजरि तुलसि बिराजा॥
छुहे पुरटघट सहज सुहाए। मदनसकुन जनु नीड़ बनाए॥
सगुन सुगंध न जाहिँ बखानी। मंगल सकल सजहिँ सब रानी॥
रची आरती बहुत बिधाना। मुदित करहिँ कल मंगल गाना॥

दोहा। कनकथार भरि मंगलन्हि कमल करन्हि लिये मात।
चलीँ मुदित परिछनि करन पुलक पल्लवित गात॥३४६॥

धूपधूम नभु मेचकु भयेऊ। सावन घनघमंडु जनु ठयेऊ॥
सुरतरु सुमन माल सुर बरषहिँ। मनहु बलाक अवलि मनु करषहिँ॥
मंजुल मनिमय बंदनिवारे। मनहु पाकरिपुचाप सँवारे॥
प्रगटहिँ दुरहिँ अटन्ह पर भामिनि। चारु चपल जनु दमकहिँ दामिनि॥
दुंदुभिधुनि घनगरजनि घोरा। जाचक चातक दादुर मोरा॥
सुर सुगंध सुचि बरषहिँ बारी। सुखी सकल ससि पुरनर नारी॥
समउ जानि गुर आयेसु दीन्हा। पुरप्रबेसु रघुकुलमनि कीन्हा॥
सुमिरि संभु गिरिजा गनराजा। मुदित महीपति सहित समाजा॥

दोहा। होहिँ सगुन बरषहिँ सुमन सुर दुंदुभी बजाइ।
बिबुधबधू नाचहिँ मुदित मंजुल मंगल गाइ॥३४७॥

मागध सूत बंदि नट नागर। गावहिँ जसु तिहुँ लोक उजागर॥
जयधुनि बिमल बेद बर बानी। दस दिसि सुनिय सुमंगल सानी॥
बिपुल बाजने बाजन लागे। नभ सुर नगर लोग अनुरागे॥
बने बराती बरनि न जाहीँ। महा मुदित मन सुख न समाहीँ॥
पुरबासिन्ह तब राय जोहारे। देखत रामहि भये सुखारे॥
करहिँ निछावरि मनिगन चीरा। बारि बिलोचन पुलक सरीरा॥
आरति करहिँ मुदित पुरनारी। हरषहिँ निरखि कुअँरबर चारी॥
सिबिका सुभग ओहार उघारी। देखि दुलहिनिन्ह होहिँ सुखारी॥

दोहा। येहि बिधि सबही देत सुखु आए राजदुआर।
मुदित मातु परिछनि करहिँ बधुन्ह समेत कुमार॥३४८॥

करहिँ आरती बारहि बारा। प्रेमु प्रमोदु कहै को पारा॥
भूषन मनि पट नाना जाती। करहिँ निछावरि अगनित भाती॥
बधुन्ह समेत देखि सुत चारी। परमानंद मगन महतारी॥
पुनि पुनि सीय राम छबि देखी। मुदित सफल जग जीवन लेखी॥
सखी सीयमुखु पुनि पुनि चाही। गान करहिँ निज सुकृत सराही॥
बरषहिँ सुमन छनहि छन देवा। नाचहिँ गावहिँ लावहिँ सेवा॥
देखि मनोहर चारिउ जोरीँ। सारद उपमा सकल ढँढोरीँ॥
देत न बनहिँ निपट लघु लागीँ। एकटक रहीँ रूप अनुरागीँ॥
दोहा। निगमनीति कुलरीति करि अरघ पावड़े देत।
बधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीँ लवाइ निकेत॥३४८॥
चारि सिँघासन सहज सुहाए। जनु मनोज निज हाथ बनाए॥
तिन्ह पर कुअँरि कुअँर बैठारे। सादर पाय पुनीत पखारे॥
धूप दीप नैबेद बेदबिधि। पूजे बर दुलहिनि मंगलनिधि॥
बारहि बार आरती करहीँ। ब्यजन चारु चामर सिर ढरहीँ॥
बस्तु अनेक निछावरि होहीँ। भरी प्रमोद मातु सब सोहीँ॥
पावा परम तत्व जनु जोगी। अमृतु लहेउ जनु संतत रोगी॥
जनमरंकु जनु पारस पावा। अंधहि लोचनलाभु सुहावा॥
मूकबदन जनु सारद छाई। मानहु समर सूर जय पाई॥
दोहा। एहि सुख ते सत कोटि गुन पावहि मातु अनंदु।
भाइन्ह सहित बिआहि घर आए रघुकुलचंदु॥
लोकरीति जननी करहिँ बर दुलहिनि सकुचाहिँ।
मोदु बिनोदु बिलोकि बड़ रामु मनहि मुसुकाहिँ॥३५०॥
देव पितर पूजे बिधि नीकीँ। पूजीँ सकल बासना जी कीँ॥
सबहि बंदि मागहिँ बरदाना। भाइन्ह सहित रामकल्याना॥
अंतरहित सुर आसिष देहीँ। मुदित मातु अंचल भरि लेहीँ॥
भूपति बोलि बराती लीन्हे। जान बसन मनि भूषन दीन्हे॥
आयसु पाइ राखि उर रामहि। मुदित गये सब निज निज धामहि॥
पुर नर नारि सकल पहिराए। घर घर बाजन लगे बधाए॥

जाचकजन जाचहिँ जोइ जोई । प्रमुदित राउ देहिँ सोइ सोई ॥
सेवक सकल बजनिआ नाना । पूरन किये दान सनमाना ॥ ८
दोहा । देहिँ असीस जोहारि सब गावहिँ गुन गन गाथ ।
तब गुर भूसुर सहित गृह गवनु कीन्ह नरनाथ ॥३५१॥
जो बसिष्ठ अनुसासन दीन्ही । लोक बेद बिधि सादर कीन्ही ॥
भूसुरभीर देखि सब रानीं । सादर उठीं भाग्य बड़ जानी ॥
पाय पखारि सकल अन्हवाए । पूजि भली बिधि भूप जेंवाए ॥
आदर दान प्रेम परिपोषे । देत असीस चले मन तोषे ॥ ४
बहु बिधि कीन्हि गाधिसुतपूजा । नाथ मोहि सम धन्य न दूजा ॥
कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी । रानिन्ह सहित लीन्हि पगधूरी ॥
भीतर भवन दीन्ह बर बासू । मनु जोगवत रह नृपु रनिवासू ॥
पूजे गुरपद कमल बहोरी । कीन्हि बिनय उर प्रीति न थोरी ॥ ८
दोहा । बधुन्ह समेत कुमार सब रानिन्ह सहित महीसु ।
पुनि पुनि बंदत गुरचरन देत असीस मुनीसु ॥३५२॥
बिनय कीन्हि उर अति अनुरागे । सुत संपदा राखि सब आगे ॥
नेगु मागि मुनिनायक लीन्हा । आसिरबादु बहुत बिधि दीन्हा ॥
उर धरि रामहि सीय समेता । हरषि कीन्ह गुर गवनु निकेता ॥
बिप्रबधू सब भूप बोलाईं । चैल चारु भूषन पहिराईं ॥ ४
बहुरि बोलाइ सुआसिनि लीन्हीं । रुचि बिचारि पहिरावनि दीन्हीं ॥
नेगी नेगजोग सब लेहीं । रुचि अनुरूप भूपमनि देहीं ॥
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । भूपति भली भाँति सनमाने ॥
देव देखि रघुबीरबिबाहू । बरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू ॥ ८
दोहा । चले निसान बजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ ।
कहत परसपर रामजसु प्रेम न हृदय समाइ ॥३५३॥
सब बिधि सबहि समदि नरनाहू । रहा हृदय भरि पूरि उछाहू ॥
जहँ रनिवासु तहाँ पगु धारे । सहित बहूटिन्ह कुअँर निहारे ॥
लिये गोद करि मोद समेता । को कहि सकै भएउ सुखु जेता ॥
बधू सप्रेम गोद बैठारीं । बार बार हिय हरषि दुलारीं ॥ ४

देखि समाजु मुदित रनिवासू । सब के उर अनंदु कियो बासू ॥
कहेउ भूप जिमि भयेउ बिवाहू । सुनि सुनि हरषु होत सब काहू ॥
जनकराज गुन सीलु बड़ाई । प्रीति रीति. संपदा सुहाई ॥
बहु बिधि भूप भाट जिमि बरनी । रानी सब प्रमुदित सुनि करनी ॥
दोहा । सुतन्ह समेत नहाइ नृप बोलि बिप्र गुर ज्ञाति ।
भोजनु कीन्ह अनेक बिधि घरी पंच गइ राति ॥३५४॥
मंगल गान करहिँ बर. भामिनि । भै सुखमूल मनोहर जामिनि ॥
अचै पान सब काहू पाए । स्रग सुगंध भूषित छवि छाए ॥
रामहि देखि रजायेसु पाई । निज निज भवन चले सिर नाई ॥
प्रेमु प्रमोदु बिनोदु बड़ाई । समउ समाजु मनोहरताई ॥
कहि न सकहिँ सत सारद सेसू । बेद बिरंचि महेस गनेसू ॥
सो मैं कहौँ कवन बिधि बरनी । भूमिनागु सिर धरै कि धरनी ॥
नृप सब भाँति सबहि सनमानी । कहि मृदु बचन बोलाईँ रानी ॥
बधू लरिकनी परघर आईँ । राखेहु नयन पलक की नाईँ ॥
दोहा । लरिका श्रमित उनीदबस सयन करावहु जाइ ।
अस कहि गे बिश्रामगृह रामचरन चितु लाइ ॥३५५॥
भूपबचन सुनि सहज सुहाए । जरित कनक मनि पलँग डसाए ॥
सुभग सुरभि पय फेन समाना । कोमल कलित सुपेती नाना ॥
उपबरहन बर बरनि न जाहीँ । स्रग सुगंध मनिमंदिर माहीँ ॥
रतनदीप सुठि चारु चँदोवा । कहत न बनै जान जेहि जोवा ॥
सेज रुचिर रचि रामु उठाए । प्रेम समेत पलँग पौढ़ाए ॥
अज्ञा पुनि पुनि भाइन्ह दीन्ही । निज निज सेज सयन तिन्ह कीन्ही ॥
देखि स्याम मृदु मंजुल गाता । कहहिँ सप्रेम बचन सब माता ॥
मारग जात भयावनि भारी । केहि बिधि तात ताड़का मारी ॥
दोहा । घोर निसाचर बिकट भट समर गनहिँ नहि काहु ।
मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु ॥३५६॥
मुनिप्रसाद बलि तात तुम्हारी । ईस अनेक करवरैँ टारी ॥
मखरखवारी करि दुहुँ भाई । गुरप्रसाद सब बिद्या पाई ॥

मुनितिय तरी लगत पगधूरी । कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥
कमठपीठि पबि कूट कठोरा । नृपसमाज महु सिवधनु तोरा ॥
बिस्व बिजय जसु जानकि पाई । आए भवन ब्याहि सब भाई ॥
सकल अमानुष करम तुम्हारे । केवल कौसिक कृपा सुधारे ॥
आजु सुफल जग जनमु हमारा । देखि तात बिधुबदन तुम्हारा ॥
जे दिन गए तुम्हहि बिनु देखे । ते बिरंचि जनि पारहि लेखे ॥

दोहा । राम प्रतोषीं मातु सब कहि बिनीत बर बयन ।
सुमिरि संभु गुर बिप्र पद किये नीदबस नयन ॥३५७॥

निदउँहँ बदन सोह सुठि लोना । मनहु साँझ सरसीरुह सोना ॥
घर घर करहिं जागरन नारी । देहिं परसपर मंगल गारी ॥
पुरी बिराजति राजति रजनी । रानी कहहिं बिलोकहु सजनी ॥
सुंदर बधू सासु लै सोई । फनिकन्ह जनु सिरमनि उर गोई ॥
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे । अरुनचूड़ बर बोलन लागे ॥
बंदि मागधन्हि गुनगन गाए । पुरजन द्वार जोहारन आए ॥
बंदि बिप्र सुर गुर पितु माता । पाइ असीस मुदित सब भ्राता ॥
जननिन्ह सादर बदन निहारे । भूपति संग द्वार पगु धारे ॥

दोहा । कीन्हि सौच सब सहज सुचि सरित पुनीत नहाइ ।
प्रातक्रिया करि तात पहि आए चारिउ भाइ ॥३५८॥

भूप बिलोकि लिये उर लाई । बैठे हरषि रजायेसु पाई ॥
देखि रामु सब सभा जुड़ानी । लोचन लाभ अवधि अनुमानी ॥
पुनि बसिष्ठ मुनि कौसिक आए । सुभग आसनन्हि मुनि बैठाए ॥
सुतन्ह समेत पूजि पद लागे । निरखि रामु दोउ गुर अनुरागे ॥
कहहिं बसिष्ठु धरम इतिहासा । सुनहिं महीसु सहित रनिवासा ॥
मुनि मन अगम गाधिसुतकरनी । मुदित बसिष्ठ बिपुल बिधि बरनी ॥
बोले बामदेउ सबु साची । कीरति कलित लोक तिहुँ माची ॥
सुनि आनंदु भयेउ सब काहू । राम लखन उर अतिहि उछाहू ॥

दोहा । मंगल मोद उछाह नित जाहिं दिवस येहि भाति ।
उमगी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति ॥३५९॥

सुदिन सोधि कल कंकन छोरे। मंगल मोद बिनोद न थोरे ॥
नित नव सुखु सुर देखि सिहाहीं। अवध जन्म जाचहिं बिधि पाहीं ॥
बिस्वामित्रु चलन नित चहहीं। राम सप्रेम बिनय बस रहहीं ॥
दिन दिन सयगुन भूपति भाऊ। देखि सराह महामुनिराऊ ॥ ४
मागत बिदा राउ अनुरागे। सुतन्ह समेत ठाढ़ भे आगे ॥
नाथ सकल संपदा तुम्हारी। मैं सेवकु समेत सुत नारी ॥
करब सदा लरिकन्ह पर छोहू। दरसनु देत रहब मुनि मोहू ॥
अस कहि राउ सहित सुत रानी। परेउ चरन मुख आव न बानी ॥ ८
दीन्हि असीस बिप्र बहु भाती। चले न प्रीति रीति कहि जाती ॥
रामु सप्रेम संग सब भाई। आयेसु पाइ फिरे पहुचाई ॥

दोहा। रामरूपु भूपतिभगति ब्याहु उछाहु अनंदु।
जात सराहत मनहि मन मुदित गाधिकुलचंदु ॥३६०॥ १२

बामदेव रघुकुल गुर ज्ञानी। बहुरि गाधिसुत कथा बखानी ॥
सुनि मुनि सुजसु मनहि मन राऊ। बरनत आपन पुन्यप्रभाऊ ॥
बहुरे लोग रजाएसु भएऊ। सुतन्ह समेत नृपति गृह गएऊ ॥
जहँ तहँ रामब्याहु सबु गावा। सुजसु पुनीत लोक तिहुँ छावा ॥ ४
आए ब्याहि रामु घर जब ते। बसै अनंद अवध सब तब ते ॥
प्रभुबिवाह जस भयेऊ उछाहू। सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहू ॥
कबि कुल जीवनु पावन जानी। राम सीय जसु मंगलखानी ॥
तेहि ते मैं कछु कहा बखानी। करन पुनीत हेतु निज बानी ॥ ८

छंद। निज गिरा पावनि करन कारन रामजसु तुलसीं कह्यो।
रघुबीरचरित अपार बारिधि पारु कबि कौने लह्यो।
उपबीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं।
बैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्बदा सुखु पावहीं॥ १२

सोरठा। सिय रघुबीर बिवाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन रामजसु ॥३६१॥

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने प्रथमः सोपानः समाप्तः ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

वामांके च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्।
सोयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु मां ॥ १ ॥
प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदुःखतः।
मुखांबुजश्री रघुनंदनस्य मे सदास्तु सा मंजुलमंगलप्रदा ॥ २ ॥
नीलांबुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभागं।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथं ॥ ३ ॥

दोहा। श्रीगुरुचरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥ ४ ॥

जब तेँ रामु ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए ॥
भुवन चारि दस भूधर भारी। सुकृत मेघ बरषहिँ सुख बारी ॥
रिधि सिधि संपति नदी सुहाईँ। उमगि अवध अंबुधि कहुँ आईँ ॥
मनिगन पुर नर नारि सुजाती। सुचि अमोल सुंदर सब भाँती ॥ ४
कहि न जाइ कछु नगरबिभूती। जनु एतनिय बिरंचिकरतूती ॥
सब बिधि सब पुरलोग सुखारी। रामचंद मुख चंदु निहारी ॥
मुदित मातु सब सखी सहेलीँ। फलित बिलोकि मनोरथ बेलीँ ॥
राम रूपु गुन सीलु सुभाऊ। प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ ॥ ८

दोहा। सब कँ उर अभिलाषु अस कहहिँ मनाइ महेसु।
आपु अछत जुवराजपदु रामहि देउ नरेसु ॥ १ ॥

एक समयँ सब सहित समाजा। राजसभाँ रघुराजु बिराजा ॥
सकल सुकृत मूरति नरनाहू। राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू ॥
नृप सब रहहिँ कृपा अभिलाषेँ। लोकप करहिँ प्रीति रुख राखेँ ॥
तिभुवन तीनि काल जग माहीँ। भूरिभाग दसरथ सम नाहीँ ॥ ४

मंगलमूल रामु सुत जासू । जो कछु कहिअ थोर सब तासू ॥
रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा । बदनु बिलोकि मुकुटु सम कीन्हा ॥
स्रवन समीप भये सित केसा । मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ॥
नृप जुबराजु राम कहुँ देहू । जीवन जनम लाहु किन लेहू ॥ ८

दोहा । यह बिचारु उर आनि नृप सुदिनु सुअवसरु पाइ ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहि सुनायेउ जाइ ॥ २ ॥

कहइ भुआलु सुनियँ मुनिनायक । भये रामु सब बिधि सब लायक ॥
सेवक सचिव सकल पुरबासी । जे हमारे अरि मित्र उदासी ॥
सबहि रामु प्रिय जेहि बिधि मोही । प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही ॥
बिप्र सहित परिवार गोसाईं । करहिँ छोहु सब रउरेहि नाईं ॥ ४
जे गुरचरन रेनु सिर धरहीं । ते जनु सकल बिभव बस करहीं ॥
मोहि सम यहु अनुभयेउ न दूजें । सबु पायेउँ रज पावनि पूजें ॥
अब अभिलाषु एकु मन मोरें । पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरें ॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू । कहेउ नरेस रजायसु देहू ॥ ८

दोहा । राजन राउर नामु जसु सब अभिमत दातार ।
फल अनुगामी महिपमनि मन अभिलाषु तुम्हार ॥ ३ ॥

सब बिधि गुरु प्रसन्न जियँ जानी । बोलेउ राउ रहँसि मृदु बानी ॥
नाथ रामु करिअहिँ जुबराजू । कहिअ कृपा करि करिअ समाजू ॥
मोहि अछत यहु होइ उछाहू । लहहिँ लोग सब लोचनलाहू ॥
प्रभुप्रसाद सिव सबइ निबाहीं । येह लालसा एक मन माहीं ॥ ४
पुनि न सोचु तनु रहउ कि जाऊ । जेहिँ न होइ पाछें पछिताऊ ॥
सुनि मुनि दसरथबचन सुहाए । मंगल मोद मूल मन भाए ॥
सुनु नृप जासु बिमुख पछिताहीं । जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं ॥
भयेउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी । रामु पुनीत प्रेम अनुगामी ॥ ८

दोहा । बेगि बिलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाजु ।
सुदिनु सुमंगलु तबहिँ जब रामु होहिँ जुबराजु ॥ ४ ॥

मुदित महीपति मंदिर आए । सेवक सचिव सुमंत्रु बोलाए ॥
कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए । भूप सुमंगल बचन सुनाए ॥

प्रमुदित मोहि कहेउ गुर आजू । रामहि राय देहु जुवराजू ॥
जौं पाँचहि मत लागइ नीका । करहु हरषि हिय रामहि टीका ॥ ४
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी । अभिमत बिरव परेउ जनु पानी ॥
बिनती सचिव करहिं कर जोरी । जिअहु जगतपति बरिस करोरी ॥
जगमंगल भल काजु बिचारा । बेगिअ नाथ न लाइअ बारा ॥
नृपहि मोदु सुनि सचिव सुभाषा । बढ़त बौंड़ जनु लहीं सुसाखा ॥ ८
दोहा । कहेउ भूप मुनिराज कर जोइ जोइ आयसु होइ ।
राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ ॥ ५ ॥
हरषि मुनीस कहेउ मृदु बानी । आनहु सकल सुतीरथ पानी ॥
औषध मूल फूल फल पाना । कहे नाम गनि मंगल नाना ॥
चामर चरम बसन बहु भाँती । रोम पाट पट अगनित जाती ॥
मनिगन मंगल बस्तु अनेका । जो जग जोगु भूप अभिषेका ॥ ४
बेदबिहित कहि सकल बिधाना । कहेउ रचहु पुर बिबिध बिताना ॥
सफल रसाल पूगफल केरा । रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेरा ॥
रचहु मंजु मनि चौकइँ चारू । कहहु बनावन बेगि बजारू ॥
पूजहु गनपति गुर कुलदेवा । सब बिधि करहु भूमिसुरसेवा ॥ ८
दोहा । ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग ।
सिर धरि मुनिबरबचन सबु निज निज काजहि लाग ॥ ६ ॥
जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा । सो तेहि काजु प्रथम जनु कीन्हा ॥
बिप्र साधु सुर पूजत राजा । करत राम हित मंगल काजा ॥
सुनत राम अभिषेक सुहावा । बाज गहागह अवध बधावा ॥
राम सीय तन सगुन जनाए । फरकहिं मंगल अंग सुहाए ॥ ४
पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं । भरत आगमनु सूचक अहहीं ॥
भए बहुत दिन अति अवसेरी । सगुनप्रतीति भेंट प्रिय केरी ॥
भरत सरिस प्रिय को जग माहीं । इहइ सगुनफलु दूसर नाहीं ॥
रामहि बंधु सोचु दिनु राती । अंडन्हि कमठहृदउ जेहि भाँती ॥ ८
दोहा । एहि अवसर मंगलु परम सुनि रहसेउ रनिवासु ।
सोभत लखि बिधु बढ़त जनु बारिधि बीचि बिलासु ॥ ७ ॥

प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाए। भूषन बसन भूरि तिन्ह पाए॥
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीँ। मंगल कलस सजन सब लागीँ॥
चौकइँ चारु सुमित्राँ पूरीँ। मनिमय बिबिध भाँति अति रूरीँ॥
आनँद मगन राममहतारी। दिये दान बहु बिप्र हँकारी॥
पूजीँ ग्रामदेवि सुर नागा। कहेउ बहोरि देन बलिभागा॥
जेहि बिधि होइ रामकल्यानू। देहु दया करि सो बरदानू॥
गावहिँ मंगल कोकिलबयनी। बिधुबदनी मृगसावकनयनी॥

दोहा। राम राज अभिषेकु सुनि हिय हरषे नर नारि।
लगे सुमंगल सजन सब बिधि अनुकूल बिचारि॥ ८॥

तब नरनाहँ बसिष्ठु बोलाए। रामधाम सिख देन पठाए॥
गुर आगमनु सुनत रघुनाथा। द्वार आइ पद नायेउ माथा॥
सादर अरघ देइ घर आने। सोरह भाँति पूजि सनमाने॥
गहे चरन सिय सहित बहोरी। बोले रामु कमल कर जोरी॥
सेवकसदन स्वामि आगमनू। मंगलमूल अमंगलदमनू॥
तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती। पठइअ काज नाथ असि नीती॥
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू। भयेउ पुनीत आजु येहु गेहू॥
आयसु होइ सो करौँ गोसाईँ। सेवकु लहइ स्वामिसेवकाईँ॥

। दोहा ।

सुनि सनेह साने बचन मुनि रघुबरहि प्रसंस।
राम कस न तुम्ह कहहु अस हंस बंस अवतंस॥ ९॥

बरनि राम गुन सीलु सुभाऊ। बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ॥
भूप सजेउ अभिषेकसमाजू। चाहत देन तुम्हहिँ जुवराजू॥
राम करहु सब संजम आजू। जौँ बिधि कुसल निबाहइ काजू॥
गुरु सिख देइ राय पहिँ गयेऊ। रामहृदयँ अस बिसमउ भयेऊ॥
जनमे एक संग सब भाई। भोजन सयन केलि लरिकाई॥
करनबेध उपबीत बिआहा। संग संग सब भये उछाहा॥
बिमल बंस येहु अनुचित एकू। बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू॥
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई। हरउ भगतमन कै कुटिलाई॥

दोहा। तेहि अवसर आए लखनु मगन प्रेम आनंद।
सनमाने प्रिय बचन कहि रघुकुल कैरव चंद ॥१०॥
बाजहिँ बाजने बिबिध बिधाना। पुर प्रमोदु नहि जाइ बखाना ॥
भरत आगमनु सकल मनावहिँ। आवहुँ बेगि नयनफलु पावहिँ ॥
हाट बाट घर गली अथाई। कहहिँ परसपर लोग लोगाई ॥
कालि लगन भलि केतिक बारा। पूजिहि बिधि अभिलाषु हमारा ॥ ४
कनकसिँघासन सीय समेता। बैठहिँ रामु होइ चित चेता ॥
सकल कहहिँ कब होइहि काली। बिघन बनावहिँ देव कुचाली ॥
तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा। चोरहि चंदिनि राति न भावा ॥
सारद बोलि बिनय सुर करहीँ। बारहि बार पाय लइ परहीँ ॥ ८
दोहा। बिपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिअ सोइ आजु।
रामु जाहिँ बन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु ॥११॥
सुनि सुरबिनय ठाढ़ि पछिताती। भइउँ सरोज बिपिन हिमराती ॥
देखि देव पुनि कहहिँ निहोरी। मातु तोहि नहि थोरिउ खोरी ॥
बिसमय हरष रहित रघुराऊ। तुम्ह जानहु सब रामप्रभाऊ ॥
जीव करमबस सुख दुख भागी। जाइअ अवध देवहित लागी ॥ ४
बार बार गहि चरन सँकोची। चली बिचारि बिबुधमति पोची ॥
ऊँच निवासु नीचि करतूती। देखि न सकहिँ पराइ बिभूती ॥
आगिल काजु बिचारि बहोरी। करिहहिँ चाह कुसल कबि मोरी ॥
हरषि हृदय दसरथपुर आई। जनु ग्रहदसा दुसह दुखदाई ॥ ८
दोहा। नामु मंथरा मंदमति चेरी कैकै केरि।
अजसपेटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि ॥१२॥
दीख मंथरा नगरु बनावा। मंजुल मंगल बाज बधावा ॥
पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू। रामतिलकु सुनि भा उर दाहू ॥
करै बिचारु कुबुद्धि कुजाती। होइ अकाजु कवन बिधि राती ॥
देखि लागि मधु कुटिल किराती। जिमि गवँ तकइ लेउँ केहि भाँती ॥ ४
भरतमातु पहिँ गइ बिलखानी। का अनमनि हसि कह हँसि रानी ॥
ऊतरु देइ न लेइ उसासू। नारिचरित करि ढारइ आँसू ॥

हँसि कह रानि गालु बड़ तोरें। दीन्हि लखन सिख अस मन मोरें॥
तबहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि। छाड़इ स्वास कारि जनु सापिनि॥

दोहा। सभय रानि कह कहसि किन कुसल रामु महिपालु।
लखनु भरतु रिपुदवनु सुनि भा कुबरी उर सालु॥१३॥

कत सिख देइ हमहिँ कोउ माई। गालु करब केहि कर बलु पाई॥
रामहि छाड़ि कुसल केहि आजू। जिन्हहि जनेसु देइ जुबराजू॥
भयेउ कौसिलहि बिधि अति दाहिन। देखत गरब रहत उर नाहिन॥
देखहु कस न जाइ सब सोभा। जो अवलोकि मोर मनु छोभा॥
पूतु बिदेस न सोचु तुम्हारेँ। जानति हहु बस नाहु हमारेँ॥
नीँद बहुत प्रिय सेज़ तुराई। लखहु न भूप कपटचतुराई॥
सुनि प्रिय बचन मलिन मनु जानी। झुकी रानि अब रहु अरगानी॥
पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी। तब धरि जीभ कढ़ावौँ तोरी॥

दोहा। काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि।
तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसुकानि॥१४॥

प्रियबादिनि सिख दीन्हिउँ तोही। सपनेहुँ तो पर कोपु न मोही॥
सुदिनु सुमंगलदायकु सोई। तोर कहा फुर जेहि दिन होई॥
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई। यह दिनकर कुल रीति सुहाई॥
रामतिलकु जौँ साँचेहुँ काली। देउँ मागु मन भावत आली॥
कौसल्या सम सब महतारी। रामहि सहज सुभाय पिआरी॥
मो पर करहिँ सनेहु बिसेषी। मैँ करि प्रीतिपरीछा देखी॥
जौँ बिधि जनमु देइ करि छोहू। होहुँ रामु सिय पूत पुतोहू॥
प्रान तेँ अधिक रामु प्रिय मोरेँ। तिन्ह केँ तिलक छोभु कस तोरेँ॥

दोहा। भरतसपथ तोहि सत्य कहु परिहरि कपट दुराउ॥
हरष समय बिसमउ करसि कारन मोहि सुनाउ॥१५॥

एकहि बार आस सब पूजी। अब कछु कहब जीभ करि दूजी॥
फोरइ जोगु कपारु अभागा। भलेउ कहत दुख रौरेहि लागा॥
कहहिँ झूठि फुरि बात बनाई। ते प्रिय तुम्हहिँ करुइ मैँ माई॥
हमहुँ कहबि अब ठकुरसोहाती। नाहि त मौन रहब दिनु राती॥

करि कुरूप बिधि परबस कीन्हा । बवा सो लुनिअ लहिअ जो दीन्हा ॥
कोउ नृप होउ हमहि का हानी । चेरि छाड़ि अब होब कि रानी ॥
जारइ जोगु सुभाउ हमारा । अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥
तातें कछुक बात अनुसारी । छमिअ देवि बड़ि चूक हमारी ॥

दोहा । गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबुधि रानि ।
सुरमाया बस बैरिनिहि सुहृद जानि पतिआनि ॥१६॥

सादर पुनि पुनि पूँछति ओही । सबरीगान मृगी जनु मोही ॥
तसि मति फिरी अहइ जसि भावी । रहसी चेरि घात जनु फाबी ॥
तुम्ह पूँछहु मैं कहत डेराऊँ । धरेहु मोर घरफोरी नाऊँ ॥
सजि प्रतीति बहु बिधि गढ़ि छोली । अवध साढ़साती तब बोली ॥
प्रिय सिय रामु कहा तुम्ह रानी । रामहि तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी ॥
रहा प्रथम अब ते दिन बीते । समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते ॥
भानु कमलकुल पोषनिहारा । बिनु जर जारि करै सोइ छारा ॥
जर तुम्हारि चह सवति उखारी । रूँधहु करि उपाउ बर बारी ॥

दोहा । तुम्हहि न सोचु सोहागबल निज बस जानहु राउ ।
मन मलीन मुह मीठ नृपु राउर सरल सुभाउ ॥१७॥

चतुर गँभीर राममहतारी । बीचु पाइ निज बात सँवारी ॥
पठये भरतु भूप ननिऔरें । राममातु मत जानब रौरें ॥
सेवहिं सकल सवति मोहि नीकें । गरबित भरतमातु बल पी कें ॥
सालु तुम्हार कौसिलहि माई । कपटचतुर नहि होइ जनाई ॥
राजहि तुम्ह पर प्रेमु बिसेषी । सवति सुभाउ सकइ नहि देखी ॥
रचि प्रपंचु भूपहि अपनाई । रामतिलक हित लगन धराई ॥
यहु कुल उचित राम कहुँ टीका । सबहि सोहाइ मोहि सुठि नीका ॥
आगिल बात समुझि डरु मोही । देउ दैउ फिरि सो फलु ओही ॥

दोहा । रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपटप्रबोधु ।
कहिसि कथा सत सवति कै जेहि बिधि बाढ़ बिरोधु ॥१८॥

भावीबस प्रतीति उर आई । पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई ॥
का पूँछहु तुम्ह अबहुँ न जाना । निज हित अनहित पसु पहिचाना ॥

भयेउ पाख दिनु सजत समाजू। तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू ॥
खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारें। सत्य कहें नहि दोषु हमारें ॥ ४
जौं असत्य कछु कहब बनाई। तौ बिधि देइहि हमहि सजाई ॥
रामहि तिलकु कालि जौं भयेऊ। तुम्ह कहुँ बिपतिबीजु बिधि बयेऊ ॥
रेख खँचाइ कहउँ बलु भाषी। भामिनि भइहु दूध कइ माखी ॥
जौं सुत सहित करहु सेवकाई। तौ घर रहहु न आन उपाई ॥ ८
दोहा। कद्रूँ बिनतहि दीन्ह दुखु तुम्हहि कौसिलाँ देब।
भरतु बंदिगृहु सेइहहिँ लखनु राम के नेब ॥१९॥
कैकयसुता सुनत कटु बानी। कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी ॥
तन पसेउ कदली जिमि काँपी। कुबरीं दसन जीभ तब चाँपी ॥
कहि कहि कोटिक कपट कहानी। धीरजु धरहु प्रबोधिसि रानी ॥
कीन्हिसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू। जिमि न नवइ फिरि उकठि कुकाठू ॥ ४
फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली। बकिहि सराहइ मानि मराली ॥
सुनु मंथरा बात फुरि तोरी। दहिन आँखि नित फरकइ मोरी ॥
दिन प्रति देखउँ राति कुसपने। कहउँ न तोहि मोह बस अपने ॥
काह करौं सखि सूध सुभाऊ। दाहिन बाम न जानउँ काऊ ॥ ८
दोहा। अपने चलत न आजु लगि अनभल काहु क कीन्ह।
केहि अघ एकहिँ बार मोहि दैअँ दुसह दुखु दीन्ह ॥२०॥
नैहर जनमु भरब बरु जाई। जिअत न करबि सवतिसेवकाई ॥
अरिबस दैउ जिआवत जाही। मरनु नीक तेहि जीवन चाही ॥
दीन बचन कह बहु बिधि रानी। सुनि कुबरीं तियमाया ठानी ॥
अस कस कहहु मानि मन ऊना। सुखु सोहागु तुम्ह कहुँ दिन दूना ॥ ४
जेहिँ राउर अति अनभल ताका। सोइ पाइहि येहु फलु परिपाका ॥
जब तें कुमत सुना मैं स्वामिनि। भूख न बासर नीद न जामिनि ॥
पूँछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची। भरतु भुआल होहिँ एहु साँची ॥
भामिनि करहु त कहौं उपाऊ। है तुम्हरीं सेवा बस राऊ ॥ ८
दोहा। परौं कूप तुअ बचन पर सकौं पूत पति त्यागि।
कहसि मोर दुखु देखि बड़ कस न करब हित लागि ॥२१॥

कुबरीं करि कबुली कैकेई। कपट छुरी उर पाहन टेई॥
लखइ न रानि निकट दुखु कैसें। चरइ हरित तिन बलिपसु जैसें॥
सुनत बात मृदु अंत कठोरी। देति मनहुँ मधु माहुर घोरी॥
कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं। स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पाहीं॥ ४
दुइ बरदान भूप सन थाती। मागहु आजु जुड़ावहु छाती॥
सुतहि राजु रामहि बनबासू। देहु लेहु सब सवतिहुलासू॥
भूपति रामसपथ जब करई। तब मागेहु जेंहि बचनु न टरई॥
होइ अकाजु आजु निसि बीतें। बचनु मोर प्रिय मानेहु जी तें॥ ८

दोहा। बड़ कुघातु करि पातकिनि कहेसि कोपगृहँ जाहु।
काजु सँवारेहु सजग सबु सहसा जनि पतिआहु॥२२॥

कुबरिहि रानि प्रानप्रिय जानी। बार बार बड़ि बुद्धि बखानी॥
तोहि सम हितु न मोर संसारा। बहे जात कइ भइसि अधारा॥
जौं बिधि पुरब मनोरथु काली। करौं तोहि चखपूतरि आली॥
बहु बिधि चेरिहि आदरु देई। कोपभवन गवनी कैकेई॥ ४
बिपति बीजु बरषा रितु चेरी। भुइँ भइ कुमति कैकई केरी॥
पाइ कपट जलु अंकुर जामा। बर दोउ दल दुख फल परिनामा॥
कोपसमाजु साजि सबु सोई। राजु करत निज कुमति बिगोई॥
राउर नगर कोलाहलु होई। यह कुचालि कछु जान न कोई॥ ८

दोहा। प्रमुदित पुर नर नारि सब सजहिं सुमंगलचार।
एक प्रबिसहिं एक निर्गमहिं भीर भूपदरबार॥२३॥

बालसखा सुनि हिय हरषाहीं। मिलि दस पाँच राम पहिं जाहीं॥
प्रभु आदरहिं प्रेमु पहिचानी। पूँछहिं कुसल खेम मृदु बानी॥
फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई। करत परसपर रामबड़ाई॥
को रघुबीर सरिस संसारा। सीलु सनेहु निबाहनिहारा॥ ४
जेहि जेहि जोनि करमबस भ्रमहीं। तहँ तहँ ईसु देउ यह हमहीं॥
सेवक हम स्वामी सियनाहू। होउ नात येहु ओरनिबाहू॥
अस अभिलाषु नगर सब काहू। कैकयसुता हृदय अति दाहू॥
को न कुसंगति पाइ नसाई। रहइ न नीच मतें चतुराई॥ ८

दोहा। साँझ समय सानंद नृपु गयेउ कैकई गेह।
गवनु निठुरता निकट किये जनु धरि देह सनेह ॥२४॥

कोपभवन सुनि सकुचेउ राऊ। भयबस अगहुड़ परै न पाऊ॥
सुरपति बसइ बाँहबल जाकेँ। नरपति सकल रहहिँ रुख ताकेँ॥
सो सुनि तियरिस गयेउ सुखाई। देखहु काम प्रताप बड़ाई॥
सूल कुलिस असि अँगवनिहारे। ते रतिनाथ सुमनसर मारे॥ ४
सभय नरेसु प्रिया पहिँ गयेऊ। देखि दसा दुखु दारुन भयेऊ॥
भूमि सयन पटु मोट पुराना। दिये डारि तन भूषन नाना॥
कुमतिहि कसि कुबेषता फाबी। अनअहिवातु सूच जनु भावी॥
जाइ निकट नृपु कह मृदु बानी। प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी॥ ८

छंद। केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि नेवारई।
मानहुँ सरोष भुअंगभामिनि बिषम भाँति निहारई॥
दोउ बासना रसना दसन बर मरम ठाहरु देखई।
तुलसी नृपति भवतब्यताबस कामकौतुक लेखई॥ १२

सोरठा। बार बार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिकबचनि।
कारन मोहि सुनाउ गजगामिनि निज कोप कर ॥२५॥

अनहित तोर प्रिया केइँ कीन्हा। केहि दुइ सिर केहि जमु चह लीन्हा॥
कहु केहि रंकहि करउँ नरेसू। कहु केहि नृपहि निकासउँ देसू॥
सकौँ तोर अरि अमरौ मारी। काह कीट बपुरे नर नारी॥
जानसि मोर सुभाउ बरोरू। मनु तव आनन चंद चकोरू॥ ४
प्रिया प्रान सुत सरबसु मोरेँ। परिजन प्रजा सकल बस तोरेँ॥
जौँ कछु कहउँ कपटु करि तोही। भामिनि रामसपथ सत मोही॥
बिहसि मागु मनभावति बाता। भूषन सजहि मनोहर गाता॥
घरी कुघरी समुझि जिय देखू। बेगि प्रिया परिहरहि कुबेषू॥ ८

दोहा। येह सुनि मन गुनि सपथ बड़ि बिहसि उठी मतिमंद।
भूषन सजति बिलोकि मृगु मनहु किरातिनि फंद ॥२६॥

पुनि कह राउ सुहृद जिअ जानी। प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी॥
भामिनि भयेउ तोर मनभावा। घर घर नगर अनंद बधावा॥

रामहि देउँ कालि जुवराजू । सजहि सुलोचनि मंगल साजू ॥
दलकि उठेउ सुनि हृदउ कठोरू । जनु छुइ गयेउ पाक बरतोरू ॥ ४
ऐसिउ पीर बिहसि तेहिँ गोई । चोरनारि जिमि प्रगटि न रोई ॥
लखी न भूप कपटचतुराई । कोटि कुटिलमनि गुरूँ पढ़ाई ॥
जद्यपि नीतिनिपुन नरनाहू । नारिचरित जलनिधि अवगाहू ॥
कपटसनेहु बढ़ाइ बहोरी । बोली बिहसि नयन मुहु मोरी ॥ ८

दोहा । मागु मागु पै कहहु पिय कबहुँ न देहु न लेहु ।
देन कहेहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु ॥२७॥

जानेउ मरमु राउ हँसि कहई । तुम्हहि कोहाब परम प्रिय अहई ॥
थाती राखि न मागिहु काऊ । बिसरि गयेउ मोहि भोर सुभाऊ ॥
झूठेहुँ हमहि दोसु जनि देहू । दुइ कै चारि मागि मकु लेहू ॥
रघुकुलरीति सदा चलि आई । प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई ॥ ४
नहि असत्य सम पातकपुंजा । गिरि सम होहिँ कि कोटिक गुंजा ॥
सत्यमूल सब सुकृत सुहाए । बेद पुरान बिदित मनु गाए ॥
तेहि पर रामसपथ करि आई । सुकृत सनेह अवधि रघुराई ॥
बात दृढ़ाइ कुमति हँसि बोली । कुमत कुबिहग कुलह जनु खोली ॥ ८

। दोहा ।

भूप मनोरथ सुभग बनु सुख सुबिहंगसमाजु ।
भिल्लिनि जिमि छाड़न चहति बचनु भयंकरु बाजु ॥२८॥

सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का । देहु एक बर भरतहिं टीका ॥
मागौं दूसर बर कर जोरी । पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ॥
तापस बेष बिसेषि उदासी । चौदह बरिस रामु बनबासी ॥
सुनि मृदु बचन भूपहिय सोकू । ससिकर छुअत बिकल जिमि कोकू ॥ ४
गयेउ सहमि नहि कछु कहि आवा । जनु सचान बन झपटेउ लावा ॥
बिबरन भयेउ निपट नरपालू । दामिनि हनेउ मनहुँ तरु तालू ॥
माथे हाथ मूदि दोउ लोचन । तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन ॥
मोर मनोरथु सुरतरुफूला । फरत करिनि जिमि हतेउ समूला ॥ ८
अवध उजारि कीन्हि कैकेईं । दीन्हिसि अचल बिपति कै नेईं ॥

दोहा। कवनें अवसर का भयेउ गयेउँ नारिबिस्वास।
जोग सिद्धि फल समय जिमि जतिहि अविद्या नास ॥२९॥
एहि बिधि राउ मनहि मन झाँखा। देखि कुभाँति कुमति मनु माँखा ॥
भरतु कि राउर पूत न होहीं। आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं ॥
जो सुनि सरु अस लाग तुम्हारें। काहे न बोलहु बचनु सँभारें ॥
देहु उतरु अनु करहु कि नाहीं। सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं ॥ ४
देन कहेउ अब जनि बरु देहू। तजहु सत्य जग अपजसु लेहू ॥
सत्य सराहि कहेहु बरु देना। जानेहु लेइहि मागि चबेना ॥
सिबि दधीचि बलि जो कछु भाषा। तनु धनु तजेउ बचनपनु राखा ॥
अति कटु बचन कहति कैकेई। मानहु लोन जरे पर देई ॥ ८
दोहा। धरमधुरंधर धीर धरि नयन उघारे रायँ।
सिरु धुनि लीन्हि उसास असि मारेसि मोहि कुठायँ ॥३०॥
आगें दीखि जरति रिस भारी। मनहुँ रोष तरवारि उघारी ॥
मूठि कुबुद्धि धार निठुराई। धरी कूबरीं सान बनाई ॥
लखी महीप कराल कठोरा। सत्य कि जीवनु लेइहि मोरा ॥
बोले राउ कठिन करि छाती। बानी सबिनय तासु सोहाती ॥ ४
प्रिया बचन कस कहसि कुभाँती। भीर प्रतीति प्रीति करि हाँती ॥
मोरें भरतु रामु दुइ आँखी। सत्य कहउँ करि संकरु साखी ॥
अवसि दूतु मैं पठउब प्राता। ऐहहिं बेगि सुनत दोउ भ्राता ॥
सुदिनु सोधि सबु साजु सजाई। देउँ भरत कहुँ राजु बजाई ॥ ८
दोहा। लोभु न रामहि राज कर बहुत भरत पर प्रीति।
मैं बड़ छोट बिचारि जियँ करत रहेउँ नृपनीति ॥३१॥
रामसपथ सत कहउँ सुभाऊ। राममातु कछु कहेउ न काऊ ॥
मैं सबु कीन्ह तोहि बिनु पूछें। तेहि तें परेउ मनोरथु छूछें ॥
रिस परिहरु अब मंगल साजू। कछु दिन गएँ भरत जुबराजू ॥
एकहिं बात मोहि दुखु लागा। बरु दूसर असमंजस मागा ॥ ४
अजहूँ हृदउ जरत तेहि आँचा। रिस परिहास कि साँचेहु साँचा ॥
कहु तजि रोषु राम अपराधू। सबु कोउ कहइ रामु सुठि साधू ॥

तुहूँ सराहसि करसि सनेहू । अब सुनि मोहि भयेउ संदेहू ॥
जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला । सो किमि करिहि मातुप्रतिकूला ॥
दोहा । प्रिया हास रिस परिहरहि मागु बिचारि बिबेकु ।
जेहिं देखौं अब नयन भरि भरत राज अभिषेकु ॥३२॥
जिऐ मीन बरु बारि बिहीना । मनि बिनु फनिकु जिऐ दुखदीना ॥
कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं । जीवनु मोर राम बिनु नाहीं ॥
समुझि देखु जियँ प्रिया प्रबीना । जीवनु राम दरस आधीना ॥
सुनि मृदु बचन कुमति अति जरई । मनहुँ अनल आहुति घृत परई ॥
कहइ करहु किन कोटि उपाया । इहाँ न लागिहि राउरि माया ॥
देहु कि लेहु अजसु करि नाहीं । मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं ॥
रामु साधु तुम्ह साधु सयाने । राममातु भलि सब पहिचाने ॥
जस कौसिलाँ मोर भल ताका । तस फलु उन्हहि देउँ करि साका ॥
दोहा । होत प्रातु मुनिबेषु धरि जौं न रामु बन जाहिं ।
मोर मरनु राउर अजसु नृप समुझिअ मन माहिं ॥३३॥
अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी । मानहु रोष तरंगिनि बाढ़ी ॥
पाप पहार प्रगट भइ सोई । भरी क्रोध जल जाइ न जोई ॥
दोउ बर कूल कठिन हठ धारा । भवँर कूबरी बचन प्रचारा ॥
ढाहत भूप रूप तरु मूला । चली बिपति बारिधि अनुकूला ॥
लखी नरेस बात सब साँची । तिय मिस मीचु सीस पर नाँची ॥
गहि पद बिनय कीन्हि बैठारी । जनि दिनकरकुल होसि कुठारी ॥
मागु माथ अबहीं देउँ तोही । रामबिरह जनि मारसि मोही ॥
राखु राम कहुँ जेहि तेहि भाँती । नाहि त जरिहि जनम भरि छाती ॥
दोहा । देखी ब्याधि असाधि नृपु परेउ धरनि धुनि माथ ।
कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ ॥३४॥
ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता । करिनि कलपतरु मनहु निपाता ॥
कंठु सूख मुख आव न बानी । जनु पाठीनु दीनु बिनु पानी ॥
पुनि कह कटु कठोर कैकेई । मनहुँ घाय महु माहुरु देई ॥
जौं अंतहु अस करतबु रहेऊ । मागु मागु तुम्ह केहि बल कहेऊ ॥

दुइ कि होहिँ एक समय भुआला। हँसब ठठाइ फुलाउब गाला॥
दानि कहाउब अरु कृपनाई। होइ कि खेम कुसल रौताई॥
छाड़हु बचनु कि धीरजु धरहू। जनि अबला जिमि करुना करहू॥
तनु तिय तनय धामु धनु धरनी। सत्यसंध कहुँ तृन सम बरनी॥ ८

दोहा। मरम बचन सुनि राउ कह कहु कछु दोषु न तोर।
लागेउ तोहि पिसाच जिमि कालु कहावत मोर॥३५॥

चहत न भरत भूपतहि भोरेँ। बिधिबस कुमति बसी जिय तोरेँ॥
सो सबु मोर पाप परिनामू। भयेउ कुठाहर जेहि बिधि बामू॥
सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई। सब गुन धाम राम प्रभुताई॥
करिहहिँ भाइ सकल सेवकाई। होइहि तिहुँ पुर रामबड़ाई॥ ४
तोर कलंकु मोर पछिताऊ। मुयेहुँ न मिटिहि न जाइहि काऊ॥
अब तोहि नीक लाग करु सोई। लोचन ओट बैठु मुहु गोई॥
जब लगि जिअउँ कहउँ कर जोरी। तब लगि जनि कछु कहसि बहोरी॥
फिरि पछितैहसि अंत अभागी। मारसि गाइ नहारू लागी॥ ८

दोहा। परेउ राउ कहि कोटि बिधि काहे करसि निदानु।
कपट सयानि न कहति कछु जागति मनहुँ मसानु॥३६॥

राम राम रट बिकल भुआलू। जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू॥
हृदयँ मनाव भोरु जनि होई। रामहि जाइ कहइ जनि कोई॥
उदउ करहु जनि रबि रघुकुलगुर। अवध बिलोकि सूल होइहि उर॥
भूपप्रीति कैकइकठिनाई। उभय अवधि बिधि रची बनाई॥ ४
बिलपत नृपहि भयेउ भिनुसारा। बीना बेनु संख धुनि द्वारा॥
पढ़हिँ भाट गुन गावहिँ गायक। सुनत नृपहि जनु लागहिँ सायक॥
मंगल सकल सोहाहिँ न कैसेँ। सहगामिनिहि बिभूषन जैसेँ॥
तेहि निसि नीद परी नहि काहू। रामदरस लालसा उछाहू॥ ८

दोहा। द्वार भीर सेवक सचिव कहहिँ उदित रबि देखि।
जागेउ अजहुँ न अवधपति कारनु कवनु बिसेषि॥३७॥

पछिलेँ पहर भूपु नित जागा। आजु हमहिँ बड़ अचरजु लागा॥
जाहु सुमंत्र जगावहु जाई। कीजिअ काजु रजायसु पाई॥

गये सुमंत्रु तब राउर माहीँ। देखि भयावन जात डेराहीँ॥
धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा। मानहु बिपति बिषाद बसेरा॥
पूँछे कोउ न ऊतरु देई। गये जेहि भवन भूप कैकेई॥
कहि जय जीव बैठ सिर नाई। देखि भूपगति गयेउ सुखाई॥
सोचबिकल बिबरन महि परेऊ। मानहु कमल मूलु परिहरेऊ॥
सचिउ सभीत सकै नहि पूछी। बोली असुभ भरी सुभ छूछी॥

दोहा। परी न राजहि नीद निसि हेतु जान जगदीसु।
राम राम रटि भोरु किय कहइ न मरमु महीसु॥३८॥

आनहु रामहि बेगि बोलाई। समाचार तब पूँछेउ आई॥
चलेउ सुमंत्रु रायरुख जानी। लखी कुचालि कीन्हि कछु रानी॥
सोचबिकल मग परइ न पाऊ। रामहि बोलि कहिहि का राऊ॥
उर धरि धीरजु गयेउ दुआरेँ। पूँछहिँ सकल देखि मनु मारेँ॥
समाधानु करि सो सबही का। गयेउ जहाँ दिनकर कुल टीका॥
राम सुमंत्रहि आवत देखा। आदरु कीन्ह पिता सम लेखा॥
निरखि बदनु कहि भूपरजाई। रघुकुलदीपहि चलेउ लवाई॥
रामु कुभाँति सचिव सँग जाहीँ। देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीँ॥

दोहा। जाइ दीख रघुबंसमनि नरपति निपट कुसाजु।
सहमि परेउ लखि सिंघिनिहि मनहुँ बृद्ध गजराजु॥३९॥

सूखहिँ अधर जरइ सबु अंगू। मनहुँ दीन मनिहीन भुअंगू॥
सरुष समीप दीखि कैकेई। मानहु मीचु घरी गनि लेई॥
करुनामय मृदु रामसुभाऊ। प्रथम दीख दुखु सुना न काऊ॥
तदपि धीर धरि समउ बिचारी। पूँछी मधुर बचन महतारी॥
मोहि कहु मातु तात दुख कारनु। करिअ जतनु जेहिँ होइ निवारनु॥
सुनहु राम सबु कारनु एहू। राजहि तुम्ह पर बहुत सनेहू॥
देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना। मागेउँ जो कछु मोहि सोहाना॥
सो सुनि भयेउ भूप उर सोचू। छाड़ि न सकहिँ तुम्हार सँकोचू॥

दोहा। सुतसनेहु इत बचनु उत संकट परेउ नरेसु।
सकहु त आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेसु॥४०॥

निधरक बैठि कहै कटु बानी। सुनत कठिनता अति अकुलानी॥
जीभ कमान बचन सर नाना। मनहुँ महिपु मृदु लच्छ समाना॥
जनु कठोरपनु धरेँ सरीरू। सिखइ धनुषबिद्या बर बीरू॥
सबु प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई। बैठि मनहुँ तनु धरि निठुराई॥ ४
मन मुसुकाइ भानुकुल भानू। रामु सहज आनंदनिधानू॥
बोले बचन बिगत सब दूषन। मृदु मंजुल जनु बागबिभूषन॥
सुनु जननी सोइ सुतु बड़ भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी॥
तनय मातु पितु तोषनिहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा॥ ८

दोहा। मुनिगन मिलनु बिसेषि बन सबहि भाँति हित मोर।
तेहि पर पितु आयेसु बहुरि संमत जननी तोर॥४१॥

भरतु प्रानप्रिय पावहिँ राजू। बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू॥
जौँ न जाउँ बन ऐसेहुँ काजा। प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समाजा॥
सेवहिँ अरँडु कलपतरु त्यागी। परिहरि अमृतु लेहिँ बिषु मागी॥
तेउ न पाइ अस समउ चुकाहीँ। देखु बिचारि मातु मन माहीँ॥ ४
अंब एक दुखु मोहि बिसेषी। निपट बिकल नरनायकु देखी॥
थोरिहि बात पितहि दुखु भारी। होति प्रतीति न मोहि महतारी॥
राउ धीरु गुन उदधि अगाधू। भा मोहि तेँ कछु बड़ अपराधू॥
जातेँ मोहि न कहत कछु राऊ। मोरि सपथ तोहि कहु सति भाऊ॥ ८

दोहा। सहज सरल रघुबरबचन कुमति कुटिल करि जान।
चलइ जोँक जल बक्र गति जद्यपि सलिलु समान॥४२॥

रहसी रानि रामरुख पाई। बोली कपटसनेहु जनाई॥
सपथ तुम्हार भरत कइ आना। हेतु न दूसर मैं कछु जाना॥
तुम्ह अपराधजोगु नहि ताता। जननी जनक बंधु सुखदाता॥
राम सत्य सबु जो कछु कहहू। तुम्ह पितु मातु बचन रत अहहू॥ ४
पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई। चौथेँ पन जेहिँ अजसु न होई॥
तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहिँ दीन्हे। उचित न तासु निरादरु कीन्हे॥
लागहिँ कुमुख बचन सुभ कैसे। मगह गयादिक तीरथ जैसे॥
रामहि मातुबचन सब भाए। जिमि सुरसरिगत सलिल सुहाए॥ ८

दोहा। गइ मुरुछा रामहि सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्हि।
सचिव राम आगमनु कहि बिनय समय सम कीन्हि ॥४३॥

अवनिप अकनि रामु पगु धारे। धरि धीरजु तब नयन उघारे ॥
सचिव सँभारि राउ बैठारे। चरन परत नृप रामु निहारे ॥
लिये सनेहबिकल उर लाई। गइ मनि मनहुँ फनिक फिरि पाई ॥
रामहि चितइ रहेउ नरनाहू। चला बिलोचन बारिप्रबाहू ॥
सोक बिबस कछु कहइ न पारा। हृदयँ लगावत बारहि बारा ॥
बिधिहि मनाव राउ मन माहीँ। जेहिँ रघुनाथ न कानन जाहीँ ॥
सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी। बिनती सुनहुँ सदासिव मोरी ॥
आसुतोष तुम्ह अवढर दानी। आरति हरहु दीन जनु जानी ॥

दोहा। तुम्ह प्रेरक सब कें हृदयँ सो मति रामहि देहु।
बचनु मोर तजि रहहिँ घर परिहरि सीलु सनेहु ॥४४॥

अजसु होउ जग सुजसु नसाऊ। नरक परौँ बरु सुरपुरु जाऊ ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोहीँ। लोचन ओट रामु जनि होहीँ ॥
अस मन गुनइँ राउ नहि बोला। पीपरपात सरिस मनु डोला ॥
रघुपति पितहि प्रेमबस जानी। पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी ॥
देस काल अवसर अनुसारी। बोले बचन बिनीत बिचारी ॥
तात कहौँ कछु करौँ ढिठाई। अनुचितु छमब जानि लरिकाई ॥
अति लघु बात लागि दुखु पावा। काहु न मोहि कहि प्रथम जनावा ॥
देखि गोसाइँहि पूँछिउँ माता। सुनि प्रसंगु भये सीतल गाता ॥

दोहा। मंगल समय सनेहबस सोचु परिहरिअ तात।
आयेसु देइअ हरषि हिय कहि पुलके प्रभुगात ॥४५॥

धन्य जनमु जगतीतल तासू। पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू ॥
चारि पदारथ करतल ताकें। प्रिय पितु मातु प्रान सम जाकें ॥
आयेसु पालि जनमफलु पाई। ऐहौँ बेगिहिँ होउ रजाई ॥
बिदा मातु सन आवौँ मागी। चलिहौँ बनहि बहुरि पग लागी ॥
अस कहि रामु गवनु तब कीन्हा। भूप सोकबस उतरु न दीन्हा ॥
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी। छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी ॥

सुनि भये बिकल सकल नर नारी। बेलि बिटप जिमि देखि दवारी ॥
जो जहँ सुनइँ धुनइँ सिरु सोई। बड़ बिषादु नहि धीरजु होई ॥ ८
दोहा। मुख सुखाहिँ लोचन स्रवहि सोकु न हृदयँ समाइ।
मनहुँ करुनरस कटकई उतरी अवध बजाइ ॥४६॥
मिलेहिँ माँझ बिधि बात बेगारी। जहँ तहँ देहिँ कैकइहि गारी ॥
येहि पापिनिहि बूझि का परेऊ। छाइ भवन पर पावकु धरेऊ ॥
निज कर नयन काढ़ि चह दीखा। डारि सुधा बिषु चाहत चीखा ॥
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी। भइ रघुबंस बेनु बन आगी ॥ ४
पालव बैठि पेड़ु येहि काटा। सुख महुँ सोकठाटु धरि ठाटा ॥
सदा रामु येहि प्रान समाना। कारन कवन कुटिलपनु ठाना ॥
सत्य कहहिँ कबि नारिसुभाऊ। सब बिधि अगहु अगाध दुराऊ ॥
निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई। जानि न जाइ नारिगति भाई ॥ ८
दोहा। काह न पावकु जारि सक का न समुद्र समाइ।
का न करइ अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ ॥४७॥
का सुनाइ बिधिं काह सुनावा। का देखाइ चह काह देखावा ॥
एक कहहिँ भल भूप न कीन्हा। बरु बिचारि नहि कुमतिहि दीन्हा ॥
जो हठि भयेउ सकल दुख भाजनु। अबला बिबस ग्यानु गुनु गा जनु ॥
एक धरमपरमिति पहिचाने। नृपहि दोसु नहिँ देहिँ सयाने ॥ ४
सिबि दधीचि हरिचंद कहानी। एक एक सन कहहिँ बखानी ॥
एक भरत कर संमत कहहीँ। एक उदास भाय सुनि रहहीँ ॥
कान मूदि कर रद गहि जीहा। एक कहहिँ एह बात अलीहा ॥
सुकृत जाहिँ अस कहत तुम्हारे। राम भरत कहुँ प्रानपिआरे ॥ ८
दोहा। चंदु चवइ बरु अनलकन सुधा होइ बिष तूल।
सपनेहुँ कबहुँ न करहिँ कछु भरतु रामप्रतिकूल ॥४८॥
एक बिधातहि दूषन देहीँ। सुधा देखाइ दीन्ह बिषु जेहीँ ॥
खरभरु नगर सोचु सब काहू। दुसह दाहु उर मिटा उछाहू ॥
बिप्रबधू कुलमान्य जठेरी। जे प्रिय परम कैकई केरी ॥
लगीँ देन सिख सीलु सराही। बचन बान सम लागहिँ ताही ॥ ४

भरतु न मोहि प्रिय राम समाना। सदा कहहु येहु सबु जगु जाना॥
करहु राम पर सहज सनेहू। केहि अपराध आजु बनु देहू॥
कबहुँ न कियेहु सवति आरेसू। प्रीति प्रतीति जान सबु देसू॥
कौसल्याँ अब काह बिगारा। तुम्ह जेहि लागि बज्र पुर पारा॥ ८

दोहा। सीय कि पियसँगु परिहरिहि लखनु कि रहिहहिं धाम।
राजु कि भूँजब भरत पुर नृपु कि जिइहि बिनु राम॥४८॥

अस बिचारि उर छाड़हु कोहू। सोक कलंक कोठि जनि होहू॥
भरतहि अवसि देहु जुवराजू। कानन काह राम कर काजू॥
नाहिन रामु राज के भूखे। धरमधुरीन बिषयरस रूखे॥
गुरगृह बसहुँ रामु तजि गेहू। नृप सन अस बरु दूसर लेहू॥ ४
जौं नहि लगिहहु कहें हमारें। नहि लागिहि कछु हाथ तुम्हारें॥
जौं परिहास कीन्हि कछु होई। तौ कहि प्रगट जनावहु सोई॥
राम सरिस सुत काननजोगू। काह कहिहि सुनि तुम्ह कहुँ लोगू॥
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई। जेहि बिधि सोकु कलंकु नसाई॥ ८

छंद। जेहि भाँति सोकु कलंकु जाइ उपाय करि कुल पालही।
हठि फेरु रामहि जात बन जनि बात दूसरि चालही।
जिमि भानु बिनु दिनु प्रान बिनु तनु चंद बिनु जिमि जामिनी।
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौं जियँ भामिनी॥ १२

सोरठा। सखिन्ह सिखावनु दीन्ह सुनत मधुर परिनाम हित।
तेहिं कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरीं॥५०॥

उतरु न देइ दुसह रिस रूखी। मृगिन्ह चितव जनु बाघिनि भूखी॥
ब्याधि असाधि जानि तिन्ह त्यागी। चलीं कहत मतिमंद अभागी॥
राजु करत येह दैअँ बिगोई। कीन्हेसि अस जस करइ न कोई॥
येहि बिधि बिलपहिं पुर नर नारी। देहिं कुचालिहि कोटिक गारी॥ ४
जरहिं बिषम जर लेहिं उसासा। कवनि राम बिनु जीवन आसा॥
बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी। जनु जलचरगन सूखत पानी॥
अति बिषाद बस लोग लोगाईं। गये मातु पहिं रामु गोसाईं॥
मुखु प्रसन्न चित चौगुन चाऊ। मिटा सोचु जनि राखइ राऊ॥ ८

दोहा। नव गयंदु रघुबीरमनु राजु अलान समान।
छूट जानि बनगवनु सुनि उर अनंदु अधिकान ॥५१॥

रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा। मुदित मातुपद नायेउ माथा ॥
दीन्हि असीस लाइ उर लीन्हे। भूषन बसन निछावरि कीन्हे ॥
बार बार मुख चुंबति माता। नयन नेहजलु पुलकित गाता ॥
गोद राखि पुनि हृदयँ लगाये। स्रवत प्रेमरस पयद सुहाये ॥ ४
प्रेमु प्रमोदु न कछु कहि जाई। रंक धनदपदवी जनु पाई ॥
सादर सुंदर बदनु निहारी। बोली मधुर बचन महतारी ॥
कहहु तात जननी बलिहारी। कबहिँ लगन मुद मंगलकारी ॥
सुकृत सील सुख सीँव सुहाई। जनमलाभ कइ अवधि अघाई ॥ ८

दोहा। जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत येहि भाँति।
जिमि चातक चातकि तृषित बृष्टि सरद रितु स्वाति ॥५२॥

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू। जो मन भाव मधुर कछु खाहू ॥
पितु समीप तब जायेहु भैआ। भै बड़ि बार जाइ बलि मैआ ॥
मातुबचन सुनि अति अनुकूला। जनु सनेह सुरतरु के फूला ॥
सुख मकरंद भरे श्रियमूला। निरखि राममनु भवँरु न भूला ॥ ४
धरमधुरीन धरमगति जानी। कहेउ मातु सन अति मृदु बानी ॥
पिता दीन्ह मोहि काननराजू। जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू ॥
आयेसु देहि मुदित मन माता। जेहिँ मुद मंगल कानन जाता ॥
जनि सनेहबस डरपसि भोरेँ। आनँदु अंब अनुग्रह तोरेँ ॥ ८

दोहा। बरष चारि दस बिपिन बसि करि पितुबचन प्रमान।
आइ पाय पुनि देखिहौँ मनु जनि करसि मलान ॥५३॥

बचन बिनीत मधुर रघुबर के। सर सम लगे मातु उर करके ॥
सहमि सूखि सुनि सीतलि बानी। जिमि जवास परेँ पावस पानी ॥
कहि न जाइ कछु हृदयँ बिषादू। मनहुँ मृगी सुनि केहरिनादू ॥
नयन सजल तन थर थर काँपी। माँजहि खाइ मीन जनु मापी ॥ ४
धरि धीरजु सुतबदनु निहारी। गदगद बचन कहति महतारी ॥
तात पितहि तुम प्रानपिआरे। देखि मुदित नित चरित तुम्हारे ॥

राजु देन कहुँ सुभ दिन साधा। कहेउ जान बन केहि अपराधा॥
तात सुनावहु मोहि निदानू। को दिनकरकुल भयेउ कृसानू॥ ८
दोहा। निरखि रामरुख सचिवसुत कारनु कहेउ बुझाइ।
सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि दसा बरनि नहि जाइ॥५४॥
राखि न सकइ न कहि सक जाहू। दुहूँ भाँति उर दारुन दाहू॥
लिखत सुधाकर गा लिखि राहू। बिधिगति बाम सदा सब काहू॥
धरम सनेह उभय मति घेरी। भइ गति साँप छुछुंदरि केरी॥
राखौँ सुतहि करौँ अनुरोधू। धरमु जाइ अरु बंधुबिरोधू॥ ४
कहौँ जान बन तौ बड़ि हानी। संकट सोच बिबस भइ रानी॥
बहुरि समुझि तियधरमु सयानी। रामु भरतु दोउ सुत सम जानी॥
सरल सुभाउ राममहतारी। बोली बचन धीर धरि भारी॥
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका। पितु आयेसु सब धरम क टीका॥ ८
दोहा। राज देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुखलेसु।
तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु॥५५॥
जौँ केवल पितु आयेसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता॥
जौँ पितु मातु कहेउ बन जाना। तौ काननु सत अवध समाना॥
पितु बनदेव मातु बनदेवी। खग मृग चरन सरोरुह सेवी॥
अंतहुँ उचित नृपहि बनबासू। बय बिलोकि हियँ होइ हराँसू॥ ४
बड़भागी बनु अवध अभागी। जो रघुबंसतिलक तुम्ह त्यागी॥
जौँ सुत कहौँ संग मोहि लेहू। तुम्हरेँ हृदयँ होइ संदेहू॥
पूत परम प्रिय तुम्ह सब ही के। प्रान प्रान के जीवन जी के॥
ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ। मैँ सुनि बचन बैठि पछिताऊँ॥ ८
दोहा। येह बिचारि नहि करौँ हठ झूठ सनेहु बढ़ाइ।
मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ॥५६॥
देव पितर सब तुम्हहि गोसाईँ। राखहुँ पलक नयन की नाईँ॥
अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना। तुम्ह करुनाकर धरमधुरीना॥
अस बिचारि सोइ करहु उपाई। सबहि जिअत जेहिँ भेँटहु आई॥
जाहु सुखेन बनहिँ बलि जाऊँ। करि अनाथ जन परिजन गाऊँ॥ ४

सब कर आजु सुकृतफल बीता । भयेउ करालु कालु बिपरीता ॥
बहु बिधि बिलपि चरन लपटानी । परम अभागिनि आपुहि जानी ॥
दारुन दुसह दाहु उर ब्यापा । बरनि न जाहिँ बिलापकलापा ॥
राम उठाइ मातु उर लाई । कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई ॥ ८
दोहा । समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ ।
जाइ सासुपद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ ॥५७॥
दीन्हि असीस सासु मृदु बानी । अति सुकुमारि देखि अकुलानी ॥
बैठि नमित मुख सोचति सीता । रूपरासि पति प्रेम पुनीता ॥
चलन चहत बन जीवननाथू । केहि सुकृती सन होइहि साथू ॥
की तनु प्रान कि केवल प्राना । बिधि करतबु कछु जाइ न जाना ॥ ४
चारु चरन नख लेखति धरनी । नूपुर मुखर मधुर कबि बरनी ॥
मनहुँ प्रेमबस बिनती करहीँ । हमहिँ सीयपद जनि परिहरहीँ ॥
मंजु बिलोचन मोचति बारी । बोली देखि राममहतारी ॥
तात सुनहुँ सिय अति सुकुमारी । सास ससुर परिजनहिँ पिआरी ॥ ८
दोहा । पिता जनक भूपालमनि ससुर भानुकुलभानु ।
पति रबिकुल कैरव बिपिन बिधु गुन रूप निधानु ॥५८॥
मैँ पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई । रूपरासि गुन सील सुहाई ॥
नयनपुतरि करि प्रीति बढ़ाई । राखेउँ प्रान जानकिहि लाई ॥
कलपबेलि जिमि बहु बिधि लाली । सीँचि सनेह सलिल प्रतिपाली ॥
फूलत फलत भएउ बिधि बामा । जानि न जाइ काह परिनामा ॥ ४
पलँग पीठ तजि गोद हिँडोरा । सिय न दीन्ह पगु अवनि कठोरा ॥
जिअनमूरि जिमि जोगवत रहऊँ । दीपबाति नहि टारन कहऊँ ॥
सोइ सिय चलन चहति बन साथा । आयेसु काह होइ रघुनाथा ॥
चंदकिरन रस रसिक चकोरी । रबि रुख नयन सकै किमि जोरी ॥ ८
दोहा । करि केहरि निसिचर चरहिँ दुष्ट जंतु बन भूरि ।
बिष बाटिका कि सोह सुत सुभग सजीवनि मूरि ॥५९॥
बन हित कोल किरात किसोरीँ । रची बिरंचि बिषय सुख भोरीँ ॥
पाहनकृमि जिमि कठिन सुभाऊ । तिन्हहि कलेसु न कानन काऊ ॥

कै तापसतिय काननजोगू। जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू॥
सिय वन बसिहि तात केहि भाँती। चित्रलिखित कपि देखि डेराती॥ ४
सुरसर सुभग बनजबन चारी। डावर जोगु कि हंसकुमारी॥
अस बिचारि जस आयेसु होई। मैं सिख देउँ जानकिहि सोई॥
जौं सिय भवन रहइ कह अंबा। मोहि कहँ होइ बहुत अवलंबा॥
सुनि रघुबीर मातु प्रिय बानी। सील सनेह सुधा जनु सानी॥ ८

दोहा। कहि प्रिय बचन बिबेकमय कीन्ह मातु परितोष।
लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि बिपिन गुन दोष॥६०॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं। बोले समउ समुझि मन माहीं॥
राजकुमारि सिखावनु सुनहूँ। आन भाँति जिय जनि कछु गुनहूँ॥
आपन मोर नीक जौं चहहू। बचनु हमार मानि गृह रहहू॥
आयसु मोर सासुसेवकाई। सब बिधि भामिनि भवन भलाई॥ ४
येहि तेँ अधिक धरमु नहि दूजा। सादर सासु ससुर पद पूजा॥
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी। होइहि प्रेमबिकल मति भोरी॥
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी। सुंदरि समुझायेहु मृदु बानी॥
कहौं सुभाय सपथ सत मोही। सुमुखि मातु हित राखौं तोही॥ ८

दोहा। गुर श्रुति संमत धरमफलु पाइअ बिनहि कलेस।
हठवस सब संकट सहे गालव नहुष नरेस॥६१॥

मैं पुनि करि प्रवान पितुबानी। बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी॥
दिवस जात नहि लागिहि बारा। सुंदरि सिखवनु सुनहुँ हमारा॥
जौं हठ करहु प्रेमबस बामा। तौ तुम्ह दुखु पाउब परिनामा॥
काननु कठिन भयंकरु भारी। घोर घामु हिम बारि बयारी॥ ४
कुस कंटक मग काँकर नाना। चलब पयादेंहि बिनु पदत्राना॥
चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे। मारग अगम भूमिधर भारे॥
कंदर खोह नदी नद नारे। अगम अगाध न जाहिँ निहारे॥
भालु बाघ बृक केहरि नागा। करहिँ नाद सुनि धीरजु भागा॥ ८

दोहा। भूमि सयन बलकल बसन असनु कंद फल मूल।
ते कि सदा सब दिन मिलहिँ सबुइ समय अनुकूल॥६२॥

नर अहार रजनीचर चरहीं। कपटबेष बिधि कोटिक करहीं॥
लागइ अति पहार कर पानी। बिपिनबिपति नहि जाइ बखानी॥
ब्याल कराल बिहग बन घोरा। निसिचरनिकर नारि नर चोरा॥
डरपहिं धीर गहनसुधि आएँ। मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाएँ॥ ४
हंसगवनि तुम्ह नहि बनजोगू। सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू॥
मानससलिल सुधा प्रतिपाली। जिअइ कि लवनपयोधि मराली॥
नव रसालबन बिहरनसीला। सोह कि कोकिल बिपिन करीला॥
रहहु भवन अस हृदय बिचारी। चंदबदनि दुखु कानन भारी॥ ८

दोहा। सहज सुहृदय गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि।
सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हितहानि॥६३॥

सुनि मृदु बचन मनोहर पिय के। लोचन ललित भरे जल सिय के॥
सीतल सिख दाहक भइ कैसें। चकइहि सरद चंद निसि जैसें॥
उतरु न आव बिकल बैदेही। तजन चहत सुचि स्वामि सनेही॥
बरबस रोकि बिलोचन बारी। धरि धीरजु उर अवनिकुमारी॥ ४
लागि सासुपग कह कर जोरी। छमबि देबि बड़ि अबिनय मोरी॥
दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई। जेहि बिधि मोर परम हित होई॥
मैं पुनि समुझि दीख मन माहीं। पियबियोग सम दुखु जग नाहीं॥

। दोहा।

प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान। ८
तुम्ह बिन रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान॥६४॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई। प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई॥
सासु ससुर गुर सजन सहाई। सुत सुंदर सुसील सुखदाई॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते। पिय बिनु तिअहि तरनिहु तें ताते॥
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू। पति बिहीन सबु सोकसमाजू॥ ४
भोग रोग सम भूषन भारू। जमजातना सरिस संसारू॥
प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं। मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं॥
जिअ बिनु देह नदी बिनु बारी। तइसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें। सरद बिमल बिधु बदनु निहारें॥ ८

दोहा। खग मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल।
नाथसाथ सुरसदन सम परनसाल सुखमूल ॥६५॥

बनदेवी बनदेव उदारा। करिहहिं सासु ससुर सम सारा॥
कुस किसलय साँथरी सुहाईं। प्रभुसँग मंजु मनोजतुराईं॥
कंद मूल फल अमिअ अहारू। अवध सौध सत सरिस पहारू॥
छिनु छिनु प्रभुपद कमल बिलोकी। रहिहौं मुदित दिवस जिमि कोकी॥ ४
बनदुख नाथ कहे बहुतेरे। भय बिषाद परिताप घनेरे॥
प्रभुबियोग लवलेस समाना। सब मिलि होहिं न कृपानिधाना॥
अस जिअँ जानि सुजानसिरोमनि। लेइअ संग मोहि छाड़िअ जनि॥
बिनती बहुत करौं का स्वामी। करुनामय उर अंतरजामी॥ ८

दोहा। राखिअ अवध जौं अवधि लगि रहत जानिअहिं प्रान।
दीनबंधु सुंदर सुखद सील सनेह निधान ॥६६॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी। छिनु छिनु चरन सरोज निहारी॥
सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं। मारगजनित सकल श्रम हरिहौं॥
पाय पखारि बैठि तरुछाहीं। करिहौं बाउ मुदित मन माहीं॥
श्रमकन सहित स्याम तनु देखें। कहँ दुखसमउ प्रानपति पेखें॥ ४
सम महि तृन तरुपल्लव डासी। पाय पलोटिहि सब निसि दासी॥
बार बार मृदु मूरति जोही। लागिहि ताति बयारि न मोही॥
को प्रभुसँग मोहि चितवनिहारा। सिंघबधुहि जिमि ससक सिआरा॥
मैं सुकुमारि नाथु बनजोगू। तुम्हहिं उचित तपु मो कहुँ भोगू॥ ८

दोहा। ऐसेउ बचन कठोर सुनि जौं न हृदउ बिलगान।
तौ प्रभु बिषम बियोग दुखु सहिहहिं पावर प्रान ॥६७॥

अस कहि सीय बिकल भइ भारी। बचनबियोगु न सकी सँभारी॥
देखि दसा रघुपति जिअ जाना। हठि राखे नहि राखिहि प्राना॥
कहेउ कृपाल भानुकुलनाथा। परिहरि सोचु चलहु बन साथा॥
नहि बिषाद कर अवसरु आजू। बेगि करहु बन गवन समाजू॥ ४
कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई। लगे मातुपद आसिष पाई॥
बेगि प्रजादुख मेटब आई। जननी निठुर बिसरि जनि जाई॥

फिरिहि दसा विधि बहुरि कि मोरी। देखिहौं नयन मनोहर जोरी॥
सुदिनु सुघरी तात कब होइहि। जननी जिअत बदन बिधु जोइहि॥ ८

दोहा। बहुरि बच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुबर तात।
कबहिँ बोलाइ लगाइ हिय हरषि निरखिहौं गात॥६८॥

लखि सनेहकातरि महतारी। बचनु न आव बिकल भइ भारी॥
राम प्रबोधु कीन्ह बिधि नाना। समउ सनेहु न जाइ बखाना॥
तब जानकी सासुपग लागी। सुनिअ माय मैं परम अभागी॥
सेवासमय दैअँ बनु दीन्हा। मोर मनोरथु सफल न कीन्हा॥ ४
तजब छोभु जनि छाड़िय छोहू। करमु कठिन कछु दोसु न मोहू॥
सुनि सियबचन सासु अकुलानी। दसा कवनि बिधि कहौं बखानी॥
बारहिँ बार लाइ उर लीन्ही। धरि धीरजु सिख आसिष दीन्ही॥
अचल होउ अहिवातु तुम्हारा। जब लगि गंग जमुन जलधारा॥ ८

दोहा। सीतहि सासु असीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार।
चलीं नाइ पद पदुम सिरु अति हित बारहिँ बार॥६९॥

समाचार जब लछिमन पाए। ब्याकुल बिलख बदन उठि धाए॥
कंप पुलक तन नयन सनीरा। गहे चरन अति प्रेम अधीरा॥
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े। मीनु दीनु जनु जल तेँ काढ़े॥
सोचु हृदय बिधि का होनिहारा। सबु सुखु सुकृतु सिरान हमारा॥ ४
मो कहुँ काह कहब रघुनाथा। रखिहहिँ भवन कि लेहहिँ साथा॥
राम बिलोकि बंधु कर जोरेँ। देह गेह सब सन तृनु तोरेँ॥
बोले बचन रामु नयनागर। सील सनेह सरल सुख सागर॥
तात प्रेमबस जनि कदराहू। समुझि हृदयँ परिनाम उछाहू॥ ८

दोहा। मातु पिता गुर स्वामि सिख सिर धरि करहिँ सुभायँ।
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ॥७०॥

अस जियँ जानि सुनहु सिख भाई। करहु मातु पितु पद सेवकाई॥
भवन भरतु रिपुसूदनु नाहीँ। राउ बृद्ध मम दुखु मन माहीँ॥
मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथा। होइ सबहि बिधि अवध अनाथा॥
गुर पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहुँ परइ दुसह दुख भारू॥ ४

रहहु करहु सब कर परितोषू। नतरु तात होइहि बड़ दोषू॥
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृपु अवसि नरक अधिकारी॥
रहहु तात असि नीति बिचारी। सुनत लखनु भये ब्याकुल भारी॥
सिअरे बचन सूखि गये कैसें। परसत तुहिन तामरसु जैसें॥ ८

दोहा। उतरु न आवत प्रेमबस गहे चरन अकुलाइ।
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु त काह बसाइ॥७१॥

दीन्हि मोहि सिख नीकि गोसाईं। लागि अगम अपनी कदराईं॥
नरबर धीर धरम धुर धारी। निगम नीति कहुँ ते अधिकारी॥
मैं सिसु प्रभु सनेह प्रतिपाला। मंदरु मेरु कि लेहिं मराला॥
गुर पितु मातु न जानउँ काहू। कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू॥ ४
जहँ लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई॥
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी। दीनबंधु उर अंतरजामी॥
धरम नीति उपदेसिअ ताही। कीरति भूति सुगति प्रिय जाही॥
मन क्रम बचन चरनरत होई। कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई॥ ८

दोहा। करुनासिंधु सुबंधु के सुनि मृदु बचन बिनीत।
समुझाए उर लाइ प्रभु जानि सनेह सभीत॥७२॥

मागहु बिदा मातु सन जाई। आवहु बेगि चलहु बन भाई॥
मुदित भये सुनि रघुबरबानी। भयेउ लाभ बड़ गइ बड़ि हानी॥
हरषित हृदयँ मातु पहि आये। मनहु अंध फिरि लोचन पाये॥
जाइ जननिपग नायेउ माथा। मनु रघुनंदन जानकि साथा॥ ४
पूछे मातु मलिन मनु देखी। लखन कही सब कथा बिसेषी॥
गई सहमि सुनि बचन कठोरा। मृगी देखि दव जनु चहुँ ओरा॥
लखन लखेउ भा अनरथु आजू। येहि सनेहबस करब अकाजू॥
मागत बिदा सभय सकुचाहीं। जाइ संग बिधि कहिहि कि नाहीं॥ ८

दोहा। समुझि सुमित्रा राम सिय रूपु सुसीलु सुभाउ।
नृपसनेहु लखि धुनेउ सिरु पापिनि दीन्ह कुदाउ॥७३॥

धीरजु धरेउ कुअवसरु जानी। सहज सुहृद बोली मृदु बानी॥
तात तुम्हारि मातु बैदेही। पिता रामु सब भाँति सनेही॥

अवध तहाँ जहँ रामनिवासू। तहइँ दिवसु जहँ भानुप्रकासू ॥
जौं पै सीय रामु बन जाहीं। अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं ॥ ४
गुर पितु मातु बंधु सुर साईं। सेइअहिं सकल प्रान की नाईं ॥
रामु प्रानप्रिय जीवन जी के। स्वारथ रहित सखा सबही के ॥
पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें। सब मानिअहिं राम के नातें ॥
अस जिय जानि संग बन जाहू। लेहु तात जग जीवनलाहू ॥ ८
दोहा। भूरि भाग भाजनु भयेहु मोहि समेत बलि जाउँ।
जौं तुम्हरें मन छाड़ि छलु कीन्ह रामपद ठाउँ ॥७४॥
पुत्रवती जुवती जग सोई। रघुपतिभगतु जासु सुतु होई ॥
नतरु बाँझ भलि बादि बिआनी। रामबिमुख सुत तें हित जानी ॥
तुम्हरेंहि भाग रामु बन जाहीं। दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥
सकल सुकृत कर फलु सुत एहू। राम सीय पद सहज सनेहू ॥ ४
रागु रोषु इरिषा मदु मोहू। जनि सपनेहुँ इन्ह कें बस होहू ॥
सकल प्रकार बिकार बिहाई। मन क्रम वचन करेहु सेवकाई ॥
तुम्ह कहुँ बन सब भाँति सुपासू। सँग पितु मातु रामु सिय जासू ॥
जेहिं न रामु बन लहहिं कलेसू। सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू ॥ ८
छंद। उपदेसु येहु जेहिं तात तुम्हरें रामु सिय सुखु पावहीं।
पितु मातु प्रिय परिवारु पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं।
तुलसी प्रभुहि सिख देइ आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई।
रति होउ अबिरल अमल सिय रघुबीर पद नित नित नई ॥ १२
सोरठा। मातुचरन सिरु नाइ चले तुरित संकित हृदय।
बागुर बिषम तोराइ मनहुँ भाग मृगु भागबस ॥७५॥
गये लखनु जहँ जानकिनाथू। भे मन मुदित पाइ प्रियसाथू ॥
बंदि राम सिय चरन सुहाये। चले संग नृपमंदिर आये ॥
कहहिं परसपर पुर नर नारी। भलि बनाइ बिधि बात बिगारी ॥
तन कृस मन दुखु बदन मलीने। बिकल मनहुँ माखी मधु छीनें ॥ ४
कर मीजहिं सिरु धुनि पछिताहीं। जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं ॥
भइ बड़ि भीर भूपदरबारा। बरनि न जाइ बिषादु अपारा ॥

सचिव उठाइ राउ बैठारे। कहि प्रिय बचन रामु पगु धारे॥
सिय समेत दोउ तनय निहारी। ब्याकुल भयेउ भूमिपति भारी॥ ८

दोहा। सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ।
बारहिं बार सनेहबस राउ लेइ उर लाइ॥७६॥

सकै न बोलि बिकल नरनाहू। सोकजनित उर दारुन दाहू॥
नाइ सीसु पद अति अनुरागा। उठि रघुबीर बिदा तब मागा॥
पितु असीस आयसु मोहि दीजै। हरषसमय बिसमउ कत कीजै॥
तात कियें प्रिय प्रेम प्रमादू। जसु जग जाइ होइ अपबादू॥ ४
सुनि सनेहबस उठि नरनाहाँ। बैठारे रघुपति गहि बाहाँ॥
सुनहुँ तात तुम्ह कहुँ मुनि कहहीं। रामु चराचरनायकु अहहीं॥
सुभ अरु असुभ करम अनुहारी। ईसु देइ फलु हृदयँ बिचारी॥
करै जो करमु पाव फलु सोई। निगम नीति अस कह सबु कोई॥ ८

दोहा। औरु करइ अपराधु कोउ और पाव फलभोगु।
अति बिचित्र भगवंतगति को जग जानइ जोगु॥७७॥

राय राम राखन हित लागी। बहुत उपाय किये छलु त्यागी॥
लखी रामरुख रहत न जाने। धरमधुरंधर धीर सयाने॥
तब नृप सीय लाइ उर लीन्ही। अति हित बहुत भाँति सिख दीन्ही॥
कहि बन के दुख दुसह सुनाए। सासु ससुर पितु सुख समुझाए॥ ४
सियमनु रामचरन अनुरागा। घरु न सुगमु बनु बिषमु न लागा॥
औरउ सबहिं सीय समुझाई। कहि कहि बिपिनबिपति अधिकाई॥
सचिवनारि गुरनारि सयानी। सहित सनेह कहहिं मृदु बानी॥
तुम्ह कहुँ तौ न दीन्ह बनबासू। करहु जो कहहिं ससुर गुर सासू॥ ८

दोहा। सिख सीतलि हित मधुर मृदु सुनि सीतहि न सोहानि।
सरद चंद चंदिनि लगत जनु चकई अकुलानि॥७८॥

सीय सकुचबस उतरु न देई। सो सुनि तमकि उठी कैकेई॥
मुनि पट भूषन भाजन आनी। आगें धरि बोली मृदु बानी॥
नृपहि प्रानप्रिय तुम्ह रघुबीरा। सील सनेह न छाड़िहि भीरा॥
सुकृतु सुजसु परलोकु नसाऊ। तुम्हहि जान बन कहिहि न काऊ॥ ४

अस बिचारि सोइ करहु जो भावा। राम जननिसिख सुनि सुखु पावा ॥
भूपहि बचन बान सम लागे। करहिँ न प्रान पयान अभागे ॥
लोग बिकल मुरुछित नरनाहू। काह करिअ कछु सूझ न काहू ॥
रामु तुरत मुनिबेषु बनाई। चले जनक जननी सिरु नाई ॥ ८
दोहा। सजि बन साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत।
बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत ॥७८॥
निकसि बसिष्ठद्वार भये ठाढ़े। देखे लोग बिरह दव दाढ़े ॥
कहि प्रिय बचन सकल समुझाए। बिप्रबृंद रघुबीर बोलाए ॥
गुर सन कहि बरषासन दीन्हे। आदर दान बिनय बस कीन्हे ॥
जाचक दान मान संतोषे। मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥ ४
दासी दास बोलाइ बहोरी। गुरहि सौँपि बोले कर जोरी ॥
सब कै सार सँभार गोसाईँ। करबि जनक जननी की नाईँ ॥
बारहिँ बार जोरि जुग पानी। कहत रामु सब सन मृदु बानी ॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी। जेहिँ तेँ रहइ भुआल सुखारी ॥ ८
दोहा। मातु सकल मोरेँ बिरहँ जेहिँ न होहिँ दुखदीन।
सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब पुरजन परम प्रबीन ॥८०॥
येहि बिधि राम सबहि समुझावा। गुरपद पदुम हरषि सिरु नावा ॥
गनपति गौरि गिरीसु मनाई। चले असीस पाइ रघुराई ॥
रामु चलत अति भयेउ बिषादू। सुनि न जाइ पुर आरतनादू ॥
कुसगुन लंक अवध अति सोकू। हरष बिषाद बिबस सुरलोकू ॥ ४
गइ मुरुछा तब भूपति जागे। बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे ॥
रामु चले बन प्रान न जाहीँ। केहि सुख लागि रहत तन माहीँ ॥
एहि तेँ कवन ब्यथा बलवाना। जो दुखु पाइ तजहिँ तनु प्राना ॥
पुनि धरि धीर कहै नरनाहू। लै रथु संग सखा तुम्ह जाहू ॥ ८
दोहा। सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि।
रथ चढ़ाइ देखराइ बनु फिरेहु गयेँ दिन चारि ॥८१॥
जौँ नहि फिरहिँ धीर दोउ भाई। सत्यसंध दृढ़ब्रत रघुराई ॥
तौ तुम्ह बिनय करेहु कर जोरी। फेरिअ प्रभु मिथिलेसकिसोरी ॥

जब सिय कानन देखि डेराई। कहेहु मोरि सिख अवसरु पाई॥
सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू। पुत्रि फिरिअ बन बहुत कलेसू॥ ४
पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी। रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी॥
येहि बिधि करेहु उपायकदंबा। फिरइ त होइ प्रान अवलंबा॥
नाहि त मोर मरनु परिनामा। कछु न बसाइ भयेँ बिधि बामा॥
अस कहि मुरुछि परा महि राऊ। राम लखनु सिय आनि देखाऊ॥ ८
दोहा। पाइ रजायसु नाइ सिरु रथु अति बेग बनाइ।
गयेउ जहाँ बाहेर नगर सीय सहित दोउ भाइ॥८२॥
तब सुमंत्र नृपबचन सुनाए। करि बिनती रथ रामु चढ़ाए॥
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई। चले हृदय अवधहि सिरु नाई॥
चलत रामु लखि अवध अनाथा। बिकल लोग सब लागे साथा॥
कृपासिंधु बहु बिधि समुझावहिँ। फिरहिँ प्रेमबस पुनि फिरि आवहिँ॥ ४
लागति अवध भयावनि भारी। मानहु कालराति अँधिआरी॥
घोर जंतु सम पुर नर नारी। डरपहिँ एकहि एक निहारी॥
घर मसान परिजन जनु भूता। सुत हित मीत मनहुँ जमदूता॥
बागन्ह बिटप बेलि कुँभिलाहीँ। सरित सरोवर देखि न जाहीँ॥ ८
दोहा। हय गय कोटिन्ह केलिमृग पुरपसु चातक मोर।
पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर॥८३॥
रामबियोग बिकल सब ठाढ़े। जहँ तहँ मनहु चित्र लिखि काढ़े॥
नगरु सफल बनु गहबर भारी। खग मृग बिपुल सकल नर नारी॥
बिधि कैकई किरातिनि कीन्ही। जेहिँ दव दुसह दसहुँ दिसि दीन्ही॥
सहि न सके रघुबर बिरहागी। चले लोग सब ब्याकुल भागी॥ ४
सबहिँ बिचारु कीन्ह मन माहीँ। राम लखन सिय बिनु सुखु नाहीँ॥
जहाँ रामु तहँ सबुइ समाजू। बिनु रघुबीर अवध नहिँ काजू॥
चले साथ अस मंत्रु दृढ़ाई। सुरदुर्लभ सुखसदन बिहाई॥
रामचरन पंकज प्रिय जिन्हहीँ। बिषय भोग बस करहिँ कि तिन्हहीँ॥ ८
दोहा। बालक बृद्ध बिहाय गृह लगे लोग सब साथ।
तमसा तीर निवासु किय प्रथम दिवस रघुनाथ॥८४॥

रघुपति प्रजा प्रेमबस देखी । सदय हृदय दुखु भयेउ बिसेषी ॥
करुनामय रघुनाथ गोसाईँ । बेगि पाइअहिँ पीर पराईँ ॥
कहि सप्रेम मृदु बचन सुहाये । बहु बिधि राम लोग समुझाये ॥
किये धरम उपदेस घनेरे । लोग प्रेमबस फिरहिँ न फेरेँ ॥ ४
सील सनेहु छाड़ि नहि जाई । असमंजसबस भे रघुराई ॥
लोग सोग स्रम बस गए सोई । कछुक देवमाया मति मोई ॥
जबहिँ जाम जुग जामिनि बीती । राम सचिव सन कहेउ सप्रीती ॥
खोजु मारि रथु हाँकहु ताता । आन उपाय बनिहि नहि बाता ॥ ८

दोहा । राम लखनु सिय जान चढ़ि संभुचरन सिरु नाइ ।
सचिवँ चलायेउ तुरत रथु इत उत खोज दुराइ ॥८५॥

जागे सकल लोग भयेँ भोरू । गे रघुनाथ भयेउ अति सोरू ॥
रथ कर खोज कतहुँ नहि पावहिँ । राम राम कहि चहुँ दिसि धावहिँ ॥
मनहुँ बारिनिधि बूड़ जहाजू । भयेउ बिकल बड़ बनिकसमाजू ॥
एकहि एक देहिँ उपदेसू । तजे राम हम जानि कलेसू ॥ ४
निंदहिँ आपु सराहहिँ मीना । धिग जीवनु रघुबीर बिहीना ॥
जौँ पै प्रियबियोगु बिधि कीन्हा । तौ कस मरनु न मागेँ दीन्हा ॥
एहि बिधि करत प्रलापकलापा । आए अवध भरे परितापा ॥
बिषम बियोगु न जाइ बखाना । अवधि आस सब राखहिँ प्राना ॥ ८

दोहा । रामदरस हित नेम ब्रत लगे करन नर नारि ।
मनहुँ कोक कोकीँ कमल दीन बिहीन तमारि ॥८६॥

सीता सचिव सहित दोउ भाई । सृंगबेरपुर पहुँचे जाई ॥
उतरे राम देवसरि देखी । कीन्ह दंडवत हरषु बिसेषी ॥
लखन सचिवँ सियँ किये प्रनामा । सबहि सहित सुख पायेउ रामा ॥
गंग सकल मुद मंगल मूला । सब सुख करनि हरनि सब सूला ॥ ४
कहि कहि कोटिक कथाप्रसंगा । रामु बिलोकहिँ गंगतरंगा ॥
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाईँ । बिबुधनदी महिमा अधिकाईँ ॥
मज्जनु कीन्ह पंथस्रमु गयेऊ । सुचि जलु पिअत मुदित मनु भयेऊ ॥
सुमिरत जाहि मिटइ स्रमभारू । तेहि स्रमु येह लौकिक ब्यवहारू ॥ ८

दोहा। सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुलकेतु।
चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु ॥८७॥
येह सुधि गुह निषाद जब पाई। मुदित लिये प्रिय बंधु बोलाई ॥
लिये फल मूल भेँट भरि भारा। मिलन चलेउ हियँ हरषु अपारा ॥
करि दंडवत भेँट धरि आगेँ। प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागेँ ॥
सहज सनेह बिबस रघुराई। पूँछी कुसल निकट बैठाई ॥ ४
नाथ कुसल पद पंकज देखेँ। भयेउँ भागभाजन जन लेखेँ ॥
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा। मैँ जनु नीचु सहित परिवारा ॥
कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ। थापिअ जनु सबु लोगु सिहाऊ ॥
कहेहु सत्य सबु सखा सुजाना। मोहि दीन्ह पितु आयेसु आना ॥ ८
दोहा। बरष चारि दस बासु बन मुनि ब्रतु बेषु अहारु।
ग्रामबासु नहि उचित सुनि गुहहि भयेउ दुखभारु ॥८८॥
राम लखन सिय रूपु निहारी। कहहिँ सप्रेम ग्राम नर नारी ॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठये बन बालक ऐसे ॥
एक कहहिँ भल भूपति कीन्हा। लोयनलाहु हमहि बिधि दीन्हा ॥
तब निषादपति उर अनुमाना। तरु सिंसुपा मनोहर जाना ॥ ४
लै रघुनाथहि ठाउँ देखावा। कहेउ राम सब भाँति सुहावा ॥
पुरजन करि जोहारु घर आए। रघुबर संध्या करन सिधाए ॥
गुह सँवारि साँथरी डसाई। कुस किसलय मय मृदुल सुहाई ॥
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी। दोना भरि भरि राखेसि आनी ॥ ८
दोहा। सिय सुमंत्र भ्राता सहित कंद मूल फल खाइ।
सयन कीन्ह रघुबंसमनि पाय पलोटत भाइ ॥८९॥
उठे लखनु प्रभु सोवत जानी। कहि सचिवहि सोवन मृदु बानी ॥
कछुक दूरि सजि बान सरासन। जागन लगे बैठि बीरासन ॥
गुहँ बोलाइ पाहरू प्रतीती। ठाँव ठाँव राखे अति प्रीती ॥
आपु लखन पहँ बैठेउ जाई। कटि भाथी सर चाप चढ़ाई ॥ ४
सोवत प्रभुहि निहारि निषादू। भयेउ प्रेमबस हृदयँ बिषादू ॥
तनु पुलकित जलु लोचन बहई। बचन सप्रेम लखन सन कहई ॥

२३

भूपतिभवनु सुभायँ सुहावा। सुरपतिसदनु न पटतर पावा॥
मनिमय रचित चारु चौबारे। जनु रतिपति निज हाथ सँवारे॥ ८
दोहा। सुचि सुबिचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुबास।
पलँग मंजु मनिदीप जहँ सब बिधि सकल सुपास॥९०॥
बिबिध बसन उपधान तुराईं। छीरफेन मृदु बिसद सुहाईं॥
तहँ सिय रामु सयन निसि करहीं। निज छबि रति मनोज मदु हरहीं॥
तेइ सिय रामु साँथरी सोए। श्रमित बसन बिनु जाहिं न जोए॥
मातु पिता परिजन पुरबासी। सखा सुसील दास अरु दासीं॥ ४
जोगवहिं जिन्हहि प्रान की नाईं। महि सोवत तेइ रामु गोसाईं॥
पिता जनकु जग बिदित प्रभाऊ। ससुर सुरेससखा रघुराऊ॥
रामचंदु पति सो बैदेही। सोवति महि बिधि बाम न केही॥
सिय रघुबीर कि काननजोगू। करमु प्रधान सत्य कह लोगू॥ ८
दोहा। कैकयनंदिनि मंदमति कठिन कुटिल पनु कीन्ह।
जेहिं रघुनंदन जानकिहि सुख अवसर दुखु दीन्ह॥९१॥
भइ दिनकरकुल बिटप कुठारी। कुमति कीन्ह सबु बिस्व दुखारी॥
भयेउ बिषादु निषादहि भारी। राम सीय महिसयन निहारी॥
बोलें लखनु मधुर मृदु बानी। ग्यान बिराग भगतिरस सानी॥
काहु न कोउ सुख दुख कर दाता। निज कृत करम भोग सबु भ्राता॥ ४
जोग बियोग भोग भल मंदा। हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा॥
जनमु मरनु जहँ लगि जगजालू। संपति बिपति करमु अरु कालू॥
धरनि धामु धनु पुर परिवारू। सरगु नरकु जहँ लगि ब्यवहारू॥
देखिअ सुनिअ गुनिअ मन माहीं। मोहमूल परमारथु नाहीं॥ ८
दोहा। सपने होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ।
जागें लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंचु जियँ जोइ॥९२॥
अस बिचारि नहि कीजिय रोसू। काहुहि बादि न देइअ दोसू॥
मोह निसा सबु सोवनिहारा। देखिअ सपन अनेक प्रकारा॥
येहि जग जामिनि जागहिं जोगी। परमारथी प्रपंचबियोगी॥
जानिअ तबहिं जीव जग जागा। जब सब बिषय बिलास बिरागा॥ ४

होइ बिबेकु मोह भ्रम भागा। तब रघुनाथचरन अनुरागा॥
सखा परम परमारथु एहू। मन क्रम बचन रामपद नेहू॥
रामु ब्रह्म परमारथरूपा। अबिगत अलख अनादि अनूपा॥
सकल बिकार रहित गतभेदा। कहि नित नेति निरूपहिं बेदा॥ ८
दोहा। भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुजतनु सुनत मिटहिं जगजाल॥८३॥
सखा समुझि अस परिहरि मोहू। सिय रघुबीर चरन रत होहू॥
कहत रामगुन भा भिनुसारा। जागे जग मंगल सुखदारा॥
सकल सौच करि राम नहावा। सुचि सुजान बटछीर मगावा॥
अनुज सहित सिर जटा बनाए। देखि सुमंत्र नयन जल छाए॥ ४
हृदयँ दाहु अति बदन मलीना। कह कर जोरि बचन अति दीना॥
नाथ कहेउ अस कोसलनाथा। लै रथु जाहु राम कें साथा॥
बनु देखाइ सुरसरि अन्हवाई। आनेहु फेरि बेगि दोउ भाई॥
लखनु रामु सिय आनेहु फेरी। संसय सकल सँकोच निबेरी॥ ८
दोहा। नृप अस कहेउ गोसाँइ जस कहइ करौं बलि सोइ।
करि बिनती पायन्ह परेउ दीन्ह बाल जिमि रोइ॥८४॥
तात कृपा करि कीजिअ सोई। जातें अवध अनाथ न होई॥
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा। तात धरममतु तुम्ह सबु सोधा॥
सिबि दधीचि हरिचंद नरेसा। सहे धरम हित कोटि कलेसा॥
रंतिदेव बलि भूप सुजाना। धरमु धरेउ सहि संकट नाना॥ ४
धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना॥
मैं सोइ धरमु सुलभ करि पावा। तजें तिहूँ पुर अपजसु छावा॥
संभावित कहुँ अपजसलाहू। मरन कोटि सम दारुन दाहू॥
तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ। दिएँ उतरु फिरि पातकु लहऊँ॥ ८
दोहा। पितुपद गहि कहि कोटि नति बिनय करबि कर जोरि।
चिंता कवनिहु बात कइ तात करिअ जनि मोरि॥८५॥
तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरें। बिनती करौं तात कर जोरें॥
सब बिधि सोइ करतव्य तुम्हारें। दुखु न पाव पितु सोच हमारें॥

सुनि रघुनाथ सचिव संवादू। भयेउ सपरिजन बिकल निषादू॥
पुनि कछु लखन कही कटु बानी। प्रभु बरजे बड़ अनुचित जानी॥ ४
सकुचि राम निज सपथ देवाई। लखनसँदेसु कहिअ जनि जाई॥
कह सुमंत्रु पुनि भूपसँदेसू। सहि न सकिहि सिय बिपिनकलेसू॥
जेहिं बिधि अवध आव फिरि सीया। सोइ रघुबरहि तुम्हहि करनीया॥
नतरु निपट अवलंब बिहीना। मैं न जिअब जिमि जल बिनु मीना॥ ८
दोहा। मइकें ससुरें सकल सुख जबहिं जहाँ मनु मान।
तहँ तब रहिहि सुखेन सिय जब लगि बिपति बिहान॥८६॥
बिनती भूप कीन्हि जेहि भाँती। आरति प्रीति न सो कहि जाती॥
पितुसँदेसु सुनि कृपानिधाना। सियहि दीन्हि सिख कोटि बिधाना॥
सासु ससुर गुर प्रिय परिवारू। फिरहु त सब कर मिटइ खभारू॥
सुनि पतिबचन कहति बैदेही। सुनहु प्रानपति परम सनेही॥ ४
प्रभु करुनामय परम बिबेकी। तनु तजि रहति छाँह किमि छेंकी॥
प्रभा जाइ कहँ भानु बिहाई। कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई॥
पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई। कहति सचिव सन गिरा सुहाई॥
तुम्ह पितु ससुर सरिस हितकारी। उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी॥ ८
दोहा। आरतिबस सनमुख भइउँ बिलगु न मानब तात।
आरजसुतपद कमल बिनु बादि जहाँ लगि नात॥८७॥
पितु बैभव बिलास मैं डीठा। नृपमनि मुकुट मिलित पदपीठा॥
सुखनिधान अस पितुगृह मोरें। पिय बिहीन मन भाव न भोरें॥
ससुरु चक्कवइ कोसलराऊ। भुवन चारि दस प्रगट प्रभाऊ॥
आगें होइ जेहि सुरपति लेई। अरध सिंघासन आसनु देई॥ ४
ससुरु एतादस अवध निवासू। प्रिय परिवारु मातु सम सासू॥
बिनु रघुपतिपद पदुम परागा। मोहि कोउ सपनेहुँ सुखद न लागा॥
अगम पंथ बन भूमि पहारा। करि केहरि सर सरित अपारा॥
कोल किरात कुरंग बिहंगा। मोहि सब सुखद प्रानपतिसंगा॥ ८
दोहा। सासु ससुर सन मोरि हुँति बिनय करबि परि पायँ।
मोर सोचु जनि करिअ कछु मैं बन सुखी सुभायँ॥८८॥

प्राननाथ प्रिय देवर साथा। बीरधुरीन धरेँ धनु भाथा॥
नहि मगस्रमु भ्रमु दुख मन मोरेँ। मोहि लगि सोचु करिअ जनि भोरेँ॥
सुनि सुमंत्रु सिय सीतलि बानी। भयेउ बिकल जनु फनि मनिहानी॥
नयन सूझ नहिँ सुनइँ न काना। कहि न सकइ कछु अति अकुलाना॥ ४
राम प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती। तदपि होति नहि सीतलि छाती॥
जतन अनेक साथ हित कीन्हे। उचित उतर रघुनंदन दीन्हे॥
मेटि जाइ नहि रामरजाई। कठिन करमगति कछु न बसाई॥
राम लखन सिय पद सिरु नाई। फिरेउ बनिकु जनु मूरु गवाई॥ ८
दोहा। रथु हाँकेउ हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिँ।
देखि निषाद बिषादबस धुनहिँ सीस पछिताहिँ॥९९॥
जासु बियोग बिकल पसु ऐसेँ। प्रजा मातु पितु जीहहिँ कैसेँ॥
बरबस राम सुमंत्रु पठाए। सुरसरि तीर आपु तब आए॥
मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैँ जाना॥
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई। मानुषकरनि मूरि कछु अहई॥ ४
छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तेँ न काठ कठिनाई॥
तरिनिउँ मुनिघरिनी होइ जाई। बाट परै मोरि नाव उड़ाई॥
येहि प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहि जानौँ कछु और कवारू॥
जौँ प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू॥ ८
छंद। पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौँ।
मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साँची कहौँ।
बरु तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौँ।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौँ॥ १२
सोरठा। सुनि केवट के बयन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुना अयन चितइ जानकी लखन तन॥१००॥
कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेहिँ तव नाव न जाई॥
बेगि आनु जलु पाय पखारू। होत बिलंबु उतारहि पारू॥
जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिँ नर भवसिंधु अपारा॥
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा। जेहिँ जगु किये तिहुँ पगहुँ तेँ थोरा॥ ४

पदनख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभुबचन मोहमति करषी॥
केवट रामरजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेइ आवा॥
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा॥
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीँ। येहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीँ॥ ८

दोहा। पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयेउ लइ पार॥१०१॥

उतरि ठाढ़े भये सुरसरिरेता। सीय रामु गुह लखन समेता॥
केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच येहि नहि कछु दीन्हा॥
पियहिय की सिय जाननिहारी। मनिमुँदरी मन मुदित उतारी॥
कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवटँ चरन गहे अकुलाई॥ ४
नाथ आजु मैँ काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा॥
बहुत काल मैँ कीन्हि मजूरी। आजु दीन्हि बिधि बनि भलि भूरी॥
अब कछु नाथ न चाहिअ मोरेँ। दीनदयाल अनुग्रह तोरेँ॥
फिरती बार मोहि जोइ देबा। सो प्रसादु मैँ सिर धरि लेबा॥ ८

दोहा। बहुतु कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहि कछु केवटु लेइ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ॥१०२॥

तब मज्जनु करि रघुकुलनाथा। पूजि पारथिव नायेउ माथा॥
सिय सुरसरिहि कहेउ कर जोरी। मातु मनोरथ पुरउबि मोरी॥
पति देवर सँग कुसल बहोरी। आइ करउँ जेहिँ पूजा तोरी॥
सुनि सियबिनय प्रेमरस सानी। भइ तब बिमल बारि बर बानी॥ ४
सुनु रघुबीरप्रिया बैदेही। तव प्रभाउ जग बिदित न केही॥
लोकप होहिँ बिलोकत तोरेँ। तोहि सेवहिँ सब सिधि कर जोरेँ॥
तुम्ह जो हमहि बड़ि बिनय सुनाई। कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ाई॥
तदपि देवि मैँ देबि असीसा। सफल होन हित निज बागीसा॥ ८

दोहा। प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ।
पूजिहि सब मनकामना सुजसु रहिहि जग छाइ॥१०३॥

गंगबचन सुनि मंगलमूला। मुदित सीय सुरसरि अनुकूला॥
तब प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू। सुनत सूख मुखु भा उर दाहू॥

दीन वचन गुह कह कर जोरी। बिनय सुनहु रघुकुलमनि मोरी ॥
नाथसाथ रहि पंथु देखाई। करि दिन चारि चरनसेवकाई ॥ ४
जेहि बन जाइ रहब रघुराई। परनकुटी मैं करबि सुहाई ॥
तब मोहि कहँ जसि देबि रजाई। सोइ करिहौं रघुबीरदोहाई ॥
सहज सनेहु राम लखि तासू। संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू ॥
पुनि गुह ग्याति बोलि सब लीन्हे। करि परितोषु बिदा सब कीन्हे ॥ ८

दोहा। तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ।
सखा अनुज सिय सहित बन गवनु कीन्ह रघुनाथ ॥१०४॥

तेहि दिन भयेउ बिटपतर बासू। लखन सखाँ सब कीन्ह सुपासू ॥
प्रात प्रातकृत करि रघुराई। तीरथराजु दीख प्रभु जाई ॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी। माधव सरिस मीतु हितकारी ॥
चारि पदारथ भरा भँडारू। पुन्यप्रदेस देस अति चारू ॥ ४
छेत्रु अगम गढ़ु गाढ़ सुहावा। सपनेहुँ नहि प्रतिपच्छिन्ह पावा ॥
सेन सकल तीरथ बर बीरा। कलुष अनीक दलन रनधीरा ॥
संगमु सिंहासनु सुठि सोहा। छत्रु अखयबटु मुनिमनु मोहा ॥
चवर जमुन अरु गंग तरंगा। देखि होहिँ दुख दारिद भंगा ॥ ८

दोहा। सेवहिँ सुकृती साधु सुचि पावहिँ सब मनकाम।
बंदी बेद पुरान गन कहहिँ बिमल गुन ग्राम ॥१०५॥

को कहि सकइ प्रयागप्रभाऊ। कलुषपुंज कुंजर मृगराऊ ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा। सुखसागर रघुबर सुखु पावा ॥
कहि सिय लखनहि सखहि सुनाई। श्रीमुख तीरथराजबड़ाई ॥
करि प्रनामु देखत बन बागा। कहत महातम अति अनुरागा ॥ ४
येहि बिधि आइ बिलोकी बेनी। सुमिरत सकल सुमंगल देनी ॥
मुदित नहाइ कीन्हि सिवसेवा। पूजि जथाबिधि तीरथदेवा ॥
तब प्रभु भरद्वाज पहिँ आए। करत दंडवत मुनि उर लाए ॥
मुनिमन मोद न कछु कहि जाई। ब्रह्मानंदरासि जनु पाई ॥ ८

दोहा। दीन्हि असीस मुनीस उर अति अनंदु अस जानि।
लोचनगोचर सुकृतफल मनहुँ किये बिधि आनि ॥१०६॥

कुसल प्रस्न करि आसन दीन्हे। पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे॥
कंद मूल फल अंकुर नीके। दिये आनि मुनि मनहु अमी के॥
सीय लखन जन सहित सुहाये। अति रुचि राम मूल फल खाये॥
भये बिगतश्रम राम सुखारे। भरद्वाज मृदु बचन उचारे॥ ४
आजु सुफल तपु तीरथु त्यागू। आजु सुफल जपु जोग बिरागू॥
सफल सकल सुभ साधन साजू। राम तुम्हहिँ अवलोकत आजू॥
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी। तुम्हरेँ दरस आस सब पूजी॥
अब करि कृपा देहु बर एहू। निज पद सरसिज सहज सनेहू॥ ८

दोहा। करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार।
तब लगि सुखु सपनेहुँ नहीँ किएँ कोटि उपचार॥१०७॥

सुनि मुनिबचन रामु सकुचाने। भाव भगति आनंद अघाने॥
तब रघुबर मुनि सुजसु सुहावा। कोटि भाँति कहि सबहि सुनावा॥
सो बड़ सो सब गुनगन गेहू। जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू॥
मुनि रघुबीर परसपर नवहीँ। बचन अगोचर सुखु अनुभवहीँ॥ ४
येह सुधि पाइ प्रयागनिवासी। बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी॥
भरद्वाज आश्रम सब आए। देखन दसरथसुअन सुहाए॥
राम प्रनाम कीन्ह सब काहू। मुदित भये लहि लोयनलाहू॥
देहिँ असीस परम सुखु पाई। फिरे सराहत सुंदरताई॥ ८

दोहा। राम कीन्ह बिश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ।
चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिरु नाइ॥१०८॥

राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीँ। नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीँ॥
मुनि मन बिहसि राम सन कहहीँ। सुगम सकल मग तुम्ह कहुँ अहहीँ॥
साथ लागि मुनि सिष्य बोलाए। सुनि मन मुदित पचासक आए॥
सबन्हि राम पर प्रेम अपारा। सकल कहहिँ मगु दीख हमारा॥ ४
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे। जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हे॥
करि प्रनामु रिषि आयेसु पाई। प्रमुदित हृदयँ चले रघुराई॥
ग्राम निकट निकसहिँ जब जाई। देखहिँ दरसु नारि नर धाई॥
होहिँ सनाथ जनमफलु पाई। फिरहिँ दुखित मनु संग पठाई॥ ८

दोहा। बिदा किये बहु बिनय करि फिरे पाइ मनकाम।
उतरि नहाये जमुनजल जो सरीर सम स्याम ॥१०९॥

सुनत तीरवासी नर नारी। धाए निज निज काज बिसारी ॥
लखन राम सिय सुंदरताई। देखि करहिँ निज भाग्य बड़ाई ॥
अति लालसा सबहिँ मन माहीँ। नाउँ गाउँ बूझत सकुचाहीँ ॥
जे तिन्ह महुँ बयबिरिध सयाने। तिन्ह करि जुगुति रामु पहिचाने ॥
सकल कथा तिन्ह सबहि सुनाई। बनहि चले पितु आयसु पाई ॥
सुनि सबिषाद सकल पछिताहीँ। रानी राय कीन्ह भल नाहीँ ॥
*तेहि अवसर एकु तापसु आवा। तेजपुंज लघु बयस सुहावा ॥
कबि अलखित गति बेषु बिरागी। मन क्रम बचन राम अनुरागी ॥

दोहा। सजल नयन तन पुलकि निज इष्टदेउ पहिचानि।
परेउ दंड जिमि धरनितल दसा न जाइ बखानि ॥

राम सप्रेम पुलकि उर लावा। परम रंक जनु पारसु पावा ॥
मनहुँ प्रेमु परमारथु दोऊ। मिलत धरेँ तनु कह सब कोऊ ॥
बहुरि लखन पायन्ह सोइ लागा। लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा ॥
पुनि सियचरन धूरि धरि सीसा। जननि जानि सिसु दीन्हि असीसा ॥
कीन्ह निषाद दंडवत तेही। मिलेउ मुदित लखि रामसनेही ॥
पिअत नयन पुट रूपु पियूषा। मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा ॥*
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठये बन बालक ऐसे ॥
राम लखन सिय रूपु निहारी। सोच सनेह बिकल नर नारी ॥

दोहा। तब रघुबीर अनेक बिधि सखहि सिखावनु दीन्ह।
रामरजायसु सीस धरि भवन गवनु तेहि कीन्ह ॥११०॥

पुनि सिय राम लखन कर जोरी। जमुनहि कीन्ह प्रनामु बहोरी ॥
चले ससीय मुदित दोउ भाई। रबितनुजा कै करत बड़ाई ॥
पथिक अनेक मिलहिँ मग जाता। कहहिँ सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥
राजलखन सब अंग तुम्हारेँ। देखि सोचु अति हृदयँ हमारेँ ॥
मारग चलहु पयादेहिँ पायँ। जोतिषु झूठ हमारेँ भायँ ॥
अगमु पंथु गिरि कानन भारी। तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी ॥

करि केहरि बन जाइ न जोई। हम सँग चलहिँ जो आयसु होई ॥
जाव जहाँ लगि तहँ पहुँचाई। फिरब बहोरि तुम्हहि सिरु नाई ॥ ८
दोहा। एहि बिधि पूँछहिँ प्रेमबस पुलक गात जलु नैन।
कृपासिंधु फेरहिँ तिन्हहि कहि बिनीत मृदु बैन ॥१११॥
जे पुर गाँव बसहिँ मग माहीँ। तिन्हहि नाग सुर नगर सिहाहीँ ॥
केहि सुकृतीँ केहि घरीँ बसाए। धन्य पुन्यमय परम सुहाए ॥
जहँ जहँ रामचरन चलि जाहीँ। तिन्ह समान अमरावति नाहीँ ॥
पुन्यपुंज मग निकट निवासी। तिन्हहि सराहहिँ सुरपुरबासी ॥ ४
जे भरि नयन बिलोकहिँ रामहिँ। सीता लखन सहित घनस्यामहिँ ॥
जे सर सरित राम अवगाहहिँ। तिन्हहि देव सर सरित सराहहिँ ॥
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिँ जाई। करहिँ कलपतरु तासु बड़ाई ॥
परसि रामपद पदुम परागा। मानति भूमि भूरि निज भागा ॥ ८
दोहा। छाँह करहिँ घन बिबुधगन बरषहिँ सुमन सिहाहिँ।
देखत गिरि बन बिहग मृग रामु चले मग जाहिँ ॥११२॥
सीता लखन सहित रघुराई। गाँव निकट जब निकसहिँ जाई ॥
सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी। चलहिँ तुरत गृहकाज बिसारी ॥
राम लखन सिय रूप निहारी। पाइ नयनफलु होहिँ सुखारी ॥
सजल बिलोचन पुलक सरीरा। सब भये मगन देखि दोउ बीरा ॥ ४
बरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी। लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ढेरी ॥
एकन्ह एक बोलि सिख देहीँ। लोचनलाहु लेहु छन एहीँ ॥
रामहिँ देखि एक अनुरागे। चितवत चले जाहिँ सँग लागे ॥
एक नयनमग छबि उर आनी। होहिँ सिथिल तन मन बर बानी ॥ ८
दोहा। एक देखि बटछाँह भलि डासि मृदुल तृन पात।
कहहिँ गवाँइअ छिनुकु श्रमु गवनब अबहि कि प्रात ॥११३॥
एक कलस भरि आनहिँ पानी। अँचइअ नाथ कहहिँ मृदु बानी ॥
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी। रामु कृपाल सुसील बिसेषी ॥
जानी श्रमित सीय मन माहीँ। घरिक बिलंबु कीन्ह बटछाहीँ ॥
मुदित नारि नर देखहिँ सोभा। रूप अनूप नयन मनु लोभा ॥ ४

एकटक सब सोहहिँ चहुँ ओरा। रामचंद्रमुख चंद चकोरा॥
तरुन तमाल बरन तनु सोहा। देखत कोटि मदन मनु मोहा॥
दामिनि बरन लखनु सुठि नीके। नख सिख सुभग भावते जी के॥
मुनिपट कटिन्ह कसेँ तूनीरा। सोहहिँ कर कमलनि धनु तीरा॥ ८

दोहा। जटामुकुट सीसनि सुभग उर भुज नयन बिसाल।
सरद परब बिधु बदन पर लसत स्वेदकन जाल॥११४॥

बरनि न जाइ मनोहर जोरी। सोभा बहुत थोरि मति मोरी॥
राम लखन सिय सुंदरताई। सब चितवहिँ चित मन मति लाई॥
थके नारि नर पेमपिआसे। मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से॥
सीय समीप ग्रामतिय जाहीँ। पूँछत अति सनेह सकुचाहीँ॥ ४
बार बार सब लागहिँ पाएँ। कहहिँ बचन मृदु सरल सुभाएँ॥
राजकुमारि बिनय हम करहीँ। तियसुभाय कछु पूँछत डरहीँ॥
स्वामिनि अबिनय छमबि हमारी। बिलगु न मानब जानि गवारी॥
राजकुअँर दोउ सहज सलोने। एन्ह तेँ लही दुति मरकत सोने॥ ८

दोहा। स्यामल गौर किसोर बर सुंदर सुषमा अयन।
सरद सर्बरीनाथ मुख सरद सरोरुह नयन॥११५॥

कोटि मनोज लजावनिहारे। सुमुखि कहहु को आहिँ तुम्हारे॥
सुनि सनेहमय मंजुल बानी। सकुची सिय मन महुँ मुसुकानी॥
तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी। दुहुँ सँकोच सकुचति बरबरनी॥
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी। बोली मधुर बचन पिक बयनी॥ ४
सहज सुभाय सुभग तन गोरे। नामु लखनु लघु देवर मोरे॥
बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी। पिअ तन चितइ भौँह करि बाँकी॥
खंजन मंजु तिरीछे नयननि। निज पति कहेउ तिन्हहि सिय सयननि॥
भईँ मुदित सब ग्रामबधूटीँ। रंकन्ह रायरासि जनु लूटीँ॥ ८

दोहा। अति सप्रेम सिय पायँ परि बहु बिधि देहिँ असीस।
सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जब लगि महि अहिसीस॥११६॥

पारबती सम पतिप्रिय होहू। देवि न हम पर छाड़ब छोहू॥
पुनि पुनि बिनय करिअ कर जोरी। जौँ एहि मारग फिरिअ बहोरी॥

दरसनु देब जानि निज दासीं। लखीं सीय सब पेमपिआसीं॥
मधुर बचन कहि कहि परितोषीं। जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषीं॥ ४
तबहिँ लखन रघुबररुख जानी। पूँछेउ मगु लोगन्हि मृदु बानी॥
सुनत नारि नर भये दुखारी। पुलकित गात बिलोचन बारी॥
मिटा मोदु मन भये मलीने। बिधि निधि दीन्हि लेत जनु छीने॥
समुझि करमगति धीरजु कीन्हा। सोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा॥ ८

दोहा। लखन जानकी सहित तब गवनु कीन्ह रघुनाथ।
फेरे सब प्रिय बचन कहि लिये लाइ मन साथ॥११७॥

फिरत नारि नर अति पछिताहीं। दैअहि दोषु देहिँ मन माहीं॥
सहित बिषाद परसपर कहहीं। बिधिकरतब उलटे सब अहहीं॥
निपट निरंकुस निठुर निसंकू। जेहिँ ससि कीन्ह सरुज सकलंकू॥
रूखु कलपतरु सागरु खारा। तेहिँ पठये बन राजकुमारा॥ ४
जौँ पै इन्हहि दीन्ह बनबासू। कीन्ह बादि बिधि भोग बिलासू॥
ए बिचरहिँ मग बिनु पदत्राना। रचे बादि बिधि बाहन नाना॥
ए महि परहिँ डासि कुस पाता। सुभग सेज कत सृजत बिधाता॥
तरुबर बास इन्हहि बिधि दीन्हा। धवल धाम रचि रचि श्रमु कीन्हा॥ ८

दोहा। जौँ ए मुनिपटधर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार।
बिबिध भाँति भूषन बसन बादि किये करतार॥११८॥

जौँ ए कंद मूल फल खाहीँ। बादि सुधादि असन जग माहीँ॥
एक कहहिँ ए सहज सुहाए। आपु प्रगट भये बिधि न बनाए॥
जहँ लगि बेद कही बिधिकरनी। श्रवन नयन मन गोचर बरनी॥
देखहु खोजि भुअन दस चारी। कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी॥ ४
इन्हहि देखि बिधि मनु अनुरागा। पटतरजोगु बनावइ लागा॥
कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आए। तेहि इरिषा बन आनि दुराए॥
एक कहहिँ हम बहुत न जानहिँ। आपुहि परम धन्य करि मानहिँ॥
ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे। जे देखहिँ देखिहहिँ जिन्ह देखे॥ ८

दोहा। एहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिँ नयन भरि नीर।
किमि चलिहहिँ मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर॥११९॥

नारि सनेह विकल बस होहीँ। चकई साँझ समय जनु सोहीँ॥
मृदु पद कमल कठिन मगु जानी। गहबरि हृदय कहहिँ मृदु बानी॥
परसत मृदुल चरन अरुनारे। सकुचति महि जिमि हृदय हमारे॥
जौँ जगदीस इन्हहि बनु दीन्हा। कस न सुमनमय मारगु कीन्हा॥ ४
जौँ मागा पाइअ विधि पाहीँ। ए रखिअहिँ सखि आँखिन्ह माहीँ॥
जे नर नारि न अवसर आए। तिन्ह सिय रामु न देखन पाए॥
सुनि सरूप बूझहिँ अकुलाई। अब लगि गये कहाँ लँगि भाई॥
समरथ धाइ बिलोकहिँ जाई। प्रमुदित फिरहिँ जनमफलु पाई॥ ८

दोहा। अबला बालक बृद्ध जन कर मीजहिँ पछिताहिँ।
होहिँ प्रेमबस लोग इमि रामु जहाँ जहँ जाहिँ॥१२०॥

गाँव गाँव अस होइ अनंदू। देखि भानुकुल कैरव चंदू॥
जे कछु समाचार सुनि पावहिँ। ते नृप रानिहि दोसु लगावहिँ॥
कहहिँ एक अति भल नरनाहू। दीन्ह हमहिँ जेहि लोचनलाहू॥
कहहिँ परसपर लोग लोगाईँ। बातैँ सरल सनेह सुहाईँ॥ ४
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए। धन्य सो नगरु जहाँ तेँ आए॥
धन्य सो देसु सैलु बन गाऊँ। जहँ जहँ जाहिँ धन्य सोइ ठाऊँ॥
सुखु पायेउ बिरंचि रचि तेही। ए जेहि के सब भाँति सनेही॥
राम लखन पथिकथा सुहाई। रही सकल मग कानन छाई॥ ८

दोहा। एहि बिधि रघुकुल कमल रबि मगलोगन्ह सुख देत।
जाहिँ चले देखत बिपिन सिय सौमित्रि समेत॥१२१॥

आगेँ रामु लखनु बने पाछेँ। तापस बेष बिराजत काछेँ॥
उभय बीच सिय सोहति कैसेँ। ब्रह्म जीव बिच माया जैसेँ॥
बहुरि कहउँ छबि जसि मन बसई। जनु मधु मदन मध्य रति लसई॥
उपमा बहुरि कहौँ जिअ जोही। जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही॥ ४
प्रभुपद रेख बीच बिच सीता। धरति चरन मग चलति सभीता॥
सीय राम पद अंक बरायेँ। लखनु चलहिँ मगु दाहिन लायेँ॥
राम लखन सिय प्रीति सुहाई। बचन अगोचर किमि कहि जाई॥
खग मृग मगन देखि छबि होहीँ। लिये चोरि चित राम बटोहीँ॥ ८

दोहा। जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दोउ भाइ।
भव मगु अगमु अनंदु तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ॥१२२॥

अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ। बसहिँ लखनु सिय राम बटाऊ॥
रामधाम पथु पाइहि सोई। जो पथु पाव कबहुँ मुनि कोई॥
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी। देखि निकट बटु सीतल पानी॥
तहँ बसि कंद मूल फल खाई। प्रात नहाइ चले रघुराई॥ ४
देखत बन सर सैल सुहाए। बालमीकि आश्रम प्रभु आए॥
राम दीख मुनिबास सुहावन। सुंदर गिरि काननु जलु पावन॥
सरनि सरोज बिटप बन फूले। गुंजत मंजु मधुप रसभूले॥
खग मृग बिपुल कोलाहल करहीँ। बिरहित बैर मुदित मन चरहीँ॥ ८

दोहा। सुचि सुंदर आश्रमु निरखि हरषे राजिव नैन।
सुनि रघुबर आगमनु मुनि आगेँ आयेउ लेन॥१२३॥

मुनि कहुँ राम दंडवत कीन्हा। आसिरबादु बिप्रबर दीन्हा॥
देखि रामछबि नयन जुड़ाने। करि सनमान आश्रमहि आने॥
मुनिबर अतिथि प्रानप्रिय पाये। कंद मूल फल मधुर मगाये॥
सिय सौमित्रि राम फल खाए। तब मुनि आसन दिये सुहाए॥ ४
बालमीकि मन आनँदु भारी। मंगल मूरति नयन निहारी॥
तब कर कमल जोरि रघुराई। बोले बचन श्रवन सुखदाई॥
तुम्ह त्रिकालदरसी मुनिनाथा। बिस्व बदर जिमि तुम्हरेँ हाथा॥
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी। जेहिँ जेहिँ भाँति दीन्ह बनु रानी॥ ८

दोहा। तातबचन पुनि मातुहित भाइ भरत अस राउ।
मो कहुँ दरस तुम्हार प्रभु सबु मम पुन्य प्रभाउ॥१२४॥

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे। भये सुकृत सब सुफल हमारे॥
अब जहँ राउर आयसु होई। मुनि उदबेगु न पावइ कोई॥
मुनि तापस जिन्ह तेँ दुख लहहीँ। ते नरेस बिनु पावक दहहीँ॥
मंगलमूल बिप्रपरितोषू। दहइ कोटि कुल भूसुररोषू॥ ४
अस जिय जानि कहिय सोइ ठाऊँ। सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ॥
तहँ रचि रुचिर परन तृन साला। बासु करउँ कछु कालु कृपाला॥

सहज सरल सुनि रघुबरबानी । साधु साधु बोले मुनि ग्यानी ॥
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू । तुम्ह पालक संतत श्रुतिसेतू ॥ ८
छंद । श्रुतिसेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी ।
जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की ।
जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचरधनी ।
सुरकाज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी ॥ १२
सोरठा । राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर ।
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह ॥१२५॥
जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे । बिधि हरि संभु नचावनिहारे ॥
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा । औरु तुम्हहि को जाननिहारा ॥
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई ॥
तुम्हरिहि कृपा तुम्हहि रघुनंदन । जानहिँ भगत भगत उर चंदन ॥ ४
चिदानंदमय देह तुम्हारी । बिगत बिकार जान अधिकारी ॥
नरतनु धरेहु संत सुर काजा । कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । जड़ मोहहिँ बुध होहिँ सुखारे ॥
तुम्ह जो कहहु करहु सबु साँचा । जस काछिअ तस चाहिअ नाँचा ॥ ८
दोहा । पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावउँ ठाउँ ॥१२६॥
सुनि मुनिबचन प्रेमरस साने । सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने ॥
बालमीकि हँसि कहहिँ बहोरी । बानी मधुर अमिअरस बोरी ॥
सुनहु राम अब कहौं निकेता । जहाँ बसहु सिय लखन समेता ॥
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना । कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥ ४
भरहिँ निरंतर होहिँ न पूरे । तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे ॥
लोचन चातक जिन्ह करि राखे । रहहिँ दरस जलधर अभिलाषे ॥
निदरहिँ सरित सिंधु सर भारी । रूप बिंदु जल होहिँ सुखारी ॥
तिन्ह कें हृदयँ सदन सुखदायक । बसहु बंधु सिय सह रघुनायक ॥ ८
दोहा । जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु ।
मुकुताहल गुनगन चुनइ राम बसहु मन तासु ॥१२७॥

प्रभुप्रसाद सुचि सुभग सुबासा। सादर जासु लहइ नित नासा॥
तुम्हहि निबेदित भोजनु करहीं। प्रभुप्रसाद पटु भूषन धरहीं॥
सीस नवहिं सुर गुर द्विज देखी। प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी॥
कर नित करहिं रामपद पूजा। रामभरोस हृदय नहि दूजा॥ ४
चरन रामतीरथ चलि जाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥
मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा। पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा॥
तरपन होम करहिं बिधि नाना। बिप्र जेवाइ देहिं बहु दाना॥
तुम्ह तें अधिक गुरहि जिय जानी। सकल भाय सेवहिं सनमानी॥ ८

दोहा। सबु करि मागहिं एकु फलु रामचरन रति होउ।
तिन्ह के मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ॥१२८॥

काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
जिन्ह कें कपट दंभ नहि माया। तिन्ह कें हृदयँ बसहु रघुराया॥
सब के प्रिय सब के हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी॥ ४
तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥
जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष तें बिष भारी॥
जे हरषहिं परसंपति देखी। दुखित होहिं परबिपति बिसेषी॥
जिन्हहि राम तुम्ह प्रानपिआरे। तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे॥ ८

दोहा। स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात।
मन मंदिर तिन्ह के बसहु सीय सहित दोउ भ्रात॥१२९॥

अवगुन तजि सब के गुन गहहीं। बिप्र धेनु हित संकट सहहीं॥
नीतिनिपुन जिन्ह कइ जग लीका। घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका॥
गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा। जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा॥
रामभगत प्रिय लागहिं जेही। तेहि उर बसहु सहित बैदेही॥ ४
जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई। प्रिय परिवार सदन सुखदाई॥
सब तजि तुम्हहि रहइ लउ लाई। तेहि के हृदय रहहु रघुराई॥
सरगु नरकु अपबरगु समाना। जहँ तहँ देख धरें धनु बाना॥
करम बचन मन राउर चेरा। राम करहु तेहि के उर डेरा॥ ८

दोहा। जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु ॥१३०॥
येहि बिधि मुनिबर भवन देखाए। बचन सप्रेम राममन भाए॥
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक। आश्रमु कहउँ समय सुखदायक॥
चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू॥
सैलु सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग बिहग बिहारू॥ ४
नदी पुनीत पुरान बखानी। अत्रिप्रिया निज तप बल आनी॥
सुरसरिधार नाउँ मंदाकिनि। जो सब पातक पोतक डाकिनि॥
अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं। करहिं जोग जप तप तन कसहीं॥
चलहु सफल श्रम सब कर करहू। राम देहु गौरव गिरिबरहू॥ ८
दोहा। चित्रकूटमहिमा अमित कही महामुनि गाइ।
आइ नहाए सरितबर सिय समेत दोउ भाइ ॥१३१॥
रघुबर कहेउ लखन भल घाटू। करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू॥
लखन दीख पय उतर करारा। चहुँ दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा॥
नदी पनच सर सम दम दाना। सकल कलुष कलि साउज नाना॥
चित्रकूट जनु अचलु अहेरी। चुकइ न घात मार मुठभेरी॥ ४
अस कहि लखन ठाउँ देखरावा। थलु बिलोकि रघुबर सुखु पावा॥
रमेउ राममनु देवन्ह जाना। चले सहित सुरथपति प्रधाना॥
कोल किरात बेष सब आए। रचे परन तृन सदन सुहाए॥
बरनि न जाहिं मंजु दुइ साला। एक ललित लघु एक बिसाला॥ ८
दोहा। लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनिबेष जनु रति रितुराज समेत ॥१३२॥
अमर नाग किंनर दिसिपाला। चित्रकूट आए तेहि काला॥
राम प्रनामु कीन्ह सब काहू। मुदित देव लहि लोचनलाहू॥
बरषि सुमन कह देवसमाजू। नाथ सनाथ भये हम आजू॥
करि बिनती दुख दुसह सुनाए। हरषित निज निज सदन सिधाए॥ ४
चित्रकूट रघुनंदनु छाए। समाचार सुनि सुनि मुनि आए॥
आवत देखि मुदित मुनिबृंदा। कीन्ह दंडवत रघुकुलचंदा॥

मुनि रघुबरहि लाइ उर लेहीँ। सुफल होन हित आसिष देहीँ॥
सिय सौमित्रि राम छबि देखहिँ। साधन सकल सफल करि लेखहिँ॥ ८
दोहा। जथाजोग सनमानि प्रभु बिदा किये मुनिबृंद।
करहिँ जोग जप जाग तप निज आश्रमन्हि सुछंद॥१३३॥
एह सुधि कोल किरातन्ह पाई। हरषे जनु नव निधि घर आई॥
कंद मूल फल भरि भरि दोना। चले रंक जनु लूटन सोना॥
तिन्ह महँ जिन्ह देखें दोउ भ्राता। अपर तिन्हहिँ पूँछहिँ मग जाता॥
कहत सुनत रघुबीरनिकाई। आइ सबन्हि देखे रघुराई॥ ४
करहिँ जोहारु भेँट धरि आगेँ। प्रभुहि बिलोकहिँ अति अनुरागेँ॥
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े। पुलक सरीर नयन जल बाढ़े॥
राम सनेहमगन सब जाने। कहि प्रिय बचन सकल सनमाने॥
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी। बचन बिनीत कहहिँ कर जोरी॥ ८
दोहा। अब हम नाथ सनाथ सब भये देखि प्रभुपाय।
भाग हमारे आगमनु राउर कोसलराय॥१३४॥
धन्य भूमि बन पंथ पहारा। जहँ जहँ नाथ पाउ तुम्ह धारा॥
धन्य बिहग मृग काननचारी। सफल जनम भये तुम्हहि निहारी॥
हम सब धन्य सहित परिवारा। दीख दरसु भरि नयन तुम्हारा॥
कीन्ह बासु भलि ठाउँ बिचारी। इहाँ सकल रितु रहब सुखारी॥ ४
हम सब भाँति करब सेवकाई। करि केहरि अहि बाघ बराई॥
बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा। सब हमार प्रभु पग पग जोहा॥
तहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाउब। सर निरझर भल ठाउँ देखाउब॥
हम सेवक परिवार समेता। नाथ न सकुचब आयसु देता॥ ८
दोहा। बेदबचन मुनिमन अगम ते प्रभु करुना अयन।
बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालकबयन॥१३५॥
रामहि केवल पेमु पिआरा। जानि लेउ जो जाननिहारा॥
राम सकल बनचर तब तोषे। कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे॥
बिदा किये सिर नाइ सिधाए। प्रभुगुन कहत सुनत घर आए॥
एहि बिधि सिय समेत दोउ भाई। बसहिँ बिपिन सुर मुनि सुखदाई॥ ४

जब तें आइ रहे रघुनायकु । तब तें भयेउ बनु मंगलदायकु ॥
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना । मंजु बलित बर बेलि बिताना ॥
सुरतरु सरिस सुभायँ सुहाए । मनहुँ बिबुधबन परिहरि आए ॥
गुंज मंजुतर मधुकरश्रेनी । त्रिबिध बयारि बहइ सुखदेनी ॥ ८
दोहा । नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्क चकोर ।
भाँति भाँति बोलहिं बिहग श्रवनसुखद चितचोर ॥१३६॥
करि केहरि कपि कोल कुरंगा । बिगत बैर बिचरहिं सब संगा ॥
फिरत अहेर रामछबि देखी । होहिं मुदित मृगबृंद बिसेषी ॥
बिबुधबिपिन जहँ लगि जग माहीं । देखि रामबनु सकल सिहाहीं ॥
सुरसरि सरसइ दिनकरकन्या । मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥ ४
सब सर सिंधु नदी नद नाना । मंदाकिनि कर करहिं बखाना ॥
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू । मंदर मेरु सकल सुरबासू ॥
सैल हिमाचल आदिक जेते । चित्रकूटजसु गावहिं तेते ॥
बिंधि मुदित मन सुखु न समाई । श्रम बिनु बिपुल बड़ाई पाई ॥ ८
दोहा । चित्रकूट के बिहग मृग बेलि बिटप तृन जाति ।
पुन्यपुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति ॥१३७॥
नयनवंत रघुबरहि बिलोकी । पाइ जनमफल होहिं बिसोकी ॥
परसि चरनरज अचर सुखारी । भये परम पद के अधिकारी ॥
सो बनु सैलु सुभाय सुहावन । मंगलमय अतिपावन पावन ॥
महिमा कहिअ कवन बिधि तासू । सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू ॥ ४
पयपयोधि तजि अवध बिहाई । जहँ सिय लखनु रामु रहे आई ॥
कहि न सकहिं सुषमा जसि कानन । जौं सत सहस होहिं सहसानन ॥
सो मैं बरनि कहौं बिधि केहीं । डाबरकमठ कि मंदर लेहीं ॥
सेवहिं लखनु करम मन बानी । जाइ न सीलु सनेहु बखानी ॥ ८
दोहा । छिनु छिनु लखि सिय राम पद जानि आपु पर नेहु ।
करत न सपनेहुँ लखनु चित बंधु मातु पितु गेहु ॥१३८॥
रामसंग सिय रहति सुखारी । पुर परिजन गृह सुरति बिसारी ॥
छिनु छिनु पिय बिधु बदनु निहारी । प्रमुदित मनहुँ चकोरकुमारी ॥

नाहनेहु नित बढ़त बिलोकी। हरषित रहति दिवस जिमि कोकी॥
सियमनु रामचरन अनुरागा। अवध सहस सम बनु प्रिय लागा॥ ४
परनकुटी प्रिय प्रियतम संगा। प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा॥
सासु ससुर सम मुनितिय मुनिबर। असनु अमिअ सम कंद मूल फर॥
नाथसाथ साँथरी सुहाई। मयनसयन सय सम सुखदाई॥
लोकप होहिँ बिलोकत जासू। तेहि कि मोहि सक बिषय बिलासू॥ ८

दोहा। सुमिरत रामहिँ तजहिँ जन तृन सम बिषय बिलासु।
रामप्रिया जगजननि सिय कछु न आचरजु तासु॥१३९॥

सीय लखनु जेहि बिधि सुखु लहहीँ। सोइ रघुनाथु करहिँ सोइ कहहीँ॥
कहहिँ पुरातन कथा कहानी। सुनहिँ लखनु सिय अति सुखु मानी॥
जब जब रामु अवधसुधि करहीँ। तब तब बारि बिलोचन भरहीँ॥
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई। भरत सनेहु सीलु सेवकाई॥ ४
कृपासिंधु प्रभु होहिँ दुखारी। धीरजु धरहिँ कुसमउ बिचारी॥
लखि सिय लखनु बिकल होइ जाहीँ। जिमि पुरुषहि अनुसर परिछाहीँ॥
प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदनु। धीर कृपाल भगत उर चंदनु॥
लगे कहन कछु कथा पुनीता। सुनि सुखु लहहिँ लखनु अरु सीता॥ ८

दोहा। रामु लखन सीता सहित सोहत परननिकेत।
जिमि बासव बस अमरपुर सची जयंत समेत॥१४०॥

जोगवहिँ प्रभु सिय लखनहि कैसेँ। पलक बिलोचनगोलक जैसेँ॥
सेवहिँ लखनु सीय रघुबीरहि। जिमि अबिबेकी पुरुष सरीरहि॥
येहि बिधि प्रभु बन बसहिँ सुखारी। खग मृग सुर तापस हितकारी॥
कहेउ राम बनगवनु सुहावा। सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा॥ ४
फिरेउ निषादु प्रभुहि पहुँचाई। सचिव सहित रथ देखेसि आई॥
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू। कहि न जाइ जस भयेउ बिषादू॥
राम राम सिय लखनु पुकारी। परेउ धरनितल ब्याकुल भारी॥
देखि दखिन दिसि हय हिहिनाहीँ। जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीँ॥ ८

दोहा। नहि तृनु चरहिँ न पिअहिँ जलु मोचहिँ लोचन बारि।
ब्याकुल भये निषाद सब रघुबरबाजि निहारि॥१४१॥

धरि धीरजु तब कहइ निषादू । अब सुमंत्र परिहरहु बिषादू ॥
तुम्ह पंडित परमारथग्याता । धरहु धीर लखि बिमुख बिधाता ॥
बिबिध कथा कहि कहि मृदु बानी । रथ बैठारेउ बरबस आनी ॥
सोकसिथिल रथु सकै न हाँकी । रघुबरबिरह पीर उर बाँकी ॥ ४
चरफराहिँ मग चलहिँ न घोरे । बनमृग मनहुँ आनि रथ जोरे ॥
अढुकि परहिँ फिरि हेरहिँ पीछेँ । रामबियोग बिकल दुख तीछेँ ॥
जो कह रामु लखनु बैदेही । हिँकरि हिँकरि हित हेरहिँ तेही ॥
बाजिबिरह गति कहि किमि जाती । बिनु मनि फनिक बिकल जेहिँ भाँती ॥ ८

दोहा । भयेउ निषादु बिषादबस देखत सचिवतुरंग ।
बोलि सुसेवक चारि तब दिये सारथी संग ॥१४२॥

गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई । बिरहु बिषादु बरनि नहि जाई ॥
चले अवध लइ रथहि निषादा । होहिँ छनहिँ छन मगन बिषादा ॥
सोच सुमंत्र बिकल दुख दीना । धिग जीवन रघुबीर बिहीना ॥
रहिहि न अंतहु अधमु सरीरू । जसु न लहेउ बिछुरत रघुबीरू ॥ ४
भये अजस अघ भाजन प्राना । कवन हेतु नहिँ करत पयाना ॥
अहह मंद मनु अवसर चूका । अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका ॥
मीजि हाथ सिरु धुनि पछिताई । मनहुँ कृपन धनरासि गवाई ॥
बिरिद बाँधि बर बीरु कहाई । चलेउ समर जनु सुभट पराई ॥ ८

दोहा । बिप्र बिबेकी बेदबिद संमत साधु सुजाति ।
जिमि धोखेँ मदपान कर सचिव सोच तेहि भाँति ॥१४३॥

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । पतिदेवता करम मन बानी ॥
रहै करमबस परिहरि नाहू । सचिवहृदय तिमि दारुन दाहू ॥
लोचन सजल डीठि भइ थोरी । सुनइँ न श्रवन बिकल मति भोरी ॥
सूखहिँ अधर लागि मुह लाटी । जिउ न जाइ उर अवधि कपाटी ॥ ४
बिबरन भयेउ न जाइ निहारी । मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥
हानि गलानि बिपुल मन ब्यापी । जमपुरपंथ सोच जिमि पापी ॥
बचनु न आव हृदय पछिताई । अवध काह मैं देखब जाई ॥
राम रहित रथु देखिहि जोई । सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई ॥ ८

दोहा। धाइ पूँछिहहिं मोहि जब बिकल नगर नर नारि।
उतरु देब मैं सबहि तब हृदयँ बज्रु बैठारि ॥१४४॥

पुँछिहहिं दीन दुखित सब माता। कहब काह मैं तिन्हहि बिधाता ॥
पूँछिहि जबहिं लखनमहतारी। कहिहौं कवन सँदेस सुखारी ॥
रामजननि जब आइहि धाई। सुमिरि बछु जिमि धेनु लवाई ॥
पूँछत उतर देब मैं तेही। गे बनु राम लखनु बैदेही ॥
जोइ पूँछिहि तेहि ऊतरु देबा। जाइ अवध अब एहु सुखु लेबा ॥
पूँछिहि जबहिं राउ दुखदीना। जिवनु जासु रघुनाथ अधीना ॥
देहौं उतरु कौनु मुहु लाई। आएउँ कुसल कुअँर पहुँचाई ॥
सुनत लखन सिय राम सँदेसू। तृन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू ॥

दोहा। हृदय न बिदरेउ पंक जिमि बिछुरत प्रीतमु नीरु।
जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि येहु जातनासरीरु ॥१४५॥

येहि बिधि करत पंथ पछितावा। तमसा तीर तुरत रथु आवा ॥
बिदा किये करि बिनय निषादा। फिरे पायँ परि बिकल बिषादा ॥
पैठत नगर सचिव सकुचाई। जनु मारेसि गुर बाँभन गाई ॥
बैठि बिटपतर दिवसु गँवावा। साँझ समय तब अवसरु पावा ॥
अवध प्रबेसु कीन्ह अँधियारें। पैठ भवन रथु राखि दुआरें ॥
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए। भूपद्वार रथु देखन आए ॥
रथु पहिचानि बिकल लखि घोरे। गरहिं गात जिमि आतप ओरे ॥
नगर नारि नर ब्याकुल कैसे। निघटत नीर मीनगन जैसे ॥

दोहा। सचिव आगमनु सुनत सबु बिकल भयेउ रनिवासु।
भवन भयंकरु लाग तेहि मानहुँ प्रेतनिवासु ॥१४६॥

अति आरति सब पूँछहिं रानी। उतरु न आव बिकल भइ बानी ॥
सुनइँ न श्रवन नयन नहि सूझा। कहहु कहाँ नृपु तेहि तेहि बूझा ॥
दासिन्ह दीख सचिवबिकलाई। कौसल्यागृह गईं लवाई ॥
जाइ सुमंत्र दीख कस राजा। अमिअ रहित जनु चंदु बिराजा ॥
आसन सयन बिभूषन हीना। परेउ भूमितल निपट मलीना ॥
लेइ उसास सोच येहि भाँती। सुरपुर तें जनु खँसेउ जजाती ॥

लेत सोच भरि छिनु छिनु छाती। जनु जरि पंख परेउ संपाती॥
राम राम कह राम सनेही। पुनि कह राम लखन बैदेही॥ ८

दोहा। देखि सचिव जय जीव कहि कीन्हेउ दंड प्रनामु।
सुनत उठेउ ब्याकुल नृपति कहु सुमंत्र कहँ रामु॥१४७॥

भूप सुमंत्रु लीन्ह उर लाई। बूड़त कछु अधार जनु पाई॥
सहित सनेह निकट बैठारी। पूँछत राउ नयन भरि बारी॥
रामकुसल कहु सखा सनेही। कहँ रघुनाथ लखनु बैदेही॥
आने फेरि कि बनहि सिधाए। सुनत सचिवलोचन जल छाए॥ ४
सोकबिकल पुनि पूँछ नरेसू। कहु सिय राम लखन सँदेसू॥
राम रूप गुन सील सुभाऊ। सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ॥
राज सुनाइ दीन्ह बनबासू। सुनि मन भयेउ न हरषु हराँसू॥
सो सुत बिछुरत गये न प्राना। को पापी बड़ मोहि समाना॥ ८

दोहा। सखा रामु सिय लखनु जहँ तहाँ मोहि पहुँचाउ।
नाहि त चाहत चलन अब प्रान कहौं सतिभाउ॥१४८॥

पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ। प्रियतम सुअन सँदेस सुनाऊ॥
करहि सखा सोइ बेगि उपाऊ। रामु लखनु सिय नयन देखाऊ॥
सचिउ धीर धरि कह मृदु बानी। महाराज तुम्ह पंडित ग्यानी॥
बीर सुधीर धुरंधर देवा। साधुसमाजु सदा तुम्ह सेवा॥ ४
जनम मरन सब दुख सुख भोगा। हानि लाभु प्रिय मिलन बियोगा॥
काल करम बस होहिँ गोसाईँ। बरबस राति दिवस की नाईँ॥
सुख हरषहिँ जड़ दुख बिलखाहीँ। दोउ सम धीर धरहिँ मन माहीँ॥
धीरजु धरहु बिबेक बिचारी। छाड़िअ सोचु सकल हितकारी॥ ८

दोहा। प्रथम बासु तमसा भएउ दूसर सुरसरि तीर।
न्हाइ रहे जलपानु करि सिय समेत दोउ बीर॥१४९॥

केवट कीन्ह बहुत सेवकाई। सो जामिनि सिंगरौर गवाँई॥
होत प्रात बटछीरु मगावा। जटामुकुट निज सीस बनावा॥
रामसखा तब नाव मगाई। प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई॥
लखन बान धनु धरे बनाई। आपु चढ़े प्रभु आयेसु पाई॥ ४

बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरा । बोले मधुर बचन धरि धीरा ॥
तात प्रनामु तात सन कहेहू । बार बार पद पंकज गहेहू ॥
करबि पायँ परि बिनय बहोरी । तात करिअ जनि चिंता मोरी ॥
बनमग मंगल कुसल हमारें । कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारें ॥ ८

छंद । तुम्हरें अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं ।
प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आइहौं ।
जननीं सकल परितोषि परि परि पायँ करि बिनती घनी ।
तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहिं कुसली रहहिं कोसलधनी ॥ १२

सोरठा । गुर सन कहब सँदेसु बार बार पद पदुम गहि ।
करब सोइ उपदेसु जेहिं न सोच मोहि अवधपति ॥१५०॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी । तात सुनायेहु बिनती मोरी ॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी । जा तें रह नरनाहु सुखारी ॥
कहब सँदेसु भरत के आएँ । नीति न तजिअ राजपदु पाएँ ॥
पालेहु प्रजहि करम मन बानी । सेएहु मातु सकल सम जानी ॥ ४
ओर निबाहेहु भायप भाई । करि पितु मातु सुजन सेवकाई ॥
तात भाँति तेहि राखब राऊ । सोच मोर जेहिं करइ न काऊ ॥
लखन कहे कछु बचन कठोरा । बरजि राम पुनि मोहि निहोरा ॥
बार बार निज सपथ देवाई । कहबि न तात लखनलरिकाई ॥ ८

दोहा । कहि प्रनामु कछु कहन लिय सिय भइ सिथिल सनेह ।
थकित बचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह ॥१५१॥

तेहि अवसर रघुबररुख पाई । केवट पारहि नाव चलाई ॥
रघुकुलतिलक चले येहि भाँती । देखउँ ठाढ़ कुलिस धरि छाती ॥
मैं आपन किमि कहउँ कलेसू । जिअत फिरेउँ लेइ रामसँदेसू ॥
अस कहि सचिव बचन रहि गयेऊ । हानि गलानि सोच बस भयेऊ ॥ ४
सूतबचन सुनतहिं नरनाहू । परेउ धरनि उर दारुन दाहू ॥
तलफत बिषम मोह मन मापा । माँजा मनहुँ मीन कहुँ ब्यापा ॥
करि बिलाप सब रोवहिं रानी । महा बिपति किमि जाइ बखानी ॥
सुनि बिलाप दुखहू दुखु लागा । धीरजहू कर धीरजु भागा ॥ ८

दोहा। भयेउ कोलाहलु अवध अति सुनि नृपराउर सोरु।
बिपुल बिहग बन परेउ निसि मानहु कुलिस कठोरु ॥१५२॥

प्रान कंठगत भयेउ भुआलू। मनि बिहीन जनु ब्याकुल ब्यालू ॥
इंद्री सकल बिकल भइँ भारी। जनु सर सरसिजबनु बिनु बारी ॥
कौसल्याँ नृपु दीख मलाना। रबिकुल रबि अँथएउ जियँ जाना ॥
उर धरि धीर राममहतारी। बोली बचन समय अनुसारी ॥ ४
नाथ समुझि मन करिअ बिचारू। रामबियोग पयोधि अपारू ॥
करनधार तुम्ह अवध जहाजू। चढ़ेउ सकल प्रिय पथिकसमाजू ॥
धीरजु धरिअ त पाइअ पारू। नाहि त बूड़िहि सबु परिवारू ॥
जौं जिअ धरिअ बिनय पिअ मोरी। रामु लखनु सिय मिलहिँ बहोरी ॥ ८

दोहा। प्रियाबचन मृदु सुनत नृप चितएउ आँखि उघारि।
तलफत मीन मलीन जनु सींचेउ सीतल बारि ॥१५३॥

धरि धीरजु उठि बैठ भुआलू। कहु सुमंत्र कहँ रामु कृपालू ॥
कहाँ लखनु कहँ रामु सनेही। कहँ प्रिय पुत्रबधू बैदेही ॥
बिलपत राउ बिकल बहु भाँती। भइ जुग सरिस सिराति न राती ॥
तापस अंध साप सुधि आई। कौसल्यहि सब कथा सुनाई ॥ ४
भएउ बिकल बरनत इतिहासा। राम रहित धिग जीवन आसा ॥
सो तनु राखि करबि मैं काहा। जेहिँ न प्रेमपनु मोर निबाहा ॥
हा रघुनंदन प्रानपिरीते। तुम्ह बिनु जिअत बहुत दिन बीते ॥
हा जानकी लखन हा रघुबर। हा पितु हित चित चातक जलधर ॥ ८

दोहा। राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबरबिरह राउ गयेउ सुरधाम ॥१५४॥

जिअन मरन फलु दसरथ पावा। अंड अनेक अमल जसु छावा ॥
जिअत राम बिधु बदनु निहारा। रामबिरह करि मरनु सँवारा ॥
सोकबिकल सब रोवहिँ रानी। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी ॥
करहिँ बिलाप अनेक प्रकारा। परहिँ भूमितल बारहिँ बारा ॥ ४
बिलपहिँ बिकल दास अरु दासी। घर घर रुदनु करहिँ पुरबासी ॥
अँथएउ आजु भानुकुल भानू। धरम अवधि गुन रूप निधानू ॥

गारी सकल कैकइहि देहीँ। नयन बिहीन कीन्ह जग जेहीँ॥
येहि बिधि बिलपत रइनि बिहानी। आए सकल महामुनि ग्यानी॥ ८

दोहा। तब बसिष्ठ मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास।
सोक नेवारेउ सबहि कर निज बिग्यान प्रकास॥१५५॥

तेल नाव भरि नृपतनु राखा। दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा॥
धावहु बेगि भरत पहिँ जाहू। नृपसुधि कतहुँ कहहु जनि काहू॥
एतनेइ कहेहु भरत सन जाई। गुर बोलाइ पठये दोउ भाई॥
सुनि मुनि आएसु धावन धाए। चले बेग बर बाजि लजाए॥ ४
अनरथु अवध अरंभेउ जब तेँ। कुसगुन होहिँ भरत कहुँ तब तेँ॥
देखहिँ राति भयानक सपना। जागि करहिँ कटु कोटि कलपना॥
बिप्र जेँवाइ देहिँ दिन दाना। सिव अभिषेक करहिँ बिधि नाना॥
मागहिँ हृदय महेस मनाई। कुसल मातु पितु परिजन भाई॥ ८

दोहा। एहि बिधि सोचत भरत मन धावन पहुँचे आइ।
गुर अनुसासन श्रवन सुनि चले गनेसु मनाइ॥१५६॥

चले समीरबेग हय हाँके। नाघत सरित सैल बन बाँके॥
हृदय सोचु बड़ कछु न सोहाई। अस जानहिँ जियँ जाउँ उड़ाई॥
एक निमेष बरष सम जाई। येहि बिधि भरत नगरु निअराई॥
असगुन होहिँ नगर पैठारा। रटहिँ कुभाँति कुखेत करारा॥ ४
खर सिआर बोलहिँ प्रतिकूला। सुनि सुनि होइ भरतमन सूला॥
श्रीहत सर सरिता बन बागा। नगरु बिसेषि भयावनु लागा॥
खग मृग हय गय जाहिँ न जोएँ। रामबियोग कुरोग बिगोएँ॥
नगर नारि नर निपट दुखारी। मनहु सबन्ह सब संपति हारी॥ ८

दोहा। पुरजन मिलहिँ न कहहिँ कछु गवहिँ जोहारहिँ जाहिँ।
भरत कुसल पूँछि न सकहिँ भय बिषादु मन माहिँ॥१५७॥

हाट बाट नहि जाइ निहारी। जनु पुर दहँ दिसि लागि दवारी॥
आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि। हरषी रबिकुल जलरुह चंदिनि॥
सजि आरती मुदित उठि धाई। द्वारेँहि भेँटि भवन लेइ आई॥
भरत दुखित परिवारु निहारा। मानहुँ तुहिन बनजबनु मारा॥ ४

कैकेई हरषित एहि भाँती। मनहुँ मुदित दव लाइ किराती॥
सुतहि ससोच देखि मनु मारेँ। पूँछति नैहर कुसल हमारेँ॥
सकल कुसल कहि भरत सुनाई। पूँछी निज कुल कुसल भलाई॥
कहु कहँ तात कहाँ सब माता। कहँ सिय रामु लखन प्रिय भ्राता॥ ८
दोहा। सुनि सुतबचन सनेहमय कपटनीर भरि नयन।
भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि बोली बयन॥१५८॥
तात बात मैं सकल सँवारी। भइ मंथरा सहाय बिचारी॥
कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ। भूपति सुरपतिपुर पगु धारेउ॥
सुनत भरतु भये बिबस बिषादा। जनु सहमेउ करि केहरिनादा॥
तात तात हा तात पुकारी। परे भूमितल ब्याकुल भारी॥ ४
चलत न देखन पाएउँ तोही। तात न रामहि सौंपेहु मोही॥
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी। कहु पितुमरन हेतु महतारी॥
सुनि सुतबचन कहति कैकेई। मरमु पाँछि जनु माहुर देई॥
आदिहु तेँ सब आपनि करनी। कुटिल कठोर मुदित मन बरनी॥ ८
दोहा। भरतहि बिसरेउ पितुमरन सुनत राम बनगौनु।
हेतु अपनपउ जानि जिय थकित रहे धरि मौनु॥१५९॥
बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति। मनहुँ जरे पर लोनु लगावति॥
तात राउ नहि सोचइ जोगू। बिढ़इ सुकृत जसु कीन्हेउ भोगू॥
जीवत सकल जनमफल पाए। अंत अमरपतिसदन सिधाए॥
अस अनुमानि सोचु परिहरहू। सहित समाज राज पुर करहू॥ ४
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू। पाकेँ छत जनु लाग अँगारू॥
धीरजु धरि भरि लेहिँ उसासा। पापिनि सबहि भाँति कुल नासा॥
जौँ पै कुरुचि रही अति तोही। जनमत काहे न मारे मोही॥
पेड़ु काटि तैँ पालउ सींचा। मीन जिअन निति बारि उलीचा॥ ८
दोहा। हंसबंसु दसरथु जनकु राम लखन से भाइ।
जननी तूँ जननी भई बिधि सन कछु न बसाइ॥१६०॥
जब तैँ कुमति कुमत जियँ ठयेऊ। खंड खंड होइ हृदउ न गयेऊ॥
बर मागत मन भइ नहि पीरा। गरि न जीह मुह परेउ न कीरा॥

भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही । मरनकाल बिधि मति हरि लीन्ही ॥
बिधिहुँ न नारिहृदय गति जानी । सकल कपट अघ अवगुन खानी ॥ ४
सरल सुसील धरमरत राऊ । सो किमि जानइँ तीयसुभाऊ ॥
अस को जीव जंतु जग माहीँ । जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीँ ॥
भे अति अहित रामु तेउ तोही । को तूँ अहसि सत्य कहु मोही ॥
जो हसि सो हसि मुहँ मसि लाई । आँखि ओट उठि बैठहि जाई ॥ ८

दोहा । रामबिरोधी हृदय तेँ प्रगट कीन्ह बिधि मोहि ।
मो समान को पातकी बादि कहउँ कछु तोहि ॥१६१॥

सुनि सत्रुघुन मातुकुटिलाई । जरहिँ गात रिस कछु न बसाई ॥
तेहि अवसर कुबरी तहँ आई । बसन बिभूषन बिबिध बनाई ॥
लखि रिस भरेउ लखन लघु भाई । बरत अनल घृत आहुति पाई ॥
हुमगि लात तकि कूबर मारा । परि मुहभर महि करत पुकारा ॥ ४
कूबर टूटेउ फूट कपारू । दलित दसन मुख रुधिरप्रचारू ॥
आह दइअ मैँ काह नसावा । करत नीक फलु अनइस पावा ॥
सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी । लगे घसीटन धरि धरि झोटी ॥
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई । कौसल्या पहिँ गे दोउ भाई ॥ ८

दोहा । मलिन बसन बिबरन बिकल कृस सरीरु दुखभारु ।
कनक कलप बर बेलि बन मानहु हनी तुसारु ॥१६२॥

भरतहि देखि मातु उठि धाई । मुरुछित अवनि परी झइँ आई ॥
देखत भरतु बिकल भये भारी । परे चरन तनदसा बिसारी ॥
मातु तातु कहँ देहि देखाई । कहँ सिय रामु लखनु दोउ भाई ॥
कइकइ कत जनमी जग माँझा । जौँ जनमि त भइ काहे न बाँझा ॥ ४
कुलकलंकु जेहि जनमेउ मोही । अपजसभाजन प्रिय जन द्रोही ॥
को तिभुअन मोहि सरिस अभागी । गति असि तोरि मातु जेहि लागी ॥
पितु सुरपुर बन रघुबरकेतू । मैँ केवल सब अनरथ हेतू ॥
धिग मोहि भयेउँ बेनुबन आगी । दुसह दाह दुख दूषन भागी ॥ ८

दोहा । मातु भरत के बचन मृदु सुनि पुनि उठी सँभारि ।
लिये उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति बारि ॥१६३॥

सरल सुभाय माय हिय लाये । अति हित मनहुँ राम फिरि आये ॥
भेँटेउ वहुरि लखन लघु भाई । सोकु सनेहु न हृदय समाई ॥
देखि सुभाउ कहत सबु कोई । राममातु अस काहे न होई ॥
माता भरतु गोद बैठारे । आँसु पोँछि मृदु बचन उचारे ॥ ४
अजहुँ बच्छ बलि धीरजु धरहू । कुसमउ समुझि सोक परिहरहू ॥
जनि मानहु हियँ हानि गलानी । काल करम गति अघटित जानी ॥
काहुहि दोसु देहु जनि ताता । भा मोहि सब बिधि बाम बिधाता ॥
जो एतेहुँ दुख मोहि जिआवा । अजहुँ को जानै का तेहि भावा ॥ ८

दोहा । पितु आयेसु भूषन बसन तात तजे रघुबीर ।
बिसमउ हरषु न हृदयँ कछु पहिरे बलकलचीर ॥१६४॥

मुख प्रसन्न मन रंगु न रोषू । सब कर सब बिधि करि परितोषू ॥
चले बिपिन सुनि सिय सँग लागी । रहइ न रामचरन अनुरागी ॥
सुनतहिँ लखनु चले उठि साथा । रहहिँ न जतन किये रघुनाथा ॥
तब रघुपति सबही सिरु नाई । चले संग सिय अरु लघु भाई ॥ ४
रामु लखनु सिय बनहि सिधाए । गइउँ न संग न प्रान पठाए ॥
एहु सबु भा इन्ह आँखिन्ह आगेँ । तउ न तजा तनु जीव अभागेँ ॥
मोहि न लाज निज नेहु निहारी । राम सरिस सुत मैं महतारी ॥
जिअइ मरइ भल भूपति जाना । मोर हृदय सत कुलिस समाना ॥ ८

दोहा । कौसल्या के बचन सुनि भरत सहित रनिवासु ।
ब्याकुल बिलपत राजगृहु मानहु सोकनिवासु ॥१६५॥

बिलपहिँ बिकल भरत दोउ भाई । कौसल्या लिए हृदयँ लगाई ॥
भाँति अनेक भरतु समुझाये । कहि विबेकपर बचन सुनाये ॥
भरतहुँ मातु सकल समुझाईं । कहि पुरान श्रुति कथा सुहाईं ॥
छल बिहीन सुचि सरल सुबानी । बोले भरत जोरि जुग पानी ॥ ४
जे अघ मातु पिता सुत मारेँ । गाइगोठ महिसुरपुर जारेँ ॥
जे अघ तिय बालक बध कीन्हे । मीत महीपति माहुर दीन्हे ॥
जे पातक उपपातक अहहीँ । करम बचन मन भव कबि कहहीँ ॥
ते पातक मोहि होहुँ बिधाता । जौं एहु होइ मोर मत माता ॥ ८

दोहा। जे परिहरि हरि हर चरन भजहिँ भूतगन घोर।
तिन्ह कइ गति मोहि देउ बिधि जौँ जननी मत मोर ॥१६६॥

बेचहिँ बेदु धरमु दुहि लेहीँ। पिसुन पराय पाप कहि देहीँ ॥
कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी। बेदबिदूषक बिस्वबिरोधी ॥
लोभी लंपट लोलपचारा। जे ताकहिँ परधनु परदारा ॥
पावउँ मैँ तिन्ह कै गति घोरा। जौँ जननी एहु संमत मोरा ॥
जे नहि साधुसंग अनुरागे। परमारथपथ बिमुख अभागे ॥
जे न भजहिँ हरि नरतनु पाई। जिन्हहि न हरि हर सुजसु सोहाई ॥
तजि श्रुतिपंथु बाम पथ चलहीँ। बंचक बिरचि बेषु जगु छलहीँ ॥
तिन्ह कइ गति मोहि संकरु देऊ। जननी जौँ एहु जानउँ भेऊ ॥

दोहा। मातु भरत के बचन सुनि साँचे सरल सुभाय।
कहति रामप्रिय तात तुम्ह सदा बचन मन काय ॥१६७॥

राम प्रानहु तेँ प्रान तुम्हारे। तुम्ह रघुपतिहि प्रानहु तेँ प्यारे ॥
बिधु बिष चवइ स्रवइ हिमु आगी। होइ बारिचर बारिबिरागी ॥
भयेँ ग्यानु बरु मिटइ न मोहू। तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू ॥
मत तुम्हार येहु जो जग कहहीँ। सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीँ ॥
अस कहि मातु भरतु हिय लाए। थन पय स्रवहिँ नयन जल छाए ॥
करत बिलाप बहुत एहि भाँती। बैठेहिँ बीति गई सब राती ॥
बामदेउ बसिष्ठ तब आए। सचिव महाजन सकल बोलाए ॥
मुनि बहु भाँति भरत उपदेसे। कहि परमारथ बचन सुदेसे ॥

दोहा। तात हृदय धीरजु धरहु करहु जो अवसर आजु।
उठे भरतु गुरबचन सुनि करन कहेउ सबु साजु ॥१६८॥

नृपतनु बेदबिहित अन्हवावा। परम बिचित्रु बिमानु बनावा ॥
गहि पग भरत मातु सब राखीँ। रहीँ रामदरसन अभिलाषीँ ॥
चंदन अगर भार बहु आए। अमित अनेक सुगंध सुहाए ॥
सरजु तीर रचि चिता बनाई। जनु सुरपुरसोपान सुहाई ॥
एहि बिधि दाहक्रिया सब कीन्ही। बिधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्ही ॥
सोधि सुमृति सब बेद पुराना। कीन्ह भरत दसगातबिधाना ॥

जहँ जस मुनिवर आएसु दीन्हा । तहँ तस सहस भाँति सबु कीन्हा ॥
भये बिसुद्ध दिये सबु दाना । धेनु बाजि गज बाहन नाना ॥ ८
दोहा । सिंघासन भूषन बसन अन्न धरनि धन धाम ।
दिये भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरन काम ॥१६९॥
पितु हित भरत कीन्हि जसि करनी । सो मुख लाख जाइ नहि बरनी ॥
सुदिनु सोधि मुनिवर तब आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ॥
बैठे राजसभा सब जाई । पठये बोलि भरत दोउ भाई ॥
भरतु बसिष्ठ निकट बैठारे । नीति धरम मय बचन उचारे ॥ ४
प्रथम कथा सब मुनिबर बरनी । कइकइ कुटिल कीन्हि जसि करनी ॥
भूप धरमब्रतु सत्य सराहा । जेहिँ तनु परिहरि प्रेमु निबाहा ॥
कहत राम गुन सील सुभाऊ । सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ ॥
बहुरि लखन सिय प्रीति बखानी । सोक सनेह मगन मुनि ग्यानी ॥ ८
दोहा । सुनहुँ भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधिहाथ ॥१७०॥
अस बिचारि केहि देइअ दोसू । ब्यरथ काहि पर कीजिअ रोसू ॥
तात बिचारु करहु मन माहीँ । सोचजोगु दसरथु नृपु नाहीँ ॥
सोचिअ बिप्र जो बेद बिहीना । तजि निज धरमु बिषय लयलीना ॥
सोचिअ नृपति जो नीति न जाना । जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना ॥ ४
सोचिअ बयसु कृपन धनवानू । जो न अतिथि सिव भगति सुजानू ॥
सोचिअ सूद्रु बिप्र अवमानी । मुखरु मानप्रिय ग्यानगुमानी ॥
सोचिअ पुनि पतिबंचक नारी । कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी ॥
सोचिअ बटु निज ब्रतु परिहरई । जो नहि गुर आयसु अनुहरई ॥ ८
दोहा । सोचिअ गृही जो मोहबस करइ करमपथ त्याग ।
सोचिअ जती प्रपंचरत बिगत बिबेक बिराग ॥१७१॥
बैखानस सोइ सोचइ जोगू । तपु बिहाइ जेहि भावइ भोगू ॥
सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी । जननि जनक गुर बंधु बिरोधी ॥
सब बिधि सोचिअ पर अपकारी । निज तनु पोषक निरदय भारी ॥
सोचनीय सबही बिधि सोई । जो न छाड़ि छलु हरिजनु होई ॥ ४

सोचनीय नहि कोसलराऊ। भुअन चारि दस प्रगट प्रभाऊ॥
भयेउ न अहइ न अब होनिहारा। भूपु भरत जस पिता तुम्हारा॥
बिधि हरि हरु सुरपति दिसिनाथा। बरनहिं सब दसरथ गुन गाथा॥
दोहा। कहहु तात केहि भाँति कोउ करिहि बड़ाई तासु। ८
राम-लखन तुम्ह सत्रुहन सरिस सुअन सुचि जासु॥१७२॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी। बादि बिषादु करिअ तेहि लागी॥
एहु सुनि समुझि सोचु परिहरहू। सिर धरि राजरजायसु करहू॥
रायँ राजपदु तुम्ह कहुँ दीन्हा। पिताबचनु फुर चाहिअ कीन्हा॥
तजे रामु जेहि बचनहि लागी। तनु परिहरेउ रामबिरहागी॥ ४
नृपहि बचन प्रिय नहि प्रिय प्राना। करहु तात पितुबचन प्रवाना॥
करहु सीस धरि भूपरजाई। हइ तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई॥
परसुराम पितु आग्या राखी। मारी मातु लोक सब साखी॥
तनय जजातिहि जौबनु दएऊ। पितु अग्या अघ अजसु न भएऊ॥ ८
दोहा। अनुचित उचित बिचारु तजि जे पालहिं पितुबयन।
ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति अयन॥१७३॥

अवसि नरेसबचन फुर करहू। पालहु प्रजा सोकु परिहरहू॥
सुरपुर नृपु पाइहि परितोषू। तुम्ह कहँ सुकृतु सुजसु नहि दोषू॥
बेदबिहित संमत सबही का। जेहि पितु देइ सो पावइ टीका॥
करहु राजु परिहरहु गलानी। मानहु मोर बचनु हित जानी॥ ४
सुनि सुखु लहब राम बैदेही। अनुचित कहब न पंडित केही॥
कौसल्यादि सकल महतारी। तेउ प्रजासुख होहिँ सुखारी॥
परम तुम्हार राम कर जानिहि। सो सब बिधि तुम्ह सन भल मानिहि॥
सौंपेहु राजु राम कैं आएँ। सेवा करेहु सनेह सुहाएँ॥ ८
दोहा। कीजिय गुर आयसु अवसि कहहिँ सचिव कर जोरि।
रघुपति आएँ उचित जस तस तब करब बहोरि॥१७४॥

कौसल्या धरि धीरजु कहई। पूत पथ्य गुर आयेसु अहई॥
सो आदरिअ करिअ हित मानी। तजिअ बिषादु कालगति जानी॥
बन रघुपति सुरपुर नरनाहू। तुम्ह एहि भाँति तात कदराहू॥

परिजन प्रजा सचिव सब अंबा। तुम्हहीं सुत सब कहँ अवलंबा॥ ४
लखि बिधि बाम कालकठिनाई। धीरजु धरहु मातु बलि जाई॥
सिर धरि गुर आयसु अनुसरहू। प्रजा पालि पुरजन दुखु हरहू॥
गुर के बचन सचिव अभिनंदनु। सुने भरत हिय हित जनु चंदनु॥
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी। सील सनेह सरल रस सानी॥ ८

छंद। सानी सरल रस मातुबानी सुनि भरतु ब्याकुल भये।
लोचन सरोरुह स्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नये।
सो दसा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की।
तुलसी सराहत सकल सादर सीँव सहज सनेह की॥ १२

सोरठा। भरतु कमल कर जोरि धीरधुरंधर धीर धरि।
बचन अमिअ जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहि॥१७५॥

मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका। प्रजा सचिव संमत सब ही का॥
मातु उचित धरि आयसु दीन्हा। अवसि सीस धरि चाहौं कीन्हा॥
गुर पितु मातु स्वामि हित बानी। सुनि मन मुदित करिअ भलि जानी॥
उचित कि अनुचित किएँ बिचारू। धरमु जाइ सिर पातकभारू॥ ४
तुम्ह तौ देहु सरल सिख सोई। जो आचरत मोर भल होई॥
जद्यपि येह समुझत हउँ नीकेँ। तदपि होत परितोषु न जी कैँ॥
अब तुम्ह बिनय मोरि सुनि लेहू। मोहि अनुहरत सिखावनु देहू॥
उत्तरु देउँ छमब अपराधू। दुखित दोष गुन गनहिँ न साधू॥ ८

दोहा। पितु सुरपुर सिय रामु बन करन कहहु मोहि राजु।
एहि तेँ जानहु मोर हित कै आपन बड़ काजु॥१७६॥

हित हमार सियपतिसेवकाई। सो हरि लीन्ह मातुकुटिलाई॥
मैँ अनुमानि दीखि मन माहीँ। आन उपायँ मोर हित नाहीँ॥
सोकसमाजु राजु केहि लेखेँ। लखन राम सिय पद बिनु देखेँ॥
बादि बसन बिनु भूषनभारू। बादि बिरति बिनु ब्रह्मबिचारू॥ ४
सरुज सरीर बादि बहु भोगा। बिनु हरिभगति जायँ जप जोगा॥
जायँ जीव बिनु देह सुहाई। बादि मोर सबु बिनु रघुराई॥
जाउँ राम पहिँ आयसु देहू। एकहि आँक मोर हित एहू॥

मोहि नृपु करि भल आपन चहहू। सोउ सनेह जड़ता बस कहहू॥ ८
दोहा। कैकेईसुअ कुटिलमति रामविमुख गतलाज।
तुम्ह चाहत सुखु मोहवस मोहि से अधम के राज॥१७७॥
कहौं साचु सब सुनि पतिआहू। चाहिअ धरमसील नरनाहू॥
मोहि राजु हठि देइहहु जबहीं। रसा रसातल जाइहि तबहीं॥
मोहि समान को पापनिवासू। जेहि लगि सीय राम बनबासू॥
रायँ राम कहुँ काननु दीन्हा। बिछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा॥ ४
मैं सठु सब अनरथ कर हेतू। बैठ बात सब सुनउँ सचेतू॥
बिनु रघुबीर बिलोकि अवासू। रहे प्रान सहि जग उपहासू॥
राम पुनीत बिषयरस रूखे। लोलप भूमि भोग के भूखे॥
कहँ लगि कहौं हृदयकठिनाई। निदरि कुलिसु जेहिं लही बड़ाई॥ ८
दोहा। कारन तें कारजु कठिन होइ दोसु नहिं मोर।
कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर॥१७८॥
कैकेईभव तनु अनुरागे। पावर प्रान अघाइ अभागे॥
जौं प्रियबिरह प्रान प्रिय लागे। देखब सुनब बहुत अब आगे॥
लखन राम सिय कहुँ बनु दीन्हा। पठइ अमरपुर पतिहित कीन्हा॥
लीन्ह बिधवपन अपजसु आपू। दीन्हेउ प्रजहि सोकु संतापू॥ ४
मोहि दीन्ह सुखु सुजसु सुराजू। कीन्ह कइकईं सब कर काजू॥
एहि तें मोर काह अब नीका। तेहि पर देन कहहु तुम्ह टीका॥
कइकइजठर जनमि जग माहीं। एह मोहि कहँ कछु अनुचित नाहीं॥
मोरि बात सब बिधिहिं बनाई। प्रजा पाँच कत करहु सहाई॥ ८
दोहा। ग्रहग्रहीत पुनि बातबस तेहि पुनि बीछी मार।
तेहि पिआइअ बारुनी कहहु कौन उपचार॥१७९॥
कैकइ सुअन जोगु जग जोई। चतुर बिरंचि दीन्ह मोहि सोई॥
दसरथतनय राम लघु भाई। दीन्हि मोहि बिधि बादि बड़ाई॥
तुम्ह सबु कहहु कढ़ावन टीका। रायराजु सबही कहँ नीका॥
उतरु देउँ केहि बिधि केहि केही। कहहु सुखेन जथारुचि जेही॥ ४
मोहि कुमातु समेत बिहाई। कहहु कहिहि के कीन्हि भलाई॥

मो बिनु को सचराचर माहीँ। जेहि सिय रामु प्रानप्रिय नाहीँ॥
परम हानि सबु कहँ बड़ लाहू। अदिनु मोर नहि दूषन काहू॥
संसय सील प्रेम बस अहहू। सबुइ उचित सबु जो कछु कहहू॥ ८

दोहा। राममातु सुठि सरल चित मो पर प्रेमु बिसेषि।
कहइ सुभाय सनेह बस मोरि दीनता देखि॥१८०॥

गुर बिबेकसागर जगु जाना। जिन्हहि बिस्व करबदर समाना॥
मो कहँ तिलकसाज सज सोऊ। भयेँ बिधि बिमुख बिमुख सबु कोऊ॥
परिहरि रामु सीय जग माहीँ। कोउ न कहिहि मोर मत नाहीँ॥
सो मैँ सुनब सहब सुखु मानी। अंतहुँ कीँच तहाँ जहँ पानी॥ ४
डरु न मोहि जगु कहिहि कि पोचू। परलोकहु कर नाहिन सोचू॥
एकइ उर बस दुसह दवारी। मोहि लगि भे सिय रामु दुखारी॥
जीवनलाहु लखनु भल पावा। सबु तजि रामचरन मनु लावा॥
मोर जनम रघुबर बन लागी। झूठ काह पछिताउँ अभागी॥ ८

दोहा। आपनि दारुन दीनता कहउँ सबहि सिरु नाइ।
देखेँ बिनु रघुनाथपद जिअ कै जरनि न जाइ॥१८१॥

आन उपाउ मोहि नहि सूझा। को जिअ कै रघुबर बिनु बूझा॥
एकहि आँक इहइ मन माहीँ। प्रातकाल चलिहौँ प्रभु पाहीँ॥
जद्यपि मैँ अनभल अपराधी। भइ मोहि कारन सकल उपाधी॥
तदपि सरन सनमुख मोहि देखी। छमि सब करिहहिँ कृपा बिसेषी॥ ४
सीलु सकुच सुठि सरल सुभाऊ। कृपा सनेह सदन रघुराऊ॥
अरिहु क अनभल कीन्ह न रामा। मैँ सिसु सेवकु जद्यपि बामा॥
तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी। आयसु आसिष देहु सुबानी॥
जेहि सुनि बिनय मोहि जनु जानी। आवहिँ बहुरि रामु रजधानी॥ ८

दोहा। जद्यपि जनमु कुमातु तेँ मैँ सठु सदा सदोस।
आपन जानि न त्यागिहहिँ मोहि रघुबीरभरोस॥१८२॥

भरतबचन सब कहँ प्रिय लागे। रामसनेह सुधा जनु पागे॥
लोग बियोग बिषम बिष दागे। मंत्र सबीज सुनत जनु जागे॥
मातु सचिव गुर पुर नर नारी। सकल सनेहबिकल भये भारी॥

भरतहि कहहिँ सराहि सराही । रामप्रेम मूरति तनु आही ॥ ४
तात भरत अस काहे न कहहू । प्रान समान रामप्रिय अहहू ॥
जो पाँवरु अपनीँ जड़ताईँ । तुम्हहि सुगाइ मातुकुटिलाईँ ॥
सो सठु कोटिक पुरुष समेता । बसहि कलप सत नरकनिकेता ॥
अहि अघ अवगुन नहि मनि गहई । हरइ गरल दुख दारिद दहई ॥ ८
दोहा । अवसि चलिअ बन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह ।
सोक सिंधु बूड़त सबहि तुम्ह अवलंबनु दीन्ह ॥१८३॥
भा सब कें मन मोदु न थोरा । जनु घनधुनि सुनि चातक मोरा ॥
चलत प्रात लखि निरनउ नीके । भरतु प्रानप्रिय भे सब ही के ॥
मुनिहि बंदि भरतहि सिरु नाई । चले सकल घर बिदा कराई ॥
धन्य भरत जीवनु जग माहीँ । सीलु सनेहु सराहत जाहीँ ॥ ४
कहहिँ परसपर भा बड़ काजू । सकल चलइ कर साजहिँ साजू ॥
जेहि राखहिँ रहु घररखवारी । सो जानइ जनु गरदनि मारी ॥
कोउ कह रहन कहिअ नहि काहू । को न चहइ जग जीवनलाहू ॥
दोहा । जरउ सो संपति सदन सुखु सुहृद मातु पितु भाइ । ८
सनमुख होत जो रामपद करइ न सहस सहाइ ॥१८४॥
घर घर साजहिँ बाहन नाना । हरषु हृदयँ परभात पयाना ॥
भरत जाइ घर कीन्ह बिचारू । नगरु बाजि गज भवनु भँडारू ॥
संपति सब रघुपति कै आही । जौँ बिनु जतन चलउँ तजि ताही ॥
तौ परिनाम न मोरि भलाई । पापसिरोमनि साँइदोहाई ॥ ४
करइ स्वामिहित सेवकु सोई । दूषन कोटि देइ किन कोई ॥
अस बिचारि सुचि सेवक बोले । जे सपनेहुँ निज धरम न डोले ॥
कहि सबु मरमु धरमु भल भाषा । जो जेहि लायक सो तेहि राखा ॥
करि सबु जतनु राखि रखवारे । राममातु पहिँ भरतु सिधारे ॥ ८
दोहा । आरत जननी जानि सब भरत सनेहसुजान ।
कहेउ बनावन पालकी सजन सुखासन जान ॥१८५॥
चक चक्कि जिमि पुर नर नारी । चहत प्रात उर आरत भारी ॥
जागत सब निसि भएउ बिहाना । भरत बोलाए सचिव सुजाना ॥

कहेउ लेहु सब तिलकसमाजू। बनहिं देब मुनि रामहिं राजू॥
बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे। तुरत तुरग रथ नाग सँवारे॥ ४
अरुंधती अरु अगिनिसमाऊ। रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ॥
बिप्रबृंद चढ़ि बाहन नाना। चले सकल तप तेज निधाना॥
नगर लोग सब सजि सजि जाना। चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना॥
सिबिका सुभग न जाहिं बखानी। चढ़ि चढ़ि चलत भईं सब रानी॥ ८

दोहा। सौंपि नगरु सुचि सेवकनि सादर सबहि चलाइ।
सुमिरि राम सिय चरन तब चले भरत दोउ भाइ॥१८६॥

रामदरस बस सब नर नारी। जनु करि करिनि चले तकि बारी॥
बन सिय रामु समुझि मन माहीं। सानुज भरत पयादेंहि जाहीं॥
देखि सनेहु लोग अनुरागे। उतरि चले हय गय रथ त्यागे॥
जाइ समीप राखि निज डोली। राममातु मृदु बानी बोली॥ ४
तात चढ़हु रथ बलि महतारी। होइहि प्रिय परिवारु दुखारी॥
तुम्हरे चलत चलिहि सबु लोगू। सकल सोककृस नहि मगजोगू॥
सिर धरि बचन चरन सिरु नाई। रथ चढ़ि चलत भए दोउ भाई॥
तमसा प्रथम दिवस करि बासू। दूसर गोमति तीर निवासू॥ ८

दोहा। पय अहार फल असन एक निसि भोजन एक लोग।
करत राम हित नेम ब्रत परिहरि भूषन भोग॥१८७॥

सई तीर बसि चले बिहाने। सृंगबेरपुर सब निअराने॥
समाचार सब सुने निषादा। हृदयँ बिचार करै सबिषादा॥
कारन कवन भरतु बन जाहीं। है कछु कपटभाउ मन माहीं॥
जौं पै जियँ न होति कुटिलाई। तौ कत लीन्ह संग कटकाई॥ ४
जानहिं सानुज रामहि मारी। करौं अकंटक राजु सुखारी॥
भरत न राजनीति उर आनी। तब कलंकु अब जीवनहानी॥
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा। रामहि समर न जीतनिहारा॥
का आचरजु भरतु अस करहीं। नहि बिष बेलि अमिअ फल फरहीं॥ ८

दोहा। अस बिचारि गुहँ ग्याति सन कहेउ सजग सब होहु।
हथवासहु बोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु॥१८८॥

होहु सँजोइल रोकहु घाटा। ठाटहु सकल मरइ के ठाटा॥
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ। जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ॥
समर मरनु पुनि सुरसरि तीरा। रामकाजु छनभंगु सरीरा॥
भरत भाइ नृप मैं जन नीचू। बड़े भाग असि पाइअ मीचू॥ ४
स्वामिकाज करिहउँ रन रारी। जस धवलिहउँ भुअन दस चारी॥
तजउँ प्रान रघुनाथनिहोरेँ। दूहूँ हाथ मुद मोदक मोरेँ॥
साधुसमाज न जाकर लेखा। रामभगत महँ जासु न रेखा॥
जायँ जिअत जग सो महिभारू। जननीजौबन बिटप कुठारू॥ ८

दोहा। बिगत बिषाद निषादपति सबहि बढ़ाइ उछाहु।
सुमिरि राम मागेउ तुरत तरकस धनुष सनाहु॥१८८॥

बेगहु भाइहु सजहु सँजोऊ। सुनि रजाइ कदराइ न कोऊ॥
भलेँहि नाथ सब कहहिँ सहरषा। एकहि एक बढ़ावइ करषा॥
चले निषाद जोहारि जोहारी। सूर सकल रन रूचइ रारी॥
सुमिरि रामपद पंकज पनहीँ। भाथी बाँधि चढ़ाइन्हि धनहीँ॥ ४
अँगरी पहिरि कूँडि सिर धरहीँ। फरसा बाँस सेल सम करहीँ॥
एक कुसल अति ओड़न खाँडेँ। कूदहिँ गगन मनहु छिति छाँडेँ॥
निज निज साजु समाजु बनाई। गुह राउतहि जोहारे जाई॥
देखि सुभट सब लायक जाने। लइ लइ नाम सकल सनमाने॥ ८

दोहा। भाइहु लावहु धोख जनि आजु काज बड़ मोहि।
सुनि सरोष बोले सुभट बीरु अधीरु न होहि॥१८९॥

रामप्रताप नाथ बल तोरेँ। करहिँ कटकु बिनु भट बिनु घोरेँ॥
जीवत पाउ न पाछेँ धरहीँ। रुंड मुंड मय मेदिनि करहीँ॥
दीख निषादनाथ भल टोलू। कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू॥
एतना कहत छीँक भइ बाएँ। कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहाएँ॥ ४
बूढ़ु एकु कह सगुन बिचारी। भरतहि मिलिअ न होइहि रारी॥
रामहि भरतु मनावन जाहीँ। सगुन कहइ अस बिग्रहु नाहीँ॥
सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा। सहसा करि पछिताहिँ बिमूढ़ा॥
भरत सुभाउ सीलु बिनु बूझेँ। बड़ि हितहानि जानि बिनु जूझेँ॥ ८

दोहा। गहहु घाट भट समिटि सब लेउँ मरमु मिलि जाइ।
बूझि मित्र अरि मध्य गति तब तस करिहौं आइ ॥१८१॥
लखब सनेहु सुभायँ सुहाएँ। बैरु प्रीति नहि दुरइँ दुराएँ॥
अस कहि भेंट सँजोवन लागे। कंद मूल फल खग मृग मागे॥
मीन पीन पाठीन पुराने। भरि भरि भार कहारन्ह आने॥
मिलनसाजु सजि मिलन सिधाए। मंगलमूल सगुन सुभ पाए॥ ४
देखि दूरि तें कहि निज नामू। कीन्ह मुनीसहि दंड प्रनामू॥
जानि रामप्रिय दीन्हि असीसा। भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीसा॥
रामसखा सुनि संदनु त्यागा। चले उतरि उमगत अनुरागा॥
गाउँ जाति गुह नाउँ सुनाई। कीन्ह जोहारु माथ महि लाई॥ ८
दोहा। करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ।
मनहु लखन सन भेंट भइ प्रेमु न हृदयँ समाइ॥१८२॥
भेंटत भरतु ताहि अति प्रीती। लोग सिहाहिँ प्रेम कै रीती॥
धन्य धन्य धुनि मंगलमूला। सुर सराहि तेहि बरिसहिँ फूला॥
लोक बेद सब भाँतिहि नीचा। जासु छाँह छुइ लेइअ सीँचा॥
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता। मिलत पुलक परिपूरित गाता॥ ४
राम राम कहि जे जमुहाहीँ। तिन्हहि न पापपुंज समुहाहीँ॥
यह तौ राम लाइ उर लीन्हा। कुल समेत जगु पावन कीन्हा॥
करमनासजलु सुरसरि परई। तेहि को कहहु सीस नहि धरई॥
उलटा नामु जपत जगु जाना। बालमीकि भये ब्रह्म समाना॥ ८
दोहा। स्वपच सबर खस जमन जड़ पाँवर कोल किरात।
राम कहत पावन परम होत भुवन बिख्यात॥१८३॥
नहि अचिरिजु जुग जुग चलि आई। केहि न दीन्हि रघुबीर बड़ाई॥
राम नाम महिमा सुर कहहीँ। सुनि सुनि अवध लोग सुखु लहहीँ॥
रामसखहि मिलि भरतु सप्रेमा। पूँछी कुसल सुमंगल खेमा॥
देखि भरत कर सीलु सनेहू। भा निषाद तेहि समय बिदेहू॥ ४
सकुच सनेहु मोदु मन बाढ़ा। भरतहि चितवत एकटक ठाढ़ा॥
धरि धीरजु पद बंदि बहोरी। बिनय सप्रेम करत कर जोरी॥

कुसलमूल पद पंकज पेखी। मैं तिहुँ काल कुसल निज लेखी॥
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरें। सहित कोटि कुल मंगल मोरें॥ ८
दोहा। समुझि मोरि करतूति कुलु प्रभुमहिमा जिय जोइ।
जो न भजइ रघुवीरपद जग विधिवंचित सोइ॥१८४॥
कपटी कायर कुमति कुजाती। लोक वेद वाहेर सव भाँती॥
राम कीन्ह आपन जवही तें। भएउँ भुवनभूषन तवही तें॥
देखि प्रीति सुनि बिनय सुहाई। मिलेउ बहोरि भरत लघु भाई॥
कहि निषाद निज नामु सुवानी। सादर सकल जोहारीं रानी॥ ४
जानि लखन सम देहिँ असीसा। जिअहु सुखी सय लाख बरीसा॥
निरखि निषादु नगर नर नारी। भये सुखी जनु लखनु निहारी॥
कहहिँ लहेउ एहि जीवनलाहू। भेँटेउ रामभद्र भरि वाहू॥
सुनि निषादु निज भाग बड़ाई। प्रमुदित मन लै चलेउ लवाई॥ ८
दोहा। सनकारे सेवक सकल चले स्वामिरुख पाइ।
घर तरुतर सर वाग वन वास वनाएन्हि जाइ॥१८५॥
सृंगवेरपुर भरत दीख जव। भे सनेह सव अंग सिथिल तव॥
सोहत दिए निषादहि लागू। जनु तनु धरें बिनय अनुरागू॥
एहि विधि भरत सेनु सवु संगा। दीख जाइ जगपावनि गंगा॥
रामघाट कहँ कीन्ह प्रनामू। भा मनु मगनु मिले जनु रामू॥ ४
करहिँ प्रनाम नगर नर नारी। मुदित ब्रह्ममय वारि निहारी॥
करि मज्जनु माँगहि कर जोरी। रामचंद्रपद प्रीति न थोरी॥
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू। सकल सुखद सेवक सुरधेनू॥
जोरि पानि वर मागउँ एहू। सीय राम पद सहज सनेहू॥ ८
दोहा। एहि विधि मज्जनु भरतु करि गुर अनुसासन पाइ।
मातु नहानी जानि सव डेरा चले लवाइ॥१८६॥
जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा। भरत सोधु सब ही कर लीन्हा॥
सुरसेवा करि आयेसु पाई। राममातु पहिँ गे दोउ भाई॥
चरन चाँपि कहि कहि मृदु वानी। जननी सकल भरत सनमानी॥
भाइहि सौंपि मातुसेवकाई। आपु निषादहि लीन्ह बोलाई॥ ४

चले सखा कर सौं कर जोरें। सिथिल सरीरु सनेहु न थोरें॥
पूँछत सखहि सो ठाउँ देखाऊ। नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ॥
जहँ सिय रामु लखनु निसि सोए। कहत भरे जल लोचनकोए॥
भरतबचन सुनि भयेउ बिषादू। तुरत तहाँ लइ गयेउ निषादू॥ ८

दोहा। जहँ सिंसुपा पुनीत तरु रघुबर किय बिश्रामु।
अति सनेह सादर भरत कीन्हेउ दंड प्रनामु॥१८७॥

कुससाँथरी निहारि सुहाई। कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन जाई॥
चरनरेख रज आँखिन्ह लाई। बनइ न कहत प्रीति अधिकाई॥
कनकबिंदु दुइ चारिक देखे। राखे सीस सीय सम लेखे॥
सजल बिलोचन हृदय गलानी। कहत सखा सन बचन सुबानी॥ ४
श्रीहत सीयबिरह दुतिहीना। जथा अवध नर नारि बिलीना॥
पिता जनक देउँ पटतर केही। करतल भोगु जोगु जग जेही॥
ससुर भानुकुलभानु भुआलू। जेहि सिहात अमरावतिपालू॥
प्राननाथ रघुनाथ गोसाईं। जो बड़ होत सो रामबड़ाईं॥ ८

दोहा। पतिदेवता सुतीय मनि सीय साँथरी देखि।
बिहरत हृदउ न हहरि हर पबि तें कठिन बिसेषि॥१८८॥

लालनजोगु लखन लघु लोने। भे न भाइ अैसे अहहिं न होने॥
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे। सिय रघुबीरहि प्रानपिआरे॥
मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ। तात बाउ तन लाग न काऊ॥
ते बन सहहिं बिपति सब भाँती। निदरे कोटि कुलिस एहि छाती॥ ४
राम जनमि जगु कीन्ह उजागर। रूप सील सुख सब गुन सागर॥
पुरजन परिजन गुर पितु माता। रामसुभाउ सबहि सुखदाता॥
बैरिउ रामबड़ाई करहीं। बोलनि मिलनि बिनय मन हरहीं॥
सारद कोटि कोटि सत सेषा। करि न सकहिं प्रभुगुन गन लेखा॥ ८

दोहा। सुखसरूप रघुबंसमनि मंगल मोद निधान।
ते सोवत कुस डासि महि बिधिगति अति बलवान॥१८९॥

राम सुना दुखु कान न काऊ। जीवनतरु जिमि जोगवइ राऊ॥
पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती। जोगवहिं जननि सकल दिन राती॥

ते अब फिरत बिपिन पदचारी। कंद मूल फल फूल अहारी॥
धिग कैकई अमंगलमूला। भइसि प्रान प्रियतम प्रतिकूला॥ ४
मैं धिग धिग अघ उदधि अभागी। सबु उतपातु भयेउ जेहि लागी॥
कुलकलंकु करि सृजेउ बिधाताँ। साइँदोह मोहि कीन्ह कुमाताँ॥
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू। नाथ करिअ कत बादि बिषादू॥
राम तुम्हहि प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि। येह निरजोसु दोसु बिधि बामहि॥ ८

छंद। बिधि बाम की करनी कठिन जेहिं मातु कीन्ही बावरी।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सरहना रावरी।
तुलसी न तुम्ह सो रामप्रीतमु कहतु हौं सोहैं कियें।
परिनाम मंगलु जानि अपने आनिए धीरजु हियें॥ १२

सोरठा। अंतरजामी रामु सकुच सप्रेम कृपायतन।
चलिअ करिअ बिश्रामु येह बिचारि दृढ़ आनि मन॥२००॥

सखावचन सुनि उर धरि धीरा। बास चले सुमिरत रघुबीरा॥
एह सुधि पाइ नगर नर नारी। चले बिलोकन आरत भारी॥
परदखिना करि करहिं प्रनामा। देहिं कैकइहि खोरि निकामा॥
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं। बाम बिधातहि दूषन देहीं॥ ४
एक सराहहिं भरतसनेहू। कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू॥
निंदहिं आपु सराहि निषादहि। को कहि सकइ बिमोह बिषादहि॥
एहि बिधि राति लोगु सबु जागा। भा भिनुसार गुदारा लागा॥
गुरहि सुनाव चढ़ाइ सुहाईं। नईं नाव सब मातु चढ़ाईं॥ ८
दंड चारि महँ भा सबु पारा। उतरि भरत तब सबहि सँभारा॥

दोहा। प्रातक्रिया करि मातुपद बंदि गुरहि सिरु नाइ।
आगें किये निषादगन दीन्हेउ कटकु चलाइ॥२०१॥

कियेउ निषादनाथु अगुआईं। मातु पालकी सकल चलाईं॥
साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा। बिप्रन्ह सहित गवनु गुर कीन्हा॥
आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू। सुमिरे लखन सहित सिय रामू॥
गवने भरत पयादेहिं पाएँ। कोतल संग जाहिं डोरिआएँ॥ ४
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा। होइअ नाथ अस्व असवारा॥

रामु पयादेहिँ पाय सिधाए। हम कहँ रथ गज बाजि बनाए॥
सिरभर जाउँ उचित अस मोरा। सब तेँ सेवकधरमु कठोरा॥
देखि भरतगति सुनि मृदु बानी। सब सेवकगन गरहिँ गलानी॥ ८

दोहा। भरत तीसरे पहर कहँ कीन्ह प्रबेसु प्रयाग।
कहत राम सिय राम सिय उमगि उमगि अनुराग॥२०२॥

झलका झलकत पायन्ह कैसेँ। पंकजकोस ओसकन जैसेँ॥
भरत पयादेहि आए आजू। भयेउ दुखित सुनि सकल समाजू॥
खबरि लीन्ह सब लोग नहाए। कीन्ह प्रनामु त्रिबेनिहि आए॥
सबिधि सितासित नीर नहाने। दिये दान महिसुर सनमाने॥ ४
देखत स्यामल धवल हलोरे। पुलकि सरीर भरत कर जोरे॥
सकल कामप्रद तीरथराऊ। बेदबिदित जग प्रगट प्रभाऊ॥
मागउँ भीख त्यागि निज धरमू। आरत काह न करइ कुकरमू॥
अस जिय जानि सुजान सुदानी। सफल करहिँ जग जाचकबानी॥ ८

दोहा। अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति रामपद येह बरदानु न आन॥२०३॥

जानहु रामु कुटिल करि मोही। लोगु कहउ गुर साहिब द्रोही॥
सीता राम चरन रति मोरेँ। अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरेँ॥
जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ। जाचत जलु पबि पाहन डारउ॥
चातकु रटनि घटेँ घटि जाई। बढ़ेँ प्रेमु सब भाँति भलाई॥ ४
कनकहि बान चढ़इ जिमि दाहेँ। तिमि प्रियतमपद नेम निबाहेँ॥
भरतबचन सुनि माँझ त्रिबेनी। भइ मृदु बानि सुमंगलदेनी॥
तात भरत तुम्ह सब बिधि साधू। रामचरन अनुराग अगाधू॥
बादि गलानि करहु मन माहीँ। तुम्ह सम रामहि कोउ प्रिय नाहीँ॥ ८

दोहा। तनु पुलकेउ हिय हरषु सुनि बेनिबचन अनुकूल।
भरत धन्य कहि धन्य सुर हरषित बरषहिँ फूल॥२०४॥

प्रमुदित तीरथराजनिवासी। बैखानस बटु गृही उदासी॥
कहहिँ परसपर मिलि दस पाँचा। भरत सनेहु सीलु सुचि साँचा॥
सुनत राम गुन ग्राम सुहाए। भरद्वाज मुनिबर पहिँ आए॥

दंड प्रनामु करत मुनि देखे। मूरतिमंत भाग्य निज लेखे ।। ४
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे। दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे ।।
आसनु दीन्ह नाइ सिरु बैठे। चहत सकुचगृहँ जनु भजि पैठे ।।
मुनि पूँछब किछु येह बड़ सोचू। बोले रिषि लखि सीलु सँकोचू ।।
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई। बिधिकरतब पर किछु न बसाई ।। ८

दोहा। तुम्ह गलानि जियँ जनि करहु समुझि मातुकरतूति।
तात कइकइहि दोसु नहि गई गिरा मति धूति ।।२०५।।

यहउ कहत भल कहिहि न कोऊ। लोकु बेदु बुधसंमत दोऊ ।।
तात तुम्हार बिमल जसु गाई। पाइहि लोकउ बेदु बड़ाई ।।
लोक बेद संमत सबु कहई। जेहि पितु देइ राजु सो लहई ।।
राउ सत्यब्रत तुम्हहि बोलाई। देत राजु सुखु धरमु बड़ाई ।। ४
रामगवनु बन अनरथमूला। जो सुनि सकल बिस्व भइ सूला ।।
सो भावीबस रानि अयानी। करि कुचालि अंतहुँ पछितानी ।।
तहउँ तुम्हार अलप अपराधू। कहइ सो अधमु अयान असाधू ।।
करतेहु राजु त तुम्हहि न दोसू। रामहिँ होत सुनत संतोसू ।। ८

दोहा। अब अति कीन्हेहु भरत भल तुम्हहि उचित मत एहु।
सकल सुमंगल मूल जग रघुबरचरन सनेहु ।।२०६।।

सो तुम्हार धनु जीवन प्राना। भूरि भाग को तुम्हहि समाना ।।
यह तुम्हार आचरजु न ताता। दसरथसुअन राम प्रिय भ्राता ।।
सुनहु भरत रघुपति मन माहीँ। पेमपात्रु तुम्ह सम कोउ नाहीँ ।।
लखन राम सीतहि अति प्रीती। निसि सब तुम्हहि सराहत बीती ।। ४
जाना मरमु नहात प्रयागा। मगन होहिँ तुम्हरे अनुरागा ।।
तुम्ह पर अस सनेहु रघुबर केँ। सुख जीवन जग जस जड़ नर केँ ।।
येह न अधिक रघुबीरबड़ाई। प्रनत कुटुंब पाल रघुराई ।।
तुम्ह तउ भरत मोर मत एहू। धरेँ देहं जनु रामसनेहू ।। ८

दोहा। तुम्ह कहँ भरत कलंक यह हम सब कहँ उपदेसु।
रामभगति रस सिद्धि हित भा यह समउ गनेसु ।।२०७।।

नव बिधु बिमल तात जसु तोरा। रघुबरकिंकर कुमुद चकोरा ।।

उदित सदा अँथइहि कबहूँ ना। घटिहि न जग नभ दिन दिन दूना॥
कोक तिलोक प्रीति अति करिहीं। प्रभु प्रतापु रबि छबिहि न हरिहीं॥
निसि दिन सुखद सदा सब काहू। ग्रसिहि न कैकइकरतबु राहू॥ ४
पूरन राम सुपेम पियूषा। गुर अवमान दोष नहि दूषा॥
रामभगत अब अमिअ अघाहूँ। कीन्हिहु सुलभ सुधा बसुधाहूँ॥
भूप भगीरथ सुरसरि आनी। सुमिरत सकल सुमंगल खानी॥
दसरथ गुन गन बरनि न जाहीं। अधिकु कहा जेहि सम जग नाहीं॥ ८

दोहा। जासु सनेह सकोच बस रामु प्रगट भए आइ।
जे हर हिय नयननि कबहुँ निरखे नहीं अघाइ॥२०८॥

कीरति बिधु तुम्ह कीन्ह अनूपा। जहँ बस रामपेम मृगरूपा॥
तात गलानि करहु जियँ जाएँ। डरहु दरिद्रहि पारसु पाएँ॥
सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं। उदासीन तापस बन रहहीं॥
सब साधन कर सुफल सुहावा। लखन राम सिय दरसनु पावा॥ ४
तेहि फल कर फलु दरसु तुम्हारा। सहित पयाग सुभाग हमारा॥
भरत धन्य तुम्ह जसु जग जयेऊ। कहि अस पेममगन मुनि भयेऊ॥
सुनि मुनिबचन सभासद हरषे। साधु सराहि सुमन सुर बरषे॥
धन्य धन्य धुनि गगन पयागा। सुनि सुनि भरतु मगन अनुरागा॥ ८

। दोहा।

पुलक गात हियँ रामु सिय सजल सरोरुह नयन।
करि प्रनामु मुनिमंडलिहि बोले गदगद बयन॥२०९॥

मुनिसमाजु अरु तीरथराजू। साचिहुँ सपथ अघाइ अकाजू॥
एहि थल जौं किछु कहिय बनाई। एहि सम अधिक न अघ अधमाई॥
तुम्ह सर्बग्य कहउँ सतिभाऊ। उर अंतरजामी रघुराऊ॥
मोहि न मातुकरतब कर सोचू। नहि दुख जियँ जगु जानिहि पोचू॥ ४
नाहिन डरु बिगरिहि परलोकू। पितहु मरन कर मोहि न सोकू॥
सुकृत सुजस भरि भुअन सुहाए। लछिमन राम सरिस सुत पाए॥
रामबिरह तजि तनु छनभंगू। भूपसोच कर कवन प्रसंगू॥
राम लखन सिय बिनु पग पनहीं। करि मुनिबेष फिरहिं बन बनहीं॥ ८

दोहा। अजिन बसन फल असन महि सयन डासि कुस पात।
बसि तरुतर नित सहत हिम आतप बरषा बात ॥२१०॥

एहि दुखदाह दहइ दिन छाती। भूख न बासर नीद न राती ॥
एहि कुरोग कर औषधु नाहीं। सोधेउँ सकल बिस्व मन माहीं ॥
मातुकुमत बढ़ई अघमूला। तेहिं हमार हित कीन्ह बँसूला ॥
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्रू। गाड़ि अवध पढ़ि कठिन कुमंत्रू ॥ ४
मोहि लगि येहु कुठाटु तेहिं ठाटा। घालेसि सबु जगु बारह बाटा ॥
मिटइ कुजोगु राम फिरि आएँ। बसइ अवध नहि आन उपाएँ ॥
भरतबचन सुनि मुनि सुखु पाई। सबहिं कीन्हि बहु भाँति बड़ाई ॥
तात करहु जनि सोचु बिसेषी। सब दुखु मिटिहि रामपग देखी ॥ ८

दोहा। करि प्रबोधु मुनिबर कहेउ अतिथि पेमप्रिय होहु।
कंद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु ॥२११॥

सुनि मुनिबचन भरतहियँ सोचू। भयेउ कुअवसर कठिन सँकोचू ॥
जानि गरुइ गुरगिरा बहोरी। चरन बंदि बोले कर जोरी ॥
सिर धरि आयेसु करिअ तुम्हारा। परम धरम येह नाथ हमारा ॥
भरतबचन मुनिबर मन भाए। सुचि सेवक सिख निकट बोलाए ॥ ४
चाहिअ कीन्हि भरतपहुनाई। कंद मूल फल आनहु जाई ॥
भलेंहि नाथ कहि तिन्ह सिर नाए। प्रमुदित निज निज काज सिधाए ॥
मुनिहि सोचु पाहुन बड़ नेवता। तसि पूजा चाहिअ जस देवता ॥
सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आईं। आयेसु होइ सो करहिं गोसाईं ॥ ८

दोहा। रामबिरह ब्याकुल भरतु सानुज सहित समाज।
पहुनाई करि हरहु श्रमु कहा मुदित मुनिराज ॥२१२॥

रिधि सिधि सिर धरि मुनिबर बानी। बड़भागिनि आपुहि अनुमानी ॥
कहहिं परसपर सिधिसमुदाई। अतुलित अतिथि राम लघु भाई ॥
मुनिपद बंदि करिअ सोइ आजू। होहिं सुखी सब राजसमाजू ॥
अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना। जेहि बिलोकि बिलखाहिं बिमाना ॥ ४
भोग बिभूति भूरि भरि राखे। देखत जिन्हहि अमर अभिलाषे ॥
दासी दास साजु सब लीन्हे। जोगवत रहहिं मनहिं मनु दीन्हे ॥

सबु समाजु सजि सिधि पल माहीं । जे सुख सपनेहुँ सुरपुर नाहीं ॥
प्रथमहि बास दिये सब केही । सुंदर सुखद जथारुचि जेही ॥ ८
दोहा । बहुरि सपरिजन भरत कहुँ रिषि अस आयसु दीन्ह ।
विधि बिसमयदायकु विभव मुनिवर तपबल कीन्ह ॥२१३॥
मुनिप्रभाउ जब भरत बिलोका । सब लघु लगे लोकपति लोका ॥
सुखसमाजु नहि जाइ बखानी । देखत बिरति बिसारहिँ ग्यानी ॥
आसन सयन सुबसन बिताना । बन बाटिका बिहग मृग नाना ॥
सुरभि फूल फल अमिअ समाना । बिमल जलासय बिबिध बिधाना ॥ ४
असन पान सुचि अमिअ अमी से । देखि लोग सकुचात जमी से ॥
सुरसुरभी सुरतरु सबही कें । लखि अभिलाषु सुरेस सची कें ॥
रितु बसंत बह त्रिबिध बयारी । सब कहँ सुलभ पदारथ चारी ॥
स्रक चंदन बनितादिक भोगा । देखि हरष बिसमय बस लोगा ॥ ८
दोहा । संपति चकई भरतु चक मुनि आयस खेलवार ।
तेहि निसि आश्रम पिंजराँ राखे भा भिनुसार ॥२१४॥
कीन्ह निमज्जनु तीरथराजा । नाइ मुनिहि सिरु सहित समाजा ॥
रिषि आयसु असीस सिर राखी । करि दंडवत बिनय बहु भाषी ॥
पथगति कुसल साथ सब लीन्हे । चले चित्रकूटहि चितु दीन्हे ॥
रामसखा कर दीन्हे लागू । चलत देह धरि जनु अनुरागू ॥ ४
नहि पदत्रान सीस नहि छाया । पेमु नेमु ब्रतु धरमु अमाया ॥
लखन राम सिय पंथकहानी । पूँछत सखहि कहत मृदु बानी ॥
रामबास थल बिटप बिलोकें । उर अनुराग रहत नहि रोकें ॥
देखि दसा सुर बरिसहिँ फूला । भइ मृदु महि मगु मंगलमूला ॥ ८
दोहा । किएँ जाहिँ छाया जलद सुखद बहइ बर बात ।
तस मगु भयेउ न राम कहँ जस भा भरतहि जात ॥२१५॥
जड़ चेतन मग जीव घनेरे । जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ॥
ते सब भये परमपद जोगू । भरतदरस मेटा भव रोगू ॥
यह बड़ि बात भरत कइ नाहीँ । सुमिरत जिन्हहि रामु मन माहीँ ॥
बारक राम कहत जग जेऊ । होत तरनतारन नर तेऊ ॥ ४

भरतु रामप्रिय पुनि लघु भ्राता। कस न होइ मगु मंगलदाता॥
सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं। भरतहि निरखि हरषु हिय लहहीं॥
देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू। जगु भल भलेहि पोच कहुँ पोचू॥
गुर सन कहेउ करिअ प्रभु सोई। रामहि भरतहि भेँट न होई॥
दोहा। रामु सँकोची प्रेमबस भरतु सुपेम पयोधि।
बनी बात बेगरन चहति करिअ जतनु छलु सोधि॥२१६॥
बचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने। सहसनयनु बिनु लोचन जाने॥
कह गुर बादि छोभु छलु छाँड़ू। इहाँ कपट करि होइअ भाँड़ू॥
मायापतिसेवक सन माया। करिअ त उलटि परइ सुरराया॥
तब किछु कीन्ह रामरुख जानी। अब कुचालि करि होइहि हानी॥
सुनि सुरेस रघुनाथसुभाऊ। निज अपराध रिसाहिँ न काऊ॥
जो अपराधु भगत कर करई। रामरोष पावक सो जरई॥
लोकहुँ बेद बिदित इतिहासा। येह महिमा जानहिँ दुरबासा॥
भरत सरिस को रामसनेही। जगु जप राम रामु जप जेही॥
दोहा। मनहुँ न आनिअ अमरपति रघुबरभगत अकाजु।
अजसु लोक परलोक दुख दिन दिन सोकसमाजु॥२१७॥
सुनु सुरेस उपदेसु हमारा। रामहिँ सेवकु परम पिआरा॥
मानत सुखु सेवकसेवकाईं। सेवकबैर बैरु अधिकाईं॥
जद्यपि सम नहि राग न रोषू। गहहिँ न पापु पूनु गुनु दोषू॥
करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा॥
तदपि करहिँ सम बिषम बिहारा। भगत अभगत हृदय अनुसारा॥
अगुन अलेप अमान एकरस। राम सगुन भये भगत पेम बस॥
राम सदा सेवकरुचि राखी। बेद पुरान साधु सुर साखी॥
अस जिय जानि तजहु कुटिलाई। करहु भरतपद प्रीति सुहाई॥
दोहा। रामभगत परहित निरत परदुख दुखी दयाल।
भगतसिरोमनि भरत तेँ जनि डरपहु सुरपाल॥२१८॥
सत्यसंध प्रभु सुरहितकारी। भरत राम आयस अनुसारी॥
स्वारथ बिबस बिकल तुम्ह होहू। भरतदोसु नहि राउर मोहू॥

सुनि सुरबर सुरगुर बर बानी। भा प्रमोदु मन मिटी गलानी।।
बरषि प्रसून हरषि सुरराऊ। लगे सराहन भरतसुभाऊ।। ४
एहि बिधि भरतु चले मग जाहीं। दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं।।
जबहिं रामु कहि लेहिं उसासा। उमगत पेम मनहु चहुँ पासा।।
द्रवहिं बचन सुनि कुलिस पषाना। पुरजनपेमु न जाइ बखाना।।
बीच बास करि जमुनहि आए। निरखि नीरु लोचन जल छाए।। ८

दोहा। रघुबरबरन बिलोकि बर बारि समेत समाज।
होत मगन बारिधि बिरह चढ़े बिबेक जहाज।।२१९।।

जमुन तीर तेहि दिन करि बासू। भयेउ समय सम सबहि सुपासू।।
रातिहिं घाट घाट की तरनी। आईं अगनित जाहिं न बरनी।।
प्रात पार भये एकहिं खेवाँ। तोषे रामसखा कीं सेवाँ।।
चले नहाइ नदिहि सिरु नाई। साथ निषादनाथु दोउ भाई।। ४
आगें मुनिबर बाहन आछें। राजसमाजु जाइ सबु पाछें।।
तेहि पाछें दोउ बंधु पयादें। भूषन बसन बेष सुठि सादें।।
सेवक सुहृद सचिवसुत साथा। सुमिरत लखनु सीय रघुनाथा।।
जहँ जहँ राम बास बिश्रामा। तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा।। ८

दोहा। मगबासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धाइ।
देखि सरूप सनेह सब मुदित जनमफलु पाइ।।२२०।।

कहहिं सपेम एक एक पाहीं। रामु लखनु सखि होहिं कि नाहीं।।
बय बपु बरन रूपु सोइ आली। सीलु सनेहु सरिस सम चाली।।
बेषु न सो सखि सीय न संगा। आगें अनी चली चतुरंगा।।
नहि प्रसन्नमुख मानस खेदा। सखि संदेहु होइ एहि भेदा।। ४
तासु तरक तियगन मन मानी। कहहिं सकल तोहि सम न सयानी।।
तेहि सराहि बानी फुरि पूजी। बोली मधुर बचन तिय दूजी।।
कहि सपेम सब कथाप्रसंगू। जेहि बिधि रामराज रसभंगू।।
भरतहि बहुरि सराहन लागी। सील सनेह सुभायँ सुभागी।। ८

दोहा। चलत पयादें खात फल पितादीन्ह तजि राजु।
जात मनावन रघुबरहि भरत सरिस को आजु।।२२१।।

भायप भगति भरत आचरनू। कहत सुनत दुख दूषन हरनू।।
जो कछु कहब थोर सखि सोई। रामबंधु अस काहे न होई।।
हम सब सानुज भरतहि देखेँ। भइन्ह धन्य जुवतीजन लेखेँ।।
सुनि गुन देखि दसा पछिताहीँ। कैकइ जननि जोगु सुतु नाहीँ।। ४
कोउ कह दूषनु रानिहि नाहिन। बिधि सबु कीन्ह हमहि जो दाहिन।।
कहँ हम लोक बेद बिधि हीनी। लघु तिय कुल करतूति मलीनी।।
बसहिँ कुदेस कुगाँव कुबामा। कहँ येह दरसु पुन्यपरिनामा।।
अस अनंदु अचिरिजु प्रतिग्रामा। जनु मरुभूमि कलपतरु जामा।। ८

दोहा। भरतदरसु देखत खुलेउ मग लोगन्ह कर भागु।
जनु सिंघलबासिन्ह भयेउ बिधिबस सुलभ प्रयागु।।२२२।।

निज गुन सहित राम गुन गाथा। सुनत जाहिँ सुमिरत रघुनाथा।।
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा। निरखि निमज्जहिँ करहिँ प्रनामा।।
मनहीँ मन माँगहिँ बरु एहू। सीय राम पद पदुम सनेहू।।
मिलहिँ किरात कोल बनबासी। बैखानस बटु जती उदासी।। ४
करि प्रनामु पूँछहिँ जेहि तेही। केहि बन लखनु रामु बैदेही।।
ते प्रभु समाचार सब कहहीँ। भरतहि देखि जनमफलु लहहीँ।।
जे जन कहहिँ कुसल हम देखे। ते प्रिय राम लखन सम लेखे।।
एहि बिधि बूझत सबहि सुबानी। सुनत राम बनबास कहानी।। ८

दोहा। तेहि बासर बसि प्रातहीँ चले सुमिरि रघुनाथ।
रामदरस की लालसा भरत सरिस सब साथ।।२२३।।

मंगल सगुन होहिँ सब काहू। फरकहिँ सुखद बिलोचन बाहू।।
भरतहि सहित समाज उछाहू। मिलिहहिँ रामु मिटिहि दुखदाहू।।
करत मनोरथ जस जिय जाकेँ। जाहिँ सनेह सुरा सब छाकेँ।।
सिथिल अंग पग मग डगि डोलहिँ। बिहबल बचन पेमबस बोलहिँ।। ४
रामसखाँ तेहि समय देखावा। सैलसिरोमनि सहज सुहावा।।
जासु समीप सरित पय तीरा। सीय समेत बसहिँ दोउ बीरा।।
देखि करहिँ सब दंड प्रनामा। कहि जय जानकिजीवन रामा।।
प्रेममगन अस राजसमाजू। जनु फिरि अवध चले रघुराजू।। ८

दोहा। भरतप्रेमु तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेषु।
कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुखु अहमम मलिन जनेषु॥२२४॥
सकल सनेह सिथिल रघुबर कें। गये कोस दुइ दिनकर ढरकें॥
जलु थलु देखि बसे निसि बीतें। कीन्ह गवनु रघुनाथपिरीतें॥
उहाँ रामु रजनी अवसेषा। जागे सीय सपन अस देखा॥
सहित समाज भरत जनु आए। नाथ बियोग ताप तन ताए॥ ४
सकल मलिन मन दीन दुखारीं। देखीं सासु आन अनुहारीं॥
सुनि सियसपन भरे जल लोचन। भए सोचबस सोचबिमोचन॥
लखन सपन यह नीक न होई। कठिन कुचाह सुनाइहि कोई॥
अस कहि बंधु समेत नहाने। पूजि पुरारि साधु सनमाने॥ ८
छंद। सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे उतर दिसि देखत भये।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आश्रम गये।
तुलसी उठे अवलोकि कारनु काह चित सचकित रहे।
सब समाचार किरात कोलन्हि आइ तेहि अवसर कहे॥ १२
सोरठा। सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भर।
सरदसरोरुह नैन तुलसी भरे सनेहजल॥२२५॥
बहुरि सोचबस भे सियरवनू। कारन कवन भरत आगवनू॥
एक आइ अस कहा बहोरी। सेन संग चतुरंग न थोरी॥
सो सुनि रामहि भा अति सोचू। इत पितुबच इत बंधुसँकोचू॥
भरतसुभाउ समुझि मन माहीं। प्रभुचित हित थिति पावत नाहीं॥ ४
समाधान तब भा यह जाने। भरतु कहे महुँ साधु सयाने॥
लखनु लखेउ प्रभुहृदयँ खभारू। कहत समय सम नीतिबिचारू॥
बिनु पूँछें कछु कहउँ गोसाईं। सेवकु समयँ न ढीठ ढिठाईं॥
तुम्ह सर्बग्यसिरोमनि स्वामी। आपनि समुझि कहउँ अनुगामी॥ ८
दोहा। नाथ सुहृद सुठि सरल चित सील सनेह निधान।
सब पर प्रीति प्रतीति जियँ जानिअ आपु समान॥२२६॥
बिषई जीव पाइ प्रभुताई। मूढ़ मोहबस होहिं जनाई॥
भरतु नीतिरत साधु सुजाना। प्रभुपद प्रेमु सकल जगु जाना॥

तेऊ आजु राजपदु पाई । चले धरममरजाद मेटाई ॥
कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी । जानि रामु बनवास एकाकी ॥
करि कुमंत्रु मन साजि समाजू । आए करइँ अकंटक राजू ॥
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई । आए दलु बटोरि दोउ भाई ॥
जौं जियँ होति न कपट कुचाली । केहि सोहाति रथ बाजि गजाली ॥
भरतहि दोसु देइ को जाएँ । जग बौराइ राजपदु पाएँ ॥

दोहा । ससि गुरतियगामी नघुषु चढ़ेउ भूमिसुरजान ।
लोक बेद तें बिमुख भा अधम न बेन समान ॥२२७॥

सहसबाहु सुरनाथु त्रिसंकू । केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ॥
भरत कीन्ह येह उचित उपाऊ । रिपु रिन रंच न राखब काऊ ॥
एक कीन्हि नहि भरत भलाई । निदरे रामु जानि असहाई ॥
समुझि परिहि सोउ आजु बिसेषी । समर सरोष राममुखु पेखी ॥
एतना कहत नीतिरस भूला । रनरस बिटपु पुलक मिस फूला ॥
प्रभुपद बंदि सीस रज राखी । बोले सत्य सहज बलु भाषी ॥
अनुचित नाथ न मानब मोरा । भरत हमहिँ उपचरा न थोरा ॥
कहँ लगि सहिअ रहिअ मनु मारेँ । नाथ साथ धनु हाथ हमारेँ ॥

दोहा । छत्र जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान ।
लातहुँ मारेँ चढ़ति सिर नीच को धूरि समान ॥२२८॥

उठि कर जोरि रजायसु मागा । मनहुँ बीररस सोवत जागा ॥
बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा । साजि सरासनु सायकु हाथा ॥
आजु रामसेवक जसु लेऊँ । भरतहि समरसिखावन देऊँ ॥
रामनिरादर कर फलु पाई । सोवहुँ समर सेज दोउ भाई ॥
आइ बना भल सकल समाजू । प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू ॥
जिमि करिनिकर दलइ मृगराजू । लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ॥
तैसेहि भरतहि सेन समेता । सानुज निदरि निपातउँ खेता ॥
जौं सहाय कर संकरु आई । तौ मारौं रन रामदोहाई ॥

दोहा । अति सरोष माखे लखनु लखि सुनि सपथ प्रवान ।
सभय लोक सब लोकपति चाहत भभरि भगान ॥२२९॥

जगु भयमगन गगन भइ बानी । लखन बाहु बलु बिपुल बखानी ॥
तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा । को कहि सकइ को जाननिहारा ॥
अनुचित उचित काजु कछु होऊ । समुझि करिअ भल कह सबु कोऊ ॥
सहसा करि पाछैँ पछिताहीँ । कहहिँ बेद बुध ते बुध नाहीँ ॥ ४
सुनि सुरबचन लखन सकुचाने । राम सीय सादर सनमाने ॥
कही तात तुम्ह नीति सुहाई । सब तेँ कठिन राजमदु भाई ॥
जो अँचवत नृप मातहिँ तेई । नाहिन साधुसभा जेहिँ सेई ॥
सुनहु लखन भल भरत सरीसा । बिधिप्रपंच महँ सुना न दीसा ॥ ८

दोहा । भरतहि होइ न राजमदु बिधि हरि हर पद पाइ ।
कबहुँ कि काँजीसीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ ॥२३०॥

तिमिरु तरुन तरनिहि मकु गिलई । गगनु मगन मकु मेघहि मिलई ॥
गोपदजल बूड़हिँ घटजोनी । सहज छमा बरु छाड़इ छोनी ॥
मसकफूँक मकु मेरु उड़ाई । होइ न नृपमदु भरतहि भाई ॥
लखन तुम्हार सपथ पितु आना । सुचि सुबंधु नहि भरत समाना ॥ ४
सगुनु खीरु अवगुन जलु ताता । मिलइ रचइ परपंचु बिधाता ॥
भरतु हंस रबिबंस तड़ागा । जनमि कीन्ह गुन दोष बिभागा ॥
गहि गुन पय तजि अवगुन बारी । निज जस जगत कीन्हि उजिआरी ॥
कहत भरत गुन सीलु सुभाऊ । पेम पयोधि मगन रघुराऊ ॥ ८

दोहा । सुनि रघुबरबानी बिबुध देखि भरत पर हेतु ।
सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेतु ॥२३१॥

जौँ न होत जग जनम भरत को । सकल धरम धुर धरनि धरत को ॥
कबि कुल अगम भरत गुन गाथा । को जानइँ तुम्ह बिनु रघुनाथा ॥
लखनु रामु सिय सुनि सुरबानी । अति सुखु लहेउ न जाइ बखानी ॥
इहाँ भरतु सब सहित सहाए । मंदाकिनी पुनीत नहाए ॥ ४
सरित समीप राखि सब लोगा । मागि मातु गुर सचिव नियोगा ॥
चले भरतु जहँ सिय रघुराई । साथ निषादनाथु लघु भाई ॥
समुझि मातुकरतब सकुचाहीँ । करत कुतरक कोटि मन माहीँ ॥
रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ । उठि जनि अनत जाहिँ तजि ठाऊँ ॥ ८

दोहा। मातुमतेँ महुँ मानि मोहि जो कछु करहिँ सो थोर।
अघ अवगुन छमि आदरहिँ समुझि आपनी ओर ॥२३२॥

जौँ परिहरहिँ मलिनमनु जानी। जौँ सनमानहिँ सेवकु मानी ॥
मोरेँ सरन रामहि कि पनहीँ। रामु सुस्वामि दोसु सब जनहीँ ॥
जग जसभाजन चातक मीना। नेम पेम निज निपुन नवीना ॥
अस मन गुनत चले मग जाता। सकुच सनेह सिथिल सब गाता ॥
फेरति मनहि मातुकृत खोरी। चलत भगतिबल धीरजधोरी ॥
जब समुझत रघुनाथसुभाऊ। तब पथ परत उताइल पाऊ ॥
भरतदसा तेहि अवसर कैसी। जलप्रबाहँ जल अलि गति जैसी ॥
देखि भरत कर सोचु सनेहू। भा निषाद तेहि समय बिदेहू ॥

दोहा। लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषादु।
मिटिहि सोच होइहि हरषु पुनि परिनाम बिषादु ॥२३३॥

सेवकबचन सत्य सब जाने। आश्रम निकट जाइ निअराने ॥
भरत दीख बन सैल समाजू। मुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू ॥
ईति भीति जनु प्रजा दुखारी। त्रिबिध ताप पीड़ित ग्रह मारी ॥
जाइ सुराज सुदेस सुखारी। होहिँ भरतगति तेहि अनुहारी ॥
रामबास बन संपति भ्राजा। सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥
सचिव बिरागु बिबेकु नरेसू। बिपिन सुहावन पावन देसू ॥
भट जम नियम सैल रजधानी। सांति सुमति सुचि सुंदर रानी ॥
सकल अंग संपन्न सुराऊ। रामचरन आश्रित चित चाऊ ॥

दोहा। जीति मोह महिपालु दल सहित बिबेक भुआलु।
करत अकंटक राज्य पुरँ सुख संपदा सुकालु ॥२३४॥

बनप्रदेस मुनिबास घनेरे। जनु पुर नगर गाउँ गन खेरे ॥
बिपुल बिचित्र बिहग मृग नाना। प्रजासमाजु न जाइ बखाना ॥
खगहा करि हरि बाघ बराहा। देखि महिष बृष साजु सराहा ॥
बयरु बिहाइ चरहिँ एक संगा। जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा ॥
झरना झरहिँ मत्त गज गाजहिँ। मनहुँ निसान बिबिध बिध बाजहिँ ॥
चक चकोर चातक सुक पिक गन। कूजत मंजु मराल मुदितमन ॥

अलिगन गावत नाचत मोरा। जनु सुराज मंगल चहुँ ओरा॥
बेलि बिटप तृन सफल सफूला। सब समाजु मुद मंगल मूला॥ ८
दोहा। रामसैल सोभा निरखि भरतहृदय अति पेमु।
तापस तपफलु पाइ जिमि सुखी सिरानें नेमु॥२३५॥
तब केवट ऊँचे चढ़ि धाई। कहेउ भरत सन भुजा उठाई॥
नाथ देखिअहिं बिटप बिसाला। पाकरि जंबु रसाल तमाला॥
तिन्ह तरुबरन्ह मध्य बटु सोहा। मंजु बिसाल देखि मनु मोहा॥
नील सघन पल्लव फल लाला। अबिचल छाँह सुखद सब काला॥ ४
मानहु तिमिर अरुन मय रासी। बिरची बिधि सँकेलि सुषमा सी॥
ए तरु सरित समीप गोसाँई। रघुबर परनकुटी जहँ छाई॥
तुलसी तरुबर बिबिध सोहाए। कहुँ कहुँ सियं कहुँ लखन लगाए॥
बटछायाँ बेदिका बनाई। सिय निज पानि सरोज सुहाई॥ ८
दोहा। जहाँ बैठि मुनिगन सहित नित सिय रामु सुजान।
सुनहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान॥२३६॥
सखावचन सुनि बिटप निहारी। उमगे भरतबिलोचन बारी॥
करत प्रनाम चले दोउ भाई। कहत प्रीति सारद सकुचाई॥
हरषहिं निरखि रामपद अंका। मानहुँ पारसु पाएउ रंका॥
रज सिर धरि हियँ नयनन्हि लावहिं। रघुबरमिलन सरिस सुख पावहिं॥ ४
देखि भरतगति अकथ अतीवा। प्रेममगन मृग खग जड़ जीवा॥
सखहि सनेह बिबस मग भूला। कहि सुपंथ सुर बरषहिं फूला॥
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे। सहज सनेहु सराहन लागे॥
होत न भूतल भाउ भरत को। अचर सचर चर अचर करत को॥ ८
दोहा। पेमु अमिअ मंदरु बिरहु भरतु पयोधि गभीर।
मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुबीर॥२३७॥
सखा समेत मनोहर जोटा। लखेउ न लखन सघन बन ओटा॥
भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन। सकल सुमंगल सदनु सुहावन॥
करत प्रबेस मिटे दुख दावा। जनु जोगीं परमारथु पावा॥
देखे भरत लखन प्रभु आगें। पूँछे बचन कहत अनुरागें॥ ४

सीस जटा कटि मुनिपट बाँधें। तून कसें कर सर धनु काँधें॥
बेदी पर मुनि साधु समाजू। सीय सहित राजत रघुराजू॥
बलकल बसन जटिल तनु स्यामा। जनु मुनिबेषु कीन्ह रति कामा॥
कर कमलनि धनु सायकु फेरत। जिय की जरनि हरत हँसि हेरत॥ ८

दोहा। लसत मंजु मुनिमंडली मध्य सीय रघुचंदु।
ज्ञानसभाँ जनु तनु धरें भगति सच्चिदानंदु॥२३८॥

सानुज सखा समेत मगन मन। बिसरे हरष सोक सुख दुख गन॥
पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं। भूतल परे लकुट की नाईं॥
बचन सपेम लखन पहिचाने। करत प्रनामु भरत जियँ जाने॥
बंधुसनेह सरस एहिं ओरा। उत साहिबसेवाँ बस जोरा॥ ४
मिलि न जाइ नहि गुदरत बनई। सुकबि लखनमन की गति भनई॥
रहे राखि सेवा पर भारू। चढ़ी चंग जनु खैंच खेलारू॥
कहत सप्रेम नाइ महि माथा। भरत प्रनाम करत रघुनाथा॥
उठे रामु सुनि पेम अधीरा। कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा॥ ८

दोहा। बरबस लिए उठाइ उर लाये कृपानिधान।
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान॥२३८॥

मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी। कबि कुल अगम करम मन बानी॥
परम पेम पूरन दोउ भाई। मन बुधि चित अहमिति बिसराई॥
कहहु सुपेम प्रगट को करई। केहि छाया कबिमति अनुहरई॥
कबिहि अरथ आखर बलु साँचा। अनुहरि ताल गतिहि नटु नाँचा॥ ४
अगम सनेहु भरत रघुबर को। जहँ न जाइ मनु बिधि हरि हर को॥
सो मैं कुमति कहौं केहि भाँती। बाज सुराग कि गाँडर ताँती॥
मिलनि बिलोकि भरत रघुबर की। सुरगन सभय धकधकी धरकी॥
समुझाए सुरगुरु जड़ जागे। बरषि प्रसून प्रसंसन लागे॥ ८

दोहा। मिलि सप्रेम रिपुसूदनहि केवटु भेंटेउ राम।
भूरि भायँ भेंटे भरत लछिमन करत प्रनाम॥२४०॥

भेंटेउ लखन ललकि लघु भाई। बहुरि निषादु लीन्ह उर लाई॥
पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्ह बंदे। अभिमत आसिष पाइ अनंदे॥

सानुज भरत उमगि अनुरागा । धरि सिर सियपद पदुम परागा ॥
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाए । सिर कर कमल परसि बैठाए ॥ ४
सीयँ असीस दीन्हि मन माहीं । मगन सनेह देहसुधि नाहीं ॥
सब बिधि सानुकूल लखि सीता । भे निसोच उर अपडर बीता ॥
कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूँछा । प्रेमभरा मनु निज गति छूँछा ॥
तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि । जोरि पानि बिनवत प्रनामु करि ॥ ८

दोहा । नाथ साथ मुनिनाथ कें मातु सकल पुरलोग ।
सेवक सेनप सचिव सब आए बिकल बियोग ॥२४१॥

सीलसिंधु सुनि गुर आगवनू । सिय समीप राखे रिपुदवनू ॥
चले सबेग रामु तेहि काला । धीर धरमधुर दीनदयाला ॥
गुरहि देखि सानुज अनुरागे । दंड प्रनाम करन प्रभु लागे ॥
मुनिबर धाइ लिये उर लाई । प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई ॥ ४
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू । कीन्ह दूरि तें दंड प्रनामू ॥
रामसखा रिषि बरबस भेंटा । जनु महि लुठत सनेहु समेटा ॥
रघुपतिभगति सुमंगलमूला । नभ सराहि सुर बरिसहिं फूला ॥
एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं । बड़ बसिष्ठ सम को जग माहीं ॥ ८

दोहा । जेहि लखि लखनहुँ तें अधिक मिले मुदित मुनिराउ ।
सो सीतापति भजन को प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥२४२॥

आरत लोगु राम सबु जाना । करुनाकर सुजान भगवाना ॥
जो जेहि भायँ रहा अभिलाषी । तेहि तेहि कै तसि तसि रुख राखी ॥
सानुज मिलि पल महुँ सब काहू । कीन्ह दूरि दुखु दारुन दाहू ॥
येह बड़ि बात राम कै नाहीं । जिमि घट कोटि एक रबिछाहीं ॥ ४
मिलि केवटहि उमगि अनुरागा । पुरजन सकल सराहहिं भागा ॥
देखीं राम दुखित महतारीं । जनु सुबेलि अवलीं हिममारीं ॥
प्रथम राम भेंटी कैकेई । सरल सुभायँ भगति मति भेई ॥
पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी । काल करम बिधि सिर धरि खोरी ॥ ८

दोहा । भेंटीं रघुबर मातु सब करि प्रबोधु परितोषु ।
अंब ईस आधीन जगु काहु न देइअ दोषु ॥२४३॥

गुरतिय पद बंदे दुहुँ भाई। सहित बिप्रतिअ जे सँग आईं॥
गंग गौरि सम सब सनमानीं। देहिं असीस मुदित मृदु बानीं॥
गहि पद लगे सुमित्रा अंका। जनु भेंटी संपति अति रंका॥
पुनि जननीचरननि दोउ भ्राता। परे पेमब्याकुल सब गाता॥ ४
अति अनुराग अंब उर लाए। नयन सनेहसलिल अन्हवाए॥
तेहि अवसर कर हरष बिषादू। किमि कबि कहइ मूक जिमि स्वादू॥
मिलि जननिहि सानुज रघुराऊ। गुर सन कहेउ कि धारिअ पाऊ॥
पुरजन पाइ मुनीसनियोगू। जल थल तकि तकि उतरेउं लोगू॥ ८

दोहा। महिसुर मंत्री मातु गुर गने लोग लिए साथ।
पावन आश्रमु गवन किए भरत लखन रघुनाथ॥२४४॥

सीय आइ मुनिबर पग लागी। उचित असीस लही मन मागी॥
गुरपतिनिहि मुनितियन्ह समेता। मिलीं पेमु कहि जाइ न जेता॥
बंदि बंदि पग सिय सबही के। आसिरबचन लहे प्रिय जी के॥
सासु सकल जब सीयँ निहारीं। मूदे नयन सहमि सुकुमारीं॥ ४
परी बधिकबस मनहुँ मरालीं। काह कीन्ह करतार कुचालीं॥
तिन्ह सिय निरखि निपट दुखु पावा। सो सबु सहिय जो दैउ सहावा॥
जनकसुता तब उर धरि धीरा। नील नलिन लोयन भरि नीरा॥
मिली सकल सासुन्ह सिय जाई। तेहि अवसर करुना महि छाई॥ ८

दोहा। लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग।
हृदयँ असीसहिं पेमबस रहिअहु भरी सोहाग॥२४५॥

बिकल सनेह सीय सब रानीं। बैठन सबहि कहेउ गुर ग्यानीं॥
कहि जगगति मायिक मुनिनाथा। कहे कछुक परमारथ गाथा॥
नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा। सुनि रघुनाथ दुसह दुखु पावा॥
मरन हेतु निज नेहु बिचारी। भे अति बिकल धीर धुर धारी॥ ४
कुलिस कठोर सुनत कटु बानी। बिलपत लखन सीय सब रानी॥
सोकबिकल अति सकल समाजू। मानहुँ राजु अकाजेउ आजू॥
मुनिबर बहुरि राम समुझाए। सहित समाज सुसरित नहाए॥
ब्रतु निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा। मुनिहुँ कहें जलु काहु न लीन्हा॥ ८

दोहा। भोरु भयेँ रघुनंदनहि जो मुनि आयसु दीन्ह।
श्रद्धा भगति समेत प्रभु सो सबु सादर कीन्ह ॥२४६॥

करि पितुक्रिया बेद जसि बरनी। भे पुनीत पातक तम तरनी ॥
जासु नाम पावक अघ तूला। सुमिरत सकल सुमंगल मूला ॥
सुद्ध सो भएउ साधुसंमत अस। तीरथ आवाहन सुरसरि जस ॥
सुद्ध भयेँ दुइ बासर बीते। बोले गुर सन राम पिरीते ॥ ४
नाथ लोग सब निपट दुखारी। कंद मूल फल अंबु अहारी ॥
सानुज भरतु सचिव सब माता। देखि मोहि पल जिमि जुग जाता ॥
सब समेत पुर धारिअ पाऊ। आपु इहाँ अमरावति राऊ ॥
बहुत कहेउँ सब कियेउँ ढिठाई। उचित होइ तस करिअ गोसाँई ॥ ८

दोहा। धरमसेतु करुनायतन कस न कहहु अस राम।
लोग दुखित दिन दुइ दरसु देखि लहहुँ बिश्राम ॥२४७॥

रामबचन सुनि सभय समाजू। जनु जलनिधि महुँ बिकल जहाजू ॥
सुनि गुरगिरा सुमंगलमूला। भयेउ मनहुँ मारुत अनुकूला ॥
पावनि पय तिहुँ काल नहाहीँ। जो बिलोकि अघ ओघ नसाहीँ ॥
मंगलमूरति लोचन भरि भरि। निरखहिँ हरषि दंडवत करि करि ॥ ४
राम सैल बन देखन जाहीँ। जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीँ ॥
झरना झरहिँ सुधा सम बारी। त्रिबिध ताप हर त्रिबिध बयारी ॥
बिटप बेलि तृन अगनित जाती। फल प्रसून पल्लव बहु भाँती ॥
सुंदर सिला सुखद तरुछाहीँ। जाइ बरनि बनछबि केहि पाहीँ ॥ ८

दोहा। सरनि सरोरुह जलबिहग कूजत गुंजत भृंग।
बैरबिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग ॥२४८॥

कोल किरात भिल्ल बनबासी। मधु सुचि सुंदर स्वाद सुधा सी ॥
भरि भरि परनपुटीँ रचि रूरीँ। कंद मूल फल अंकुर जूरीँ ॥
सबहि देहिँ करि बिनय प्रनामा। कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा ॥
देहिँ लोग बहु मोल न लेहीँ। फेरत रामदोहाई देहीँ ॥ ४
कहहिँ सनेहमगन मृदु बानी। मानत साधु पेम पहिचानी ॥
तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा। पावा दरसनु रामप्रसादा ॥

हमहिँ अगम अति दरसु तुम्हारा। जस मरुधरनि देवसरिधारा॥
राम कृपाल निषाद नेवाजा। परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा॥ ८

दोहा। यह जियँ जानि सँकोचु तजि करिअ छोहु लखि नेहु।
हमहिँ कृतारथ करन लगि फल तृन अंकुर लेहु॥२४९॥

तुम्ह प्रिय पाहुने बन पगु धारे। सेवाजोगु न भाग हमारे॥
देब काह हम तुम्हहि गोसाईं। ईंधनु पात किरात मिताईं॥
यह हमारि अति बड़ि सेवकाई। लेहिँ न बासन बसन चोराई॥
हम जड़ जीव जीवगन घाती। कुटिल कुचाली कुमति कुजाती॥ ४
पाप करत निसि बासर जाहीँ। नहि पट कटि नहि पेट अघाहीँ॥
सपनेहुँ धरमबुद्धि कस काऊ। यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ॥
जब तेँ प्रभुपद पदुम निहारे। मिटे दुसह दुख दोष हमारे॥
बचन सुनत पुरजन अनुरागे। तिन्ह के भाग सराहन लागे॥ ८

छंद। लागे सराहन भाग सब अनुरागबचन सुनावहीँ।
बोलनि मिलनि सिय राम चरन सनेहु लखि सुखु पावहीँ।
नर नारि निदरहिँ नेहु निज सुनि कोल भिल्लनि की गिरा।
तुलसी कृपा रघुबंसमनि की लोह लै लौका तिरा॥ १२

सोरठा। बिहरहिँ बन चहुँ ओर प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब।
जल ज्योँ दादुर मोर भये पीन पावस प्रथम॥२५०॥

पुर नर नारि मगन अति प्रीती। बासर जाहिँ पलक सम बीती॥
सीय सासु प्रति बेष बनाई। सादर करइ सरिस सेवकाई॥
लखा न मरमु राम बिनु काहूँ। माया सब सियमाया माहूँ॥
सीयँ सासु सेवाबस कीन्ही। तिन्ह लहि सुख सिख आसिष दीन्ही॥ ४
लखि सिय सहित सरल दोउ भाई। कुटिल रानि पछितानि अघाई॥
अवनि जमहि जाचति कैकेई। महि न बीचु बिधि मीचु न देई॥
लोकहुँ बेद बिदित कबि कहहीँ। रामबिमुख थलु नरक न लहहीँ॥
यहु संसउ सब कें मन माहीँ। रामगवनु बिधि अवध कि नाहीँ॥ ८

दोहा। निसि न नीँद नहि भूख दिन भरतु बिकल सुठि सोच।
नीच कीच बिच मगन जस मीनहि सलिलसँकोच॥२५१॥

कीन्हि मातु मिस काल कुचाली। ईति भीति जस पाकत साली॥
केहि बिधि होइ राम अभिषेकू। मोहि अवकलत उपाउ न एकू॥
अवसि फिरहिं गुर आयसु मानी। मुनि पुनि कहब रामरुचि जानी॥
मातु कहेंहु बहुरहिं रघुराऊ। रामजननि हठ करबि कि काऊ॥ ४
मोहि अनुचर कर केतिक बाता। तेहि महँ कुसमउ बाम बिधाता॥
जौं हठ करउँ त निपट कुकरमू। हरगिरि तें गुरु सेवकधरमू॥
एकउ जुगुति न मन ठहरानी। सोचत भरतहि रैनि बिहानी॥
प्रात नहाइ प्रभुहि सिरु नाई। बैठत पठये रिषयँ बोलाई॥ ८

दोहा। गुरपद कमल प्रनामु करि बैठे आयसु पाइ।
विप्र महाजन सचिव सब जुरे सभासद आइ॥२५२॥

बोले मुनिवरु समय समाना। सुनहुँ सभासद भरत सुजाना॥
धरमधुरीन भानुकुलभानू। राजा रामु स्वबस भगवानू॥
सत्यसंध पालक श्रुतिसेतू। रामजनमु जग मंगल हेतू॥
गुर पितु मातु बचन अनुसारी। खलदलु दलन देव हितकारी॥ ४
नीति प्रीति परमारथ स्वारथु। कोउ न राम सम जान जथारथु॥
बिधि हरि हरु ससि रबि दिसिपाला। माया जीव करम कुलि काला॥
अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई। जोगसिद्धि निगमागम गाईं॥
करि बिचार जिय देखहु नीकें। रामरजाइ सीस सबही कें॥ ८

दोहा। राखें राम रजाइ रुख हम सब कर हित होइ।
समुझि सयाने करहु अब सब मिलि संमत सोइ॥२५३॥

सब कहँ सुखद राम अभिषेकू। मंगल मोद मूल मगु एकू॥
केहि बिधि अवध चलहिं रघुराऊ। कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ॥
सब सादर सुनि मुनिबर बानी। नय परमारथ स्वारथ सानी॥
उतरु न आव लोग भये भोरे। तब सिरु नाइ भरत कर जोरे॥ ४
भानुबंस भये भूप घनेरे। अधिक एक तें एक बड़ेरे॥
जनमहेतु सब कहँ पितु माता। करम सुभासुभ देइ बिधाता॥
दलि दुख सजइ सकल कल्याना। अस असीस राउरि जगु जाना॥
सो गोसाँइ बिधिगति जेहिं छेकी। सकइ को टारि टेक जो टेकी॥ ८

दोहा। बूझिअ मोहि उपाउ अब सो सब मोर अभागु।
सुनि सनेहमय बचन गुर उर उमगा अनुरागु ॥२५४॥
तात बात फुरि रामकृपाहीं। रामबिमुख सिधि सपनेहुँ नाहीं॥
सकुचउँ तात कहत एक बाता। अरध तजहिं बुध सरबसु जाता॥
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई। फेरिअहिं लखनु सीय रघुराई॥
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता। भे प्रमोद परिपूरन गाता॥ ४
मन प्रसन्न तन तेजु बिराजा। जनु जिए राउ रामु भये राजा॥
बहुतु लाभु लोगन्ह लघु हानी। सम दुख सुख सब रोवहिं रानी॥
कहहिं भरतु मुनि कहा सो कीन्हे। फलु जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे॥
कानन करउँ जनम भरि बासू। एहि तें अधिक न मोर सुपासू॥ ८
दोहा। अंतरजामी रामु सिय तुम्ह सर्बग्य सुजान।
जौं फुर कहहु त नाथ निज कीजिअ बचनु प्रवान ॥२५५॥
भरतबचन सुनि देखि सनेहू। सभा सहित मुनि भयेउ बिदेहू॥
भरत महा महिमा जलरासी। मुनिमति ठाढ़ि तीर अबला सी॥
गा चह पार जतनु हियँ हेरा। पावति नाव न बोहितु बेरा॥
औरु करिहि को भरतबड़ाई। सरसींसीपि कि सिंधु समाई॥ ४
भरतु मुनिहि मन भीतर भाए। सहित समाज राम पहिँ आए॥
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह सुआसनु। बैठे सब सुनि मुनि अनुसासनु॥
बोले मुनिबरु बचन बिचारी। देस काल अवसर अनुहारी॥
सुनहुँ राम सर्बग्य सुजाना। धरम नीति गुन ग्यान निधाना॥ ८
दोहा। सबकेँ उर अंतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ।
पुरजन जननी भरत हित होइ सो कहिअ उपाउ ॥२५६॥
आरत कहहिं बिचारि न काऊ। सूझ जुआरिहि आपन दाऊ॥
सुनि मुनिबचन कहत रघुराऊ। नाथ तुम्हारेँहि हाथ उपाऊ॥
सब कर हित रुख राउरि राखेँ। आयसु किएँ मुदित फुर भाषेँ॥
प्रथम जो आयसु मो कहँ होई। माथे मानि करउँ सिख सोई॥ ४
पुनि जेहि कहँ जस कहब गोसाईं। सो सब भाँति घटिहि सेवकाईं॥
कह मुनि राम सत्य तुम्ह भाषा। भरत सनेह बिचारु न राखा॥

तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी । भरत भगति बस भइ मति मोरी ॥
मोरें जान भरतरुचि राखी । जो कीजिअ सो सुभ सिव साखी ॥ ८
दोहा । भरतबिनय सादर सुनिअँ करिअँ बिचारु बहोरि ।
करब साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि ॥२५७॥
गुर अनुरागु भरत पर देखी । रामहृदयँ आनंदु बिसेषी ॥
भरतहि धरमधुरंधर जानी । निज सेवक तन मानस बानी ॥
बोले गुर आयस अनुकूला । बचन मंजु मृदु मंगलमूला ॥
नाथसपथ पितुचरन दोहाई । भयेउ न भुअन भरत सम भाई ॥ ४
जे गुरपद अंबुज अनुरागी । ते लोकहुँ बेदहुँ बड़भागी ॥
राउर जा पर अस अनुरागू । को कहि सकइ भरत कर भागू ॥
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई । करत बदन पर भरतबड़ाई ॥
भरतु कहहिं सोइ किएँ भलाई । अस कहि रामु रहे अरगाई ॥ ८
दोहा । तब मुनि बोले भरत सन सबु सँकोचु तजि तात ।
कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कइ बात ॥२५८॥
सुनि मुनिबचन रामरुख पाई । गुर साहिब अनुकूल अघाई ॥
लखि अपनें सिर सबु छरुभारू । कहि न सकहिं किछु करहिं बिचारू ॥
पुलकि सरीर सभाँ भये ठाढ़े । नीरज नयन नेहजल बाढ़े ॥
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा । एहि तें अधिक कहौं मैं काहा ॥ ४
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ । अपराधिहु पर कोह न काऊ ॥
मो पर कृपा सनेहु बिसेषी । खेलत खुनिस न कबहूँ देखी ॥
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू । कबहुँ न कीन्ह मोर मनभंगू ॥
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही । हारेँहु खेल जितावहिं मोही ॥ ८
दोहा । महूँ सनेह सकोच बस सनमुख कहे न बयन ।
दरसन तृपित न आजु लगि पेमपिआसे नयन ॥२५९॥
बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा । नीचँ बीचु जननी मिस पारा ॥
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा । अपनीं समुझि साधु सुचि को भा ॥
मातु मंदि मैं साधु सुचाली । उर अस आनत कोटि कुचाली ॥
फरइ कि कोदव बालि सुसाली । मुकुता प्रसव कि संबुक काली ॥ ४

सपनेहुँ दोस क लेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू ॥
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कहि काकू ॥
हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा। एकहि भाँति भलेंहि भल मोरा ॥
गुरु गोसाँइ साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिनामू ॥ ८
दोहा। साधुसभाँ गुर प्रभु निकट कहउँ सुथल सतिभाउ।
प्रेमप्रपंचु कि झूठ फुर जानहिँ मुनि रघुराउ ॥२६०॥
भूपतिमरनु पेमपनु राखी। जननीकुमति जगतु सबु साखी ॥
देखि न जाहिँ बिकल महतारीँ। जरहिँ दुसह जर पुर नर नारीँ ॥
महीँ सकल अनरथ कर मूला। सो सुनि समुझि सहिउँ सब सूला ॥
सुनि बनगवनु कीन्ह रघुनाथा। करि मुनिवेष लखन सिय साथा ॥ ४
बिनु पानहिन्ह पयादेँहि पाएँ। संकरु साखि रहेउँ एहि घाएँ ॥
बहुरि निहारि निषादसनेहू। कुलिस कठिन उर भएउ न बेहू ॥
अब सबु आँखिन्ह देखेउँ आई। जिअत जीव जड़ सबइ सहाई ॥
जिन्हहि निरखि मग साँपिनि बीछीँ। तजहिँ बिषम बिषु तापस तीछीँ ॥ ८
दोहा। तेइ रघुनंदनु लखनु सिय अनहित लागे जाहि।
तासु तनय तजि दुसह दुख दैउ सहावइ काहि ॥२६१॥
सुनि अति बिकल भरत बर बानी। आरति प्रीति बिनय नय सानी ॥
सोकमगन सब सभा खभारू। मनहुँ कमलबन परेउ तुसारू ॥
कहि अनेक बिधि कथा पुरानी। भरतप्रबोधु कीन्ह मुनि ग्यानी ॥
बोले उचित बचन रघुनंदू। दिनकरकुल कैरवबन चंदू ॥ ४
तात जायँ जियँ करहुँ गलानी। ईस अधीन जीवगति जानी ॥
तीनि काल तिभुअन मत मोरेँ। पुन्यसिलोक तात तर तोरेँ ॥
उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई। जाइ लोकु परलोकु नसाई ॥
दोसु देहिँ जननिहि जड़ तेई। जिन्ह गुर साधु सभा नहि सेई ॥ ८
दोहा। मिटिहइ पापप्रपंच सब अखिल अमंगल भार।
लोक सुजसु परलोक सुखु सुमिरत नामु तुम्हार ॥२६२॥
कहउँ सुभाउ सत्य सिव साखी। भरत भूमि रह राउरि राखी ॥
तात कुतरक करहु जनि जाएँ। बैर पेमु नहि दुरइ दुराएँ ॥

मुनिगन निकट बिहग मृग जाहीँ। बाधक बधिक बिलोकि पराहीँ॥
हित अनहित पसु पंछिउ जाना। मानुपतनु गुन ग्यान निधाना॥ ४
तात तुम्हहि मैँ जानउँ नीकेँ। करउँ काह असमंजसु जी केँ॥
राखेउ रायँ सत्य मोहि त्यागी। तनु परिहरेउ पेमपनु लागी॥
तासु बचन मेटत मन सोचू। तेहि तेँ अधिक तुम्हार सँकोचू॥
ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा। अवसि जो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा॥ ८

दोहा। मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करउँ सोइ आजु।
सत्यसंध रघुबरबचन सुनि भा सुखी समाजु॥२६३॥

सुरगन सहित सभय सुरराजू। सोचहिँ चाहत होन अकाजू॥
बनत उपाउ करत कछु नाहीँ। रामसरन सब गे मन माहीँ॥
बहुरि बिचारि परसपर कहहीँ। रघुपति भगतभगति बस अहहीँ॥
सुधि करि अंबरीष दुरबासा। भे सुर सुरपति निपट निरासा॥ ४
सहे सुरन्ह बहु काल बिषादा। नरहरि किए प्रगट प्रहलादा॥
लगि लगि कान कहहिँ धुनि माथा। अब सुरकाज भरत केँ हाथा॥
आन उपाउ न देखिअ देवा। मानत रामु सुसेवकसेवा॥
हिय सपेम सुमिरहु सब भरतहि। निज गुन सील राम बस करतहि॥ ८

दोहा। सुनि सुरमत सुरगुर कहेउ भल तुम्हार बड़भागु।
सकल सुमंगल मूल जग भरतचरन अनुरागु॥२६४॥

सीतापति सेवक सेवकाई। कामधेनु सय सरिस सुहाई॥
भरतभगति तुम्हरेँ मन आई। तजहु सोचु बिधि बात बनाई॥
देखु देवपति भरतप्रभाऊ। सहज सुभायँ बिबस रघुराऊ॥
मन थिर करहु देव डरु नाहीँ। भरतहि जानि रामपरिछाहीँ॥ ४
सुनि सुरगुर सुरसंमत सोचू। अंतरजामी प्रभुहि सँकोचू॥
निज सिर भारु भरत जियँ जाना। करत कोटि बिधि उर अनुमाना॥
करि बिचारु मन दीन्ही ठीका। रामरजायस आपन नीका॥
निज पनु तजि राखेउ पनु मोरा। छोहु सनेहु कीन्ह नहि थोरा॥ ८

दोहा। कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब बिधि सीतानाथ।
करि प्रनामु बोले भरतु जोरि जलज जुग हाथ॥२६५॥

कहउँ कहावउँ का अब स्वामी। कृपा अंबुनिधि अंतरजामी॥
गुर प्रसन्न साहिब अनुकूला। मिटी मलिन मन कलपित सूला॥
अपडर डरेउँ न सोच समूलें। रबिहि न दोसु देव दिसि भूलें॥
मोर अभागु मातुकुटिलाई। बिधिगति बिषम कालकठिनाई॥
पाउ रोपि सब मिलि मोहि घाला। प्रनतपाल पन आपन पाला॥
यह नइ रीति न राउरि होई। लोकहुँ बेद बिदित नहि गोई॥
जगु अनभल भल एकु गोसाईं। कहिअ होइ भल कासु भलाईं॥
देउ देवतरु सरिस सुभाऊ। सनमुख बिमुख न काहुहि काऊ॥
दोहा। जाइ निकट पहिचानि तरु छाँह समनि सब सोच।
मागत अभिमत पाव जगु राउ रंकु भल पोच॥२६६॥
लखि सब बिधि गुर स्वामि सनेहू। मिटेउ छोभु नहि मन संदेहू॥
अब करुनाकर कीजिअ सोई। जन हित प्रभुचित छोभु न होई॥
जो सेवकु साहिबहि सँकोची। निज हित चहइ तासु मति पोची॥
सेवकहित साहिबसेवकाई। करइ सकल सुख लोभ बिहाई॥
स्वारथु नाथ फिरें सब ही का। किएँ रजाइ कोटि बिधि नीका॥
येह स्वारथ परमारथ सारू। सकल सुकृत फल सुगतिसिंगारू॥
देव एक बिनती सुनि मोरी। उचित होइ तस करब बहोरी॥
तिलकसमाजु साजि सबु आना। करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना॥
दोहा। सानुज पठइअ मोहि बन कीजिअ सबहि सनाथ।
नतरु फेरिअहिं बंधु दोउ नाथ चलउँ मैं साथ॥२६७॥
नतरु जांहिं बन तीनिउँ भाई। बहुरिअ सीय सहित रघुराई॥
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई। करुनासागर कीजिअ सोई॥
देवँ दीन्ह सबु मोहि अभारू। मोरें नीति न धरम बिचारू॥
कहउँ बचन सब स्वारथहेतू। रहत न आरत कें चित चेतू॥
उतरु देइ सुनि स्वामिरजाई। सो सेवकु लखि लाज लजाई॥
अस मैं अवगुन उदधि अगाधू। स्वामिसनेह सराहत साधू॥
अब कृपाल मोहि सो मत भावा। सकुच स्वामिमन जाइ न पावा॥
प्रभुपद सपथ कहउँ सतिभाऊ। जगमंगल हित एक उपाऊ॥

दोहा। प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देब।
सो सिर धरि धरि करिहि सबु मिटिहि अनट अवरेब ॥२६८॥

भरतबचन सुचि सुनि सुर हरषे। साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥
असमंजसबस अवधनेवासी। प्रमुदितमन तापस बनबासी ॥
चुपहिँ रहे रघुनाथ सँकोची। प्रभुगति देखि सभा सब सोची ॥
जनकदूत तेहि अवसर आए। मुनि बसिष्ठ सुनि बेगि बोलाए ॥ ४
करि प्रनामु तिन्ह रामु निहारे। बेषु देखि भए निपट दुखारे ॥
दूतन्ह मुनिबरँ बूझी बाता। कहहु बिदेहभूप कुसलाता ॥
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा। बोले चरबर जोरेँ हाथा ॥
बूझब राउर सादर साँई। कुसलहेतु सो भएउ गोसाँई ॥ ८

दोहा। नाहि त कोसलनाथ कँ साथ कुसल गइ नाथ।
मिथिला अवध बिसेष तँ जगु सब भयेउ अनाथ ॥२६९॥

कोसलपतिगति सुनि जनकौरा। भे सब लोग सोकबस बौरा ॥
जेहिँ देखे तेहि समय बिदेहू। नामु सत्य अस लाग न केहू ॥
रानि कुचालि सुनत नरपालहि। सूझ न कछु जस मनि बिनु ब्यालहि ॥
भरत राजु रघुबर बनबासू। भा मिथिलेसहि हृदयँ हराँसू ॥ ४
नृप बूझे बुध सचिव समाजू। कहहु बिचारि उचित का आजू ॥
समुझि अवध असमंजस दोऊ। चलिअ कि रहिअ न कह कछु कोऊ ॥
नृपहिँ धीर धरि हृदय बिचारी। पठए अवध चतुर चर चारी ॥
बूझि भरत सतिभाउ कुभाऊ। आयेहु बेगि न होइ लखाऊ ॥ ८

दोहा। गये अवध चर भरतगति बूझि देखि करतूति।
चले चित्रकूटहि भरतु चार चले तेरहूति ॥२७०॥

दूतन्ह आइ भरत कइ करनी। जनकसमाज जथामति बरनी ॥
सुनि गुर पुरजन सचिव महीपति। भे सब सोच सनेह बिकल अति ॥
धरि धीरजु करि भरतबड़ाई। लिए सुभट साहनी बोलाई ॥
घर पुर देस राखि रखवारे। हय गय रथ बहु जान सँवारे ॥ ४
दुघरी साधि चले ततकाला। किये बिश्रामु न मग महिपाला ॥
भोरेहिँ आजु नहाइ प्रयागा। चले जमुन उतरन सबु लागा ॥

खबरि लेन हम पठए नाथा। तिन्ह कहि अस महि नायेउ माथा ॥
साथ किरात छ सातक दीन्हे। मुनिबर तुरत बिदा चर कीन्हे ॥ ८
दोहा। सुनत जनक आगवनु सबु हरषेउ अवधसमाजु।
रघुनंदनहि सकोचु बड़ सोच बिबस सुरराजु ॥२७१॥
गरइ गलानि कुटिल कैकेई। काहि कहइ केहि दूषनु देई ॥
अस मन आनि मुदित नर नारी। भयेउ बहोरि रहब दिन चारी ॥
एहि प्रकार गत बासर सोऊ। प्रात नहान लाग सबु कोऊ ॥
करि मज्जनु पूजहिँ नर नारी। गनप गौरि तिपुरारि तमारी ॥ ४
रमारमनपद बंदि बहोरी। बिनवहिँ अंजलि अंचल जोरी ॥
राजा रामु जानकी रानी। आनँद अवधि अवध रजधानी ॥
सुवस बसउ फिरि सहित समाजा। भरतहि रामु करहुँ जुवराजा ॥
येहि सुख सुधा सीँचि सब काहू। देव देहु जग जीवनलाहू ॥ ८
दोहा। गुरसमाज भाइन्ह सहित रामराजु पुर होउ।
अछत राम राजा अवध मरिअ माग सबु कोउ ॥२७२॥
सुनि सनेहमय पुरजन बानी। निंदहिँ जोग बिरति मुनि ग्यानी ॥
एहि बिधि नित्य करम करि पुरजन। रामहि करहिँ प्रनाम पुलकि तन ॥
ऊँच नीच मध्यम नर नारी। लहहिँ दरसु निज निज अनुहारी ॥
सावधान सबही सनमानहि। सकल सराहत कृपानिधानहि ॥ ४
लरिकाइहि तेँ रघुबरबानी। पालत नीति प्रीति पहिचानी ॥
सील सकोच सिंधु रघुराऊ। सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ ॥
कहत राम गुन गन अनुरागे। सब निज भाग सराहन लागे ॥
हम सम पुन्यपुंज जग थोरे। जिन्हहि रामु जानत करि मोरे ॥ ८
दोहा। प्रेममगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेसु।
सहित सभा संभ्रम उठेउ रबिकुल कमल दिनेसु ॥२७३॥
भाइ सचिव गुर पुरजन साथा। आगेँ गवनु कीन्ह रघुनाथा ॥
गिरिबरु दीख जनकपति जबहीँ। करि प्रनामु रथु त्यागेउ तबहीँ ॥
रामदरसु लालसा उछाहू। पथश्रम लेसु कलेसु न काहू ॥
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही। बिनु मन तन दुख सुख सुधि केही ॥ ४

आवत जनकु चले एहि भाँती। सहित समाज प्रेम मति माती॥
आए निकट देखि अनुरागे। सादर मिलन परसपर लागे॥
लगे जनकु मुनिजन पद बंदन। रिषिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन॥
भाइन्ह सहित रामु मिलि राजहि। चले लवाइ समेत समाजहि॥ ८

दोहा। आश्रम सागर सांतरस पूरन पावन पाथु।
सेन मनहुँ करुना सरित लियेँ जात रघुनाथु॥२७४॥

बोरति ग्यान बिराग करारे। बचन ससोक मिलत नद नारे॥
सोच उसास समीर तरंगा। धीरज तटतरुवर कर भंगा॥
बिषम बिषाद तोरावति धारा। भय भ्रम भवँर अवर्त अपारा॥
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा। सकहिं न खेइ ऐक नहि आवा॥ ४
बनचर कोल किरात बिचारे। थके बिलोकि पथिक हियँ हारे॥
आश्रम उदधि मिली जब जाई। मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई॥
सोकबिकल दोउ राजसमाजा। रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा॥
भूप रूप गुन सील सराही। रोवहिं सोक सिंधु अवगाही॥ ८

छंद। अवगाहि सोक समुद्र सोचहिं नारि नर ब्याकुल महा।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं बाम बिधि कीन्हो कहा।
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा बिदेह की।
तुलसी न समरथु कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की॥ १२

सोरठा। किए अमित उपदेस जहँ तहँ लोगन्ह मुनिबरन्ह।
धीरजु धरिअ नरेस कहेउ बसिष्ठ बिदेह सन॥२७५॥

जासु ग्यानु रबि भव निसि नासा। बचन किरन मुनि कमल बिकासा॥
तेहि कि मोह ममता निअराई। यह सिय राम सनेह बड़ाई॥
बिषई साधक सिद्ध सयाने। त्रिबिध जीव जग बेद बखाने॥
रामसनेह सरस मन जासू। साधुसभाँ बड़ आदर तासू॥ ४
सोह न रामपेम बिनु ग्यानू। करनधार बिनु जिमि जलजानू॥
मुनि बहु बिधि बिदेहु समुझाए। रामघाट सब लोग नहाए॥
सकल सोकसंकुल नर नारी। सो बासरु बीतेउ बिनु बारी॥
पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू। प्रिय परिजन कर कौनु बिचारू॥ ८

दोहा। दोउ समाज निमिराजु रघुराजु नहाने प्रात।
बैठे सब बट बिटप तर मन मलीन कृस गात ॥२७६॥
जे महिसुर दसरथ पुर बासी। जे मिथिलापति नगर निवासी ॥
हंसबंस गुर जनक पुरोधा। जिन्ह जग मगु परमारथु सोधा ॥
लगे कहन उपदेस अनेका। सहित धरम नय बिरति बिबेका ॥
कौसिक कहि कहि कथा पुरानी। समुझाई सब सभा सुबानी ॥ ४
तब रघुनाथ कौसिकहि कहेऊ। नाथ कालि जल बिनु सबु रहेऊ ॥
मुनि कह उचित कहत रघुराई। गयेउ बीति दिन पहर अढ़ाई ॥
रिषिरुख लखि कह तिरहुतिराजू। इहाँ उचित नहि असन अनाजू ॥
कहा भूप भल सबहि सोहाना। पाइ रजायसु चले नहाना ॥ ८
दोहा। तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार।
लइ आए बनचर बिपुल भरि भरि कावरि भार ॥२७७॥
कामद भे गिरि रामप्रसादा। अवलोकत अपहरत बिषादा ॥
सर सरिता बन भूमि बिभागा। जनु उमगत आनँद अनुरागा ॥
बेलि बिटप सब सफल सफूला। बोलत खग मृग अलि अनुकूला ॥
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू। त्रिबिध समीर सुखद सब काहू ॥ ४
जाइ न बरनि मनोहरताई। जनु महि करति जनकपहुनाई ॥
तब सब लोग नहाइ नहाई। राम जनक मुनि आयसु पाई ॥
देखि देखि तरुबर अनुरागे। जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे ॥
दल फल मूल कंद बिधि नाना। पावन सुंदर सुधा समाना ॥ ८
दोहा। सादर सब कहँ रामगुर पठए भरि भरि भार।
पूजि पितर सुर अतिथि गुर लगे करन फलहार ॥२७८॥
एहि बिधि बासर बीते चारी। रामु निरखि नर नारि सुखारी ॥
दुहुँ समाज असि रुचि मन माहीँ। बिनु सिय राम फिरब भल नाहीँ ॥
सीता राम संग बनबासू। कोटि अमरपुर सरिस सुपासू ॥
परिहरि लखन रामु बैदेही। जेहि घरु भाव बाम बिधि तेही ॥ ४
दाहिन दइउ होइ जब सबहीँ। राम समीप बसिअ बन तबहीँ ॥
मंदाकिनिमज्जनु तिहुँ काला। रामदरसु मुद मंगल माला ॥

अटनु राम गिरि बन तापसथल । असनु अमिअ सम कंद मूल फल ॥
सुख समेत संबत दुइ साता । पल सम होहिँ न जनिअहिँ जाता ॥ ८
दोहा । एहि सुख जोग न लोग सब कहहिँ कहाँ अस भागु ।
सहज सुभायँ समाज दुहुँ रामचरन अनुरागु ॥२७९॥
एहि बिधि सकल मनोरथ करहीँ । बचन सप्रेम सुनत मन हरहीँ ॥
सीयमातु तेहि समय पठाईं । दासीँ देखि सुअवसरु आईं ॥
सावकास सुनि सब सियसासू । आएउ जनकराज रनिवासू ॥
कौसल्याँ सादर सनमानी । आसन दिये समय सम आनी ॥ ४
सीलु सनेहु सकल दुहुँ ओरा । द्रवहिँ देखि सुनि कुलिस कठोरा ॥
पुलक सिथिल तन बारि बिलोचन । महि नख लिखन लगीँ सब सोचन ॥
सब सिय राम प्रीति कि सि मूरति । जनु करुना बहु बेष बिसूरति ॥
सीयमातु कह बिधिबुधि बाँकी । जो पयफेनु फोर पबिटाँकी ॥ ८
दोहा । सुनिअ सुधा देखिअहिँ गरल सब करतूति कराल ।
जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल ॥२८०॥
सुनि ससोच कह देवि सुमित्रा । बिधिगति बड़ि बिपरीत बिचित्रा ॥
जो सृजि पालइ हरइ बहोरी । बालकेलि सम बिधिमति भोरी ॥
कौसल्या कह दोसु न काहू । करम बिबस दुख सुख छति लाहू ॥
कठिन करमगति जान बिधाता । जो सुभ असुभ सकल फल दाता ॥ ४
ईसरजाइ सीस सबही कैँ । उतपति थिति लय बिषहु अमी कैँ ॥
देवि मोहबस सोचिअ बादी । बिधिप्रपंचु अस अचल अनादी ॥
भूपति जिअब मरब उर आनी । सोचिअ सखि लखि निज हित हानी ॥
सीयमातु कह सत्य सुबानी । सुकृती अवधि अवधपतिरानी ॥ ८
दोहा । लखनु रामु सिय जाहुँ बन भल परिनाम न पोचु ।
गहबरि हिय कह कौसिला मोहि भरत कर सोचु ॥२८१॥
ईसप्रसाद असीस तुम्हारी । सुत सुतबधूँ बिबुधसरि बारी ॥
रामसपथ मैँ कीन्हि न काऊ । सो करि कहौँ सखी सतिभाऊ ॥
भरत सील गुन बिनय बड़ाई । भायप भगति भरोस भलाई ॥
कहत सारदहु कर मति हीचे । सागर सीपि कि जाहिँ उलीचे ॥ ४

जानउँ सदा भरत कुलदीपा। बार बार मोहि कहेउ महीपा ॥
कसेँ कनकु मनि पारिखि पाएँ। पुरुष परिखिअहिँ समय सुभाएँ ॥
अनुचित आजु कहब अस मोरा। सोक सनेह सयानप थोरा ॥
सुनि सुरसरि सम पावनि बानी। भई सनेहबिकल सब रानी ॥ ८

दोहा। कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देवि मिथिलेसि।
को बिबेकनिधि बल्लभहि तुम्हहि सकइ उपदेसि ॥२८२॥

रानि राय सन अवसरु पाई। अपनी भाँति कहब समुझाई ॥
रखिअहिँ लखनु भरतु गवनहिँ बन। जौँ येह मत मानै महीपमन ॥
तौ भल जतनु करब सुबिचारी। मोरेँ सोचु भरत कर भारी ॥
गूढ़ सनेह भरतमन माहीँ। रहेँ नीक मोहि लागत नाहीँ ॥ ४
लखि सुभाउ सुनि सरल सुबानी। सब भइँ मगन करुनरस रानी ॥
नभ प्रसूनझरि धन्य धन्य धुनि। सिथिल सनेह सिद्ध जोगी मुनि ॥
सबु रनिवासु बिथकि लखि रहेऊ। तब धरि धीर सुमित्राँ कहेऊ ॥
देवि दंड जुग जामिनि बीती। राममातु सुनि उठी सप्रीती ॥ ८

दोहा। बेगि पाउ धारिअ थलहि कह सनेह सतिभायँ।
हमरेँ तब अब ईस गति कै मिथिलेसु सहायँ ॥२८३॥

लखि सनेहु सुनि बचन बिनीता। जनकप्रियाँ गहे पाय पुनीता ॥
देवि उचित असि बिनय तुम्हारी। दसरथघरिनि राममहतारी ॥
प्रभु अपने नीचहु आदरहीँ। अगिनि धूम गिरि सिर तिन धरहीँ ॥
सेवकु राउ करम मन बानी। सदा सहाय महेसु भवानी ॥ ४
रउरे अंग जोगु जग को है। दीपसहाय कि दिनकर सोहै ॥
रामु जाइ बनु करि सुरकाजू। अचल अवधपुर करिहहिँ राजू ॥
अमर नाग नर राम बाहु बल। सुख बसिहहिँ अपने अपने थल ॥
येह सब जागबलिक कहि राखा। देवि न होइ मुधा मुनि भाषा ॥ ८

दोहा। अस कहि पग परि पेम अति सिय हित बिनय सुनाइ।
सिय समेत सियमातु तब चली सुआयसु पाइ ॥२८४॥

प्रिय परिजनहि मिली बैदेही। जो जेहि जोगु भाँति तेहि तेही ॥
तापसबेष जानकी देखी। भा सबु बिकल बिषाद बिसेषी ॥

जनक राम गुर आयसु पाई। चले थलहि सिय देखी आई॥
लीन्हि लाइ उर जनक जानकी। पाहुनि पावन पेम प्रान की॥
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू। भयेउ भूपमनु मनहुँ पयागू॥
सियसनेह बटु बाढ़त जोहा। ता पर रामपेम सिसु सोहा॥
चिरजीवी मुनि ग्यानु बिकल जनु। बूड़त लहेउ बाल अवलंबनु॥
मोहमगन मति नहि बिदेह की। महिमा सिय रघुबर सनेह की॥

दोहा। सिय पितु मातु सनेह बस बिकल न सकी सँभारि।
धरनिसुता धीरजु धरेउ समउ सुधरमु बिचारि॥२८५॥

तापसबेष जनक सिय देखी। भयेउ पेमु परितोषु बिसेषी॥
पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ। सुजस धवल जगु कह सबु कोऊ॥
जिति सुरसरि कीरति सरि तोरी। गवनु कीन्ह बिधि अंड करोरी॥
गंग अवनिथल तीनि बड़ेरे। येहि किएँ साधुसमाज घनेरे॥
पितु कह सत्य सनेह सुबानी। सीय सकुच महुँ मनहुँ समानी॥
पुनि पितु मातु लीन्हि उर लाई। सिख आसिष हित दीन्हि सुहाई॥
कहति न सीय सकुचि मन माहीँ। इहाँ बसब रजनी भल नाहीँ॥
लखि रुख रानि जनायेउ राऊ। हृदयँ सराहत सीलु सुभाऊ॥

दोहा। बार बार मिलि भेँटि सिय बिदा कीन्हि सनमानि।
कही समयसिर भरतगति रानि सुबानि सयानि॥२८६॥

सुनि भूपाल भरतब्यवहारू। सोन सुगंध सुधा ससिसारू॥
मूदे सजल नयन पुलके तन। सुजसु सराहन लगे मुदितमन॥
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि। भरतकथा भवबंध बिमोचनि॥
धरम राजनय ब्रह्मबिचारू। इहाँ जथामति मोर प्रचारू॥
सो मति मोरि भरत महिमाहीँ। कहइ काह छलि छुअति न छाहीँ॥
बिधि गनपति अहिपति सिव सारद। कबि कोबिद बुध बुद्धिबिसारद॥
भरतचरित कीरति करतूती। धरम सील गुन बिमल बिभूती॥
समुझत सुनत सुखद सब काहू। सुचि सुरसरि रुचि निदर सुधाहू॥

दोहा। निरवधि गुन निरुपम पुरुषु भरतु भरत सम जानि।
कहिअ सुमेरु कि सेर सम कबिकुल मति सकुचानि॥२८७॥

अगम सबहि बरनत बरबरनी। जिमि जलहीन मीन गमु धरनी ॥
भरत अमित महिमा सुनु रानी। जानहिँ रामु न सकहिँ बखानी ॥
बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ। तिय जिय की रुचि लखि कह राऊ ॥
बहुरहिँ लखनु भरतु बन जाहीँ। सब कर भल सब कँ मन माहीँ ॥ ४
देवि परंतु भरत रघुबर की। प्रीति प्रतीति जाइ नहि तरकी ॥
भरतु अवधि सनेह ममता की। जद्यपि रामु सीम समता की ॥
परमारथ स्वारथ सुख सारे। भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे ॥
साधन सिद्धि रामपग नेहू। मोहि लखि परत भरतमत एहू ॥ ८

दोहा। भोरेहुँ भरत न पेलिहहिँ मनसहुँ रामरजाइ।
करिअ न सोचु सनेहबस कहेउ भूप बिलखाइ ॥२८८॥

राम भरत गुन गनत सप्रीती। निसि दंपतिहि पलक सम बीती ॥
राजसमाज प्रात जुग जागे। न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे ॥
गे नहाइ गुर पहिँ रघुराई। बंदि चरन बोले रुख पाई ॥
नाथ भरतु पुरजन महतारीँ। सोकबिकल बनबास दुखारीँ ॥ ४
सहित समाज राज मिथिलेसू। बहुत दिवस भये सहत कलेसू ॥
उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा। हित सब ही कर रौरेँ हाथा ॥
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ। मुनि पुलके लखि सीलु सुभाऊ ॥
तुम्ह बिनु राम सकल सुख साजा। नरक सरिस दुहुँ राजसमाजा ॥ ८

दोहा। प्रान प्रान के जीव के जिव सुख के सुख राम।
तुम्ह तजि तात सोहात गृह जिन्हहि तिन्हहि बिधि बाम ॥२८९॥

सो सुखु करमु धरमु जरि जाऊ। जहँ न रामपद पंकज भाऊ ॥
जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानू। जहँ नहि रामप्रेम परधानू ॥
तुम्ह बिनु दुखी सुखी तुम्ह तेहीँ। तुम्ह जानहु जिअँ जो जेहि केहीँ ॥
राउर आयसु सिर सब ही कँ। बिदित कृपालहि गति सब नीकँ ॥ ४
आपु आश्रमहिँ धारिअ पाऊ। भयेउ सनेहसिथिल मुनिराऊ ॥
करि प्रनामु तब रामु सिधाए। रिषि धरि धीर जनक पहि आए ॥
रामबचन गुर नृपहि सुनाए। सील सनेह सुभायँ सुहाए ॥
महाराज अब कीजिअ सोई। सब कर धरम सहित हित होई ॥ ८

दोहा। ग्याननिधान सुजान सुचि धरमधीर नरपाल।
तुम्ह बिनु असमंजससमन को समरथ एहि काल ॥२८०॥

सुनि मुनिबचन जनक अनुरागे। लखि गति ग्यानु बिरागु बिरागे॥
सिथिल सनेह गुनत मन माहीँ। आए इहाँ कीन्ह भल नाहीँ॥
रामहि राय कहेउ बन जाना। कीन्ह आपु प्रिय प्रेमु प्रवाना॥
हम अब बन तेँ बनहि पठाई। प्रमुदित फिरब बिबेकबड़ाई॥ ४
तापस मुनि महिसुर सुनि देखी। भये प्रेमबस बिकल बिसेषी॥
समउ समुझि धरि धीरजु राजा। चले भरत पहिँ सहित समाजा॥
भरत आइ आगेँ भइ लीन्हे। अवसर सरिस सुआसन दीन्हे॥
तात भरत कह तेरहुतिराऊ। तुम्हहि बिदित रघुबीरसुभाऊ॥ ८

दोहा। राम सत्यब्रत धरमरत सब कर सीलु सनेहु।
संकट सहत सकोचबस कहिअ जो आयसु देहु ॥२८१॥

सुनि तन पुलकि नयन भरि बारी। बोले भरतु धीर धरि भारी॥
प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू। कुलगुरु सम हित माय न बापू॥
कौसिकादि मुनि सचिव समाजू। ग्यान अंबुनिधि आपुनु आजू॥
सिसु सेवकु आयसु अनुगामी। जानि मोहि सिख देइअ स्वामी॥ ४
एहि समाज थल बूझब राउर। मौन मलिन मैँ बोलब बाउर॥
छोटे बदन कहौँ बड़ि बाता। छमब तात लखि बाम बिधाता॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। सेवाधरमु कठिन जगु जाना॥
स्वामिधरम स्वारथहि बिरोधू। बैरु अंध प्रेमहि न प्रबोधू॥ ८

दोहा। राखि रामरुख धरमु ब्रतु पराधीन मोहि जानि।
सब कें संमत सर्बहित करिअ पेमु पहिचानि ॥२८२॥

भरतबचन सुनि देखि सुभाऊ। सहित समाज सराहत राऊ॥
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे। अरथु अमित अति आखर थोरे॥
ज्यौँ मुखु मुकुर मुकुरु निज पानी। गहि न जाइ अस अद्भुत बानी॥
भूपु भरतु मुनि साधु समाजू। गे जहँ बिबुध कुमुद द्विजराजू॥ ४
सुनि सुधि सोचबिकल सब लोगा। मनहुँ मीनगन नव जल जोगा॥
देव प्रथम कुलगुर गति देखी। निरखि बिदेह सनेह बिसेषी॥

रामभगतिमय भरतु निहारे । सुर स्वारथी हहरि हिय हारे ॥
सब कोउ रामपेममय पेखा । भये अलेख सोचबस लेखा ॥ ८
दोहा । रामु सनेह सकोच बस कह ससोच सुरराजु ।
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि नाहि त भयेउ अकाजु ॥२८३॥
सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही । देवि देव सरनागत पाही ॥
फेरि भरतमति करि निज माया । पालु बिबुधकुल करि छलछाया ॥
बिबुधबिनय सुनि देवि सयानी । बोली सुर स्वारथजड़ जानी ॥
मो सन कहहु भरतमति फेरू । लोचन सहस न सूझ सुमेरू ॥ ४
बिधि हरि हर माया बड़ि भारी । सोउ न भरतमति सकइ निहारी ॥
सो मति मोहि कहत करु भोरी । चंदिनि कर कि चंडकरचोरी ॥
भरतहृदयँ सिय राम निवासू । तहँ कि तिमिर जहँ तरनिप्रकासू ॥
अस कहि सारद गइ बिधिलोका । बिबुध बिकल निसि मानहुँ कोका ॥ ८
दोहा । सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाटु ।
रचि प्रपंचु माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाटु ॥२८४॥
करि कुचालि सोचत सुरराजू । भरतहाथ सबु काजु अकाजू ॥
गये जनकु रघुनाथ समीपा । सनमाने सब रबिकुलदीपा ॥
समय समाज धरम अबिरोधा । बोले तब रघुबंसपुरोधा ॥
जनक भरत संबादु सुनाई । भरतकहाउति कही सुहाई ॥ ४
तात राम जस आयसु देहू । सो सबु करइ मोर मत एहू ॥
सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी । बोले सत्य सरल मृदु बानी ॥
बिद्यमान आपुनु मिथिलेसू । मोर कहब सब भाँति भदेसू ॥
राउर राय रजायसु होई । राउरि सपथ सही सिर सोई ॥ ८
दोहा । रामसपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत ।
सकल बिलोकत भरतमुखु बनइ न ऊतरु देत ॥२८५॥
सभा सकुचबस भरत निहारी । रामबंधु धरि धीरजु भारी ॥
कुसमउ देखि सनेहु सँभारा । बढ़त बिंधि जिमि घटज निवारा ॥
सोक कनकलोचन मति छोनी । हरी बिमल गुनगन जगजोनी ॥
भरतबिबेक बराह बिसाला । अनायास उधरी तेहिं काला ॥ ४

करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे। रामु राउ गुर साधु निहोरे॥
छमब आजु अति अनुचित मोरा। कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा॥
हियँ सुमिरी सारदा सुहाई। मानस तें मुख पंकज आई॥
बिमल बिबेक धरम नय साली। भरतभारती मंजु मराली॥ ८
दोहा। निरखि बिबेक बिलोचनन्हि सिथिल सनेहँ समाजु।
करि प्रनामु बोले भरतु सुमिरि सीय रघुराजु॥२८६॥
प्रभु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी। पूज्य परम हित अंतरजामी॥
सरल सुसाहिबु सीलनिधानू। प्रनतपालु सर्बग्य सुजानू॥
समरथु सरनागत हितकारी। गुनगाहकु अवगुन अघ हारी॥
स्वामि गोसाइँहि सरिस गोसाईं। मोहि समान मैं साइँदोहाईं॥ ४
प्रभु पितु बचन मोहबस पेली। आएउँ इहाँ समाजु सँकेली॥
जग भल पोच ऊँच अरु नीचू। अमिअ अमरपद माहुरु मीचू॥
रामरजाइ मेट मन माहीं। देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं॥
सो मैं सब बिधि कीन्हि ढिठाई। प्रभु मानी सनेहसेवकाई॥ ८
दोहा। कृपाँ भलाई आपनीं नाथ कीन्ह भल मोर।
दूषन भे भूषन सरिस सुजसु चारु चहुँ ओर॥२८७॥
राउरि रीति सुबानि बड़ाई। जगतविदित निगमागम गाई॥
कूर कुटिल खल कुमति कलंकी। नीच निसील निरीस निसंकी॥
तेउ सुनि सरन सामुहें आए। सकृत प्रनामु किएँ अपनाए॥
देखि दोष कबहुँ न उर आने। सुनि गुन साधुसमाज बखाने॥ ४
को साहिब सेवकहि नेवाजी। आपु समाज साज सब साजी॥
निज करतूति न समुझिअ सपनें। सेवक सकुच सोचु उर अपनें॥
सो गोसाइँ नहि दूसर कोपी। भुजा उठाइ कहौं पन रोपी॥
पसु नाचत सुक पाठप्रबीना। गुन गति नट पाठक आधीना॥ ८
दोहा। यों सुधारि सनमानि जन किये साधुसिरमोर।
को कृपाल बिनु पालिहै बिरिदावलि बरजोर॥२८८॥
सोक सनेह कि बालसुभाएँ। आएउँ लाइ रजायसु बाएँ॥
तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा। सबहि भाँति भल मानेउ मोरा॥

देखेउँ पाय सुमंगलमूला । जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला ॥
बड़े समाज बिलोकेउँ भागू । बड़ी चूक साहिब अनुरागू ॥ ४
कृपा अनुग्रहु अंगु अघाई । कीन्हि कृपानिधि सब अधिकाई ॥
राखा मोर दुलार गोसाईं । अपने सील सुभायँ भलाईं ॥
नाथ निपट मैं कीन्हि ढिठाई । स्वामि समाज सकोचु बिहाई ॥
अबिनय बिनय जथारुचि बानी । छमिहि देउ अति आरत जानी ॥ ८

दोहा । सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बड़ि खोरि ।
आयसु देइअ देव अब सबइ सुधारी मोरि ॥२९९॥

प्रभुपद पदुम पराग दोहाई । सत्य सुकृत सुख सीँव सुहाई ॥
सो करि कहौं हिये अपने की । रुचि जागत सोवत सपने की ॥
सहज सनेह स्वामिसेवकाई । स्वारथ छल फल चारि बिहाई ॥
अग्या सम न सुसाहिबसेवा । सो प्रसादु जनु पावइ देवा ॥ ४
अस कहि प्रेम बिबस भये भारी । पुलक सरीर बिलोचन बारी ॥
प्रभुपद कमल गहे अकुलाई । समउ सनेहु न सो कहि जाई ॥
कृपासिंधु सनमानि सुबानी । बैठाए समीप गहि पानी ॥
भरतबिनय सुनि देखि सुभाऊ । सिथिल सनेह सभा रघुराऊ ॥ ८

छंद । रघुराउ सिथिल सनेह साधुसमाजु मुनि मिथिलाधनी ।
मन महुँ सराहत भरत भायप भगति की महिमा घनी ।
भरतहि प्रसंसत बिबुध बरषत सुमन मानस मलिन से ।
तुलसी बिकल सब लोग सुनि सकुचे निसागम नलिन से ॥ १२

सोरठा । देखि दुखारी दीन दुहुँ समाज नर नारि सब ।
मघवा महा मलीन मुए मारि मंगल चहत ॥३००॥

कपट कुचालि सीँव सुरराजू । पर अकाज प्रिय आपन काजू ॥
काक समान पाकरिपुरीती । छली मलीन कतहुँ न प्रतीती ॥
प्रथम कुमत करि कपटु सँकेला । सो उचाटु सब कें सिर मेला ॥
सुरमायाँ सब लोग बिमोहे । रामप्रेम अतिसय न बिछोहे ॥ ४
भय उचाट बस मन थिर नाहीं । छन बनरुचि छन सदन सोहाहीं ॥
दुबिध मनोगति प्रजा दुखारी । सरित सिंधु संगम जनु बारी ॥

दुचित कतहुँ परितोषु न लहहीं। एक एक सन मरमु न कहहीं॥
लखि हियँ हँसि कह कृपानिधानू। सरिस स्वान मघवान जुवानू॥ ८
दोहा। भरतु जनकु मुनिगन सचिव साधु सचेत बिहाइ।
लागि देवमाया सबहि जथाजोगु जनु पाइ॥३०१॥
कृपासिंधु लखि लोग दुखारे। निज सनेहँ सुरपति छल भारे॥
सभा राउ गुर महिसुर मंत्री। भरतभगति सब कै मति जंत्री॥
रामहि चितवत चित्र लिखे से। सकुचत बोलत बचन सिखे से॥
भरत प्रीति नति बिनय बड़ाई। सुनत सुखद बरनत कठिनाई॥ ४
जासु बिलोकि भगति लवलेसू। प्रेममगन मुनिगन मिथिलेसू॥
महिमा तासु कहै किमि तुलसी। भगति सुभाय सुमति हिय हुलसी॥
आपु छोटि महिमा बड़ि जानी। कबिकुल कानि मानि सकुचानी॥
कहि न सकति गुन रुचि अधिकाई। मति गति बालबचन की नाईं॥ ८
दोहा। भरत बिमल जसु बिमल बिधु सुमति चकोरकुमारि।
उदित बिमल जन हृदयनभ एकटक रही निहारि॥३०२॥
भरतसुभाउ न सुगम निगमहूँ। लघु मति चापलता कबि छमहूँ॥
कहत सुनत सतिभाउ भरत को। सीय राम पद होइ न रत को॥
सुमिरत भरतहि प्रेमु राम को। जेहि न सुलभु तेहि सरिस बाम को॥
देखि दयाल दसा सब ही की। राम सुजान जानि जन जी की॥ ४
धरमधुरीन धीर नयनागर। सत्य सनेह सील सुख सागर॥
देसु कालु लखि समउ समाजू। नीति प्रीति पालक रघुराजू॥
बोले बचन बानिसरबसु से। हित परिनाम सुनत ससिरसु से॥
तात भरत तुम्ह धरमधुरीना। लोक बेद बिद प्रेमप्रबीना॥ ८
दोहा। करम बचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात।
गुरसमाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात॥३०३॥
जानहु तात तरनिकुल रीती। सत्यसंध पितु कीरति प्रीती॥
समउ समाजु लाज गुरजन की। उदासीन हित अनहित मन की॥
तुम्हहिँ बिदित सब ही कर करमू। आपन मोर परम हित धरमू॥
मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा। तदपि कहउँ अवसर अनुसारा॥ ४

तात बात बिनु बात हमारी। केवल गुरकुल कृपाँ सँभारी॥
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू। हमहि सहित सबु होत खुआरू॥
जौं बिनु अवसर अँथव दिनेसू। जग केहि कहहु न होइ कलेसू॥
तस उतपातु तात बिधि कीन्हा। मुनि मिथिलेस राखि सबु लीन्हा॥ ८

दोहा। राजकाज सब लाज पति धरम धरनि धन धाम।
गुरप्रभाउ पालिहि सबहि भल होइहि परिनाम॥३०४॥

सहित समाज तुम्हार हमारा। घर बन गुरप्रसाद रखवारा॥
मातु पिता गुर स्वामि निदेसू। सकल धरम धरनीधरु सेसू॥
सो तुम्ह करहु करावहु मोहू। तात तरनिकुल पालक होहू॥
साधक एक सकल सिधि देनी। कीरति सुगति भूति मय बेनी॥ ४
सो बिचारि सहि संकटु भारी। करहु प्रजा परिवारु सुखारी॥
बाँटी बिपति सबहि मोहि भाई। तुम्हहि अवधि भरि बड़ि कठिनाई॥
जानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा। कुसमयँ तात न अनुचित मोरा॥
होहिं कुठायँ सुबंधु सहायँ। ओड़िअहिं हाथ असनिहुँ के घायँ॥ ८

दोहा। सेवक पद कर नयन से मुख सो साहिबु होइ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकबि सराहहिं सोइ॥३०५॥

सभा सकल सुनि रघुबरबानी। प्रेम पयोधि अमिअ जनु सानी॥
सिथिल समाजु सनेहँ समाधी। देखि दसा चुप सारद साधी॥
भरतहि भयेउ परम संतोषू। सनमुख स्वामि बिमुख दुखु दोषू॥
मुखु प्रसन्न मन मिटा बिषादू। भा जनु गूँगेहि गिराप्रसादू॥ ४
कीन्ह सप्रेम प्रनामु बहोरी। बोले पानि पंकरुह जोरी॥
नाथ भएउ सुखु साथ गये को। लहेउँ लाहु जग जनमु भये को॥
अब कृपाल जस आयसु होई। करउँ सीस धरि सादर सोई॥
सो अवलंब देउ मोहि देई। अवधिपारु पावउँ जेहि सेई॥ ८

दोहा। देव देव अभिषेक हित गुर अनुसासन पाइ।
आनेउँ सब तीरथ सलिलु तेहि कहँ काह रजाइ॥३०६॥

एकु मनोरथु बड़ मन माहीं। सभय सकोच जात कहि नाहीं॥
कहहु तात प्रभु आयसु पाई। बोले बानि सनेह सुहाई॥

चित्रकूट मुनिथल तीरथ बन । खग मृग सरि सर निर्झर गिरि गन ॥
प्रभुपद अंकित अवनि बिसेषी । आयसु होइ त आवउँ देखी ॥ ४
अवसि अत्रि आयसु सिर धरहू । तात बिगतभय कानन चरहू ॥
मुनिप्रसाद बनु मंगलदाता । पावन परम सुहावन भ्राता ॥
रिषिनायकु जहँ आयसु देहीँ । राखेहु तीरथजलु थल तेहीँ ॥
सुनि प्रभुबचन भरत सुखु पावा । मुनिपद कमल मुदित सिरु नावा ॥ ८

दोहा । भरत राम संबादु सुनि सकल सुमंगल मूल ।
सुर स्वारथी सराहि कुल बरषत सुरतरुफूल ॥२०७॥

धन्य भरत जय राम गोसाईँ । कहत देव हरषत बरिआईँ ॥
मुनि मिथिलेस सभाँ सब काहू । भरतबचन सुनि भयेउ उछाहू ॥
भरत राम गुनग्राम सनेहू । पुलकि प्रसंसत राउ बिदेहू ॥
सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन । नेमु पेमु अतिपावन पावन ॥ ४
मति अनुसार सराहन लागे । सचिव सभासद सब अनुरागे ॥
सुनि सुनि राम भरत संबादू । दुहुँ समाज हियँ हरषु बिषादू ॥
राममातु दुखु सुखु सम जानी । कहि गुन दोष प्रबोधी रानी ॥
एक कहहिँ रघुबीरबड़ाई । एक सराहत भरतभलाई ॥ ८

दोहा । अत्रि कहेउ तब भरत सन सैल समीप सुकूप ।
राखिअ तीरथतोय तहँ पावन अमिअ अनूप ॥२०८॥

भरत अत्रि अनुसासन पाई । जलभाजन सब दिये चलाई ॥
सानुज आपु अत्रि मुनि साधू । सहित गये जहँ कूप अगाधू ॥
पावन पाथु पुन्यथल राखा । प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाषा ॥
तात अनादि सिद्ध थल एहू । लोपेउ काल बिदित नहि केहू ॥ ४
तब सेवकन्ह सरस थलु देखा । कीन्ह सुजल हित कूप बिसेषा ॥
बिधिबस भयेउ बिस्व उपकारू । सुगम अगम अति धरमबिचारू ॥
भरतकूप अब कहिहहिँ लोगा । अतिपावन तीरथजल जोगा ॥
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी । होइहहिँ बिमल करम मन बानी ॥ ८

दोहा । कहत कूपमहिमा सकल गये जहाँ रघुराउ ।
अत्रि सुनायेउ रघुबरहि तीरथ पुन्य प्रभाउ ॥२०९॥

३३

कहत धरम इतिहास सप्रीती । भयेउ भोरु निसि सो सुख बीती ॥
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई । राम अत्रि गुर आयसु पाई ॥
सहित समाज साज सब सादेँ । चले रामबन अटन पयादेँ ॥
कोमल चरन चलत बिनु पनहीँ । भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीँ ॥ ४
कुस कंटक काकरीँ कुराईँ । कटुक कठोर कुबस्तु दुराईँ ॥
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे । बहत समीर त्रिबिध सुख लीन्हे ॥
सुमन बरषि सुर घन करि छाहीँ । बिटप फूलि फलि तृन मृदुताहीँ ॥
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी । सेवहिँ सकल रामप्रिय जानी ॥ ८
दोहा । सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात ।
राम प्रानप्रिय भरत कहुँ येह न होइ बड़ि बात ॥३१०॥
एहि बिधि भरतु फिरत बन माहीँ । नेमु प्रेमु लखि मुनि सकुचाहीँ ॥
पुन्य जलाश्रय भूमिबिभागा । खग मृग तरु तृन गिरि बन बागा ॥
चारु बिचित्र पबित्र बिसेषी । बूझत भरतु दिब्य सबु देखी ॥
सुनि मन मुदित कहत रिषिराऊ । हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ ॥ ४
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा । कतहुँ बिलोकत मन अभिरामा ॥
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई । सुमिरत सीय सहित दोउ भाई ॥
देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा । देहिँ असीस मुदित बनदेवा ॥
फिरहिँ गयेँ दिनु पहर अढ़ाई । प्रभुपद कमल बिलोकहिँ आई ॥ ८
दोहा । देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माँझ ।
कहत सुनत हरि हर सुजसु गयेउ दिवसु भइ साँझ ॥३११॥
भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू । भरत भूमिसुर तेरहुतिराजू ॥
भल दिनु आजु जानि मन माहीँ । रामु कृपाल कहत सकुचाहीँ ॥
गुर नृप भरत सभा अवलोकी । सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी ॥
सीलु सराहि सभा सब सोची । कहुँ न राम सम स्वामि सँकोची ॥ ४
भरत सुजान रामरुख देखी । उठि सप्रेम धरि धीर बिसेषी ॥
करि दंडवत कहत कर जोरी । राखी नाथ सकल रुचि मोरी ॥
मोहि लगि सबहिँ सहेउ संतापू । बहुत भाँति दुखु पावा आपू ॥
अब गोसाँइ मोहि देउ रजाई । सेवउँ अवध अवधि भरि जाई ॥ ८

दोहा। जेहि उपाय पुनि पाय जनु देखइ दीनदयाल।
सो सिख देइअ अवधि लगि कोसलपाल कृपाल ॥३१२॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं। सब सुचि सरस सनेहँ सगाईं॥
राउर बदि भल भवदुख दाहू। प्रभु बिनु बादि परमपद लाहू॥
स्वामि सुजानु जानि सब ही की। रुचि लालसा रहनि जन जी की॥
प्रनतपाल पालिहि सब काहू। देउ दुहूँ दिसि ओरनिबाहू॥ ४
अस मोहि सब बिधि भूरि भरोसो। किएँ बिचारु न सोचु खरो सो॥
आरति मोरि नाथ कर छोहू। दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठु हठि मोहू॥
येह बड़ दोषु दूरि करि स्वामी। तजि सकोचु सिखइअ अनुगामी॥
भरतबिनय सुनि सबहि प्रसंसी। खीर नीर बिबरन गति हंसी॥ ८

दोहा। दीनबंधु सुनि बंधु के बचन दीन छलहीन।
देस काल अवसर सरिस बोले रामु प्रबीन ॥३१३॥

तात तुम्हारि मोरि परिजन की। चिंता गुरहि नृपहि घर बन की॥
माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू। हमहिँ तुम्हहिँ सपनेहुँ न कलेसू॥
मोर तुम्हार परम पुरुषारथु। स्वारथु सुजसु धरमु परमारथु॥
पितु आयसु पालिअ दुहुँ भाईं। लोक बेद भल भूपभलाईं॥ ४
गुर पितु मातु स्वामि सिख पालें। चलेहुँ कुमग पग परहिँ न खालें॥
अस बिचारि सब सोच बिहाई। पालहु अवध अवधि भरि जाई॥
देसु कोसु पुरजन परिवारू। गुरपद रजहि लाग छरुभारू॥
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी। पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी॥ ८

दोहा। मुखिआ मुखु सो चाहिअइ खान पान कहुँ एक।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक ॥३१४॥

राजधरम सरबसु एतनोई। जिमि मन माँह मनोरथ गोई॥
बंधुप्रबोधु कीन्ह बहु भाँती। बिनु अधार मन तोषु न साँती॥
भरतसीलु गुर सचिव समाजू। सकुच सनेह बिबस रघुराजू॥
प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्ही। सादर भरत सीस धरि लीन्ही॥ ४
चरनपीठ करुनानिधान के। जनु जुग जामिक प्रजाप्रान के॥
संपुट भरतसनेह रतन के। आखर जुग जनु जीवजतन के॥

कुल कपाट कर कुसल करम के। बिमल नयन सेवा सुधरम के ॥
भरत मुदित अवलंब लहे तेँ। अस सुख जस सिय रामु रहे तेँ ॥ ८
दोहा। मागेउ बिदा प्रनामु करि राम लिए उर लाइ।
लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसरु पाइ ॥३१५॥
सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी। अवधि आस सम जीवनि जी की ॥
नतरु लखन सिय राम बियोगाँ। हहरि मरत सब लोग कुरोगाँ ॥
रामकृपा अवरेब सुधारी। बिबुधधारि भइ गुनद गोहारी ॥
भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो। राम प्रेम रसु कहि न परत सो ॥ ४
तन मन वचन उमग अनुरागा। धीरधुरंधर धीरजु त्यागा ॥
बारिज लोचन मोचत बारी। देखि दसा सुरसभा दुखारी ॥
मुनिगन गुर धुरधीर जनक से। ग्यान अनल मन कसे कनक से ॥
जे बिरंचि निरलेप उपाए। पदुमपत्र जिमि जग जल जाए ॥ ८
दोहा। तेउ बिलोकि रघुबर भरत प्रीति अनूप अपार।
भये मगन मन तन वचन सहित बिराग बिचार ॥३१६॥
जहाँ जनक गुर गति मति भोरी। प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी ॥
बरनत रघुबर भरत बियोगू। सुनि कठोर कबि जानिहि लोगू ॥
सो सकोचु रसु अकथ सुबानी। समउ सनेहु सुमिरि सकुचानी ॥
भेंटि भरतु रघुबर समुझाए। पुनि रिपुदवनु हरषि हिय लाए ॥ ४
सेवक सचिव भरतरुख पाई। निज निज काज लगे सब जाई ॥
सुनि दारुन दुखु दुहूँ समाजा। लगे चलन के साजन साजा ॥
प्रभुपद पदुम बंदि दोउ भाई। चले सीस धरि रामरजाई ॥
मुनि तापस बनदेव निहोरी। सब सनमानि बहोरि बहोरी ॥ ८
दोहा। लखनहिं भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सियपद धूरि।
चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि ॥३१७॥
सानुज राम नृपहि सिर नाई। कीन्हि बहुत बिधि बिनय बड़ाई ॥
देव दयावस बड़ दुखु पायेउ। सहित समाज काननहि आयेउ ॥
पुर पगु धारिअ देइ असीसा। कीन्ह धीर धरि गवनु महीसा ॥
मुनि महिदेव साधु सनमाने। बिदा किए हरि हर सम जाने ॥ ४

सासु समीप गए दोउ भाई। फिरे बंदि पग आसिष पाई॥
कौसिक बामदेव जाबाली। पुरजन परिजन सचिव सुचाली॥
जथाजोगु करि बिनय प्रनामा। बिदा किए सब सानुज रामा॥
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे। सब सनमानि कृपानिधि फेरे॥ ८

दोहा। भरतमातु पद बंदि प्रभु सुचि सनेह मिलि भेंटि।
बिदा कीन्हि सजि पालकी सकुच सोच सब मेटि॥३१८॥

परिजन मातु पितहि मिलि सीता। फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता॥
करि प्रनामु भेंटी सब सासू। प्रीति कहत कबिहिय न हुलासू॥
सुनि सिख अभिमत आसिष पाई। रही सीय दुहुँ प्रीति समाई॥
रघुपति पटुपालकीं मगाईं। करि प्रबोधु सब मातु चढ़ाईं॥ ४
बार बार हिलि मिलि दुहुँ भाईं। सम सनेह जननीं पहुँचाईं॥
साजि बाजि गज बाहन नाना। भूप भरत दल कीन्ह पयाना॥
हृदयँ रामु सिय लखन समेता। चले जाहिं सब लोग अचेता॥
बसह बाजि गज पसु हियँ हारें। चले जाहिं परबस मन मारें॥ ८

दोहा। गुर गुरतिय पद बंदि प्रभु सीता लखन समेत।
फिरे हरष बिसमय सहित आए परननिकेत॥३१९॥

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू। चलेउ हृदयँ बड़ बिरहबिषादू॥
कोल किरात भिल्ल बनचारी। फेरे फिरे जोहारि जोहारी॥
प्रभु सिय लखन बैठि बट छाहीं। प्रिय परिजन बियोग बिलखाहीं॥
भरत सनेहु सुभाउ सुबानी। प्रिया अनुज सन कहत बखानी॥ ४
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी। श्रीमुख राम प्रेमबस बरनी॥
तेहि अवसर खग मृग जल मीना। चित्रकूट चर अचर मलीना॥
बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की। बरषि सुमन कहि गति घर घर की॥
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह भरोसो। चले मुदित मन डरु न खरो सो॥ ८

दोहा। सानुज सीय समेत प्रभु राजत परनकुटीर।
भगति ग्यानु बैराग्य जनु सोहत धरें सरीर॥३२०॥

मुनि महिसुर गुर भरत भुआलू। रामबिरहँ सबु साजु बिहालू॥
प्रभु गुन ग्राम गुनत मन माहीं। सब चुपचाप चले मग जाहीं॥

जमुना उतरि पारु सबु भयेऊ। सो बासरु बिनु भोजन गयेऊ ॥
उतरि देवसरि दूसर बासू। रामसखाँ सब कीन्ह सुपासू ॥
सई उतरि गोमतीं नहाए। चौथें दिवस अवधपुर आए ॥
जनकु रहे पुर बासर चारी। राजकाज सब साज सँभारी ॥
सौंपि सचिव गुर भरतहि राजू। तेरहुति चले साजि सबु साजू ॥
नगर नारि नर गुरसिख मानी। बसे सुखेन रामरजधानी ॥

दोहा। रामदरस लगि लोग सब करत नेम उपवास।
तजि तजि भूषन भोग सुख जिअत अवधि की आस ॥३२१॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे। निज निज काज पाइ सिख ओधे ॥
पुनि सिख दीन्हि बोलि लघु भाई। सौंपी सकल मातु सेवकाई ॥
भूसुर बोलि भरत कर जोरे। करि प्रनाम बर बिनय निहोरे ॥
ऊँच नीच कारजु भल पोचू। आयसु देब न करब सँकोचू ॥
परिजन पुरजन प्रजा बोलाए। समाधानु करि सुबस बसाए ॥
सानुज गे गुरगेहँ बहोरी। करि दंडवत कहत कर जोरी ॥
आयसु होइ त रहउँ सनेमा। बोले मुनि तन पुलकि सपेमा ॥
समुझब कहब करब तुम्ह जोई। धरमसारु जग होइहि सोई ॥

दोहा। सुनि सिख पाइ असीस बड़ि गनक बोलि दिनु साधि।
सिंघासन प्रभुपादुका बैठारे निरुपाधि ॥३२२॥

राममातु गुर पद सिरु नाई। प्रभुपदपीठ रजायसु पाई ॥
नंदिगाँव करि परनकुटीरा। कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा ॥
जटाजूट सिर मुनिपट धारी। महि खनि कुस साँथरी सँवारी ॥
असन बसन बासन ब्रत नेमा। करत कठिन रिषिधरम सपेमा ॥
भूषन बसन भोग सुख भूरी। मन तन बचन तजे तिनु तूरी ॥
अवधराजु सुरराजु सिहाई। दसरथधनु सुनि धनद लजाई ॥
तेहि पुर बसत भरत बिनु रागा। चंचरीक जिमि चंपकबागा ॥
रमाबिलासु राम अनुरागी। तजत बमन जिमि जन बड़भागी ॥

दोहा। रामपेम भाजन भरतु बड़े न येहि करतूति।
चातक हंस सराहिअत टेंक बिबेक बिभूति ॥३२३॥

देह दिनहुँ दिन दूबरि होई। घटइ तेजु बलु मुखछबि सोई॥
नित नव रामपेम पनु पीना। बढ़त धरमदलु मनु न मलीना॥
जिमि जलु निघटत सरद प्रकासे। बिलसत बेतस बनज बिकासे॥
सम दम संजम नियम उपासा। नखत भरतहिय बिमल अकासा॥ ४
ध्रुव बिस्वासु अवधि राका सी। स्वामिसुरति सुरबीथि बिकासी॥
रामपेम बिधु अचल अदोषा। सहित समाज सोह नित चोखा॥
भरत रहनि समुझनि करतूती। भगति बिरति गुन बिमल बिभूती॥
बरनत सकल सुकबि सकुचाहीं। सेस गनेस गिरा गमु नाहीं॥ ८

दोहा। नित पूजत प्रभुपाँवरी प्रीति न हृदय समाति।
माँगि माँगि आयसु करत राजकाज बहु भाँति॥३२४॥

पुलक गात हियँ सिय रघुबीरू। जीह नामजपु लोचन नीरू॥
लखनु रामु सिय कानन बसहीं। भरतु भवन बसि तप तनु कसहीं॥
दोउ दिसि समुझि कहत सबु लोगू। सब बिधि भरतु सराहनजोगू॥
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं। देखि दसा मुनिराज लजाहीं॥ ४
परम पुनीत भरत आचरनू। मधुर मंजु मुद मंगल करनू॥
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू। महामोह निसि दलन दिनेसू॥
पापपुंज कुंजर मृगराजू। समन सकल संतापसमाजू॥
जनरंजन भंजन भवभारू। रामसनेह सुधा कर सारू॥ ८

छंद। सिय राम पेम पिऊष पूरन होत जनमु न भरत को।
मुनिमन अगम जम नियम सम दम बिषम ब्रत आचरत को।
दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को।
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि रामसनमुख करत को। १२

सोरठा। भरतचरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भवरस बिरति॥३२५॥

श्रीराम

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

मूलं धर्म्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेंदुमानंददं।
वैराग्यांबुजभास्करं ह्यघघनध्वांतापहं तापहं ॥
मोहांभोधरपूगपाटनविधौ स्वःसंभवं शंकरं।
वंदे ब्रह्मकुलं कलंकशमनं श्रीरामभूपप्रियं ॥ १ ॥
सांद्रानंदपयोदसौभगतनुं पीतांबरं सुंदरं।
पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरं ॥
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं।
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

सोरठा। उमा रामगुन गूढ़ पंडित मुनि पावहिँ बिरति।
पावहिँ मोह विमूढ़ जे हरिबिमुख न धर्मरति ॥

पुरनर भरत प्रीति मैँ गाई। मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥
अब प्रभुचरित सुनहु अति पावन। करत जे बन सुर नर मुनि भावन ॥
एक बार चुनि कुसुम सुहाए। निज कर भूषन राम बनाए ॥
सीतहि पहिराए प्रभु सादर। बैठे फटिकसिला पर सुंदर ॥ ४
सुरपतिसुत धरि बायसबेषा। सठ चाहत रघुपतिबल देखा ॥
जिमि पिपीलिका सागर थाहा। महा मंदमति पावन चाहा ॥
सीताचरन चोँच हति भागा। मूढ़ मंदमति कारन कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना। सीक धनुष सायक संधाना ॥ ८

दोहा। अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह।
ता सन आइ कीन्ह छलु मूरुख अवगुनगेह ॥ १ ॥

प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा। चला भाजि बायस भय पावा ॥
धरि निज रूप गएउ पितु पाही। रामबिमुख राखा तेहि नाही ॥
भा निरास उपजी मन त्रासा। जथा चक्रभय रिषि दुर्बासा ॥
ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका। फिरा श्रमित ब्याकुल भय सोका ॥ ४

काहूँ बैठन कहा न ओही। राखि को सकै राम कर द्रोही॥
मातु मृत्यु पितु समन समाना। सुधा होइ बिष सुनु हरिजाना॥
मित्र करै सत रिपु कै करनी। ता कहँ बिबुधनदी बैतरनी॥
सब जगु ताहि अनलहु तें ताता। जो रघुबीरबिमुख सुनु भ्राता॥
नारद देखा बिकल जयंता। लागि दया कोमलचित संता॥
पठवा तुरत राम पहिं ताही। कहेसि पुकारि प्रनतहित पाही॥
आतुर सभय गहेसि पद जाई। त्राहि त्राहि दयाल रघुराई॥
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई। मैं मतिमंद जानि नहिं पाई॥
निज कृत कर्म जनित फल पाएउँ। अब प्रभु पाहि सरन तकि आएउँ॥
सुनि कृपाल अति आरत बानी। एकनयन करि तजा भवानी॥
सोरठा। कीन्ह मोहबस द्रोह जद्यपि तेहि कर बध उचित।
प्रभु छाड़ेउ करि छोह को कृपाल रघुबीर सम॥ २॥
रघुपति चित्रकूट बसि नाना। चरित किए श्रुति सुधा समाना॥
बहुरि राम अस मन अनुमाना। होइहि भीर सबहि मोहि जाना॥
सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई। सीता सहित चले द्वौ भाई॥
अत्रि के आश्रम जब प्रभु गएऊ। सुनत महामुनि हरषित भएऊ॥
पुलकित गात अत्रि उठि धाए। देखि रामु आतुर चलि आए॥
करत दंडवत मुनि उर लाए। प्रेम बारि द्वौ जन अन्हवाए॥
देखि रामछबि नयन जुड़ाने। सादर निज आश्रम तब आने॥
करि पूजा कहि बचन सुहाए। दिए मूल फल प्रभु मन भाए॥
सोरठा। प्रभु आसन आसीन भरि लोचन सोभा निरखि।
मुनिबर परम प्रबीन जोरि पानि अस्तुति करत॥ ३॥
छंद। नमामि भक्तवत्सलं कृपालशीलकोमलं
भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधामदं॥
निकामश्यामसुंदरं भवांबुनाथमंदरं
प्रफुल्लकंजलोचनं मदादिदोषमोचनं॥
प्रलंबबाहुविक्रमं प्रभोऽप्रमेयवैभवं
निषंगचापसायकं धरं त्रिलोकनायकं॥

दिनेशवंशमंडनं महेशचापखंडनं
मुनींद्रसंतरंजनं सुरारिवृंदभंजनं ॥
मनोजवैरिवंदितं अजादिदेवसेवितं
विशुद्धबोधविग्रहं समस्तदूषणापहं ॥
नमामि इंदिरापतिं सुखाकरं सतां गतिं
भजे सशक्तिसानुजं शचीपतिप्रियानुजं ॥
त्वदंघ्रिमूल ये नरा भजंति हीनमत्सराः
पतंति नो भवार्णवे वितर्कवीचिसंकुले ॥
विविक्तवासिनस्सदा भजंति मुक्तये मुदा
निरस्य इंद्रियादिकं प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥
त्वमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं
जगद्गुरुं च शाश्वतं तुरीयमेव केवलं ॥
भजामि भाववल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं
स्वभक्तकल्पपादपं समं सुसेव्यमन्वहं ॥
अनूपरूपभूपतिं नतोहमुर्विजापतिं
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहि मे ॥
पठंति ये स्तवं इदं नरादरेण ते पदं
व्रजंति नात्र संशयं त्वदीयभक्तिसंयुताः ॥

। दोहा ।

बिनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि ।
चरन सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि ॥ ४ ॥

अनसूया के पद गहि सीता । मिली बहोरि सुसील बिनीता ॥
रिषिपतिनी मन सुख अधिकाई । आसिष देइ निकट बैठाई ॥
दिब्य बसन भूषन पहिराए । जे नित नूतन अमल सुहाए ॥
कह रिषिबधू सरस मृदु बानी । नारिधर्म कछु ब्याज बखानी ॥
मातु पिता भ्राता हितकारी । मितप्रद सब सुनु राजकुमारी ॥
अमितदानि भर्ता बैदेही । अधम सो नारि जो सेव न तेही ॥
धीरजु धर्म मित्र अरु नारी । आपदकाल परिखिअहि चारी ॥

वृद्ध रोगबस जड़ धनहीना। अंध बधिर क्रोधी अतिदीना ॥
ऐसेहु पति कर किए अपमाना। नारि पाव जमपुर दुख नाना ॥
एकै धर्म एक व्रत नेमा। काय बचन मन पतिपद प्रेमा ॥
जग पतिव्रता चारि बिधि अहहीं। बेद पुरान संत सब कहहीं ॥
उत्तम के अस बस मन माही। सपनेहु आन पुरुष जग नाही ॥
मध्यम परपति देखै कैसे। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई। सो निकृष्ट त्रिय श्रुति अस कहई ॥
बिनु अवसर भय तें रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई ॥
पतिबंचक परपति रति करई। रौरव नरक कलप सत परई ॥
छनसुख लागि जन्म सत कोटी। दुख न समुझ तेहि सम को खोटी ॥
बिनु श्रम नारि परमगति लहई। पतिब्रतधर्म छाड़ि छल गहई ॥
पतिप्रतिकूल जन्मि जहँ जाई। बिधवा होइ पाइ तरुनाई ॥
सोरठा। सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ।
जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय ॥
सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं।
तोहि प्रानप्रिय राम कहेउ कथा संसार हित ॥ ५ ॥
सुनि जानकी परम सुख पावा। सादर तासु चरन सिरु नावा ॥
तब मुनि सन कह कृपानिधाना। आएसु होइ जाउँ बन आना ॥
संतत मो पर कृपा करेहू। सेवक जानि तजहु जनि नेहू ॥
धर्मधुरंधर प्रभु कै बानी। सुनि सप्रेम बोले मुनि ज्ञानी ॥
जासु कृपा अज सिव सनकादी। चहत सकल परमारथबादी ॥
ते तुम्ह राम अकाम पिआरे। दीनबंधु मृदु बचन उचारे ॥
अब जानी मैं श्रीचतुराई। भजी तुम्हहि सब देव बिहाई ॥
जेहि समान अतिसय नहि कोई। ता कर सील कस न अस होई ॥
केहि बिधि कहौं जाहु अब स्वामी। कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी ॥
अस कहि प्रभु बिलोकि मुनि धीरा। लोचन जल बह पुलक सरीरा ॥
छंद। तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन नयन मुख पंकज दिए।
मन ज्ञान गुन गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किए।

जप जोग धर्म समूह तेँ नर भगति अनुपम पावई।
रघुबीरचरित पुनीत निसि दिनु दास तुलसी गावई॥
दोहा। कलिमल समन दमन मन राम सुजसु सुखमूल।
सादर सुनहिँ जे तिन्ह पर रामु रहहिँ अनुकूल॥ १६
सोरठा। कठिन काल मलकोस धर्म न ज्ञान न जोग जप।
परिहरि सकल भरोस रामहि भजहिँ ते चतुर नर॥ ६॥
मुनिपद कमल नाइ करि सीसा। चले बनहि सुर नर मुनि ईसा॥
आगेँ राम अनुज पुनि पाछेँ। मुनिबर बेष बने अति काछेँ॥
उभय बीच श्री सोहइ कैसी। ब्रह्म जीव बिच माया जैसी॥
सरिता बन गिरि अवघट घाटा। पति पहिचानि देहिँ बर बाटा॥ ४
जहँ जहँ जाहिँ देव रघुराया। करहिँ मेघ तहँ तहँ नभ छाया॥
मिला असुर बिराध मग जाता। आवत ही रघुबीर निपाता॥
तुरतहि रुचिर रूप तेहि पावा। देखि दुखी निज धाम पठावा॥
पुनि आए जहँ मुनि सरभंगा। सुंदर अनुज जानकी संगा॥ ८
दोहा। देखि राममुख पंकज मुनिबर लोचन भृंग।
सादर पान करत अति धन्य जनम सरभंग॥ ७॥
कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला। संकरमानस राजमराला॥
जात रहेउँ बिरंचि केँ धामा। सुनेउँ श्रवन बन अइहहिँ रामा॥
चितवत पंथ रहेउँ दिनु राती। अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती॥
नाथ सकल साधन मैँ हीना। कीन्ही कृपा जानि जन दीना॥ ४
सो कछु देव न मोहि निहोरा। निज पन राखेहु जनमन चोरा॥
तब लगि रहहु दीन हित लागी। जब लगि तुम्हहि मिलौँ तनु त्यागी॥
जोग जग्य जप तप जत कीन्हा। प्रभु कहुँ देइ भगति बर लीन्हा॥
येहि बिधि सर रचि मुनि सरभंगा। बैठे हृदय छाड़ि सब संगा॥ ८
दोहा। सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तनु स्याम।
मम हिय बसहु निरंतर सगुनरूप श्रीराम॥ ८॥
अस कहि जोग अगिनि तनु जारा। रामकृपा बैकुंठ सिधारा॥
ताते मुनि हरिलीन न भएऊ। प्रथमहि भेदभगति बर लएऊ॥

रिषिनिकाय मुनिबर गति देखी। सुखी भए सब हृदय बिसेषी॥
अस्तुति करहिं सकल मुनिबृंदा। जयति प्रनतहित करुनाकंदा॥ ४
पुनि रघुनाथ चले बन आगे। मुनिबर बृंद बिपुल सँग लागे॥
अस्थिसमूह देखि रघुराया। पूँछा मुनिन्ह लागि अति दाया॥
जानतहूँ पूँछिय कस स्वामी। समदरसी तुम्ह अंतरजामी॥
निसिचरनिकर सकल मुनि खाए। सुनि रघुबीरनयन जल छाए॥ ८
दोहा। निसिचरहीन करौं महि भुज उठाइ पन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आश्रम जाइ जाइ सुख दीन्ह॥ ९॥
मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना। नाम सुतीछन रति भगवाना॥
मन क्रम बचन रामपद सेवक। सपनेहु आन भरोस न देव क॥
प्रभु आगमनु श्रवन सुनि पावा। करत मनोरथ आतुर धावा॥
हे बिधि दीनबंधु रघुराया। मो से सठ पर करिहहिं दाया॥ ४
सहित अनुज मोहि राम गोसाईं। मिलिहहिं निज सेवक कीं नाईं॥
मोरें जिय भरोस दृढ़ नाहीं। भगति बिरति न ग्यान मन माहीं॥
नहि सतसंग जोग जप जागा। नहि दृढ़ चरन कमल अनुरागा॥
एक बानि करुनानिधान की। सो प्रिय जाके गति न आन की॥ ८
होइहहिं सुफल आजु मम लोचन। देखि बदन पंकज भवमोचन॥
निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी। कहि न जाइ सो दसा भवानी॥
दिसि अरु बिदिसि पंथ नहि सूझा। को मैं चलेउँ कहाँ नहि बूझा॥
कबहुँक फिरि पाछे पुनि जाई। कबहुँक नृत्य करइ गुन गाई॥ १२
अबिरल प्रेम भगति मुनि पाई। प्रभु देखैं तरु ओट लुकाई॥
अतिसय प्रीति देखि रघुबीरा। प्रगटे हृदय हरन भवभीरा॥
मुनि मग माझ अचल होइ बैसा। पुलक सरीर पनसफल जैसा॥
तब रघुनाथ निकट चलि आए। देखि दसा निज जन मन भाए॥ १६
मुनिहि राम बहु भाँति जगावा। जाग न ध्यानजनित सुख पावा॥
भूपरूप तब राम दुरावा। हृदय चतुरभुजरूप देखावा॥
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसें। बिकल हीनमनि फनिबर जैसें॥
आगे देखि रामु तन स्यामा। सीता अनुज सहित सुखधामा॥ २०

परेउ लकुट इव चरनन्हि लागी। प्रेममगन मुनिवर बड़भागी॥
भुज बिसाल गहि लिए उठाई। परम प्रीति राखे उर लाई॥
मुनिहि मिलत अस सोह कृपाला। कनकतरुहि जनु भेट तमाला॥
रामबदनु बिलोक मुनि ठाढ़ा। मानहु चित्र माझ लिखि काढ़ा॥ २४
दोहा। तब मुनि हृदय धीर धरि गहि पद बारहि बार।
निज आश्रम प्रभु आनि करि पूजा - बिबिध प्रकार॥१०॥
कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी। अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी॥
महिमा अमित मोरि मति थोरी। रबिसनमुख खद्योत अजोरी॥
श्यामतामरसदामशरीरं। जटामुकुटपरिधनमुनिचीरं॥
पाणिचापशरकटितूणीरं। नौमि निरंतर श्रीरघुवीरं॥ ४
मोहविपिनघनदहनकृशानुः। संतसरोरुहकाननभानुः॥
निशिचरकरिबरूथमृगराजः। त्रातु सदा नो भवखगबाजः॥
अरुणनयनराजीवसुवेशं। सीतानयनचकोरनिशेशं॥
हरहृदि मानसराजमरालं। नौमि राम उरबाहुविशालं॥ ८
संशयसर्पग्रसनउरगादः। शमनसुकर्कशतर्कविषादः॥
भयभंजनरंजनजनयूथः। त्रातु सदा नो कृपावरूथः॥
निर्गुणसगुणविषमसमरूपं। ज्ञानगिरागोतीतमनूपं॥
अमलमखिलमनवद्यमपारं। नौमि राम भंजनमहिभारं॥ १२
भक्तकल्पपादपआरामः। तर्जनक्रोधलोभमदकामः॥
अतिनागरभवसागरसेतुः। त्रातु सदा दिनकरकुलकेतुः॥
अतुलितभुजप्रतापबलधामः। कलिमलविपुलविभंजननामः॥
धर्मवर्मनर्मदगुणग्रामः। संतत शं तनोतु मम रामः॥ १६
जदपि बिरज ब्यापक अबिनासी। सब के हृदय निरंतर बासी॥
तदपि अनुज श्री सहित खरारी। बसतु मनसि मम काननचारी॥
जे जानहिँ ते जानहु स्वामी। सगुन अगुन उर अंतरजामी॥
जो कोसलपति राजिवनयना। करौ सो राम हृदय मम अयना॥ २०
अस अभिमान जाइ जनि भोरेँ। मैँ सेवक रघुपति पति मोरेँ॥
सुनि मुनिबचन राममन भाए। बहुरि हरषि मुनिबर उर लाए॥

परम प्रसन्न जानु मुनि मोही। जो वर मागहु देउँ सो तोही॥
मुनि कह मैं बर कबहुँ न जाचा। समुझि न परै झूठ का साचा॥ २४
तुम्हहि नीक लागै रघुराई। सो मोहि देहु दास सुखदाई॥
अबिरल भगति बिरति बिज्ञाना। होहु सकल गुन ज्ञान निधाना॥
प्रभु जो दीन्ह सो वरु मैं पावा। अब सो देहु मोहि जो भावा॥

दोहा। अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम। २८
मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा येह काम॥११॥

एवमस्तु कहि रमानिवासा। हरषि चले कुंभज रिषि पासा॥
बहुत दिवस गुरदरसनु पाएँ। भए मोहि येहि आश्रम आएँ॥
अब प्रभु संग जाउँ गुर पाहीं। तुम्ह कहुँ नाथ निहोरा नाहीं॥
देखि कृपानिधि मुनिचतुराई। लिए संग बिहसे द्वौ भाई॥ ४
पंथ कहत निज भगति अनूपा। मुनि आश्रम पहुचे सुरभूपा॥
तुरत सुतीछन गुर पहि गएऊ। करि दंडवत कहत अस भएऊ॥
नाथ कोसलाधीसकुमारा। आए मिलन जगत आधारा॥
राम अनुज समेत वैदेही। निसि दिनु देव जपत हहु जेही॥ ८
सुनत अगस्ति तुरत उठि धाए। हरि बिलोकि लोचन जल छाए॥
मुनिपद कमल परे द्वौ भाई। रिषि अति प्रीति लिये उर लाई॥
सादर कुसल पूछि मुनि ज्ञानी। आसन वर बैठारे आनी॥
पुनि करि बहु प्रकार प्रभुपूजा। मोहि सम भाग्यवंत नहि दूजा॥ १२
जहँ लगि रहे अपर मुनिबृंदा। हरषे सब बिलोकि सुखकंदा॥

दोहा। मुनिसमूह महँ बैठे सन्मुख सब की ओर।
सरद इंदु तन चितवत मानहु निकर चकोर॥१२॥

तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं। तुम्ह सन प्रभु दुराव कछु नाहीं॥
तुम्ह जानहु जेहि कारन आएउँ। तातें तात न कहि समुझाएउँ॥
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही। जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही॥
मुनि मुसुकाने सुनि प्रभुबानी। पूछेहु नाथ मोहि का जानी॥ ४
तुम्हरेइ भजन प्रभाव अघारी। जानौं महिमा कछुक तुम्हारी॥
ऊमरितरु बिसाल तव माया। फल ब्रह्मांड अनेक निकाया॥

जीव चराचर जंतु समाना। भीतर बसहिँ न जानहिँ आना॥
ते फलभच्छक कठिन कराला। तव भय डरत सदा सोउ काला॥
ते तुम्ह सकल लोकपति साईँ। पूछेहु मोहि मनुज की नाईँ॥
येह बर मागौँ कृपानिकेता। बसहु हृदय श्री अनुज समेता॥
अबिरल भगति बिरति सतसंगा। चरन सरोरुह प्रीति अभंगा॥
जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता। अनुभवगम्य भजहिँ जेहि संता॥
अस तव रूप बखानौँ जानौँ। फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानौँ॥
संतत दासन्ह देहु बड़ाई। तातेँ मोहि पूछेहु रघुराई॥
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ। पावन पंचबटी तेहि नाऊँ॥
दंडक बन पुनीत प्रभु करहू। उग्र श्राप मुनिवर कै हरहू॥
बास करहु तहँ रघुकुलराया। कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया॥
चले राम मुनि आएसु पाई। तुरतहि पंचबटी नियराई॥
दोहा। गीधराज सैँ भेट भै बहु बिधि प्रीति दृढ़ाइ।
गोदावरी निकट प्रभु रहे परनगृह छाइ॥१३॥
जब तेँ राम कीन्ह तहँ बासा। सुखी भए मुनि बीती त्रासा॥
गिरि बन नदी ताल छबि छाए। दिन दिन प्रति अति होहिँ सुहाए॥
खग मृग बृंद अनंदित रहहीँ। मधुप मधुर गुंजत छबि लहहीँ॥
सो बन बरनि न सक अहिराजा। जहाँ प्रगट रघुबीर बिराजा॥
एक बार प्रभु सुख आसीना। लछिमन बचन कहे छलहीना॥
सुर नर मुनि सचराचर साईँ। मैँ पूछौँ निज प्रभु की नाईँ॥
मोहि समुझाइ कहहु सो देवा। सब तजि करौँ चरनरज सेवा॥
कहहु ज्ञान बिराग अरु माया। कहहु सो भगति करहु जेहि दाया॥
दोहा। ईस्वर जीवहि भेद प्रभु सकल कहहु समुझाइ।
जातेँ होइ चरनरति सोक मोह भ्रम जाइ॥१४॥
थोरेँहि महु सब कहउँ बुझाई। सुनहु तात मति मन चितु लाई॥
मैँ अरु मोर तोर तैँ माया। जेहि बस कीन्हे जीवनिकाया॥
गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई॥
तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ। बिद्या अपर अबिद्या दोऊ॥

एक दुष्ट अतिसय दुख रूपा। जा बस जीव परा भव कूपा॥
एक रचै जग गुन बस जाकें। प्रभुप्रेरित नहिं निज बल ताकें॥
ज्ञान मान जहँ एकौ नाहीं। देख ब्रह्म समान सब माहीं॥
कहिअ तात सो परम बिरागी। तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी॥ ८
दोहा। माया ईस न आपु कहुँ जान कहिअ सो जीव।
बंध मोच्छ प्रद सबपर मायाप्रेरक सीव॥१५॥
धर्म तें बिरति जोग तें ज्ञाना। ज्ञान मोच्छप्रद बेद बखाना॥
जा तें बेगि द्रवउँ मैं भाई। सो मम भगति भगत सुखदाई॥
सो सुतंत्र अवलंब न आना। तेहि आधीन ज्ञान बिज्ञाना॥
भगति तात अनुपम सुखमूला। मिलइ जो संत होहिं अनुकूला॥ ४
भगति कि साधन कहौं बखानी। सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी॥
प्रथमहि बिप्रचरन अति प्रीती। निज निज धर्म निरत श्रुतिरीती॥
एहि कर फल पुनि बिषयबिरागा। तब मम धर्म उपज अनुरागा॥
श्रवनादिक नव भगति दृढ़ाहीं। मम लीला रति अति मन माहीं॥ ८
संतचरन पंकज अति प्रेमा। मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा॥
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा। सब मोहि कहँ जानै दृढ़ सेवा॥
मम गुन गावत पुलक सरीरा। गदगद गिरा नयन बह नीरा॥
काम आदि मद दंभ न जाकें। तात निरंतर बस मैं ताकें॥ १२
दोहा। बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निष्काम।
तिन्ह के हृदय कमल महु करौं सदा बिश्राम॥१६॥
भगतिजोग सुनि अति सुख पावा। लछिमन प्रभुचरनन्हि सिरु नावा॥
एहि बिधि गए कछुक दिन बीती। कहत बिराग ज्ञान गुन नीती॥
सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जसि अहिनी॥
पंचबटी सो गै एक बारा। देखि बिकल भइ जुगल कुमारा॥ ४
भ्राता पिता पुत्र उरगारी। पुरुष मनोहर निरखत नारी॥
होइ बिकल सक मनहि न रोकी। जिमि रबिमनि द्रव रबिहि बिलोकी॥
रुचिर रूप धरि प्रभु पहि जाई। बोली बचन मधुर मुसुकाई॥
तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी। येह सँजोग बिधि रचा बिचारी॥ ८

मम अनुरूप पुरुष जग माहीँ। देखिउँ खोजि लोक तिहुँ नाहीँ॥
ता तेँ अब लगि रहिउँ कुमारी। मनु माना कछु तुम्हहि निहारी॥
सीतहि चितइ कही प्रभु बाता। अहै कुमार मोर लघु भ्राता॥
गइ लछिमन रिपुभगिनी जानी। प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी॥ १२
सुंदरि सुनु मैँ उन्ह कर दासा। पराधीन नहि तोर सुपासा॥
प्रभु समर्थ कोसलपुर राजा। जो कछु करहिँ उन्हहि सब छाजा॥
सेवक सुख चह मान भिखारी। ब्यसनी धन सुभ गति बिभिचारी॥
लोभी जसु चह चार गुनानी। नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी॥ १६
पुनि फिरि राम निकट सो आई। प्रभु लछिमन पहि बहुरि पठाई॥
लछिमन कहा तोहि सो बरई। जो तृन तोरि लाज परिहरई॥
तब खिसिआनि राम पहि गई। रूप भयंकर प्रगटत भई॥
सीतहि सभय देखि रघुराई। कहा अनुज सन सयन बुझाई॥ २०

।दोहा।

लछिमन अति लाघव सो नाक कान बिनु कीन्हि।
ताके कर रावन कहुँ मनहु चुनौती दीन्हि॥१७॥

नाक कान बिनु भइ बिकरारा। जनु स्रव सैल गेरु कै धारा॥
खर दूषन पहि गै बिलपाता। धिग धिग तव बल पौरुष भ्राता॥
तेहि पूछा सब कहेसि बुझाई। जातुधान सुनि सेन बनाई॥
धाए निसिचर बरन बरूथा। जनु सपच्छ कज्जल गिरि जूथा॥ ४
नाना बाहन नानाकारा। नानायुध धर घोर अपारा॥
सूपनखा आगे करि लीनी। असुभ रूप श्रुति नासा हीनी॥
असगुन अमित होहिँ भयकारी। गनहिँ न मृत्यु बिबस सब झारी॥
गर्जहिँ तर्जहिँ गगन उड़ाहीँ। देखि कटकु भट अति हरषाहीँ॥ ८
कोउ कह जिअत धरहु द्वौ भाई। धरि मारहु त्रिय लेहु छोड़ाई॥
धूरि पूरि नभमंडल रहा। राम बोलाइ अनुज सन कहा॥
लै जानकिहि जाहु गिरिकंदर। आवा निसिचरकटकु भयंकर॥
रहेहु सजग सुनि प्रभु कइ बानी। चले सहित श्री सर धनु पानी॥ १२
देखि राम रिपुदल चलि आवा। बिहसि कठिन कोदंड चढ़ावा॥

छंद। कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जटजूट बाँधत सोह क्यों।
मरकत सयल पर लरत दामिनि कोटि सौं जुग भुजग ज्यों।
कटि कसि निषंग बिसाल भुज गहि चाप बिसिख सुधारि कै।
चितवत मनहु मृगराज प्रभु गजराजघटा निहारि कै॥
सोरठा। आइ गए बगमेल धरहु धरहु धावत सुभट।
जथा बिलोकि अकेल बालरबिहि घेरत दनुज॥१८॥
प्रभु बिलोकि सर सकहिँ न डारी। थकित भई रजनीचरधारी॥
सचिव बोलि बोले खर दूषन। येह कोउ नृपबालक नरभूषन॥
नाग असुर सुर नर मुनि जेते। देखे जिते हते हम केते॥
हम भरि जन्म सुनहु सब भाई। देखी नहि असि सुंदरताई॥
जद्यपि भगिनी कीन्हि कुरूपा। बध लायक नहि पुरुष अनूपा॥
देहु तुरत निज नारि दुराई। जीवत भवन जाहु द्वौ भाई॥
मोर कहा तुम्ह ताहि सुनावहु। तासु बचन सुनि आतुर आवहु॥
दूतन्ह कहा राम सन जाई। सुनत राम बोले मुसुकाई॥
हम छत्री मृगया बन करहीँ। तुम्ह से खल मृग खोजत फिरहीँ॥
रिपु बलवंत देखि नहि डरहीँ। एक बार कालहु सन लरहीँ॥
जद्यपि मनुज दनुजकुल घालक। मुनिपालक खलसालक बालक॥
जौ न होइ बल गृह फिरि जाहू। समरबिमुख मैं हतौं न काहू॥
रन चढ़ि करिअ कपटचतुराई। रिपु पर कृपा परम कदराई॥
दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ। सुनि खर दूषन उर अति दहेऊ॥
छंद। उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाए बिकट भट रजनीचरा।
सर चाप तोमर सक्ति सूल कृपान परिघ परसु धरा।
प्रभु कीन्हि धनुषटँकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा।
भए बधिर ब्याकुल जातुधान न ज्ञान तेहि अवसर रहा॥
दोहा। सावधान होइ धाए जानि सबल आराति।
लागे बरषन राम पर अस्त्र सस्त्र बहु भाँति॥
तिन्ह के आयुध तिल सम करि काटे रघुबीर।
तानि सरासन श्रवन लगि पुनि छाड़े निज तीर॥१९॥

तब चले बान कराल। फुंकरत जनु बहु ब्याल॥
कोपेउ समर श्रीराम। चले बिसिख निसित निकाम॥
अवलोकि खरतर तीर। मुरि चले निसिचर बीर॥
भए क्रुद्ध तीनिउ भाइ। जो भागि रन तेँ जाइ॥ ४
तेहि बधब हम निज पानि। फिरे मरन मन महु ठानि॥
आयुध अनेक अपार। सन्मुख ते करहिँ प्रहार॥
रिपु परम कोपे जानि। प्रभु धनुष सर संधानि॥
छाड़े बिपुल नाराच। लगे कटन बिकट पिसाच॥ ८
उर सीस भुज कर चरन। जहँ तहँ लगे महि परन॥
चिक्करत लागत बान। धर परत कुधर समान॥
भट कटत तन सत खंड। पुनि उठत करि पाषंड॥
नभ उड़त बहु भुज मुंड। बिनु मौलि धावत रुंड॥ १२
खग कंक काक सृकाल। कटकटहिँ कठिन कराल॥

। छंद ।

कटकटहिँ जंबुक भूत प्रेत पिसाच खर्पर संचहीँ।
बेताल बीर कपाल ताल बजाइ जोगिनि नंचहीँ।
रघुबीरबान प्रचंड खंडहिँ भटन्ह के उर भुज सिरा। १६
जहँ तहँ परहिँ उठि लरहिँ धर धरु धरु करहिँ भयकर गिरा।
अंतावरीँ गहि उड़त गीध पिसाच कर गहि धावहीँ।
संग्राम पुर बासी मनहु बहु बाल गुड़ी उड़ावहीँ।
मारे पछारे उर बिदारे बिपुल भट कहरत परे। २०
अवलोकि निज दल बिकल भट तिसिरादि खर दूषन फिरे।
सर सक्ति तोमर परसु सूल कृपान एकहि बारहीँ।
करि कोप श्रीरघुबीर पर अगनित निसाचर डारहीँ।
प्रभु निमिष महु रिपुसर निवारि पचारि डारे सायका। २४
दस दस बिसिख उर माझ मारे सकल निसिचरनायका।
महि परत भट उठि भिरत मरत न करत माया अति घनी।
सुर डरत चौदह सहस प्रेत बिलोकि एक अवधधनी।

सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाथ अति कौतुक करयो। २८
देखहिं परसपर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मरयो॥

दोहा। राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्बान।
करि उपाय रिपु मारे छन महु कृपानिधान॥
हरषित बरषहिं सुमन सुर बाजहिं गगन निसान। ३२
अस्तुति करि करि सब चले सोभित बिबिध बिमान॥२०॥

जब रघुनाथ समर रिपु जीते। सुर नर मुनि सब के भय बीते॥
तब लछिमनु सीतहि लै आए। प्रभुपद परत हरषि उर लाए॥
सीता चितव स्याम मृदु गाता। परम प्रेम लोचन न अघाता॥
पंचबटीँ बसि श्रीरघुनायक। करत चरित सुर मुनि सुखदायक॥ ४
धुआँ देखि खर दूषन केरा। जाइ सुपनखा रावनु प्रेरा॥
बोली बचन क्रोध करि भारी। देस कोस कै सुरति बिसारी॥
करसि पान सोवसि दिनु राती। सुधि नहि तव सिर पर आराती॥
राजु नीति बिनु धनु बिनु धर्मा। हरिहि समर्पे बिनु सतकर्मा॥ ८
बिद्या बिनु बिबेक उपजाएँ। श्रम फल पढ़ें किएँ अरु पाएँ॥
संग तेँ जती कुमंत्र तेँ राजा। मान तेँ ग्यान पान तेँ लाजा॥
प्रीति प्रनय बिनु मद तेँ गुनी। नासहिं बेगि नीति असि सुनी॥

सोरठा। रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनिअ न छोट करि। १२
अस कहि बिबिध बिलाप करि लागी रोदनु करन॥

दोहा। सभा माँझ परि ब्याकुल बहु प्रकार कह रोइ।
तोहि जिअत दसकंधर मोरि कि असि गति होइ॥२१॥

सुनत सभासद उठे अकुलाई। समुझाई गहि बाह उठाई॥
कह लंकेस कहसि निज बाता। केइँ तव नासा कान निपाता॥
अवधनृपति दसरथ के जाए। पुरुषसिंघ बन खेलन आए॥
समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी। रहित निसाचर करिहहिं धरनी॥ ४
जिन्ह कर भुजबल पाइ दसानन। अभय भए बिचरत मुनि कानन॥
देखत बालक काल समाना। परम धीर धन्वी गुन नाना॥
अतुलित बल प्रताप द्वौ भ्राता। खल बध रत सुर मुनि सुखदाता॥

सोभाधाम राम अस नामा। तिन्ह कें संग नारि एक स्यामा ॥ ८
रूपरासि बिधि नारि सँवारी। रति सत कोटि तासु बलिहारी ॥
तासु अनुज काटे श्रुति नासा। सुनि तव भगिनि करहिं परिहासा ॥
खर दूषन सुनि लगे पुकारा। छन महु सकल कटकु उन्ह मारा ॥
खर दूषन तिसिरा कर घाता। सुनि दससीस जरे सब गाता ॥ १२

दोहा। सूपनखहि समुझाइ करि बल बोलेसि बहु भाँति।
गएउ भवन अति सोच बस नीद परइ नहि राति ॥२२॥

सुर नर असुर नाग खग माहीँ। मोरे अनुचर कहँ कोउ नाहीँ ॥
खर दूषन मोहि सम बलवंता। तिन्हहि को मारइ बिनु भगवंता ॥
सुररंजन भंजन महिभारा। जौँ भगवंत लीन्ह अवतारा ॥
तौ मैँ जाइ बयरु हठि करऊँ। प्रभुसर प्रान तजेँ भव तरऊँ ॥ ४
होइहि भजनु न तामस देहा। मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ एहा ॥
जौ नररूप भूपसुत कोऊ। हरिहौँ नारि जीति रन दोऊ ॥
चला अकेल जान चढ़ि तहवाँ। बस मारीच सिंधु तट जहवाँ ॥
इहाँ राम जसि जुगुति बनाई। सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥ ८

दोहा। लछिमनु गए बनहि जब लेन, मूल फल कंद।
जनकसुता सन बोले बिहसि कृपा सुख बृंद ॥२३॥

सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला। मैँ कछु करबि ललित नरलीला ॥
तुम्ह पावक महु करहु निवासा। जौ लगि करौँ निसाचरनासा ॥
जबहि राम सबु कहा बखानी। प्रभुपद धरि हिय अनल समानी ॥
निज प्रतिबिंब राखि तहँ सीता। तैसेइ सील रूप सुबिनीता ॥ ४
लछिमनहूँ येह मरमु न जाना। जो कछु चरित रचेउ भगवाना ॥
दसमुख गएउ जहाँ मारीचा। नाइ माथ स्वारथरत नीचा ॥
नवनि नीच कै अति दुखदाई। जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ॥
भयदायक खल कै प्रिय बानी। जिमि अकाल के कुसुम भवानी ॥ ८

दोहा। करि पूजा मारीच तब सादर पूछी बात।
कवन हेतु मन ब्यग्र अति अकसर आएहु तात ॥२४॥

दंसमुख सकल कथा तेहि आगेँ। कही सहित अभिमान अभागेँ ॥

होहु कपटमृग तुम्ह छलकारी । जेहि बिधि हरि आनौं नृपनारी ॥
तेहि पुनि कहा सुनहि दससीसा । ते नररूप चराचर ईसा ॥
तासौं तात बयरु नहि कीजै । मारें मरिअ जिआएँ जीजै ॥ ४
मुनिमख राखन गए कुमारा । बिनु फर सर रघुपति मोहि मारा ॥
सत जोजन आएउँ छन माहीँ । तिन्ह सन बयरु किएँ भल नाहीँ ॥
भइ मम कीट भृंग कै नाई । जहँ तहँ मैं देखौं दोउ भाई ॥
जौ नर तात तदपि अति सूरा । तिन्हहि बिरोधि न आइहि पूरा ॥ ८

दोहा । जेहि ताड़का सुबाहु हति खंडेउ हरकोदंड ।
खर दूषन तिसिरा बधेउ मनुज कि अस बरिबंड ॥२५॥

जाहु भवन कुलकुसल बिचारी । सुनत जरा दीन्हिसि बहु गारी ॥
गुर जिमि मूढ़ करसि मम बोधा । कहु जग मोहि समान को जोधा ॥
तब मारीच हृदय अनुमाना । नवहि बिरोधें नहि कल्याना ॥
सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी । बैद बंदि कबि भानसगुनी ॥ ४
उभय भाँति देखा निज मरना । तब ताकिसि रघुनायकसरना ॥
उतरु देत मोहि बधब अभागें । कस न मरौं रघुपतिसर लागें ॥
अस जिय जानि दसाननसंगा । चला रामपद प्रेमु अभंगा ॥
मन अति हरष जनाव न तेही । आजु देखिहउँ परम सनेही ॥ ८

छंद । निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पाइहौं ।
श्री सहित अनुज समेत कृपानिकेत पद मनु लाइहौं ।
निर्बानदायक क्रोध जा कर भगति अबसहि बसकरी ।
निज पानि सर संधानि सो मोहि बधिहि सुखसागर हरी ॥ १२

दोहा । मम पाछें धर धावत धरें सरासन बान ।
फिरि फिरि प्रभुहि बिलोकिहौं धन्य न मो सम आन ॥२६॥

तेहि बन निकट दसानन गएऊ । तब मारीच कपटमृग भएऊ ॥
अति बिचित्र कछु बरनि न जाई । कनकदेह मनिरचित बनाई ॥
सीता परम रुचिर मृग देखा । अंग अंग सुमनोहर बेषा ॥
सुनहु देव रघुबीर कृपाला । येहि मृग कर अति सुंदर छाला ॥ ४
सत्यसंध प्रभु बधि करि एही । आनहु चर्म कहति बैदेही ॥

तब रघुपति जानत सब कारन । उठे हरषि सुरकाजु सँवारन ॥
मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा । करतल चाप रुचिर सर साँधा ॥
प्रभु लछिमनहि कहा समुझाई । फिरत बिपिन निसिचर बहु भाई ॥ ८
सीता केरि करेहु रखवारी । बुधि बिबेक बल समय बिचारी ॥
प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी । धाए रामु सरासन साजी ॥
निगम नेति सिव ध्यान न पावा । मायामृग पाछे सोइ धावा ॥
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई । कबहुँक प्रगटै कबहुँ छपाई ॥ १२
प्रगटत दुरत करत छल भूरी । एहि बिधि प्रभुहि गएउ लै दूरी ॥
तब तकि राम कठिन सर मारा । धरनि परेउ करि घोर पुकारा ॥
लछिमन कर प्रथमहि लइ नामा । पाछे सुमिरेसि मन महु रामा ॥
प्रान तजत प्रगटेसि निज देहा । सुमिरेसि रामु समेत सनेहा ॥ १६
अंतरप्रेमु तासु पहिचाना । मुनिदुर्लभ गति दीन्हि सुजाना ॥

दोहा । बिपुल सुमन सुर बरषहिँ गावहिँ प्रभु गुन गाथ ।
निज पद दीन्ह असुर कहुँ दीनबंधु रघुनाथ ॥२७॥

खल बधि तुरत फिरे रघुबीरा । सोह चाप कर कटि तूनीरा ॥
आरत गिरा सुनी जब सीता । कह लछिमन सन परम सभीता ॥
जाहु बेगि संकट अति भ्राता । लछिमन बिहसि कहा सुनु माता ॥
भृकुटिबिलास सृष्टि लय होई । सपनेहुँ संकट परै कि सोई ॥ ४
मरम बचन जब सीता बोला । हरिप्रेरित लछिमनमन डोला ॥
बन दिसि देव सौंपि सब काहू । चले जहाँ रावन ससि राहू ॥
सून बीच दसकंधर देखा । आवा निकट जती के बेषा ॥
जाकेँ डर सुर असुर डेराहीँ । निसि न नीँद दिन अन्न न खाहीँ ॥ ८
सो दससीस स्वान की नाईँ । इत उत चितइ चला भँडिहाईँ ॥
इमि कुपंथ पगु देत खगेसा । रह न तेज तन बुधि बल लेसा ॥
नाना बिधि कहि कथा सुहाई । राजनीति भय प्रीति देखाई ॥
कह सीता सुनु जती गोसाईँ । बोलेहु बचन दुष्ट की नाईँ ॥ १२
तब रावन निज रूप देखावा । भई सभय जब नामु सुनावा ॥
कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा । आइ गएउ प्रभु खल रहु ठाढ़ा ॥

जिमि हरिबधुहि छुद्र सस चाहा। भयसि कालबस निसिचरनाहा ॥
सुनत बचन दससीस रिसाना। मन महु चरन बंदि सुख माना ॥
दोहा। क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ।
चला गगनपथ आतुर भय रथ हाँकि न जाइ ॥२८॥
हा जगदेकबीर रघुराया। केहि अपराध बिसारिहु दाया ॥
आरतिहरन सरन सुखदायक। हा रघुकुल सरोज दिननायक ॥
हा लछिमन तुम्हार नहि दोसा। सो फलु पाएउँ कीन्हेउँ रोसा ॥
बिबिध बिलाप करति बैदेही। भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥
बिपति मोरि को प्रभुहि सुनावा। पुरोडास चह रासभ खावा ॥
सीता कै बिलाप सुनि भारी। भए चराचर जीव दुखारी ॥
गीधराज सुनि आरत बानी। रघुकुलतिलक नारि पहिचानी ॥
अधम निसाचर लीन्हे जाई। जिमि मलेछबस कपिला गाई ॥
सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा। करिहौं जातुधान कर नासा ॥
धावा क्रोधवंत खग कैसें। छूटै पबि पर्वत कहुँ जैसें ॥
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही। निर्भय चलेसि न जानेहि मोही ॥
आवत देखि कृतांत समाना। फिरि दसकंधर कर अनुमाना ॥
की मैनाक कि खगपति होई। मम बल जान सहित पति सोई ॥
जाना जरठ जटायू एहा। मम कर तीरथ छाड़िहि देहा ॥
सुनत गीध क्रोधातुर धावा। कह सुनु रावन मोर सिखावा ॥
तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू। नाहि त अस होइहि बहु बाहू ॥
रामरोष पावक अति घोरा। होइहि सलभ सकल कुल तोरा ॥
उतरु न देत दसानन जोधा। तबहि गीध धावा करि क्रोधा ॥
धरि कच बिरथ कीन्ह महि गिरा। सीतहि राखि गीध पुनि फिरा ॥
चोँचन्ह मारि बिदारेसि देही। दंड एक भइ मुरुछा तेही ॥
तब सक्रोध निसिचर खिसिआना। काढ़ेसि परम कराल कृपाना ॥
काटेसि पंख परा खग धरनी। सुमिरि राम करि अद्भुत करनी ॥
सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी। चला उताइल त्रास न थोरी ॥
करति बिलाप जाति नभ सीता। ब्याध बिबस जनु मृगी सभीता ॥

गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी। कहि हरिनाम दीन्ह पट डारी॥
एहि विधि सीतहि लइ सो गएऊ। बन असोक महु राखत भएऊ॥
दोहा। हारि परा खल बहु विधि भय अरु प्रीति देखाइ।
तब असोक पादप तर राखिसि जतनु कराइ॥
जेहि विधि कपटकुरंग सँग धाइ चले श्रीराम।
सो छवि सीता राखि उर रटत रहति हरिनाम॥२९॥
रघुपति अनुजहि आवत देखी। बाहिज चिंता कीन्हि बिसेषी॥
जनकसुता परिहरिहु अकेली। आएहु तात वचन मम पेली॥
निसिचरनिकर फिरहिँ बन माहीँ। मम मन सीता आश्रम नाहीँ॥
गहि पद कमल अनुज कर जोरी। कहेउ नाथ कछु मोहि न खोरी॥
अनुज समेत गए प्रभु तहाँ। गोदावरि तट आश्रम जहाँ॥
आश्रम देखि जानकीहीना। भए बिकल जस प्राकृत दीना॥
हा गुनखानि जानकी सीता। रूप सील ब्रत नेम पुनीता॥
लछिमन समुझाए बहु भाँती। पूछत चले लता तरु पाँती॥
हे खग मृग हे मधुकरश्रेनी। तुम्ह देखी सीता मृगनयनी॥
खंजन सुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला प्रबीना॥
कुंदकलीँ दाड़िम दामिनी। कमल सरद ससि अहिभामिनी॥
वरुनपास मनोजधनु हंसा। गज केहरि निज सुनत प्रसंसा॥
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीँ। नेकु न संक सकुच मन माहीँ॥
सुनु जानकी तोहि बिनु आजू। हरषे सकल पाइ जनु राजू॥
किमि सहि जात अनख तोहि पाहीँ। प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीँ॥
एहि विधि खोजत बिलपत स्वामी। मनहु महा बिरही अति कामी॥
पूरनकाम राम सुखरासी। मनुजचरित कर अज अबिनासी॥
आगे परा गीधपति देखा। सुमिरत रामचरन जिन्ह रेखा॥
दोहा। कर सरोज सिर परसेउ कृपासिंधु रघुवीर।
निरखि राम छबिधाम मुख बिगत भई सब पीर॥३०॥
तब कह गीध बचन धरि धीरा। सुनहु राम भंजन भवभीरा॥
नाथ दसानन येह गति कीन्ही। तेहि खल जनकसुता हरि लीन्ही॥

लै दच्छिन दिसि गएउ गोसाईं। बिलपति अति कुररी की नाईं।।
दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना। चलन चहत अब कृपानिधाना।।
राम कहा तनु राखहु ताता। मुख मुसुकाइ कही तेहि बाता।।
जा कर नाम मरत मुख आवा। अधमौ मुकुत होइ श्रुति गावा।।
सो मम लोचन गोचर आगें। राखौं देह नाथ केहि खाँगें।।
जल भरि नयन कहहिं रघुराई। तात कर्म निज तें गति पाई।।
परहित बस जिन्ह के मन माहीं। तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।।
तनु तजि तात जाहु मम धामा। देउँ काह तुम्ह पूरनकामा।।

दोहा। सीताहरन तात जनि कहहु पिता सन जाइ।
जौं मैं राम त कुल सहित कहिहि दसानन आइ।।३१।।

गीध देह तजि धरि हरिरूपा। भूषन बहु पट पीत अनूपा।।
स्याम गात बिसाल भुज चारी। अस्तुति करत नयन भरि बारी।।

छंद। जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुनप्रेरक सही।
दससीसबाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही।
पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं।
नित नौमि राम कृपाल बाहु बिसाल भव भय मोचनं।
बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं।
गोबिंद गोपर द्वंद्वहर बिज्ञानघन धरनीधरं।
जो राममंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं।
नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं।
जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म ब्यापक बिरज अज कहि गावहीं।
करि ध्यान ग्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं।
सो प्रगट करुनाकंद सोभावृंद अग जग मोहई।
मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई।
जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा।
पस्यंति जं जोगी जतनु करि करत मन गो बस जदा।
सो राम रमानिवास संतत दासबस त्रिभुवनधनी।
मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी।।

दोहा। अबिरल भगति मागि बर गीध गएउ हरिधाम।
तेहि कइ क्रिया जथोचित निज कर कीन्ही राम ॥३२॥ २०
कोमल चित अति दीनदयाला। कारन बिनु रघुनाथ कृपाला ॥
गीध अधम खग आमिषभोगी। गति दीन्ही जो जाचत जोगी ॥
सुनहु उमा ते लोग अभागी। हरि तजि होहिँ बिषय अनुरागी ॥
पुनि सीतहि खोजत द्वौ भाई। चले बिलोकत बन बहुताई ॥ ४
संकुल लता बिटप घन कानन। बहु खग मृग तहँ गज पंचानन ॥
आवत पंथ कबंध निपाता। तेहि सब कही श्राप कै बाता ॥
दुर्बासा मोहि दीन्ही श्रापा। प्रभुपद देखि मिटा सो पापा ॥
सुनु गंधर्ब कहौँ मैँ तोही। मोहि न सोहाइ ब्रह्मकुल द्रोही ॥ ८
दोहा। मन क्रम बचन कपट तजि जो कर भूसुरसेव।
मोहि समेत बिरंचि सिव बस ताकेँ सब देव ॥३३॥
सापत ताड़त परुष कहंता। बिप्र पूज्य अस गावहिँ संता ॥
पूजिअ बिप्र सील गुन हीना। सूद्र न गुनगन ज्ञान प्रबीना ॥
कहि निज धर्म ताहि समुझावा। निज पद प्रीति देखि मन भावा ॥
रघुपतिचरन कमल सिरु नाई। गएउ गगन आपनि गति पाई ॥ ४
ताहि देइ गति राम उदारा। सबरी केँ आश्रम पगु धारा ॥
सबरी देखि राम गृह आए। मुनि के बचन समुझि जिय भाए ॥
सरसिज लोचन बाहु बिसाला। जटा मुकुट सिर उर बनमाला ॥
स्याम गौर सुंदर द्वौ भाई। सबरी परी चरन लपटाई ॥ ८
प्रेममगन मुख बचनु न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिरु नावा ॥
सादर जल लै चरन पखारे। पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥
दोहा। कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ॥३४॥ १२
पानि जोरि आगे भइ ठाढ़ी। प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी ॥
केहि बिधि अस्तुति करउँ तुम्हारी। अधम जाति मैँ जड़मति भारी ॥
अधम तेँ अधम अधम अति नारी। तिन्ह मह मैँ अति मंद अघारी ॥
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानौँ एक भगति कर नाता ॥ ४

जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई ॥
भगतिहीन नर सोहै कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा ॥
नवधा भगति कहौं तोहि पाहीं। सावधान सुनि धरु मन माहीं ॥
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ॥ ८

दोहा। गुरपद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुनगन करइ कपट तजि गान ॥३५॥

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजनु सो बेद प्रकासा ॥
छठ दम सील बिरति बहु कर्मा। निरत निरंतर सज्जनधर्मा ॥
सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मो तेँ संत अधिक करि लेखा ॥
आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहु नहि देखइ परदोषा ॥ ४
नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हिय हरष न दीना ॥
नव महु एकौ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सोइ अतिसय भामिनि प्रिय मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें ॥
जोगिवृंद दुर्लभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई ॥ ८
मम दरसन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज सरूपा ॥
जनकसुता कइ सुधि भामिनी। जानहि कहँ करिबरगामिनी ॥
पंपा सरहि जाहु रघुराई। तहँ होइहि सुग्रीवमिताई ॥
सो सब कहिहि देव रघुबीरा। जानतहूँ पूछहु मतिधीरा ॥ १२
बार बार प्रभुपद सिरु नाई। प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥

छंद। कहि कथा सकल बिलोकि हरिमुख हृदय पद पंकज धरे।
तजि जोगपावक देह हरिपद लीन भै जहँ नहि फिरे।
नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागहू। १६
बिस्वास करि कह दास तुलसी रामपद अनुरागहू ॥

दोहा। जातिहीन अघ जन्ममहि मुक्त कीन्हि असि नारि।
महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥३६॥

चले राम त्यागा बन सोऊ। अतुलित बल नरकेहरि दोऊ ॥
बिरही इव प्रभु करत बिषादा। कहत कथा अनेक संबादा ॥
लछिमन देखु बिपिन कइ सोभा। देखत केहि कर मन नहि छोभा ॥

नारि सहित सब खग मृग बृंदा । मानहु मोरि करत हहिँ निंदा ॥ ४
हमहि देखि मृगनिकर पराहीँ । मृगीँ कहहिँ तुम्ह कहँ भय नाहीँ ॥
तुम्ह आनंद करहु मृगजाए । कंचनमृग खोजन ए आए ॥
संग लाइ करिनी करि लेहीँ । मानहु मोहि सिखावनु देहीँ ॥
सास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिअ । भूप सुसेवित बस नहि लेखिअ ॥ ८
राखिअ नारि जदपि उर माहीँ । जुवती सास्त्र नृपति बस नाहीँ ॥
देखहु तात बसंत सुहावा । प्रियाहीन मोहि भय उपजावा ॥

दोहा । बिरहबिकल बलहीन मोहि जानेसि निपट अकेल ।
सहित बिपिन मधुकर खग मदन कीन्हि बगमेल ॥ १२
देखि गएउ भ्राता सहित तासु दूत सुनि बात ।
डेरा दीन्हेउ मनहु तब कटकु हटकि मनजात ॥३७॥

बिटप बिसाल लता अरुझानी । बिबिध बितान दिए जनु तानी ॥
कदलि ताल बर ध्वजा पताका । देखि न मोह धीर मन जाका ॥
बिबिध भाँति फूले तरु नाना । जनु बानैत बने बहु बाना ॥
कहुँ कहुँ सुंदर बिटप सुहाए । जनु भट बिलग बिलग होइ छाए ॥ ४
कूजत पिक मानहु गज माते । ढेक महोख ऊँट बेसरा ते ॥
मोर चकोर कीर बर बाजी । पारावत मराल सब ताजी ॥
तीतिर लावक पदचरजूथा । बरनि न जाइ मनोजबरूथा ॥
रथ गिरिसिला दुंदभी झरना । चातक बंदी गुनगन बरना ॥ ८
मधुकर मुखर भेरि सहनाई । त्रिबिध बयारि बसीठीँ आई ॥
चतुरंगिनी सेन सँग लीन्हे । बिचरत सबहि चुनौती दीन्हे ॥
लछिमन देखत काम अनीका । रहहिँ धीर तिन्ह कै जग लीका ॥
एहि के एक परम बल नारी । तेहि तेँ उबर सुभट सोइ भारी ॥ १२

दोहा । तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ ।
मुनि बिज्ञानधाम मन करहिँ निमिष महु छोभ ॥
लोभ केँ इच्छा दंभ बल काम के केवल नारि ।
क्रोध केँ परुष बचन बल मुनिबर कहहिँ बिचारि ॥३८॥ १६

गुन अतीत सचराचर स्वामी । राम्रु उमा सब अंतरजामी ॥

कामिन्ह कै दीनता देखाई। धीरन्ह कें मन बिरति दृढ़ाई॥
क्रोध मनोज लोभ मद माया। छूटहिं सकल राम कीं दाया॥
सो नर इंद्रजाल नहि भूला। जा पर होइ सो नट अनुकूला॥ ४
उमा कहउँ मैं अनुभव अपना। सत्य हरिभजनु जग सब सपना॥
पुनि प्रभु गए सरोवर तीरा। पंपा नाम सुभग गंभीरा॥
संतहृदय जस निर्मल बारी। बाँधे घाट मनोहर चारी॥
जहँ तहँ पिअहिँ बिबिध मृग नीरा। जनु उदारगृह जाचकभीरा॥ ८
दोहा। पुरइनि सघन ओट जल बेगि न पाइअ मर्म।
मायाछन्न न देखिअ जैसँ निर्गुन ब्रह्म॥
सुखी मीन सब एकरस अति अगाध जल माहिँ।
जथा धर्मसीलन्ह के दिन सुखसंजुत जाहिँ॥३९॥ १२
बिकसे सरसिज नाना रंगा। मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा॥
बोलत जलकुक्कुट कलहंसा। प्रभु बिलोकि जनु करत प्रसंसा॥
चक्रवाक बक खग समुदाई। देखत बनइ बरनि नहि जाई॥
सुंदर खगगन गिरा सुहाई। जात पथिक जनु लेत बोलाई॥ ४
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाए। चहुँ दिसि कानन बिटप सुहाए॥
चंपक बकुल कदंब तमाला। पाटल पनस परास रसाला॥
नव पल्लव कुसुमित तरु नाना। चंचरीकपटली कर गाना॥
सीतल मंद सुगंध सुभाऊ। संतत बहै मनोहर बाऊ॥ ८
कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीँ। सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीँ॥

। दोहा।

फलभर नम्र बिटप सब रहे भूमि निअराइ।
पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिँ सुसंपति पाइ॥४०॥

देखि राम अति रुचिर तलावा। मज्जनु कीन्ह परम सुख पावा॥
देखी सुंदर बर तरु छाया। बैठे अनुज सहित रघुराया॥
तहँ पुनि सकल देव मुनि आए। अस्तुति करि निज धाम सिधाए॥
बैठे परम प्रसन्न कृपाला। कहत अनुज सन कथा रसाला॥ ४
बिरहवंत भगवंतहि देखी। नारदमन भा सोच बिसेषी॥

मोर श्राप करि अंगीकारा। सहत रामु नाना दुखभारा॥
ऐसे प्रभुहि बिलोकौं जाई। पुनि न बनिहि अस अवसरु आई॥
येह बिचारि नारद कर बीना। गए जहाँ प्रभु सुख आसीना॥ ८
गावत रामचरित मृदु बानी। प्रेम सहित बहु भाँति बखानी॥
करत दंडवत लिए उठाई। राखे बहुति बार उर लाई॥
स्वागत पूछि निकट बैठारे। लछिमन सादर चरन पखारे॥
दोहा। नाना बिधि बिनती करि प्रभु प्रसन्न जिय जानि। १२
नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह पानि॥४१॥
सुनहु परम उदार रघुनायक। सुंदर अगम सुगम बर दायक॥
देहु एकु बरु मागउँ स्वामी। जद्यपि जानत अंतरजामी॥
जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ। जन सन कबहुँ कि करौं दुराऊ॥
कवन बस्तु असि प्रिय मोहि लागी। जो मुनिबर न सकहु तुम्ह मागी॥ ४
जन कहुँ कछु अदेय नहि मोरें। अस बिस्वास तजहु जनि भोरें॥
तब नारद बोले हरषाई। अस बर मागौं करौं ढिठाई॥
जद्यपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुति कह अधिक एक तें एका॥
राम सकल नामन्ह तें अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका॥ ८
दोहा। राका रजनी भगति तब राम नाम सोइ सोम।
अपर नाम उड़गन बिमल बसहुँ भगत उर ब्योम॥
एवमस्तु मुनि सन कहेउ कृपासिंधु रघुनाथ।
तब नारद मन हरष अति प्रभुपद नाएउ माथ॥४२॥ १२
अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी। पुनि नारद बोले मृदु बानी॥
राम जबहि प्रेरेहु निज माया। मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया॥
तब बिवाह मैं चाहौं कीन्हा। प्रभु केहि कारन करइ न दीन्हा॥
सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा। भजहिँ जे मोहि तजि सकल भरोसा॥ ४
करौं सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमि बालकहि राख महतारी॥
गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई। तहँ राखै जननी अरु गाई॥
प्रौढ़ भये तेहि सुत पर माता। प्रीति करै नहि पाछिलि बाता॥
मोरें प्रौढ़ तनय सम ज्ञानी। बालक सुत सम दास अमानी॥ ८

जनहि मोर बल निज बल ताही। दुहूँ कहँ काम क्रोध रिपु आही॥
येह बिचारि पंडित मोहि भजहीँ। पाएहु ज्ञान भगति नहि तजहीँ॥
दोहा। काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कइ धारि।
तिन्ह मह अति दारुन दुखद मायारूपी नारि॥४३॥ १२
सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता। मोह बिपिन कहुँ नारि बसंता॥
जप तप नेम जलाश्रय झारी। होइ ग्रीषम सोखै सब नारी॥
काम क्रोध मद मत्सर भेका। इन्हहिँ हरषप्रद बरषा एका॥
दुर्बासना कुमुदसमुदाई। तिन्ह कहँ सदा सरद सुखदाई॥ ४
धर्म सकल सरसीरुहबृंदा। होइ हिम तिन्हहि देति दुख मंदा॥
पुनि ममता जवास बहुताई। पलुहइ नारि सिसिर रितु पाई॥
पाप उलूकनिकर सुखकारी। नारि निबिड़ रजनी अँधिआरी॥
बुधि बल सील सत्य सब मीना। बनसी सम त्रिय कहहिँ प्रबीना॥ ८
दोहा। अवगुनमूल सूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि।
तातेँ कीन्ह निवारन मुनि मैँ येह जिय जानि॥४४॥
सुनि रघुपति के बचन सुहाए। मुनि तन पुलक नयन भरि आए॥
कहहु कवन प्रभु कैँ असि रीती। सेवक पर ममता अरु प्रीती॥
जे न भजहिँ अस प्रभु भ्रम त्यागी। ज्ञानरंक नर मंद अभागी॥
पुनि सादर बोले मुनि नारद। सुनहु राम बिज्ञानबिसारद॥ ४
संतन्ह के लच्छन रघुबीरा। कहहु नाथ भंजन भवभीरा॥
सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ। जातेँ मैँ उन्ह कैँ बस रहऊँ॥
षड़ बिकार जित अनघ अकामा। अचल अकिंचन सुचि सुखधामा॥
अमितबोध अनीह मितभोगी। सत्यसार कबि कोबिद जोगी॥ ८
सावधान मानद मदहीना। धीर भगतिपथ परम प्रबीना॥
दोहा। गुनागार संसार दुख रहित बिगत संदेह।
तजि मम चरन सरोज प्रिय तिन्ह कहुँ देह न गेह॥४५॥
निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीँ। परगुन सुनत अधिक हरषाहीँ॥
सम सीतल नहि त्यागहिँ नीती। सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती॥
जप तप ब्रत दम संजम नेमा। गुर गोबिंद बिप्र पद प्रेमा॥

श्रद्धा छमा मइत्री दाया। मुदिता मम पद प्रीति अमाया॥
बिरति बिबेक बिनय बिज्ञाना। बोध जथारथ बेद पुराना॥
दंभ मान मद करहिँ न काऊ। भूलि न देहिँ कुमारग पाऊ॥
गावहिँ सुनहिँ सदा मम लीला। हेतु रहित परहित रत सीला॥
मुनि सुनु साधुन्ह के गुन जेते। कहि न सकैँ सारद श्रुति तेते॥

छंद। कहि सक न सारद सेष नारद सुनत पद पंकज गहे।
अस दीनबंधु कृपाल अपने भगत गुन निज मुख कहे।
सिरु नाइ बारहिँ बार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गए।
ते धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरिरँग रए॥

दोहा। रावनारिजसु पावन गावहिँ सुनहिँ जे लोग।
रामभगति दृढ़ पावहिँ बिनु बिराग जप जोग॥
दीपसिखा सम जुवती मन जनि होसि पतंग।
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग॥४६॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलवैराग्यसंपादनो नाम
तृतीयस्सोपानः समाप्तः॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभाय नमः

कुंदेंदीवरसुंदरावतिवलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृंदप्रियौ ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥
ब्रह्मांभोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छंभुमुखेंदुसुंदरवरे संशोभितं सर्वदा ।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिबंति सततं श्रीरामनामामृतं ॥ २ ॥

सोरठा। मुक्ति जन्ममहि जानि ज्ञानखानि अघहानि कर ।
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न ॥
जरत सकल सुर बृंद विषम गरल जेहि पान किअ ।
तेहि न भजसि मन मंद को कृपाल संकर सरिस ॥ ३ ॥

आगे चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्वत नियराया ॥
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बल सीवा ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना । पुरुष जुगल बल रूप निधाना ॥
धरि बटुरूप देखु तैं जाई । कहेसु जानि जिय सयन बुझाई ॥ ४
पठए बालि होहिँ मन मैला । भागौं तुरत तजौं येह सैला ॥
विप्ररूप धरि कपि तहँ गएऊ । माथ नाइ पूछत अस भएऊ ॥
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा । छत्रीरूप फिरहु वन बीरा ॥
कठिन भूमि कोमल पद गामी । कवन हेतु विचरहु वन स्वामी ॥ ८
मृदुल मनोहर सुंदर गाता । सहत दुसह वन आतप बाता ॥
की तुम्ह तीनि देव मह कोऊ । नर नारायन की तुम्ह दोऊ ॥

दोहा। जगकारन तारन भव भंजन धरनीभार ।
की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार ॥ १ ॥ १२

कोसलेस दसरथ के जाए। हम पितुबचन मानि बन आए॥
नाम राम लछिमन दोउ भाई। संग नारि सुकुमारि सुहाई॥
इहाँ हरी निसिचर बैदेही। बिप्र फिरहिँ हम खोजत तेही॥
आपन चरित कहा हम गाई। कहहु बिप्र निज कथा बुझाई॥ ४
प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहि बरना॥
पुलकित तन मुख आव न बचना। देखत रुचिर बेष कै रचना॥
पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही। हरष हृदय निज नाथहि चीन्ही॥
मोर न्याउ मैं पूछा साईं। तुम्ह पूछहु कस नर की नाईं॥ ८
तव माया बस फिरौं भुलाना। ता तेँ मैं नहि प्रभु पहिचाना॥
दोहा। एकु मैं मंद मोहबस कुटिल हृदय अज्ञान।
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान॥ २॥
जदपि नाथ बहु अवगुन मोरेँ। सेवक प्रभुहि परै जनि भोरेँ॥
नाथ जीव तव माया मोहा। सो निस्तरै तुम्हारेहि छोहा॥
ता पर मैं रघुबीरदोहाई। जानौं नहि कछु भजन उपाई॥
सेवक सुत पति मातु भरोसेँ। रहै असोच बनै प्रभु पोसेँ॥ ४
अस कहि परेउ चरन अकुलाई। निज तनु प्रगटि प्रीति उर छाई॥
तब रघुपति उठाइ उर लावा। निज लोचन जल सींचि जुड़ावा॥
सुनु कपि जिय मानसि जनि ऊना। तैं मम प्रिय लछिमन तेँ दूना॥
समदरसी मोहि कह सब कोऊ। सेवक प्रिय अनन्यगति सोऊ॥ ८

। दोहा ।

सो अनन्य जाकेँ असि मति न टरइ हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत॥ ३॥

देखि पवनसुत पति अनुकूला। हृदय हरष बीती सब सूला॥
नाथ सैल पर कपिपति रहई। सो सुग्रीव दास तव अहई॥
तेहि सन नाथ मइत्री कीजे। दीन जानि तेहि अभय करीजे॥
सो सीता कर खोज कराइहि। जहँ तहँ मर्कट कोटि पठाइहि॥ ४
येहि बिधि सकल कथा समुझाई। लिए दुवौ जन पीठि चढ़ाई॥
जब सुग्रीव राम कहुँ देखा। अतिसय जन्म धन्य करि लेखा॥

सादर मिलेउ नाइ पद माथा। भेंटेउ अनुज सहित रघुनाथा॥
कपि कर मन विचार येहि रीती। करिहहिँ विधि मो सन ए प्रीती॥ ८

दोहा। तब हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाइ।
पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढ़ाइ॥ ४॥

कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा। लछिमन रामचरित सब भाषा॥
कह सुग्रीव नयन भरि बारी। मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी॥
मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक बारा। बैठ रहेउँ मैँ करत बिचारा॥
गगनपंथ देखी मैँ जाता। परबस परी बहुत बिलपाता॥ ४
राम राम हा राम पुकारी। हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी॥
मागा राम तुरत तेहि दीन्हा। पट उर लाइ सोच अति कीन्हा॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा। तजहु सोच मन आनहु धीरा॥
सब प्रकार करिहौँ सेवकाई। जेहि बिधि मिलिहि जानकी आई॥ ८

दोहा। सखावचन सुनि हरषे कृपासिंधु बलसीँव।
कारन कवन बसहु बन मोहि कहहु सुग्रीव॥ ५॥

नाथ बालि अरु मैँ द्वौ भाई। प्रीति रही कछु बरनि न जाई॥
मयसुत मायावी तेहि नाऊँ। आवा सो प्रभु हमरे गाऊँ॥
अर्ध राति पुरद्वार पुकारा। बाली रिपुबल सहइ न पारा॥
धावा बालि देखि सो भागा। मैँ पुनि गएउँ बंधु सँग लागा॥ ४
गिरिवर गुहा पैठ सो जाई। तब बाली मोहि कहा बुझाई॥
परिखेसु मोहि एक पखवारा। नहि आवौँ तब जानेसु मारा॥
मासदिवस तहँ रहेउँ खरारी। निसरी रुधिरधार तहँ भारी॥
बालि हतेसि मोहि मारिहि आई। सिला देइ तहँ चलेउँ पराई॥ ८
मंत्रिन्ह पुर देखा बिनु साईँ। दीन्हेउ मोहि राजु बरिआईँ॥
बाली ताहि मारि गृह आवा। देखि मोहि जिय भेद बढ़ावा॥
रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी। हरि लीन्हेसि सर्वसु अरु नारी॥
ताकेँ भय रघुबीर कृपाला। सकल भुवन मैँ फिरेउँ बिहाला॥ १२
इहाँ श्रापबस आवत नाहीँ। तदपि सभीत रहौँ मन माहीँ॥
सुनि सेवकदुख दीनदयाला। फरकि उठीँ द्वौ भुजा बिसाला॥

दोहा। सुनु सुग्रीव मारिहौँ वालिहि एकहि बान।
ब्रह्म रुद्र सरनागत गए न उबरहि प्रान ॥ ६ ॥

जे न मित्रदुख होहिँ दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी ॥
निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्र क दुख रज मेरु समाना ॥
जिन्ह कँ असि मति सहज न आई। ते सठ कत हठि करत मिताई ॥
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा। गुन प्रगटइ अवगुनन्हि दुरावा ॥
देत लेत मन संक न धरई। बल अनुमान सदा हित करई ॥
बिपतिकाल कर सतगुन नेहा। श्रुति कह संत मित्र गुन एहा ॥
आगे कह मृदु वचन बनाई। पाछे अनहित मन कुटिलाई ॥
जाकर चित अहिगति सम भाई। अस कुमित्र परिहरेहि भलाई ॥
सेवक सठ नृप कृपन कुनारी। कपटी मित्र सूल सम चारी ॥
सखा सोच त्यागहु बल मोरेँ। सब बिधि घटब काज मैं तोरेँ ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा। बालि महाबल अति रनधीरा ॥
दुंदभि अस्थि ताल देखराए। बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाए ॥
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती। बालीबध की भै परतीती ॥
बार बार नावइ पद सीसा। प्रभुहि जानि मन हरष कपीसा ॥
उपजा ज्ञान बचन तब बोला। नाथकृपा मन भएउ अलोला ॥
सुख संपति परिवार बड़ाई। सब परिहरि करिहौँ सेवकाई ॥
ए सब रामभगति के बाधक। कहहिँ संत तब पद अवराधक ॥
सत्रु मित्र सुख दुख जग माहीँ। मायाकृत परमारथ नाहीँ ॥
बालि परम हित जासु प्रसादा। मिलेहु राम तुम्ह समन बिपादा ॥
सपने जेहि सन होइ लराई। जागे समुझत मन सकुचाई ॥
अब प्रभु कृपा करहु येहि भाँती। सब तजि भजनु करौँ दिनु राती ॥
सुनि बिरागसंजुत कपिबानी। बोले बिहसि रामु धनुपानी ॥
जो कछु कहेहु सत्य सब सोई। सखा बचन मम मृषा न होई ॥
नट मर्कट इव सबहि नचावत। रामु खगेस बेद अस गावत ॥
लै सुग्रीव संग रघुनाथा। चले चाप सायक गहि हाथा ॥
तब रघुपति सुग्रीव पठावा। गर्जेसि जाइ निकट बल पावा ॥

सुनत बालि क्रोधातुर धावा। गहि कर चरन नारि समुझावा॥
सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा। ते द्वौ बंधु तेज बल सींवा॥ २८
कोसलेससुत लछिमन रामा। कालहु जीति सकहिँ संग्रामा॥
दोहा। कह बाली सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ।
जौं कदाचि मोहि मारहिँ तौ पुनि होउँ सनाथ॥ ७॥
अस कहि चला महा अभिमानी। तृन समान सुग्रीवहि जानी॥
भिरे उभौ बाली अति तर्जा। मुठिका मारि महा धुनि गर्जा॥
तब सुग्रीव विकल होइ भागा। मुष्टिप्रहार बज्र सम लागा॥
मैँ जो कहा रघुबीर कृपाला। बंधु न होइ मोर यह काला॥ ४
एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ। तेहि भ्रम तेँ नहि मारेउँ सोऊ॥
कर परसा सुग्रीवसरीरा। तनु भा कुलिस गई सब पीरा॥
मेली कंठ सुमन कै माला। पठवा पुनि बल देइ बिसाला॥
पुनि नाना बिधि भई लराई। बिटप ओट देखहिँ रघुराई॥ ८

। दोहा।

बहु छल बल सुग्रीव कर हिय हारा भय मानि।
मारा बालि राम तब हृदय माझ सर तानि॥ ८॥
परा बिकल महि सर के लागेँ। पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगेँ॥
स्याम गात सिर जटा बनाएँ। अरुन नयन सर चाप चढ़ाएँ॥
पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा। सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा॥
हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा। बोला चितइ राम की ओरा॥ ४
धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईँ। मारेहु मोहि ब्याध की नाईँ॥
मैँ बैरी सुग्रीव पिआरा। अवगुन कवन नाथ मोहि मारा॥
अनुजबधू भगिनी सुतनारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी॥
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकै जोई। ताहि बधेँ कछु पाप न होई॥ ८
मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना। नारिसिखावन करसि न काना॥
मम भुज बल आश्रित तेहि जानी। मारा चहसि अधम अभिमानी॥
दोहा। सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि।
प्रभु अजहूँ मैँ पापी अंतकाल गति तोरि॥ ९॥ १२

सुनत राम अति कोमल बानी। बालिसीस परसेउ निज पानी ॥
अचल करौं तनु राखहु प्राना। बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥
जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं। अंत राम कहि आवत नाहीं ॥
जासु नाम बल संकर कासी। देत सबहि सम गति अबिनासी ॥ ४
मम लोचन गोचर सोइ आवा। बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा ॥

छंद। सो नयनगोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं।
जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं।
मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु सरीरही। ८
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही।
अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर मागऊँ।
जेहि जोनि जन्मौं कर्मबस तहँ रामपद अनुरागऊँ।
यह तनय मम सम बिनय बल कल्यानप्रद प्रभु लीजिए। १२
गहि बाह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिए ॥

। दोहा।

रामचरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनुत्याग।
सुमनमाल जिमि कंठ तें गिरत न जानै नाग ॥१०॥

राम बालि निज धाम पठावा। नगर लोग सब ब्याकुल धावा ॥
नाना बिधि बिलाप कर तारा। छूटे केस न देह सँभारा ॥
तारा बिकल देखि रघुराया। दीन्ह ज्ञान हरि लीन्ही माया ॥
छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा ॥ ४
प्रगट सो तनु तव आगे सोवा। जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोवा ॥
उपजा ज्ञान चरन तब लागी। लीन्हेसि परम भगति बर मागी ॥
उमा दारुजोषित की नाईं। सबहि नचावत रामु गोसाईं ॥
तब सुग्रीवहि आएसु दीन्हा। मृतककर्म बिधिवत सब कीन्हा ॥ ८
राम कहा अनुजहि समुझाई। राजु देहु सुग्रीवहि जाई ॥
रघुपतिचरन नाइ करि माथा। चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥

दोहा। लछिमन तुरत बोलाए पुरजन बिप्रसमाज।
राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ जुवराज ॥११॥ १२

उमा राम सम हित जग माहीँ। गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीँ॥
सुर नर मुनि सब कैँ यह रीती। स्वारथ लागि करहिँ सब प्रीती॥
बालित्रास ब्याकुल दिन राती। तन बहु ब्रन चिंता जर छाती॥
सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ। अति कृपाल रघुबीरसुभाऊ॥ ४
जानतहूँ अस प्रभु परिहरहीँ। काहे न बिपतिजाल नर परहीँ॥
पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बोलाई। बहु प्रकार नृपनीति सिखाई॥
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा। पुर न जाउँ दस चारि बरीसा॥
गत ग्रीषम बरषा रितु आई। रहिहौँ निकट सैल पर छाई॥ ८
अंगद सहित करहु तुम्ह राजू। संतत हृदय धरेहु मम काजू॥
जब सुग्रीव भवन फिरि आए। रामु प्रबरषन गिरि पर छाए॥

दोहा। प्रथमहि देवन्ह गिरिगुहा राखेउ रुचिर बनाइ।
राम कृपानिधि कछु दिन बास करहिँगे आइ॥१२॥ १२

सुंदर बन कुसुमित अति सोभा। गुंजत मधुपनिकर मधुलोभा॥
कंद मूल फल पत्र सुहाए। भए बहुत जब तेँ प्रभु आए॥
देखि मनोहर सैल अनूपा। रहे तहँ अनुज सहित सुरभूपा॥
मधुकर खग मृग तनु धरि देवा। करहिँ सिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा॥ ४
मंगलरूप भएउ बन तब तेँ। कीन्ह निवास रमापति जब तेँ॥
फटिकसिला अति सुभ्र सुहाई। सुख आसीन तहाँ द्वौ भाई॥
कहत अनुज सन कथा अनेका। भगति बिरति नृपनीति बिबेका॥
बरषाकाल मेघ नभ छाए। गर्जत लागत परम सुहाए॥ ८

दोहा। लछिमन देखु मोरगन नाचत बारिद पेखि।
गृही बिरतिरत हरष जस बिष्नुभगत कहुँ देखि॥१३॥

घन घमंड नभ गर्जत घोरा। प्रियाहीन डरपत मन मोरा॥
दामिनि दमक रह न घन माहीँ। खल कै प्रीति जथा थिर नाहीँ॥
बरषहिँ जलद भूमि नियराएँ। जथा नवहिँ बुध बिद्या पाएँ॥
बुंद अघात सहहिँ गिरि कैसेँ। खल के बचन संत सह जैसेँ॥ ४
छुद्र नदीँ भरि चलीँ तोराई। जस थोरेहु धन खल इतराई॥
भूमि परत भा ढाबर पानी। जनु जीवहि माया लपटानी॥

समिटि समिटि जलँ भरहिँ तलावा । जिमि सदगुन सज्जन पहि आवा ॥
सरिताजल जलनिधि महुँ जाई । होइ अचल जिमि जिव हरि पाई ॥ ८
दोहा । हरित भूमि तृनसंकुल समुझि परहिँ नहि पंथ ।
जिमि पाषंडवाद तेँ गुप्त होहिँ सदग्रंथ ॥१४॥
दादुरधुनि चहुँ दिसाँ सुहाई । बेद पढ़हिँ जनु बटुसमुदाई ॥
नव पल्लव भये बिटप अनेका । साधकमन जस मिले बिबेका ॥
अर्क जवास पात बिनु भएऊ । जस सुराज खल उद्यम गएऊ ॥
खोजत कतहुँ मिलइ नहि धूरी । करै क्रोध जिमि धरमहि दूरी ॥ ४
ससिसंपन्न सोह महि कैसी । उपकारी कै संपति जैसी ॥
निसि तम घन खद्योत बिराजा । जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ॥
महा वृष्टि चलिँ फूटि किआरीँ । जिमि सुतंत्र भयेँ बिगरहिँ नारीँ ॥
कृषी निरावहिँ चतुर किसाना । जिमि बुध तजहिँ मोह मद माना ॥ ८
देखिअत चक्रवाक खग नाहीँ । कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीँ ॥
ऊषर बरषे तृन नहि जामा । जिमि हरिजन जिय उपज न कामा ॥
बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा । प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा ॥
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना । जिमि इंद्रियगन उपजेँ ज्ञाना ॥ १२
दोहा । कबहुँ प्रबल चल मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिँ ।
जिमि कपूत केँ उपजेँ कुल सद्धर्म नसाहिँ ॥
कबहुँ दिवस महु निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग ।
बिनसइ उपजइ ज्ञान जिमि पाइ कुसंग सुसंग ॥१५॥ १६
बरषा बिगत सरद रितु आई । लछिमन देखहु परम सुहाई ॥
फूले कास सकल महि छाई । जनु बरषाँ कृत प्रगट बुढ़ाई ॥
उदित अगस्ति पंथजल सोखा । जिमि लोभहि सोखै संतोषा ॥
सरिता सर निर्मल जल सोहा । संतहृदय जस गत मद मोहा ॥ ४
रस रस सूख सरित सर पानी । ममतात्याग करहिँ जिमि ज्ञानी ॥
जानि सरद रितु खंजन आए । पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ॥
पंक न रेनु सोह असि धरनी । नीतिनिपुन नृप कै जसि करनी ॥
जलसंकोच बिकल भइ मीना । अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ॥ ८

बिनु घन निर्मल सोह अकासा। हरिजन इव परिहरि सब आसा॥
कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी। कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी॥
दोहा। चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि।
जिमि हरिभगति पाइ श्रम तजहिँ आश्रमी चारि॥१६॥ १२
सुखी मीन जे नीर अगाधा। जिमि हरिसरन न एकौ बाधा॥
फूले कमल सोह सर कैसा। निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा॥
गुंजत मधुकर मुखर अनूपा। सुंदर खगरव नाना रूपा॥
चक्रवाकमन दुख निसि पेखी। जिमि दुर्जन परसंपति देखी॥ ४
चातक रटत तृषा अति ओही। जिमि सुख लहइ न संकरद्रोही॥
सरदातप निसि ससि अपहरई। संतदरस जिमि पातक टरई॥
देखि इंदु चकोरसमुदाई। चितवहिँ जिमि हरिजन हरि पाई॥
मसक दंस बीते हिमत्रासा। जिमि द्विजद्रोह किएँ कुलनासा॥ ८
दोहा। भूमि जीवसंकुल रहे गए सरद रितु पाइ।
सदगुर मिलेँ जाहिँ जिमि संसय भ्रम समुदाइ॥१७॥
बरषा गत निर्मल रितु आई। सुधि न तात सीता कै पाई॥
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौँ। कालहु जीति निमिष महु आनौँ॥
कतहु रहौ जौ जीवति होई। तात जतनु करि आनौँ सोई॥
सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी। पावा राज कोस पुर नारी॥ ४
जेहि सायक मारा मैँ बाली। तेहि सर हतउँ मूढ़ कहुँ काली॥
जासु कृपाँ छूटहिँ मद मोहा। ता कहुँ उमा कि सपनेहु कोहा॥
जानहिँ यह चरित्र मुनि ग्यानी। जिन्ह रघुबीरचरन रति मानी॥
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना। धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना॥ ८
दोहा। तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुनासीँव।
भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव॥१८॥
इहाँ पवनसुत हृदय बिचारा। रामकाजु सुग्रीव बिसारा॥
निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा। चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा॥
सुनि सुग्रीव परम भय माना। बिषय मोर हरि लीन्हेउ ग्याना॥
अब मारुतसुत दूतसमूहा। पठवहु जहँ तहँ बानरजूहा॥ ४

कहेहु पाखँ महुँ आव न जोई। मोरेँ कर ता कर बध होई॥
तब हनुमंत बोलाए दूता। सब कर करि सनमान बहूता॥
भय अरु प्रीति नीति देखराई। चले सकल चरनन्हि सिरु नाई॥
एहि अवसर लछिमनु पुर आए। क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाए॥ ८

दोहा। धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करौँ पुर छार।
ब्याकुल नगरु देखि तब आएउ बालिकुमार॥१९॥

चरन नाइ सिरु बिनती कीन्ही। लछिमनु अभय बाह तेहि दीन्ही॥
क्रोधवंत लछिमनु सुनि काना। कह कपीस अति भय अकुलाना॥
सुनु हनुमंत संग लै तारा। करि बिनती समुझाउ कुमारा॥
तारा सहित जाइ हनुमाना। चरन बंदि प्रभु सुजसु बखाना॥ ४
करि बिनती मंदिर लै आए। चरन पखारि पलँग बैठाए॥
तब कपीस चरनन्हि सिरु नावा। गहि भुज लछिमन कंठ लगावा॥
नाथ बिषय सम मद कछु नाहीँ। मुनिमन मोह करै छन माहीँ॥
सुनत बिनीत बचन सुख पावा। लछिमन तेहि बहु बिधि समुझावा॥ ८
पवनतनय सब कथा सुनाई। जेहि बिधि गए दूतसमुदाई॥

दोहा। हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ।
रामानुज आगे करि आए जहँ रघुनाथ॥२०॥

नाइ चरन सिरु कह कर जोरी। नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी॥
अतिसय प्रबल देव तव माया। छूटै राम करहु जौ दाया॥
बिषयबस्य सुर नर मुनि स्वामी। मैं पावर पसु कपि अतिकामी॥
नारिनयन सर जाहि न लागा। घोर क्रोध तम निसि जो जागा॥ ४
लोभपास जेहि गर न बँधाया। सो नर तुम्ह समान रघुराया॥
येह गुन साधन तेँ नहि होई। तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई॥
तब रघुपति बोले मुसुकाई। तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई॥
अब सोइ जतनु करहु मन लाई। जेहि बिधि सीता कै सुधि पाई॥ ८

। दोहा।

येहि बिधि होत बतकही आए बानरजूथ।
नाना बरन सकल दिसि देखिअ कीसबरूथ॥२१॥

वानरकटक उमा मैं देखा। सो मूरुख जो करन चहे लेखा ॥
आइ रामपद नावहिं माथा। निरखि वदनु सब होहिं सनाथा ॥
अस कपि एक न सेना माहीं। राम कुसल जेहि पूछा नाहीं ॥
येह कछु नहि प्रभु कइ अधिकाई। विस्वरूप व्यापक रघुराई ॥ ४
ठाढ़े जहँ तहँ आएसु पाई। कह सुग्रीव सबहि समुझाई ॥
रामकाजु अरु मोर निहोरा। वानरजूथ जाहु चहुँ ओरा ॥
जनकसुता कहुँ खोजहु जाई। मासदिवस महु आएहु भाई ॥
अवधि मेटि जो विनु सुधि पाएँ। आवइ बनिहि सो मोहि मराएँ ॥ ८
दोहा। बचन सुनत सब वानर जहँ तहँ चले तुरंत।
तब सुग्रीव बोलाए अंगद नल हनुमंत ॥२२॥
सुनहु नील अंगद हनुमाना। जामवंत मतिधीर सुजाना ॥
सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू। सीतासुधि पूछेहु सब काहू ॥
मन क्रम वचन सो जतनु विचारेहु। रामचंद्र कर काजु सँवारेहु ॥
भानु पीठि सेइअ उर आगी। स्वामिहि सर्वभाव छल त्यागी ॥ ४
तजि माया सेइअ परलोका। मिटहिं सकल भवसंभव सोका ॥
देह धरे कर येह फलु भाई। भजिअ राम सब काम बिहाई ॥
सोइ गुनज्ञ सोई बड़भागी। जो रघुवीरचरन अनुरागी ॥
आएसु मागि चरन सिरु नाई। चले हरषि सुमिरत रघुराई ॥ ८
पाछे पवनतनय सिरु नावा। जानि काजु प्रभु निकट बोलावा ॥
परसा सीस सरोरुह पानी। करमुद्रिका दीन्हि जन जानी ॥
बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु। कहि बल बिरह बेगि तुम्ह आएहु ॥
हनुमँत जन्म सुफल करि माना। चलेउ हृदय धरि कृपानिधाना ॥ १२
जद्यपि प्रभु जानत सब बाता। राजनीति राखत सुरत्राता ॥
दोहा। चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह।
रामकाज लयलीन मन बिसरा तन कर छोह ॥२३॥
कतहुँ होइ निसिचर सैं भेंटा। प्रान लेहिं एक एक चपेटा ॥
बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं। कोउ मुनि मिलै ताहि सब घेरहिं ॥
लागि तृषा अतिसय अकुलाने। मिलै न जल घन गहन भुलाने ॥

मन हनुमान कीन्ह अनुमाना। मरन चहत सब बिनु जलपाना ॥ ४
चढ़ि गिरिसिखर चहूँ दिसि देखा। भूमिबिवर एक कउतुक पेखा ॥
चक्रवाक बक हंस उड़ाहीं। बहुतक खग प्रबिसहिं तेहि माहीं ॥
गिरि तें उतरि पवनसुत आवा। सब कहुँ लै सोइ बिवर देखावा ॥
आगें कै हनुमंतहि लीन्हा। पैठे बिबर बिलंबु न कीन्हा ॥ ८

दोहा। दीख जाइ उपवन बर सर बिगसित बहु कंज।
मंदिर एक रुचिर तहँ बैठि नारि तपपुंज ॥२४॥

दूरि तें ताहि सबन्हि सिरु नावा। पूछें निज बृत्तांत सुनावा ॥
तेहि तब कहा करहु जलपाना। खाहु सुरस सुंदर फल नाना ॥
मंजनु कीन्ह मधुर फल खाए। तासु निकट पुनि सब चलि आए ॥
तेहि सब आपनि कथा सुनाई। मैं अब जाब जहाँ रघुराई ॥ ४
मूँदहु नयन बिबर तजि जाहू। पैहहु सीतहि जनि पछिताहू ॥
नयन मूँदि पुनि देखहिं बीरा। ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा ॥
सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा। जाइ कमल पद नाएसि माथा ॥
नाना भाँति बिनय तेहि कीन्ही। अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही ॥ ८

दोहा। बदरीबन कहुँ सो गई प्रभु अग्या धरि सीस।
उर धरि रामचरन जुग जे बंदत अज ईस ॥२५॥

इहाँ बिचारहिं कपि मन माहीं। बीती अवधि काजु कछु नाहीं ॥
सब मिलि कहहिं परसपर बाता। बिनु सुधि लएँ करब का भ्राता ॥
कह अंगद लोचन भरि बारी। दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥
इहाँ न सुधि सीता कै पाई। उहाँ गएँ मारिहि कपिराई ॥ ४
पिता बधे पर मारत मोही। राखा राम निहोर न ओही ॥
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं। मरन भएउ कछु संसय नाहीं ॥
अंगदबचन सुनत कपि बीरा। बोलि न सकहिं नयन भरि नीरा ॥
छन एक सोच मगन होइ रहे। पुनि अस बचन कहत सब भए ॥ ८
हम सीता कै सुधि लीन्हें बिना। किमि जैहैं जुवराज प्रबीना ॥
अस कहि लवनसिंधु तट जाई। बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥
जामवंत अंगददुख देखी। कही कथा उपदेस बिसेषी ॥

तात राम कहुँ नर जनि मानहु। निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु॥ १२
हम सब सेवक अति बड़भागी। संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी॥
दोहा। निज इच्छा अवतरइ प्रभु सुर महि गो द्विज लागि।
सगुन उपासक संग तहँ रहहिँ मोक्षसुख त्यागि॥२६॥
येहि विधि कथा कहहिँ बहु भाती। गिरिकंदरा सुना संपाती॥
बाहेर होइ देखे बहु कीसा। मोहि अहारु दीन्ह जगदीसा॥
आजु सभन्ह को भक्षन करऊँ। दिन बहु चले अहार बिनु मरऊँ॥
कबहुँ न मिलै भरि वोदर अहारा। आजु दीन्ह विधि एकहि बारा॥ ४
डरपे गीधबचन सुनि काना। अब भा मरन सत्य हम जाना॥
कपि सब उठे गीध कहँ देखी। जामवंतमन सोच विसेषी॥
कह अंगद विचारि मन माहीँ। धन्य जटायू सम कोउ नाहीँ॥
रामकाज कारन तनु त्यागी। हरिपुर गएउ परम बड़भागी॥ ८
सुनि खग हरष सोक जुत बानी। आवा निकट कपिन्ह भय मानी॥
तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई। कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई॥
सुनि संपाति बंधु कै करनी। रघुपतिमहिमा बहु विधि बरनी॥

। दोहा।

मोहि लै जाहु सिंधु तट देउँ तिलांजलि ताहि। १२
वचन सहाय करबि मैँ पैहहु खोजहु जाहि॥२७॥
अनुजक्रिया करि सागर तीरा। कह निज कथा सुनहु कपि बीरा॥
हम द्वौ बंधु प्रथम तरुनाई। गगन गए रबि निकट उड़ाई॥
तेज न सहि सक सो फिरि आवा। मैँ अभिमानी रबि निअरावा॥
जरे पंख अति तेज अपारा। परेउँ भूमि करि घोर चिकारा॥ ४
मुनि एक नाम चंद्रमा ओही। लागी दया देखि करि मोही॥
बहु प्रकार तेहि ज्ञान सुनावा। देहजनित अभिमान छुड़ावा॥
त्रेता ब्रह्म मनुजतनु धरिही। तासु नारि निसिचरपति हरिही॥
तासु खोज पठइहि प्रभु दूता। तिन्हहि मिले तैँ होब पुनीता॥ ८
जमिहहिँ पंख करसि जनि चिंता। तिन्हहि देखाइ देहेसु तैँ सीता॥
मुनि कै गिरा सत्य भइ आजू। सुनि मम बचन करहु प्रभुकाजू॥

गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका। तहँ रह रावन सहज असंका॥
तहँ असोक उपबन जहँ रहई। सीता बैठि सोचरत अहई॥ १२
दोहा। मैं देखौं तुम्ह नाहीँ गीधहि दृष्टि अपार।
बूढ़ भएउँ न त करतेउँ कछुक सहाय तुम्हार॥२८॥
जो नाघै सत जोजन सागर। करै सो रामकाजु मति आगर॥
मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा। रामकृपाँ कस भएउ सरीरा॥
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीँ। अति अपार भवसागर तरहीँ॥
तासु दूत तुम्ह तजि कदराई। रामु हृदय धरि करहु उपाई॥ ४
अस कहि उमा गीध जब गएऊ। तिन्ह के मन अति बिसमय भएऊ॥
निज निज बल सब काहूँ भाषा। पार जाइ कर संसय राखा॥
जरठ भएउँ अब कहइ रिछेसा। नहि तन रहा प्रथम बल लेसा॥
जबहि त्रिबिक्रम भए खरारी। तब मैं तरुन रहेउँ बल भारी॥ ८
दोहा। बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरनि न जाइ।
उभय घरी महु दीन्ही सात प्रदच्छिन धाइ॥२९॥
अंगद कहइ जाउँ मैं पारा। जिय संसय कछु फिरती बारा॥
जामवंत कह तुम्ह सब लायक। पठइअ किमि सब ही कर नायक॥
कह रिछेस सुनहु हनुमाना। का चुप साधि रहेहु बलवाना॥
पवनतनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिज्ञान निधाना॥ ४
कवन सो काजु कठिन जग माहीँ। जो नहि तात होइ तुम्ह पाहीँ॥
रामकाज लगि तव अवतारा। सुनतहि भएउ पर्वताकारा॥
कनकबरन तन तेज बिराजा। मानहु अपर गिरिन्ह कर राजा॥
सिंहनाद कर बारहि बारा। लीलहि नाघउँ जलनिधि खारा॥ ८
सहित सहाय रावनहि मारी। आनौं इहाँ त्रिकूट उपारी॥
जामवंत मैं पूछउँ तोही। उचित सिखावनु दीजहु मोही॥
एतना करहु तात तुम्ह जाई। सीतहि देखि कहहु सुधि आई॥
तब निज भुजबल राजिवनयना। कौतुक लागि संग कपिसयना॥ १२
छंद। कपिसेन संग सँघारि निसिचर रामु सीतहि आनिहैं।
त्रैलोकपावन सुजसु सुर मुनि नारदादि बखानिहैं।

जो सुनत गावत कहत समुझत परमपद नर पावई।
रघुबीरपद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई॥ १६

दोहा। भव भेषज रघुनाथजसु सुनहिँ जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिँ त्रिसिरारि॥

सोरठा। नीलोपल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक।
सुनिअ तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक॥३०॥ २०

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विशुद्धसंतोषसंपादनो नाम
चतुर्थः सोपानः समाप्तः॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभाय नमः

शांतं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशांतिप्रदं
ब्रह्माशंभुफणींद्रसेव्यमनिशं वेदांतवेद्यं विभुं।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वंदेहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिं ॥ १ ॥
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलांतरात्मा।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥
अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यं।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई। सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥
जब लगि आवौं सीतहि देखी। होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी ॥
अस कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा। चलेउ हरषि हिय धरि रघुनाथा ॥ ४
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर। कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥
बार बार रघुबीर सँभारी। तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥
जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता। चलेउ सो गा पाताल तुरंता ॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। एही भाँति चला हनुमाना ॥ ८
जलनिधि रघुपतिदूत बिचारी। तइँ मैनाक होहि श्रमहारी ॥
दोहा। हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
रामकाजु कीन्हे बिनु मोहि कहाँ बिश्राम ॥ १ ॥
जात पवनसुत देवन्ह देखा। जानैं कहुँ बल बुद्धि बिसेषा ॥
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता। पठइन्हि आइ कही तेहि बाता ॥
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा। सुनत बचन कह पवनकुमारा ॥
रामकाजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥ ४

तब तव बदन पइठिहौं आई। सत्य कहौं मोहि जान दे माई॥
कवनेहु जतन देइ नहिं जाना। ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना॥
जोजन भरि तेहि बदनु पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन विस्तारा॥
सोरह जोजन मुख तेहि ठएऊ। तुरत पवनसुत बत्तिस भएऊ॥ ८
जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा॥
सत जोजन तेहि आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा॥
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा। मागा बिदा ताहि सिरु नावा॥
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा। बुधि बल मरमु तोर मैं पावा॥ १२

दोहा। रामकाजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान॥ २॥

निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई। करि माया नभ के खग गहई॥
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं। जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं॥
गहइ छाह सक सो न उड़ाई। एहि बिधि सदा गगनचर खाई॥
सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा। तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा॥ ४
ताहि मारि मारुतसुत बीरा। बारिधि पार गएउ मतिधीरा॥
तहाँ जाइ देखी बनसोभा। गुंजत चंचरीक मधुलोभा॥
नाना तरु फल फूल सुहाए। खग मृग बृंद देखि मन भाए॥
सैल बिसाल देखि एक आगे। ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागे॥ ८
उमा न कछु कपि कै अधिकाई। प्रभुप्रताप जो कालहि खाई॥
गिरि पर चढ़ि लंका तेहि देखी। कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी॥
अति उतंग जलनिधि चहुँ पासा। कनककोट कर परम प्रकासा॥

। छंद ।

कनककोट बिचित्र मनिकृत सुंदरायतना घना। १२
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं चारु पुर बहु बिधि बना।
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनै।
बहु रूप निसिचरजूथ अतिबल सेन बरनत नहि बनै।
बन बाग उपवन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं। १६
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या रूप मुनिमन मोहहीं।

कहुँ मालदेह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीँ।
नाना अखारेन्ह भिरहिँ बहु बिधि एक एकन्ह तर्जहीँ।
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीँ। २०
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीँ।
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही।
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पइहहिँ सही ॥

दोहा। पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार। २४
अति लघु रूप धरौँ निसि नगर करौँ पइसार ॥ ३ ॥

मसक समान रूप कपि धरी। लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥
नाम लंकिनी एक निसिचरी। सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥
जानेहि नही मरमु सठ मोरा। मोर अहार जहाँ लगि चोरा ॥
मुठिका एक महा कपि हनी। रुधिर बमत धरनी ढनमनी ॥ ४
पुनि संभारि उठी सो लंका। जोरि पानि कर बिनय ससंका ॥
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा। चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ॥
बिकल होसि तैँ कपि कैँ मारे। तब जानेसु निसिचर संघारे ॥
तात मोर अति पुन्य बहूता। देखउँ नयन राम कर दूता ॥ ८

दोहा। तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुखलव सतसंग ॥ ४ ॥

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोसलपुरराजा ॥
गरल सुधा रिपु करै मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥
गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही। राम कृपा करि चितवा जाही ॥
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥ ४
मंदिर मंदिर प्रति कर सोधा। देखे जहँ तहँ अगनित जोधा ॥
गएउ दसाननमंदिर माहीँ। अति बिचित्र कहि जात सो नाहीँ ॥
सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महु न दीखि बैदेही ॥
भवन एक पुनि दीख सुहावा। हरिमंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥ ८

दोहा। रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराइ ॥ ५ ॥

लंका निसिचरनिकर निवासा। इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा ॥
मन महु तरक कर कपि लागा। तेहीं समय बिभीषनु जागा ॥
राम राम तेहि सुमिरन कीन्हा। हृदय हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥
एहि सन हठि करिहौं पहिचानी। साधु तें होइ न कारजहानी ॥ ४
बिप्ररूप धरि बचन सुनाए। सुनत बिभीषनु उठि तहँ आए ॥
करि प्रनामु पूँछी कुसलाई। बिप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥
की तुम्ह हरिदासन्ह महु कोई। मोरें हृदय प्रीति अति होई ॥
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी। आएहु मोहि करन बड़भागी ॥ ८

दोहा। तब हनुमंत कही सब रामकथा निज नाम।
सुनत जुगल तनु पुलक मन मगन सुमिरि गुनग्राम ॥ ६ ॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि महु जीभि बिचारी ॥
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुलनाथा ॥
तामस तनु कछु साधन नाहीं। प्रीति न पद सरोज मन माहीं ॥
अब मोहि भा भरोस हनुमंता। बिनु हरिकृपा मिलहिं नहि संता ॥ ४
जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा। तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ॥
सुनहु बिभीषन प्रभु कइ रीती। करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥
कहहु कवन मैं परम कुलीना। कपि चंचल सबहीं बिधि हीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ॥ ८

दोहा। अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥ ७ ॥

जानतहूँ अस स्वामि बिसारी। फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥
एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा। पावा अनिर्बाच्य बिश्रामा ॥
पुनि सब कथा बिभीषन कही। जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही ॥
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता। देखी चहौं जानकी माता ॥ ४
जुगुति बिभीषन सकल सुनाई। चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥
करि सोइ रूप गएउ पुनि तहवाँ। बन असोक सीता रह जहवाँ ॥
देखि मनहि महु कीन्ह प्रनामा। बैठेहि बीति जात निसि जामा ॥
कृस तनु सीस जटा एक बेनी। जपति हृदय रघुपति गुन श्रेनी ॥ ८

दोहा। निज पद नयन दिएँ मन राम कमल पद लीन।
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥ ८ ॥
तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई। करै बिचार करौं का भाई ॥
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा। संग नारि बहु किएँ बनावा ॥
बहु बिधि खल सीतहि समुझावा। साम दान भय भेद देखावा ॥
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी। मंदोदरी आदि सब रानी ॥ ४
तव अनुचरीं करौं पन मोरा। एक बार बिलोकु मम ओरा ॥
तृन धरि ओट कहति बैदेही। सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥
सुनु दसमुख खद्योतप्रकासा। कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा ॥
अस मन समुझु कहति जानकी। खल सुधि नहि रघुबीरबान की ॥ ८
सठ सूने हरि आनेहि मोही। अधम निलज्ज लाज नहि तोही ॥
दोहा। आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान।
परुष बचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन ॥ ९ ॥
सीता तैं मम कृत अपमाना। कटिहौं तव सिर कठिन कृपाना ॥
नाहि त सपदि मानु मम बानी। सुमुखि होति न त जीवनहानी ॥
स्याम सरोज दाम सम सुंदर। प्रभुभुज करिकर सम दसकंधर ॥
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा। सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥ ४
चंद्रहास हर मम परितापं। रघुपतिबिरह अनल संजातं ॥
सीतल निसित बहसि बर धारा। कह सीता हरु मम दुखभारा ॥
सुनत बचन पुनि मारन धावा। मयतनयाँ कहि नीति बुझावा ॥
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई। सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई ॥ ८
मासदिवस महु कहा न माना। तौ मैं मारबि काढ़ि कृपाना ॥
दोहा। भवन गएउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनिबृंद।
सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद ॥१०॥
त्रिजटा नाम राच्छसी एका। रामचरन रति निपुन बिबेका ॥
सबन्हौं बोलि सुनाएसि सपना। सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥
सपने बानर लंका जारी। जातुधानसेना सब मारी ॥
खर आरूढ़ नगन दससीसा। मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥ ४

एहि बिधि सो दक्षिन दिसि जाई। लंका मनहु बिभीषन पाई॥
नगर फिरी रघुबीरदोहाई। तब प्रभु सीता बोलि पठाई॥
येह सपना मैं कहौं पुकारी। होइहि सत्य गएँ दिन चारी॥
तासु बचन सुनि ते सब डरीं। जनकसुता के चरनन्हि परीं॥ ८

दोहा। जहँ तहँ गईं सकल तब सीता कर मन सोच।
मासदिवस बीते मोहि मारिहि निसिचर पोच॥११॥

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी। मातु बिपतिसंगिनि तइँ मोरी॥
तजौं देह करु बेगि उपाई। दुसह बिरहु अब नहि सहि जाई॥
आनि काठ रचु चिता बनाई। मातु अनल पुनि देहि लगाई॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी। सुनै को श्रवन सूल सम बानी॥ ४
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि। प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि॥
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी। अस कहि सो निज भवन सिधारी॥
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला। मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला॥
देखिअत प्रगट गगन अंगारा। अवनि न आवत एकौ तारा॥ ८
पावकमय ससि स्रवत न आगी। मानहु मोहि जानि हतभागी॥
सुनहि बिनय मम बिटप असोका। सत्य नाम करु हरु मम सोका॥
नूतन किसलय अनल समाना। देहि अगिनि जनि करहि निदाना॥
देखि परम बिरहाकुल सीता। सो छन कपिहि कलप सम बीता॥ १२

सोरठा। कपि करि हृदय बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ॥१२॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर। रामनाम अंकित अति सुंदर॥
चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष बिषाद हृदय अकुलानी॥
जीति को सकै अजय रघुराई। माया तें असि रचि नहि जाई॥
सीता मन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोलेउ हनुमाना॥ ४
रामचंद्रगुन बरनैं लागा। सुनतहि सीता कर दुख भागा॥
लागीं सुनै श्रवन मन लाई। आदिहु तें सब कथा सुनाई॥
श्रवनामृत जेहि कथा सुहाई। कही सो प्रगट होत किन भाई॥
तब हनुमंत निकट चलि गएऊ। फिरि बैठीं मन बिसमय भएऊ॥ ८

रामदूत मैं मातु जानकी । सत्य सपथ करुनानिधान की ॥
एह मुद्रिका मातु मैं आनी । दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥
नर बानरहि संग कहु कैसें । कही कथा भइ संगति जैसें ॥
दोहा । कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास । १२
जाना मन क्रम बचन येह कृपासिंधु कर दास ॥१३॥
हरिजन जानि प्रीति अति बाढ़ी । सजल नयन पुलकावलि ठाढ़ी ॥
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना । भएहु तात मो कहुँ जलजाना ॥
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी । अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥
कोमलचित कृपाल रघुराई । कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥ ४
सहज बानि सेवक सुखदायक । कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥
कबहुँ नयन मम सीतल ताता । होइहहिँ निरखि स्याम मृदु गाता ॥
बचनु न आव नयन भरे बारी । अहह नाथ हौं निपट बिसारी ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता । बोला कपि मृदु बचन बिनीता ॥ ८
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता । तव दुख दुखी सुकृपानिकेता ॥
जनि जननी मानहु जिअ ऊना । तुम्ह तें प्रेमु राम कें दूना ॥
। दोहा ।
रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर ।
अस कहि कपि गदगद भएउ भरे बिलोचन नीर ॥१४॥ १२
कहेउ राम बियोग तव सीता । मो कहुँ सकल भए बिपरीता ॥
नव तरु किसलय मनहु कृसानू । काल निसा सम निसि ससि भानू ॥
कुवलयबिपिन कुंतबन सरिसा । बारिद तपत तेल जनु बरिसा ॥
जे हित रहे करत तेइ पीरा । उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा ॥ ४
कहेहू तें कछु दुख घटि होई । काहि कहौं येह जान न कोई ॥
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं । जानु प्रीतिरसु एतनेंहि माहीं ॥
प्रभुसंदेसु सुनत बैदेही । मगन प्रेम तन सुधि नहि तेही ॥ ८
कह कपि हृदय धीर धरु माता । सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥
उर आनहु रघुपतिप्रभुताई । सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥

दोहा। निसिचरनिकर पतंग सम रघुपतिबान कृसानु।
जननी हृदय धीर धरु जरे निसाचर जानु ॥१५॥ १२

जौ रघुबीर होति सुधि पाई। करते नहि बिलंबु रघुराई॥
रामबान रबि उएँ जानकी। तम बरूथ कहँ जातुधान की॥
अबहि मातु मैं जाउँ लवाई। प्रभु आएसु नहि रामदोहाई॥
कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा॥ ४
निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं। तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं॥
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना। जातुधान अति भट बलवाना॥
मोरें हृदय परम संदेहा। सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा॥
कनकभूधराकार सरीरा। समर भयंकर अति बलबीरा॥ ८
सीतामन भरोस तब भएऊ। पुनि लघु रूप पवनसुत लएऊ॥

दोहा। सुनु माता साखामृग नहि बल बुद्धि बिसाल।
प्रभुप्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल ॥१६॥

मन संतोष सुनत कपिबानी। भगति प्रताप तेज बल सानी॥
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना॥
अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू॥
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना॥ ४
बार बार नाएसि पद सीसा। बोला बचन जोरि कर कीसा॥
अब कृतकृत्य भएउँ मैं माता। आसिष तव अमोघ बिख्याता॥
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि सुंदर फल रूखा॥
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी। परम सुभट रजनीचर भारी॥ ८
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं। जौ तुम्ह सुख मानहु मन माहीं॥

दोहा। देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकी जाहु।
रघुपतिचरन हृदय धरि तात मधुर फल खाहु ॥१७॥

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा। फल खाएसि तरु तोरैं लागा॥
रहे तहाँ बहु भट रखवारे। कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे॥
नाथ एक आवा कपि भारी। तेहि असोकबाटिका उजारी॥
खायेसि फल अरु बिटप उपारे। रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे॥ ४

सुनि रावन पठए भट नाना। तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना॥
सब रजनीचर कपि संघारे। गए पुकारत कछु अधमारे॥
पुनि पठएउ तेहिँ अच्छकुमारा। चला संग लै सुभट अपारा॥
आवत देखि बिटप गहि तर्जा। ताहि निपाति महा धुनि गर्जा॥ ८
दोहा। कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलयसि धरि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बलभूरि॥१८॥
सुनि सुतवध लंकेस रिसाना। पठएसि मेघनाद बलवाना॥
मारसि जनि सुत बाँधेसु ताही। देखिअ कपिहि कहाँ कर आही॥
चला इंद्रजित अतुलित जोधा। बंधुनिधन सुनि उपजा क्रोधा॥
कपि देखा दारुन भट आवा। कटकटाइ गर्जा अरु धावा॥ ४
अति बिसाल तरु एक उपारा। बिरथ कीन्ह लंकेसकुमारा॥
रहे महा भट ताकेँ संगा। गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा॥
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा। भिरे जुगल मानहु गजराजा॥
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई। ताहि एक छन मुरुछा आई॥ ८
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया। जीति न जाइ प्रभंजनजाया॥
दोहा। ब्रह्म अस्त्र तेहि साँधा कपि मन कीन्ह बिचार।
जौं न ब्रह्मसर मानौं महिमा मिटइ अपार॥१९॥
ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहि मारा। परतिहु बार कटकु संघारा॥
तेहि देखा कपि मुरुछित भएऊ। नागपास बाँधेसि लै गएऊ॥
जासु नाम जपि सुनहु भवानी। भवबंधन काटहिँ नर ज्ञानी॥
तासु दूत कि बंध तर आवा। प्रभुकारज लगि कपिहि बँधावा॥ ४
कपिबंधन सुनि निसिचर धाए। कौतुक लागि सभाँ सब आए॥
दसमुखसभा दीखि कपि जाई। कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई॥
कर जोरेँ सुर दिसिप बिनीता। भृकुटि बिलोकत सकल सभीता॥
देखि प्रताप न कपिमन संका। जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका॥ ८
दोहा। कपिहिँ बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद।
सुतबध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयँ बिषाद॥२०॥
कह लंकेस कवन तइँ कीसा। केहि के बल घालेहि बन खीसा॥

कीधौँ श्रवन सुनेहि नहि मोही । देखौँ अति असंक सठ तोही ॥
मारेहि निसिचर केहि अपराधा । कहु सठ तोहि न प्रान कै बाधा ॥
सुनु रावन ब्रह्मांडनिकाया । पाइ जासु बल बिरचति माया ॥ ४
जाकेँ बल बिरंचि हरि ईसा । पालत सृजत हरत दससीसा ॥
जा बल सीस धरत सहसानन । अंडकोस समेत गिरि कानन ॥
धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता । तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता ॥
हरकोदंड कठिन जेहि भंजा । तोहि समेत नृपदल मद गंजा ॥ ८
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली । बधे सकल अतुलित बल साली ॥
दोहा । जाके बल लवलेस तेँ जितेहु चराचर झारि ।
तासु दूत मैँ जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥२१॥
जानउँ मैँ तुम्हारि प्रभुताई । सहसबाहु सन परी लराई ॥
समर बालि सन करि जसु पावा । सुनि कपिबचन बिहसि बहरावा ॥
खाएउँ फल प्रभु लागी भूखा । कपिसुभाउ तेँ तोरेउँ रूखा ॥
सब के देह परम प्रिय स्वामी । मारहिँ मोहि कुमारगगामी ॥ ४
जिन्ह मोहि मारा ते मैँ मारे । तेहि पर बाँधेउ तनय तुम्हारेँ ॥
मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा । कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ॥
बिनती करउँ जोरि कर रावन । सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी । भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी ॥ ८
जाकेँ डर अति काल डेराई । जो सुर असुर चराचर खाई ॥
तासौँ बयरु कबहुँ नहि कीजे । मोरेँ कहे जानकी दीजे ॥
दोहा । प्रनतपाल रघुनायक करुनासिंधु खरारि ।
गएँ सरन प्रभु राखिहिँ तव अपराध बिसारि ॥२२॥ १२
रामचरन पंकज उर धरहू । लंका अचल राजु तुम्ह करहू ॥
रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका । तेहि ससि महु जनि होहु कलंका ॥
रामनाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥
बसनहीन नहि सोह सुरारी । सब भूषन भूषित बर नारी ॥ ४
रामबिमुख संपति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीँ । बरषि गएँ पुनि तबहि सुखाहीँ ॥

सुनु दसकंठ कहौं पन रोपी। बिमुख राम त्राता नहि कोपी॥
संकर सहस बिष्नु अज तोही। सकहिं न राखि राम कर द्रोही॥ ८

दोहा। मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान।
भजहु राम रघुनायक कृपासिंधु भगवान॥२३॥

जदपि कही कपि अति हित बानी। भगति बिवेक बिरति नय सानी॥
बोला बिहसि महा अभिमानी। मिला हमहि कपि गुर बड़ ज्ञानी॥
मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही॥
उलटा होइहि कह हनुमाना। मतिभ्रम तोहि प्रगट मैं जाना॥ ४
सुनि कपिबचन बहुत खिसिआना। बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना॥
सुनत निसाचर मारन धाए। सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए॥
नाइ सीस करि बिनय बहूता। नीतिबिरोध न मारिय दूता॥
आन दंड कछु करिअ गोसाँई। सबहीं कहा मंत्र भल भाई॥ ८
सुनत बिहसि बोला दसकंधर। अंगभंग करि पठइअ बंदर॥

दोहा। कपि कैं ममता पूँछ पर सबहि कहौं समुझाइ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ॥२४॥

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि। तब सठ निज नाथहि लइ आइहि॥
जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई। देखौं मैं तिन्ह कै प्रभुताई॥
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना। भइ सहाय सारद मैं जाना॥
जातुधान सुनि रावनबचना। लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना॥ ४
रहा न नगर बसन घृत तेला। बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला॥
कौतुक कहँ आए पुरबासी। मारहिं चरन करहिं बहु हासी॥
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी। नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी॥
पावक जरत देखि हनुमंता। भएउ परम लघु रूप तुरंता॥ ८
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं। भईं सभीत निसाचरनारीं॥

दोहा। हरिप्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास॥२५॥

देह बिसाल परम हरुआई। मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई॥
जरइ नगर भा लोग बिहाला। झपट लपट बहु कोटि कराला॥

तात मातु हा सुनिअ पुकारा। एहि अवसर को हमहिं उबारा॥
हम जो कहा येह कपि नहि होई। बानररूप धरेँ सुर कोई॥ ४
साधु अवज्ञा कर फलु ऐसा। जरै नगर अनाथ कर जैसा॥
जारा नगरु निमिष एक माहीँ। एक बिभीषन कर गृह नाहीँ॥
ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा। जरा न सो तेहि कारन गिरिजा॥
उलटि पलटि लंका सब जारी। कूदि परा पुनि सिंधु मझारी॥ ८

दोहा। पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि।
जनकसुता कँ आगेँ ठाढ़ भएउ कर जोरि॥२६॥

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा। जैसेँ रघुनायक मोहि दीन्हा॥
चूड़ामनि उतारि तब दएऊ। हरष समेत पवनसुत लएऊ॥
कहेहु तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूरनकामा॥
दीनदयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी॥ ४
तात सक्रसुत कथा सुनाएहु। बानप्रताप प्रभुहि समुझाएहु॥
मासदिवस महु नाथु न आवा। तौ पुनि मोहि जिअत नहि पावा॥
कहु कपि केहि बिधि राखौँ प्राना। तुम्हहूँ तात कहत अब जाना॥
तोहि देखि सीतलि भइ छाती। पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सोइ राती॥ ८

दोहा। जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह।
चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहि कीन्ह॥२७॥

चलत महा धुनि गर्जेसि भारी। गर्भ स्रवहिँ सुनि निसिचरनारी॥
नाघि सिंधु एहि पारहि आवा। सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा॥
हरषे सब बिलोकि हनुमाना। नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना॥
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा। कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा॥ ४
मिले सकल अति भए सुखारी। तलफत मीन पाव जनु बारी॥
चले हरषि रघुनायक पासा। पूँछत कहत नवल इतिहासा॥
तब मधुबन भीतर सब आए। अंगदसंमत मधुफल खाए॥
रखवारे जब बरजइ लागे। मुष्टिप्रहार हनत सब भागे॥ ८

दोहा। जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुवराज।
सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभुकाज॥२८॥

जौ न होति सीतासुधि पाई। मधुबन के फल सकहिँ कि खाई॥
येहि बिधि मन बिचार कर राजा। आइ गए कपि सहित समाजा॥
आइ सबन्हि नावा पद सीसा। मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा॥
पूँछी कुसल कुसल पद देखी। रामकृपाँ भा काजु बिसेषी॥
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना। राखे सकल कपिन्ह के प्राना॥
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ। कपिन्ह सहित रघुपति पहि चलेऊ॥
राम कपिन्ह जब आवत देखा। किएँ काजु मन हरष बिसेषा॥
फटिकसिला बैठे द्वौ भाई। परे सकल कपि चरनन्हि जाई॥

दोहा। प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुनापुंज।
पूछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज॥२९॥

जामवंत कह सुनु रघुराया। जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया॥
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर॥
सोइ बिजयी बिनयी गुनसागर। तासु सुजसु त्रैलोक उजागर॥
प्रभु कीँ कृपा भएउ सबु काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू॥
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी। सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी॥
पवनतनय के चरित सुहाए। जामवंत रघुपतिहि सुनाए॥
सुनत कृपानिधिमन अति भाए। पुनि हनुमान हरषि हिय लाए॥
कहहु तात केहि भाँति जानकी। रहति करति रच्छा स्वप्रान की॥

दोहा। नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिँ प्रान केहि बाट॥३०॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदय लाइ सोइ लीन्ही॥
नाथ जुगल लोचन भरि बारी। बचन कहे कछु जनककुमारी॥
अनुज समेत गहेहु प्रभुचरना। दीनबंधु प्रनतारतिहरना॥
मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केहि अपराध नाथ हौँ त्यागी॥
अवगुन एक मोर मैँ माना। बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना॥
नाथ सो नयनन्हि कर अपराधा। निसरत प्रान करहिँ हठि बाधा॥
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा। स्वास जरइ छन माह सरीरा॥
नयन स्रवहिँ जलु निज हित लागी। जरैँ न पाव देह बिरहागी॥

सीता कै अति बिपति बिसाला। बिनहि कहेँ भलि दीनदयाला ॥

दोहा। निमिष निमिष करुनानिधि जाहिँ कलप सम बीति।
बेगि चलिय प्रभु आनिय भुजबल खलदल जीति ॥३१॥

सुनि सीतादुख प्रभु सुख अयना। भरि आए जल राजिव नयना ॥
बचन काय मन मम गति जाही। सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही ॥
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई। जब तव सुमिरन भजनु न होई ॥
केतिक बात प्रभु जातुधान की। रिपुहि जीति आनिबी जानकी ॥ ४
सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नहि कोउ सुर नर मुनि तनु धारी ॥
प्रति उपकार करौँ का तोरा। सन्मुख होइ न सकत मन मोरा ॥
सुनु सुत तोहि उरिन मैँ नाहीँ। देखेउँ करि बिचार मन माहीँ ॥
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता। लोचन नीर पुलक अति गाता ॥ ८

दोहा। सुनि प्रभुबचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥३२॥

बार बार प्रभु चहै उठावा। प्रेममगन तेहि उठव न भावा ॥
प्रभु कर पंकज कपि कँ सीसा। सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥
सावधान मन करि पुनि संकर। लागे कहन कथा अति सुंदर ॥
कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा। कर गहि परम निकट बैठावा ॥ ४
कहु कपि रावनपालित लंका। केहि बिधि दहेहु दुर्ग अति बंका ॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना। बोला बचन बिगत अभिमाना ॥
साखामृग कै बड़ि मनुसाई। साखा तेँ साखा पर जाई ॥
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा। निसिचरगन बधि बिपिन उजारा ॥ ८
सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ॥

दोहा। ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहि जा पर तुम्ह अनुकूल।
तव प्रभाव बड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल ॥३३॥

नाथ भगति अति सुखदायनी। देहु कृपा करि अनपायनी ॥
सुनि प्रभु परम सरल कपिबानी। एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमा रामसुभाउ जेहि जाना। ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥
येह संवाद जासु उर आवा। रघुपतिचरन भगति सोइ पावा ॥ ४

सुनि प्रभुबचन कहहिँ कपिबृंदा । जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥
तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा । कहा चलैँ कर करहु बनावा ॥
अब बिलंबु केहि कारन कीजे । तुरत कपिन्ह कहुँ आएसु दीजे ॥
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी । नभ तेँ भवन चले सुर हरषी ॥

दोहा । कपिपति बेगि बोलाए आए जूथप जूथ ।
नाना बरन अतुल बल बानर भालु बरूथ ॥३४॥

प्रभु पद पंकज नावहिँ सीसा । गर्जहिँ भालु महाबल कीसा ॥
देखी राम सकल कपि सेना । चितइ कृपा करि राजिवनयना ॥
राम कृपा बल पाइ कपिंदा । भए पच्छजुत मनहु गिरिंदा ॥
हरषि राम तब कीन्ह पयाना । सगुन भए सुंदर सुभ नाना ॥
जासु सकल मंगलमय कीती । तासु पयान सगुन येह नीती ॥
प्रभुपयान जाना वैदेहीँ । फरकि वाम अँग जनु कहि देहीँ ॥
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई । असगुन भएउ रावनहि सोई ॥
चला कटकु को बरनैँ पारा । गर्जहिँ बानर भालु अपारा ॥
नख आयुध गिरि पादप धारी । चले गगन महि इंछाचारी ॥
केहरिनाद भालु कपि करहीँ । डगमगाहिँ दिग्गज. चिक्करहीँ ॥

छंद । चिक्करहिँ दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे ।
मन हरष दिनकर सोम सुर मुनि नाग किंनर दुख टरे ।
कटकटहिँ मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीँ ।
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुनगन गावहीँ ।
सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहि मोहई ।
गह दसन पुनि पुनि कमठपृष्ठ कठोर सो किमि सोहई ।
रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ।
जनु कमठखर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी ॥

दोहा । येहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ॥३५॥

उहाँ निसाचर रहहिँ ससंका । जब तेँ जारि गएउ कपि लंका ॥
निज निज गृह सब करहिँ बिचारा । नहि निसिचरकुल केर उबारा ॥

जासु दूत बल बरनि न जाई। तेहि आएँ पुर कवन भलाई॥
दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी। मंदोदरी अधिक अकुलानी॥ ४
रहसि जोरि कर पतिपद लागी। बोली बचन नीतिरस पागी॥
कंत करष हरि सन परिहरहू। मोर कहा अति हित हिय धरहू॥
समुझत जासु दूत कइ करनी। स्रवहिँ गर्भ रजनीचरघरनी॥
तासु नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कंत जो चहहु भलाई॥ ८
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई। सीता सीत निसा सम आई॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे। हित न तुम्हार संभु अज कीन्हे॥

दोहा। रामबान अहिगन सरिस निकर निसाचर भेक।
जब लगि ग्रसत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक॥३६॥ १२

श्रवन सुनी सठ ता करि बानी। बिहसा जगतबिदित अभिमानी॥
सभय सुभाउ नारि कर साचा। मंगल महुँ भय मन अति काचा॥
जौ आवै मर्कटकटकाई। जियहिँ बिचारे निसिचर खाई॥
कंपहिँ लोकप जाकीँ त्रासा। तासु नारि सभीत बड़ि हासा॥ ४
अस कहि बिहसि ताहि उर लाई। चलेउ सभाँ ममता अधिकाई॥
मंदोदरी हृदय कर चिंता। भएउ कंत पर बिधि बिपरीता॥
बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई। सिंधुपार सेना सब आई॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू। ते सब हसे मष्ट करि रहहू॥ ८
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीँ। नर बानर केहि लेखे माहीँ॥

। दोहा।

सचिव बैद गुर तीनि जौ प्रिय बोलहिँ भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीँ नास॥३७॥

सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिँ सुनाइ सुनाई॥
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राताचरन सीसु तेहि नावा॥
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन॥
जौ कृपाल पूछिहु मोहि बाता। मति अनुरूप कहौँ हित ताता॥ ४
जो आपन चाहइ कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना॥
सो परनारि लिलारु गोसाईँ। तजउ चौथि के चंद कि नाईँ॥

चौदह भुवन एक पति होई । भूतद्रोह तिष्टै नहि सोई ॥
गुनसागर नागर नर जोऊ । अलप लोभ भल कहै न कोऊ ॥ ८
दोहा । काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिँ जेहि संत ॥३८॥
तात राम नहि नरभूपाला । भुवनेस्वर कालहु कर काला ॥
ब्रह्म अनामय अज भगवंता । ब्यापक अजित अनादि अनंता ॥
गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपासिंधु मानुषतनु धारी ॥
जनरंजन भंजन खलब्राता । बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥ ४
ताहि बयरु तजि नाइअ माथा । प्रनतारतिभंजन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही । भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥
सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा । बिस्वद्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥
जासु नाम त्रय ताप नसावन । सोइ प्रभु प्रगट समुझु जिअ रावन ॥ ८
दोहा । बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस ।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ॥
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई येह बात ।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात ॥३९॥ १२
माल्यवंत अति सचिव सयाना । तासु बचन सुनि अति सुख माना ॥
तात अनुज तव नीतिबिभूषन । सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ॥
रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ । दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥
माल्यवंत गृह गएउ बहोरी । कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी ॥ ४
सुमति कुमति सब के उर रहहीँ । नाथ पुरान निगम अस कहहीँ ॥
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥
तव उर कुमति बसी बिपरीता । हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥
कालराति निसिचरकुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥ ८
दोहा । तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार ।
सीता देहु राम कहुँ अहित न होइ तुम्हार ॥४०॥
बुध पुरान श्रुति संमत बानी । कही बिभीषन नीति बखानी ॥
सुनत दसानन उठा रिसाई । खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ॥

जियसि सदा सठ मोर जिआवा। रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥
कहसि न खल अस को जग माहीं। भुजबल जाहि जिता मैं नाहीं ॥ ४
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती। सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ॥
अस कहि कीन्हेसि चरनप्रहारा। अनुज गहे पद बारहि बारा ॥
उमा संत कइ इहइ बड़ाई। मंद करत जो करै भलाई ॥
तुम्ह पितु सरिस भलेहि मोहि मारा। रामु भजें हित नाथ तुम्हारा ॥ ८
सचिव संग लै नभपथ गएऊ। सबहि सुनाइ कहत अस भएऊ ॥

दोहा। रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि।
मैं रंघुबीरसरन अब जाउँ देहु जनि खोरि ॥४१॥

अस कहि चला बिभीषनु जबहीं। आयूहीन भए सब तबहीं ॥
साधु अवज्ञा तुरत भवानी। कर कल्यान अखिल कै हानी ॥
रावन जबहि बिभीषनु त्यागा। भएउ बिभव बिनु तबहि अभागा ॥
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥ ४
देखिहौं जाइ चरन जलजाता। अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥
जे पद परसि तरी रिषिनारी। दंडक कानन पावनकारी ॥
जे पद जनकसुता उर लाए। कपटकुरंग संग धर धाए ॥
हर उर सर सरोज पद जेई। अहोभाग्य मैं देखिहौं तेई ॥ ८

दोहा। जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मनु लाइ।
ते पद आजु बिलोकिहौं इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥४२॥

एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा। आएउ सपदि सिंधु येहि पारा ॥
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा। जाना कोउ रिपुदूत बिसेषा ॥
ताहि राखि कपीस पहिँ आए। समाचार सब ताहि सुनाए ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। आवा मिलन दसाननभाई ॥ ४
कह प्रभु सखा बूझिए काहा। कहै कपीस सुनहु नरनाहा ॥
जानि न जाइ निसाचरमाया। कामरूप केहि कारन आया ॥
भेद हमार लेन सठ आवा। राखिअ बाँधि मोहि अस भावा ॥
सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी। मम पन सरनागत भय हारी ॥ ८
सुनि प्रभुबचन हरष हनुमाना। सरनागत बच्छल भगवाना ॥

दोहा। सरनागत कहुँ जे तजहिँ निज अनहित अनुमानि।
ते नर पावर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ॥४३॥

कोटि विप्र वध लागहि जाहू। आएँ सरन तजउँ नहि ताहू ॥
सन्मुख होइ जीव मोहि जबही। जन्म कोटि अघ नासहि तबही ॥
पापवंत कर सहज सुभाऊ। भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ॥
जौ पै दुष्ट हृदय सोइ होई। मोरेँ सन्मुख आव कि सोई ॥ ४
निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥
भेद लेन पठवा दससीसा। तवहुँ न कछु भय हानि कपीसा ॥
जग महु सखा निसाचर जेते। लछिमनु हनइ निमिष महु तेते ॥
जौ सभीत आवा सरनाईं। रखिहौं ताहि प्रान कीं नाईं ॥ ८

दोहा। उभय भाँति तेहि आनहु हसि कह कृपानिकेत।
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत ॥४४॥

सादर तेहि आगेँ करि बानर। चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥
दूरिहि तेँ देखे द्वौ भ्राता। नयनानंद दान के दाता ॥
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी। रहेउ ठठुकि एकटक पल रोकी ॥
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन। स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥ ४
सिंघ कंध आयत उर सोहा। आनन अमित मदन छबि मोहा ॥
नयन नीर पुलकित अति गाता। मन धरि धीर कही मृदु बाता ॥
नाथ दसानन कर मैँ भ्राता। निसिचरबंस जन्म सुरत्राता ॥
सहज पापप्रिय तामस देहा। जथा उलूकहि तम पर नेहा ॥ ८

दोहा। श्रवन सुजसु सुनि आएउँ प्रभु भंजन भवभीर।
त्राहि त्राहि आरतिहरन सरनसुखद रघुबीर ॥४५॥

अस कहि करत दंडवत देखा। तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ॥
दीन वचन सुनि प्रभुमन भावा। भुज बिसाल गहि हृदय लगावा ॥
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी। बोले बचन भगतभय हारी ॥
कहु लंकेस सहित परिवारा। कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ॥ ४
खलमंडलीँ बसहु दिनु राती। सखा धर्म निबहइ केहि भाँती ॥
मैँ जानौँ तुम्हारि सब रीती। अति नयनिपुन न भाव अनीती ॥

बरु भल बास नरक कर ताता। दुष्टसंग जनि देइ विधाता॥
अब पद देखि कुसल रघुराया। जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया॥ ८

दोहा। तब लगि कुसल न जीव कहुँ सपनेहु मन विश्राम।
जब लगि भजत न राम कहुँ सोकधाम तजि काम॥४६॥

तब लगि हृदय बसत खल नाना। लोभ मोह मच्छर मद माना॥
जब लगि उर न बसत रघुनाथा। धरेँ चाप सायक कटि भाथा॥
ममता तरुन तमी अँधिआरी। राग द्वेष उलूक सुखकारी॥
तब लगि बसत जीव मन माहीँ। जब लगि प्रभुप्रताप रवि नाहीँ॥ ४
अब मैँ कुसल मिटे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे॥
तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला। ताहि न ब्याप त्रिबिध भवसूला॥
मैँ निसिचर अति अधम सुभाऊ। सुभ आचरनु कीन्ह नहि काऊ॥
जासु रूप मुनिध्यान न आवा। तेहि प्रभु हरषि हृदय मोहि लावा॥ ८

दोहा। अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज।
देखेउँ नयन बिरंचि सिव सेब्य जुगल पद कंज॥४७॥

सुनहु सखा निज कहौँ सुभाऊ। जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ॥
जौं नर होइ चराचरद्रोही। आवइ सभय सरन तकि मोही॥
तजि मद मोह कपट छल नाना। करौँ सद्य तेहि साधु समाना॥
जननी जनक बंधु सुत दारा। तनु धनु भवनु सुहृद परिवारा॥ ४
सब कै ममता ताग बटोरी। मम पद मनहि बाँध बरि डोरी॥
समदरसी इच्छा कछु नाहीँ। हरष सोक भय नहि मन माहीँ॥
अस सज्जन मम उर बस कैसेँ। लोभीहृदय बसै धनु जैसेँ॥
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरेँ। धरौँ देह नहि आन निहोरेँ॥ ८

दोहा। सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम।
ते नर प्रान समान मम जिन्ह कैँ द्विजपद प्रेम॥४८॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोरेँ। तातेँ तुम्ह अतिसय प्रिय मोरेँ॥
रामबचन सुनि बानरजूथा। सकल कहहिँ जय कृपाबरूथा॥
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी। नहि अघात श्रवनामृत जानी॥
पद अंबुज गह बारहि बारा। हृदय समात न प्रेमु अपारा॥ ४

सुनहु देव सचराचरस्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ।।
उर कछु प्रथम बासना रही । प्रभुपद प्रीति सरित सो बही ।।
अब कृपाल निज भगति पावनी । देहु सदा सिवमन भावनी ।।
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा । मागा तुरत सिंधु कर नीरा ।।
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं । मोर दरसु अमोघ जग माहीं ।।
अस कहि राम तिलक तेहि सारा । सुमनबृष्टि नभ भई अपारा ।।
दोहा । रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।
जरत बिभीषनु राखा दीन्हेउ राजु अखंड ।।
जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ।।४८।।
अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना । ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना ।।
निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभुसुभाव कपिकुल मन भावा ।।
पुनि सर्बग्य सर्ब उर बासी । सर्बरूप सब रहित उदासी ।।
बोले बचन नीति प्रतिपालक । कारन मनुज दनुजकुल घालक ।।
सुनु कपीस लंकापति बीरा । केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ।।
संकुल मकर उरग झष जाती । अति अगाध दुस्तर सब भाती ।।
कह लंकेस सुनहु रघुनायक । कोटि सिंधु सोषक तव सायक ।।
जद्यपि तदपि नीति असि गाई । बिनय करिअ सागर सन जाई ।।
दोहा । प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि ।
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ।।५०।।
सखा कही तुम्ह नीकि उपाई । करिअ दैव जौ होइ सहाई ।।
मंत्र न येह लछिमनमन भावा । रामबचन सुनि अति दुख पावा ।।
नाथ दैव कर कवन भरोसा । सोखिअ सिंधु करिअ मन रोसा ।।
कादरमन कहुँ एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा ।।
सुनत बिहसि बोले रघुबीरा । ऐसेइ करब धरहु मन धीरा ।।
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई । सिंधु समीप गए रघुराई ।।
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई । बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ।।
जबहि बिभीषनु प्रभु पहि आए । पाछे रावन दूत पठाए ।।

दोहा। सकल चरित तिन्ह देखे धरेँ कपट कपि देह।
प्रभुगुन हृदय सराहहिं सरनागत पर नेह ॥५१॥

प्रगट बखानहिं रामसुभाऊ। अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने। सकल बाँधि कपीस पहिँ आने ॥
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर। अंगभंग करि पठवहु निसिचर ॥
सुनि सुग्रीवबचन कपि धाए। बाँधि कटक चहुँ पास फिराए ॥ ४
बहु प्रकार मारन कपि लागे। दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
जो हमार हर नासा काना। तेहि कोसलाधीस कै आना ॥
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए। दया लागि हसि तुरत छोड़ाए ॥
रावनकर दीजेहु येह पाती। लछिमनबचन बाँचु कुलघाती ॥ ८

दोहा। कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार।
सीता देइ मिलहु न त आवा कालु तुम्हार ॥५२॥

तुरत नाइ लछिमनपद माथा। चले दूत बरनत गुनगाथा ॥
कहत रामजसु लंका आए। रावनचरन सीस तिन्ह नाए ॥
बिहसि दसानन पूँछी बाता। कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी। जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥ ४
करत राजु लंका सठ त्यागी। होइहि जब कर कीट अभागी ॥
पुनि कहु भालु कीस कटकाई। कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥
जिन्ह के जीवन कर रखवारा। भएउ मृदुलचित सिंधु बिचारा ॥
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी। जिन्ह कँ हृदय त्रास अति मोरी ॥ ८

दोहा। की भइ भेँट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर।
कहसि न रिपुदल तेज बल बहुत चकित चित तोर ॥५३॥

नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसेँ। मानहु कहा क्रोध तजि तैसेँ ॥
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा। जातहिँ राम तिलक तेहि सारा ॥
रावनदूत हमहि सुनि काना। कपिन्ह बाँधि दीन्हेउ दुख नाना ॥
श्रवन नासिका काटइँ लागे। रामसपथ दीन्हे हम त्यागे ॥ ४
पूछिहु नाथ रामकटकाई। बदन कोटि सत बरनि न जाई ॥
नाना बरन भालु कपि धारी। बिकटानन बिसाल भयकारी ॥

जेहि पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा। सकल कपिन्ह महँ तेहि बलु थोरा॥
अमित नाम भट कठिन कराला। अमित नाग बल बिपुल बिसाला॥ ८
दोहा। द्विद मयंद नील नल अंगद गद बिकटास्य।
दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि॥५४॥
ए कपि सब सुग्रीव समाना। इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना॥
रामकृपा अतुलित बल तिन्हहीं। तृन समान त्रैलोकहि गनहीं॥
अस मैं श्रवन सुना दसकंधर। पदुम अठारह जूथप बंदर॥
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं। जो न तुम्हहि जीतइ रन माहीं॥ ४
परम क्रोध मीजहिँ सब हाथा। आएसु पै न देहिँ रघुनाथा॥
सोखहिँ सिंधु सहित झष ब्याला। पूरहिँ न त भरि कुधर बिसाला॥
मर्दि गर्द मिलवहिँ दससीसा। ऐसेइ बचन कहहिँ सब कीसा॥
गर्जहिँ तर्जहिँ सहज असंका। मानहु ग्रसन चहत हहिँ लंका॥ ८
दोहा। सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम।
रावन काल कोटि कहुँ जीति सकहिँ संग्राम॥५५॥
राम तेज बल बुधि बिपुलाई। सेष सहस सत सकहिँ न गाई॥
सक सर एक सोखि सत सागर। तव भ्रातहि पूँछेउ नयनागर॥
तासु बचन सुनि सागर पाहीं। मागत पंथ कृपा मन माहीं॥
सुनत बचन बिहसा दससीसा। जौ असि मति सहाय कृत कीसा॥ ४
सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई। सागर सन ठानी मचलाई॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई। रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई॥
सचिव सभीत बिभीषनु जाकेँ। बिजय बिभूति कहाँ लगि ताकेँ॥
सुनि खलबचन दूतरिस बाढ़ी। समय बिचारि पत्रिका काढ़ी॥ ८
रामानुज दीन्ही येह पाती। नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती॥
बिहसि बाम कर लीन्ही रावन। सचिव बोलि सठ लाग बचावन॥
दोहा। बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस।
रामबिरोध न उबरसि सरन बिष्नु अज ईस॥ १२
की तजि मान अनुज इव प्रभुपद पंकज भृंग।
होहि कि रामसरानल खल कुल सहित पतंग॥५६॥

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई । कहत दसानन सबहि सुनाई ॥
भूमि परा कर गहत अकासा । लघु तापस कर बागबिलासा ॥
कह सुक नाथ सत्य सब बानी । समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी ॥
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा । नाथ राम सन तजहु बिरोधा ॥ ४
अति कोमल रघुबीरसुभाऊ । जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही । उर अपराध न एकौ धरिही ॥
जनकसुता रघुनाथहि दीजे । एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥
जब तेहि कहा देन बैदेही । चरनप्रहार कीन्ह सठ तेही ॥ ८
नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ । कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ॥
करि प्रनामु निज कथा सुनाई । रामकृपा आपनि गति पाई ॥
रिषि अगस्ति कीं श्राप भवानी । राछस भएउ रहा मुनि ज्ञानी ॥
बंदि रामपद बारहि बारा । मुनि निज आश्रम कहुँ पगु धारा ॥ १२

दोहा । बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति ।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥५७॥

लछिमन बान सरासन आनू । सोखौं बारिधि बिसिख कृसानू ॥
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपन सन सुंदर नीती ॥
ममतारत सन ज्ञानकहानी । अतिलोभी सन बिरति बखानी ॥
क्रोधिहि सम कामिहि हरिकथा । ऊषर बीज बएँ फल जथा ॥ ४
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा । येह मत लछिमन कँ मन भावा ॥
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला । उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥
मकर उरग झष गन अकुलाने । जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥
कनकथार भरि मनिगन नाना । बिप्ररूप आए तजि माना ॥ ८

दोहा । काटेँहि पइ कदली फरै कोटि जतन कोउ सींच ।
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेँहि पइ नव नीच ॥५८॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥
गगन समीर अनल जल धरनी । इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥
तव प्रेरित माया उपजाए । सृष्टिहेतु सब ग्रंथन्हि गाए ॥
प्रभु आएसु जेहि कहँ जस अहई । सो तेहि भाँति रहेँ सुख लहई ॥ ४

प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही । मरजादा पुनि तुम्हरिअ कीन्ही ॥
ढोल गवार सुद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ॥
प्रभुप्रताप मैं जाब सुखाई । उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥
प्रभु अज्ञा अपेल श्रुति गाई । करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई ॥ ८

दोहा । सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ ।
जेहि बिधि उतरइ कपिकटकु तात सो कहहु उपाइ ॥५८॥

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई । लरिकाईं रिषि आसिष पाई ॥
तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे । तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
मैं पुनि उर धरि प्रभुप्रभुताई । करिहौं बल अनुमान सहाई ॥
एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ । जेहि एह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ ॥ ४
एहि सर मम उत्तर तट बासी । हतहु नाथ खल नर अघरासी ॥
सुनि कृपाल सागरमन पीरा । तुरतहि हरी राम रनधीरा ॥
देखि राम बल पौरुष भारी । हरषि पयोनिधि भएउ सुखारी ॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥ ८

छंद । निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि येह मत भाएऊ ।
येह चरित कलिमल हर जथामति-दास तुलसी गाएऊ ।
सुखभवन संसयसमन दवन बिषाद रघुपति गुन गना ।
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥ १२

दोहा । सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान ॥६०॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
ज्ञानसंपादनो नाम पंचमस्सोपानः समाप्तः ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभाय नमः

दोहा । लव निमेष परमानु जुग बरष कल्प सर चंड ।
भजसि न मन तेहि राम कहुँ काल जासु कोदंड ॥

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं
योगेंद्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारं ।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृंदैकदेवं
वंदे कंदावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपं ॥ १ ॥
शंखेंद्वाभमतीवसुंदरतनुं शार्दूलचर्मांबरं
कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियं ।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं शंकरं मन्मथारिं ॥ २ ॥
यो ददाति सतां शंभुः कैवल्यमपि दुर्लभं ।
खलानां दंडकृद्योसौ शंकरः शं तनोतु मां ॥ ३ ॥

। सोरठा ।

सिंधुबचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ।
अब बिलंबु केहि काम करहु सेतु उतरै कटकु ॥
सुनहु भानुकुलकेतु जामवंत कर जोरि कह ।
नाथ नाम तव सेतु नर चढ़ि भवसागर तरहिँ ॥ ४
येह लघु जलधि तरत कति बारा । अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा ॥
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी । सोखेउ प्रथम पयोनिधिबारी ॥
तव रिपुनारि रुदन जलधारा । भरेउ बहोरि भएउ तेहि खारा ॥
सुनि अति उक्ति पवनसुत केरी । हरषे कपि रघुपति तन हेरी ॥ ८
जामवंत बोले द्वौ भाई । नल नीलहि सब कथा सुनाई ॥
रामप्रताप सुमिरि मन माही । करहु सेतु प्रयास कछु नाही ॥

बोलि लिए कपिनिकर बहोरी। सकल सुनहु बिनती कछु मोरी॥
रामचरन पंकज उर धरहू। कौतुक एक भालु कपि करहू॥ १२
धावहु मर्कट बिकट बरूथा। आनहु बिटप गिरिन्ह के जूथा॥
सुनि कपि भालु चले करि हूहा। जय रघुबीर प्रताप समूहा॥
दोहा। अति उतंग गिरि पादप लीलहिँ लेहिँ उठाइ।
आनि देहिँ नल नीलहि रचहिँ ते सेतु बनाइ॥ १॥ १६
सैल बिसाल आनि कपि देहीँ। कंदुक इव नल नील ते लेहीँ॥
देखि सेतु अति सुंदर रचना। बिहसि कृपानिधि बोले बचना॥
परम रम्य उत्तम येह धरनी। महिमा अमित जाइ नहि बरनी॥
करिहौँ इहाँ संभुथापना। मोरेँ हृदय परम कल्पना॥ ४
सुनि कपीस बहु दूत पठाए। मुनिबर सकल बोलि लै आए॥
लिंग थापि बिधिवत करि पूजा। सिव समान प्रिय मोहि न दूजा॥
सिवद्रोही मम भगत कहावा। सो नर सपनेहु मोहि न पावा॥
संकरबिमुख भगति चह मोरी। सो नारकी मूढ़ मति थोरी॥ ८
दोहा। संकरप्रिय मम द्रोही सिवद्रोही मम दास।
ते नर करहिँ कल्प भरि घोर नरक महुँ बास॥ २॥
जे रामेस्वरदरसनु करिहहिँ। ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिँ॥
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि। सो साजुज्य मुक्ति नरु पाइहि॥
होइ अकाम जो छलु तजि सेइहि। भगति मोरि तेहि संकरु देइहि॥
मम कृत सेतु जो दरसनु करिही। सो बिनु श्रम भवसागर तरिही॥ ४
रामबचन सब के जिय भाए। मुनिबर निज निज आश्रम आए॥
गिरिजा रघुपति कै येह रीती। संतत करहिँ प्रनत पर प्रीती॥
बाँधेउ सेतु नील नल नागर। रामकृपा जसु भएउ उजागर॥
बूड़हिँ आनहिँ बोरहिँ जेई। भए उपल बोहित सम तेई॥ ८
महिमा येह न जलधि कै बरनी। पाहनगुन न कपिन्ह कै करनी॥
दोहा। श्रीरघुबीरप्रताप तेँ सिंधु तरे पाषान।
ते मतिमंद जे रामु तजि भजहिँ जाइ प्रभु आन॥ ३॥
बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा। देखि कृपानिधि कँ मन भावा॥

चली सेन कछु बरनि न जाई। गर्जहिँ मर्कट भट समुदाई॥
सेतुबंध ढिग चढ़ि रघुराई। चितव कृपाल सिंधु बहुताई॥
देखन कहुँ प्रभु करुनाकंदा। प्रगट भए सब जलचर बृंदा॥ ४
मकर नक्र नाना झष ब्याला। सत जोजन तनु परम बिसाला॥
अैसेउ एक तिन्हहिँ जे खाहीँ। एकन्ह के डर तेपि डेराहीँ॥
प्रभुहि बिलोकहिँ टरहिँ न टारे। मन हरषित सब भए सुखारे॥
तिन्ह कीँ ओट न देखिअ बारी। मगन भए हरिरूप निहारी॥ ८
चला कटकु प्रभु आयसु पाई। को कहि सक कपिदल बिपुलाई॥
दोहा। सेतुबंध भइ भीर अति कपि नभपंथ उड़ाहिँ।
अपर जलचरन्हि ऊपर चढ़ि चढ़ि पारहि जाहिँ॥ ४॥
अस कौतुक बिलोकि द्वौ भाई। बिहसि चले कृपाल रघुराई॥
सेन सहित उतरे रघुबीरा। कहि न जाइ कपिजूथप भीरा॥
सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा। सकल कपिन्ह कहुँ आएसु दीन्हा॥
खाहु जाइ फल मूल सुहाए। सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाए॥ ४
सब तरु फरे रामहित लागी। रितु अरु कुरितु कालगति त्यागी॥
खाहिँ मधुर फल बिटप हलावहिँ। लंका सन्मुख सिखर चलावहिँ॥
जहँ कहुँ फिरत निसाचर पावहिँ। घेरि सकल बहु नाच नचावहिँ॥
दसनन्हि काटि नासिका काना। कहि प्रभु सुजसु देहिँ तब जाना॥ ८
जिन्ह कर नासा कान निपाता। तिन्ह रावनहि कही सब बाता॥
सुनत श्रवन बारिधिबंधाना। दसमुख बोलि उठा अकुलाना॥
दोहा। बाँध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस।
सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस॥ ५॥ १२
निज बिकलता बिचारि बहोरी। बिहसि गयउ गृह करि भय भोरी॥
मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयो। कौतुकहीँ पाथोधि बँधायो॥
कर गहि पतिहि भवन निज आनी। बोली परम मनोहर बानी॥
चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा। सुनहु बचन पिअ परिहरि कोपा॥ ४
नाथ बयरु कीजे ताही सोँ। बुधिबल सकिअ जीति जाही सोँ॥
तुम्हहि रघुपतिहि अंतरु कैसा। खलु खद्योत दिनकरहि जैसा॥

अतिबल मधु कैटभ जेहि मारे। महाबीर दितिसुत संघारे॥
जेहि बलि बाँधि सहसभुज मारा। सोइ अवतरेउ हरन महिभारा॥ ८
तासु बिरोध न कीजिअ नाथा। काल कर्म जिव जाकें हाथा॥
दोहा। रामहि सौंपि जानकी नाइ कमल पद माथ।
सुत कहुँ राज समर्पि बन जाइ भजिअ रघुनाथ॥ ६॥
नाथ दीनदयाल रघुराई। बाघौ सन्मुख गए न खाई॥
चाहिअ करन सो सब करि बीते। तुम्ह सुर असुर चराचर जीते॥
संत कहहिं असि नीति दसानन। चौथेंपन जाइहि नृप कानन॥
तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता। जो करता पालक संहर्ता॥ ४
सोइ रघुबीर प्रनत अनुरागी। भजहुँ नाथ ममता सब त्यागी॥
मुनिबर जतनु करहिं जेहि लागी। भूप राजु तजि होहिं बिरागी॥
सोइ कोसलाधीस रघुराया। आएउ करन तोहि पर दाया॥
जौं पिअ मानहु मोर सिखावन। सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन॥ ८
दोहा। अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात।
नाथ भजहुँ रघुनाथहि अचल होइ अहिवात॥ ७॥
तब रावन मयसुता उठाई। कहइ लाग खल निज प्रभुताई॥
सुनु तैं प्रिया बृथा भय माना। जग जोधा को मोहि समाना॥
बरुन कुबेर पवन जम काला। भुजबल जितेउँ सकल दिगपाला॥
देव दनुज नर सब बस मोरें। कवन हेतु उपजा भय तोरें॥ ४
नाना बिधि तेहि कहेसि बुझाई। सभा बहोरि बैठ सो जाई॥
मंदोदरीं हृदय अस जाना। कालबस्य उपजा अभिमाना॥
सभाँ आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा। करब कवन बिधि रिपु सैं जूझा॥
कहहिं सचिव सुनु निसिचरनाहा। बार बार प्रभु पूछहु काहा॥ ८
कहहु कवन भय करिअ बिचारा। नर कपि भालु अहार हमारा॥
दोहा। सब के बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि।
नीतिबिरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि॥ ८॥
कहहिं सचिव सब ठकुरसोहाती। नाथ न पूर आव एहि भाँती॥
बारिधि नाघि एकु कपि आवा। तासु चरित मन महुँ सबु गावा॥

छुधा न रही तुम्हहि तब काहू। जारत नगरु कस न धरि खाहू॥
सुनत नीक आगें दुखु पावा। सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा॥ ४
जेहि बारीस बँधाएउ हेला। उतरेउ सेन समेत सुबेला॥
सो भनु मनुज खाब हम भाई। बचन कहहिं सब गाल फुलाई॥
तात बचन मम सुनु अति आदर। जनि मन गुनहु मोहि करि कादर॥
प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं। ऐसे नरनिकाय जग अहहीं॥ ८
बचन परमहित सुनत कठोरे। सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे॥
प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती। सीता देइ करहु पुनि प्रीती॥

दोहा। नारि पाइ फिरि जाहिं जौं तौ न बढ़ाइअ रारि।
नाहि त सन्मुख समरमहि तात करिअ हठि मारि॥९॥ १२

येह मत जौ मानहुँ प्रभु मोरा। उभय प्रकार सुजसु जग तोरा॥
सुत सन कह दसकंठ रिसाई। असि मति सठ केहिं तोहि सिखाई॥
अब ही तेँ उर संसय होई। बेनुमूल सुत भएहु घमोई॥
सुनि पितुगिरा परुष अति घोरा। चला भवन कहि बचन कठोरा॥ ४
हितमत तोहि न लागत कैसें। काल बिबस कहुँ भेषज जैसें॥
संध्या समय जानि दससीसा। भवन चलेउ निरखत भुजं बीसा॥
लंका सिखर उपर आगारा। अति बिचित्र तहँ होइ अखारा॥
बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन। लागे किंनर गुनगन गावन॥ ८
बाजहिं ताल पखाउज बीना। नृत्य करहिं अपछरा प्रबीना॥

दोहा। सुनासीर सत सरिस सो संतत करइ बिलास।
परम प्रबल रिपु सीस पर तद्यपि सोच न त्रास॥१०॥

इहाँ सुबेल सैल रघुबीरा। उतरे सेन सहित अति भीरा॥
सिखर एक उतंग अति देखी। परम रम्य सम सुभ्र बिसेषी॥
तहँ तरु किसलय सुमन सुहाए। लछिमन रचि निज हाथ डसाए॥
ता पर रुचिर मृदुल मृगछाला। तेहि आसन आसीन कृपाला॥ ४
प्रभु कृत सीस कपीस उछंगा। बाम दहिन दिसि चाप निषंगा॥
दुहुँ कर कमल सुधारत बाना। कह लंकेस मंत्र लगि काना॥
बड़भागी अंगद हनुमाना। चरन कमल चापत बिधि नाना॥

प्रभु पाछे लछिमनु बीरासन। कटि निषंग कर बान सरासन॥ ८
दोहा। एहि बिधि कृपा रूप गुन धाम रामु आसीन।
धन्य ते नर एहि ध्यान जे रहत सदा लय लीन॥
पूरुब दिसा बिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक।
कहत सबहि देखहु ससिहि मृगपति सरिस असंक॥११॥ १२
पूरुब दिसि गिरि गुहा निवासी। परम प्रताप तेज बल रासी॥
मत्त नाग तम कुंभ बिदारी। ससि केसरी गगन बन चारी॥
बिथुरे नभ मुकुताहल तारा। निसि सुंदरी केर सिंगारा॥
कह प्रभु ससि महुँ मेचकताई। कहहु काह निज निज मति भाई॥ ४
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। ससि महुँ प्रगट भूमि कै झाई॥
मारेउ राहु ससिहि कह कोई। उर महुँ परी स्यामता सोई॥
कोउ कह जब बिधि रतिमुख कीन्हा। सारभाग ससि कर हरि लीन्हा॥
छिद्र सो प्रगट इंदु उर माहीँ। तेहि मग देखिअ नभपरिछाहीँ॥ ८
प्रभु कह गरल बंधु ससि केरा। अति प्रिय निज उर दीन्ह बसेरा॥
बिषसंजुत करनिकर पसारी। जारत बिरहवंत नर नारी॥

। दोहा।

कह हनुमंत सुनहु प्रभु ससि तुम्हार प्रिय दास।
तव मूरति बिधु उर बसति सोइ स्यामता अभास॥ १२
पवनतनय के बचन सुनि बिहसे रामु सुजान।
दछिन दिसि अवलोकि प्रभु बोले कृपानिधान॥१२॥
देखु बिभीषन दछिन आसा। घनघमंड दामिनीबिलासा॥
मधुर मधुर गरजै घन घोरा। होइ बृष्टि जनि उपल कठोरा॥
कहत बिभीषनु सुनहु कृपाला। होइ न तड़ित न बारिदमाला॥
लंका सिखर उपर आगारा। तहँ दसकंधर देख अखारा॥ ४
छत्र मेघडंबर सिर धारी। सोइ जनु जलदघटा अति कारी॥
मंदोदरी श्रवन ताटंका। सोइ प्रभु जनु दामिनीदमंका॥
बाजहिँ ताल मृदंग अनूपा। सोइ रव मधुर सुनहुँ सुरभूपा॥
प्रभु मुसुकान समुझि अभिमाना। चाप चढ़ाइ बान संधाना॥ ८

दोहा। छत्र मुकुट ताटंक तब हते एकहीं बान।
सब कें देखत महि परे मरमु न कोऊ जान॥
अस कौतुक करि रामसर प्रबिसेउ आइ निषंग।
रावनसभा ससंक सब देखि महा रसभंग॥१३॥ १२

कंप न भूमि न मरुत बिसेषा। अस्त्र सस्त्र कछु नयन न देखा॥
सोचहिं सब निज हृदय मझारी। असगुन भएउ भयंकर भारी॥
दसमुख देखि सभा भय पाई। बिहसि बचन कह जुगुति बनाई॥
सिरौ गिरें संतत सुभ जाही। मुकुट परें कस असगुन ताही॥ ४
सयन करहु निज निज गृह जाई। गवने भवन सकल सिर नाई॥
मंदोदरी सोच उर बसेऊ। जब तें श्रवनपूर महि खसेऊ॥
सजल नयन कह जुग कर जोरी। सुनहु प्रानपति बिनती मोरी॥
कंत रामबिरोध परिहरहू। जानि मनुज जनि हठ मन धरहू॥ ८

दोहा। बिस्वरूप रघुबंसमनि करहु बचन बिस्वासु।
लोककल्पना बेद कर अंग अंग प्रति जासु॥१४॥

पद पाताल सीस अजधामा। अपर लोक अँग अँग बिश्रामा॥
भृकुटिबिलास भयंकर काला। नयन दिवाकर कच घनमाला॥
जासु घ्रान अस्विनीकुमारा। निसि अरु दिवस निमेष अपारा॥
श्रवन दिसा दस बेद बखानी। मारुत स्वास निगम निज बानी॥ ४
अधर लोभ जम दसन कराला। माया हास बाहु दिगपाला॥
आनन अनल अंबुपति जीहा। उतपति पालन प्रलय समीहा॥
रोमराजि अष्टादस भारा। अस्थि सैल सरिता नसजारा॥
उदर उदधि अधगो जातना। जगमय प्रभु का बहु कल्पना॥ ८

दोहा। अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान।
मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान॥
अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन बयरु बिहाइ।
प्रीति करहु रघुबीरपद मम अहिवात न जाइ॥१५॥ १२

बिहसा नारिबचन सुनि काना। अहो मोहमहिमा बलवाना॥
नारिसुभाउ सत्य कबि कहहीं। अवगुन आठ सदा उर रहहीं॥

साहस अनृत चपलता माया। भय अविवेक असौच अदाया॥
रिपु कर रूप सकल तैं गावा। अति बिसाल भय मोहि सुनावा॥ ४
सो सबु प्रिया सहज बस मोरें। समुझि परा प्रसाद अब तोरें॥
जानिउँ प्रिया तोरि चतुराई। एहि बिधि कहेहु मोरि प्रभुताई॥
तव बतकही गूढ़ मृगलोचनि। समुझत सुखद सुनत भयमोचनि॥
मंदोदरि मन महुँ अस ठएऊ। पिअहि कालबस मतिभ्रम भएऊ॥ ८
दोहा। एहि बिधि करत बिनोद बहु प्रात प्रगट दसकंध।
सहज असंक लंकपति सभा गएउ मद अंध॥
सोरठा। फूलइ फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद।
मूरुख हृदय न चेत जौ गुर मिलहिं बिरंचि सत॥१६॥ १२
इहाँ प्रात जागे रघुराई। पूछा मत सब सचिव बोलाई॥
कहहु बेगि का करिअ उपाई। जामवंत कह पद सिरु नाई॥
सुनु सर्बग्य सकल उर बासी। बुधि बल तेज धर्म गुन रासी॥
मंत्र कहउँ निज मति अनुसारा। दूत पठाइअ बालिकुमारा॥ ४
नीक मंत्र सब कें मन माना। अंगद सन कह कृपानिधाना॥
बालितनय बुधि बल गुन धामा। लंका जाहु तात मम कामा॥
बहुत बुझाइ तुम्हहि का कहऊँ। परम चतुर मैं जानत अहऊँ॥
काजु हमार तासु हित होई। रिपु सन करेहु बतकही सोई॥ ८
सोरठा। प्रभु अग्या धरि सीस चरन बंदि अंगद उठेउ।
सोइ गुनसागर ईस रामकृपा जा पर करहु॥
स्वयंसिद्ध सब काज नाथ मोहि आदरु दिएउ।
अस बिचारि जुबराज तन पुलकित हरषित हिएउ॥१७॥ १२
बंदि चरन उर धरि प्रभुताई। अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई॥
प्रभुप्रताप उर सहज असंका। रनबाँकुरा बालिसुत बंका॥
पुर पैठत रावन कर बेटा। खेलत रहा सो होइ गइ भेटा॥
बातहि बात करष बढ़ि आई। जुगल अतुलबल पुनि तरुनाई॥ ४
तेहि अंगद कहुँ लात उठाई। गहि पद पटकेउ भूमि भवाई॥
निसिचरनिकर देखि भट भारी। जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी॥

एक एक सन मरमु न कहहीं। समुझि तासु वध चुप करि रहहीं॥
भएउ कोलाहलु नगर मझारी। आवा कपि लंका जेहि जारी॥
अब धौं कहा करिहि करतारा। अति सभीत सब करहिं बिचारा॥
बिनु पूछें मगु देहिं देखाई। जेहि बिलोक सोइ जाइ सुखाई॥
दोहा। गएउ सभा दरबार तब सुमिरि रामपद कंज।
सिंघठवनि इत उत चितव धीर बीर बलपुंज॥१८॥
तुरत निसाचर एक पठावा। समाचार रावनहि जनावा॥
सुनत बिहसि बोला दससीसा। आनहु बोलि कहाँ कर कीसा॥
आएसु पाइ दूत बहु धाए। कपिकुंजरहि बोलि लै आए॥
अंगद दीख दसानन बैसा। सहित प्रान कज्जल गिरि जैसा॥
भुजा बिटप सिर सृंग समाना। रोमावली लता जनु नाना॥
मुख नासिका नयन अरु काना। गिरि कंदरा खोह अनुमाना॥
गएउ सभाँ मन नेकु न मुरा। बालितनय अतिबल बाँकुरा॥
उठे सभासद कपि कहुँ देखी। रावन उर भा क्रोध बिसेषी॥
दोहा। जथा मत्त गजजूथ महुँ पंचानन चलि जाइ।
रामप्रतापु सुमिरि मन बैठ सभा सिरु नाइ॥१९॥
कह दसकंध कवन तैं बंदर। मैं रघुबीरदूत दसकंधर॥
मम जनकहि तोहि रही मिताई। तव हित कारन आएउँ भाई॥
उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती। सिव बिरंचि पूजेहु बहु भाँती॥
बर पाएहु कीन्हेहु सब काजा। जीतेहु. लोकपाल सब राजा॥
नृप अभिमान मोहबस किंबा। हरि आनिहु सीता जगदंबा॥
अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा। सब अपराध छमिहिं प्रभु तोरा॥
दसन गहहु तृन कंठ कुठारी। परिजन सहित संग निज नारी॥
सादर जनकसुता करि आगे। एहि बिधि चलहु सकल भय त्यागे॥
दोहा। प्रनतपाल रघुबंसमनि त्राहि त्राहि अब मोहि।
आरत गिरा सुनत प्रभु अभय करैगो तोहि॥२०॥
रे कपिपोत बोलु संभारी। मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी॥
कहु निज नाम जनक कर भाई। केहि नातें मानिएँ मिताई॥

अंगद नाम बालि कर बेटा । ता सों कबहुँ भई ही भेटा ॥
अंगदबचन सुनत सकुचाना । रहा बालि बानर मैं जाना ॥
अंगद तहीं बालि कर बालक । उपजेहु बंस अनल कुलघालक ॥
गर्भ न गएउ व्यर्थ तुम्ह जाएहु । निज मुख तापसदूत कहाएहु ॥
अब कहु कुसल बालि कहँ अहई । बिहँसि बचन तब अंगद कहई ॥
दिन दस गए बालि पहिं जाई । बूझेहु कुसल सखा उर लाई ॥
रामबिरोध कुसल जसि होई । सो सब तोहि सुनाइहि सोई ॥
सुनु सठ भेद होइ मन ता कें । श्रीरघुबीर हृदय नहि जा कें ॥

दोहा । हम कुलघालक सत्य तुम्ह कुलपालक दससीस ।
अंधौ बधिर न अस कहहिं नयन कान तव बीस ॥२१॥

सिव बिरंचि सुर मुनि समुदाई । चाहत जासु चरनसेवकाई ॥
तासु दूत होइ हम कुल बोरा । अइसिहु मति उर बिहर न तोरा ॥
सुनि कठोर बानी कपि केरी । कहत दसानन नयन तरेरी ॥
खल तव कठिन बचन सब सहऊँ । नीति धर्म मैं जानत अहऊँ ॥
कह कपि धर्मसीलता तोरी । हमहुँ सुनी कृत परत्रिय चोरी ॥
देखी नयन दूतरखवारी । बूड़ि न मरहु धर्म ब्रत धारी ॥
कान नाक बिनु भगिनि निहारी । छमा कीन्हि तुम्ह धर्म बिचारी ॥
धर्मसीलता तव जग जागी । पावा दरसु महूँ बड़भागी ॥

दोहा । जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि सठ बिलोकु मम बाहु ।
लोकपाल बल बिपुल ससि ग्रसन हेतु सब राहु ॥
पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन्हि पर करि बास ।
सोभत भएउ मराल इव संभु सहित कैलास ॥२२॥

तुम्हरे कटक माझ सुनु अंगद । मो सन भिरिहि कवन जोधा बद ॥
तव प्रभु नारिबिरह बलहीना । अनुज तासु दुख दुखी मलीना ॥
तुम्ह सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ । अनुज हमार भीरु अति सोऊ ॥
जामवंत मंत्री अति बूढ़ा । सो कि होइ अब समरारूढ़ा ॥
सिल्पिकर्म जानहिं नल नीला । है कपि एक महा बलसीला ॥
आवा प्रथम नगरु जेहि जारा । सुनत बचन कह बालिकुमारा ॥

सत्य बचन कहु निसिचरनाहा। साचेहु कीस कीन्ह पुरदाहा॥
रावननगरु अल्प कपि दहई। सुनि अस बचन सत्य को कहई॥
जो अति सुभट सराहेहु रावन। सो सुग्रीव केर लघु धावन॥
चलै बहुत सो बीर न होई। पठवा खबरि लेन हम सोई॥

दोहा। सत्य नगरु कपि जारेउ बिनु प्रभु आएसु पाइ।
फिरि न गएउ सुग्रीव पहि तेहि भय रहा लुकाइ॥
सत्य कहहि दसकंठ सब मोहि न सुनि कछु कोह।
कोउ न हमारें कटक अस तो सन लरत जो सोह॥
प्रीति बिरोध समान सन करिअ नीति असि आहि।
जौं मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहै कोउ ताहि॥
जद्यपि लघुता राम कहुँ तोहि बधें बड़ दोष।
तदपि कठिन दसकंठ सुनु छत्रजाति कर रोष॥
बक्र उक्ति धनु बचन सर हृदय दहेउ रिपु कीस।
प्रतिउत्तर सड़सिन्ह मनहुँ काढ़त भट दससीस॥
हसि बोलेउ दसमौलि तब कपि कर बड़ गुन एक।
जो प्रतिपालै तासु हित करै उपाय अनेक॥२३॥

धन्य कीस जो निज प्रभु काजा। जहँ तहँ नाचै परिहरि लाजा॥
नाचि कूदि करि लोग रिझाई। पति हित करै धर्मनिपुनाई॥
अंगद स्वामिभक्त तव जाती। प्रभुगुन कस न कहसि एहि भाँती॥
मैं गुनगाहक परम सुजाना। तव कटु रटनि करौं नहि काना॥
कह कपि तव गुनगाहकताई। सत्य पवनसुत मोहि सुनाई॥
बन बिधंसि सुत बधि पुरु जारा। तदपि न तेहिं कछु कृत अपकारा॥
सोइ बिचारि तव प्रकृति सुहाई। दसकंधर मैं कीन्हि ढिठाई॥
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा। तुम्हरें लाज न रोष न माखा॥
जौं असि मति पितु खाएहु कीसा। कहि अस बचन हसा दससीसा॥
पितहि खाइ खातेउँ पुनि तोही। अबहीं समुझि परा कछु मोही॥
बालि बिमल जस भाजनु जानी। हतौं न तोहि अधम अभिमानी॥
कहु रावन रावन जग केते। मैं निज श्रवन सुने सुनु जेते॥

बलिहि जितन एकु गएउ पताला । राखेउ बाँधि सिसुन्ह हयसाला ॥
खेलहिँ बालक मारहिँ जाई । दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई ॥
एकु बहोरि सहसभुज देखा । धाइ धरा जिमि जंतु बिसेषा ॥
कौतुक लागि भवन लै आवा । सो पुलस्ति मुनि जाइ छोड़ावा ॥ १६

दोहा । एकु कहत मोहि सकुच अति रहा बालि कीँ काँख ।
इन्ह महुँ रावन तैँ कवन सत्य बदहि तजि माख ॥२४॥

सुनु सठ सोइ रावनु बलसीला । हरगिरि जान जासु भुजलीला ॥
जान उमापति जासु सुराई । पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढ़ाई ॥
सिर सरोज निज करन्हि उतारी । पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी ॥
भुजबिक्रम जानहिँ दिगपाला । सठ अजहूँ जिन्ह कैँ उर साला ॥ ४
जानहिँ दिग्गज उरकठिनाई । जब जब भिरौँ जाइ बरिआई ॥
जिन्ह के दसन कराल न फूटे । उर लागत मूलक इव टूटे ॥
जासु चलत डोलति इमि धरनी । चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी ॥
सोइ रावनु जगबिदित प्रतापी । सुनेहि न श्रवन अलीकप्रलापी ॥ ८

दोहा । तेहि रावन कहँ लघु कहसि नर कर करसि बखान ।
रे कपि बर्बर खर्ब खल अब जाना तव ज्ञान ॥२५॥

सुनि अंगदु सकोप कह बानी । बोलु सँभारि अधम अभिमानी ॥
सहसबाहु भुज गहन अपारा । दहन अनल सम जासु कुठारा ॥
जासु परसु सागर खर धारा । बूड़े नृप अगनित बहु बारा ॥
तासु गर्ब जेहि देखत भागा । सो नर क्यौँ दससीस अभागा ॥ ४
रामु मनुज कस रे सठ बंगा । धन्वी कामु नदी पुनि गंगा ॥
पसु सुरधेनु कल्पतरु रूखा । अन्न दान अरु रस पीयूषा ॥
बैनतेय खग अहि सहसानन । चिंतामनि पुनि उपल दसानन ॥
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा । लाभु कि रघुपतिभगति अकुंठा ॥ ८

दोहा । सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि ।
कस रे सठ हनुमान कपि गएउ जो तव सुत मारि ॥२६॥

सुनु रावन परिहरि चतुराई । भजसि न कृपासिंधु रघुराई ॥
जौ खल भएसि राम कर द्रोही । ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥

मूढ़ वृथा जनि मारसि गाला। रामबयर अस होइहि हाला॥
तव सिर निकर कपिन्ह कँ आगँ। परिहहिँ धरनि रामसर लागँ॥
ते तव सिर कंदुक सम नाना। खेलिहहिँ भालु कीस चौगाना॥
जबहिँ समर कोपिहि रघुनायक। छुटिहहिँ अति कराल बहु सायक॥
तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा। अस बिचारि भजु राम उदारा॥
सुनत बचन रावनु परजरा। जरत महानल जनु घृतु परा॥

दोहा। कुंभकरन अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध सक्रारि।
मोर पराक्रम नहि सुनेहि जितेउँ चराचर झारि॥२७॥

सठ साखामृग जोरि सहाई। बाँधा सिंधु इहै प्रभुताई॥
नाघहिँ खग अनेक बारीसा। सूर न होहिँ ते सुनु सब कीसा॥
मम भुज सागर बल जल पूरा। जहँ बूड़े बहु सुर नर सूरा॥
बीस पयोधि अगाध अपारा। को अस बीर जो पाइहि पारा॥
दिगपालन्ह मैं नीरु भरावा। भूप सुजसु खल मोहि सुनावा॥
जौ पै समर सुभट तव नाथा। पुनि पुनि कहसि जासु गुनगाथा॥
तौ बसीठ पठवत केहि काजा। रिपु सन प्रीति करत नहि लाजा॥
हरगिरि मथन निरखु मम बाहू। पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सराहू॥

दोहा। सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहिं सीस।
हुने अनल अति हरष बहु बार साखि गौरीस॥२८॥

जरत बिलोकेउँ जबहि कपाला। बिधि के लिखे अंक निज भाला॥
नर कँ कर आपन बध बाची। हसेउँ जानि बिधिगिरा असाची॥
सोउ मन समुझि त्रास नहि मोरँ। लिखा बिरंचि जरठ मति भोरँ॥
आन बीर बल सठ मम आगँ। पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागँ॥
कह अंगद सलज्ज जग माहीँ। रावन तोहि समान कोउ नाहीँ॥
लाजवंत तव सहज सुभाऊ। निज मुख निज गुन कहसि न काऊ॥
सिर अरु सैल कथा चित रही। ता तँ बार बीस तँ कही॥
सो भुजबल राखेहु उर घाली। जीतेहु सहसबाहु बलि बाली॥
सुनु मतिमंद देहि अब पूरा। काटँ सीस कि होइअ सूरा॥
इंद्रजालि कहुँ कहिअ न बीरा। काटै निज कर सकल सरीरा॥

दोहा। जरहिं पतंग मोहवस भार वहहिं खरवृंद।
ते नहि सूर कहावहिं समुझि देखु मतिमंद ॥२९॥ १२

अब जनि वतवढ़ाव खल करही। सुनु मम वचन मान परिहरही ॥
दसमुख मैं न बसीठीं आएउँ। अस विचारि रघुवीर पठाएउँ ॥
बार बार अस कहइ कृपाला। नहि गजारिजसु वधें सृकाला ॥
मन महुँ समुझि बचन प्रभु केरे। सहेउँ कठोर वचन सठ तेरे ॥ ४
नाहि त करि मुखभंजन तोरा। लै जातेउँ सीतहि बरजोरा ॥
जानेउँ तव बलु अधम सुरारी। सूनें हरि आनिहि परनारी ॥
तैं निसिचरपति गर्व बहूता। मैं रघुपतिसेवक कर दूता ॥
जौ न राम अपमानहि डरऊँ। तोहि देखत अस कौतुक करऊँ ॥ ८

दोहा। तोहि पटकि महि सेन हति चौपट करि तव गाउँ।
तव जुवतिन्ह समेत सठ जनकसुतहि लै जाउँ ॥३०॥

जौ अस करौं तदपि न वड़ाई। मुएहि वधें नहि कछु मनुसाई ॥
कौल कामबस कृपन विमूढ़ा। अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ॥
सदा रोगवस संतत क्रोधी। बिष्नुबिमुख श्रुति संत बिरोधी ॥
तनुपोषक निंदक अघखानी। जीवत सव सम चौदह प्रानी ॥ ४
अस बिचारि खल वधौं न तोही। अब जनि रिस उपजावसि मोही ॥
सुनि सकोप कह निसिचरनाथा। अधर दसन दसि मीजत हाथा ॥
रे कपि अधम मरन अब चहसी। छोटें बदन बात बड़ि कहसी ॥
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जा कें। बल प्रताप बुधि तेज न ता कें ॥ ८

दोहा। अगुन अमान जानि तेहि दीन्ह पिता बनवास।
सो दुखु अरु जुवतीबिरहु पुनि निसि दिनु मम त्रास ॥
जिन्ह के बल कर गर्ब तोहि अैसे मनुज अनेक।
खाहिं निसाचर दिवस निसि मूढ़ समुझु तजि टेक ॥३१॥ १२

जब तेहि कीन्हि राम कै निंदा। क्रोधवंत अति भएउ कपिंदा ॥
हरि हर निंदा सुनै जो काना। होइ पाप गोघात समाना ॥
कटकटान कपिकुंजर भारी। दुहुँ भुजदंड तमकि महि मारी ॥
डोलत धरनि सभासद खसे। चले भाजि भय मारुत ग्रसे ॥ ४

गिरत सँभारि उठा दसकंधर । भूतल परे मुकुट अति सुंदर ।।
कछु तेहि लै निज सिरन्हि सँवारे । कछु अंगद प्रभु पास पबारे ।।
आवत मुकुट देखि कपि भागे । दिनहीं लूक परन बिधि लागे ।।
की रावन करि कोपु चलाए । कुलिस चारि आवत अति धाए ।। ८
कह प्रभु हसि जनि हृदय डेराहू । लूक न असनि केतु नहि राहू ।।
ए किरीट दसकंधर केरे । आवत बालितनय के प्रेरे ।।
दोहा । तरकि पवनसुत कर गहेउ आनि धरे प्रभु पास ।
कौतुक देखहिं भालु कपि दिनकर सरिस प्रकास ।। १२
उहाँ सकोप दसानन सब सन कहत रिसाइ ।
धरहु कपिहि धरि मारहु सुनि अंगद मुसुकाइ ।।३२।।
एहि बिधि बेगि सुभट सब धावहु । खाहु भालु कपि जहँ जहँ पावहु ।।
मर्कटहीन करहु महि जाई । जिअत धरहु तापस द्वौ भाई ।।
पुनि सकोप बोलेउ जुवराजा । गाल बजावत तोहि न लाजा ।।
मरु गर काटि निलज कुलघाती । बल बिलोकि बिहरति नहि छाती ।। ४
रे त्रियचोर कुमारगगामी । खल मलरासि मंदमति कामी ।।
सन्यपात जल्पसि दुर्बादा । भएसि कालबस खल मनुजादा ।।
या को फलु पावहिगो आगें । बानर भालु चपेटन्हि लागें ।।
राम मनुज बोलत असि बानी । गिरहिं न तव रसना अभिमानी ।। ८
गिरिहहिं रसना संसय नाहीं । सिरन्हि समेत समरमहि माहीं ।।
सोरठा । सो नर क्यों दसकंध बालि बध्यो जेहि एक सर ।
बीसहु लोचन अंध धिग तव जन्म कुजाति जड़ ।।
तव सोनित की प्यास तृषित रामसायक निकर । १२
तजौं तोहि तेहि त्रास कटु जल्पक निसिचर अधम ।।३३।।
मैं तव दसन तोरिबे लायक । आएसु मोहि न दीन्ह रघुनायक ।।
असि रिस होति दसौ मुख तोरौं । लंका गहि समुद्र महँ बोरौं ।।
गूलरिफल समान तव लंका । बसहु मध्य तुम्ह जंतु असंका ।।
मैं बानर फल खात न बारा । आएसु दीन्ह न राम उदारा ।। ४
जुगुति सुनत रावन मुसुकाई । मूढ़ सिखिहि कहँ बहुत झुठाई ।।

वालि न कबहुँ गाल अस मारा । मिलि तपसिन्ह तैं भएसि लबारा ॥
साँचेहुँ मैं लबार भुजबीहा । जौं न उपारिउँ तव दस जीहा ॥
समुझि रामप्रताप कपि कोपा । सभा माझ पन करि पद रोपा ॥
जौं मम चरन सकसि सठ टारी । फिरहिँ रामु सीता मैं हारी ॥
सुनहु सुभट सब कह दससीसा । पद गहि धरनि पछारहु कीसा ॥
इंद्रजीत आदिक बलवाना । हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना ॥
झपटहिँ करि बल बिपुल उपाई । पद न टरै बैठहिँ सिरु नाई ॥
पुनि उठि झपटहिँ सुर आराती । टरै न कीसचरन एहिँ भाती ॥
पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी । मोह बिटप नहि सकहिँ उपारी ॥

दोहा । कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ ।
झपटहिँ टरै न कपिचरन पुनि बैठहिँ सिर नाइ ॥
भूमि न छाड़त कपिचरन देखत रिपुमद भाग ।
कोटि बिघ्न तैं संत कर मन जिमि नीति न त्याग ॥३४॥

कपिबलु देखि सकल हिय हारे । उठा आपु कपि के परचारे ॥
गहत चरन कह बालिकुमारा । मम पद गहेँ न तोर उबारा ॥
गहसि न रामचरन सठ जाई । सुनत फिरा मन अति सकुचाई ॥
भएउ तेजहत श्री सब गई । मध्य दिवस जिमि ससि सोहई ॥
सिंघासन बैठेउ सिर नाई । मानहु संपति सकल गवाई ॥
जगदातमा प्रानपति रामा । तासु बिमुख किमि लह बिश्रामा ॥
उमा राम की भृकुटि बिलासा । होइ बिस्व पुनि पावै नासा ॥
तृन तैं कुलिस कुलिस तृन करई । तासु दूत पन कहु किमि टरई ॥
पुनि कपि कही नीति बिधि नाना । मान न ताहि कालु निअराना ॥
रिपुमद मथि प्रभु सुजसु सुनायो । यह कहि चल्यो बालि नृप जायो ॥
हतौँ न खेत खेलाइ खेलाई । तोहि अबहि का करौँ बड़ाई ॥
प्रथमहिँ तासु तनय कपि मारा । सो सुनि रावनु भएउ दुखारा ॥
जातुधान अंगदपन देखी । भयब्याकुल सब भए बिसेषी ॥

दोहा । रिपुबल धरषि हरषि कपि बालितनय बलपुंज ।
पुलक सरीर नयन जल गहे रामपद कंज ॥

साँझ जानि दसकंधर भवन गएउ बिलखाइ। १६
मंदोदरी रावनहि बहुरि कहा समुझाइ ॥३५॥

कंत समुझि मन तजहु कुमतिही। सोह न समर तुम्हहि रघुपतिही ॥
रामानुज लघु रेख खचाई। सोउ नहि नाघेहु असि मनुसाई ॥
पिय तुम्ह ताहि जितब संग्रामा। जा के दूत केर यह कामा ॥
कौतुक सिंधु नाघि तव लंका। आएउ कपिकेहरी असंका ॥ ४
रखवारे हति बिपिन उजारा। देखत तोहि अच्छ तेहि मारा ॥
जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा। कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा ॥
अब पति मृषा गाल जनि मारहु। मोर कहा कछु हृदय बिचारहु ॥
पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु। अग जग नाथ अतुलबल जानहु ॥ ८
बानप्रताप जान मारीचा। तासु कहा नहि मानेहि नीचा ॥
जनकसभा अगनित भूपाला। रहे तुम्हौ बल अतुल बिसाला ॥
भंजि धनुष जानकी बिआही। तब संग्राम जितेहु किन ताही ॥
सुरपतिसुत जानै बल थोरा। राखा जिअत आँखि गहि फोरा ॥ १२
सूपनखा कै गति तुम्ह देखी। तदपि हृदय नहि लाज बिसेषी ॥

दोहा। बधि बिराध खर दूषनहि लीलां हत्यो कबंध।
बालि एक सर मारयो तेहि जानहु दसकंध ॥३६॥

जेहि जलनाथु बँधाएउ हेला। उतरे प्रभु दल सहित सुबेला ॥
कारुनीक दिनकर कुल केतू। दूत पठाएउ तव हित हेतू ॥
सभा माझ जेहि तव बल मथा। करिबरूथ महु मृगपति जथा ॥
अंगद हनुमत अनुचर जा के। रनबाँकुरे बीर अति बाँके ॥ ४
तेहि कहुँ पिय पुनि पुनि नर कहहू। मुधा मान ममता मद बहहू ॥
अहह कंत कृत रामबिरोधा। काल बिबस मन उपज न बोधा ॥
कालु दंड गहि काहु न मारा। हरै धर्म बल बुद्धि बिचारा ॥
निकट कालु जेहि आवत साईं। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं ॥ ८

दोहा। दुइ सुत मारेउ दहेउ पुर अजहुँ पूर पिय देहु।
कृपासिंधु रघुनाथ भजि नाथ बिमल जसु लेहु ॥३७॥

नारिबचन सुनि बिसिख समाना। सभा गएउ उठि होत बिहाना ॥

बैठ जाइ सिंघासन फूली । अति अभिमान त्रास सब भूली ॥
इहाँ राम अंगदहि बोलावा । आइ चरन पंकज सिरु नावा ॥
अति आदर समीप बैठारी । बोले बिहँसि कृपाल खरारी ॥ ४
बालितनय कौतुक अति मोही । तात सत्य कहु पूछउँ तोही ॥
रावनु जातुधान कुल टीका । भुजबल अतुल जासु जग लीका ॥
तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाए । कहहु तात कवनी बिधि पाए ॥
सुनु सर्बज्ञ प्रनत सुखकारी । मुकुट न होहिँ भूपगुन चारी ॥ ८
साम दान अरु दंड बिभेदा । नृप उर बसहिँ नाथ कह बेदा ॥
नीति धर्म के चरन सुहाए । अस जिअ जानि नाथ पहि आए ॥

दोहा । धर्महीन प्रभुपद बिमुख काल बिबस दससीस ।
तेहि परिहरि गुन आए सुनहु कोसलाधीस ॥ १२
परम चतुरता श्रवन सुनि बिहँसे रामु उदार ।
समाचार पुनि सब कहे गढ़ के बालिकुमार ॥३८॥

रिपु के समाचार जब पाए । राम सचिव सब निकट बोलाए ॥
लंका बाँके चारि दुआरा । केहि बिधि लागिअ करहु बिचारा ॥
तब कपीस रिछेस बिभीषन । सुमिरि हृदय दिनकर कुल भूषन ॥
करि बिचार तिन्ह मंत्र दृढ़ावा । चारि अनी कपिकटकु बनावा ॥ ४
जथाजोगु सेनापति कीन्हे । जूथप सकल बोलि तब लीन्हे ॥
प्रभुप्रतापु कहि सब समुझाए । सुनि कपि सिंघनाद करि धाए ॥
हरषित रामचरन सिर नावहिँ । गहि गिरि सिखर बीर सब धावहिँ ॥
गर्जहिँ तर्जहिँ भालु कपीसा । जय रघुबीर कोसलाधीसा ॥ ८
जानत परम दुर्ग अति लंका । प्रभुप्रताप कपि चले असंका ॥
घटाटोप करि चहुँ दिसि घेरी । मुखहिँ निसान बजावहिँ भेरी ॥

दोहा । जयति राम जय लछिमन जय कपीस सुग्रीव ।
गर्जहिँ सिंघनाद कपि भालु महा बलसीव ॥३९॥ १२

लंका भएउ कोलाहल भारी । सुना दसानन अति अहँकारी ॥
देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई । बिहँसि निसाचरसेन बोलाई ॥
आए कीस काल के प्रेरे । छुधावंत सब निसिचर मेरे ॥

अस कहि अट्टहास सठ कीन्हा । गृह बैठेँ अहार बिधि दीन्हा ॥ ४
सुभट सकल चारिहु दिसि जाहू । धरि धरि भालु कीस सब खाहू ॥
उमा रावनहि अस अभिमाना । जिमि टिट्टिभ खग सूत उताना ॥
चले निसाचर आएसु माँगी । गहि कर भिंडिपाल बर साँगी ॥
तोमर मुद्गर परसु प्रचंडा । सूल कृपान परिघ गिरिखंडा ॥ ८
जिमि अरुनोपल निकर निहारी । धावहिँ सठ खग माँस अहारी ॥
चोँचभंग दुख तिन्हहि न सूझा । तिमि धाए मनुजाद अबूझा ॥
दोहा । नानायुध सर चाप धर जातुधान बलबीर ।
कोटकगूरन्हि चढ़ि गए कोटि कोटि रनधीर ॥४०॥ १२
कोटकगूरन्हि सोहहिँ कैसे । मेरु के सृंगन्हि जनु घन बैसे ॥
बाजहिँ ढोल निसान जुझाऊ । सुनि धुनि होइ भटन्हि मन चाऊ ॥
बाजहिँ भेरि नफीरि अपारा । सुनि कादर उर जाहिँ दरारा ॥
देखेन्हि जाइ कपिन्ह के ठट्टा । अति बिसाल तनु भालु सुभट्टा ॥ ४
धावहिँ गनहिँ न अवघट घाटा । पर्बत फोरि करहिँ गहि बाटा ॥
कटकटाहिँ कोटिन्ह भट गर्जहिँ । दसन ओठ काटहिँ अति तर्जहिँ ॥
उत रावन इत राम दोहाई । जयति जयति जय परी लराई ॥
निसिचर सिखरसमूह ढहावहिँ । कूदि धरहिँ कपि फेरि चलावहिँ ॥ ८
छंद । धरि कुधरखंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीँ ।
झपटहिँ चरन गहि पटकि महि भजि चलत बहुरि पचारहीँ ।
अति तरल तरुन प्रताप तर्पहिँ तमकि गढ़ चढ़ि चढ़ि गए ।
कपि भालु चढ़ि मंदिरन्ह जहँ तहँ रामजसु गावत भए ॥ १२
दोहा । एकु एक निसिचर गहि पुनि कपि चले पराइ ।
ऊपर आपु हेठ भट गिरहिँ धरनि पर आइ ॥४१॥
रामप्रताप प्रबल कपिजूथा । मर्दहिँ निसिचर सुभट बरूथा ॥
चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर । जय रघुबीर प्रताप दिवाकर ॥
चले निसाचरनिकर पराई । प्रबल पवन जिमि घनसमुदाई ॥
हाहाकार भएउ पुर भारी । रोवहिँ बालक आतुर नारी ॥ ४
सब मिलि देहिँ रावनहि गारी । राजु करत एहि मृत्यु हकारी ॥

४५

निज दल बिचल सुनी तेहि काना। फेरि सुभट लंकेसु रिसाना॥
जो रनबिमुख फिरा मैं जाना। सो मैं हतब कराल कृपाना॥
सर्बसु खाइ भोग करि नाना। समरभूमि भये बल्लभ प्राना॥
उग्र बचन सुनि सकल डेराने। चले क्रोध करि सुभट लजाने॥
सन्मुख मरन बीर कै सोभा। तब तिन्ह तजा प्रान कर लोभा॥

दोहा। बहु आयुध धर सुभट सब भिरहिं पचारि पचारि।
ब्याकुल किये भालु कपि परिघ त्रिसूलन्हि मारि॥४२॥

भय आतुर कपि भागन लागे। जद्यपि उमा जीतिहहिं आगे॥
कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता। कहँ नल नील दुबिद बलवंता॥
निज दल बिकल सुना हनुमाना। पच्छिम द्वार रहा बलवाना॥
मेघनादु तहँ करै लराई। टूट न द्वार परम कठिनाई॥
पवनतनय मन भा अति क्रोधा। गर्जेउ प्रबल काल सम जोधा॥
कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा। गहि गिरि मेघनाद कहुँ धावा॥
भंजेउ रथ सारथी निपाता। ताहि हृदय महुँ मारेसि लाता॥
दुसरें सूत बिकल तेहि जाना। स्यंदन घालि तुरत गृह आना॥

दोहा। अंगद सुना पवनसुत गढ़ पर गएउ अकेल।
रनबाँकुरा बालिसुत तरकि चढ़ेउ कपि खेल॥४३॥

जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बानर। रामप्रतापु सुमिरि उर अंतर॥
रावनभवन चढ़े द्वौ धाई। करहिं कोसलाधीसदोहाई॥
कलस सहित गहि भवनु ढहावा। देखि निसाचरपति भय पावा॥
नारिबृंद कर पीटहिं छाती। अब दुइ कपि आए उतपाती॥
कपि लीला करि तिन्हहि डेरावहिं। रामचंद्र कर सुजसु सुनावहिं॥
पुनि कर गहि कंचन के खंभा। कहेन्हि करिअ उतपात अरंभा॥
गर्जि परे रिपुकटक मझारी। लागे मर्दइ भुजबल भारी॥
काहुहि लात चपेटन्हि केहू। भजहु न रामहि सो फलु लेहू॥

दोहा। एक एक सौं मर्दहिं तोरि चलावहिं मुंड।
रावन आगें परहिं ते जनु फूटहिं दधिकुंड॥४४॥

महा महा मुखिआ जे पावहिं। ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं॥

कहइ विभीषनु तिन्ह के नामा। देहिँ रामु तिन्हहूँ निज धामा॥
खल मनुजाद द्विजामिष भोगी। पावहिँ गति जो जाचत जोगी॥
उमा रामु मृदुचित करुनाकर। बयरभाव सुमिरत मोहि निसिचर॥ ४
देहिँ परमगति सो जिञ्अ जानी। अस कृपाल को कहहु भवानी॥
अस प्रभु सुनि न भजहिँ भ्रम त्यागी। नर मतिमंद ते परम अभागी॥
अंगद अरु हनुमंत प्रबेसा। कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेसा॥
लंका द्वौ कपि सोहहिँ कैसे। मथहिँ सिंधु दुइ मंदर जैसे॥ ८

दोहा। भुजबल रिपुदल दलमलि देखि दिवस कर अंत।
कूदे जुगल बिगतश्रम आए जहँ भगवंत॥४५॥

प्रभुपद कमल सीस तिन्ह नाए। देखि सुभट रघुपतिमन भाए॥
राम कृपा करि जुगल निहारे। भए बिगतश्रम परम सुखारे॥
गए जानि अंगद हनुमाना। फिरे भालु मर्कट भट नाना॥
जातुधान प्रदोषबल पाई। धाए करि दससीसदोहाई॥ ४
निसिचर अनी देखि कपि फिरे। जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे॥
द्वौ दल प्रबल पचारि पचारी। लरत सुभट नहि मानहिँ हारी॥
महाबीर निसिचर सब कारे। नाना बरन बलीमुख भारे॥
सबल जुगल दल समबल जोधा। कौतुक करत लरत करि क्रोधा॥ ८
प्राबिट सरद पयोद घनेरे। लरत मनहु मारुत के प्रेरे॥
अनिप अकंपन अरु अतिकाया। बिचलत सेन कीन्ह इन्ह माया॥
भएउ निमिष महँ अति अँधिआरा। बृष्टि होइ रुधिरोपल छारा॥

दोहा। देखि निबिड़ तम दसहु दिसि कपिदल भएउ खभार। १२
एकहि एकु न देखइ जहँ तहँ करहिँ पुकार॥४६॥

सकल मरमु रघुनायक जाना। लिए बोलि अंगद हनुमाना॥
समाचार सब कहि समुझाए। सुनत कोपि कपिकुंजर धाए॥
पुनि कृपाल हसि चाप चढ़ावा। पावकसायक सपदि चलावा॥
भएउ प्रकास कतहुँ तम नाहीँ। ज्ञान उदय जिमि संसय जाहीँ॥ ४
भालु बलीमुख पाइ प्रकासा। धाए हरषि बिगत श्रम त्रासा॥
हनूमान अंगद रन गाजे। हाक सुनत रजनीचर भाजे॥

भागत भट पटकहिं धरि धरनी । करहिं भालु कपि अद्भुत करनी ॥
गहि पद डारहिं सागर माहीँ । मकर उरग झष धरि धरि खाहीँ ॥ ८
दोहा । कछु मारे कछु घायल कछु गढ़ चढ़े पराइ ।
गर्जहिँ भालु बलीमुख रिपु दल बल बिचलाइ ॥४७॥
निसा जानि कपि चारिउ अनी । आए जहाँ कोसलाधनी ॥
राम कृपा करि चितवा सबही । भए बिगतश्रम बानर तबही ॥
उहाँ दसानन सचिव हकारे । सब सन कहेसि सुभट जे मारे ॥
आधा कटकु कपिन्ह संघारा । कहहु बेगि का करिअ बिचारा ॥ ४
माल्यवंत अति जरठ निसाचर । रावन मातु पिता मंत्रीबर ॥
बोला बचन नीति अति पावन । सुनहु तात कछु मोर सिखावन ॥
जब तेँ तुम्ह सीता हरि आनी । असगुन होहिँ न जाहिँ बखानी ॥
बेद पुरान जासु जसु गायो । रामबिमुख काहुँ न सुखु पायो ॥ ८
दोहा । हिरन्याच्छ भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान ।
जेहि मारे सोइ अवतरेउ कृपासिंधु भगवान ॥
कालरूप खल बन दहन गुनागार घनबोध ।
सिव बिरंचि जेहि सेवहिँ ता सोँ कवन बिरोध ॥४८॥ १२
परिहरि बयरु देहु बैदेही । भजहु कृपानिधि परम सनेही ॥
ता के बचन बान सम लागे । करिआ मुख करि जाहि अभागे ॥
बूढ़ भएसि न त मरतेउँ तोही । अब जनि नयन देखावसि मोही ॥
तेहि अपने मन अस अनुमाना । बध्यो चहत एहि कृपानिधाना ॥ ४
सो उठि गएउ कहत दुर्बादा । तब सकोप बोलेउ घननादा ॥
कौतुक प्रात देखिअहु मोरा । करिहौँ बहुत कहौँ का थोरा ॥
सुनि सुतबचन भरोसा आवा । प्रीति समेत अंक बैठावा ॥
करत बिचार भएउ भिनुसारा । लागे कपि पुनि चहूँ दुआरा ॥ ८
कोपि कपिन्ह दुर्घट गढ़ु घेरा । नगर कोलाहलु भएउ घनेरा ॥
बिबिधायुध धरि निसिचर धाए । गढ़ तेँ पर्बतसिखर ढहाए ॥
छंद । ढाहे महीधरसिखर कोटिन्ह बिबिध बिधि गोला चले ।
घहरात जिमि पबिपात गर्जत जनु प्रलय के बादले । १२

मर्कट बिकट भट जुटत कटत न लटत तन जर्जर भए।
गहि सैल तेहि गढ़ पर चलावहिं जहँ सो तहँ निसिचर हए॥

दोहा। मेघनाद सुनि श्रवन अस गढ़ु पुनि छेका आइ।
उतर्यो बीरु दुर्ग तेँ सन्मुख चल्यो बजाइ॥४८॥ १६

कहँ कोसलाधीस द्वौ भ्राता। धन्वी सकल लोक बिख्याता॥
कहँ नल नील दुबिद सुग्रीवा। अंगद हनूमंत बलसींवा॥
कहाँ बिभीषनु भ्राताद्रोही। आजु सठहि हठि मारौँ ओही॥
अस कहि कठिन बान संधाने। अतिसय क्रोध श्रवन लगि ताने॥ ४
सरसमूह सो छाड़ै लागा। जनु सपच्छ धावहिँ बहु नागा॥
जहँ तहँ परत देखिअहि बानर। सन्मुख होइ न सके तेहि अवसर॥
जहँ तहँ भागि चले कपि रीछा। बिसरी सबहि जुद्ध कै ईछा॥
सो कपि भालु न रन महु देखा। कीन्हेसि जेहि न प्रान अवसेषा॥ ८

दोहा। दस दस सर सब मारेसि परे भूमि कपि बीर।
सिंघनाद करि गर्जा मेघनाद बलधीर॥५०॥

देखि पवनसुत कटकु बिहाला। क्रोधवंत जनु धाएउ काला॥
महा सैल एक तुरत उपारा। अति रिस मेघनाद पर डारा॥
आवत देखि गएउ नभ सोई। रथ सारथी तुरग सब खोई॥
बार बार पचार हनुमाना। निकट न आव मरमु सो जाना॥ ४
रघुपति निकट गएउ घननादा। नाना भाँति करेसि दुर्बादा॥
अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे। कौतुकहीँ प्रभु काटि निवारे॥
देखि प्रताप मूढ़ खिसिआना। करैँ लाग माया बिधि नाना॥
जिमि कोउ करै गरुड़ सैँ खेला। डरपावै गहि स्वल्प सपेला॥ ८

दोहा। जासु प्रबल माया बस सिव बिरंचि बड़ छोट।
ताहि देखावै निसिचर निज माया मतिखोट॥५१॥

नभ चढ़ि बरष बिपुल अंगारा। महि तेँ प्रगट होहिँ जलधारा॥
नाना भाँति पिसाच पिसाची। मारु काटु धुनि बोलहिँ नाची॥
बिष्ठा पूय रुधिर कच हाड़ा। बरषै कबहुँ उपल बहु छाड़ा॥
बरषि धूरि कीन्हेसि अँधिआरा। सूझ न आपन हाथु पसारा॥ ४

कपि अकुलाने माया देखें। सब कर मरनु बना एहि लेखें ॥
कौतुक देखि रामु मुसुकाने। भए सभीत सकल कपि जाने ॥
एक बान काटी सब माया। जिमि दिनकर हर तिमिरनिकाया ॥
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके। भए प्रबल रन रहहिं न रोके ॥ ८

दोहा। आएसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ।
लछिमनु चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ ॥५२॥

छतज नयन उर बाहु बिसाला। हिमगिरिनिभ तनु कछु एक लाला ॥
इहाँ दसानन सुभट पठाए। नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाए ॥
भूधर नख बिटपायुध धारी। धाए कपि जय राम पुकारी ॥
भिरे सकल जोरिहि सन जोरी। इत उत जय इच्छा नहि थोरी ॥ ४
मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं। कपि जयसील मारि पुनि डाटहिं ॥
मारु मारु धरु धरु धरु मारू। सीस तोरि गहि भुजा उपारू ॥
असि रव पूरि रही नव खंडा। धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा ॥
देखहिं कौतुक नभ सुरबृंदा। कबहुँक बिसमय कबहुँ अनंदा ॥ ८

दोहा। रुधिर गाड़ भरि भरि जम्यो ऊपर धूरि उड़ाइ।
जनु अँगाररासिन्ह पर मृतकधूम रह्यो छाइ ॥५३॥

घायल बीर बिराजहिं कैसे। कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ॥
लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा। भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा ॥
एकहि एक सकै नहि जीती। निसिचर छल बल करै अनीती ॥
क्रोधवंत तब भएउ अनंता। भंजेउ रथु सारथी तुरंता ॥ ४
नाना बिधि प्रहार कर सेषा। राच्छस भएउ प्रान अवसेषा ॥
रावनसुत निज मन अनुमाना। संकट भएउ हरिहि मम प्राना ॥
बीरघातिनी छाड़िसि साँगी। तेजपुंज लछिमन उर लागी ॥
मुरुछा भई सक्ति कें लागें। तब चलि गएउ निकट भय त्यागें ॥ ८

दोहा। मेघनाद सम कोटि सत जोधा रहे उठाइ।
जगदाधार सेष किमि उठइ चले खिसिआइ ॥५४॥

सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू। जारै भुवन चारि दस आसू ॥
सक संग्राम जीति को ताही। सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥

यह कौतूहल जानै सोई । जा पर कृपा राम कै होई ॥
संध्या भइ फिरि द्वौ बाहनी । लगे सँभारन निज निज अनी ॥
ब्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर । लछिमनु कहाँ बूझ करुनाकर ॥
तब लगि लै आएउ हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुखु माना ॥
जामवंत कह बैद सुषेना । लंका रहइ को पठई लेना ॥
धरि लघु रूप गएउ हनुमंता । आनेउ भवन समेत तुरंता ॥

दोहा । रामपदारबिंद सिरु नाएउ आइ सुषेन ।
कहा नाम गिरि औषधि जाहु पवनसुत लेन ॥५५॥

रामचरन सरसिज उर राखी । चला प्रभंजनसुत बल भाषी ॥
उहाँ दूत एक मरमु जनावा । रावनु कालनेमि गृह आवा ॥
दसमुख कहा मरमु तेहि सुना । पुनि पुनि कालनेमि सिरु धुना ॥
देखत तुम्हहि नगरु जेहि जारा । तासु पंथ को रोकन पारा ॥
भजु रघुपति करु हित आपना । छाड़हु नाथ मृषा जल्पना ॥
नीलकंज तनु सुंदर स्यामा । हृदय राखु लोचनाभिरामा ॥
मैं तैं मोर मूढ़ता त्यागू । महामोह निसि सूतत जागू ॥
कालब्याल कर भच्छक जोई । सपनेहु समर कि जीतिअ सोई ॥

दोहा । सुनि दसकंठ रिसान अति तेहिं मन कीन्ह बिचार ।
रामदूत कर मरौं बरु यह खल रत मलभार ॥५६॥

अस कहि चला रचिसि मग माया । सर मंदिर बर बाग बनाया ॥
मारुतसुत देखा सुभ आश्रम । मुनिहि बूझि जल पिअउँ जाइ श्रम ॥
राच्छस कपटबेष तहँ सोहा । मायापति दूतहि चह मोहा ॥
जाइ पवनसुत नाएउ माथा । लाग सो कहै राम गुन गाथा ॥
होत महा रन रावन रामहि । जितिहहिं रामु न संसय या महि ॥
इहाँ भएँ मैं देखौं भाई । ज्ञानदृष्टि बलु मोहि अधिकाई ॥
मागा जल तेहि दीन्ह कमंडल । कह कपि नहि अघाउँ थोरें जल ॥
सर मज्जनु करि आतुर आवहु । दिच्छा देउँ ज्ञान जेहिं पावहु ॥

दोहा । सर पैठत कपिपद गहा मकरीं तब अकुलान ।
मारी सो धरि दिब्य तनु चली गगन चढ़ि जान ॥५७॥

कपि तव दरस भइउँ निहपापा । मिटा तात मुनिबर कर श्रापा ॥
मुनि न होइ यह निसिचर घोरा । मानहु बचन सत्य कपि मोरा ॥
अस कहि गई अपछरा जबहीं । निसिचर निकट गएउ कपि तबहीं ॥
कह कपि मुनि गुरदछिना लेहू । पाछें हमहि मंत्र तुम्ह देहू ॥ ४
सिर लंगूर लपेटि पछारा । निज तनु प्रगटेसि मरतीं बारा ॥
राम राम कहि छाड़ेसि प्राना । सुनि मन हरषि चलेउ हनुमाना ॥
देखा सैल न औषध चीन्हा । सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा ॥
गहि गिरि निसि नभ धावत भएऊ । अवधपुरी ऊपर कपि गएऊ ॥ ८
दोहा । देखा भरत बिसाल अति निसिचर मन अनुमानि ।
बिनु फर सायक मारेउ चाप श्रवन लगि तानि ॥५८॥
परेउ मुरुछि महि लागत सायक । सुमिरत राम राम रघुनायक ॥
सुनि प्रिय बचन भरतु तब धाए । कपि समीप अति आतुर आए ॥
बिकल बिलोकि कीस उर लावा । जागत नहि बहु भाँति जगावा ॥
मुख मलीन मन भए दुखारी । कहत बचन भरि लोचन बारी ॥ ४
जेहि बिधि रामबिमुख मोहि कीन्हा । तेहिं पुनि यह दारुन दुखु दीन्हा ॥
जौ मोरें मन बच अरु काया । प्रीति रामपद कमल अमाया ॥
तौ कपि होउ बिगत श्रम सूला । जौ मो पर रघुपति अनुकूला ॥
सुनत बचन उठि बैठ कपीसा । कहि जय जयति कोसलाधीसा ॥ ८
सोरठा । लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलकित तनु लोचन सजल ।
प्रीति न हृदय समाइ सुमिरि राम रघुकुलतिलक ॥५८॥
तात कुसल कहु सुखनिधान की । सहित अनुज अरु मातु जानकी ॥
कपि सब चरित समास बखाने । भए दुखी मन महुँ पछिताने ॥
अहह दैव मैं कत जग जाएउँ । प्रभु कें एकहु काज न आएउँ ॥
जानि कुअवसरु मन धरि धीरा । पुनि कपि सन बोले बलबीरा ॥ ४
तात गहरु होइहि तोहि जाता । काजु नसाइहि होत प्रभाता ॥
चढु मम सायक सैल समेता । पठवउँ तोहि जहँ कृपानिकेता ॥
सुनि कपि मन उपजा अभिमाना । मोरें भार चलिहि किमि बाना ॥
रामप्रभाव बिचारि बहोरी । बंदि चरन कह कपि कर जोरी ॥ ८

दोहा। तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहौँ नाथ तुरंत।
अस कहि आएसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत॥
भरत बाहुबल सील गुन प्रभुपद प्रीति अपार।
मन महु जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार॥६०॥ १२

उहाँ राम्रु लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी॥
अर्ध राति गइ कपि नहि आएउ। राम उठाइ अनुज उर लाएउ॥
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ॥
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता॥ ४
सो अनुरागु कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई॥
जौ जनतेउँ बन बंधुबिछोहू। पिताबचन मनतेउँ नहि ओहू॥
सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिँ जाहिँ जग बारहि बारा॥
अस बिचारि जिय जागहु ताता। मिलै न जगत सहोदर भ्राता॥ ८
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर करहीना॥
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौ जड़ दैव जिआवै मोही॥
जैहौँ अवध कवन मुहु लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गवाई॥
बरु अपजसु सहतेउँ जग माहीँ। नारिहानि बिसेष छति नाहीँ॥ १२
अब अपलोकु सोकु सुत तोरा। सहिहि निठुर कठोर उर मोरा॥
निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम्ह प्रान अधारा॥
सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी। सब बिधि सुखद परमहित जानी॥
उतरु काह देहौँ तेहि जाई। उठि किन मोहि सिखावहु भाई॥ १६
बहु बिधि सोचत सोचबिमोचन। स्रवत सलिल राजिवदल लोचन॥
उमा एक अखंड रघुराई। नरगति भगतकृपाल देखाई॥

सोरठा। प्रभुप्रलाप सुनि कान बिकल भए बानरनिकर।
आइ गएउ हनुमान जिमि करुना महु बीररस॥६१॥ २०

हरषि राम भेटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना॥
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमनु हरषाई॥
हृदय लाइ भेटेउ प्रभु भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता॥
कपि पुनि बैद तहाँ पहुचावा। जेहि बिधि तबहि ताहि लै आवा॥ ४

४६

यह बृत्तांत दसानन सुनेऊ। अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ॥
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा॥
जागा निसिचरु देखिअ कैसा। मानहु कालु देह धरि बैसा॥
कुंभकरन बूझा कहु भाई। काहे तव मुख रहे सुखाई॥ ८
कथा कही सब तेहिं अभिमानी। जेहि प्रकार सीता हरि आनी॥
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे। महा महा जोधा संघारे॥
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी। भट अतिकाय अकंपन भारी॥
अपर महोदर आदिक बीरा। परे समरमहि सब रनधीरा॥ १२

दोहा। सुनि दसकंधर बचन तब कुंभकरनु बिलखान।
जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत कल्यान॥६२॥

भल न कीन्ह तैं निसिचरनाहा। अब मोहि आइ जगाएहि काहा॥
अजहूँ तात त्यागि अभिमाना। भजहु राम होइहि कल्याना॥
हैं दससीस मनुज रघुनायक। जा कें हनूमान से पायक॥
अहह बंधु तैं कीन्हि खोटाई। प्रथमहिं मोहि न सुनाएहि आई॥ ४
कीन्हेहु प्रभु बिरोध तेहि देव क। सिव बिरंचि सुर जा के सेवक॥
नारद मुनि मोहि ज्ञान जो कहा। कहतेउँ तोहि समय निर्बहा॥
अब भरि अंक भेंटु मोहि भाई। लोचन सुफल करौं मैं जाई॥
स्याम गात सरसीरुह लोचन। देखौं जाइ ताप त्रय मोचन॥ ८

दोहा। राम रूप गुन सुमिरत मगन भएउ छन एक।
रावन मागेउ कोटि घटँ मद अरु महिष अनेक॥६३॥

महिष खाइ करि मदिरा पाना। गर्जा बज्राघात समाना॥
कुंभकरन दुर्मद रनरंगा। चला दुर्ग तजि सेन न संगा॥
देखि बिभीषनु आगें आएउ। परेउ चरन निज नाम सुनाएउ॥
अनुज उठाइ हृदय तेहि लायो। रघुपतिभक्त जानि मन भायो॥ ४
तात लात रावन मोहि मारा। कहत परम हित मंत्र बिचारा॥
तेहिं गलानि रघुपति पहिं आएउँ। देखि दीन प्रभु के मन भाएउँ॥
सुनु सुत भएउ कालबस रावनु। सो कि मान अब परम सिखावनु॥
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषन। भएहु तात निसिचर कुल भूषन॥ ८

बंधु बंस तैं कीन्ह उजागर । भजेहु राम सोभा सुख सागर ॥
दोहा । बचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रनधीर ।
जाहु न निज पर सूझ मोहि भएउँ कालबस बीर ॥६४॥
बंधुबचन सुनि चला बिभीषन । आएउ जहँ त्रैलोकबिभूषन ॥
नाथ भूधराकार सरीरा । कुंभकरन आवत रनधीरा ॥
एतना कपिन्ह सुना जब काना । किलकिलाइ धाए बलवाना ॥
लिए उठाइ बिटप अरु भूधर । कटकटाइ डारहिँ ता ऊपर ॥
कोटि कोटि गिरि सिखर प्रहारा । करहिँ भालु कपि एक एक बारा ॥
मुरचो न मनु तनु टरचो न टारचो । जिमि गज अर्कफलनि को मारचो ॥
तब मारुतसुत मुठिका हन्यो । परचो धरनि ब्याकुल सिर धुन्यो ॥
पुनि उठि तेहि मारेउ हनुमंता । घुर्मित भूतल परेउ तुरंता ॥
पुनि नल नीलहि अवनि पछारेसि । जहँ तहँ पटकि पटकि भट डारेसि ॥
चली बलीमुखसेन पराई । अति भय त्रसित न कोउ समुहाई ॥
दोहा । अंगदादि कपि मुरुछित करि समेत सुग्रीव ।
काँख दाबि कपिराज कहुँ चला अमित बल सीव ॥६५॥
उमा करत रघुपति नरलीला । खेल गरुड़ जिमि अहिगन मीला ॥
भृकुटिभंग जो कालहि खाई । ताहि कि सोहै ऐसि लराई ॥
जगपावनि कीरति बिस्तरिहहिँ । गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहहिँ ॥
मुरुछा गइ मारुतसुत जागा । सुग्रीवहि तब खोजन लागा ॥
सुग्रीवहु कै मुरुछा बीती । निबुकि गएउ तेहि मृतक प्रतीती ॥
काटेसि दसन नासिका काना । गर्जि अकास चलेउ तेहि जाना ॥
गहेउ चरन गहि भूमि पछारा । अति लाघव उठि पुनि तेहि मारा ॥
पुनि आएउ प्रभु पहि बलवाना । जयति जयति जय कृपानिधाना ॥
नाक कान काटे जिय जानी । फिरा क्रोध करि भै मन ग्लानी ॥
सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा । देखत कपिदल उपजी त्रासा ॥
। दोहा ।
जय जय जय रघुबंसमनि धाए कपि दै हूह ।
एकहि बार तासु पर छाड़ेन्हि गिरि तरु जूह ॥६६॥

कुंभकरन रनरंग बिरुद्धा। सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा॥
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई। जनु टीड़ी गिरिगुहाँ समाई॥
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा। कोटिन्ह मीजि मिलव महि गर्दा॥
मुख नासा श्रवनन्हि कीं बाटा। निसरि पराहिं भालु कपि ठाटा॥
रनमद मत्त निसाचर दर्पा। बिस्व ग्रसिहि जनु एहिं बिधि अर्पा॥
मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरें। सूझ न नयन सुनहिं नहि टेरें॥
कुंभकरन कपिफौज बिडारी। सुनि धाई रजनीचरधारी॥
देखी राम बिकल कटकाई। रिपु अनीक नाना बिधि आई॥

दोहा। सुनु सुग्रीव बिभीषन अनुज सँभारेहु सेन।
मैं देखौं खल बल दलहि बोले राजिवनयन॥६७॥

कर सारंग साजि कटि भाथा। अरि दल दलन चले रघुनाथा॥
प्रथम कीन्हि प्रभु धनुषटँकोरा। रिपुदल बधिर भएउ सुनि सोरा॥
सत्यसंध छाड़े सर लच्छा। कालसर्प जनु चले सपच्छा॥
जहँ तहँ चले बिपुल नाराचा। लगे कटन भट बिकट पिसाचा॥
कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा। बहुतक बीर होहिं सत खंडा॥
घुर्मि घुर्मि घायल महि परहीं। उठि संभारि सुभट पुनि लरहीं॥
लागत बान जलद जिमि गाजहिं। बहुतक देखि कठिन सर भाजहिं॥
रुंड प्रचंड मुंड बिनु धावहिं। धरु धरु मारु मारु धुनि गावहिं॥

दोहा। छन महु प्रभु के सायकन्हि काटे बिकट पिसाच।
पुनि रघुबीर निषंग महु प्रबिसे सब नाराच॥६८॥

कुंभकरन मन दीख बिचारी। हति छन माझ निसाचरधारी॥
भा अति क्रुद्ध महा बलबीरा। कियो मृगनायकनाद गभीरा॥
कोपि महीधर लेइ उपारी। डारै जहँ मर्कट भट भारी॥
आवत देखि सैल प्रभु भारे। सरन्हि काटि रज सम करि डारे॥
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक। छाड़े अति कराल बहु सायक॥
तनु महु प्रबिसि निसरि सर जाहीं। जिमि दामिनि घन माझ समाहीं॥
सोनित स्रवत सोह तनु कारे। जनु कज्जल गिरि गेरु पनारे॥
बिकल बिलोकि भालु कपि धाए। बिहसा जबहिं निकट कपि आए॥

दोहा। महानाद करि गर्जा कोटि कोटि गहि कीस।
महि पटकै गजराज इव सपथ करै दससीस ॥६८॥

भागे भालु बलीमुख जूथा। वृक बिलोकि जिमि मेषबरूथा॥
चले भागि कपि भालु भवानी। बिकल पुकारत आरत बानी॥
यह निसिचर दुकाल सम अहई। कपिकुल देस परन अब चहई॥
कृपा बारिधर राम खरारी। पाहि पाहि प्रनतारति हारी॥ ४
सकरुन बचन सुनत भगवाना। चले सुधारि सरासन बाना॥
राम सेन निज पाछे घाली। चले सकोप महा बलसाली॥
खैंचि धनुष सर सत संधाने। छूटे तीर सरीर समाने॥
लागत सर धावा रिस भरा। कुधर डगमगत डोलति धरा॥ ८
लीन्ह एक तेहिं सैल उपाटी। रघुकुलतिलक भुजा सोइ काटी॥
धावा बाम बाहु गिरि धारी। प्रभु सोउ भुजा काटि महि पारी॥
काटें भुजा सोह खल कैसा। पच्छहीन मंदर गिरि जैसा॥
उग्र बिलोकनि प्रभुहि बिलोका। ग्रसन चहत मानहु त्रैलोका॥ १२

दोहा। करि चिक्कार घोर अति धावा बदनु पसारि।
गगन सिद्ध सुर त्रासित हा हा हेति पुकारि ॥७०॥

सभय देव करुनानिधि जानेउ। श्रवन प्रजंत सरासनु तानेउ॥
बिसिखनिकर निसिचरमुख भरेऊ। तदपि महाबल भूमि न परेऊ॥
सरन्हि भरा मुख सन्मुख धावा। कालत्रोन सजीव जनु आवा॥
तब प्रभु कोपि तीब्र सर लीन्हा। धर तें भिन्न तासु सिरु कीन्हा॥ ४
सो सिरु परेउ दसानन आगें। बिकल भएउ जिमि फनि मनि त्यागें॥
धरनि धसै धर धाव प्रचंडा। तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ खंडा॥
परे भूमि जिमि नभ तें भूधर। हेठ दाबि कपि भालु निसाचर॥
तासु तेज प्रभुबदन समाना। सुर मुनि सबहिं अचंभौ माना॥ ८
सुर दुंदुभी बजावहिं हरषहिं। अस्तुति करहिं सुमन बहु बरषहिं॥
करि बिनती सुर सकल सिधाए। तेहीं समय देवरिषि आए॥
गगनोपरि हरि गुन गन गाए। रुचिर बीररस प्रभुमन भाए॥
बेगि हतहु खल कहि मुनि गए। राम समरमहि सोभत भए॥ १२

छंद। संग्रामभूमि बिराज रघुपति अतुलबल कोसलधनी।
श्रमबिंदु मुख राजीव लोचन अरुन तन सोनितकनी।
भुज जुगल फेरत सर सरासन भालु कपि चहुँ दिसि बने।
कह दास तुलसी कहि न सक छबि सेष जेहि आनन घने॥ १६

दोहा। निसिचर अधम मलाकर ताहि दीन्ह निज धाम।
गिरिजा ते नर मंदमति जे न भजहिं श्रीराम॥७१॥

दिन के अंत फिरीं द्वौ अनी। समर भई सुभटन्ह श्रम घनी॥
रामकृपा कपिदल बल बाढ़ा। जिमि तृन पाइ लाग अति डाढ़ा॥
छीजहिं निसिचर दिनु अरु राती। निज मुख कहें सुकृत जेहि भाँती॥
बहु बिलाप दसकंधर करई। बंधुसीस पुनि पुनि उर धरई॥ ४
रोवहिं नारि हृदय हति पानी। तासु तेज बल बिपुल बखानी॥
मेघनाद तेहि अवसर आयेउ। कहि बहु कथा पिता समुझायेउ॥
देखेहु कालि मोरि मनुसाई। अबहि बहुत का करौं बड़ाई॥
इष्टदेव सैं बल रथ पाएउँ। सो बलु तात न तोहि देखाएउँ॥ ८
एहि बिधि जल्पत भएउ बिहाना। चहुँ दुआर लागे कपि नाना॥
इत कपि भालु काल सम बीरा। उत रजनीचर अति रनधीरा॥
लरहिं सुभट निज निज जय हेतू। बरनि न जाइ समर खगकेतू॥

दोहा। मेघनाद मायामय रथ चढ़ि गएउ अकास। १२
गर्जेउ अट्टहास करि भइ कपिकटकहि त्रास॥७२॥

सक्ति सूल तरवारि कृपाना। अस्त्र सस्त्र कुलिसायुध नाना॥
डारै परसु परिघ पाषाना। लागेउ बृष्टि करैं बहु बाना॥
दस दिसि रहे बान नभ छाई। मानहु मघा मेघ झरि लाई॥
धरु धरु मारु सुनिअ धुनि काना। जो मारै तेहि कोउ न जाना॥ ४
गहि गिरि तरु अकास कपि धावहिं। देखहिं तेहि न दुखित फिरि आवहिं॥
अवघट घाट बाट गिरि कंदर। मायाबल कीन्हेसि सरपंजर॥
जाहिं कहाँ ब्याकुल भए बंदर। सुरपतिबंदि परे जनु मंदर॥
मारुतसुत अंगद नल नीला। कीन्हेसि बिकल सकल बलसीला॥ ८
पुनि लछिमन सुग्रीव बिभीषन। सरन्हि मारि कीन्हेसि जर्जरतन॥

पुनि रघुपति सैँ जूझैँ लागा । सर छाड़ै होइ लागहिँ नागा ॥
ब्यालपास बस भए खरारी । स्वबस अनंत एक अबिकारी ॥
नट इव कपटचरित कर नाना । सदा स्वतंत्र रामु भगवाना ॥ १२
रनसोभा लगि प्रभुहि बधायो । नागपास देवन्ह भय पायो ॥
दोहा । गिरिजा जासु नामु जपि मुनि काटहिँ भवपास ।
सो कि बंध तर आवै ब्यापक बिस्वनिवास ॥७३॥
चरित राम के सगुन भवानी । तर्कि न जाहिँ बुद्धिबल बानी ॥
अस बिचारि जे तज्ञ बिरागी । रामहि भजहिँ तर्क सब त्यागी ॥
ब्याकुल कटकु कीन्ह घननादा । पुनि भा प्रगट कहै दुर्बादा ॥
जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा । सुनि करि ताहि क्रोध अति बाढ़ा ॥ ४
बूढ़ जानि सठ छाड़ेउँ तोही । लागेसि अधम पचारैँ मोही ॥
अस कहि तरल त्रिसूल चलायो । जामवंत कर गहि सोइ धायो ॥
मारेसि मेघनाद कै छाती । परा भूमि घुर्मित सुरघाती ॥
पुनि रिसान गहि चरन फिरायो । महि पछारि निज बल देखरायो ॥ ८
बरप्रसाद सो मरै न मारा । तब गहि पद लंका पर डारा ॥
इहाँ देवरिषि गरुड़ पठायो । राम समीप सपदि सो आयो ॥
दोहा । खगपति सब धरि खाए मायानाग बरूथ ।
माया बिगत भए सब हरषे बानरजूथ ॥ १२
गहि गिरि पादप उपल नख धाए कीस रिसाइ ।
चले तमीचर बिकलतर गढ़ पर चढ़े पराइ ॥७४॥
मेघनाद कै मुरुछा जागी । पितहि बिलोकि लाज अति लागी ॥
तुरत गएउ गिरिबर कंदरा । करौँ अजय मख अस मन धरा ॥
इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा । सुनहु नाथ बल अतुल उदारा ॥
मेघनाद मख करै अपावन । खल मायाबी देवसतावन ॥ ४
जौ प्रभु सिद्ध होइँ सो पाइहि । नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि ॥
सुनि रघुपति अतिसय सुखु माना । बोले अंगदादि कपि नाना ॥
लछिमन संग जाहु सब भाई । करहु बिधंस जग्य कर जाई ॥
तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही । देखि सभय सुर दुख अति मोही ॥ ८

मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई । जेहि छीजै निसिचर सुनु भाई ॥
जामवंत सुग्रीव बिभीषन । सेन समेत रहहु तीनिउ जन ॥
जब रघुबीर दीन्हि अनुसासन । कटि निषंग कसि साजि सरासन ॥
प्रभुप्रताप उर धरि रनधीरा । बोले घन इव गिरा गभीरा ॥ १२
जौ तेहि आजु बधे बिनु आवउँ । तौ रघुपतिसेवक न कहावउँ ॥
जौ सत संकर करहिँ सहाई । तदपि हतौँ रघुबीरदोहाई ॥
दोहा । रघुपतिचरन नाइ सिरु चलेउ तुरंत अनंत ।
अंगद नील मयंद नल संग सुभट हनुमंत ॥७५॥ १६
जाइ कपिन्ह सो देखा बैसा । आहुति देत रुधिरु अरु भैंसा ॥
कीन्ह कपिन्ह सब जग्य बिधंसा । जब न उठै तब करहिँ प्रसंसा ॥
तदपि न उठै धरेन्हि कच जाई । लातन्हि हति हति चले पराई ॥
लै त्रिसूल धावा कपि भागे । आए जहँ रामानुज आगे ॥ ४
आवा परम क्रोध कर मारा । गर्ज घोर रव बारहि बारा ॥
कोपि मरुतसुत अंगद धाए । हति त्रिसूल उर धरनि गिराए ॥
प्रभु कहुँ छाड़ेसि सूल प्रचंडा । सर हति कृत अनंत जुग खंडा ॥
उठि बहोरि मारुति जुबराजा । हतहिँ कोपि तेहि घाउ न बाजा ॥ ८
फिरे बीर रिपु मरै न मारा । तब धावा करि घोर चिकारा ॥
आवत देखि क्रुद्ध जनु काला । लछिमन छाड़े बिसिख कराला ॥
देखिसि आवत पबि सम बाना । तुरत भएउ खल अंतरधाना ॥
बिबिध बेष धरि करै लराई । कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरि जाई ॥ १२
देखि अजय रिपु डरपे कीसा । परम क्रुद्ध तब भएउ अहीसा ॥
लछिमन मन अस मंत्र दृढ़ावा । एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा ॥
सुमिरि कोसलाधीसप्रतापा । सरसंधान कीन्ह करि दापा ॥
छाड़ा बान माझ उर लागा । मरती बार कपटु सबु त्यागा ॥ १६
दोहा । रामानुज कहँ रामु कहँ अस कहि छाड़ेसि प्रान ।
धन्य धन्य तव जननी कह अंगद हनुमान ॥७६॥
बिनु प्रयास हनुमान उठायो । लंकाद्वार राखि पुनि आयो ॥
तासु मरन सुनि सुर गंधर्बा । चढ़ि बिमान आए नभ सर्बा ॥

बरषि सुमन दुंदभीं बजावहिँ। श्रीरघुनाथ बिमल जसु गावहिँ॥
जय अनंत जय जगदाधारा। तुम्ह प्रभु सब देवन्हि निस्तारा॥
अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाए। लछिमनु कृपासिंधु पहि आए॥
सुतबध सुना दसानन जबही। मुरुछित भएउ परेउ महि तबही॥
मंदोदरी रुदनु कर भारी। उर ताड़न बहु भाँति पुकारी॥
नगर लोग सब ब्याकुल सोचा। सकल कहहिँ दसकंधरु पोचा॥

दोहा। तब दसकंठ बिबिध बिधि समुझाईं सब नारि।
नस्वर रूप जगत सब देखहु हृदय बिचारि॥७७॥

तिन्हहिँ ज्ञानु उपदेसा रावन। आपुनु मंद कथा सुभ पावन॥
पर उपदेस कुसल बहुतेरे। जे आचरहिँ ते नर न घनेरे॥
निसा सिरानि भएउ भिनुसारा। लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा॥
सुभट बोलाइ दसानन बोला। रन सन्मुख जा कर मन डोला॥
सो अबहीं बरु जाउ पराई। संजुगबिमुख भएँ न भलाई॥
निज भुज बल मैं बयरु बढ़ावा। देहौं उतरु जो रिपु चढ़ि आवा॥
अस कहि मरुतबेग रथु साजा। बाजे सकल जुझाऊ बाजा॥
चले बीर सब अतुलित बली। जनु कज्जल कै आँधी चली॥
असगुन अमित होहिँ तेहि काला। गनै न भुजबल गर्ब बिसाला॥

छंद। अति गर्ब गनइ न सगुन असगुन स्रवहिँ आयुध हाथ तेँ।
भट गिरत रथ तेँ बाजि गज चिक्करत भाजहिँ साथ तेँ।
गोमाय गीध कराल खर रव स्वान बोलहिँ अति घने।
जनु कालदूत उलूक बोलहिँ बचन परम भयावने॥

दोहा। ताहि कि संपति सगुन सुभ सपनेहु मन बिश्राम।
भूतद्रोह रत मोहबस रामबिमुख रतिकाम॥७८॥

चलेउ निसाचरकटकु अपारा। चतुरंगिनी अनी बहु धारा॥
बिबिध भाँति बाहन रथ जाना। बिपुल बरन पताक ध्वज नाना॥
चले मत्त गज जूथ घनेरे। प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे॥
बरन बरन बिरदैतनिकाया। समरसूर जानहिँ बहु माया॥
अति बिचित्र बाहिनी बिराजी। बीर बसंत सेन जनु साजी॥

चलत कटकु दिगसिंधुर डगहीं। छुभित पयोधि कुधर डगमगहीं॥
उठी रेनु रबि गएउ छपाई। मरुत थकित बसुधा अकुलाई॥
पनव निसान घोर रव बाजहिं। प्रलय समय के घन जनु गाजहिं॥
भेरि नफीरि बाज सहनाई। मारू राग सुभट सुखदाई॥
केहरिनाद बीर सब करहीं। निज निज बल पौरुष उच्चरहीं॥
कहै दसानन सुनहुँ सुभट्टा। मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा॥
हौं मारिहौं भूप द्वौ भाई। अस कहि सन्मुख फौज रेंगाई॥
यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई। धाए करि रघुबीरदोहाई॥

।छंद।

धाए बिसाल कराल मर्कट भालु काल समान ते।
मानहु सपच्छ उड़ाहिं भूधरबृंद नाना बान ते।
नख दसन सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं।
जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजसु बखानहीं॥

दोहा। दुहुँ दिसि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि।
भिरे बीर इत रामहि उत रावनहि बखानि॥७८॥

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषनु भएउ अधीरा॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा॥
नाथ न रथु नहि तन पद त्राना। केहि बिधि जितब बीरु बलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहि जय होइ सो स्यंदनु आना॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे॥
ईसभजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिज्ञान कठिन कोदंडा॥
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा॥
सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहुँ न कतहुँ रिपु ताकें॥

दोहा। महा अजय संसार रिपु जीति सकै सो बीर।
जा कें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर॥

सुनि प्रभुवचन बिभीषन हरषि गहे पद कंज।
एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज॥
उत पचार दसकंधर इत अंगद हनुमान।
लरत निसाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन॥८०॥

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना। देखत रन नभ चढ़े बिमाना॥
हमहू उमा रहे तेहि संगा। देखत रामचरित रनरंगा॥
सुभट समररस दुहुँ दिसि माते। कपि जयसील रामबल ता तेँ॥
एक एक सन भिरहिँ पचारहिँ। एकन्ह एक मर्दि महि पारहिँ॥
मारहिँ काटहिँ धरहिँ पछारहि। सीस तोरि सीसन्ह सन मारहिँ॥
उदर बिदारहिँ भुजा उपारहिँ। गहि पद अवनि पटकि भट डारहिँ॥
निसिचर भट महि गाड़हिँ भालू। ऊपर ढारि देहिँ बहु बालू॥
बीर बलीमुख जुद्ध विरुद्धे। देखिअत बिपुल काल जनु क्रुद्धे॥

छंद। क्रुद्धे कृतांत समान कपि तन स्रवत सोनित राजहीँ।
मर्दहिँ निसाचरकटकु भट बलवंत घन जिमि गाजहीँ।
मारहिँ चपेटन्हि डाटि दातन्ह काटि लातन्ह मीजहीँ।
चिक्करहिँ मर्कट भालु छल बल करहिँ जेहि खल छीजहीँ।
धरि गाल फारहिँ उर बिदारहिँ गल अँतावरि मेलहीँ।
प्रह्लादपति जनु बिबिध तनु धरि समर अंगन खेलहीँ।
धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही।
जय राम जो तृन तेँ कुलिस कर कुलिस तेँ कर तृन सही॥

दोहा। निज दल बिचलत देखेसि बीसभुजा दसचाप।
रथ चढ़ि चलेउ दसानन फिरहु फिरहु करि दाप॥८१॥

धाएउ परम क्रुद्ध दसकंधर। सन्मुख चले हूह दै बंदर॥
गहि कर पादप उपल पहारा। डारेन्हि ता पर एकहि बारा॥
लागहिँ सैल बज्र तन तासू। खंड खंड होइ फूटहि आसू॥
चला न अचल रहा रथ रोपी। रनदुर्मद रावनु अति कोपी॥
इत उत झपटि दपटि कपि जोधा। मर्दइँ लाग भएउ अति क्रोधा॥
चले पराइ भालु कपि नाना। त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना॥

पाहि पाहि रघुबीर गोसाईं। यह खल खाइ काल कीँ नाईं॥
तेहि देखे कपि सकल पराने। दसहु चाप सायक संधाने॥ ८

छंद। संधानि धनु सरनिकर छाड़ेसि उरग जिमि उड़ि लागहीँ।
रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि बिदिसि कहँ कपि भागहीँ।
भयो अति कोलाहलु बिकल कपिदल भालु बोलहिँ आतुरे।
रघुबीर करुनासिंधु आरतबंधु जनरच्छक हरे॥ १२

दोहा। निज दल बिकल देखि कटि कसि निषंग धनु हाथ।
लछिमनु चले क्रुद्ध होइ नाइ रामपद माथ॥८२॥

रे खल का मारसि कपि भालू। मोहि बिलोकु तोर मैं कालू॥
खोजत रहेउँ तोहि सुतघाती। आजु निपाति जुड़ावौँ छाती॥
अस कहि छाड़ेसि बान प्रचंडा। लछिमन किए सकल सत खंडा॥
कोटिन्ह आयुध रावन डारे। तिलप्रवान करि काटि निवारे॥ ४
पुनि निज बानन्ह कीन्ह प्रहारा। स्यंदनु भंजि सारथी मारा॥
सत सत सर मारे दस भाला। गिरिसृंगन्ह जनु प्रबिसहिँ ब्याला॥
पुनि सत सर मारा उर माहीँ। परेउ धरनितल सुधि कछु नाहीँ॥
उठा प्रबल पुनि मुरुछा जागी। छाड़िसि ब्रह्म दीन्हि जो साँगी॥ ८

छंद। सो ब्रह्मदत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही।
परयो बीरु बिकल उठाव दसमुख अतुलबल महिमा रही।
ब्रह्मांड भवन बिराज जा कैँ एक सिर जिमि रजकनी।
तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहि त्रिभुवनधनी॥ १२

दोहा। देखि पवनसुत धाएउ बोलत बचन कठोर।
आवत कपिहि हन्यो तेहि मुष्टिप्रहार प्रघोर॥८३॥

जानु टेकि कपि भूमि न गिरा। उठा सँभारि बहुत रिस भरा॥
मुठिका एक ताहि कपि मारा। परेउ सैल जनु बज्रप्रहारा॥
मुरुछा गै बहोरि सो जागा। कपिबलु बिपुल सराहन लागा॥
धिग धिग मम पौरुष धिग मोही। जौँ तैँ जिअत उठेसि सुरद्रोही॥ ४
अस कहि लछिमन कहुँ कपि ल्यायो। देखि दसानन बिसमय पायो॥
कह रघुबीर समुझु जिय भ्राता। तुम्ह कृतांतभच्छक सुरत्राता॥

सुनत बचन उठि बैठ कृपाला। गई गगन सो सक्ति कराला॥
पुनि कोदंड बान गहि धाए। रिपु सन्मुख अति आतुर आए॥ ८

छंद। आतुर बहोरि बिभंजि स्यंदनु सूत हति ब्याकुल कियो।
गिरयो धरनि दसकंधर बिकलतर बान सत बेध्यो हियो।
सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयो।
रघुबीरबंधु प्रतापपुंज बहोरि प्रभुचरनन्हि नयो॥ १२

दोहा। उहाँ दसानन जागि करि करैं लाग कछु जग्य।
रामबिरोधी बिजय चह सठ हठबस अति अग्य॥८४॥

इहाँ बिभीषन सब सुधि पाई। सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई॥
नाथ करै रावनु एक जागा। सिद्ध भएँ नहि मरिहि अभागा॥
पठवहु नाथ बेगि भट बंदर। करहिँ बिधंस आव दसकंधर॥
प्रात होत प्रभु सुभट पठाए। हनुमदादि अंगद सब धाए॥ ४
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका। पैठे रावनभवन असंका॥
जग्य करत जबही सो देखा। सकल कपिन्ह भा क्रोध बिसेषा॥
रन तेँ निलज भाजि गृह आवा। इहाँ आइ बकध्यानु लगावा॥
अस कहि अंगद मारा लाता। चितव न सठ स्वारथ मनु राता॥ ८

छंद। नहि चितव जब करि कोप कपि गहि दसन लातन्ह मारहीँ।
धरि केस नारि निकारि बाहेर तेतिदीन पुकारहीँ।
तब उठेउ क्रुद्ध कृतांत सम गहि चरन बानर डारई।
एहि बीच कपिन्ह बिधंस कृत मख देखि मन महुँ हारई। १२

दोहा। जग्य बिधंसि कुसल कपि आए रघुपति पास।
चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ त्यागि जिवन कै आस॥८५॥

चलत होहिँ अति असुभ भयंकर। बैठहिँ गीध उड़ाइ सिरन्ह पर॥
भएउ कालबस काहु न माना। कहेसि बजावहु जुद्धनिसाना॥
चली तमीचर अनी अपारा। बहु गज रथ पदाति असवारा॥
प्रभु सन्मुख धाए खल कैसेँ। सलभसमूह अनल कहुँ जैसेँ॥ ४
इहाँ देवतन्ह अस्तुति कीन्ही। दारुन बिपति हमहि येहि दीन्ही॥
अब जनि राम खेलावहु एही। अतिसय दुखित होति बैदेही॥

देवबचन सुनि प्रभु मुसुकाना। उठि रघुबीर सुधारे बाना ॥
जटाजूट दृढ़ बाँधे माथेँ। सोहहिँ सुमन बीच बिच गाथेँ ॥
अरुन नयन बारिद तनु स्यामा। अखिल लोक लोचनाभिरामा ॥
कटितट परिकर कस्यो निषंगा। कर कोदंड कठिन सारंगा ॥

छंद। सारंग कर सुंदर निषंग सिलीमुखाकर कटि कस्यो।
भुजदंड पीन मनोहरायत उर धरासुरपद लस्यो।
कह दास तुलसी जबहि प्रभु सर चाप कर फेरन लगे।
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे।

दोहा। सोभा देखि हरषि सुर बरषहिँ सुमन अपार ॥
जय जय जय करुनानिधि छवि बल गुन आगार ॥८६॥

एहीँ बीचं निसाचर अनी। कसमसात आई अति घनी ॥
देखि चले सन्मुख कपिभट्टा। प्रलयकाल के जनु घनघट्टा ॥
बहु कृपान तरवारि चमंकहिँ। जनु दह दिसि दामिनी दमंकहिँ ॥
गज रथ तुरग चिकार कठोरा। गर्जहिँ मनहुँ बलाहक घोरा ॥
कपि लंगूर बिपुल नभ छाए। मनहुँ इंद्रधनु उए सुहाए ॥
उठै धूरि मानहु जलधारा। बान बुंद भै बृष्टि अपारा ॥
दुहुँ दिसि पर्बत करहिँ प्रहारा। बज्रपात जनु बारहिँ बारा ॥
रघुपति कोपि बानझरि लाई। घायल भइ निसिचरसमुदाई ॥
लागत बान बीर चिक्करहीँ। घुर्मि घुर्मि जहँ तहँ महि परहीँ ॥
स्रवहिँ सैल जनु निर्झर भारी। सोनितसरि कादर भयकारी ॥

छंद। कादर भयंकर रुधिरसरिता चली परम अपावनी।
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अबर्त बहति भयावनी।
जलजंतु गज पदचर तुरग खर बिबिध बाहन को गने।
सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने ॥

दोहा। बीर परहिँ जनु तीरतरु मज्जा बहु बह फेन।
कादर देखि डरहिँ तहँ सुभटन्ह कैँ मन चेन ॥८७॥

मज्जहिँ भूत पिसाच बेताला। प्रमथ महा झोटिंग कराला ॥
काक कंक लै भुजा उड़ाहीँ। एक तेँ छीनि एक लै खाहीँ ॥

एक कहहिँ ऐसिउ सौंघाई । सठहु तुम्हार दरिद्रु न जाई ॥
कहरत भट घायल तट गिरे । जहँ तहँ मनहु अर्धजल परे ॥
खैंचहिँ गीध आँत तट भएँ । जनु बनसी खेलत चित दएँ ॥
बहु भट बहहिँ चढ़े खग जाहीँ । जनु नावरि खेलहिँ सरि माहीँ ॥
जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिँ । भूत पिसाच बधूँ नभ नंचहिँ ॥
भट कपाल करताल बजावहिँ । चामुंडा नाना बिधि गावहिँ ॥
जंबुकनिकर कटक्कट कट्टहिँ । खाहिँ हुआहिँ अघाहिँ दवट्टहिँ ॥
कोटिन्ह रुंड मुंड बिनु चल्लहिँ । सीस परे महि जय जय बोल्लहिँ ॥

छंद । बोल्लहिँ जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिर बिनु धावहीँ ।
खप्परिन्ह खग्ग अलुज्झि जुज्झहिँ सुभट भटन्ह ढहावहीँ ।
बानर निसाचरनिकर मर्दहिँ रामबल दर्पित भए ।
संग्राम अंगनि सुभट सोवहिँ रामसर निकरन्हि हए ॥

दोहा । रावन हृदय बिचारा भा निसिचरसंघार ।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करउँ अपार ॥८८॥

देवन्ह प्रभुहि पयादेँ देखा । उपजा उर अति छोभ बिसेषा ॥
सुरपति निज रथु तुरत पठावा । हरष सहित मातलि लै आवा ॥
तेजपुंज रथ दिब्य अनूपा । हरषि चढ़े कोसलपुरभूपा ॥
चंचल तुरग मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥
रथारूढ़ रघुनाथहि देखी । धाए कपि बलु पाइ बिसेषी ॥
सही न जाइ कपिन्ह कै मारी । तब रावन माया बिस्तारी ॥
सो माया रघुबीरहि बाँची । लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची ॥
देखी कपिन्ह निसाचर अनी । अनुज सहित बहु कोसलधनी ॥

छंद । बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे ।
जनु चित्रलिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहिँ खरे ।
निज सेन चकित बिलोकि हसि सर चाप सजि कोसलधनी ।
माया हरी हरि निमिष महुँ हरषी सकल मर्कट अनी ॥

दोहा । बहुरि रामु सब तन चितइ बोले बचन गभीर ।
द्वंदजुद्ध देखहु सकल श्रमित भए अति बीर ॥८९॥

अस कहि रथु रघुनाथ चलावा। बिप्रचरन पंकज सिरु नावा॥
तब लंकेस क्रोध उर छावा। गर्जत तर्जत सन्मुख धावा॥
जीतेहु जे भट संजुग माहीँ। सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीँ॥
रावन नाम जगत जसु जाना। लोकप जा कें बंदीखाना॥
खर दूषन बिराध तुम्ह मारा। बधेहु ब्याध इव बालि बिचारा॥
निसिचरनिकर सुभट संघारेहु। कुंभकरन घननादहि मारेहु॥
आजु बयरु सबु लेउँ निबाही। जौं रन भूप भाजि नहि जाही॥
आजु करौं खलु काल हवालें। परेहु कठिन रावन कें पालें॥
सुनि दुर्बचन कालबस जाना। बिहसि बचन कह कृपानिधाना॥
सत्य सत्य सब तव प्रभुताई। जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई॥

छंद। जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा।
संसार महँ पूरुष त्रिबिध पाटल रसाल पनस समा।
एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल लागहीं।
एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं॥

दोहा। रामबचन सुनि बिहसा मोहि सिखावत ग्यान।
बयरु करत नहि तब डरे अब लागे प्रिय प्रान॥८०॥

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर। कुलिस समान लाग छाड़ैं सर॥
नानाकार सिलीमुख धाए। दिसि अरु बिदिसि गगन महि छाए॥
पावकसर छाड़ेउ रघुबीरा। छन महुँ जरे निसाचरतीरा॥
छाड़िसि तीब्र सक्ति खिसिआई। बानसंग प्रभु फेरि चलाई॥
कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पबारइ। बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारइ॥
निफल होहिं रावनसर कैसें। खल के सकल मनोरथ जैसें॥
तब सत बान सारथी मारेसि। परेउ भूमि जय राम पुकारेसि॥
राम कृपा करि सूत उठावा। तब प्रभु परम क्रोध कहुँ पावा॥

छंद। भयो क्रुद्ध जुद्ध बिरुद्ध रघुपतित्रोन सायक कसमसे।
कोदंडधुनि अति चंड सुनि मनुजाद सब मारुत ग्रसे।
मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर त्रसे।
चिक्करहिं दिग्गज दसन गहि महि देखि कौतुक सुर हसे॥

दोहा। तानेउ चाप श्रवन लगि छाड़े बिसिख कराल।
राम मारगन गन चले लहलहात जनु ब्याल ॥९१॥

चले बान सपच्छ जनु उरगा। प्रथमहि हत्यो सारथी तुरगा॥
रथ बिभंजि हति केतु पताका। गर्जा अति अंतरबलु थाका॥
तुरत आन रथ चढ़ि खिसिआना। अस्त्र सस्त्र छाड़ेसि बिधि नाना॥
निफल होहिँ सब उद्यम ता के। जिमि परद्रोह निरत मनसा के॥
तब रावन दस सूल चलावा। बाजि चारि महि मारि गिरावा॥
तुरग उठाइ कोपि रघुनायक। खैँचि सरासन छाड़े सायक॥
रावनसिर सरोजबन चारी। चलि रघुबीर सिलीमुख धारी॥
दस दस बान भाल दस मारे। निसरि गए चले रुधिरपनारे॥
स्रवत रुधिर धाएउ बलवाना। प्रभु पुनि कृत धनु सर संधाना॥
तीस तीर रघुबीर पबारे। भुजन्हि समेत सीस महि पारे॥
काटतहीँ पुनि भए नवीने। राम बहोरि भुजा सिर छीने॥
प्रभु बहु बार बाहु सिर हए। कटत झटिति पुनि नूतन भए॥
पुनि पुनि प्रभु काटत भुज बीसा। अति कौतुकी कोसलाधीसा॥
रहे छाइ नभ सिर अरु बाहू। मानहु अमित केतु अरु राहू॥

छंद। जनु राहु केतु अनेक नभपथ स्रवत सोनित धावहीँ।
रघुबीरतीर प्रचंड लागहिँ भूमि गिरन न पावहीँ।
एक एक सर सिरनिकर छेदे नभ उड़त इमि सोहहीँ।
जनु कोपि दिनकर कर निकर जहँ तहँ बिधुंतुद पोहहीँ॥

दोहा। जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर तिमि तिमि होहिँ अपार।
सेवत बिषय बिबर्ध जिमि नित नित नूतन मार ॥९२॥

दसमुख देखि सिरन्ह कै बाढ़ी। बिसरा मरन भई रिस गाढ़ी॥
गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी। धाएउ दसउ सरासन तानी॥
समरभूमि दसकंधर कोप्यो। बरषि बान रघुपतिरथ तोप्यो॥
दंड एक रथु देखि न परेऊ। जनु निहार महु दिनकर दुरेऊ॥
हाहाकार सुरन्ह जब कीन्हा। तब प्रभु कोपि कारमुक लीन्हा॥
सर निवारि रिपु के सिर काटे। ते दिसि बिदिसि गगन महि पाटे॥

काटे सिर नभमारग धावहिँ। जय जय धुनि करि भय उपजावहिँ॥
कहँ लछिमन सुग्रीव कपीसा। कहँ रघुबीर कोसलाधीसा॥ ८

छंद। कहँ रामु कहि सिरनिकर धाए देखि मर्कट भजि चले।
संधानि धनु रघुबंसमनि हसि सरन्हि सिर बेधे भले।
सिरमालिका कर कालिका गहि बृंद बृंदन्हि बहु मिलीँ।
करि रुधिरसरि मज्जनु मनहु संग्राम बट पूजन चलीँ॥ १२

दोहा। पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ छाड़ी सक्ति प्रचंड।
चली बिभीषन सन्मुख मनहु काल कर दंड॥८३॥

आवत देखि सक्ति अति घोरा। प्रनतारतिभंजन पन मोरा॥
तुरत बिभीषनु पाछेँ मेला। सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला॥
लागि सक्ति मुरुछा कछु भई। प्रभु कृत खेलु सुरन्ह बिकलई॥
देखि बिभीषनु प्रभु श्रम पायो। गहि कर गदा क्रुद्ध होइ धायो॥ ४
रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे। तैँ सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे॥
सादर सिव कहुँ सीस चढ़ाए। एक एक के कोटिन्ह पाए॥
तेहि कारन खल अब लगि बाँच्यो। अब तव कालु सीस पर नाच्यो॥
रामबिमुख सठ चह संपदा। अस कहि हनेसि माझ उर गदा॥ ८

छंद। उर माझ गदाप्रहार घोर कठोर लागत महि पर्‌यो।
दस बदन सोनित स्रवत पुनि संभारि धायो रिस भर्‌यो।
द्वौ भिरे अतिबल मल्लजुद्ध बिरुद्ध एकु एकहि हने।
रघुबीरबल दर्पित बिभीषनु घालि नहि ता कहुँ गने॥ १२

दोहा। उमा बिभीषनु रावनहि सन्मुख चितव कि काउ।
सो अब भिरत काल ज्योँ श्रीरघुबीर प्रभाउ॥८४॥

देखा श्रमित बिभीषनु भारी। धाएउ हनूमान गिरि धारी॥
रथ तुरंग सारथी निपाता। हृदय माझ तेहि मारेसि लाता॥
ठाढ़ रहा अति कंपित गाता। गएउ बिभीषनु जहँ जनत्राता॥
पुनि रावन कपि हतेउ पचारी। चलेउ गगन कपि पूँछ पसारी॥ ४
गहिसि पूँछ कपि सहित उड़ाना। पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना॥
लरत अकास जुगल सम जोधा। एकहि एकु हनत करि क्रोधा॥

सोहहिँ नभ छल बल बहु करहीँ। कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीँ॥
बुधिबल निसिचर परै न पारचो। तब मारुतसुत प्रभु संभारचो॥ ८
छंद। संभारि श्रीरघुबीर धीर पचारि कपि रावनु हन्यो।
महि परत पुनि उठि लरत देवन्ह जुगल कहुँ जय जय भन्यो।
हनुमंत संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले।
रनमत्त रावन सकल सुभट प्रचंड भुजबल दलमले॥ १२
दोहा। तब रघुबीर पचारे धाए कीस प्रचंड।
कपिदल प्रबल देखि तेहिँ कीन्ह प्रगट पाषंड॥८५॥
अंतर्धान भएउ छन एका। पुनि प्रगटे खल रूप अनेका॥
रघुपतिकटक भालु कपि जेते। जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते॥
देखे कपिन्ह अमित दससीसा। जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा॥
भागे बानर धरहिँ न धीरा। त्राहि त्राहि लछिमन रघुबीरा॥ ४
दह दिसि धावहिँ कोटिन्ह रावन। गर्जहिँ घोर कठोर भयावन॥
डरे सकल सुर चले पराई। जय कै आस तजहु अब भाई॥
सब सुर जिते एक दसकंधर। अब बहु भए तकहु गिरिकंदर॥
रहे बिरंचि संभु मुनि ज्ञानी। जिन्ह जिन्ह प्रभुमहिमा कछु जानी॥ ८
छंद। जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे।
चले बिचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे।
हनुमंत अंगद नील नल अतिबल लरत रनबाँकुरे।
मर्दहिँ दसानन कोटि कोटिन्ह कपट भू भट अंकुरे॥ १२
दोहा। सुर बानर देखे बिकल हस्यो कोसलाधीस।
सजि सारंग एक सर हते सकल दससीस॥८६॥
प्रभु छन महुँ माया सब काटी। जिमि रबि उएँ जाहिँ तम फाटी॥
रावनु एकु देखि सुर हरषे। फिरे सुमन बहु प्रभु पर बरषे॥
भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे। फिरे एक एकन्ह तब टेरे॥
प्रभुबलु पाइ भालु कपि धाए। तरल तमकि संजुगमहि आए॥ ४
अस्तुति करत देव तेहिँ देखे। भएउँ एक मैं इन्ह के लेखे॥
सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल। अस कहि कोपि गगनपथ धायल॥

हाहाकार करत सुर भागे। खलहु जाहु कहँ मोरें आगे॥
देखि बिकल सुर अंगद धायो। कूदि चरन गहि भूमि गिरायो॥ ८

छंद। गहि भूमि पारयो लात मारयो बालिसुत प्रभु पहिं गयो।
संभारि उठि दसकंठ घोर कठोर रव गर्जत भयो।
करि दाप चाप चढ़ाइ दस संधानि सर बहु बरषई।
किए सकल भट घायल भयाकुल देखि निज बल हरषई॥ १२

दोहा। तब रघुपति रावन के सीस भुजा सर चाप।
काटे बहुत बढ़े पुनि जिमि तीरथ कर पाप॥८७॥

सिर भुज बाढ़ि देखि रिपु केरी। भालु कपिन्ह रिस भई घनेरी॥
मरत न मूढ़ कटेहुँ भुज सीसा। धाए कोपि भालु भट कीसा॥
बालितनय मारुति नल नीला। बानरराज दुबिद बलसीला॥
बिटप महीधर करहिं प्रहारा। सोइ गिरि तरु गहि कपिन्ह सो मारा॥ ४
एक नखन्हि रिपुबपुष बिदारी। भागि चलहिं एक लातन्ह मारी॥
तब नल नील सिरन्हि चढ़ि गए। नखन्हि लिलार बिदारत भए॥
रुधिर देखि बिषाद उर भारी। तिन्हहि धरन कहुँ भुजा पसारी॥
गहे न जाहिं करन्हि पर फिरहीं। जनु जुग मधुप कमलबन चरहीं॥ ८
कोपि कूदि द्वौ धरेसि बहोरी। महि पटकत भजे भुजा मरोरी॥
पुनि सकोप दस धनु कर लीन्हे। सरन्हि मारि घायल कपि कीन्हे॥
हनुमदादि मुरुछित करि बंदर। पाइ प्रदोष हरष दसकंधर॥
मुरुछित देखि सकल कपि बीरा। जामवंत धाएउ रनधीरा॥ १२
संग भालु भूधर तरु धारी। मारन लगे पचारि पचारी॥
भएउ क्रुद्ध रावनु बलवाना। गहि पद महि पटकै भट नाना॥
देखि भालुपति निज दल घाता। कोपि माझ उर मारेसि लाता॥

। छंद।

उर लात घात प्रचंड लागत बिकल रथ तें महि परा। १६
गहँ भालु बीसहुँ कर मनहुँ कमलन्हि बसे निसि मधुकरा।
मुरुछित बिलोकि बहोरि पद हति भालुपति प्रभु पहिं गयो।
निसि जानि स्यंदन घालि तेहि तब सूत जतनु करत भयो॥

दोहा। मुरुछा बिगत भालु कपि सब आए प्रभु पास।
निसिचर सकल रावनहि घेरि रहे अति त्रास ॥८८॥

तेहीँ निसि सीता पहिं जाई। त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई ॥
सिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी। सीता उर भइ त्रास घनेरी ॥
मुख मलीन उपजी मन चिंता। त्रिजटा सन बोलीँ तब सीता ॥
होइहि काह कहसि किन माता। केहि बिधि मरिहि बिस्व दुखदाता ॥
रघुपतिसर सिर कटेहुँ न मरई। बिधि बिपरीत, चरित सब करई ॥
मोर अभाग्य जिआवत ओही। जेहि हौँ हरिपद कमल बिछोही ॥
जेहिँ कृत कपट कनक मृग झूठा। अजहुँ सो दैव मोहि पर रूठा ॥
जेहिँ बिधि मोहि दुख दुसह सहाए। लछिमन कहुँ कटु बचन कहाए ॥
रघुपतिबिरह सबिष सर भारी। तकि तकि मार बार बहु मारी ॥
ऐसेहु दुख जो राख मम प्राना। सोइ बिधि ताहि जिआव न आना ॥
बहु बिधि कर बिलाप जानकी। करि करि सुरति कृपानिधान की ॥
कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी। उर सर लागत मरै सुरारी ॥
प्रभु ता तेँ उर हतै न तेही। एहि कें हृदय बसति बैदेही ॥

छंद। एहि कें हृदय बस जानकी जानकी उर मम बास है।
मम उदर भुवन अनेक लागत बान सब कर नास है।
सुनि बचन हरष बिषाद मन अति देखि पुनि त्रिजटाँ कहा।
अब मरिहि रिपु एहि बिधि सुनहि सुंदरि तजहि संसय महा ॥

दोहा। काटत सिर होइहि बिकल छुटि जाइहि तव ध्यान।
तब रावनहिँ हृदय महुँ मरिहहिँ रामु सुजान ॥८९॥

अस कहि बहुत भाँति समुझाई। पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई ॥
रामसुभाउ सुमिरि बैदेही। उपजी बिरहब्यथा अति तेही ॥
निसिहि ससिहि निंदति बहु भाती। जुग सम भई सिराति न राती ॥
करति बिलाप मनहि मन भारी। रामबिरह जानकी दुखारी ॥
जब अति भएउ बिरह उरदाहू। फरकेउ बाम नयन अरु बाहू ॥
सगुन बिचारि धरी मन धीरा। अब मिलिहहिँ कृपाल रघुबीरा ॥
इहाँ अर्ध निसि रावनु जागा। निज सारथि सन खीझन लागा ॥

सठ रनभूमि छड़ाइसि मोही। धिग धिग अधम मंदमति तोही॥
तेहिं पद गहि बहु बिधि समुझावा। भोरु भएँ रथ चढ़ि पुनि धावा॥
सुनि आगवनु दसानन केरा। कपिदल खरभर भएउ घनेरा॥
जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी। धाए कटकटाइ भट भारी॥

छंद। धाए जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधर धरा।
अति कोप करहिँ प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा।
बिचलाइ दल बलवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावनु लियो।
चहुँ दिसि चपेटन्हि मारि नखन्हि बिदारि तनु ब्याकुल कियो॥

दोहा। देखि महा मर्कट प्रबल रावन कीन्ह बिचार।
अंतरहित होइ निमिष महुँ कृत मायाबिस्तार॥१००॥

जब कीन्ह तेहिं पाषंड। भए प्रगट जंतु प्रचंड।
बेताल भूत पिसाच। कर धरेँ धनु नाराच।
जोगिनि गहेँ करवाल। एक हाथ मनुजकपाल।
करि सद्य सोनित पान। नाचहिँ करहिँ बहु गान।
धरु मारु बोलहिँ घोर। रहि पूरि धुनि चहुँ ओर।
मुख बाइ धावहिँ खान। तब लगे कीस परान।
जहँ जाहिँ मर्कट भागि। तहँ बरत देखहिँ आगि।
भए बिकल बानर भालु। पुनि लाग बरषैं बालु।
जहँ तहँ थकित करि कीस। गर्जेउ बहुरि दससीस।
लछिमन कपीस समेत। भए सकल बीर अचेत।
हा राम हा रघुनाथ। कहि सुभट मीजहिँ हाथ।
एहिँ बिधि सकल बल तोरि। तेहिँ कीन्ह कपट बहोरि।
प्रगटेसि बिपुल हनुमान। धाए गहेँ पाषान।
तिन्ह रामु घेरे जाइ। चहुँ दिसि बरूथ बनाइ।
मारहु धरहु जनि जाइ। कटकटहिँ पूँछ उठाइ।
दह दिसि लँगूर बिराज। तेहि मध्य कोसलराज॥

छंद। तेहि मध्य कोसलराज सुंदर स्याम तन सोभा लही।
जनु इंद्रधनुष अनेक की बर बारि तुंग तमालही।

प्रभु देखि हरष बिषाद उर सुर बदत जय जय जय करी।
रघुबीर एकहि तीर कोपि निमेष महु माया हरी।
माया बिगत कपि भालु हरषे बिटप गिरि गहि सब फिरे।
सरनिकर छाड़े राम रावन बाहु सिर पुनि महि गिरे।
श्रीराम रावन समर चरित अनेक कल्प जो गावहीँ।
सत सेष सारद निगम कवि तेउ तदपि पार न पावहीँ॥

दोहा। ता के गुन गन कछु कहे जड़मति तुलसीदास।
जिमि निज बल अनुरूप तेँ माछी उड़ै अकास॥
काटे सिर भुज बार बहु मरत न भट लंकेस।
प्रभु क्रीड़त सुर सिद्ध मुनि ब्याकुल देखि कलेस॥१०१॥

काटत बढ़हिँ सीससमुदाई। जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई॥
मरै न रिपु स्रम भएउ बिसेषा। राम बिभीषन तन तब देखा॥
उमा कालु मर जाकी ईछा। सो प्रभु कर जन प्रीति परीछा॥
सुनु सर्बज्ञ चराचरनायक। प्रनतपाल सुर मुनि सुखदायक॥
नाभिकुंड पियूष बस या कँ। नाथ जिअत रावनु बल ता कँ॥
सुनत बिभीषनबचन कृपाला। हरषि गहे कर बान कराला॥
असुभ होन लागे तब नाना। रोवहि खर सृकाल बहु स्वाना॥
बोलहिँ खग जग आरति हेतू। प्रगट भए नभ जहँ तहँ केतू॥
दस दिसि दाह होन अति लागा। भएउ परब बिनु रबि उपरागा॥
मंदोदरि उर कंपति भारी। प्रतिमा स्रवहिँ नयनमग बारी॥

छंद। प्रतिमा रुदहिँ पबिपात नभ अति बात बह डोलति मही।
बरषहिँ बलाहक रुधिरु कच रज असुभ अति सक को कही।
उतपात अमित बिलोकि नभ सुर बिकल बोलहिँ जय जये।
सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाप सर जोरत भये॥

दोहा। खैँचि सरासन स्रवन लगि छाड़े सर एकतीस।
रघुनायकसायक चले मानहुँ कालफनीस॥१०२॥

सायक एक नाभिसर सोखा। अपर लगे भुज सिर करि रोषा॥
लै सिर बाहु चले नाराचा। सिर भुज हीन रुंड महि नाचा॥

धरनि धसै धर धाव प्रचंडा। तब सर हति प्रभु कृत दुइ खंडा।।
गर्जेउ मरत घोर रव भारी। कहाँ रामु रन हतौं पचारी।। ४
डोली भूमि गिरत दसकंधर। छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर।।
धरनि परेउ द्वौ खंड बढ़ाई। चापि भालु मर्कट समुदाई।।
मंदोदरि आगें भुज सीसा। धरि सर चले जहाँ जगदीसा।।
प्रबिसे सब निषंग महुँ जाई। देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाई।। ८
तासु तेजु समान प्रभु आनन। हरषे देखि संभु चतुरानन।।
जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा। जय रघुबीर प्रबल भुजदंडा।।
बरषहिं सुमन देव मुनि बृंदा। जय कृपाल जय जयति मुकुंदा।।

छंद। जय कृपाकंद मुकुंद द्वंदहरन सरन सुखप्रद प्रभो। १२
खलदल बिदारन परम कारन कारुनीक सदा बिभो।
सुर सुमन बरषहिं हरष संकुल बाज दुंदुभि गहगही।
संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु सोभा लही।
सिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं। १६
जनु नील गिरि पर तड़ितपटल समेत उड़ुगन भ्राजहीं।
भुजदंड सर कोदंड फेरत रुधिरकन तन अति बने।
जनु रायमुनीं तमाल पर बैठीं बिपुल सुख आपने।।

दोहा। कृपादृष्टि करि बृष्टि प्रभु अभय किए सुरबृंद। २०
भालु कीस सब हरषे जय सुखधाम मुकुंद।।१०३।।

पतिसिर देखत मंदोदरी। मुरुछित बिकल धरनि खसि परी।।
जुबतिबृंद रोवत उठि धाईं। तेहि उठाइ रावन पहिं आईं।।
पतिगति देखि ते करहिं पुकारा। छूटे कच नहि बपुष सँभारा।।
उर ताड़ना करहिं बिधि नाना। रोवत करहिं प्रताप बखाना।। ४
तव बल नाथ डोल नित धरनी। तेजहीन पावक ससि तरनी।।
सेष कमठ सहि सकहिं न भारा। सो तनु भूमि परेउ भरि छारा।।
बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सन्मुख धर काहुँ न धीरा।।
भुजबल जितेहु काल जम साईं। आजु परेहु अनाथ कीं नाईं।। ८
जगतबिदित तुम्हारि प्रभुताई। सुत परिजन बल बरनि न जाई।।

रामबिमुख अस हालु तुम्हारा। रहा न कोउ कुल रोवनिहारा॥
तव बस बिधिप्रपंच सब नाथा। सभय दिसिप नित नावहिं माथा॥
अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं। रामबिमुख यह अनुचित नाहीं॥ १२
काल बिबस पति कहा न माना। अग जग नाथु मनुज करि जाना॥

छंद। जानेउ मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं।
जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर पिअ भजेहु नहि करुनामयं।
आजन्म तें परद्रोह रत पापौघ मय तव तनु अयं। १६
तुम्हहूँ दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं॥

दोहा। अहह नाथ रघुनाथ सम कृपासिंधु नहि आन।
जोगिबृंद दुर्लभ गति तोहि दीन्हि भगवान॥१०४॥

मंदोदरीबचन सुनि काना। सुर मुनि सिद्ध सबन्हि सुखु माना॥
अज महेस नारद सनकादी। जे मुनिबर परमारथबादी॥
भरि लोचन रघुपतिहि निहारी। प्रेममगन सब भए सुखारी॥
रुदनु करत देखी सब नारी। गएउ बिभीषनु मन दुख भारी॥ ४
बंधुदसा बिलोकि दुख कीन्हा। तब प्रभु अनुजहि आएसु दीन्हा॥
लछिमन तेहि बहु बिधि समुझायो। बहुरि बिभीषनु प्रभु पहि आयो॥
कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका। करहु क्रिया परिहरि सब सोका॥
कीन्हि क्रिया प्रभु आएसु मानी। बिधिवत देस काल जिय जानी॥ ८

दोहा। मंदोदरी आदि सब देइ तिलांजलि ताहि।
भवन गईं रघुपति गुन गन बरनत मन माहि॥१०५॥

आइ बिभीषनु पुनि सिरु नायो। कृपासिंधु तब अनुज बोलायो॥
तुम्ह कपीस अंगद नल नीला। जामवंत मारुति नयसीला॥
सब मिलि जाहु बिभीषनसाथा। सारेहु तिलकु कहेउ रघुनाथा॥
पिताबचन मैं नगर न आवौं। आपु सरिस कपि अनुज पठावौं॥ ४
तुरत चले कपि सुनि प्रभुबचना। कीन्ही जाइ तिलक कै रचना॥
सादर सिंघासन बैठारी। तिलकु सारि अस्तुति अनुसारी॥
जोरि पानि सबहीं सिर नाए। सहित बिभीषन प्रभु पहि आए॥
तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे। कहि प्रिय बचन सुखी सब कीन्हे॥ ८

छंद। किए सुखी कहि बानी सुधा सम बल तुम्हारें रिपु हयो।
पायो बिभीषन राजु तिहुँ पुर जसु तुम्हारो नित नयो।
मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं।
संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाइहैं॥ १२

दोहा। प्रभु के बचन श्रवन सुनि नहि अघाहिं कपिपुंज।
बार बार सिर नावहिं गहहिं सकल पद कंज॥१०६॥

पुनि प्रभु बोलि लिएउ हनुमाना। लंका जाहु कहेउ भगवाना॥
समाचार जानकिहि सुनावहु। तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु॥
तब हनुमंत नगर महुँ आए। सुनि निसिचरी निसाचर धाए॥
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही। जनकसुता देखाइ पुनि दीन्ही॥ ४
दूरिहि तें प्रनाम कपि कीन्हा। रघुपतिदूत जानकीं चीन्हा॥
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता। कुसल अनुज कपि सेन समेता॥
सब बिधि कुसल कोसलाधीसा। मातु समर जीत्यो दससीसा॥
अबिचल राजु बिभीषन पायो। सुनि कपिबचन हरष उर छायो॥ ८

छंद। अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा।
का देउँ तोहि त्रैलोक महुँ कपि किमपि नहि बानी समा।
सुनु मातु मैं पायो अखिल जग राजु आजु न संसयं।
रन जीति रिपुदल बंधु जुत पस्यामि राममनामयं॥ १२

दोहा। सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदय बसहुँ हनुमंत।
सानुकूल कोसलपति रहहुँ समेत अनंत॥१०७॥

अब सोइ जतनु करहु तुम्ह ताता। देखौं नयन स्याम मृदु गाता॥
तब हनुमान राम पहि जाई। जनकसुता कै कुसल सुनाई॥
सुनि संदेसु भानुकुलभूषन। बोलि लिए जुवराज बिभीषन॥
मारुतसुत कें संग सिधावहु। सादर जनकसुतहि लै आवहु॥ ४
तुरतहि सकल गए जहँ सीता। सेवहिं सब निसिचरीं बिनीता॥
बेगि बिभीषन तिन्हहि सिखायो। तिन्ह बहु बिधि मज्जनु करवायो॥
बहु प्रकार भूषन पहिराए। सिबिका रुचिर साजि पुनि ल्याए॥
ता पर हरषि चढ़ी बैदेही। सुमिरि राम सुखधाम सनेही॥ ८

बेतपानि रच्छक चहुँ पासा। चले सकल मन परम हुलासा॥
देखन भालु कीस सब आए। रच्छक कोपि निवारन धाए॥
कह रघुबीर कहा मम मानहु। सीतहि सखा पयादें आनहु॥
देखहुँ कपि जननी की नाईं। बिहसि कहा रघुनाथ गोसाईं॥
सुनि प्रभुबचन भालु कपि हरषे। नभ तें सुरन्हसु मन बहु बरषे॥
सीता प्रथम अनल महु राखी। प्रगट कीन्हि चह अंतर साखी॥

दोहा। तेहि कारन करुनानिधि कहे कछुक दुर्बाद।
सुनत जातुधानी सब लागीं करैं बिषाद॥१०८॥

प्रभु के बचन सीस धरि सीता। बोलीं मन क्रम बचन पुनीता॥
लछिमन होहु धरम के नेगी। पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी॥
सुनि लछिमन सीता कै बानी। बिरह बिबेक धर्मनुति सानी॥
लोचन सजल जोरि कर दोऊ। प्रभु सन कछु कहि सकत न ओऊ॥
देखि रामरुख लछिमनु धाए। पावक प्रगटि काठ बहु लाए॥
पावक प्रबल देखि बैदेही। हृदय हरष नहि भय कछु तेही॥
जौं मन बच क्रम मम उर माहीं। तजि रघुबीर आन गति नाहीं॥
तौ कृसानु सब कै गति जाना। मो कहुँ होउ श्रीखंड समाना॥

छंद। श्रीखंड सम पावक प्रबेसु कियो सुमिरि प्रभु मैथिली।
जय कोसलेस महेसबंदित चरन रति अति निर्मली।
प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महुँ जरे।
प्रभुचरित काहुँ न लखे नभ सुर सिद्ध मुनि देखहिँ खरे।
धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो।
जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो।
सो राम बाम बिभाग राजति रुचिर अति सोभा भली।
नव नील नीरज निकट मानहु कनकपंकज की कली॥

दोहा। बरषहिँ सुमन हरषि सुर बाजहिँ गगन निसान।
गावहिँ किंनर सुरबधू नाचहिँ चढ़ी बिमान।
जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार।
देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुखसार॥१०९॥

तब रघुपति अनुसासन पाई । मातलि चलेउ चरन सिरु नाई ॥
आए देव सदा स्वारथी । बचन कहहिं जनु परमारथी ॥
दीनबंधु दयाल रघुराया । देव कीन्हि देवन्ह पर दाया ॥
बिस्वद्रोह रत यह खल कामी । निज अघ गएउ कुमारगगामी ॥ ४
तुम्ह समरूप ब्रह्म अबिनासी । सदा एकरस सहज उदासी ॥
अकल अगुन अज अनघ अनामय । अजित अमोघसक्ति करुनामय ॥
मीन कमठ सूकर नरहरी । बामन परसुराम बपु धरी ॥
जब जब नाथ सुरन्ह दुखु पायो । नाना तन धरि तुम्हइँ नसायो ॥ ८
यह खल मलिन सदा सुरद्रोही । काम लोभ मद रत अति कोही ॥
अधमसिरोमनि तव पद पावा । यह हमरेँ मन बिसमय आवा ॥
हम देवता परम अधिकारी । स्वारथरत प्रभुभगति बिसारी ॥
भवप्रवाह संतत हम परे । अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे ॥ १२

दोहा । करि बिनती सुर सिद्ध सब रहे जहँ तहँ कर जोरि ।
अति सप्रेम तन पुलकि बिधि अस्तुति करत बहोरि ॥११०॥

जय राम सदा सुखधाम हरे । रघुनायक सायक चाप धरे ।
भव बारन दारन सिंह प्रभो । गुनसागर नागर नाथ बिभो ।
तन काम अनेक अनूप छबी । गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कबी ।
जसु पावन रावन नाग महा । खगनाथ जथा करि कोप गहा । ४
जनरंजन भंजन सोक भयं । गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं ।
अवतार उदार अपार गुनं । महिभार बिभंजन ज्ञानघनं ।
अज ब्यापकमेकमनादि सदा । करुनाकर राम नमामि मुदा ।
रघुबंसबिभूषन दूषनहा । कृत भूप बिभीषनु दीनु रहा । ८
गुन ज्ञान निधान अमान अजं । नित राम नमामि बिभुं बिरजं ।
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं । खलबृंद निकंद महाकुसलं ।
बिनु कारन दीनदयाल हितं । छबिधाम नमामि रमासहितं ।
भवतारन कारन काज परं । मनसंभव दारुन दोष हरं । १२
सर चाप मनोहर त्रोन धरं । जलजारुन लोचन भूपबरं ।
सुखमंदिर सुंदर श्रीरमनं । मद मार मुधा ममता समनं ।

अनवद्य अखंड न गोचर गो। सब रूप सदा सब होइ न सो।
इति बेद बदंति न दंतकथा। रबि आतप भिन्नमभिन्न जथा। १६
कृतकृत्य बिभो सब बानर ए। निरखंति तवानन सादर जे।
धिग जीवन देवसरीर हरे। तव भक्ति बिना भव भूलि परे।
अब दीनदयाल दया करिए। मति मोरि बिभेदकरी हरिए।
जेहि तेँ बिपरीत क्रिया करिए। दुख सो सुखु मानि सुखी चरिए। २०
खलखंडन मंडन रम्य छमा। पद पंकज सेवित संभु उमा।
नृपनायक दे बरदानमिदं। चरनांबुज प्रेमु सदा सुभदं॥

दोहा। बिनय कीन्हि चतुरानन प्रेम पुलकि अति गात।
सोभासिंधु बिलोकत लोचन नहीँ अघात॥१११॥ २४

तेहि अवसर दसरथु तहँ आए। तनय बिलोकि नयन जल छाए॥
अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा। आसिर्बाद पिता तब दीन्हा॥
तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ। जीत्यो अजय निसाचरराऊ॥
सुनि सुतबचन प्रीति अति बाढ़ी। नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी॥ ४
रघुपति प्रथम प्रेमु अनुमाना। चितै पितहि दीन्हेउ दृढ़ ज्ञाना॥
ता तेँ उमा मोच्छ नहि पायो। दसरथ भेदभगति मनु लायो॥
सगुनोपासक मोच्छ न लेहीँ। तिन्ह कहुँ रामु भगति निज देहीँ॥
बार बार करि प्रभुहि प्रनामा। दसरथ हरषि गए सुरधामा॥ ८

दोहा। अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीस।
सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुर ईस॥११२॥

जय राम सोभाधाम। दायक प्रनत बिश्राम।
धृत त्रोन बर सर चाप। भुजदंड प्रबल प्रताप।
जय दूषनारि खरारि। मर्दन निसाचरधारि।
यह दुष्ट मारेउ नाथ। भए देव सकल सनाथ। ४
जय हरन धरनीभार। महिमा उदार अपार।
जय रावनारि कृपाल। किए जातुधान बिहाल।
लंकेस अति बल गर्ब। किए बस्य सुर गंधर्ब।
मुनि सिद्ध नर खग नाग। हठि पंथ सब कैँ लाग। ८

परद्रोह रत अति दुष्ट। पायो सो फलु पापिष्ट।
अब सुनहु दीनदयाल। राजीवनयन बिसाल।
मोहि रहा अति अभिमान। नहि कोउ मोहि समान।
अब देखि प्रभुपद कंज। गत मान प्रद दुखपुंज। १२
कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव। अव्यक्त जेहि श्रुति गाव।
मोहि भाव कोसलभूप। श्रीरामु सगुनसरूप।
बैदेहि अनुज समेत। मम हृदय करहु निकेत।
मोहि जानिएँ निज दास। दे भक्ति रमानिवास॥ १६

छंद। दे भक्ति रमानिवास त्रासहरन सरन सुखदायकं।
सुखधाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं।
सुरबृंद रंजन द्वंदभंजन मनुजतनु अतुलितबलं।
ब्रह्मादि संकर सेब्य राम नमामि करुनाकोमलं॥ २०

दोहा। अब करि कृपा बिलोकि मोहि आएसु देहु कृपाल।
काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल॥११३॥

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे। परे भूमि निसिचरन्हि जे मारे॥
मम हित लागि तजे इन्ह प्राना। सकल जिआउ सुरेस सुजाना॥
सुनु खगेस प्रभु कै येह बानी। अति अगाध जानहिँ मुनि ग्यानी॥
प्रभु सक त्रिभुवन मारि जिआई। केवल सक्रहि दीन्हि बड़ाई॥ ४
सुधा बरषि कपि भालु जिआए। हरषि उठे सब प्रभु पहिँ आए॥
सुधाबृष्टि भै दुहुँ दल ऊपर। जिए भालु कपि नहि रजनीचर॥
रामाकार भए तिन्ह के मन। मुक्त भए छूटे भवबंधन॥
सुर अंसिक सब कपि अरु रीछा। जिए सकल रघुपति कीँ ईछा॥ ८
राम सरिस को दीनहितकारी। कीन्हे मुक्त निसाचर झारी॥
खल मलधाम कामरत रावन। गति पाई जो मुनिबर पाव न॥

दोहा। सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान।
देखि सुअवसरु प्रभु पहि आएउ संभु सुजान। १२
परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि बारि।
पुलकित तनु गदगद गिरा बिनय करत त्रिपुरारि॥११४॥

मामभिरक्षय रघुकुलनायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक।
मोह महा घनपटल प्रभंजन। संसय बिपिन अनल सुररंजन।
अगुन सगुन गुनमंदिर सुंदर। भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर।
काम क्रोध मद गज पंचानन। बसहु निरंतर जनमन कानन।
बिषय मनोरथ पुंज कंजवन। प्रबल तुषार उदार पारमन।
भव बारिधि मंदर परमं दर। बारय तारय संसृति दुस्तर।
स्याम गात राजीव बिलोचन। दीनबंधु प्रनतारति मोचन।
अनुज जानकी सहित निरंतर। बसहु राम नृप मम उर अंतर।
मुनिरंजन महिमंडल मंडन। तुलसिदास प्रभु त्रास बिखंडन॥

दोहा। नाथ जबहि कोसलपुरीं होइहि तिलक तुम्हार।
कृपासिंधु मैं आउब देखन चरित उदार॥११५॥

करि बिनती जब संभु सिधाए। तब प्रभु निकट बिभीषनु आए॥
नाइ चरन सिरु कह मृदु बानी। बिनय सुनहु प्रभु सारँगपानी॥
सकुल सदल प्रभु रावन मार्‍यो। पावन जसु त्रिभुवन बिस्तार्‍यो॥
दीन मलीन हीन मति जाती। मो पर कृपा कीन्हि बहु भाती॥
अब जनगृह पुनीत प्रभु कीजे। मज्जनु करिअ समरश्रम छीजे॥
देखि कोस मंदिर संपदा। देहु कृपाल कपिन्ह कहुँ मुदा॥
सब बिधि नाथ मोहि अपनाइअ। पुनि मोहि सहित अवधपुर जाइअ॥
सुनत बचन मृदु दीनदयाला। सजल भए द्वौ नयन बिसाला॥

दोहा। तोर कोस गृह मोर सब सत्य बचन सुनु भ्रात।
भरतदसा सुमिरत मोहि निमिष कल्प सम जात॥
तापस बेष गात कृस जपत निरंतर मोहि।
देखौं बेगि सो जतनु करु सखा निहोरौं तोहि॥
बीते अवधि जाउँ जौ जिअत न पावौं बीर।
सुमिरत अनुजप्रीति प्रभु पुनि पुनि पुलक सरीर॥
करेहु कल्प भरि राजु तुम्ह मोहि सुमिरेहु मन माहिं।
पुनि मम धाम पाइहहु जहाँ संत सब जाहिं॥११६॥

सुनत बिभीषन बचन राम के। हरषि गहे पद कृपाधाम के॥

बानर भालु सकल हरषाने। गहि प्रभुपद गुन बिमल बखाने॥
बहुरि बिभीषनु भवन सिधायो। मनिगन बसन बिमान भरायो॥
लै पुष्पक प्रभु आगेँ राखा। हसि करि कृपासिंधु तब भाषा॥
चढ़ि बिमान सुनु सखा बिभीषन। गगन जाइ बरषहु पट भूषन॥
नभ पर जाइ बिभीषन तबही। बरषि दिए मनि अंबर सबही॥
जोइ जोइ मन भावै सोइ लेहीँ। मनि मुख मेलि डारि कपि देहीँ॥
हसे रामु श्री अनुज समेता। परम कौतुकी कृपानिकेता॥

दोहा। मुनि जेहि ध्यान न पावहिँ नेति नेति कह बेद।
कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन करत अनेक बिनोद॥
उमा जोग जप दान तप नाना मख ब्रत नेम।
रामु कृपा नहि करहिँ तसि जसि निष्केवल प्रेम॥११७॥

भालु कपिन्ह पट भूषन पाए। पहिरि पहिरि रघुपति पहि आए॥
नाना जिनस देखि सब कीसा। पुनि पुनि हसत कोसलाधीसा॥
चितै सबन्ह पर कीन्ही दाया। बोले मृदुल बचन रघुराया॥
तुम्हरेँ बल मैँ रावनु मार्‌यो। तिलकु बिभीषन कहुँ पुनि सार्‌यो॥
निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू। सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू॥
सुनत बचन प्रेमाकुल बानर। जोरि पानि बोले सब सादर॥
प्रभु जोइ कहहु तुम्हहि सब सोहा। हमरे होत बचन सुनि मोहा॥
दीन जानि कपि किए सनाथा। तुम्ह त्रैलोक ईस रघुनाथा॥
सुनि प्रभुबचन लाज हम मरहीँ। मसक कहूँ खगपतिहित करहीँ॥
देखि रामरुख बानर रीछा। प्रेममगन नहि गृह कै ईछा॥

दोहा। प्रभुप्रेरित कपि भालु सब रामरूप उर राखि।
हरष बिषाद सहित चले बिनय बिबिध बिधि भाषि॥
कपिपति नील रीछपति अंगद नल हनुमान।
सहित बिभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान॥
कहि न सकहिँ कछु प्रेमबस भरि भरि लोचन बारि।
सन्मुख चितवहिँ राम तन नयन निमेष निवारि॥११८॥

अतिसय प्रीति देखि रघुराई। लीन्हे सकल बिमान चढ़ाई॥

मन महुँ बिप्रचरन सिरु नायो। उत्तर दिसिहि बिमानु चलायो॥
चलत बिमानु कोलाहलु होई। जय रघुबीर कहै सबु कोई॥
सिंघासनु अति उच्च मनोहर। श्री समेत प्रभु बैठे ता पर॥ ४
राजत रामु सहित भामिनी। मेरुसृंग जनु घनु दामिनी॥
रुचिर बिमानु चलेउ अति आतुर। कीन्ही सुमनबृष्टि हरषे सुर॥
परम सुखद चलि त्रिबिध बयारी। सागर सर सरि निर्मल बारी॥
सगुन होहि सुंदर चहुँ पासा। मंन प्रसन्न निर्मल नभ आसा॥ ८
कह रघुबीर देखु रन सीता। लछिमन इहाँ हत्यो इँद्रजीता॥
हनूमान अंगद के मारे। रनमहि परे निसाचर भारे॥
कुंभकरन रावन द्वौ भाई। इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई॥
दोहा। इहाँ सेतु बाँध्यो अरु थापेउँ सिव सुखधाम। १२

सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम॥
जहँ जहँ कृपासिंधु बन कीन्ह बास बिश्राम।
सकल देखाए जानकिहि कहे सबन्हि के नाम॥११९॥

तुरत बिमानु तहाँ चलि आवा। दंडक बन जहँ परम सुहावा॥
कुंभजादि मुनिनायक नाना। गए रामु सब कें अस्थाना॥
सकल रिषिन्ह सन पाइ असीसा। चित्रकूट आए जगदीसा॥
तहँ करि मुनिन्ह केर संतोषा। चला बिमानु तहाँ तें चोखा॥ ४
बहुरि राम जानकिहि देखाई। जमुना कलिमल हरनि सोहाई॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता। राम कहा प्रनाम करु सीता॥
तीरथपति पुनि देखु प्रयागा। निरखत जन्म कोटि अघ भागा॥
देखु परम पावनि पुनि बेनी। हरनि सोक हरिलोक निसेनी॥ ८
पुनिं देखु अवधपुरी अति पावनि। त्रिबिध ताप भवरोग नसावनि॥

। दोहा ।

सीता सहित अवध कहुँ कीन्ह कृपाल प्रनामु।
सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरषित रामु॥
पुनि प्रभु आइ त्रिबेनी हरषित मज्जनु कीन्ह। १२
कपिन्ह सहित बिप्रन्ह कहुँ दान बिबिध बिधि दीन्ह॥१२०॥

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई। धरि बटुरूप अवधपुर जाई॥
भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु। समाचार लै तुम्ह चलि आएहु॥
तुरत पवनसुत गवनत भएऊ। तब प्रभु भरद्वाज पहिं गएऊ॥
नाना बिधि मुनि पूजा कीन्ही। अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही॥ ४
मुनिपद बंदि जुगल कर जोरी। चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी॥
इहाँ निषाद सुना प्रभु आए। नाव नाव कह लोग बोलाए॥
सुरसरि नाघि जान तब आयो। उतरेउ तट प्रभु आएसु पायो॥
तब सीता पूजी सुरसरी। बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी॥ ८
दीन्हि असीस हरषि मन गंगा। सुंदरि तव अहिवात अभंगा॥
सुनत गुहा धाएउ प्रेमाकुल। आएउ निकट परम सुख संकुल॥
प्रभुहि सहित बिलोकि बैदेही। परेउ अवनि तनसुधि नहि तेही॥
प्रीति परम बिलोकि रघुराई। हरषि उठाइ लियो उर लाई॥ १२

छंद। लियो हृदय लाइ कृपानिधान सुजानराय रमापती।
बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो कर बीनती।
अब कुसल पद पंकज बिलोकि बिरंचि संकर सेब्य जे।
सुखधाम पूरनकाम राम नमामि राम नमामि ते। १६
सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यौं उर लाइयो।
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोहबस बिसराइयो।
यह रावनारिचरित्र पावन रामपद रतिप्रद सदा।
कामादि हर बिज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा॥ २०

दोहा। समरबिजय रघुबीर के चरित जे सुनहिं सुजान।
बिजय बिबेक बिभूति नित तिन्हहि देहिं भगवान॥
यह कलिकाल मलायतन मन करि देखु बिचार।
श्रीरघुनाथनाम्रु तजि नाहिन आन अधार॥१२१॥ २४

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलविज्ञानसंपादनो नाम
षष्ठः सोपानः समाप्तः॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभाय नमः

केकीकंठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बंधुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामं ॥ १ ॥
कोसलेंद्रपदकंजमंजुलौ कोमलावजमहेशवंदितौ ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिंतकस्य मनभृंगसंगिनौ ॥ २ ॥
कुंदइंदुदरगौरसुंदरं अंबिकापतिमभीष्टसिद्धिदं ।
कारुणीककलकंजलोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनं ॥ ३ ॥

दोहा । रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ।
जहँ तहँ सोचहिँ नारि नर कृसतन रामवियोग ॥
सगुन होहिँ सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर ।
प्रभु आगवन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर ॥
कौसल्यादि मातु सब मन अनंद अस होइ ।
आए प्रभु श्री अनुज जुत कहन चहत अब कोइ ॥
भरत नयन भुज दच्छिन फरकत बारहि बार ।
जानि सगुन मन हरष अति लागे करँ बिचार ॥

रहेउ एकु दिनु अवधि अधारा । समुझत मन दुख भएउ अपारा ॥
कारन कवन नाथु नहि आएउ । जानि कुटिल किधौँ मोहि बिसराएउ ॥
अहह धन्य लछिमनु बड़भागी । रामपदारबिंद अनुरागी ॥
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा । ता तेँ नाथ संग नहिँ लीन्हा ॥
जौ करनी समुझै प्रभु मोरी । नहि निस्तार कलप सत कोरी ॥
जन अवगुन प्रभु मान न काऊ । दीनबंधु अति मृदुल सुभाऊ ॥
मोरेँ जिय भरोस दृढ़ सोई । मिलिहहिँ रामु सगुन सुभ होई ॥
बीते अवधि रहहिँ जौ प्राना । अधम कवन जग मोहि समाना ॥

दोहा। रामबिरह सागर महुँ भरत मगनमन होत।
विप्ररूप धरि पवनसुत आइ गएउ जनु पोत॥
बैठे देखि कुसासन जटामुकुट कृसगात।
राम राम रघुपति जपत स्रवत नयन जलजात॥ १॥

देखत हनूमान अति हरषेउ। पुलक गात लोचन जलु बरषेउ॥
मन महुँ बहुत भाँति सुख मानी। बोलेउ श्रवन सुधा सम बानी॥
जासु बिरह सोचहु दिनु राती। रटहु निरंतर गुन गन पाँती॥
रघुकुलतिलक सो जन सुखदाता। आएउ कुसल देव मुनि त्राता॥
रिपु रन जीति सुजसु सुर गावत। सीता अनुज सहित पुर आवत॥
सुनत बचन बिसरे सब दूखा। तृषावंत जिमि पाव पियूषा॥
को तुम्ह तात कहाँ तेँ आए। मोहि परम प्रिय बचन सुनाए॥
मारुतसुत मैँ कपि हनुमाना। नाम मोर सुनु कृपानिधाना॥
दीनबंधु रघुपति कर किंकर। सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर॥
मिलत प्रेमु नहि हृदय समाता। नयन स्रवत जल पुलकित गाता॥
कपि तव दरस सकल दुख बीते। मिले आजु मोहि रामु पिरीते॥
बार बार बूझी कुसलाता। तो कहुँ देउँ काह सुनु भ्राता॥
एहि संदेस सरिस जग माहीँ। करि बिचार देखेउँ कछु नाहीँ॥
नाहिन तात उरिन मैँ तोही। अब प्रभुचरित सुनावहु मोही॥
तब हनुमंत नाइ पद माथा। कहे सकल रघुपति गुन गाथा॥
कहु कपि कबहुँ कृपाल गोसाईँ। सुमिरहिँ मोहि दास कीँ नाईँ॥

छंद। निज दास ज्योँ रघुबंसभूषन कबहुँ मम सुमिरन करयो।
सुनि भरतबचन बिनीत अति कपि पुलकि तन चरनन्हि परयो।
रघुबीर निज मुख जासु गुन गन कहत अग जग नाथ जो।
काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सदगुनसिंधु सो॥

दोहा। राम प्रानप्रिय नाथ तुम्ह सत्य बचन मम तात।
पुनि पुनि मिलत भरत सुनि हरष न हृदय समात॥

सोरठा। भरतचरन सिरु नाइ तुरत गएउ कपि राम पहिँ।
कहीँ कुसल सब जाइ हरषि चलेउ प्रभु जान चढ़ि॥ २॥

हरषि भरत कोसलपुर आए। समाचार सब गुरहि सुनाए॥
पुनि मंदिर महुँ बात जनाई। आवत नगर कुसल रघुराई॥
सुनत सकल जननी उठि धाईं। कहि प्रभु कुसल भरत समुझाईं॥
समाचार पुरबासिन्ह पाए। नर अरु नारि हरषि सब धाए॥
दधि दुर्बा रोचन फल फूला। नव तुलसीदल मंगलमूला॥
भरि भरि हेमथार भामिनी। गावत चलिं सिंधुरगामिनी॥
जे जैसें तैसेहिं उठि धावहिं। बाल बृद्ध कहुँ संग न लावहिं॥
एक एकन्ह कहुँ बूझहिं भाई। तुम्ह देखे दयाल रघुराई॥
अवधपुरी प्रभु आवत जानी। भई सकल सोभा कै खानी॥
भइ सरऊ अति निर्मल नीरा। बहै सुहावन त्रिबिध समीरा॥

दोहा। हरषित गुर परिजन अनुज भूसुरबृंद समेत।
चले भरत अति प्रेम मन सन्मुख कृपानिकेत॥
बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह निरखहिं गगन बिमान।
देखि मधुर स्वर हरषित करहिं सुमंगल गान॥
राकाससि रघुपति पुर सिंधु देखि हरषान।
बढ़ेउ कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान॥ ३॥

इहाँ भानुकुल कमल दिवाकर। कपिन्ह देखावत नगरु मनोहर॥
सुनु कपीस अंगद लंकेसा। पावन पुरी रुचिर यह देसा॥
जद्यपि सब बैकुंठ बखाना। बेद पुरान बिदित जगु जाना॥
अवध सरिस प्रिय मोहि न सोऊ। यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ॥
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिसि बह सरऊ पावनि॥
जा मज्जन तें बिनहिं प्रयासा। मम समीप नर पावहिं बासा॥
अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी। मम धामदा पुरी सुखरासी॥
हरषे सब कपि सुनि प्रभुबानी। धन्य अवध जो राम बखानी॥

दोहा। आवत देखि लोग सब कृपासिंधु भगवान।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि बिमान॥
उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि तुम्ह कुबेर पहिं जाहु।
प्रेरित राम चलेउ सो हरष बिरह अति ताहु॥ ४॥

आए भरत संग सब लोगा। कृसतन श्रीरघुबीरबियोगा॥
बामदेव बसिष्ठ मुनिनायक। देखे प्रभु महि धरि धनु सायक॥
धाइ गहे गुरचरन सरोरुह। अनुज सहित अति पुलक तनोरुह॥
भेटि कुसल बूझी मुनिराया। हमरे कुसल तुम्हारिहिँ दाया॥ ४
सकल द्विजन्ह मिलि नाएउ माथा। धर्मधुरंधर रघुकुलनाथा॥
गहे भरत पुनि प्रभुपद पंकज। नमत जिन्हहिँ सुर मुनि संकर अज॥
परे भूमि नहिँ उठत उठाए। बर करि कृपासिंधु उर लाए॥
स्यामल गात रोम भए ठाढ़े। नव राजीव नयन जल बाढ़े॥ ८

। छंद ।

राजीव लोचन स्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी।
अति प्रेम हृदय लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवनधनी।
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो पहिँ जाति नहि उपमा कही।
जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बर परमा लही। १२
बूझत कृपानिधि कुसल भरतहि बचनु बेगि न आवई।
सुनु सिवा सो सुख बचन मन तेँ भिन्न जान जो पावई।
अब कुसल कोसलनाथ आरत जानि जन दरसनु दियो।
बूड़त बिरह बारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो॥ १६

दोहा। पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन भेटे हृदय लगाइ।
लछिमनु भरतु मिले तब परम प्रेम दोउ भाइ॥ ५॥

भरतानुज लछिमनु पुनि भेटे। दुसह बिरहसंभव दुख मेटे॥
सीताचरन भरत सिरु नावा। अनुज समेत परम सुख पावा॥
प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी। जनित बियोग बिपति सब नासी॥
प्रेमातुर सब लोग निहारी। कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी॥ ४
अमित रूप प्रगटे तेहिँ काला। जथाजोग मिले सबहि कृपाला॥
कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी। किए सकल नर नारि बिसोकी॥
छन महुँ सबहि मिले भगवाना। उमा मरमु यह काहुँ न जाना॥
एहि बिधि सबहि सुखी करि रामा। आगे चले सील गुन धामा॥ ८
कौसल्यादि मातु सब धाईं। निरखि बच्छ जनु धेनु लवाईं॥

छंद। जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन बन परबस गईं।
दिन अंत पुर रुख स्रवत थन हुंकार करि धावत भईं।
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेटीं बचन मृदु बहु बिधि कहे। १२
गइ बिषम बिपति बियोगभव तिन्ह हरष सुख अगनित लहे॥

दोहा। भेटेउ तनय सुमित्राँ रामचरन रति जानि।
रामहि मिलत कैकई हृदय बहुत सकुचानि॥
लछिमनु सब मातन्ह मिलि हरषे आसिष पाइ। १६
कैकइ कहुँ पुनि पुनि मिले मन कर छोभ न जाइ॥ ६॥

सासुन्ह सबन्ह मिली बैदेही। चरनन्हि लागि हरष अति तेही॥
देहिँ असीस बूझि कुसलाता। होउ अचल तुम्हार अहिवाता॥
सब रघुपतिमुख कमल बिलोकहिँ। मंगल जानि नयनजल रोकहिँ॥
कनकथार आरती उतारहिँ। बार बार प्रभुगात निहारहिँ॥ ४
नाना भाँति निछावरि करहीँ। परमानंद हरष उर भरहीँ॥
कौसल्या पुनि पुनि रघुबीरहि। चितवति कृपासिंधु रनधीरहि॥
हृदय बिचारति बारहि बारा। कवन भाँति लंकापति मारा॥
अति सुकुमार जुगल मेरे बारे। निसिचर सुभट महाबल भारे॥ ८

। दोहा।

लछिमन अरु सीता सहित प्रभुहि बिलोकति मात।
परमानंद मगन मन पुनि पुनि पुलकित गात॥ ७॥

लंकापति कपीस नल नीला। जामवंत अंगद सुभसीला॥
हनुमदादि सब बानर बीरा। धरे मनोहर मनुजसरीरा॥
भरत सनेहु सील ब्रत नेमा। सादर सब बरनहिँ अति प्रेमा॥
देखि नगरबासिन्ह कै रीती। सकल सराहहिँ प्रभुपद प्रीती॥ ४
पुनि रघुपति सब सखा बोलाए। मुनिपद लागन कुसल सिखाए॥
गुर बसिष्ठ कुलपूज्य हमारे। इन्ह की कृपा दनुज रन मारे॥
ए सब सखा सुनहुँ मुनि मेरे। भए समर सागर कहुँ बेरे॥
मम हित लागि जन्म इन्ह हारे। भरतहु तेँ मोहि अधिक पिआरे॥ ८
सुनि प्रभुबचन मगन सब भए। निमिष निमिष उपजत सुख नए॥

दोहा। कौसल्या के चरनन्हिं पुनितिन्ह नाएउ माथ।
आसिष दीन्हि हरषि तुम्ह प्रिय मम जिमि रघुनाथ॥
सुमनबृष्टि नभ संकुल भवन चले सुखकंद। १२
चढ़ी अटारिन्ह देखहिँ नगर नारि बर बृंद॥८॥

कंचन कलस बिचित्र सँवारे। सबहिँ धरे सजि निज निज द्वारे॥
बंदनवार पताका केतू। सबन्हि बनाए मंगलहेतू॥
बीथीँ सकल सुगंध सिचाईँ। गजमनि रचि बहु चौक पुराईँ॥
नाना भाँति सुमंगल साजे। हरषि नगर निसान बहु बाजे॥ ४
जहँ तहँ नारि निछावरि करहीँ। देहिँ असीस हरष उर भरहीँ॥
कंचनथार आरती नाना। जुवती सजेँ करहिँ सुभ गाना॥
करहिँ आरती आरतिहर कैँ। रघुकुल कमल बिपिन दिनकर कैँ॥
पुर सोभा संपति कल्याना। निगम सेष सारदा बखाना॥ ८
तेउ येह चरित देखि ठगि रहहीँ। उमा तासु गुन नर किमि कहहीँ॥

। दोहा।

नारि कुमुदिनी अवध सर रघुपतिबिरह दिनेस।
अस्त भएँ बिगसत भईँ निरखि राम राकेस॥
होहिँ सगुन सुभ बिबिध बिधि बाजहिँ नाक निसान। १२
पुर नर नारि सनाथ करि भवन चले भगवान॥८॥

प्रभु जानी कैकई लजानी। प्रथम तासु गृह गए भवानी॥
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा। पुनि निज भवन गवनु हरि कीन्हा॥
कृपासिंधु जब मंदिर गए। पुर नर नारि सुखी सब भए॥
गुर बसिष्ठ द्विज लिए बोलाई। आजु सुघरी सुदिनु सुभदाई॥ ४
सब द्विज देहु हरषि अनुसासन। रामचंद्र बैठहिँ सिंघासन॥
मुनि बसिष्ठ के बचन सुहाए। सुनत सकल बिप्रन्ह अति भाए॥
कहहिँ बचन मृदु बिप्र अनेका। जग अभिराम राम अभिषेका॥
अब मुनिवर बिलंबु नहिँ कीजे। महाराज कहुँ तिलकु करीजे॥ ८
दोहा। तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन सुनत चलेउ सिरु नाइ।
रथ अनेक बहु बाजि गज तुरत सँवारे जाइ॥

जहँ तहँ धावन पठै पुनि मंगल द्रव्य मगाइ।
हरप समेत बसिष्ठपद पुनि सिरु नाएउ आइ ॥१०॥ १२

अवधपुरी अति रुचिर बनाई। देवन्ह सुमनबृष्टि झरि लाई॥
राम कहा सेवकन्ह बोलाई। प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई॥
सुनत बचन जहँ तहँ जन धाए। सुग्रीवादि तुरत अन्हवाए॥
पुनि करुनानिधि भरतु हकारे। निज कर राम जटा निरुआरे॥ ४
अन्हवाए प्रभु तीनिउँ भाई। भगतबछल कृपाल रघुराई॥
भरतभाग्य प्रभुकोमलताई। सेप कोटि सत सकहिँ न गाई॥
पुनि निज जटा राम बिबराए। गुर अनुसासन मागि नहाए॥
करि मज्जनु प्रभु भूपन साजे। अंग अनंग कोटि छबि छाजे॥ ८

दोहा। सासुन्ह सादर जानकिहि मज्जनु तुरत कराइ।
दिब्य बसन बर भूषन अँग अँग सजे बनाइ॥
राम बाम दिसि सोभति रमारूप गुनखानि।
देखि मातु सब हरषीँ जन्म सुफल निज जानि॥ १२
सुनु खगेस तेहिँ अवसर ब्रह्मा सिव मुनिबृंद।
चढ़ि बिमान आए सब सुर देखन सुखकंद॥११॥

प्रभु बिलोकि मुनिमनु अनुरागा। तुरत दिब्य सिंघासनु मागा॥
रबि सम तेज सो बरनि न जाई। बैठे रामु द्विजन्ह सिरु नाई॥
जनकसुता समेत रघुराई। पेखि प्रहरषे मुनिसमुदाई॥
बेदमंत्र तब द्विजन्ह उचारे। नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे॥ ४
प्रथम तिलक बसिष्ठ मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आएसु दीन्हा॥
सुत बिलोकि हरषीँ महतारीँ। बार बार आरतीँ उतारीँ॥
बिप्रन्ह दान बिबिध बिधि दीन्हे। जाचक सकल अजाचक कीन्हे॥
सिंघासन पर त्रिभुवनसाईँ। देखि सुरन्ह दुंदुभीँ बजाईँ॥ ८

छंद। नभ दुंदुभीँ बाजहिँ बिपुल गंधर्व किंनर गावहीँ।
नाचहिँ अपछराबृंद परमानंद सुर मुनि पावहीँ।
भरतादि अनुज बिभीषनांगद हनुमदादि समेत ते।
गहे छत्र चामर ब्यजन धनु असि चर्म सक्ति बिराजते। १२

श्री सहित दिनकर बंस भूषन काम बहु छबि सोहई।
नव अंबुधर बर गात अंबर पीत सुनिमन मोहई।
मुकुटांगदादि बिचित्र भूषन अंग अंगन्हि प्रति सजे।
अंभोज नयन बिसाल उर भुज धन्य नर निरखंति जे॥ १६

दोहा। बह सोभा समाज सुख कहत न बनै खगेस।
बरनैं सारद सेष श्रुति सो रस जान महेस॥
भिन्न भिन्न अस्तुति करि गए सुर निज निज धाम।
बंदीबेष बेद तब आए जहँ श्रीराम॥ २०
प्रभु सर्वग्य कीन्ह अति आदर कृपानिधान।
लखेउ न काहूँ मरमु कछु लगे करन गुनगान॥१२॥

छंद। जय सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूपसिरोमने।
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुजबल हने।
अवतार नर संसारभार बिभंजि दारुन दुख दहे।
जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्त सक्ति नमामहे। ४
तव बिषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे।
भव पंथ भ्रमत श्रमित दिवस निसि काल कर्म गुनन्हि भरे।
जे नाथ करि करुना बिलोके त्रिबिध दुख ते निर्बहे।
भव खेद छेदन दच्छ हम कहुँ रच्छ राम नमामहे। ८
जे ग्यान मान बिमत्त तव भवहरनि भगति न आदरी।
ते पाइ सुरदुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी।
बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भवनाथ सो समरामहे। १२
जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी।
नखनिर्गता मुनिबंदिता त्रैलोकपावनि सुरसरी।
ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे।
पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे। १६
अब्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने।
षट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने।

फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आस्रित रहे।
पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे।
जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभवगम्य मनपर ध्यावहीं।
ते कहहुँ जानहुँ नाथ हम तव सगुनजसु नित गावहीं।
करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव येह बर मागहीं।
मन बचन कर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं॥

दोहा। सब कें देखत बेदन्ह बिनती कीन्हि उदार।
अंतरधान भए पुनि गए ब्रह्म आगार॥
बैनतेय सुनु संभु तब आए जहँ रघुबीर।
बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर॥१३॥

जय राम रमारमनं समनं भवताप भयाकुल पाहि जनं।
अवधेस सुरेस रमेस बिभो सरनागत मागत पाहि प्रभो।
दससीस बिनासन बीसभुजा कृत दूरि महा महि भूरि रुजा।
रजनीचरबृंद पतंग रहे सर पावक तेज प्रचंड दहे।
महिमंडल मंडन चारुतरं धृत सायक चाप निषंग बरं।
मद मोह महा ममता रजनी तमपुंजं दिवाकर तेज अनी।
मनजात किरात निपात किए मृग लोग कुभोग सरेन हिए।
हति नाथ अनाथन्हि पाहि हरे बिषया बन पावर भूलि परे।
बहु रोग बियोगन्हि लोग हए भवदंघ्रि निरादर के फल ए।
भवसिंधु अगाध परे नर ते पद पंकज प्रेम न जे करते।
अति दीन मलीन दुखी नितहीं जिन्ह कें पद पंकज प्रीति नहीं।
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें।
नहि राग न लोभ न मान मदा तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा।
एहि तें तव सेवक होत मुदा मुनि त्यागत जोग भरोस सदा।
करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ।
सम मानि निरादर आदरहीं सब संत सुखी बिचरंति महीं।
मुनि मानस पंकज भृंग भजे रघुबीर महा रनधीर अजे।
तव नाम जपामि नमामि हरी भवरोग महागद मान अरी।

गुनसील कृपा परमायतनं प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं।
रघुनंद निकंदय द्वंदघनं महिपाल बिलोकय दीनजनं॥ २०

दोहा। बार बार बर मागौँ हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥
बरनि उमापति रामगुन हरषि गए कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह देवाये सब बिधि सुखप्रद बास॥१४॥ २४

सुनु खगपति येह कथा पावनी। त्रिबिध ताप भव भय दावनी॥
महाराज कर सुभ अभिषेका। सुनत लहहिँ नर बिरति बिबेका॥
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिँ। सुख संपति नाना बिधि पावहिँ॥
सुरदुर्लभ सुख करि जग माहीँ। अंतकाल रघुपतिपुर जाहीँ॥ ४
सुनहिँ बिमुक्त बिरत अरु बिषई। लहहिँ भगति गति संपति नई॥
खगपति रामकथा मैँ बरनी। स्वमति बिलास त्रास दुख हरनी॥
बिरति बिबेक भगति दृढ़ करनी। मोह नदी कहुँ सुंदर तरनी॥
नित नव मंगल कोसलपुरीँ। हरषित रहहिँ लोग सब कुरीँ॥ ८
नित नइ प्रीति रामपद पंकज। सब कँ जिन्हहिँ नमत सिव मुनि अज॥
मंगन बहु प्रकार पहिराए। द्विजन्ह दान नाना बिधि पाए॥

दोहा। ब्रह्मानंद मगन कपि सब के प्रभुपद प्रीति।
जात न जाने दिवस तिन्ह गए मास षट बीति॥१५॥ १२

बिसरे गृह सपनेहु सुधि नाहीँ। जिमि परद्रोह संतमन माहीँ॥
तब रघुपति सब सखा बोलाए। आइ सबन्हि सादर सिर नाए॥
परम प्रीति समीप बैठारे। भगत सुखद मृदु बचन उचारे॥
तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई। मुख पर केहिँ बिधि करौँ बड़ाई॥ ४
ता तेँ तुम्ह मोहि अति प्रिय लागे। मम हित लागि भवन सुख त्यागे॥
अनुज राज संपति बैदेही। देह गेह परिवार सनेही॥
सब मम प्रिय नहिँ तुम्हहिँ समाना। मृषा न कहौँ मोर येह बाना॥
सब के प्रिय सेवक येह नीती। मोरेँ अधिक दास पर प्रीती॥ ८

दोहा। अब गृहँ जाहु सखा सब भजेहु मोहि दृढ़ नेम।
सदा सर्बगत सर्बहित जानि करेहु अति प्रेम॥१६॥

सुनि प्रभुवचन मगन सब भए। को हम कहाँ बिसरि तन गए॥
एकटक रहे जोरि कर आगे। सकहिँ न कहि कछु अति अनुरागे॥
परम प्रेमु तिन्ह कर प्रभु देखा। कहा बिबिध बिधि ज्ञान बिसेषा॥
प्रभु सन्मुख कछु कहै न पारहिँ। पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिँ॥ ४
तब प्रभु भूषन बसन मगाए। नाना रंग अनूप सुहाए॥
सुग्रीवहि प्रथमहिँ पहिराए। बसन भरत निज हाथ बनाए॥
प्रभुप्रेरित लछिमन पहिराये। लंकापति रघुपतिमन भाये॥
अंगद बैठ रहा नहि डोला। प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला॥ ८

दोहा। जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ।
हिय धरि रामरूप सब चले नाइ पद माथ॥
तब अंगद उठि नाइ सिरु सजल नयन कर जोरि।
अति बिनीत बोलेउ बचन मनहु प्रेमरस बोरि॥१७॥ १२

सुनु सर्वग्य कृपा सुख सिंधो। दीन दयाकर आरतबंधो॥
मरतीँ बार नाथ मोहि बाली। गएउ तुम्हारेहिँ कोँछेँ घाली॥
असरनसरन बिरिदु संभारी। मोहि जनि तजहु भगत हितकारी॥
मोरेँ तुम्ह प्रभु गुर पितु माता। जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता॥ ४
तुम्हइँ बिचारि कहहु नरनाहा। प्रभु तजि भवन काजु मम काहा॥
बालक ज्ञान बुद्धि बल हीना। राखहु सरन नाथ जन दीना॥
नीचि टहल गृह कै सब करिहौँ। पद पंकज बिलोकि भव तरिहौँ॥
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही। अब जनि नाथ कहहु गृह जाही॥ ८

दोहा। अंगदबचन बिनीत सुनि रघुपति करुनासीव।
प्रभु उठाइ उर लाएउ सजल नयन राजीव॥
निज उर माल बसन मनि बालितनय पहिराइ।
बिदा कीन्ह भगवान तब बहु प्रकार समुझाइ॥१८॥ १२

भरत अनुज सौमित्रि समेता। पठवन चले भगत कृत चेता॥
अंगदहृदय प्रेमु नहि थोरा। फिरि फिरि चितव राम कीँ ओरा॥
बार बार कर दंड प्रनामा। मन अस रहन कहहिँ मोहि रामा॥
राम बिलोकनि बोलनि चलनी। सुमिरि सुमिरि सोचत हसि मिलनी॥ ४

प्रभुरुख देखि विनय बहु भाषी। चलेउ हृदय पद पंकज राखी॥
अति आदर सब कपि पहुँचाए। भाइन्ह सहित भरत पुनि आए॥
तब सुग्रीव चरन गहि नाना। भाँति विनय कीन्ही हनुमाना॥
दिन दस करि रघुपति पद सेवा। पुनि तव चरन देखिहौं देवा॥ ८
पुन्यपुंज तुम्ह पवनकुमारा। सेवहु जाइ कृपा आगारा॥
अस कहि कपि सब चले तुरंता। अंगद कहै सुनहु हनुमंता॥
दोहा। कहेहु दंडवत प्रभु सैं तुम्हहिं कहौं कर जोरि।
बार बार रघुनायकहि सुरति कराएहु मोरि॥ १२
अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आएउ हनुमंत।
तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भये भगवंत॥
कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि।
चित्त खगेस राम कर समुझि परै कहु काहि॥१९॥ १६
पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा। दीन्हे भूषन वसन प्रसादा॥
जाहु भवन मम सुमिरन करेहू। मन क्रम बचन धर्म अनुसरेहू॥
तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता। सदा रहेहु पुर आवत जाता॥
बचन सुनत उपजा सुख भारी। परेउ चरन भरि लोचन बारी॥ ४
चरन नलिन उर धरि गृह आवा। प्रभुसुभाउ परिजनन्हि सुनावा॥
रघुपतिचरित देखि पुरबासी। पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी॥
राम राज बैठे त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका॥
बयरु न कर काहू सन कोई। रामप्रताप विषमता खोई॥ ८
दोहा। बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेदपथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुख नहि भय सोक न रोग॥२०॥
दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहि काहुहि ब्यापा॥
सब नर करहिं परसपर प्रीती। चलहि स्वधर्मनिरत श्रुतिरीती॥
चारिहुँ चरन धर्म जग माहीँ। पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीँ॥
रामभगति रत नर अरु नारी। सकल परमगति के अधिकारी॥ ४
अल्प मृत्यु नहि कवनिउँ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा॥
नहिँ दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहि कोउ अबुध न लच्छनहीना॥

सब निर्दंभ धर्मरत घृनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिँ कपट सयानी॥

दोहा। रामराज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिँ।
काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिँ॥२१॥

भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला॥
भुवन अनेक रोम प्रति जासू। येह प्रभुता कछु बहुत न तासू॥
सो महिमा समुझत प्रभु केरी। येह बरनत हीनता घनेरी॥
सो महिमा खगेस जिन्ह जानी। फिरि एहिँ चरित तिन्हहुँ रति मानी॥
सोउ जाने कर फल येह लीला। कहहिँ महामुनिबर दमसीला॥
रामराज कर सुख संपदा। बरनि न सकइ फनीस सारदा॥
सब उदार सब पर उपकारी। बिप्रचरन सेवक नर नारी॥
एकनारि ब्रत रत सब झारी। ते मन बच क्रम पति हितकारी॥

दोहा। दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।
जीतहु मनहिँ सुनिअ अस रामचंद्र कें राज॥२२॥

फूलहिँ फरहिँ सदा तरु कानन। रहहिँ एक सँग गज पंचानन॥
खग मृग सहज बयरु बिसराई। सबन्हिं परसपर प्रीति बढ़ाई॥
कूजहिँ खग मृग नाना बृंदा। अभय चरहिँ बन करहिँ अनंदा॥
सीतल सुरभि पवन बह मंदा। गुंजत अलि लै चलि मकरंदा॥
लता बिटप मागे मधु चवहीँ। मन भावतो धेनु पय स्रवहीँ॥
ससिसंपन्न सदा रह धरनी। त्रेता भै कृतजुग कै करनी॥
प्रगटीँ गिरिन्ह बिबिध मनिखानी। जगदातमा भूप जग जानी॥
सरिता सकल बहहिँ बर बारी। सीतल अमल स्वाद सुखकारी॥
सागर निज मरजादा रहहीँ। डारहिँ रत्न तटन्हि नर लहहीँ॥
सरसिजसंकुल सकल तड़ागा। अति प्रसन्न दस दिसा बिभागा॥

दोहा। बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहिँ काज।
मागेँ बारिद देहिँ जल रामचंद्र कें राज॥२३॥

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे। दान अनेक द्विजन्ह कहुँ दीन्हे॥
श्रुतिपथ पालक धर्मधुरंधर। गुनातीत अरु भोग पुरंदर॥

पति अनुकूल सदाँ रह सीता। सोभाखानि सुसील बिनीता॥
जानति कृपासिंधु प्रभुताई। सेवति चरन कमल मन लाई॥ ४
जद्यपि गृह सेवक सेवकिनी। बिपुल सकल सेवाँ बिधि गुनी॥
निज कर गृहपरिचरजा करई। रामचंद्र आयस अनुसरई॥
जेहिँ बिधि कृपासिंधु सुख मानइ। सोइ कर श्री सेवाबिधि जानइ॥
कौसल्यादि सासु गृह माहीँ। सेवइ सबन्हि मान मद नाहीँ॥ ८
उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता। जगदंबा संततमनिंदिता॥

दोहा। जासु कृपाकटाच्छ सुर चाहत चितव न सोइ।
रामपदारबिंद रति करति सुभावहि खोइ॥२४॥

सेवहि सानुकूल सब भाई। रामचरन रति अति अधिकाई॥
प्रभुमुख कमल बिलोकत रहहीँ। कबहुँ कृपाल हमहिँ कछु कहहीँ॥
रामु करहिँ भ्रातन्ह पर प्रीती। नाना भाँति सिखावहिँ नीती॥
हरषित रहहिँ नगर के लोगा। करहिँ सकल सुरदुर्लभ भोगा॥ ४
अहनिसि बिधिहि मनावत रहहीँ। श्रीरघुबीरचरन रति चहहीँ॥
दुइ सुत सुंदर सीता जाए। लव कुस बेद पुरानन्हि गाए॥
दोउ बिजई बिनई गुनमंदिर। हरिप्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर॥
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे। भए रूप गुन सील घनेरे॥ ८

। दोहा।

ज्ञान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार।
सोइ सच्चिदानंद घन कर नरचरित उदार॥२५॥

प्रातकाल सरऊ करि मज्जन। बैठहिँ सभा संग द्विज सज्जन॥
बेद पुरान बसिष्ठ बखानहिँ। सुनहिँ रामु जद्यपि सब जानहिँ॥
अनुजन्ह संजुत भोजनु करहीँ। देखि सकल जननी सुख भरहीँ॥
भरत सत्रुहन दूनौं भाई। सहित पवनसुत उपवन जाई॥ ४
बूझहिँ बैठि राम गुन गाहा। कह हनुमान सुमति अवगाहा॥
सुनत बिमल गुन अति सुख पावहिँ। बहुरि बहुरि करि बिनय कहावहिँ॥
सब के गृह गृह होहिँ पुराना। रामचरित पावन बिधि नाना॥
नर अरु नारि राम गुन गानहिँ। करहिँ दिवस निसि जात न जानहिँ॥ ८

दोहा। अवधपुरी बासिन्ह कर सुख संपदा समाज।
सहस सेष नहिं कहि सकहिं जहँ नृप राम बिराज ॥२६॥

नारदादि सनकादि मुनीसा। दरसन लागि कोसलाधीसा॥
दिन प्रति सकल अजोध्या आवहिं। देखि नगरु बिराग बिसरावहिं॥
जातरूप मनि रचित अटारीं। नाना रंग रुचिर गच ढारीं॥
पुर चहुँ पास कोट अति सुंदर। रचे कगूरा रंग रंग बर॥ ४
नव ग्रह निकर अनीक बनाई। जनु घेरी अमरावति आई॥
महि बहु रंग रचित गच काँचा। जो बिलोकि मुनिबर मन नाचा॥
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत। कलस मनहु रबि ससि दुति निंदत॥
बहु मनि रचित झरोखा भ्राजहिं। गृह गृह प्रति मनिदीप बिराजहिं॥ ८

छंद। मनिदीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी बिद्रुम रचीं।
मनिखंभ भीति बिरंचि बिरची कनक मनि मरकत खचीं।
सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे।
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खचे॥ १२

दोहा। चारु चित्रसाला गृह प्रति रचि लिखे बनाइ।
रामचरित जे निरखत मुनिमन लेहिं चोराइ ॥२७॥

सुमनबाटिका सबहिं लगाईं। बिबिध भाँति करि जतन बनाईं॥
लता ललित बहु जाति सुहाईं। फूलहिं सदा बसंत कि नाईं॥
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर। मारुत त्रिबिध सदा बह सुंदर॥
नाना खग बालकन्हि जिआए। बोलत मधुर उड़ात सुहाए॥ ४
मोर हंस सारस पारावत। भवनन्हि पर सोभा अति पावत॥
जहँ तहँ निरखहिं निज परिछाहीं। बहु बिधि कूजहिं नृत्य कराहीं॥
सुक सारिका पढ़ावहिं बालक। कहहु राम रघुपति जनपालक॥
राजदुआर सकल बिधि चारू। बीथीं चौहट रुचिर बजारू॥ ८

छंद। बाजारु चारु न बनइ बरनत बस्तु बिनु गथ पाइए।
जहँ भूप रमानिवास तहँ की संपदा किमि गाइए।
बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहु कुबेर ते।
सब सुखी सब सच्चरित सुंदर नारि नर सिसु जरठ जे॥ १२

दोहा। उत्तर दिसि सरजू बह निर्मल जल गंभीर।
बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर ॥२८॥

दूरि फराक रुचिर सो घाटा। जहँ जल पिअहिं बाजि गज ठाटा ॥
पनिघट परम मनोहर नाना। तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना ॥
राजघाट सब बिधि सुंदर बर। मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर ॥
तीर तीर देवन्ह के मंदिर। चहुँ दिसि जिन्ह कीं उपबन सुंदर ॥ ४
कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी। बसहिं ज्ञानरत मुनि संन्यासी ॥
तीर तीर तुलसिका सुहाई। बृंद बृंद बहु मुनिन्ह लगाई ॥
पुरसोभा कछु बरनि न जाई। बाहेर नगर परम रुचिराई ॥
देखत पुरी अखिल अघ भागा। बन उपबन बापिका तड़ागा ॥ ८

छंद। बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं।
सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं।
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं।
आराम रम्य पिकादि खग रव जनु पथिक हंकारहीं॥ १२

दोहा। रमानाथ जहँ राजा सो पुर बरनि कि जाइ।
अनिमादिक सुख संपदा रहीं अवध सब छाइ ॥२९॥

जहँ तहँ नर रघुपति गुन गावहिं। बैठि परसपर इहै सिखावहिं ॥
भजहु प्रनत प्रतिपालक रामहि। सोभा सील रूप गुन धामहि ॥
जलज बिलोचन स्यामल गातहि। पलक नयन इव सेवकत्रातहि ॥
धृत सर रुचिर चाप तूनीरहि। संत कंजबन रबि रनधीरहि ॥ ४
काल कराल ब्याल खगराजहि। नमत राम अकाम ममता जहि ॥
लोभ मोह मृगजूथ किरातहि। मनसिज करि हरि जन सुखदातहि ॥
संसय सोक निबिड़ तम भानुहि। दनुज गहन घन दहन कृसानुहि ॥
जनकसुता समेत रघुबीरहि। कस न भजहु भंजन भवभीरहि ॥ ८
बहु बासना मसक हिमरासिहि। सदा एकरस अज अबिनासिहि ॥
मुनिरंजन भंजन महिभारहि। तुलसिदास के प्रभुहि उदारहि ॥

दोहा। एहि बिधि नगर नारि नर करहिं राम गुन गान।
सानुकूल सब पर रहहिं संतत कृपानिधान ॥३०॥ १२

जब तेँ रामप्रताप खगेसा। उदित भएउ अति प्रबल दिनेसा॥
पूरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका। बहुतेन्ह सुख बहुतेन्ह मन सोका॥
जिन्हहिँ सोक ते कहौँ बखानी। प्रथम अविद्या निसा नसानी॥
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने। काम क्रोध कैरव सकुचाने॥ ४
बिबिध कर्म गुन काल सुभाऊ। ए चकोर सुख लहहिँ न काऊ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा। इन्ह कर हुनर न कवनिहुँ ओरा॥
धरम तड़ाग ज्ञान बिज्ञाना। ए पंकज बिकसे बिधि नाना॥
सुख संतोष बिराग बिवेका। बिगत सोक ए कोक अनेका॥ ८

दोहा। येह प्रताप रबि जा कँ उर जब करै प्रकास।
पछिले बाढ़हिँ प्रथम जे कहे ते पावहिँ नास॥३१॥

भ्रातन्ह सहित रामु एक बारा। संग परम प्रिय पवनकुमारा॥
सुंदर उपबन देखन गए। सब तरु कुसुमित पल्लव नए॥
जानि समय सनकादिक आए। तेजपुंज गुन सील सुहाए॥
ब्रह्मानंद सदा लयलीना। देखत बालक बहुकालीना॥ ४
रूप धरेँ जनु चारिउ बेदा। समदरसी मुनि बिगत बिभेदा॥
आसा बसन ब्यसन येह तिन्हहीँ। रघुपतिचरित होहिँ तहँ सुनहीँ॥
तहाँ रहे सनकादि भवानी। जहँ घटसंभव मुनिबर ज्ञानी॥
रामकथा मुनि बहु बिधि बरनी। ज्ञानजोनि पावक जिमि अरनी॥ ८

दोहा। देखि राम मुनि आवत हरषि दंडवत कीन्ह।
स्वागत पूछि पीत पट प्रभु बैठन कहुँ दीन्ह॥३२॥

कीन्ह दंडवत तीनिहुँ भाई। सहित पवनसुत सुख अधिकाई॥
मुनि रघुपतिछबि अतुल बिलोकी। भये मगन मन सके न रोकी॥
स्यामल गात सरोरुह लोचन। सुंदरतामंदिर भवमोचन॥
एकटक रहे निमेष न लावहिँ। प्रभु कर जोरे सीस नवावहिँ॥ ४
तिन्ह कै दसा देखि रघुबीरा। स्रवत नयन जल पुलक सरीरा॥
कर गहि प्रभु मुनिबर बैठारे। परम मनोहर बचन उचारे॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा। तुम्हरेँ दरस जाहिँ अघ खीसा॥
बड़े भाग पाइअ सतसंगा। बिनहिँ प्रयास होइ भवभंगा॥ ८

दोहा। संत पंथ अपबर्ग कर कामी भव कर पंथ।
कहहिं संत कबि कोबिद श्रुति पुरान सब ग्रंथ ॥३३॥

सुनि प्रभुबचन हरषि मुनि चारी। पुलकित तन अस्तुति अनुसारी ॥
जय भगवंत अनंत अनामय। अनघ अनेक एक करुनामय ॥
जय निर्गुन जय जय गुनसागर। सुखमंदिर सुंदर अति नागर ॥
जय इंदिरारमन जय भूधर। अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥ ४
ज्ञाननिधान अमान मानप्रद। पावन सुजसु पुरान बेद बद ॥
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञताभंजन। नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
सर्ब सर्बगत सर्ब उरालय। बससि सदा हम कहुँ परिपालय ॥
द्वंद बिपति भवफंद बिभंजय। हृदि बसि राम काम मद गंजय ॥ ८

दोहा। परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम।
प्रेमभगति अनपायनी देहु हमहिं श्रीराम ॥३४॥

देहु भगति रघुपति अति पावनि। त्रिबिध ताप भवदाप नसावनि ॥
प्रनत कामधुक धेनु कलपतरु। होइ प्रसन्न दीजे प्रभु येह बरु ॥
भवबारिधि कुंभज रघुनायक। सेवत सुलभ सकल सुखदायक ॥
मनसंभव दारुन दुख दारय। दीनबंधु समता बिस्तारय ॥ ४
आस त्रास इरिषादि निवारक। बिनय बिबेक बिरति बिस्तारक ॥
भूप मौलि मनि मंडन धरनी। देहि भगति संसृति सरि तरनी ॥
मुनिमन मानस हंस निरंतर। चरन कमल बंदित अज संकर ॥
रघुकुल केतु सेतु श्रुति रच्छक। काल करम सुभाव गुन भच्छक ॥ ८
तारन तरन हरन सब दूषन। तुलसिदास प्रभु त्रिभुवनभूषन ॥

दोहा। बार बार अस्तुति करि प्रेम सहित सिरु नाइ।
ब्रह्मभवन सनकादि गे अति अभीष्ट बर पाइ ॥३५॥

सनकादिक बिधिलोक सिधाए। भ्रातन्ह रामचरन सिर नाए ॥
पूछत प्रभुहि सकल सकुचाहीं। चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं ॥
सुनी चहहिं प्रभुमुख कै बानी। जो सुनि होइ सकल भ्रम हानी ॥
अंतरजामी प्रभु सब जाना। बूझत कहहु काह हनुमाना ॥ ४
जोरि पानि कह तब हनुमंता। सुनहु दीनदयाल भगवंता ॥

नाथ भरत कछु पूछन चहहीं। प्रस्न करत मन सकुचत अहहीं॥
तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ। भरतहि मोहि कछु अंतरु काऊ॥
सुनि प्रभुवचन भरत गहे चरना। सुनहु नाथ प्रनतारति हरना॥ ८
दोहा। नाथ न मोहि संदेह कछु सपनेहु सोक न मोह।
केवल कृपा तुम्हारिहि कृपानंद संदोह॥३६॥
करौं कृपानिधि एक ढिठाई। मैं सेवक तुम्ह जन सुखदाई॥
संतन्ह कै महिमा रघुराई। बहु बिधि बेद पुरानन्हि गाई॥
श्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि बड़ाई। तिन्ह पर प्रभुहि प्रीति अधिकाई॥
सुना चहौं प्रभु तिन्ह कर लच्छन। कृपासिंधु गुन ज्ञान बिचच्छन॥ ४
संत असंत भेद बिलगाई। प्रनतपाल मोहि कहहु बुझाई॥
संतन्ह के लच्छन सुनु भ्राता। अगनित श्रुति पुरान बिख्याता॥
संत असंतन्हि कै असि करनी। जिमि कुठार चंदन आचरनी॥
काटै परसु मलय सुनु भाई। निज गुन देइ सुगंध बसाई॥ ८
दोहा। ता तें सुर सीसन्ह चढ़त जगवल्लभ श्रीखंड।
अनल दाहि पीटत घनन्हि परसु बदनु येह दंड॥३७॥
बिषय अलंपट सील गुनाकर। परदुख दुख सुख सुख देखें पर॥
सम अभूतरिपु बिमद बिरागी। लोभामरष हरष भय त्यागी॥
कोमलचित दीनन्ह पर दाया। मन बच क्रम मम भगति अमाया॥
सबहि मानप्रद आपु अमानी। भरत प्रान सम मम ते प्रानी॥ ४
बिगत काम मम नाम परायन। सांति बिरति बिनती मुदितायन॥
सीतलता सरलता मइत्री। द्विजपद प्रीति धर्मजनयित्री॥
ए सब लच्छन बसहिं जासु उर। जानेहु तात संत संतत फुर॥
सम दम नियम नीति नहि डोलहिं। परुष बचन कबहूँ नहि बोलहिं॥ ८
दोहा। निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कंज।
ते सज्जन मम प्रान प्रिय गुनमंदिर सुखपुंज॥३८॥
सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ। भूलेहुँ संगति करिय न काऊ॥
तिन्ह कर संग सदा दुखदाई। जिमि कपिलहि घालै हरहाई॥
खलन्ह हृदय अति ताप बिसेषी। जरहिं सदा परसंपति देखी॥

जहँ कहुँ निंदा सुनहिँ पराई। हरषहिँ मनहु परी निधि पाई॥ ४
काम क्रोध मद लोभ परायन। निर्दय कपटी कुटिल मलायन॥
बयरु अकारन सब काहू सौं। जो कर हित अनहित ताहू सौं॥
झूठेइ लेना झूठेइ देना। झूठेइ भोजन झुठै चबेना॥
बोलहिँ मधुर बचन जिमि मोरा। खाइ महा अहि हृदय कठोरा॥ ८

दोहा। परद्रोही परदार रत परधन पर अपबाद।
ते नर पावर पापमय देह धरे मनुजाद॥३९॥

लोभइ ओढ़न लोभइ डासन। सिस्नोदरपर जमपुरत्रास न॥
काहू कै जौ सुनहिँ बड़ाई। स्वास लेहिँ जनु जूड़ी आई॥
जब काहू कै देखहिँ बिपती। सुखी भए मानहु जगनृपती॥
स्वारथरत परिवारबिरोधी। लंपट काम लोभ अति क्रोधी॥ ४
मातु पिता गुर बिप्र न मानहिँ। आपु गए अरु घालहिँ आनहिँ॥
करहिँ मोहबस द्रोह परावा। संतसंग हरिकथा न भावा॥
अवगुनसिंधु मंदमति कामी। बेदबिदूषक परधन स्वामी॥
बिप्रद्रोह सुरद्रोह बिसेषा। दंभ कपट जिय धरेँ सुबेषा॥ ८

दोहा। ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेताँ नाहिँ।
द्वापर कछुक बृंद बहु होइहहिँ कलिजुग माहिँ॥४०॥

परहित सरिस धर्म नहिँ भाई। परपीड़ा सम नहिँ अधमाई॥
निर्नय सकल पुरान बेद कर। कहेउँ तात जानहिँ कोबिद नर॥
नर सरीर धरि जे परपीरा। करहिँ ते सहहिँ महा भवभीरा॥
करहिँ मोहबस नर अघ नाना। स्वारथरत परलोक नसाना॥ ४
कालरूप तिन्ह कहुँ मैं भ्राता। सुभ अरु असुभ करम फल दाता॥
अस बिचारि जे परम सयाने। भजहिँ मोहि संसृति दुख जाने॥
त्यागहिँ कर्म सुभासुभ दायक। भजहिँ मोहि सुर नर मुनि नायक॥
संत असंतन्ह के गुन भाषे। ते न परहिँ भव जिन्ह लखि राखे॥ ८

दोहा। सुनहु तात माया कृत गुन अरु दोष अनेक।
गुन यह उभय न देखिअहिँ देखिअ सो अबिबेक॥४१॥

श्रीमुख बचन सुनत सब भाई। हरषे प्रेमु न हृदय समाई॥

करहिँ विनय अति बारहि बारा। हनूमानहिय हरप अपारा॥
पुनि रघुपति निज मंदिर गए। एहिँ विधि चरित करत नित नए॥
बार बार नारद मुनि आवहिँ। चरित पुनीत राम के गावहिँ॥ ४
नित नव चरित देखि मुनि जाहीँ। ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीँ॥
सुनि बिरंचि अतिसय सुख मानहिँ। पुनि पुनि तात करहु गुनगानहिँ॥
सनकादिक नारदहि सराहहिँ। जद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आहहिँ॥
सुनि गुनगान समाधि बिसारी। सादर सुनहिँ परम अधिकारी॥ ८

दोहा। जीवनमुक्त ब्रह्मपर चरित सुनहिँ तजि ध्यान।
जे हरिकथा न करहिँ रति तिन्ह के हिय पापान॥४२॥

एक बार रघुनाथ बोलाए। गुर द्विज पुरबासी सब आए॥
बैठे सदसि अनुज मुनि सज्जन। बोले बचन भगत भय भंजन॥
सुनहु सकल पुरजन मम बानी। कहौँ न कछु ममता उर आनी॥
नहि अनीति नहि कछु प्रभुताई। सुनहु करहु जौ तुम्हहि सोहाई॥ ४
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई। मम अनुसासन मानै जोई॥
जौ अनीति कछु भाषौँ भाई। तौ मोहि बरजहु भय बिसराई॥
बड़ँ भाग मानुषतनु पावा। सुरदुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा॥
साधनधाम मोच्छ कर द्वारा। पाइ न जेहिँ परलोक सँवारा॥ ८

। दोहा।

सो परत्र दुख पावइ सिरु धुनि धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ॥४३॥

एहि तन कर फल बिषय न भाई। स्वरगौ स्वल्प अंत दुखदाई॥
नरतनु पाइ बिषय मनु देहीँ। पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीँ॥
ताहि कबहुँ भल कहै न कोई। गुंजा ग्रहै परसमनि खोई॥
आकर चारि लच्छ चौरासी। जोनि भ्रमत येह जिव अबिनासी॥ ४
फिरत सदा माया कर प्रेरा। काल कर्म सुभाव गुन घेरा॥
कबहुँक करि करुना नरदेही। देत ईस बिनु हेतु सनेही॥
नरतनु भवबारिधि कहुँ बेरो। सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो॥
करनधार सदगुर दृढ़ नावा। दुर्लभ साजु सुलभ करि पावा॥ ८

दोहा। जो न तरै भवसागर नर समाज अस पाइ।
सो कृतनिंदक मंदमति आतमहन गति जाइ ॥४४॥

जौ परलोक इहाँ सुख चहहू। सुनि मम बचन हृदय दृढ़ गहहू ॥
सुलभ सुखद मारग येह भाई। भक्ति मोरि पुरान श्रुति गाई ॥
ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका। साधन कठिन न मन कहुँ टेका ॥
करत कष्ट बहु पावै कोऊ। भक्तिहीन प्रिय मोहि न सोऊ ॥ ४
भक्ति स्वतंत्र सकल सुख खानी। बिनु सतसंग न पावहिँ प्रानी ॥
पुन्यपुंज बिनु मिलहिँ न संता। सतसंगति संसृति कर अंता ॥
पुन्य एक जग महुँ नहि दूजा। मन क्रम बचन बिप्र पद पूजा ॥
सानुकूल तेहि पर मुनि देवा। जो तजि कपटु करै द्विजसेवा ॥ ८

दोहा। औरौ एक गुपुत मत सबहि कहौँ कर जोरि।
संकरभजन बिना नर भगति न पावै मोरि ॥४५॥

कहहु भगतिपथ कवन प्रयासा। जोग न मख जप तप उपवासा ॥
सरल सुभाव न मन कुटिलाई। जथालाभ संतोष सदाई ॥
मोर दास कहाइ नर आसा। करै त कहहु कहाँ बिस्वासा ॥
बहुत कहौँ का कथा बढ़ाई। एहि आचरन बस्य मैँ भाई ॥ ४
बैर न बिग्रह आस न त्रासा। सुखमय ताहि सदा सब आसा ॥
अनारंभ अनिकेत अमानी। अनघ अरोष दच्छ बिज्ञानी ॥
प्रीति सदा सज्जनसंसर्गा। तृन सम बिषय स्वर्ग अपबर्गा ॥
भगतिपच्छ हठ नहि सठताई। दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई ॥ ८

दोहा। मम गुन ग्राम नाम रत गत ममता मद मोह।
ता कर सुख सोइ जानै परानंद संदोह ॥४६॥

सुनत सुधा सम बचन राम के। गहे सबन्हि पद कृपाधाम के ॥
जननि जनक गुर बंधु हमारे। कृपानिधान प्रान तेँ प्यारे ॥
तनु धनु धाम राम हितकारी। सब बिधि तुम्ह प्रनतारति हारी ॥
असि सिख तुम्ह बिनु देइ न कोऊ। मातु पिता स्वारथरत ओऊ ॥ ४
हेतु रहित जग जुग उपकारी। तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी ॥
स्वारथमीत सकल जग माहीँ। सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीँ ॥

सब के बचन प्रेमरस साने। सुनि रघुनाथ हृदय हरषाने॥
निज गृह गए सुआएसु पाई। बरनत प्रभुबतकही सुहाई॥ ८
दोहा। उमा अवधबासी नर नारि कृतारथरूप।
ब्रह्म सच्चिदानंद घन रघुनायक जहँ भूप॥४७॥
एक बार बसिष्ठ मुनि आए। जहाँ राम सुखधाम सुहाए॥
अति आदरु रघुनायक कीन्हा। पद पखारि चरनोदक लीन्हा॥
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी। कृपासिंधु बिनती कछु मोरी॥
देखि देखि आचरन तुम्हारा। होत मोह मम हृदय अपारा॥ ४
महिमा अमित बेद नहि जाना। मैं केहि भाँति कहौं भगवाना॥
उपरोहिती कर्म अति मंदा। बेद पुरान सुमृति कर निंदा॥
जब न लेउँ मैं तब बिधि मोही। कहा लाभु आगे सुत तोही॥
परमातमा ब्रह्म नररूपा। होइहि रघुकुल भूषन भूपा॥ ८
दोहा। तब मैं हृदय बिचारा जोग जग्य ब्रत दान।
जा कहुँ करिअ सो पैहौँ धर्म न येहि सम आन॥४८॥
जप तप नियम जोग निज धर्मा। श्रुतिसंभव नाना सुभ कर्मा॥
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन। जहँ लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन॥
आगम निगम पुरान अनेका। पढ़ँ सुनँ कर फल प्रभु एका॥
तव पद पंकज प्रीति निरंतर। सब साधन कर येह फल सुंदर॥ ४
छूटै मल कि मलहि कें धोयें। घृत कि पाव कोउ बारि बिलोयें॥
प्रेमभगति जल बिनु रघुराई। अभिअंतर मल कबहुँ न जाई॥
सोइ सर्बज्ञ तज्ञ सोइ पंडित। सोइ गुनगृह बिज्ञान अखंडित॥
दच्छ सकल लच्छनजुत सोई। जा कें पद सरोज रति होई॥ ८
दोहा। नाथ एक बर मागौं राम कृपा करि देहु।
जन्म जन्म प्रभुपद कमल कबहुँ घटै जनि नेहु॥४९॥
अस कहि मुनि बसिष्ठ गृह आए। कृपासिंधु कें मन अति भाए॥
हनूमान भरतादिक भ्राता। संग लिए सेवक सुखदाता॥
पुनि कृपाल पुर बाहेर गए। गज रथ तुरग मगावत भए॥
देखि कृपा करि सकल सराहे। दिए उचित जिन्ह जिन्ह जेइ चाहे॥ ४

हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई। गए जहाँ सीतल अवराई॥
भरत दीन्ह निज बसन डसाई। बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई॥
मारुतसुत तब मारुत करई। पुलक बपुष लोचन जल भरई॥
हनूमान समान बड़भागी। नहि कोउ रामचरन अनुरागी॥ ८
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई। बार बार प्रभु निज मुख गाई॥
दोहा। तेहि अवसर मुनि नारद आए करतल बीन।
गावन लगे राम कल कीरति सदा नवीन॥५०॥
मामवलोकय पंकजलोचन। कृपाबिलोकनि सोकबिमोचन॥
नील तामरस स्याम कामअरि। हृदय कंज मकरंद मधुप हरि॥
जातुधान बरूथ बल भंजन। मुनि सज्जन रंजन अघगंजन॥
भूसुर ससि नव वृंद बलाहक। असरनसरन दीन जन गाहक॥ ४
भुजबल विपुल भार महि खंडित। खर दूषन बिराध बध पंडित॥
रावनारि सुखरूप भूपवर। जय दसरथकुल कुमुद सुधाकर॥
सुजसु पुरान बिदित निगमागम। गावत सुर मुनि संत समागम॥
कारुनीक ब्यलीक मदखंडन। सब बिधि कुसल कोसलामंडन॥ ८
कलिमल मथन नाम ममताहन। तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन॥

। दोहा।

प्रेम सहित मुनि नारद बरनि राम गुन ग्राम।
सोभासिंधु हृदय धरि गए जहाँ बिधिधाम॥५१॥

गिरिजा सुनहु बिसद येह कथा। मैं सब कही मोरि मति जथा॥
रामचरित सत कोटि अपारा। श्रुति सारदा न बरनैं पारा॥
रामु अनंत अनंत गुनानी। जन्म कर्म अनंत नामानी॥
जलसीकर महिरज गनि जाहीं। रघुपतिचरित न बरनि सिराहीं॥ ४
बिमल कथा हरिपद दायनी। भगति होइ सुनि अनपायनी॥
उमा कहेउँ सब कथा सुहाई। जो भुसुंडि खगपतिहि सुनाई॥
कछुक रामगुन कहेउँ बखानी। अब का कहौं सो कहहु भवानी॥
सुनि सुभ कथा उमा हरषानी। बोलीं अति बिनीत मृदु बानी॥ ८
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी। सुनेउँ रामगुन भव भय हारी॥

दोहा। तुम्हरीँ कृपा कृपाल मैँ अब कृतकृत्य न मोह।
जानेउँ रामप्रताप प्रभु चिदानंद संदोह॥
नाथ तवानन ससि स्रवत कथा सुधा रघुबीर। १२
श्रवन पुटन्हि मन पान करि नहि अघात मतिधीर॥५२॥

रामचरित जे सुनत अघाहीँ। रस बिसेष जाना तिन्ह नाहीँ॥
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ। हरिगुन सुनहिँ निरंतर तेऊ॥
भवसागर चह पार जो पावा। रामकथा ता कहुँ दृढ़ नावा॥
बिषइन्ह कहँ पुनि हरि गुन ग्रामा। श्रवन सुखद अरु मन अभिरामा॥ ४
श्रवनवंत अस को जग माहीँ। जाहि न रघुपतिचरित सोहाहीँ॥
ते जड़ जीव निजातम घाती। जिन्हहिँ न रघुपतिकथा सोहाती॥
हरिचरित्रमानस तुम्ह गावा। सुनि मैँ नाथ अमित सुख पावा॥
तुम्ह जो कहा येह कथा सुहाई। काकभुसुंडि गरुर प्रति गाई॥ ८

दोहा। बिरति ज्ञान बिज्ञान दृढ़ रामचरित अति नेह।
बायसतन रघुपतिभगति मोहि परम संदेह॥५३॥

नर सहस्र महुँ सुनहुँ पुरारी। कोउ एक होइ धर्म ब्रत धारी॥
धर्मसील कोटिक महुँ कोई। बिषयबिमुख बिरागरत होई॥
कोटि बिरक्त मध्य श्रुति कहई। सम्यक ज्ञान सकृत कोउ लहई॥
ज्ञानवंत कोटिक महुँ कोऊ। जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ॥ ४
तिन्ह सहस्र महुँ सब सुख खानी। दुर्लभ ब्रह्मलीन बिज्ञानी॥
धर्मसील बिरक्त अरु ज्ञानी। जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्रानी॥
सब तेँ सो दुर्लभ सुरराया। रामभगति रत गत मद माया॥
सो हरिभगति काग किमि पाई। बिस्वनाथ मोहि कहहु बुझाई॥ ८

दोहा। रामपरायन ज्ञानरत गुनागार मतिधीर।
नाथ कहहु केहि कारन पाएउ काकसरीर॥५४॥

येह प्रभुचरित पवित्र सुहावा। कहहु कृपाल काक कहँ पावा॥
तुम्हँ केहिँ भाँति सुना मदनारी। कहहु मोहि अति कौतुक भारी॥
गरुड़ महाज्ञानी गुनरासी। हरिसेवक अति निकट निवासी॥
तेहि केहि हेतु काग सन जाई। सुनी कथा मुनिनिकर बिहाई॥ ४

कहहु कवन बिधि भा संबादा। द्वौ हरिभगत काग उरगादा॥
गौरिगिरा सुनि सरल सुहाई। बोले सिव सादर सुख पाई॥
धन्य सती पावनि मति तोरी। रघुपतिचरन प्रीति नहिं थोरी॥
सुनहु परम पुनीत इतिहासा। जो सुनि सकल सोक भ्रम नासा॥
उपजै रामचरन बिस्वासा। भवनिधि तर नर बिनहि प्रयासा॥

दोहा। औसिअ प्रस्न बिहंगपति कीन्हि काग सन जाइ।
सो सब सादर कहिहौँ सुनहु उमा मन लाइ॥५५॥

मैँ जिमि कथा सुनी भवमोचनि। सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि॥
प्रथम दच्छगृह तव अवतारा। सती नाम तव रहा तुम्हारा॥
दच्छजग्य तव भा अपमाना। तुम्ह अति क्रोध तजे तब प्राना॥
मम अनुचरन्ह कीन्ह मखभंगा। जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा॥
तब अति सोच भएउ मन मोरे। दुखी भयउँ बियोग प्रिय तोरे॥
सुंदर बन गिरि सरित तड़ागा। कौतुक देखत फिरौँ बिरागा॥
गिरि सुमेरु उत्तर दिसि दूरी। नील सैल एक सुंदर भूरी॥
तासु कनकमय सिखर सुहाए। चारि चारु मोरेँ मन भाए॥
तिन्ह पर एक एक बिटप बिसाला। बट पीपर पाकरी रसाला॥
सैलोपरि सर सुंदर सोहा। मनिसोपान देखि मन मोहा॥

दोहा। सीतल अमल मधुर जल जलज बिपुल बहुरंग।
कूजत कलरव हंसगन गुंजत मंजुल भृंग॥५६॥

तेहि गिरि रुचिर बसै खग सोई। तासु नास कल्पांत न होई॥
मायाकृत गुन दोष अनेका। मोह मनोज आदि अबिबेका॥
रहे ब्यापि समस्त जग माहीँ। तेहि गिरि निकट कबहुँ नहिँ जाहीँ॥
तहँ बसि हरिहि भजै जिमि कागा। सो सुनु उमा सहित अनुरागा॥
पीपर तरु तर ध्यान सो धरई। जाप जग्य पाकरि तर करई॥
आँबछाह कर मानसपूजा। तजि हरिभजनु काजु नहि दूजा॥
बर तर कह हरिकथा प्रसंगा। आवहिँ सुनै अनेक बिहंगा॥
रामचरित बिचित्र बिधि नाना। प्रेम सहित कर सादर गाना॥
सुनहिँ सकल मति बिमल मराला। बसहिँ निरंतर जे तेहिँ ताला॥

जब मैं. जाइ सो कौतुक देखा। उर उपजा आनंद बिसेषा॥
दोहा। तब कछु काल मरालतनु धरि तहँ कीन्ह निवास।
सादर सुनि रघुपतिगुन पुनि आएउँ कैलास॥५७॥ १२
गिरिजा कहिउँ सो सब इतिहासा। मैं जेहिं समय गएउँ खग पासा॥
अब सो कथा सुनहुँ जेहिं हेतू। गएउ काग पहिं खगकुलकेतू॥
जब रघुनाथ कीन्हि रनक्रीड़ा। समुझत चरित होति मोहि ब्रीड़ा॥
इंद्रजीतकर आपु बँधायो। तब नारद मुनि गरुड़ पठायो॥ ४
बंधन काटि गयो उरगादा। उपजा हृदय प्रचंड बिषादा॥
प्रभुबंधन समुझत बहु भाती। करत बिचार उरग आराती॥
ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा। माया मोह पार परमीसा॥
सो अवतरा सुनेउँ जग माहीँ। देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीँ॥ ८
दोहा। भवबंधन तेँ छूटहिँ नर जपि जा कर नाम।
खर्ब निसाचर बाँधेउ नागपास सोइ राम॥५८॥
नाना भाँति मनहिँ समुझावा। प्रगट न ज्ञान हृदय भ्रम छावा॥
खेदखिन्न मन तर्क बढ़ाई। भएउ मोहबस तुम्हरिहि नाई॥
ब्याकुल गएउ देवरिषि पाहीँ। कहेसि जो संसय निज मन माहीँ॥
सुनि नारदहि लागि अति दाया। सुनु खग प्रबल राम कै माया॥ ४
जो ज्ञानिन्ह कर चित अपहरई। बरिआई बिमोह मन करई॥
जेहिँ बहु बार नचावा मोही। सोइ ब्यापी बिहंगपति तोही॥
महामोह उपजा उर तोरँ। मिटिहि न बेगि कहँ खग मोरँ॥
चतुरानन पहिँ जाहु खगेसा। सोइ करेहु जो देहिँ निदेसा॥ ८
दोहा। अस कहि चले देवरिषि करत राम गुन गान।
हरिमाया बल बरनत पुनि पुनि परम सुजान॥५९॥
तब खगपति बिरंचि पहिँ गएऊ। निज संदेह सुनावत भएऊ॥
सुनि बिरंचि रामहि सिरु नावा। समुझि प्रताप प्रेम उर छावा॥
मन महुँ करै बिचार बिधाता। मायाबस कबि कोबिद ज्ञाता॥
हरिमाया कर अमित प्रभावा। बिपुल बार जेहि मोहि नचावा॥ ४
अग जग मय जग मम उपराजा। नहि आचरज मोह खगराजा॥

तब बोले बिधि गिरा सुहाई। जान महेस रामप्रभुताई॥
बैनतेय संकर पहिँ जाहू। तात अनत पूछहु जनि काहू॥
तहँ होइहि तव संसय हानी। चलेउ बिहंग सुनत बिधिबानी॥ ८
दोहा। परमातुर बिहंगपति आएउ तब मोहि पास।
जात रहेउँ कुबेरगृह रहिहु उमा कैलास॥६०॥
तेहि मम पद सादर सिरु नावा। पुनि आपन संदेह सुनावा॥
सुनि ता करि बिनीत मृदु बानी। प्रेम सहित मैं कहेउँ भवानी॥
मिलेहु गरुर मारग महुँ मोही। कवन भाँति समुझावौं तोही॥
तबहि होइ सब संसय भंगा। जब बहु काल करिअ सतसंगा॥ ४
सुनिअ तहाँ हरिकथा सुहाई। नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई॥
जेहि महुँ आदि मध्य अवसाना। प्रभु प्रतिपाद्य रामु भगवाना॥
नित हरिकथा होति जहँ भाई। पठवौं तहाँ सुनहु तुम्ह जाई॥
जाइहि सुनत सकल संदेहा। रामचरन होइहि अति नेहा॥ ८

। दोहा।

बिनु सतसंग न हरिकथा तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गए बिनु रामपद होइ न दृढ़ अनुराग॥६१॥
मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा। किएँ जोग जप ज्ञान बिरागा॥
उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला। तहँ रह काकभुसुंडि सुसीला॥
रामभगति पथ परम प्रबीना। ज्ञानी गुनगृह बहुकालीना॥
रामकथा सो कहै निरंतर। सादर सुनहिं बिबिध बिहंगबर॥ ४
जाइ सुनहुँ तहँ हरिगुन भूरी। होइहि मोहजनित दुख दूरी॥
मैं जब तेहि सब कहा बुझाई। चलेउ हरषि मम पद सिरु नाई॥
ता तें उमा न मैं समुझावा। रघुपति कृपा मरमु मैं पावा॥
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना। सो खोवै चह कृपानिधाना॥ ८
कछु तेहि तें पुनि मैं नहि राखा। समुझै खग खग ही कै भाषा॥
प्रभुमाया बलवंत भवानी। जाहि न मोह कवन अस ज्ञानी॥
दोहा। ज्ञानी भगतसिरोमनि त्रिभुवनपति कर जान।
ताहि मोह माया नर पावर करहिं गुमान॥ १२

सिव बिरंचि कहुँ मोहै को है बपुरा आन।
अस जिय जानि भजहिँ मुनि मायापति भगवान ॥६२॥

गएउ गरुड़ जहँ बसै भुसुंडी। मति अकुंठ हरिभगति अखंडी ॥
देखि सैल प्रसन्न मन भएऊ। माया मोह सोच सब गएऊ ॥
करि तड़ाग मज्जनु जल पाना। बट तर गएउ हृदय हरषाना ॥
बृद्ध बृद्ध बिहंग तहँ आए। सुनै राम के चरित सुहाए ॥
कथा अरंभ करैँ सोइ चाहा। तेहीँ समय गएउ खगनाहा ॥
आवत देखि सकल खगराजा। हरषेउ बायस सहित समाजा ॥
अति आदरु खगपति कर कीन्हा। स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥
करि पूजा समेत अनुरागा। मधुर बचन तब बोलेउ कागा ॥

दोहा। नाथ कृतारथ भएउँ मैँ तव दरसन खगराज।
आएसु देहु सो करौँ अब प्रभु आएहु केहि काज ॥
सदा कृतारथरूप तुम्ह कह मृदु बचन खगेस।
जेहि कै अस्तुति सादर निज मुख कीन्हि महेस ॥६३॥

सुनहुँ तात जेहिँ कारज आएउँ। सो सब भएउ दरस तव पाएउँ ॥
देखि परम पावन तव आश्रम। गएउ मोह संसय नाना भ्रम ॥
अब श्रीरामकथा अति पावनि। सदा सुखद दुखपुंज नसावनि ॥
सादर तात सुनावहु मोही। बार बार बिनवौँ प्रभु तोही ॥
सुनत गरुर कै गिरा बिनीता। सरल सप्रेम सुखद सुपुनीता ॥
भएउ तासु मन परम उछाहा। लाग कहै रघुपति गुन गाहा ॥
प्रथमहि अति अनुराग भवानी। रामचरितसर कहेसि बखानी ॥
पुनि नारद कर मोह अपारा। कहेसि बहुरि रावन अवतारा ॥
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई। तब सिसुचरित कहेसि मन लाई ॥

। दोहा ।

बालचरित कहि बिबिध बिधि मन महँ परम उछाह।
रिषि आगवनु कहेसि पुनि श्रीरघुबीर बिबाह ॥६४॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा। पुनि नृपबचन राजरस भंगा ॥
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा। कहेसि राम लछिमन संबादा ॥

बिपिनगवनु केवट अनुरागा। सुरसरि उतरि निवास प्रयागा॥
बालमीकि प्रभु मिलब बखाना। चित्रकूट जिमि बसे भगवाना॥
सचिवागमनु नगर नृपमरना। भरतागमनु प्रेम बहु बरना॥
करि नृपक्रिया संग पुरवासी। भरतु गए जहँ प्रभु सुखरासी॥
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाए। लै पादुका अवधपुर आए॥
भरतरहनि सुरपतिसुत करनी। प्रभु अरु अत्रि भेट पुनि बरनी॥

दोहा। कहि बिराधबध जेहि बिधि देह तजी सरभंग।
बरनि सुतीछनप्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सन संग॥६५॥

कहि दंडक बन पावनताई। गीधमइत्री पुनि तेहि गाई॥
पुनि प्रभु पंचबटी कृत बासा। भंजी सकल मुनिन्ह कै त्रासा॥
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा। सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा॥
खर दूषन बध बहुरि बखाना। जिमि सबु मरमु दसानन जाना॥
दसकंधर मारीच बतकही। जेहि बिधि भई सो सब तेहिँ कही॥
पुनि मायासीता कर हरना। श्रीरघुबीरबिरह कछु बरना॥
पुनि प्रभु गीधक्रिया जिमि कीन्ही। बधि कबंध सबरिहि गति दीन्ही॥
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा। जेहि बिधि गए सरोवर तीरा॥

दोहा। प्रभु नारद संवाद कहि मारुतिमिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीवमिताई बालिप्रान कर भंग॥
कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रबरषन बास।
बरनन बरषा सरद कर रामरोष कपित्रास॥६६॥

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए। सीताखोजन सकल सिधाए॥
बिबरप्रवेस कीन्ह जेहि भाँती। कपिन्ह बहोरि मिला संपाती॥
सुनि सब कथा समीरकुमारा। नाघत भयेउ पयोधि अपारा॥
लंका कपि प्रवेस जिमि कीन्हा। पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा॥
बन उजारि रावनहि प्रबोधी। पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी॥
आये कपि सब जहँ रघुराई। बैदेही कै कुसल सुनाई॥
सेन समेत जथा रघुबीरा। उतरे जाइ बारिनिधि तीरा॥
मिला बिभीषनु जेहि बिधि आई। सागरनिग्रह कथा सुनाई॥

दोहा। सेतु बाँधि कपिसेन जिमि उतरी सागर पार।
गएउ बसीठीं बीरबर जेहि बिधि बालिकुमार॥
निसिचर कीस लराई बरनिसि बिबिध प्रकार।
कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संघार॥६७॥ १२

निसिचरनिकर मरन बिधि नाना। रघुपति रावन समर बखाना॥
रावनबध मंदोदरिसोका। राजु बिभीषन देव असोका॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी। सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी॥
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता। अवध चले प्रभु कृपानिकेता॥ ४
जेहिं बिधि रामु नगर निज आए। बायस बिसद चरित सब गाए॥
कहेसि बहोरि राम अभिषेका। पुर बरनन नृपनीति अनेका॥
कथा समस्त भुसुंडि बखानी। जो मैं तुम्ह सन कही भवानी॥
सुनि सब रामकथा खगनाहा। कहत बचन मन परम उछाहा॥ ८

सोरठा। गएउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपतिचरित।
भएउ रामपद नेह तव प्रसाद बायसतिलक॥
मोहि भएउ अति मोह प्रभुबंधन रन महुँ निरखि।
चिदानंद संदोह रामु बिकल कारन कवन॥६८॥ १२

देखि चरित अति नर अनुसारी। भएउ हृदय मम संसय भारी॥
सोइ भ्रम अब हित करि मैं जाना। कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना॥
जो अति आतप ब्याकुल होई। तरुछाया सुख जानै सोई॥
जौ नहि होत मोह अति मोही। मिलतेउँ तात कवन बिधि तोही॥ ४
सुनतेउँ किमि हरिकथा सुहाई। अति बिचित्र बहु बिधि तुम्ह गाई॥
निगमागम पुरान मत एहा। कहहिँ सिद्ध मुनि नहि संदेहा॥
संत बिसुद्ध मिलहिँ परि तेही। चितवहिँ रामु कृपा करि जेही॥
रामकृपा तव दरसनु भएऊ। तव प्रसाद मम संसय गएऊ॥ ८

दोहा। सुनि बिहंगपति बानी सहित बिनय अनुराग।
पुलकगात लोचन सजल मन हरषेउ अति काग॥
श्रोता सुमति सुसील सुचि कथारसिक हरिदास।
पाइ उमा अति गोप्यमपि सज्जन करहिँ प्रकास॥६९॥ १२

बोलेउ काकभुसुंडि बहोरी । नभगनाथ पर प्रीति न थोरी ॥
सब बिधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे । कृपापात्र रघुनायक केरे ॥
तुम्हहि न संसय मोह न माया । मो पर नाथ कीन्हि तुम्ह दाया ॥
पठै मोह मिस खगपति तोंही । रघुपति दीन्हि बड़ाई मोही ॥ ४
तुम्ह निज मोह कहा खगसाईँ । सो नहि कछु आचरज गोसाईँ ॥
नारद भव बिरंचि सनकादी । जे मुनिनायक आतमबादी ॥
मोह न अंध कीन्ह केहि केही । को जग काम नचाव न जेही ॥
तृष्ना केहि न कीन्ह बौरहा । केहि कर हृदय क्रोध नहि दहा ॥ ८

दोहा । ज्ञानी तापस सूर कबि कोबिद गुन आगार ।
केहि कै लोभ बिडंबना कीन्हि न एहि संसार ॥
श्रीमद बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि ।
मृगलोचनि लोचन सर को अस लाग न जाहि ॥७०॥ १२

गुन कृत सन्यपात नहि केही । कोउ न मान मद तजेउ निबेही ॥
जौबन ज्वर केहि नहि बलकावा । ममता केहि कर जसु न नसावा ॥
मच्छर काहि कलंक न लावा । काहि न सोक समीर डोलावा ॥
चिंता सापिनि काहि न खाया । को जग जाहि न ब्यापी माया ॥ ४
कीट मनोरथ दारु सरीरा । जेहि न लाग घुन को अस धीरा ॥
सुत बित लोक ईषना तीनी । केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी ॥
यह सब माया कर परिवारा । प्रबल अमित को बरनै पारा ॥
सिव चतुरानन जाहि डेराहीँ । अपर जीव केहि लेखे माहीँ ॥ ८

दोहा । ब्यापि रहेउ संसार महु मायाकटक प्रचंड ।
सेनापति कामादि भट दंभ कपट पाषंड ॥
सो दासी रघुबीर कै समुझेँ मिथ्या सोपि ।
छूट न रामकृपा बिनु नाथ कहौँ पद रोपि ॥७१॥ १२

जो माया सब जगहि नचावा । जासु चरित लखि काहुँ न पावा ॥
सोइ प्रभु भ्रूबिलास खगराजा । नाच नटी इव सहित समाजा ॥
सोइ सच्चिदानंद घन रामा । अज बिज्ञानरूप गुनधामा ॥
ब्यापक ब्यापि अखंड अनंता । अखिल अमोघ सक्ति भगवंता ॥ ४

अगुन अदभ्र गिरा गोतीता। सबदरसी अनवद्य अजीता॥
निर्मल निराकार निर्मोहा। नित्य निरंजन सुखसंदोहा॥
प्रकृतिपार प्रभु सब उर बासी। ब्रह्म निरीह बिरज अविनासी॥
इहाँ मोह कर कारन नाहीं। रवि सन्मुख तम कबहुँ कि जाहीं॥ ८

दोहा। भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप।
किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप॥
जथा अनेक वेप धरि नृत्य करै नट कोइ।
सोइ सोइ भाव देखावै आपुनु होइ न सोइ॥७२॥ १२

असि रघुपतिलीला उरगारी। दनुज बिमोहनि जन सुखकारी॥
जे मतिमलिन बिषयबस कामी। प्रभु पर मोह धरहिँ इमि स्वामी॥
नयनदोष जा कहुँ जब होई। पीत बरन ससि कहुँ कह सोई॥
जब जेहि दिसिभ्रम होइ खगेसा। सो कह पच्छिम उएउ दिनेसा॥ ४
नौकारूढ़ चलत जग देखा। अचल मोहबस आपुहि लेखा॥
बालक भ्रमहिँ न भ्रमहिँ गृहादी। कहहिँ परस्पर मिथ्याबादी॥
हरिविषइक अस मोह बिहंगा। सपनेहुँ नहि अज्ञानप्रसंगा॥
मायाबस मतिमंद अभागी। हृदय जमनिका बहु बिधि लागी॥ ८
ते सठ हठबस संसय करहीँ। निज अज्ञान राम पर धरहीँ॥

। दोहा।

काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप।
ते किमि जानहिँ रघुपतिहि मूढ़ परे तम कूप॥
निर्गुनरूप सुलभ अति सगुन न जानहि कोइ॥ १२
सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनिमन भ्रम होइ॥ ७३॥

सुनु खगेस रघुपतिप्रभुताई। कहौँ जथामति कथा सुहाई॥
जेहि बिधि मोह भएउ प्रभु मोही। सोउ सब कथा सुनावउँ तोही॥
राम कृपा भाजन तुम्ह ताता। हरि गुन प्रीति मोहि सुखदाता॥
ता तेँ नहि कछु तुम्हहि दुरावौँ। परम रहस्य मनोहर गावौँ॥ ४
सुनहु राम कर सहज सुभाऊ। जन अभिमान न राखहिँ काऊ॥
संसृतिमूल सूलप्रद नाना। सकल सोक दायक अभिमाना॥

ता तेँ करहिँ कृपानिधि दूरी। सेवक पर ममता अति भूरी॥
जिमि सिसुतन ब्रन होइ गोसाईँ। मातु चिराव कठिन की नाईँ॥
दोहा। जदपि प्रथम दुख पावै रोवै बाल अधीर।
व्याधिनास हित जननी गनइ न सो सिसुपीर॥
तिमि रघुपति निज दास कर हरहिँ मान हित लागि।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहि कस न भजसि भ्रम त्यागि॥७४॥
रामकृपा आपनि जड़ताई। कहौँ खगेस सुनहुँ मन लाई॥
जब जब राम मनुजतनु धरहीँ। भक्त हेतु लीला बहु करहीँ॥
तब तब अवधपुरी मैँ जाऊँ। बालचरित बिलोकि हरषाऊँ॥
जन्म महोत्सव देखौँ जाई। बरष पाँच तहँ रहउँ लोभाई॥
इष्टदेव मम बालक रामा। सोभा बपुष कोटि सत कामा॥
निज प्रभु बदन निहारि निहारी। लोचन सुफल करौँ उरगारी॥
लघु बायस बपु धरि हरिसंगा। देखौँ बालचरित बहु रंगा॥
दोहा। लरिकाईँ जहँ जहँ फिरहिँ तहँ तहँ संग उड़ाउँ।
जूठनि परइ अजिर महुँ सो उठाइ करि खाउँ॥
एक बारँ अति सैसवँ चरित किए रघुबीर।
सुमिरत प्रभुलीला सोइ पुलकित भएउ सरीर॥७५॥
कहै भुसुंडि सुनहु खगनायक। रामचरित सेवक सुखदायक॥
नृपमंदिर सुंदर सब भाँती। खचित कनक मनि नाना जाती॥
बरनि न जाइ रुचिर अगनाई। जहँ खेलहिँ नित चारिउ भाई॥
बालबिनोद करत रघुराई। बिचरत अजिर जननि सुखदाई॥
मरकत मृदुल कलेवर स्यामा। अंग अंग प्रति छबि बहु कामा॥
नव राजीव अरुन मृदु चरना। पदज रुचिर नख ससिदुति हरना॥
ललित अंक कुलिसादिक चारी। नूपुर चारु मधुर रव कारी॥
चारु पुरट मनि रचित बनाई। कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई॥
दोहा। रेखा त्रय सुंदर उदर नाभि रुचिर गंभीर।
उर आयत भ्राजत बिबिध बाल बिभूषन चीर॥७६॥
अरुन पानि नख करज मनोहर। बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर॥

कंध बालकेहरि दर ग्रीवा। चारु चिबुक आनन छबिसीवा॥
कलबल बचन अधर अरुनारे। दुइ दुइ दसन बिसद बर बारे॥
ललित कपोल मनोहर नासा। सकल सुखद ससिकर सम हासा॥ ४
नीलकंज लोचन भवमोचन। भ्राजत भाल तिलक गोरोचन॥
बिकट भृकुटि सम श्रवन सुहाए। कुंचित कच मेचक छबि छाए॥
पीत झीनि झगुली तन सोही। किलकनि चितवनि भावति मोही॥
रूपरासि नृप अजिर बिहारी। नाचहिँ निज प्रतिबिंब निहारी॥ ८
मो सन करहिँ बिबिध बिधि क्रीड़ा। बरनत चरित होति मोहि ब्रीड़ा॥
किलकत मोहि धरन जब धावहिँ। चलौँ भागि तब पूप देखावहिँ॥

दोहा। आवत निकट हसहिँ प्रभु भाजत रुदनु कराहिँ।
जाउँ समीप गहन पद फिरि फिरि चितै पराहिँ॥ १२
प्राकृत सिसु इव लीला देखि भएउ मोहि मोह।
कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह॥७७॥

एतना मन आवत खगराया। रघुपतिप्रेरित ब्यापी माया॥
सो माया न दुखद मोहि काहीँ। आन जीव इव संसृति नाहीँ॥
नाथ इहाँ कछु कारन आना। सुनहु सो सावधान हरिजाना॥
ज्ञान अखंड एक सीताबर। मायाबस्य जीव सचराचर॥ ४
जौँ सब के रह ज्ञान एकरस। ईस्वर जीवहि भेद कहहु कस॥
मायाबस्य जीव अभिमानी। ईसबस्य माया गुनखानी॥
परबस जीव स्वबस भगवंता। जीव अनेक एक श्रीकंता॥
मुधा भेद जद्यपि कृत मायाँ। बिनु हरि जाइ न कोटि उपायाँ॥ ८

दोहा। रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निर्बान।
ज्ञानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूँछ बिषान॥
राकापति षोड़स उअहिँ तारागन समुदाइ।
सकल गिरिन्ह दव लाइअ बिनु रबि राति न जाइ॥७८॥ १२

ऐसेहिँ बिनु हरिभजन खगेसा। मिटै न जीवन्ह केर कलेसा॥
हरिसेवकहि न ब्याप अबिद्या। प्रभुप्रेरित ब्यापै तेहि बिद्या॥
ता तेँ नास न होइ दास कर। भेदभगति बाढ़ै बिहंगबर॥

भ्रम तें चकित राम मोहि देखा। बिहसे सो सुनु चरित बिसेषा॥
तेहि कौतुक कर मरमु न काहूँ। जाना अनुज न मातु पिताहूँ॥
जानुपानि धाए मोहि धरना। स्यामल गात अरुन कर चरना॥
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी। राम गहन कहुँ भुजा पसारी॥
जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा। तहँ हरिभुज देखौं निज पासा॥

दोहा। ब्रह्मलोक लगि गएउँ मैं चितएउँ पाछ उड़ात।
जुग अंगुल कर बीच सब रामभुजहि मोहि तात॥
सप्तावरन भेदि करि जहाँ लगें गति मोरि।
गएउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि ब्याकुल भएउँ बहोरि॥७८॥

मूदेउँ नयन त्रसित जब भएऊँ। पुनि चितवत कोसलपुर गएऊँ॥
मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं। बिहसत तुरत गएउँ मुख माहीं॥
उदर माझ सुनु अंडजराया। देखेउँ बहु ब्रह्मांडनिकाया॥
अति बिचित्र तहँ लोक अनेका। रचना अधिक एक तें एका॥
कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा। अगनित उड़गन रबि रजनीसा॥
अगनित लोकपाल जम काला। अगनित भूधर भूमि बिसाला॥
सागर सरि सर बिपिन अपारा। नाना भाँति सृष्टिबिस्तारा॥
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किंनर। चारि प्रकार जीव सचराचर॥

दोहा। जो नहि देखा नहि सुना जो मनहू न समाइ।
सो सब अद्भुत देखेउँ बरनि कवनि बिधि जाइ॥
एक एक ब्रह्मांड महुँ रहौं बरष सत एक।
एहि बिधि देखत फिरौं मैं अंडकटाह अनेक॥८०॥

लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता। भिन्न बिष्नु सिव मनु दिसित्राता॥
नर गंधर्ब भूत बेताला। किंनर निसिचर पसु खग ब्याला॥
देव दनुज गन नाना जाती। सकल जीव तहँ आनहि भाती॥
महि सरि सागर सर गिरि नाना। सब प्रपंच तहँ आनहि आना॥
अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा। देखेउँ जिनस अनेक अनूपा॥
अवधपुरी प्रति भुअन निनारी। सरजू भिन्न भिन्न नर नारी॥
दसरथ कौसल्या सुनु ताता। बिबिध रूप भरतादिक भ्राता॥

प्रतिब्रह्मांड राम अवतारा। देखौं बालबिनोद उदारा॥

दोहा। भिन्न भिन्न सबु दीख मैं अति बिचित्र हरिजान।
अगनित भुअन फिरेउँ प्रभु रामु न देखेउँ आन॥
सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुबीर।
भुवन भुवन देखत फिरौं प्रेरित मोह समीर॥८१॥

भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका। बीते मनहु कलप सत एका॥
फिरत फिरत निज आश्रम आएउँ। तहँ पुनि रहि कछु काल गवाएउँ॥
निज प्रभु जन्म अवध सुनि पाएउँ। निर्भर प्रेम हरषि उठि धाएउँ॥
देखौं जन्म महोत्सव जाई। जेहि बिधि प्रथम कहा मैं गाई॥
राम उदर देखेउँ जग नाना। देखत बनइ न जाइ बखाना॥
तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना। मायापति कृपाल भगवाना॥
करौं बिचार बहोरि बहोरी। मोह कलिल ब्यापित मति मोरी॥
उभय घरी मह मैं सब देखा। भएउँ भ्रमित मन मोह बिसेषा॥

। दोहा।

देखि कृपाल बिकल मोहि बिहसे तब रघुबीर।
बिहसतही मुख बाहेर आएउँ सुनु मतिधीर॥
सोइ लरिकाई मो सन करन लगे पुनि राम।
कोटि भाँति समुझावौं मनु न लहै बिश्राम॥८२॥

देखि चरित यह सो प्रभुताई। समुझत देहदसा बिसराई॥
धरनि परेउँ मुख आव न बाता। त्राहि त्राहि आरत जन त्राता॥
प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिलोकी। निज माया प्रभुता तब रोकी॥
कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ। दीनदयाल सकल दुख हरेऊ॥
कीन्ह राम मोहि बिगत बिमोहा। सेवक सुखद कृपासंदोहा॥
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी। मन मह होइ हरष अति भारी॥
भगतबछलता प्रभु कै देखी। उपजी मम उर प्रीति बिसेषी॥
सजल नयन पुलकित कर जोरी। कीन्हिउँ बहु बिधि बिनय बहोरी॥

दोहा। सुनि सप्रेम मम बानी देखि दीन निज दास।
बचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमानिवास॥

काकभुसुंडि मागु बर अति प्रसन्न मोहि जानि ।
अनिमादिक सिधि अपर रिधि मोच्छ सकल सुख खानि ॥८३॥ १२

ज्ञान बिबेक बिरति बिज्ञाना । मुनिदुर्लभ गुन जे जग जाना ॥
आजु देउँ सब संसय नाहीं । मागु जो तोहि भाव मन माहीं ॥
सुनि प्रभुबचन अधिक अनुरागेउँ । मन अनुमान करन तब लागेउँ ॥
प्रभु कह देन सकल सुख सही । भगति आपनी देन न कही ॥ ४
भगतिहीन गुन सब सुख ऐसे । लवन बिना बहु ब्यंजन जैसे ॥
भजनहीन सुख कवने काजा । अस बिचारि बोलेउँ खगराजा ॥
जौ प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू । मो पर करहु कृपा अरु नेहू ॥
मन भावत बर मागौँ स्वामी । तुम्ह उदार उर अंतरजामी ॥ ८

दोहा । अबिरल भगति बिसुद्ध तव श्रुति पुरान जो गाव ।
जेहि खोजत जोगीस मुनि प्रभुप्रसाद कोउ पाव ॥
भगतकल्पतरु प्रनतहित कृपासिंधु सुखधाम ।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम ॥८४॥ १२

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक । बोले बचन परम सुखदायक ॥
सुनु बायस तैँ सहज सयाना । काहे न मागसि अस बरदाना ॥
सब सुख खानि भगति तैँ मागी । नहि जग कोउ तोहि सम बड़भागी ॥
जो मुनि कोटि जतन नहि लहहीँ । जे जप जोग अनल तन दहहीँ ॥ ४
रीझेउँ देखि तोरि चतुराई । मागेहु भगति मोहि अति भाई ॥
सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरे । सब सुभ गुन बसिहहिँ उर तोरे ॥
भगति ज्ञान बिज्ञान बिरागा । जोग चरित्र रहस्य बिभागा ॥
जानब तैँ सब ही कर भेदा । मम प्रसाद नहि साधन खेदा ॥ ८

दोहा । मायासंभव भ्रम सब अब न ब्यापिहहिँ तोहि ।
जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुन गुनाकर मोहि ॥
मोहि भगत प्रिय संतत अस बिचारि सुनु काग ।
काय बचन मन मम पद करेसु अचल अनुराग ॥८५॥ १२

अब सुनु परम बिमल मम बानी । सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥
निज सिद्धांत सुनावौँ तोही । सुनि मन धरु सब तजि भजु मोही ॥

मम माया संभव संसारा । जीव चराचर बिबिध प्रकारा ॥
सब मम प्रिय सब मम उपजाए । सब तेँ अधिक मनुज मोहि भाए ॥ ४
तिन्ह महँ द्विज द्विज महँ श्रुतिधारी । तिन्ह महुँ निगमधर्म अनुसारी ॥
तिन्ह महँ प्रिय बिरक्त पुनि ज्ञानी । ज्ञानिहु तेँ अति प्रिय बिज्ञानी ॥
तिन्ह तेँ पुनि मोहि प्रिय निज दासा । जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ॥
पुनि पुनि सत्य कहौँ तोहि पाहीं । मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं ॥ ८
भगतिहीन बिरंचि किन होई । सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई ॥
भगतिवंत अति नीचौ प्रानी । मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी ॥

दोहा । सुचि सुसील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग ।
श्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग ॥८६॥ १२

एक पिता के बिपुल कुमारा । होहिँ पृथक गुन सील अचारा ॥
कोउ पंडित कोउ तापस ज्ञाता । कोउ धनवंत सूर कोउ दाता ॥
कोउ सर्बज्ञ धर्मरत कोई । सब पर पितहि प्रीति सम होई ॥
कोउ पितुभगत बचन मन कर्मा । सपनेहु जान न दूसर धर्मा ॥ ४
सो सुत प्रिय पितु प्रान समाना । जद्यपि सो सब भाँति अयाना ॥
एहि बिधि जीव चराचर जेते । त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
अखिल बिस्व यह मोर उपाया । सब पर मोहि बराबरि दाया ॥
तिन्ह महँ जो परिहरि मद माया । भजइ मोहि मन बच अरु काया ॥ ८

दोहा । पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ ।
सर्बभाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ ॥

सोरठा । सत्य कहौँ खग तोहि सुचि सेवक मम प्रानप्रिय ।
अस बिचारि भजु मोहि परिहरि आस भरोस सब ॥८७॥ १२

कबहूँ काल न ब्यापिहि तोही । सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही ॥
प्रभुबचनामृत सुनि न अघाऊँ । तनु पुलकित मन अति हरषाऊँ ॥
सो सुख जानै मनु अरु काना । नहि रसना पहिँ जाइ बखाना ॥
प्रभु सोभा सुख जानहिँ नयना । कहि किमि सकहिँ तिन्हहिँ नहिँ बयना ॥ ४
बहु बिधि मोहि प्रबोधि सुख देई । लगे करन सिसुकौतुक तेई ॥
सजल नयन कछु मुख करि रूखा । चितै मातु लागी अति भूखा ॥

देखि मातु आतुर उठि धाई। कहि मृदु बचन लिए उर लाई॥
गोद राखि कराव पयपाना। रघुपतिचरित ललित कर गाना॥
सोरठा। जेहि सुख लागि पुरारि असुभ बेष कृत सिव सुखद।
अवधपुरी नर नारि तेहि सुख महु संतत मगन॥
सोई सुखलवलेस जिन्ह बारक सपनेहु लहेउ।
ते नहिँ गनहिँ खगेस ब्रह्मसुखहि सज्जन सुमति॥८८॥
मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला। देखेउँ बालबिनोद रसाला॥
रामप्रसाद भगति बर पायेउँ। प्रभुपद बंदि निजाश्रम आयेउँ॥
तब तेँ मोहि न ब्यापी माया। जब तेँ रघुनायक अपनाया॥
यह सब गुप्त चरित मैं गावा। हरिमाया जिमि मोहि नचावा॥
निज अनुभव अब कहौँ खगेसा। बिनु हरिभजन न जाहिँ कलेसा॥
रामकृपा बिनु सुनु खगराई। जानि न जाइ रामप्रभुताई॥
जाने बिनु न होइ परतीती। बिनु परतीति होइ नहिँ प्रीती॥
प्रीति बिना नहिँ भगति दृढ़ाई। जिमि खगपति जल कै चिकनाई॥
सोरठा। बिनु गुर होइ कि ज्ञान ज्ञान कि होइ बिराग बिनु।
गावहिँ बेद पुरान सुख कि लहिअ हरिभगति बिनु॥
कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु।
चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिअ॥८९॥
बिनु संतोष काम न नसाहीँ। काम अछत सुख सपनेहु नाहीँ॥
रामभजन बिनु मिटहिँ कि कामा। थलबिहीन तरु कबहुँ कि जामा॥
बिनु बिज्ञान कि समता आवै। कोउ अवकास कि नभ बिनु पावै॥
श्रद्धा बिना धर्म नहि होई। बिनु महि गंध कि पावै कोई॥
बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा। जल बिनु रस कि होइ संसारा॥
सील कि मिल बिनु बुधसेवकाई। जिमि बिनु तेज न रूप गोसाँई॥
निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा। परस कि होइ बिहीन समीरा॥
कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा। बिनु हरिभजन न भव भय नासा॥
दोहा। बिनु बिस्वास भगति नहिँ तेहि बिनु द्रवहिँ न रामु।
रामकृपा बिनु सपनेहु जीव न लह बिश्रामु॥

सोरठा। अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल।
भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुंदर सुखद ॥९०॥ १२

निज मति सरिस नाथ मैं गाई। प्रभु प्रताप महिमा खगराई॥
कहेउँ न कछु करि जुगुति बिसेषी। यह सब मैं निज नयनन्हि देखी॥
महिमा नाम रूप गुन गाथा। सकल अमित अनंत रघुनाथा॥
निज निज मति मुनि हरिगुन गावहिं। निगम सेष सिव पार न पावहिं॥ ४
तुम्हहि आदि खग मसक प्रजंता। नभ उड़ाहिं नहि पावहिं अंता॥
तिमि रघुपतिमहिमा अवगाहा। तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा॥
रामु काम सत कोटि सुभगतन। दुर्गा कोटि अमित अरिमर्दन॥
सक्र कोटि सत सरिस बिलासा। नभ सत कोटि अमित अवकासा॥ ८

दोहा। मरुत कोटि सत बिपुल बल रबि सत कोटि प्रकास।
ससि सत कोटि सुसीतल समन सकल भवत्रास॥
काल कोटि सत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत।
धूमकेतु सत कोटि सम दुराधरष भगवंत॥९१॥ १२

प्रभु अगाध सतकोटि पताला। समन कोटि सत सरिस कराला॥
तीरथ अमित कोटि सम पावन। नाम अखिल अघपूग नसावन॥
हिम गिरि कोटि अचल रघुबीरा। सिंधु कोटि सत सम गंभीरा॥
कामधेनु सत कोटि समाना। सकल काम दायक भगवाना॥ ४
सारद कोटि अमित चतुराई। बिधि सत कोटि सृष्टिनिपुनाई॥
बिष्नु कोटि सम पालनकर्ता। रुद्र कोटि सत सम संहर्ता॥
धनद कोटि सत सम धनवाना। माया कोटि प्रपंचनिधाना॥
भारधरन सत कोटि अहीसा। निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा॥ ८

छंद। निरुपम न उपमा आन राम समान रामु निगम कहे।
जिमि कोटि सत खद्योत सम रबि कहत अति लघुता लहे।
एहि भाँति निज निज मति बिलास मुनीस हरिहि बखानहीं।
प्रभु भावगाहक अति कृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं॥ १२

दोहा। रामु अमित गुनसागर थाह कि पावै कोइ।
संतन्ह सन जस किछु सुनेउँ तुम्हहि सुनायेउँ सोइ॥

सोरठा। भावबस्य भगवान सुखनिधान करुनाभवन।
तजि ममता मद मान भजिअ सदा सीतारवन ॥८२॥ १६
सुनि भुसुंडि के बचन सुहाए। हरषित खगपति पंख फुलाए॥
नयन नीर मन अति हरषाना। श्रीरघुपतिप्रताप उर आना॥
पाछिल मोह समुझि पछिताना। ब्रह्म अनादि मनुज करि माना॥
पुनि पुनि कागचरन सिरु नावा। जानि राम सम प्रेम बढ़ावा॥ ४
गुर बिनु भवनिधि तरै न कोई। जौं बिरंचि संकर सम होई॥
संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता। दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता॥
तव सरूप गारुड़ि रघुनायक। मोहि जिआएउ जन सुखदायक॥
तव प्रसाद मम मोह नसाना। रामरहस्य अनूपम जाना॥ ८
दोहा। ताहि प्रसंसि बिबिध बिधि सीस नाइ कर जोरि।
बचन बिनीत सप्रेम मृदु बोलेउ गरुड़ बहोरि॥
प्रभु अपने अबिबेक तें बूझौं स्वामी तोहि।
कृपासिंधु सादर कहहु जानि दास निज मोहि ॥८३॥ १२
तुम्ह सर्बज्ञ तज्ञ तमपारा। सुमति सुसील सरल आचारा॥
ज्ञान बिरति बिज्ञान निवासा। रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा॥
कारन कवन देह यह पाई। तात सकल मोहि कहहु बुझाई॥
रामचरितसर सुंदर स्वामी। पायेहु कहाँ कहहु नभगामी॥ ४
नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं। महाप्रलयेहुँ नास तव नाहीं॥
मुधा बचन नहि ईस्वर कहई। सोउ मोरे मन संसय अहई॥
अग जग जीव नाग नर देवा। नाथ सकल जगु कालकलेवा॥
अंडकटाह अमित लयकारी। कालु सदा दुरतिक्रम भारी॥ ८
सोरठा। तुम्हहि न ब्यापत काल अति कराल कारन कवन।
मोहि सो कहहु कृपाल ज्ञानप्रभाव कि जोगबल॥
दोहा। प्रभु तव आश्रम आएँ मोर मोह भ्रम भाग।
कारन कवन सो नाथ सब कहहु सहित अनुराग ॥८४॥ १२
गरुड़गिरा सुनि हरषेउ कागा। बोलेउ उमा परम अनुरागा॥
धन्य धन्य तव मति उरगारी। प्रस्न तुम्हारि मोहि अति प्यारी॥

सुनि तव प्रस्न सप्रेम सुहाई। बहुत जनम कै सुधि मोहि आई॥
सब निज कथा कहौँ मैँ गाई। तात सुनहु सादर मन लाई॥
जप तप मख सम दम ब्रत दाना। बिरति बिबेक जोग बिज्ञाना॥
सब कर फल रघुपतिपद प्रेमा। तेहि बिनु कोउ न पावै छेमा॥
एहि तन रामभगति मैँ पाई। ता तेँ मोहि ममता अधिकाई॥
जेहि तेँ कछु निज स्वारथ होई। तेहि पर ममता कर सब कोई॥

सोरठा। पन्नगारि असि नीति श्रुतिसंमत सज्जन कहहि।
अति नीचहु सन प्रीति करिअ जानि निज परम हित॥
पाट कीट तेँ होइ तेहि तेँ पाटंबर रुचिर।
कृमि पालै सबु कोइ परम अपावन प्रान सम॥८५॥

स्वारथ साच जीव कहुँ एहा। मन क्रम बचन रामपद नेहा॥
सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा। जो तनु पाइ भजिअ रघुबीरा॥
रामबिमुख लहि बिधि सम देही। कबि कोबिद न प्रसंसहिँ तेही॥
रामभगति एहि तन उर जामी। ता तेँ मोहि परम प्रिय स्वामी॥
तजौँ न तनु निज इच्छा मरना। तन बिनु बेद भजनु नहि बरना॥
प्रथम मोह मोहि बहुत बिगोवा। रामबिमुख सुख कबहुँ न सोवा॥
नाना जन्म कर्म पुनि नाना। किए जोग जप तप मख दाना॥
कवन जोनि जनमेउँ जहँ नाहीँ। मैँ खगेस भ्रमि भ्रमि जग माहीँ॥
देखेउँ करि सब करम गोसाईँ। सुखी न भएउँ अबहि की नाईँ॥
सुधि मोहि नाथ जन्म बहु केरी। सिवप्रसाद मति मोह न घेरी॥

दोहा। प्रथम जन्म के चरित अब कहौँ सुनहु बिहगेस।
सुनि प्रभुपद रति उपजै जा तेँ मिटहिँ कलेस॥
पूरुब कल्प एक प्रभु जुग कलिजुग मलमूल।
नर अरु नारि अधर्मरत सकल निगमप्रतिकूल॥८६॥

तेहि कलिजुग कोसलपुर जाई। जन्मत भएउँ सूद्रतनु पाई॥
सिवसेवक मन क्रम अरु बानी। आन देव निंदक अभिमानी॥
धन मद मत्त परम बाचाला। उग्र बुद्धि उर दंभ बिसाला॥
जदपि रहेउँ रघुपतिरजधानी। तदपि न कछु महिमा तब जानी॥

अब जाना मैं अवधप्रभावा। निगमागम पुरान अस गावा॥
कवनेहुँ जन्म अवध बस जोई। रामपरायन सो परि होई॥
अवधप्रभाव जान तब प्रानी। जब उर बसहिं राम धनुपानी॥
सो कलिकाल कठिन उरगारी। पापपरायन सब नर नारी॥

दोहा। कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ।
दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ॥
भए लोग सब मोहबस लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ज्ञाननिधि कहौं कछुक कलिधर्म॥९७॥

बरनधर्म नहि आश्रम चारी। श्रुतिबिरोध रत सब नर नारी॥
द्विज श्रुतिबेचक भूप प्रजासन। कोउ नहि मान निगम अनुसासन॥
मारग सोइ जा कहुँ जोइ भावा। पंडित सोइ जो गाल बजावा॥
मिथ्यारंभ दंभरत जोई। ता कहुँ संत कहै सब कोई॥
सोइ सयान जो परधन हारी। जो कर दंभ सो बड़ आचारी॥
जो कह झूठ मसखरी जाना। कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना॥
निराचार जो श्रुतिपथ त्यागी। कलिजुग सोइ ज्ञानी सो बिरागी॥
जा के नख अरु जटा बिसाला। सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला॥

दोहा। असुभ बेष भूषन धरें भच्छाभच्छ जे खाहिं।
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलिजुग माहिं॥

सोरठा। जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार तेइ बकता कलिकाल महुँ॥९८॥

नारि बिबस नर सकल गोसाईं। नाचहिं नट मर्कट की नाईं॥
सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ज्ञाना। मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना॥
सब नर काम लोभ रत क्रोधी। देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी॥
गुनमंदिर सुंदर पति त्यागी। भजहिं नारि परपुरुष अभागी॥
सौभागिनी बिभूषनहीना। बिधवन्ह के सिंगार नवीना॥
गुर सिख बधिर अंध कर लेखा। एक न सुनै एक नहि देखा॥
हरै सिष्यधन सोक न हरई। सो गुर घोर नरक महु परई॥
मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं। उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं॥

दोहा। ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर कहहिँ न दूसरि बात।
कौड़ी लागि लोभबस करहिँ बिप्र गुर घात॥
बादहिँ सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह तेँ कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रबर आँखि देखावहिँ डाटि॥९९॥ १२

परत्रिय लंपट कपट सयाने। मोह द्रोह ममता लपटाने॥
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर। देखा मैं चरित्र कलिजुग कर॥
आपु गए अरु तिन्हहूँ घालहिँ। जे कहुँ सतमारग प्रतिपालहिँ॥
कल्प कल्प भरि एक एक नरका। परहिँ जे दूषहिं श्रुति करि तरका॥ ४
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा। स्वपच किरात कोल कलवारा॥
नारि मुई गृहसंपति नासी। मूड़ मुड़ाइ होहिँ संन्यासी॥
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिँ। उभय लोक निज हाथ नसावहि॥
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी। निराचार सठ बृषली स्वामी॥ ८
सूद्र करहिँ जप तप ब्रत नाना। बैठि बरासन कहहिँ पुराना॥
सब नर कल्पित करहिँ अचारा। जाइ न बरनि अनीति अपारा॥

दोहा। भए बरनसंकर कलि भिन्न सेतु सब लोग।
करहिँ पाप पावहिँ दुख भय रुज सोक बियोग॥ १२
श्रुतिसंमत हरिभक्ति पथ संजुत बिरति बिबेक।
तेहिँ न चलहिँ नर मोहबस कल्पहिँ पंथ अनेक॥१००॥

बहु दाम सँवारहिँ धाम जती। बिषया हरि लीन्हि रही बिरती।
तपसी धनवंत दरिद्र गृही। कलिकौतुक तात न जात कही।
कुलवंति निकारहिँ नारि सती। गृह आनहिँ चेरि निबेरि गती।
सुत मानहिँ मातु पिता तब लौँ। अबलानन दीख नहीँ जब लौँ। ४
ससुरारि पिआरि लगी जब तेँ। रिपुरूप कुटुंब भए तब तेँ।
नृप पापपरायन धर्म नहीँ। करि दंड बिडंब प्रजा नितहीँ।
धनवंत कुलीन मलीन अपी। द्विजचिन्ह जनेउ उघार तपी।
नहि मान पुरान न बेदहि जो। हरिसेवक संत सही कलि सो। ८
कबिबृंद उदार दुनी न सुनी। गुनदूषक ब्रात न कोपि गुनी।
कलि बारहिँ बार दुकाल परे। बिनु अन्न दुखी सब लोग मरे॥

दोहा। सुनु खगेस कलि कपट हठ दंभ द्वेष पाषंड।
मान मोह मारादि मद ब्यापि रहे ब्रह्मंड॥ १२
तामस धर्म करहिँ नर जप तप मख ब्रत दान।
देव न बरपै धरनी बए न जामहिँ धान॥१०१॥

अबला कच भूषन भूरि छुधा। धनहीन दुखी ममता बहुधा।
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्मरता। मति थोरि कठोरि न कोमलता।
नर पीड़ित रोग न भोग कहीँ। अभिमान बिरोध अकारनहीँ।
लघु जीवन संवत पंचदसा। कलपांत न नास गुमानु असा। ४
कलिकाल बिहाल किए मनुजा। नहि मानत क्वौ अनुजा तनुजा।
नहि तोष बिचार न सीतलता। सब जाति कुजाति भए मँगता।
इरिषा परुषाच्छर लोलुपता। भरि पूरि रही समता बिगता।
सब लोग बियोग बिसोक हए। बरनाश्रम धर्म अचार गए। ८
दम दान दया नहि जानपनी। जड़ता परबंचनताति घनी।
तनुपोषक नारि नरा सगरे। परनिंदक जे जग मो बगरे॥

दोहा। सुनु ब्यालारि काल कलि मल अवगुन आगार।
गुनौ बहुत कलिजुग कर बिनु प्रयास निस्तार॥ १२
कृतजुग त्रेता द्वापर पूजा मख अरु जोग।
जो गति होइ सो कलि हरि नाम तेँ पावहिँ लोग॥१०२॥

कृतजुग सब जोगी बिज्ञानी। करि हरिध्यान तरहिँ भव प्रानी॥
त्रेता बिबिध जग्य नर करहीँ। प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरहीँ॥
द्वापर करि रघुपति पद पूजा। नर भव तरहिँ उपाउ न दूजा॥
कलिजुग केवल हरि गुन गाहा। गावत नर पावहिँ भवथाहा॥ ४
कलिजुग जोग न जग्य न ज्ञाना। एक अधार राम गुन गाना॥
सब भरोस तजि जो भज रामहि। प्रेम समेत गाव गुनग्रामहि॥
सोइ भव तर कछु संसय नाहीँ। नामप्रताप प्रगट कलि माहीँ॥
कलि कर एक पुनीत प्रतापा। मानस पुन्य होहिँ नहि पापा॥ ८

दोहा। कलिजुग सम जुग आन नहि जौ नर कर बिस्वास।
गाइ राम गुन गन बिमल भव तर बिनहि प्रयास॥

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान।
जेन केन बिधि दीन्हे दान करै कल्यान ॥१०३॥ १२

नित जुगधर्म होहिँ सब केरे। हृदय राममाया के प्रेरे॥
सुद्ध सत्व समता बिज्ञाना। कृतप्रभाव प्रसन्न मन जाना॥
सत्व बहुत रज कछु रतिकर्मा। सब बिधि सुख त्रेता कर धर्मा॥
बहु रज स्वल्प सत्व कछु तामस। द्वापरधर्म हरष भय मानस॥ ४
तामस बहुत रजोगुन थोरा। कलिप्रभाव बिरोध चहुँ ओरा॥
बुध जुगधर्म जानि मन माहीँ। तजि अधर्म रति धर्म कराहीँ॥
कालधर्म नहिँ ब्यापहिँ ताही। रघुपतिचरन प्रीति अति जाही॥
नट कृत बिकट कपट खगराया। नटसेवकहि न ब्यापै माया॥ ८

दोहा। हरिमाया कृत दोष गुन बिनु हरिभजन न जाहि।
भजिअ राम तजि काम सब अस बिचारि मन माहिँ॥
तेहि कलिकाल बरष बहु बसेउँ अवध बिहगेस।
परेउ दुकाल बिपतिबस तब मैँ गएउँ बिदेस ॥१०४॥ १२

गएउँ उजेनी सुनु उरगारी। दीन मलीन दरिद्र दुखारी॥
गएँ काल कछु संपति पाई। तहँ पुनि करौँ संभुसेवकाई॥
बिप्र एक बैदिक सिवपूजा। करै सदा तेहि काजु न दूजा॥
परम साधु परमारथबिंदक। संभु उपासक नहि हरिनिंदक॥ ४
तेहि सेवौँ मैँ कपट समेता। द्विज दयाल अति नीतिनिकेता॥
बाहिज नम्र देखि मोहि साईं। बिप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं॥
संभुमंत्र मोहि द्विजबर दीन्हा। सुभ उपदेस बिबिध बिधि कीन्हा॥
जपौँ मंत्र सिवमंदिर जाई। हृदय दंभ अहमिति अधिकाई॥ ८

दोहा। मैँ खल मलसंकुल मति नीच जाति बस मोह।
हरिजन द्विज देखेँ जरौँ करौँ बिष्नु कर द्रोह॥

सोरठा। गुर नित मोहि प्रबोध दुखित देखि आचरन मम।
मोहि उपजै अति क्रोध दंभिहि नीति कि भावई ॥१०५॥ १२

एक बार गुर लीन्ह बोलाई। मोहि नीति बहु भाँति सिखाई॥
सिवसेवा कर फल सुत सोई। अबिरल भगति रामपद होई॥

रामहि भजहिँ तात सिव धाता। नर पावर कै केतिक बाता॥
जासु चरन अज सिव अनुरागी। तासु द्रोह सुख चहसि अभागी॥
हर कहुँ हरिसेवक गुर कहेऊ। सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ॥
अधम जाति मैं बिद्या पाएँ। भएउँ जथा अहि दूध पिआएँ॥
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती। गुर कर द्रोह करौं दिनु राती॥
अति दयाल गुर स्वल्प न क्रोधा। पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा॥
जेहि तें नीच बड़ाई पावा। सो प्रथमहि हति ताहि नसावा॥
धूम अनलसंभव सुनु भाई। तेहि बुझाव घनपदवी पाई॥
रज मग परी निरादर रहई। सब कर पदप्रहार नित सहई॥
मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई। पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई॥
सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा। बुध नहिँ करहिँ अधम कर संगा॥
कबि कोविद गावहि असि नीती। खल सन कलह न भल नहि प्रीती॥
उदासीन नित रहिअ गोसाईं। खल परिहरिअ स्वान की नाईं॥
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई। गुर हित कहै न मोहि सोहाई॥

दोहा। एक बार हरमंदिर जपत रहेउँ सिवनाम।
गुर आएउ अभिमान तें उठि नहि कीन्ह प्रनाम॥
सो दयाल नहि कहेउ कछु उर न रोषलवलेस।
अति अघ गुर अपमानता सहि नहि सके महेस॥१०९॥

मंदिर माझ भई नभबानी। रे हतभाग्य अज्ञ अभिमानी॥
जद्यपि तव गुर के नहि क्रोधा। अति कृपाल चित सम्यकबोधा॥
तदपि श्राप सठ देहौं तोही। नीतिबिरोध सुहाइ न मोही॥
जौ नहि दंड करौं खल तोरा। भ्रष्ट होइ श्रुतिमारग मोरा॥
जे सठ गुर सन इरिषा करहीँ। रौरव नरक कोटि जुग परहीँ॥
त्रिजगजोनि पुनि धरहिँ सरीरा। अयुत जन्म भरि पावहिँ पीरा॥
बैठि रहेसि अजगर इव पापी। सर्प होहि खल मल मति ब्यापी॥
महाबिटप कोटर महु जाई। रहु अधमाधम अधगति पाई॥

दोहा। हाहाकार कीन्ह गुर दारुन सुनि सिवश्राप।
कंपित मोहि बिलोकि अति उर उपजा परिताप॥

करि दंडवत सप्रेम द्विज सिव सन्मुख कर जोरि।
बिनय करत गदगद स्वर समुझि घोर गति मोरि ॥१०७॥

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशं।
करालं महाकालकालं कृपालं गुणागारसंसारपारं नतोहं।
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरं।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा लसद्भालबालेंदु कंठे भुजंगा।
चलत्कुंडलं भ्रूसुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं।
मृगाधीशचर्मांबरं मुंडमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं।
त्रयःशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं।
कलातीतकल्याणकल्पांतकारी सदा सज्जनानंददाता पुरारी।
चिदानंदसंदोहमोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।
न यावद् उमानाथपादारविंदं भजंतीह लोके परे वा नराणां।
न तावत्सुखं शांतिसंतापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीशशंभो ॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठंति नरा भक्त्या तेषां शंभुः प्रसीदति ॥

दोहा। सुनि बिनती सर्बज्ञ सिव देखि बिप्र अनुरागु।
पुनि मंदिर नभबानी भइ द्विजबर बर मागु ॥
जौं प्रसन्न प्रभु मो पर नाथ दीन पर नेहु।
निज पद भगति देइ प्रभु पुनि दूसर बर देहु ॥
तव माया बस जीव जड़ संतत फिरै भुलान।
तेहि पर क्रोध न करिअ प्रभु कृपासिंधु भगवान ॥
संकर दीनदयाल अब एहि पर होहु कृपाल।
श्राप अनुग्रह होइ जेहि नाथ थोरेहीं काल ॥१०८॥

एहि कर होइ परम कल्याना। सोइ करहु अब कृपानिधाना॥
बिप्रगिरा सुनि परहित सानी। एवमस्तु इति भै नभबानी॥
जदपि कीन्ह एहि दारुन पापा। मैं पुनि दीन्हि क्रोध करि श्रापा॥
तदपि तुम्हारि साधुता देखी। करिहौं एहि पर कृपा बिसेषी॥
छमासील जे पर उपकारी। ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी॥
मोर श्राप द्विज ब्यर्थ न जाइहि। जन्म सहस्र अवसि यह पाइहि॥
जन्मत मरत दुसह दुख होई। एहि स्वल्पौ नहि ब्यापिहि सोई॥
कवनेउ जन्म मिटिहि नहि ज्ञाना। सुनहि सूद्र मम बचन प्रवाना॥
रघुपतिपुरी जन्म तब भयेऊ। पुनि तैं मम सेवा मन दयेऊ॥
पुरीप्रभाव अनुग्रह मोरें। रामभगति उपजिहि उर तोरें॥
सुनु मम बचन सत्य अब भाई। हरितोषन ब्रत द्विजसेवकाई॥
अब जनि करहि बिप्र अपमाना। जानेसु संत अनंत समाना॥
इंद्रकुलिस मम सूल बिसाला। कालदंड हरिचक्र कराला॥
जो इन्ह कर मारा नहि मरई। बिप्रद्रोह पावक सो जरई॥
अस बिवेक राखेहु मन माहीं। तुम्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं॥
औरौ एक आसिषा मोरी। अप्रतिहति गति होइहि तोरी॥

दोहा। सुनि सिवबचन हरषि गुर एवमस्तु इति भाषि।
मोहि प्रबोधि गयेउ गृह संभुचरन उर राखि॥
प्रेरित काल बिंधि गिरि जाइ भएउँ मैं ब्याल।
पुनि प्रयास बिनु सो तनु तजेउँ गएँ कछु काल॥
जोइ तनु धरौं तजौं पुनि अनायास हरिजान।
जिमि नूतन पट पहिरै नर परिहरै पुरान॥
सिव राखी श्रुतिनीति अरु मैं नहि पावा क्लेस।
एहि बिधि धरेउँ बिबिध तनु ज्ञान न गयेउ खगेस॥१०८॥

त्रिजग देव नर जोइ तनु धरऊँ। तहँ तहँ रामभजन अनुसरऊँ॥
एक सूल मोहि बिसर न काऊ। गुर कर कोमल सील सुभाऊ॥
चरम देह द्विज कै मैं पाई। सुरदुर्लभ पुरान श्रुति गाई॥
खेलौं तहूँ बालकन्ह मीला। करौं सकल रघुनायकलीला॥

प्रौढ़ भएँ मोहि पिता पढ़ावा। समुझौं सुनौं गुनौं नहि भावा॥
मन तें सकल बासना भागी। केवल रामचरन लय लागी॥
कहु खगेस अस कवन अभागी। खरी सेव सुरधेनुहि त्यागी॥
प्रेममगन मोहि कछु न सोहाई। हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाई॥
भए कालबस जब पितु माता। मैं बन गएउँ भजन जनत्राता॥
जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वर पावौं। आश्रम जाइ जाइ सिरु नावौं॥
बूझौं तिन्हहि राम गुन गाहा। कहहिं सुनौं हरषित खगनाहा॥
सुनत फिरौं हरिगुन अनुबादा। अब्याहत गति संभुप्रसादा॥
छूटी त्रिबिध ईषना गाढ़ी। एक लालसा उर अति बाढ़ी॥
रामचरन बारिज जब देखौं। तब निज जन्म सुफल करि लेखौं॥
जेहि पूछौं सोइ मुनि अस कहई। ईस्वर सर्बभूतमय अहई॥
निर्गुनमत नहि मोहि सुहाई। सगुन ब्रह्म रति उर अधिकाई॥

दोहा। गुर के बचन सुरति करि रामचरन मनु लाग।
रघुपतिजस गावत फिरौं छन छन नव अनुराग॥
मेरुसिखर बट छाया मुनि लोमस आसीन।
देखि चरन सिरु नाएउँ बचन कहेउँ अति दीन॥
सुनि मम बचन बिनीत मृदु मुनि कृपाल खगराज।
मोहि सादर पूछत भए द्विज आयेहु केहि काज॥
तब मैं कहा कृपानिधि तुम्ह सर्बज्ञ सुजान।
सगुन ब्रह्म अवराधन मोहि कहहु भगवान॥११०॥

तब मुनीस रघुपति गुन गाथा। कहे कछुक सादर खगनाथा॥
ब्रह्मज्ञान रत मुनि बिज्ञानी। मोहि परम अधिकारी जानी॥
लागे करन ब्रह्म उपदेसा। अज अद्वैत अगुन हृदयेसा॥
अकल अनीह अनाम अरूपा। अनुभवगम्य अखंड अनूपा॥
मन गोतीत अमल अबिनासी। निर्बिकार निरवधि सुखरासी॥
सो तैं ताहि तोहि नहि भेदा। बारि बीचि इव गावहिं बेदा॥
बिबिध भाँति मोहि मुनि समुझावा। निर्गुनमत मम हृदय न आवा॥
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा। सगुन उपासन कहहु मुनीसा॥

रामभगति जल मम मन मीना। किमि बिलगाइ मुनीस प्रबीना॥
सो उपदेस कहहु करि दाया। निज नयनन्हि देखौं रघुराया॥
भरि लोचन बिलोकि अवधेसा। तब सुनिहौं निर्गुन उपदेसा॥
मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा। खंडि सगुनमत अगुन निरूपा॥ १२
तब मैं निर्गुनमत करि दूरी। सगुन निरूपौं करि हठ भूरी॥
उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा। मुनितन भए क्रोध के चीन्हा॥
सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये। उपज क्रोध ज्ञानिन्ह के हिये॥
अति संघरषन जौ कर कोई। अनल प्रगट चंदन तें होई॥ १६

दोहा। बारंबार सकोप मुनि करै निरूपन ज्ञान।
मैं अपने मन बैठ तब करौं बिबिध अनुमान॥
क्रोध कि द्वैतबुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अज्ञान।
मायाबस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान॥१११॥ २०

कबहुँ कि दुख सब कर हित ताके। तेहि कि दरिद्र परसमनि जाके॥
परद्रोही की होहिँ निसंका। कामी पुनि कि रहहिँ अकलंका॥
बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हे। कर्म कि होहिँ स्वरूपहि चीन्हे॥
काहू सुमति कि खलसँग जामी। सुभ गति पाव कि परत्रियगामी॥ ४
भव कि परहिँ परमात्माबिंदक। सुखी कि होहिँ कबहुँ हरिनिंदक॥
राजु कि रहै नीति बिनु जाने। अघ कि रहहिँ हरिचरित बखाने॥
पावन जस कि पुन्य बिनु होई। बिनु अघ अजस कि पावै कोई॥
लाभु कि किछु हरिभगति समाना। जेहि गावहि श्रुति संत पुराना॥ ८
हानि कि जग एहि सम किछु भाई। भजिअ न रामहि नरतनु पाई॥
अघ कि पिसुनता सम कछु आना। धर्म कि दया सरिस हरिजाना॥
एहि बिधि अमिति जुगति मन गुनऊँ। मुनि उपदेस न सादर सुनऊँ॥
पुनि पुनि सगुनपच्छ मैं रोपा। तब मुनि बोलेउ बचन सकोपा॥ १२
मूढ़ परम सिख देउँ न मानसि। उत्तर प्रतिउत्तर बहु आनसि॥
सत्य बचन बिस्वास न करही। बायस इव सब ही तें डरही॥
सठ स्वपच्छ तव हृदय बिसाला। सपदि होहि पच्छी चंडाला॥
लीन्ह श्राप मैं सीस चढ़ाई। नहि कछु भय न दीनता आई॥ १६

दोहा। तुरत भयेउँ मैं काग तब पुनि मुनिपद सिरु नाइ।
सुमिरि राम रघुबंसमनि हरषित चलेउँ उड़ाइ॥
उमा जे रामचरन रत बिगत काम मद क्रोध।
निज प्रभुमय देखहिँ जगत केहि सन करहिँ बिरोध॥११२॥ २०

सुनु खगेस नहि कछु रिषिदूषन। उरप्रेरक रघुबंसबिभूषन॥
कृपासिंधु मुनिमति करि भोरी। लीन्ही प्रेमपरिछा मोरी॥
मन बच क्रम मोहि निज जन जाना। मुनिमति पुनि फेरी भगवाना॥
रिषि मम सहनसीलता देखी। रामचरन बिस्वास बिसेषी॥ ४
अति बिसमय पुनि पुनि पछिताई। सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई॥
मम परितोष बिबिध बिधि कीन्हा। हरषित राममंत्र तब दीन्हा॥
बालकरूप राम कर ध्याना। कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना॥
सुंदर सुखद मोहि अति भावा। सो प्रथमहि मैं तुम्हहि सुनावा॥ ८
मुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा। रामचरितमानस तब भाषा॥
सादर मोहि यह कथा सुनाई। पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई॥
रामचरितसर गुप्त सुहावा। संभुप्रसाद तात मैं पावा॥
तोहि निज भगत राम कर जानी। ताते मैं सब कहेउँ बखानी॥ १२
रामभगति जिन्ह के उर नाहीँ। कबहुँ न तात कहिअ तिन्ह पाहीँ॥
मुनि मोहि बिबिध भाँति समुझावा। मैं सप्रेम मुनिपद सिरु नावा॥
निज कर कमल परसि मम सीसा। हरषित आसिष दीन्ह मुनीसा॥
रामभगति अबिरल उर तोरे। बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे॥ १६

दोहा। सदा रामप्रिय होब तुम्ह सुभ गुन भवन अमान।
कामरूप इछामरन ज्ञान बिराग निधान॥
जेहि आश्रम तुम्ह बसब पुनि सुमिरत श्रीभगवंत॥
ब्यापिहि तहँ न अबिद्या जोजन एक प्रजंत॥११३॥ २०

काल कर्म गुन दोष सुभाऊ। कछु दुख तुम्हहि न ब्यापिहि काऊ॥
रामरहस्य ललित बिधि नाना। गुप्त प्रगट इतिहास पुराना॥
बिनु श्रम तुम्ह जानब सब सोऊ। नित नव नेह रामपद होऊ॥
जो इछा करिहहु मन माहीँ। हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीँ॥ ४

सुनि मुनि आसिष सुनु मतिधीरा। ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा॥
एवमस्तु तव बच मुनि ज्ञानी। यह मम भगत कर्म मन बानी॥
सुनि नभगिरा हरष मोहि भएऊ। प्रेममगन सब संसय गएऊ॥
करि बिनती मुनि आयसु पाई। पदसरोज पुनि पुनि सिरु नाई॥ ८
हरष सहित एहि आश्रम आएउँ। प्रभुप्रसाद दुर्लभ बर पाएउँ॥
इहाँ बसत मोहि सुनु खगईसा। बीते कलप सात अरु बीसा॥
करौं सदा रघुपति गुन गाना। सादर सुनहिं बिहंग सुजाना॥
जब जब अवधपुरी रघुबीरा। धरहिं भगतहित मनुजसरीरा॥ १२
तब तब जाइ रामपुर रहऊँ। सिसुलीला बिलोकि सुख लहऊँ॥
पुनि उर राखि राम सिसुरूपा। निज आश्रम आवौं खगभूपा॥
कथा सकल मैं तुम्हहि सुनाई। कागदेह जेहि कारन पाई॥
कहिउँ तात सब प्रस्न तुम्हारी। रामभगति महिमा अति भारी॥ १६

दोहा। ता तें यह तन मोहि प्रिय भएउ रामपद नेह।
निज प्रभु दरसन पाएउँ गए सकल संदेह॥
भगतिपच्छ हठ करि रहेउँ दीन्हि महारिषि श्राप।
मुनिदुर्लभ बर पाएउँ देखहु भजनप्रताप॥११४॥ २०

जे असि भगति जानि परिहरहीं। केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं॥
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी। खोजत आकु फिरहिं पय लागी॥
सुनु खगेस हरिभगति बिहाई। जे सुख चाहहिं आन उपाई॥
ते सठ महासिंधु बिनु तरनी। पैरि पार चाहहिं जड़ करनी॥ ४
सुनि भुसुंडि के बचन भवानी। बोलेउ गरुड़ हरषि मृदु बानी॥
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं। संसय सोक मोह भ्रम नाहीं॥
सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा। तुम्हरी कृपा लहेउँ बिश्रामा॥
एक बात प्रभु पूछौं तोही। कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही॥ ८
कहहिं संत मुनि बेद पुराना। नहि कछु दुर्लभ ज्ञान समाना॥
सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गुसाईं। नहि आदरेहु भगति की नाईं॥
ज्ञानहि भगतिहि अंतरु केता। सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता॥
सुनि उरगारिबचन सुख माना। सादर बोलेउ काग सुजाना॥ १२

भगतिहि ज्ञानहि नहि कछु भेदा। उभय हरहिँ भवसंभव खेदा॥
नाथ मुनीस कहहिँ कछु अंतर। सावधान सोउ सुनु बिहंगवर॥
ज्ञान बिराग जोग बिज्ञाना। ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना॥
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाती। अबला अबल सहज जड़ जाती॥ १६

दोहा। पुरुषु त्यागि सक नारिहि जो बिरक्त मतिधीर।
न तु कामी बिषयाबस बिमुख जो पद रघुबीर॥

सोरठा। सोउ मुनि ज्ञाननिधान मृगनयनी बिधुमुख निरखि।
बिबस होइ हरिजान नारि बिष्नुमाया प्रगट॥११५॥ २०

इहाँ न पच्छपात कछु राखौँ। बेद पुरान संत मत भाषौँ॥
मोह न नारि नारि के रूपा। पन्नगारि यह रीति अनूपा॥
माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ। नारिबर्ग जानै सब कोऊ॥
पुनि रघुबीरहि भगति पिआरी। माया खलु नर्तकी बिचारी॥ ४
भगतिहि सानकूल रघुराया। ता तेँ तेहि डरपति अति माया॥
रामभगति निरुपम निरुपाधी। बसै जासु उर सदा अबाधी॥
तेहि बिलोकि माया सकुचाई। करि न सकै कछु निज प्रभुताई॥
अस बिचारि जे मुनि बिज्ञानी। जाचहिँ भगति सकल सुख खानी॥ ८

दोहा। यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानै कोइ।
जो जानै रघुपतिकृपा सपनेहु मोह न होइ॥
औरौ ज्ञान भगति कर भेद सुनहु सुप्रबीन।
जो सुनि होइ रामपद प्रीति सदा अबिछिन्न॥११६॥ १२

सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनै न जाइ बखानी॥
ईस्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी॥
सो मायाबस भयेउ गुसाईं। बँध्यो कीर मर्कट की नाईँ॥
जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई। जदपि मृषा छूटत कठिनई॥ ४
तब तेँ जीव भयेउ संसारी। छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी॥
श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक अरुझाई॥
जीवहृदय तम मोह बिसेषी। ग्रंथि छूट किमि परै न देखी॥
अस संजोग ईस जब करई। तबहुँ कदाचित सो निरुअरई॥ ८

सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जौं हरिकृपा हृदय बस आई॥
जप तप ब्रत जम नियम अपारा। जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा॥
तेइ तृन हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई॥
नोइ निबृत्ति पात्र बिस्वासा। निर्मल मन अहीर निज दासा॥ १२
परमधर्ममय पय दुहि भाई। अवटै अनल अकाम बनाई॥
तोष मरुत तब छमा जुड़ावै। धृति सम जावनु देइ जमावै॥
मुदिता मथै बिचार मथानी। दम अधार रजु सत्य सुबानी॥
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता। बिमल बिराग सुभग सुपुनीता॥ १६

दोहा। जोग अगिनि करि प्रगट तब कर्म सुभासुभ लाइ।
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत ममता मल जरि जाइ॥
तब बिज्ञानरूपिनी बुद्धि बिसद घृत पाइ।
चित्त दिया भरि धरै दृढ़ समता दिअटि बनाइ॥ २०
तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास तें काढ़ि।
तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती करै सुगाढ़ि॥

सोरठा। एहि बिधि लेसै दीप तेजरासि बिज्ञानमय।
जातहिं जासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब॥११७॥ २४

सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा। दीपसिखा सोइ परम प्रचंडा॥
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा। तब भवमूल भेद भ्रम नासा॥
प्रबल अबिद्या कर परिवारा। मोह आदि तम मिटै अपारा॥
तब सोइ बुद्धि पाइ उजिआरा। उर गृह बैठि ग्रंथि निरुआरा॥ ४
छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई। तौ यह जीव कृतारथ होई॥
छोरत ग्रंथि जानि खगराया। बिघ्न अनेक करै तब माया॥
रिद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई। बुद्धिहि लोभ देखावहिं आई॥
कल बल छल करि जाहिं समीपा। अंचलबात बुझावहिं दीपा॥ ८
होइ बुद्धि जौं परम सयानी। तिन्ह तन चितव न अनहित जानी॥
जौं तेहि बिघ्न बुद्धि नहि बाधी। तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी॥
इंद्रीद्वार झरोखा नाना। तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना॥
आवत देखहिं बिषय बयारी। ते हठि देहिं कपाट उघारी॥ १२

जब सो प्रभंजन , उर गृह जाई। तबहि दीप बिज्ञान बुझाई ॥
ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा। बुद्धि बिकल भइ बिषय बतासा ॥
इंद्रिन्ह सुरन्ह न ज्ञान सोहाई। बिषयभोग पर प्रीति सदाई ॥
बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी। तेहि बिधि दीप को बार बहोरी ॥ १६
दोहा। तब फिरि जीव बिबिध बिधि पावै संसृति क्लेस।
हरिमाया अति दुस्तर तरि न जाइ बिहगेस ॥
कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक।
होइ घुनाच्छर न्याय जौ पुनि प्रत्यूह अनेक ॥११८॥ २०
ज्ञानपंथ कृपान कै धारा। परत खगेस होइ नहि बारा ॥
जो निर्बिघ्न पंथ निर्बहई। सो कैवल्य परमपद लहई ॥
अति दुर्लभ कैवल्य परमपद। संत पुरान निगम आगम बद ॥
राम भजत सोइ मुक्ति गोसाईं। अनइच्छित आवै बरिआईं ॥ ४
जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई। कोटि भाँति कोउ करइ उपाई ॥
तथा मोच्छसुख सुनु खगराई। रहि न सकै हरिभगति बिहाई ॥
अस बिचारि हरिभगत सयाने। मुक्ति निरादर भगति लुभाने ॥
भगति करत बिनु जतन प्रयासा। संसृतिमूल अबिद्या नासा ॥ ८
भोजन करिअ तृप्ति हित लागी। जिमि सो असन पचवै जठरागी ॥
असि हरिभगति सुगम सुखदाई। को अस मूढ़ न जाहि सोहाई ॥
दोहा। सेवक सेब्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि।
भजहु रामपद पंकज अस सिद्धांत बिचारि ॥ १२
जो चेतन कहँ जड़ करै जड़हि करै चैतन्य।
अस समर्थ रघुनायकहि भजहिँ जीव ते धन्य ॥११९॥
कहेउँ ज्ञानसिद्धांत बुझाई। सुनहु भगति मनि कै प्रभुताई ॥
रामभगति चिंतामनि सुंदर। बसै गरुड़ जा के उर अंतर ॥
परम प्रकास रूप दिन राती। नहि कछु चहिअ दिआ घृत बाती ॥
मोह दरिद्र निकट नहि आवा। लोभ बात नहि ताहि बुझावा ॥ ४
प्रबल अबिद्या तम मिटि जाई। हारहिँ सकल सलभ समुदाई ॥
खल कामादि निकट नहि जाहीँ। बसै भगति जा के उर माहीँ ॥

गरल सुधा सम अरि हित होई। तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई॥
व्यापहिँ मानसरोग न भारी। जिन्ह के बस सब जीव दुखारी॥
रामभगति मनि उर बस जा कें। दुखलवलेस न सपनेहु ता कें॥
चतुरसिरोमनि तेइ जग माहीँ। जे मनि लागि सुजतन कराहीँ॥
सो मनि जदपि प्रगट जग अहई। रामकृपा बिनु नहि कोउ लहई॥
सुगम उपाय पाइबे केरे। नर हतभाग्य देहिँ भटभेरे॥
पावन पर्बत बेद पुराना। रामकथा रुचिराकर नाना॥
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी। ज्ञान बिराग नयन उरगारी॥
भाव सहित खोजै जो प्रानी। पाव भगति मनि सब सुख खानी॥
मोरे मन प्रभु अस बिस्वासा। राम तेँ अधिक राम कर दासा॥
राम सिंधु घन सज्जन धीरा। चंदनतरु हरि संत समीरा॥
सब कर फल हरिभगति सुहाई। सो बिनु संत न काहूँ पाई॥
अस बिचारि जोइ कर सतसंगा। रामभगति तेहि सुलभ बिहंगा॥

दोहा। ब्रह्म पयोनिधि मंदर ज्ञान संत सुर आहिँ।
कथा सुधा मथि काढ़हिँ भगति मधुरता जाहि॥
बिरति चर्म असि ज्ञान मद लोभ मोह रिपु मारि।
जय पाइअ सो हरिभगति देखु खगेस बिचारि॥१२०॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ। जौ कृपाल मोहि ऊपर भाऊ॥
नाथ मोहि निज सेवक जानी। सप्त प्रस्न मम कहहु बखानी॥
प्रथमहि कहहु नाथ मतिधीरा। सब तेँ दुर्लभ कवन सरीरा॥
बड़ दुख कवन कवन सुख भारी। सोउ संछेपहि कहहु बिचारी॥
संत असंत मरम तुम्ह जानहु। तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु॥
कवन पुन्य श्रुतिबिदित बिसाला। कहहु कवन अघ परम कराला॥
मानसरोग कहहु समुझाई। तुम्ह सर्बज्ञ कृपा अधिकाई॥
तात सुनहु सादर अति प्रीती। मैं संछेप कहौं यह नीती॥
नरतन सम नहि कवनिउ देही। जीव चराचर जाचत जेही॥
नरक स्वर्ग अपबर्ग निसेनी। ज्ञान बिराग भगति सुभ देनी॥
सो तनु धरि हरि भजहिँ न जे नर। होहिँ बिषयरत मंद मंदतर॥

काँचु किरिच बदले ते लेहीँ। कर तेँ डारि परसमनि देहीँ॥
नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीँ। संतमिलन सम सुख जग नाहीँ॥
पर उपकार बचन मन काया। संत सहज सुभाउ खगराया॥
संत सहहिँ दुख परहित लागी। परदुख हेतु असंत अभागी॥
भूरजतरु सम संत कृपाला। परहित निति सह बिपति बिसाला॥
सन इव खल परबंधन करई। खाल कढ़ाइ बिपति सहि मरई॥
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी। अहि मूषक इव सुनु उरगारी॥
परसंपदा बिनासि नसाहीँ। जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीँ॥
दुष्ट उदय जग आरति हेतू। जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू॥
संत उदय संतत सुखकारी। बिस्व सुखद जिमि इंदु तमारी॥
परमधर्म श्रुतिबिदित अहिंसा। परनिंदा सम अघ न गरीसा॥
हर गुर निंदक दादुर होई। जन्म सहस्र पाव तन सोई॥
द्विजनिंदक बहु नरक भोग करि। जग जन्मै बायससरीर धरि॥
सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी। रौरव नरक परहिँ ते प्रानी॥
होहिँ उलूक संत निंदा रत। मोह निसा प्रिय ज्ञान भानु गत॥
सब कै निंदा जे जड़ करहीँ। ते चमगादुर होइ अवतरहीँ॥
सुनहु तात अब मानसरोगा। जिन्ह तेँ दुख पावहिं सब लोगा॥
मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला। तिन्ह तेँ पुनि उपजहिँ बहु सूला॥
काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा॥
प्रीति करहिँ जौ तीनिउ भाई। उपजै सन्यपात दुखदाई॥
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब सूल नाम को जाना॥
ममता दादु कंडु इरषाई। हरष बिषाद गरह बहुताई॥
परसुख देखि जरनि सोइ छई। कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई॥
अहंकार अति दुखद डमरुआ। दंभ कपट मद मान नेहरुआ॥
तृष्ना उदरबृद्धि अति भारी। त्रिबिध ईषना तरुन तिजारी॥
जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका। कहँ लगि कहौँ कुरोग अनेका॥

दोहा। एक ब्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याधि।
पीड़हिँ संतत जीव कहुँ सो किमि लहइ समाधि॥

नेम धर्म आचार तप ज्ञान जज्ञ जप दान।
भेषज पुनि कोटिन्ह नहि रोग जाहिँ , हरिजान ॥१२१॥
एहि बिधि सकल जीव जग रोगी। सोक हरष भय प्रीति बियोगी ॥
मानसरोग कछुक मैँ गाए। हहिँ सब के लखि बिरलेन्ह पाए ॥
जाने तेँ छीजहिँ कछु पापी। नास न पावहिँ जन परितापी ॥
बिषय कुपंथ पाइ अंकुरे। मुनिहु हृदय का नर बापुरे ॥
रामकृपा नासहिँ सब रोगा। जौ इहि भाँति बनै संजोगा ॥
सद्गुर बैद बचन बिस्वासा। संजम यह न बिषय कै आसा ॥
रघुपतिभगति सजीवन मूरी। अनूपान श्रद्धा मति पूरी ॥
एहि बिधि भलेही रोग नसाहीँ। नाहि त जतन कोटि नहि जाहीँ ॥
जानिअ तब मन बिरुज गोसाँई। जब उर बल बिराग अधिकाई ॥
सुमति छुधा बाढ़ै नित नई। बिषय आस दुर्बलता गई ॥
बिमल ज्ञान जल जब सो नहाई। तब रह रामभगति उर छाई ॥
सिव अज सुक सनकादिक नारद। जे मुनि ब्रह्म बिचार बिसारद ॥
सब कर मत खगनायक एहा। करिअ रामपद पंकज नेहा ॥
श्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीँ। रघुपतिभगति बिना सुख नाहीँ ॥
कमठपीठ जामहिँ बरु बारा। बंध्यासुत बरु काहुहि मारा ॥
फूलहिँ नभ बरु बहु बिधि फूला। जीव न लह सुख हरिप्रतिकूला ॥
तृषा जाइ बरु मृगजल पाना। बरु जामहिँ सससीस बिषाना ॥
अंधकारु बरु रबिहि नसावै। रामबिमुख न जीव सुख पावै ॥
हिम तेँ अनल प्रगट बरु होई। बिमुख राम सुख पाव न कोई ॥
दोहा। बारि मथे घृत होइ बरु सिकता तेँ बरु तेल।
बिनु हरिभजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल ॥
मसकहि करै बिरंचि प्रभु अजहि मसक तेँ हीन।
अस बिचारि तजि संसय रामहि भजहिँ प्रबीन ॥
विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।
हरिं नरा भजंति येतिदुस्तरं तरंति ते ॥१२२॥
कहेउँ नाथ हरिचरित अनूपा। ब्यास समास स्वमति अनुरूपा ॥

श्रुतिसिद्धांत इहै उरगारी । राम भजिअ सब काज बिसारी ॥
प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही । मोहि से सठ पर ममता जाही ॥
तुम्ह बिज्ञानरूप नहि मोहा । नाथ कीन्ह मो पर अति छोहा ॥ ४
पूछिहु रामकथा अति पावनि । सुक सनकादि संभु मन भावनि ॥
सतसंगति दुर्लभ संसारा । निमिष दंड भरि एकौ बारा ॥
देखु गरुड़ निज हृदय बिचारी । मैं रघुबीरभजन अधिकारी ॥
सकुनाधम सब भाँति अपावन । प्रभु मोहि कीन्ह बिदित जगपावन ॥ ८

दोहा । आजु धन्य मैं धन्य अति जद्यपि सब बिधि हीन ।
निज जन जानि राम मोहि संतसमागम दीन ॥
नाथ जथामति भाषेउँ राखेउँ नहि कछु गोइ ।
चरित सिंधु रघुनायक थाह कि पावै कोइ ॥१२३॥ १२

सुमिरि राम के गुन गन नाना । पुनि पुनि हरष भुसुंडि सुजाना ॥
महिमा निगम नेति करि गाई । अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥
सिव अज पूज्य चरन रघुराई । मो पर कृपा परम मृदुलाई ॥
अस सुभाउ कहुँ सुनउँ न देखौं । केहि खगेस रघुपति सम लेखौं ॥ ४
साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी । कबि कोबिद कृतज्ञ संन्यासी ॥
जोगी सूर सुतापस ज्ञानी । धर्मनिरत पंडित बिज्ञानी ॥
तरहिं न बिनु सेए मम स्वामी । राम नमामि नमामि नमामी ॥
सरन गए मो से अघरासी । होहिँ सुद्ध नमामि अबिनासी ॥ ८

दोहा । जासु नाम भव भेषज हरन घोर त्रय सूल ।
सो कृपाल मोहि तोहि पर सदा रहौ अनुकूल ॥
सुनि भुसुंडि के बचन सुभ देखि रामपद नेह ।
बोलेउ प्रेम सहित गिरा गरुड़ बिगत संदेह ॥१२४॥ १२

मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी । सुनि रघुबीरभगति रस सानी ॥
रामचरन नूतन रति भई । मायाजनित बिपति सब गई ॥
मोह जलधि बोहित तुम्ह भए । मो कहँ नाथ बिबिध सुख दए ॥
मो पहिँ होइ न प्रतिउपकारा । बंदौं तव पद बारहिँ बारा ॥ ४
पूरनकाम राम अनुरागी । तुम्ह सम तात न कोउ बड़भागी ॥

संत बिटप सरिता गिरि धरनी। परहित हेतु सबन्ह कै करनी॥
संतहृदय नवनीत समाना। कहा कबिन्ह परि कहै न जाना॥
निज परिताप द्रवै नवनीता। परदुख द्रवहि संत सुपुनीता॥ ८
जीवन जन्म सुफल मम भएऊ। तव प्रसाद संसय सब गएऊ॥
जानेहु सदा मोहि निज किंकर। पुनि पुनि उमा कहइ बिहंगबर॥

दोहा। तासु चरन सिर नाइ करि प्रेम सहित मतिधीर।
गएउ गरुड़ बैकुंठ तब हृदय राखि रघुबीर॥ १२
गिरिजा संतसमागम सम न लाभ कछु आन।
बिनु हरिकृपा न होइ सो गावहिं बेद पुरान॥१२५॥

कहेउँ परम पुनीत इतिहासा। सुनत श्रवन छूटहिं भवपासा॥
प्रनतकल्पतरु करुनापुंजा। उपजै प्रीति राम पद कंजा॥
मन क्रम बचन जनित अघ जाई। सुनहिं जे कथा श्रवन मन लाई॥
तीर्थाटन साधनसमुदाई। जोग बिराग ज्ञाननिपुनाई॥ ४
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना। संजम दम जप तप मख नाना॥
भूतदया द्विज गुर सेवकाई। बिद्या बिनय बिबेक बड़ाई॥
जहँ लगि साधन बेद बखानी। सब कर फल हरिभगति भवानी॥
सो रघुनाथभगति श्रुति गाई। रामकृपा काहूँ एक पाई॥ ८

। दोहा।

मुनिदुर्लभ हरिभगति नर पावहिँ बिनहि प्रयास।
जे यह कथा निरंतर सुनहिँ मानि बिस्वास॥१२६॥

सोइ सर्बज्ञ गुनी सोइ ज्ञाता। सोइ महि मंडित पंडित दाता॥
धर्मपरायन सोइ कुलत्राता। रामचरन जाकर मन राता॥
नीतिनिपुन सोइ परम सयाना। श्रुतिसिद्धांत नीक तेहिँ जाना॥
सोइ कबि कोबिद सोइ रनधीरा। जो छल छाड़ि भजै रघुबीरा॥ ४
धन्य देस सो जहँ सुरसरी। धन्य नारि पतिब्रत अनुसरी॥
धन्य सो भूपु नीति जो करई। धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई॥
सो धन धन्य प्रथम गति जाकी। धन्य पुन्यरत मति सोइ पाकी॥
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा। धन्य जन्म द्विजभगति अभंगा॥ ८

दोहा। सो कुल धन्य उमा सुनु जगतपूज्य सुपुनीत।
श्रीरघुबीरपरायन जेहि नर उपज बिनीत ॥१२७॥

मति अनुरूप कथा मैं भाषी। जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ॥
तव मन प्रीति देखि अधिकाई। तौ मैं रघुपतिकथा सुनाई ॥
यह न कहिअ सठही हठसीलहि। जो मन लाइ न सुन हरिलीलहि ॥
कहिअ न लोभिहि क्रोधिहि कामिहि। जो न भजइ सचराचर स्वामिहि ॥ ४
द्विजद्रोहिहि न सुनाइअ कबहूँ। सुरपति सरिस होइ नृप जबहूँ ॥
रामकथा के तेइ अधिकारी। जिन्ह के सतसंगति अति प्यारी ॥
गुरपद प्रीति नीतिरत जेई। द्विजसेवक अधिकारी तेई ॥
ता कहँ यह बिसेपि सुखदाई। जाहि प्रानप्रिय श्रीरघुराई ॥ ८

दोहा। रामचरन रति जो चह अथवा पद निर्बान।
भाव सहित सो यहि कथा करौ श्रवन पुट पान ॥१२८॥

रामकथा गिरिजा मैं बरनी। कलिमल समनि मनोमल हरनी ॥
संसृति रोग सजीवन मूरी। रामकथा गावहि श्रुति सूरी ॥
एहि मह रुचिर सप्त सोपाना। रघुपतिभगति केर पंथाना ॥
अति हरिकृपा जाहि पर होई। पाउ देइ एहि मारग सोई ॥ ४
मनकामना सिद्धि नर पावा। जे यह कथा कपट तजि गावा ॥
कहहिँ सुनहिँ अनुमोदन करहीँ। ते गोपद इव भवनिधि तरहीँ ॥
सुनि सब कथा हृदय अति भाई। गिरिजा बोली गिरा सोहाई ॥
नाथकृपा मम गत संदेहा। रामचरन उपजेउ नव नेहा ॥ ८

दोहा। मैं कृतकृत्य भइउँ अब तव प्रसाद बिस्वेस।
उपजी रामभगति दृढ़ बीते सकल कलेस ॥१२९॥

यह सुभ संभु उमा संबादा। सुखसंपादन समन बिषादा ॥
भवभंजन गंजन संदेहा। जनरंजन सज्जनप्रिय येहा ॥
राम उपासक जे जग माहीँ। यहि सम प्रिय तिन्ह के कछु नाहीँ ॥
रघुपतिकृपा जथामति गावा। मैं यह पावन चरित सुहावा ॥ ४
एहि कलिकाल न साधन दूजा। जोग जज्ञ जप तप ब्रत पूजा ॥
रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि। संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि ॥

जासु पतितपावन बड़ बाना । गावहिँ कबि श्रुति संत पुराना ॥
ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई । राम भजे गति केहिँ नहि पाई ॥ ८

छंद । पाई न केहिँ गति पतितपावन राम भजि सुनु सठ मना ।
गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि खल तारे घना ।
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे ।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहिँ राम नमामि ते । १२
रघुबंसभूषन चरित यह नर कहहिँ सुनहिँ जे गावहीँ ।
कलिमल मनोमल धोइ बिनु श्रम रामधाम सिधावहीँ ।
सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरे ।
दारुन अबिद्या पंचजनित बिकार श्रीरघुबर हरे । १६
सुंदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।
सो एक राम अकामहित निर्बानप्रद सम आन को ।
जाकी कृपा लवलेस तेँ मतिमंद तुलसीदासहूँ ।
पायो परम बिश्रामु राम समान प्रभु नाही कहूँ ॥ २०

दोहा । मो सम दीन न दीनहित तुम्ह समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुबंसमनि हरहु बिषम भवभीर ॥
कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥१३०॥ २४

यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशंभुना दुर्ग्गमं
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यै तु रामायणं ।
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वांतस्तमःशांतये
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसं ॥ १ ॥
पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमांबुपूरं शुभं ।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहंति ये
ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यंति नो मानवाः ॥ २ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने अविरलहरिभक्तिसंपादनो नाम सप्तमसोपानः समाप्तः ॥

परिशिष्ट

आधारभूत प्रतियों का नाम-संकेत

बड़ बड़इया (पटना) की संवत् १६४१ की परंपरा की प्रति। प्राप्तिस्थान—श्रीरामजानकी मंदिर, गंगाकिनार, बड़इया। लिपिकाल—सं० १८७१, सातो कांड। हस्तलिखित।

दुलही दुलही ग्राम (लखीमपुर खीरी) निवासी पं० गंगाधर शर्मा की प्रति। लिपि० —१६७२, सुंदरकांड।

राजा राजापुर, बाँदा की सुप्रसिद्ध अयोध्याकांड की प्रति। लिपिकाल अनुल्लिखित। हस्तलिखित।

कुंज श्रावणकुंज, अयोध्या की प्रति। लिपि०—सं० १६६१, बालकांड। हस्तलिखित।

रघु रघु तिवारी, लिखक। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी। लिपि०—सं० १७०४, सातो कांड।

परि परिचर्या परिशिष्ट प्रकाश, संवत् १७०० की प्रति के आधार पर सं० १६५५ में मुद्रित। प्रकाशक—खड्गविलास प्रेस, पटना।

राम रामगुलाम रामायणी की प्रति। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी। सं० १७१४ की प्रति की सं० १८७५ में हुई अनुलिपि, सातो कांड।

बलि बलिभद्र, लिखक। प्राप्ति०—राजस्थान पुरातत्त्वमंदिर, जोधपुर। लिपि०—सं० १७३७। उत्तरकांड। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म।

बाल बालगोविंद शर्मा, लिखक तथा संक्षिप्तकर्ता। प्राप्ति०—श्रीकन्हाईप्रसादसिंह, महमदा (बिहार)। लिपि०—सं० १७४३, सातो कांड। बाल और अयोध्या कांड संक्षिप्त। हस्तलिखित।

बाग बागजी माराजा (महाराजा) की प्रति। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, उदयपुर (राजस्थान)। लिपि०—१७५०, अयोध्याकांड। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म।

जवा जवाहरलाल चतुर्वेदी, मथुरा की प्रति। लिपि०—सं० १७५७, बालकांड। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म।

अल अलहवकस, लिखक। प्राप्ति०—पेनसिलवानिया विश्वविद्यालय, अमेरिका। लिपि०—सं० १७५६। खंडित। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म।

मया मयाशंकर याज्ञिक संग्रह। प्राप्ति०—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। लिपि०—सं० १७५६, लंकाकांड। हस्तलिखित।

राय कोदूराय चतुर्वेदी, लिखक। प्राप्ति०—तुलसीसंग्रहालय, रामवन, सतना। लिपि०—सुंदरकांड सं० १७६२, अरण्यकांड सं० १७६५। हस्तलिखित।

नाग नागेश उपाध्याय, वाराणसी द्वारा प्राप्त। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी। लिपि०—सं० १७६३, अरण्यकांड रहित। हस्तलिखित।

मन मनसाराम, लिखक। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी। लिपि०—सं० १७६८–७१। सातो कांड। हस्तलिखित। कैथी लिपि।

उद उदयपुर (राजस्थान) के सरस्वतीभंडार की प्रति। लिपि०—सं० १७७१, सातो कांड। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म।

नर नरोत्तमदास, लिखक। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी। लिपि०—बालकांड सं० १७७५, अयोध्याकांड सं० १७८०। हस्तलिखित।

काशी काशी राज्य के सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी के कार्यकर्ता श्रीमार्कंडेय मिश्र द्वारा प्राप्त। लिपि०—सं० १७७६, सुंदरकांड। हस्तलिखित।

खोज खोज द्वारा उपलब्ध। प्राप्ति०—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। लिपि०—सं० १७७७, अयोध्याकांड। हस्तलिखित।

व्रज व्रजभूषण महोदय के लिए लिखी गई प्रति। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, काँकरौली (राजस्थान)। लिपि०—सं० १७७७, सातो कांड। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म।

प्रह प्रहलादराइ कायस्थ, लिखक। प्राप्ति०—तुलसीसंग्रहालय, रामवन, सतना। लिपि०—सं० १७७८, किष्किधाकांड। हस्तलिखित।

पट पटनीमल कायस्थ, लिखक। प्राप्ति०—ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन। लिपि०—सं० १७७८, सातो कांड। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म। कैथी लिपि।

नाथ रघुनाथ, लिखक। प्राप्ति०—श्रीवराहमिहिराचार्य पुस्तकालय, हीरानंद शाह लेन, चौक, पटना सिटी। लिपि०—सं० १७८३, सातो कांड। हस्तलिखित। कैथी लिपि।

संकेतचिह्न

÷ प्रथम अंकित (संशोधन के पूर्व का) पाठ।

\+ मूल लिखक से भिन्न व्यक्ति द्वारा प्रथम संशोधित पाठ।

± मूल लिखक द्वारा प्रथम संशोधित पाठ।

± ± मूल लिखक द्वारा द्वितीय संशोधित पाठ।

\+ + मूल लिखक से भिन्न व्यक्ति द्वारा दुबारा संशोधित पाठ।

— मूल लिखक से भिन्न व्यक्ति द्वारा प्रति को पूर्ण करने के लिए जोड़े गए पत्रे का पाठ।

✓ आधारपाठ से साम्य रखनेवाला पाठ।

× पत्रा लुप्त होने अथवा त्रुटित या कीटदष्ट होने के कारण अनुपलब्ध पाठ।

⊙ अभावसूचक।

ℸ व्यत्यय का द्योतक।

? संदिग्ध स्थिति का सूचक

V वृद्धिबोधक

अन्य संकेत

श्लो श्लोक

मं मंगलाचरण

सो सोरठा

दो दोहा

उच्चारण-संकेत

अे ए
अै ऐ
ऐ अइ
औ अउ
ऎ ह्रस्व या लघु 'ए'
ॆ ह्रस्व या लघु 'ए' की मात्रा
ॅ ह्रस्व या लघु 'ऐ' की मात्रा
ॊ ह्रस्व या लघु 'ओ' की मात्रा
ौ ह्रस्व या लघु 'औ' की मात्रा
। गुरुत्वबोधक या उदात्तसूचक
ष हिंदी पाठ (दोहे, चौपाई, छंद आदि) में कवर्गीय 'ख', संस्कृत पाठ में मूर्धन्य 'ष'।
ष़ स
क्ष हिंदी पाठ में छ, छ्छ या च्छ, संस्कृत में संयुक्त वर्ण 'क्+ष'।
ज्ञ ग्य या ग्यँ
श्र स्र

पाठभेद-प्रणाली

१—आदि की प्रथम संख्या दोहे की और दूसरी पंक्ति की है। काले बड़े अक्षरों में इस संस्करण का स्वीकृत पाठ है। काले छोटे अक्षरों में नामसंकेत कैथी लिपि की सूचना देते हैं।

२—संक्षेप के लिए विभिन्न प्रतियों की लिपिजन्य या प्रमादजन्य ह्रस्व दीर्घ की मात्राओं में अभेद मानकर पाठ का अंकन किया गया है।

३—कैथी लिपि की वर्तनी संमिश्रित पाठ में नागरी लिपि में गतार्थ की गई है। जहाँ कैथी लिपि का ही पाठ दिया गया है वहाँ उसकी वर्तनी ज्यों की त्यों है।

(१) संक्षिप्त पाठभेद

प्रथम सोपान (बालकांड)

मं सो १ **जो**; जा (नर); जेही (पट, नाथ)। **करौ**; करो (कुंज−, नाग, उद); करहु (नर)। ४ **कुंद**; कंबु (वाल, उद)। **इंदु**; कुं× (वाल); कुंद (उद)।

दो २।५ **सरिस**; चरित (कुंज−, राम, जवा÷, नाग, मन, पट)। **कृपालू**; कृपासू (नाग); प्रकाशु (पट); सुपासु (नाथ)।

२।११ **साज**; राज (कुंज−, परि, मन, व्रज, पट, नाथ); साधु (उद)।

३।१२ **मनिगन गुन**; मनि गुन गन (कुंज−+, नाथ); मनि ग××न (जवा); मनि थान गुन (पट)।

४।१ **दाहिनेहु**; दाहिने (बड़÷, कुंज−+, परि, जवा+, मन÷, पट, नाथ); दाहिनहु (रघु, व्रज)।

५।२ **पायस**; √(कुंज÷, रघु÷, जवा÷, उद, नर, नाथ÷); बायसु (बड़); ×येश (मन); वायस (अन्यत्र)।

५।३ **संत**; संतत (कुंज+, रघु÷)। **असज्जन**; अंज्जन (कुंज÷, रघु÷); असज्जन (कुंज+, रघु+); असंतन (रघु++); × ज्जन (जवा); अशज्य्न (मन); अशजन (पट, नाथ+); असन (नाथ÷)।

६।८ **कविनासा**; क्रमनासा (कुंज+, जवा, नर); कर्मनासा (नाग, व्रज+, नाथ); कम्रनाशा (मन); कबिनासा (उद); कवीलाशा (पट)। **मरु**; मारु (जवा+, नाग, मन÷, पट)। **मारव**; मालव (राम, जवा, नाग, मन, व्रज); मगषग (पट); मरीव (नाथ)। **गवासा**; गवा× (मन); गघासा (उद); गरासा (पट)।

७।३ **हरिजन**; हरिनल (कुंज÷, रघु÷, मन÷, उद, नर÷); हरितन (कुंज++, परि)।

७।१४ **सुलच्छन**; सुलछन (कुंज+, मन, पट); सुलच्छण (राम); सुच्छन (जवा); सुलछान (नाग); सुंदरपन (उद); सुलछिन (नर); सुलखन (नाथ)।

८।३ **कृपाकर**; कृपा करि (बड़, जवा, नर, व्रज, पट, नाथ); क्री× (मन)।

८।१३ **सर सरि**; ॽ (जवा, नाग); सुर सरि (मन÷, नर÷, व्रज, पट+, नाथ); शुर (पट÷)।

८।१४ **सकृत**; सुकृत (कुंज÷, नाथ); सकृति (नाग, पट); शुक्रीती (मन÷)।

६।२ **हंसहि**; हंसहिं (बड़, नाथ+); हँसहि (रघु+); हंसिहंहि (जवा, नाथ÷); हसहि (नाग, पट)। **बक**; ते बक (रघु+); ते बग (उद)। **गादुर**; दादुर (बड़, कुंज+, जवा, उद, नाथ); गादुरहि (नर); चदुर÷, √± (पट)। **चातकही**; चातकहीं (बड़, परि); मोर चातकही (नाग, मन+); चातकहि (उद, मन÷?); चातकी (नर); चांतकही (पट)। **हँसहिँ**; हंसहि (परि); हसहि (राम+, उद, नर, व्रज); रूसहि (राम÷, नाग, मन, पट); हिसही÷, हंसंहिं+ (जवा); चुसीहहि÷, हसीहहि+ (नाथ)। **खल**; षग (परि)।

६।११ **कागर**; कागद (बड़, कुंज+, परि, जवा, नर, व्रज+, नाथ); कागज (मन+); कागल (उद); कादग (व्रज÷); कागत (पट)।

१०।८ बड़प्पनु; वडापनु (वड़); वडप्पनु (कुंज+); वड़प्पन (परि); वडपनु (राम, व्रज); ×नु (जवा); वडतनु (नाग, मन+); वडेतनु (मन÷); वडंतन (पट); बडपन (नाथ)।

१०।११ रघुनाथ; रघुनाक (कुंज÷); र× (जवा); रघुबीर (नाग, मन, पट, नाथ)।

११।७ लगत; लाग (परि); लगति (राम, नाग, पट, नाथ); लागि (जवा); लागती (मन)।

१२।४ धीग; धिग (परि, राम, नाग, नर±, व्रज); ध्रीग्र÷, ध्रिगा+ (जवा); धांग (उद); ध्रीग (नाथ)। धंध्रक; धंधक (वड़, कुंज+, राम, उद, व्रज, नाथ); धंधरच (रघु+, परि); धुंध्वक (जवा); धंध्वक (नाग); धंक (मन); धंधुक (नर); वंधक (पट)।

१३।८ सुफल; सफल (परि, जवा); शुपहर (पट)।

१४।३ पूरहुँ; पूरवहु (कुंज+); पुरवहु (परि, जवा, मन+नर, पट, नाथ); फूरवहूं (व्रज)।

१४।१२ ⊙ (कुंज÷, ++, रघु, मन, नाथ)।

१४।१६ करउँ; कहौं (राम, नाग, मन+, पट, नाथ)।

१५।७ सो; ✓ (कुंज÷, रघु÷, जवा, मन+, व्रज); होउ (राम÷, नाग, मन÷, पट); सोइउ (उद); सोउ (अन्यत्र)। उमेस; ✓ (कुंज÷, रघु÷); मेहेस (वड़, रघु+); महेसु (उद); महेस (अन्यत्र)।

१७।७ जो; सो (कुंज+)।

१८।११ कहिअत; देखिअत (वड़, राम, नाग, पट, नाथ÷)।

१६।५ प्रतापू; प्रभाऊ (राम); प्रभाउ (नाग, मन÷, पट, नाथ)।

२०।३ सुमिरत; समुझत (राम, जवा, नाग, मन, पट, नाथ)।

२३।२ मोरें; मोरे (वड़, जवा, नर); हमरे (राम, नाग, पट, नाथ); मरे (मन)।

२३।३ प्रौढ़ि; प्रौढ (कुंज+, राम); प्रोढ (जवा); पौढी (पट); पैठी (नाथ)। जनि; जं (जवा÷); जन (कुंज+, जवा+, नर+, पट, नाथ)।

२६।७ अपरु; ✓ (कुंज÷, रघु); जपत (वड़); अपतु (कुंज+, उद); अपर (मन÷, नर); शुपच (मन+); अपत (कुंज++, अन्यत्र)।

२६।१० भाँग; भां (नाग); भांगि (नर); भाग (व्रज, पट)।

२७।३ परितोषत; परितोषन (नाग, मन, नर, व्रज, पट, नाथ)।

२७।७ भगति; धर्म (कुंज+; नर±); भगत (उद, व्रज)।

२८।११ मलिनमति; मलिनमन (वड़, राम, जवा, नाग, मन, पट, नाथ)।

२६।८ रामसभाँ; राजसभा (वड़, कुंज+, परि, राम, जवा, मन±, उद, नर, नाथ)।

३०।१ सुहाई; सुनाई (नाग, मन÷)। सुनाई; सुसुनि कलि कलुप नसाइ हाई (नाग÷); सुहाई (नाग+, मन÷)।

३१।१६ बिहारु; बीचारु (पट)।

३२।२ धरम; धरनी (पट)।

३२।३ भीम; भीर (जवा, पट, नाथ); भीरु (मन+)।

३२।१२ धन; धर (कुंज÷, रघु)।

३५।१० कुलि; कलि (परि, मन±, नर); ⊙ (उद); कुल (पट)।

३६।८ **सकिलि;** सकल (नाग, मन÷, पट, नाथ); सिमिटि (व्रज)।
३७।२ **अबाधा;** अगाधा (नाग); अवराधा (पट, नाथ)।
३७।१४ **सम जम;** संजम (वड़, वाल, जवा, व्रज, नाथ)। **रति रस;** रस वर (कुंज+, रघु); रस÷, रति रस वर++ (कुंज); रति सव (वाल)।
३९।६ **सर मज्जनु;** मज्जन सर (राम, नाग, मन, नाथ); जल मज्जन (जवा, पट)।
३९।७ **भाऊ;** चाऊ (राम, नाग, मन÷, नाथ)।
४१।२ **पढ्डु;** षटु (वड़÷); वटु (मन); वट्÷,षट्+(नर); पडु (पट, नाथ)।
४१।४ **सुबद्ध;** सुबंध (राम, मन, उद, नर, व्रज, नाथ); सुवुद्ध (जवा); शुवन (पट)।
४५।७ **बेदतत्व;** ? (राम, जवा, नाग, मन); भेद तत्व (उद); तत्व शव (पट)।
४६।८ **लहेँउ;** सहेउ (वड़); भएउ (जवा); लहे (व्रज)।
४७।१ **मोर;** मोह (राम, जवा, नाग, मन, पट)।
४७।६ **कालिका;** कलिका (रघु+, व्रज); कलिकाल (परि, नर÷, पट); कालिकाल (नाग); कलीकाक (मन÷); √(नर±)।
४८।११ **परमु;** √(कुंज÷, रघु÷); मरमु (वड़, कुंज+, रघु+, परि, उद, व्रज); मरम (अन्यत्र)।
५२।१० **नरभूप;** √÷, ++, शुरभूप+(मन)।
५३।३ **सबदरसी;** समदरसी (परि, जवा, मन+, उद, व्रज, नाथ)।
५३।७ **निज;** हरि (परि, राम, जवा, नाग, मन, पट)।
५५।९ **महेस तब;** तव शिव पहुँ (राम); महेश तह (नर); तव शीव पहुँ (पट, नाथ)।
५६।९ **पुनीत;** प्रेम (वड़, परि, राम, नाग, मन÷, नर, पट); प्रीति (जवा, नाथ); पीम्र (मन+); स्नेह (व्रज)। **न जाइ तजि;** नहिं जाइ तजि (वड़, नर); तजि जाइ नहिं (परि, राम, जवा, नाग, मन, पट, नाथ)।
६३।७ **अवमाना;** √ (कुंज, रघु÷, उद, नाथ); अपमाना (अन्यत्र)।
६६।८ **गिरि;** विधि (वड़, राम, जवा, नाग, मन, नर, पट, नाथ)।
६७।६ **सुमिरि;** सकल (जवा); समिरित (उद); सुलभ (नर÷); सुमरि (नर±, पट)।
६९।९ **हिसिषा;** इसिषा (राम÷, नाग, मन÷); √(राम±, नर÷, ±±); ईसिष (जवा); हीन्शा (मन+); हिसिषी (उद); सिषा (नर±, पट); सीष (व्रज, नाथ)।
७०।१० **यह;** √(कुंज, रघु, उद, व्रज); यहि (वड़); इंहि (नर); अव (अन्यत्र)। **अब;** सव (परि, राम, जवा, नाग, मन, पट, नाथ)।
७१।४ **रहउ;** रहइ (वड़, राम, जवा, नाथ); रहत (पट)।
७१।९ **सबु;** सब (वड़, नर, व्रज); अव (राम, जवा, नाग, मन, पट, नाथ)।
७३।८ **भए;** भएउ (वड़, राम, जवा, नाग, मन, नर)।
७४।६ **बेलवाती;** बेलपात (बड़, मन, नर±); बेलपाति (परि, राम±, जवा); बेलपति (राम÷); बेलवाति (नाग); फलवाती (उद), बेलबतिय (नर÷); बेलपाती (व्रज); बेलवात (नाथ)।

७५।४ **तुम्हहि;** जवहि (राम±, जवा, नाग, मन, पट, नाथ); अवहि (राम÷); तुमहिं (नर)। **जब;** अब (राम, जवा, नाग, मन); तुअ (पट); तोहि (नाथ)।
७५।१० **अभिराम;** आरामु (बड़); आराम (राम, जवा, नाग, मन, पट); कल्यांन (नर); सुषषान (नाथ)।
७८।४ ⊙ (कुंज÷, रघु)।
७८।७ **सोइ;** सव (परि); हम (राम, जवा, नाग, मन, पट, नाथ); सो (नर)।
७८।८ **सदासिवहि;** सिवहि सदा (बड़, राम, जवा, नाग, मन, नर, पट, नाथ)।
८३।८ **बिषमबान झषकेतू;** विषम वारिचरकेतू (रघु÷, मन+); वान बिषम झषकेतू (जवा); वीषमबान वीषकेतु (मन÷); वीषमबान जलकेतु (पट); बिषमवांन झकेतु (नाथ)।
८६।३ **जग;** √(कुंज, रघु–, परि); सव (अन्यत्र)।
८६।६ **तरुराजि;** तरुजाति (बड़, नाग, मन+, उद, व्रज); तरुराज (रघु–, परि, नर); तरु सषा (राम, पट, नाथ); तरुसाषा÷, तरुराजा+(जवा); तरु जाती (मन÷)।
८७।८ **समुझि कामसुखु;** काम समुझि सुष (जवा); सो समुझि कांमसुष (उद)।
८९।५ **विधि बिनय;** विध वचन (रघु–); प्रभु बीनय (पट)।
९१।४ **सोचाई;** सुचाई (राम, उद); सोधाई (जवा); सुहाई (नर, पट, नाथ)।
९१।७ **अज;** तेहि (रघु–, परि); विधि (राम, पट, नाथ); अस (जवा, मन, उद, नर, व्रज); अ (नाग)।
९१।८ **कलस;** √(कुंज, रघु–, परि); सकल (अन्यत्र)।
९१।१० **सुभद;** सुषद (बड़, रघु–, परि); शुभग (राम, जवा); शुभ (पट, नाथ)।
९४।६ **गए;** आएउ (रघु–, परि, नर÷); आए (नर±)। **तुहिनाचल;** हिनाचल (बड़÷); तुहिमाचन (कुंज÷); तुहिमाचल (कुंज+, नाग+); हिमाचल (रघु–); हिमांचल (परि, जवा, नर); तुहेमाचल (उद); सहिमाचल÷, रितुहिमाचल+ (व्रज); हेमाचल (पट); हींमाचल (नाथ)।
९५।८ **बसह;** √(कुंज); बरद (अन्यत्र)।
९६।१४ **बिलापु;** √(कुंज, परि); विलाप (रघु–, व्रज+); कलाप (अन्यत्र)।
९७।१४ **तुहिनगिरि;** गिरि÷, हिमगिरि+(जवा); तुहिमगिरि (मन÷, व्रज+); तुहितिगिरि (उद); तुहिगिरि (व्रज÷); तवहीगीरी (पट); आतुर गीरि (नाथ)।
१००।३ **बिरंचि;** विरचि (बड़); बिचित्र (रघु–, परि)।
१००।७ **भामा;** वामा (रघु–, परि, मन+, पट, नाथ); ? (व्रज÷)।
१०१।७ **बिभागा;** विधाना (जवा÷?, नाग, मन)।
१०१।१३ **सम;** प्रिय (परि, राम, पट, नाथ)।
१०४।८ **देखाई;** दिषाई (बड़, उद, नर, नाथ±); दृढ़ाई (परि, नाथ÷)।
१०७।५ **अनुमानी;** √(कुंज, रघु, परि, बाल); मन माँहीं (राम, नाथ); उनमानी (व्रज); मनमानी (अन्यत्र)।
१०९।९ **बंदौं पद धरि धरनि सिरु;** वार वार करुणानिधि (वाल)।

११४।४ गुन; विधि (राम, पट, नाथ)।
११५।७ बिचारे; सम्हारे (परि); पिग्रारे (जवा); शंभारे (पट, नाथ)।
११६।२ बस; ✓(रघु, जवा, नाग, मन÷, व्रज÷); बसें(कुंज÷); बसउ (उद); सव (अन्यत्र)।
१२१।४ स्वमति; सुमति (वड़, नर, पट, नाथ)।
१२१।६ अधम; अधरम (कुंज÷, रघु, व्रज); अधर्म (उद)।
१२५।७ असि; अति (वड़, जवा, नर, नाथ); हुती (पट)।
१२६।३ बढ़ावनिहारी; जगावविहारी (जवा, नाग, मन); चढांवनहारी (उद)।
१२६।४ नवीना; प्रवीना (उद, व्रज÷, पट, नाथ)।
१२६।६ मन मयन; ॽ (कुंज÷, रघु, नर); हिय मयन (व्रज+); मऐन (पट); भऐ सैंन÷, भऐं मैंन± ? (नाथ)।
१२७।३ मुनि; सुनि (कुंज÷, रघु, मन+, व्रज)।
१२६।५ उखारी; उपारी (राम, मन, पट, नाथ)।
१३०।३ नीति; सील (वड़, जवा, नाग, मन, नर)।
१३१।८ हे बिधि; हैं विधि (कुंज, रघु); है विधि (राम, नाग); हा विधि (वाल, नाथ); हो विधि (जवा); जिहि विध (उद); कहै विधि (व्रज÷); दैवी (पट)।
१४०।३ पुनीत; विचित्र (परि, राम, पट, नाथ)। प्रबंध बनाई; मुनीसन्ह गाई (वड़, कुंज÷, रघु÷, जवा, उद÷, नर); बंध बनाई (नाग); मुनिसन पाई (उद+, व्रज÷)।
१४१।७ मुसुकानी; हरषानी (राम, पट, नाथ)।
१४५।६ बरु; वर (परि); धुनि (राम, मन, पट); नृप (जवा, नर); बुरु (नाग); धरु (उद); पुनि (नाथ)।
१४७।१ दर; रद (कुंज÷, रघु, परि, नाग, मन÷, पट, नाथ)।
१५१।१ बचरचना; वर रचना (बड़, कुंज+, राम÷, जवा, मन+, व्रज); वर वचना (मन÷); रुची रचना (पट); रव रचना (नाथ)।
१५७।४ मृग; मग (कुंज+, पट, नाथ); द्रु (उद)।
१५६।१२ आपुनु आवै; आपु न आवै (बड़, जवा+, मन, नर, व्रज, नाथ+); आप न आवे (परि); ताहि ले आवै (राम, जवा÷); आपु न वै (उद)।
१६२।२ सिधि लोक; सिधि लोग (राम, नाथ); बीधी लोग (पट)।
१६३।६ महीस; महीप (जवा, नर, पट)। जहँ तहँ; ⊙ (कुंज÷)।
१६४।८ असोकी; विसोकी (परि, राम, पट, नाथ)।
१६५।४ बस विधि; सव विधि (कुंज, रघु, नाग, मन÷, पट); ✓(मन±); अवसि विध (उद); वसि विधि (व्रज)।
१६५।१० त; तौ (वड़, मन, पट, नाथ); तहं (कुंज, रघु); तह (नाग, उद); तो (व्रज)।
१६६।२ मम; मन (कुंज÷, रघु, परि, जवा, नाग, उद); ×(मन)।
१६८।३ मन तन; मन क्रम (राम, नाग, मन, व्रज); ॽ (जवा); मन कर्म (पट, नाथ)।
१७२।२ अनभएँ; अनुभैंऐ (बड़); अनभएउ (परि, राम+, नर, पट, नाथ); अनुभयउ (राम÷); मनभए (उद)।

१७५।४ धाए; आए (जवा, मन, नर, व्रज, पट)।
१७६।१ मुनि सुनु; सुनि सुनु (कुंज÷, रघु÷, पट); √(कुंज+, रघु±); सुनि सुनि (जवा÷, नाथ); सुनि मुनि (जवा+); मुनि पुनु÷, √±(मन); सुनि (उद); पुनि सुनु (व्रज)।
१७६।२ बरिबंडा; बरचंडा (राम); परचंडा (जवा+, पट, नाथ); ⊙ (जवा÷); बरदंडा (व्रज)।
१८१।७ कहौं; करौं (कुंज÷, रघु); कहौ (जवा, मन); ×(नाग); कहों (उद, व्रज); कहेउ (पट); कहउं (नाथ)। अब सोई; सब कोई (नर, पट)।
१८२।८ पचारी; प्रचारी (वड़, रघु+, परि, राम, जवा+, मन, पट)।
१८२।१० धनधारी; धनुधारी (वड़, परि, जवा, पट, नाथ)।
१८३।५ बेद; विश्व (वड़); देव (उद, पट, नाथ)।
१८४।३ सब; सम (वड़, परि, राम, व्रज, नाथ)।
१८४।४ ग्लानी; हानी (वड़, परि, राम÷, मन, उद)।
१८४।६ लोक; लोका (कुंज, परि, राम, नर, व्रज, पट, नाथ)।
१८४।१० सोक; सोका (कुंज, परि, राम, नर, व्रज, पट, नाथ)।
१८५।२ पयनिधि; प्रभु पयनिधी (जवा)। बस प्रभु; बस (कुंज÷, रघु÷, उद, व्रज); मन बस (रघु+); महं प्रभु (परि); बंस (जवा)।
१८६।८ गुनगन; हरिगुन (परि); गुनजन (जवा)।
१८६।११ गंजन; षंडन (वड़, कुंज+, रघु, परि); ⊙ (कुंज÷); ⊙ ÷, √±(नाग)।
१८६।१२ जानी; बाणी (वड़); यानी (कुंज÷, रघु, नाग, उद); वानी (कुंज+, परि, राम, जवा, मन)।
१८६।१३ सारद; सादर (कुंज÷, रघु, जवा, नाग, मन, उद, पट)।
१८७।११ धरि महि; धरि धरि महि÷, धरिनी मह्+ (कुंज); धरनि महु (रघु, परि)।
१८८।५ रहे; रहनि तहाँ÷, रहेनि तहाँ+(राम); रहे तहा (पट)। निज निज; निजनि (जवा÷, व्रज)। अनीक; अनीकर (रघु, उद, व्रज÷); ⊙ (राम, पट); अनेन (जवा÷); अनेक (नाथ)। रचि; रुचि (कुंज+, उद, व्रज, नाथ); √(कुंज÷, ++); रूचि (रघु); रूवि (नाग); रुच (मन, पट)।
१९१।७ गहगहि; गहगह (वड़, कुंज–, नाथ); गहगहे (व्रज); गहीगह (पट)।
१९२।१ परम दयाला; दीनदयाला (वड़, कुंज–, वाल, जवा, नर)।
१९४।२ लोई; कोई (वड़, वाल, जवा, मन, नर)।
१९४।६ प्रगटेउ सुषमाकंद; प्रगटेउ प्रभु सुषकंद (वड़, नाग, मन, नर); प्रगटेउ सुपकंद (कुंज÷, रघु÷, उद, व्रज÷, पट); प्रगटे सुषमकंद (कुंज+,); प्रभु प्रगटेउ सुखकंद (राम, नाथ); प्रगट भए सुखकंद (वाल); प्रगटे प्रभु सुषकंद (जवा)।
१९५।७ जनु सानी; सुख साँनी (वाल); अनुमानी (मन+); पुर सानी (नाथ)।
१९५।१० कवन; कवनि (वड़, परि, राम); कौन (वाल); कहा (पट, नाथ)। बिधि; ते (पट, नाथ)।
१९६।५ मगन मन; सकल रस (वड़, राम, नाथ)।

१९८।६ **सुखसागर;** सुषसादर (कुंज÷, रघु, मन÷)।
१९९।१० √; √(वाल, जवा, उद, व्रज, नाथ); ⊙ (अन्यत्र)।
२००।४ **बस कै;** सव के (कुंज÷, रघु, नाग±, मन); वस करि (परि, व्रज); वसि करि (जवा+, उद); वसि कै (वाल, जवा÷, पट, नाथ); सव के राचर सवके (नाग÷)।
२०४।२ **इन्ह सन;** इन्ह सर (कुंज, रघु÷); एहि रस (वाल); इन सन (जवा); इन्ह सन्ह (नाग); इन्ह कर (उद); इन रस (नर±); इन कर÷, इन सर+? (व्रज)।
२०६।७ **देखौं पद जाई;** देखौं प्रभुपद जाई (वड़); मैं देखौं पद जाई (राम÷, पट, नाथ); देखौं पद पंकज जाई (राम+); देषौ पद जाइ ÷, देषौ प्रभुपद जाइ+ (जवा); देषौं पद पंकजा जाई (नाग); देषुं हरिपद जाइ (उद); देषौं प्रभुपद जाई (नर+); देषों हरिपद जाई (व्रज)।
२०६।१० **सरऊ;** सरजू (वड़, परि, राम÷, पट, नाथ); सारउ (जवा); ? (व्रज÷)।
२०८।५ **प्रीय प्रान की;** मोहिं प्रिय प्राण कि (वड़); प्रिय प्रान की (कुंज, रघु); प्रिय मम प्रान कि (परि); प्रिय मोहि प्राण कि (राम, मन+); प्रिग्र प्राणन्ह की (वाल); पृया प्रान की (जवा); प्रीय प्रान कै (पट); मोरें प्रान की (नाथ)।
२०९।१ **जलज;** जलल÷, √±(कुंज); जलद (जवा, नर); ज (उद)। **तनु;** जनु (कुंज÷); तन (परि, राम, जवा, पट, नाथ)।
२०९।४ **निति;** नित (वड़); निमिति (जवा); हित (उद, व्रज); लगि (नर)।
२१०।३ **क्रोही;** कोही (परि, राम, वाल, जवा, नर, नाथ); क्रोद्धी (नाग)।
२१०।५ **मारा;** √(कुंज, रघु, जवा, मन÷); जारा (अन्यत्र)।
२११।११ **भोरी;** थोरी (वाल, मन÷); बारि (जंवा÷)।
२११।१७ **दयाल;** कृपाल (वड़, परि, राम÷, नर); √(राम±)।
२१८।५ **डर;** उर (परि, राम, पट, नाथ)।
२२६।४ **जप;** बिधि (परि, राम, जवा, पट, नाथ)।
२३१।४ **सुभद;** सुभग (वड़, रघु+, परि, राम, पट, नाथ)।
२३१।५ **मनु;** मन (वड़, जवा, नर); भूलि (राम, पट, नाथ)।
२३३।६ **बहु;** मुख (राम, पट, नाथ)।
२३३।७ **भुज;** भुजंग (कुंज÷); भुजग (नाग)।
२३५।२ **गुन;** कै (रघु−, परि, राम, पट); की (नाथ)।
२३५।३ **चित्त;** बिचित्र (रघु−); चित्र (राम, जवा, मन÷, उद, पट, नाथ); शुचीत (मन+)।
२३५।७ **अंत;** मध्य (वड़, परि, मन+, नर, व्रज); मधि (जवा)।
२४१।५ **रूप;** √(कुंज, नाग); भूप (अन्यत्र)।
२४५।८ **अवर;** √(कुंज, राम, जवा, नाग, मन, उद); अपर (अन्यत्र)।
२५४।१ **जे;** √(कुंज, नाग); तब (पट); जब (अन्यत्र)।
२५९।७ **प्रेमतन;** (कुंज, नाग, पट, नाथ); प्रेमपनु (वड़, जवा, मन); प्रेमपन (अन्यत्र)।
२६६।९ **कोहु;** मोहु (वड़, परि, मन+, नर); मोह (रघु−)।

२६७।३ **लोभलोलुप;** लोभ लोलु (बड़, उद, नर÷); लोभी लोलुप (कुंज+, मन); लोभु लोलुप (राम); लोभी लोभ (जवा); लोभि लोलप (नर±); लोभु लोलु (व्रज, पट); लोभि लोलुप (नाथ)। **कल;** कलि (बड़, राम, मन÷, पट, नाथ); ⊙ (रघु–, परि, मन+)।

२६७।४ **परम गति;** पर गति (कुंज÷, मन÷); परा गति (रघु–, परि); सुगति जिमि (राम, पट, नाथ); परम पद (जवा+, उद)।

२७२।२ **नयन;** नये (बड़, राम, जवा, उद, नर, व्रज)।

२७४।१० **कथहिँ;** √ (कुंज, परि, नाग); × (मन); करहिं (अन्यत्र)।

२७५।६ **खर;** कर (बड़, रघु–, परि, राम, जवा+, मन, पट); बर (नाथ)।

२७७।१० **चरहि;** परहिं (बड़); बरहि (रघु–); होहिँ (परि, राम, मन+, पट, नाथ)।

२७८।५ **बड़;** √ (कुंज, नाग); अति (अन्यत्र)।

२७८।१० **सकुचि;** तुरत (रघु–, परि); बहुरि (राम, पट, नाथ)।

२८१।६ **सब बंदे;** √ (कुंज, नाग÷); संक सब (जवा÷, पट, नाथ); संका सब (अन्यत्र)।

२८३।४ **जय;** √ (नाग); जप (कुंज); जन÷, बहु+ (मन); जग (अन्यत्र)।

२८४।७ **मिटै मोर;** चाप मिटै मोर (कुंज+); १ (परि); मेटहु मोर (पट)।

२८४।१० **अमात;** समात (रघु–, परि, राम, जवा, नर, पट, नाथ)।

२९२।१० **पंकजमाल;** √ (कुंज÷, मन÷, व्रज÷, पट); पंकजमाला (नाग); पंकजवाल (नाथ); पंकजनाल (अन्यत्र)।

२९३।४ **गज;** ⊙ (कुंज÷, रघु÷); करि (बड़, कुंज+व्रज+); गंज (कुंज++); वन (उद, व्रज÷)। **हरि;** अरि (जवा); केहरि (उद)।

२९४।१ **मुनि बोले;** बोले गुरु (बड़, नर, व्रज); बोले÷ (कुंज, रघु); बोले मुनी (रघु+); १ (परि); मुनी बोले (नाग); बोले गुर (अन्यत्र)।

२९८।५ **अय इव;** हय इव (कुंज±, रघु, नाग); अगु इव÷, आगिव+ (जवा); अवा इव (नर±); अव इव (पट); अवइ (नाथ)।

२९९।२ **पनव;** पवन (कुंज÷, रघु÷, नाग, नर÷, पट, नाथ); पव÷, गहे+ (जवा); पवँन वनि (उद); √ (नर±)।

३००।२ **घटा;** √ (बड़, जवा, व्रज); घय (कुंज÷, रघु÷, नाग); ? (मन÷); घंटा (उद, नर÷); घंट (कुंज+, रघु+, नर±, अन्यत्र)।

३००।४ **बिप्र;** वीर (कुंज÷, रघु÷, जवा÷, नाग); मुनि+, √++ (जवा)।

३०५।१ **कल कोपर;** भरि कोपर (बड़, कुंज+); कोपर (कुंज÷, रघु÷, नाग); कोपर भरि (रघु+, परि)।

३०६।१ **सुमन सुर;** सुमम÷, सुमसुर+, √++ (कुंज); सुमन (रघु÷, नाग); सुमन सर (पट)।

३१२।१० **बिदेह सन;** बिहस (कुंज÷, रघु÷); बिहसी कर (नाग)।

३१४।७ **सुरनारी;** पुरनारी (राम, मन, पट, नाथ); नरनारी (जवा+, व्रज); सुरनानी÷, √± (नाग)।

३१५।५ मुख; √(वड़, कुंज, रघु, जवा÷, नाग, उद, नर÷); शव(मन); सुर (नर±, अन्यत्र)।
३१६।१३ चालि; बाजि (वड़, परि, जवा+, नर±, व्रज); अलि (कुंज+, नाग); बाज (कुंज ++); वालि (रघु+); चाल (राम); ⊙ (जवा÷)।
३२५।२-३ ⊙ (कुंज÷, रघु, वाल, नाग)।
३२५।२० तनय; √(कुंज, रघु, नाग); जन (राम÷); जनक (राम±, अन्यत्र)।
३२६।११ रस; √(कुंज÷, रघु÷); रव (कुंज+); ⊙ (उद÷); कर (कुंज++, उद+, अन्यत्र)।
३४४।७ सफल; सकल (वड़); सुफल (परि, उद, व्रज)।
३४६।६ सकुन; सकुच (कुंज, रघु, जवा÷, नाग, मन+); शगुन (पट)।
३५२।३ पूप; √(कुंज÷, रघु); भूप (अन्यत्र)।
३६०।३ सप्रेम; सनेह (रघु–, परि, जवा); प्रेम (नाग)।
३६०।६ नारी; चारी (राम, मन÷, व्रज, पट, नाथ); च्यारी (उद)।

द्वितीय सापान (अयोध्याकांड)

श्लो १।१ वामांके; यस्यांके (राजा); यस्याङ्के (परि)।
दो १।७ मनोरथ; मनोहर (रघु)।
३।६ अनुभयेउ; भयेउ (रघु÷, अल)।
६।३ चरम; चमर (अल, मन, पट, नर, नाथ); चर्म (व्रज)।
६।५ बिहित; विदित (राजा, परि, अल, खोज)।
८।५ कहेउ; (राजा, परि, अल, नर); कहै (उद); कहो (खोज); कहे (अन्यत्र)।
११।६ आजु; काजु (रघु)।
१२।५ बिबुध; विविध (वड़, राजा, रघु, परि, पट); बिबध (उद)।
१४।२ जिन्हहि; जेहि (राजा, परि); जिन्हन्ह÷, √±(राम); जेन्हहि÷, √±(मन); जिनही (उद); जाहि (खोज); जिनहहि (व्रज); जिनहिं (नर)।
१७।७ जर; जल (वड़, नाग, उद, खोज, व्रज, नर); जलु÷, √ ± (राम)।
२०।७ देखउँ; देषहुँ (राजा, परि)।
२२।१ कबुली; कबूलि (वड़, नर±); कठुली ? (राजा÷); कुबुली (बाग÷, खोज÷); कबुलि (नाग); कबुल (मन, नर÷); बाबेली+, बोली++ (खोज); कुटुली (व्रज); कुटील (पट); कबूली (नर++); कटुलि (नाथ)।
२७।६ कुटिलमनि; कुटिलमति (वड़, बाग, नाग, मन+, खोज, व्रज, नर÷, पट, नाथ); कुटल सनि (उद)।
२८।६ मनु; मुनि (बड़, रघु, राम÷, मन, खोज, पट, नाथ); पुनि (व्रज)।
३४।५ सब; फुरि (राजा, परि)।
४१।१० पर; पहं (राजा+); मह (राजा÷, परि, खोज)।

४२।४ **न पाइ असः** न पाइअ (राजा, रघु, परि); पाइ न (राम)।
४७।७ **अगहु;** अगम (बड़, मन±, खोज, नर±); अगमु (रघु, राम)।
४८।८ **प्रान;** परमु (बड़); परम (रघु, राम)।
७५।२ **जानी;** हानी (बड़, परि, बाग, उद, व्रज, पट, नर, नाथ); नी (रघु)।
७५।४ **फलु सुत;** फल सुत (बड़, नाग, खोज, पट, नर, नाथ); बड़ फलु (राजा, परि); फलु बड़ (राम±); फलु (उद)।
७५।७ **सुपासू;** सुवासू (रघु, नाग, मन, उद, पट, नर, नाथ)।
८०।४ **परितोषे;** परिपोषे (राजा÷, राम±); √ (राजा ±); परिवोषे (उद)।
८३।१ **रथ;** अति (बड़, राम÷); ⊙ (रघु÷)।
८४।२ **सफल;** सकल (बड़, बाग, मन, व्रज, नर, नाथ)।
८६।४ **सिंसुपा;** सिंसुपात (रघु, बाग); सिसुपाल (नाग); सिंसुपायँ (उद); शिसुपातु (व्रज); शोशुकाल (पट); सीसुपास (नाथ)।
८६।८ **मधुर मृदु;** मृदुल मधु (बाग, व्रज)। **जानी;** आनी (पट); बानी (नर÷)। **आनी;** पानी (राजा, नाग, पट)।
६१।१ **बिसद;** बसन (रघु, पट)।
६४।२ **सुखदारा;** सुषदातारा (रघु+, राम++, व्रज±); दातारा (राम÷, नाग±, मन, उद, पट, नर, नाथ)।
६५।२ **मगु;** मतु (राजा+, परि); मग (मन); गुनु (उद)।
६८।२ **पितुगृह;** मायिक (बड़); माइक (रघु, राम+, मन, उद, पट, नर, नाथ); √÷, ++ (राम)।
६८।१० **मोर;** मोरि (बड़, राजा, परि, राम, नाग, पट, नाथ); मो÷, √± (मन)।
६६।८ **जनु;** जिमि (बड़, राजा, परि, बाग, व्रज); बन (नाग÷)। **मूरु;** मूलु (राम); मूर (बाग, मन, व्रज, नर±); मुल (उद, पट, नाथ)।
१००।१ **जीहहिं;** जिइहहिँ (बड़, राजा, परि); जीवहि (बाग, नाग, मन, व्रज, पट, नाथ)।
१०२।८ **जोइ;** जो (राजा, राम, मन, नाथ÷); जो कछु (परि, बाग, व्रज); प्रभु (पट)।
१०४।८ **बोलि सब;** बोलि तब (बड़, बाग, व्रज)। **बिदा सब;** बिदा तब (राजा, परि, पट)।
१०६।३ **सुनि मन;** सुनि मुनि (बाग, व्रज, नाथ÷); मुनि मन (उद+, नर÷)।
१०६।४ **हमारा;** अपारा (राजा÷, परि)।
११०।३ **सबहिँ;** बसहिं (राजा; राम÷, ++, नाग); स्वसि ÷, स्वहि + (उद); शही (पट)। **बूझत;** पूँछत (बड़); पुछत (मन, पट, नाथ)।
११०।१८ **सोच;** होंहि (राजा); होंहि (परि); सोचु (राम); सीव (बाग); शीघ्र (पट, नाथ)।
११०।२० **तेहि;** तेंइ (राजा); तेइ (परि); तव (बाग, व्रज); तिन्ह (उद); ते (पट); तिहिं (नर)।
११३।६ **तृन;** तरु (बाग; व्रज, पट)।
११४।१० **पर;** वर (राजा, परि, राम, नाग, मन÷, उद, नर); चर (पट, नाथ)।

११५।६ हम; सम (रघु)।
११५।७ मानव; मानवि (बड़, रघु, राम, नाथ); मानिव (उद, नर÷)।
११८।८ तरुबर; तरुतर (परि, पट, नर, नाथ); तरुअरी (नाग); तरुवरु (मन)।
११९।३ बरनी; चरनी (रघु, वाग, उद)।
११९।६ अैक; ऐक (रघु, राम, पट, नाथ); एक (बड़, परि, वाग, व्रज, नर)।
१२०।२ कहहिँ; कहइ (राजा, परि); कहति (वाग, व्रज); कहत (नाग)। मृदु; वर (राजा, परि, नाग, उद, पट, नर, नाथ)।
१२७।१० मन; उर (बड़); हिय (राजा, परि, नर)।
१२८।७ बहु; वरु (रघु)।
१२९।१ कोह; मोह (राजा, परि); क्रोध (वाल); कोध÷, √± (मन); क्रोहु (उद)।
१३०।६ लउ; उर (राजा, परि, उद); मनु (वाग); लय (खोज); मन (व्रज); लौ (पट, नर); लव (नाथ)। रहहु; वसहु (वाग, खोज, व्रज)।
१३५।७ भल; जल (राजा, परि); भलि (वाग, नाथ); सब (नाग, खोज)।
१३६।५ रघुनायकु; मुनिनायकु (वाग, व्रज)।
१३६।६ बिधि; वन (वाग, व्रज); बहु (मन); विव÷, विध+(उद)।
१३६।७ बिबुध; विविध (राजा, परि, खोज÷); √ (खोज±)।
१३९।६ फर; फल (राजा, नाग, मन, उद)।
१४७।२ तेहि तेहि; जेहि तेहि (बड़, परि, राम, मन, उद, खोज, पट, नाथ); जिहिं तिहिं (नर)।
१४७।५ भूमितल; भमि तन (रघु, वाग)।
१५३।१० सीँचेउ; सींचत (राजा, परि); तीचेउ (खोज÷); सीच (नर)।
१५५।२ करि; धरि (बड़); भरि (राम, नाग, मन÷, पट, नर); भली (मन+); मरि (उद, नाथ); भल (खोज)। सँवारा; सुधारा (उद)।
१५६।३ कहेहु; कहेउ (राजा, परि, उद); कहहु (खोज, पट, नाथ)।
१६०।४ करहू; कहहू (रघु)।
१६३।७ रघुबर; रघुकुल (बड़, राम, मन, उद, पट, नर, नाथ)।
१६६।२ बिबेकपर; बिवेकमय (बड़, राजा, परि); बिबेक बर (मन±)।
१६८।२ चवइ; चुअइ (बड़); बमइ (रघु); ववइ (वाग); चुवै (नर)। हिमु; मुह (राम÷, नाथ); √(राम ±); विम÷, √± (नर)।
१६९।१ बिहित; विदित (राजा)।
१७३।६ पालहिँ; पालिहि (राजा, रघु, राम, नाग, मन); पालेहि (उद)।
१७४।३ बेदबिहित; बेदविदित (राजा, राम ±, खोज); बेदविहत (उद)।
१७४।७ परम; √(राजा, रघु, नाग); सरस (बड़); प्रेम÷, पेम ±± (राम); मरम (राम ±, अन्यत्र)।
१७५।३ सुरपुर; सुरपति (राजा, रघु, परि, पट)।
१७५।६ पुरजन; परिजन (बड़, राजा, मन, खोज, पट, नर, नाथ); परजन (उद)।

१७६।३ **मन**; मुनि (रघु, वाग); मनु (राम, पट); मनि (उद); सुनि (व्रज)।
१७७।६ **सुअ**; √(राजा, रघु÷, नाग, मन÷); सुतअन (उद); सुत÷, सुता +(खोज); सुव÷, सुवन+ (नर); सुअन (नर++, अन्यत्र)।
१७८।२ **रसा**; राज (राजा+)।
१७९।१ **पावर**; √(राम, मन, नर, पट, नाथ); पावव (नाग÷); पावन (नाग ±, अन्यत्र)।
१७९।१० **कौन**; काह (राजा, परि); कौनु (नाग)।
१८०।३ **रायराजु सबही**; राय रजायसु सब (राजा, परि); रामराज सबही (उद, नर)।
१८१।१ **करबदर**; करबदनु (नाग); कर ब्रदत ±, √÷, ±± (मन); करबदन (उद); करिबदनन (पट)।
१८१।६ **वस**; बर (वड़, राम, अल, नाग, उद, खोज, पट, नर); वड (नाथ)।
१८३।२ **बिष**; √(वड़, रघु, परि, राम, नाग); ⊙ (राजा); दुष (अन्यत्र)।
१८३।६ **पाँवरु**; पावर (अल, पट, नर, नाथ); पावन (खोज); पावइ (व्रज)।
१८६।१ **चहत**; चलत (राजा, राम+, वाग, मन÷, उद, खोज, व्रज, नाथ); चले (अल); √(मन±); चला (पट)।
१८६।६ **सबहि**; सकल (राजा, परि); सचीव (पट); सचिवं (नाथ)।
१८६।५ **करिहउँ**; करिहहु (राजा, परि, अल, नाग); करिहुउ (वाग)। **धवलिहउँ**; धवलिहहु (राजा, परि, अल, नाग)।
१९०।७ **जोहारे**; √(वड़, राजा, रघु, परि, राम, नाग); जोहारहि (अन्यत्र)।
१९३।८ **जाना**; नाना (रघु, राम, अल)।
१९३।१० **पावन**; पांवर (रघु, राजा, वाग, अल, नाग)।
१९४।३ **कुसल**; सकल (रघु, राम÷); सुकुल+, सकुल++ (राम); सुगम (अल)।
१९७।२ **सुरसेवा**; गुरसेवा (रघु, परि, राम+, वाग, नाग+, मन ±, खोज, व्रज, नर+)।
१९७।६ **सखहि**; सबहि (राजा, रघु, नाग÷, मन÷, उद)।
१९७।६ **सिंसुपा**; सीसुपात (अल); सीयपा (उद); सिसुपात (खोज); सिय (व्रज); ससपा÷, √+(नर); सीअ पाऐ (नाथ)। **तरु**; तरुतर (राजा, रघु, वाग, व्रज)।
१९७।१० **कीन्हेउ**; कीन्हे (वड़, रघु, राम, नर)।
१९८।५ **बिलीना**; √(राजा, रघु, अल, नाग+); बीहीना (पट); मलीना (अन्यत्र)।
१९८।१० **पबि**; पति (राजा, रघु÷, परि, नाग)।
१९९।८ **सारद**; सादर (राजा, परि, अल, नाग, उद); सरद (पट)।
२००।१० **सादर**; सदा (वाग); साधन (अल); साद (उद); सदार (व्रज); शारद (पट)।
२०२।८ **गरहिँ**; (वड़, राजा, परि); रहि (नाग÷); करहिं (अन्यत्र)।
२१३।४ **जेहि**; (राजा, परि, वाग, खोज, व्रज); जो (वड़, नाथ); जे (अन्यत्र)।
२१३।७ **सपनेहुँ सुरपुर**; ११ (राजा, परि, राम±, वाग, व्रज)।
२१७।३ **करिअ**; करिय (वड़, नर); करइ (राजा, परि)।
२१७।६ **रघुबरभगत**; रघुबर भरत (रघु, मन, खोज, पट)।

२१८।५ **भगत अभगत;** भरत भगत (रघु); भगत भगत (वाग, व्रज); रघुपति भगत (मन, उद, नर); भगति अभगति (खोज); रघुपती भग्ती (पट, नाथ)। **हृदय;** भगती (मन, उद, पट, नर); भगत (नाथ)।
२२२।५ **रानिहिं;** रामहि (रघु)।
२२४।६ **समेत;** समीप (राजा, परि)।
२२८।७ **उपचरा;** उपचार (वड़, परि, नाग, मन, खोज, पट, नाथ); उपचर (वाग)।
२२८।६ **अनुग;** √(राजा, रघु); अनुज (अन्यत्र)।
२३०।७ **साधुसभा जेहिँ;** साधुसमाजहि (वड़); साधुसमाजेहि (नाग); साधुसभा जिहि (उद, नर); साधुसभा जेन्ह (खोज); साधुसभा तीन्ह (पट)।
२३६।४ **अबिचल;** अविरल (राजा, परि, पट); अविछल (खोज)।
२३६।४ **बस;** बर (वड़, परि, राम, नाग, मन, नर, नाथ)।
२४७।४ **राम;** मातु (रघु, वाग, उद)।
२४६।७ **देवसरि;** देवधुनि (राजा, परि, राम, नाग, मन, पट, नर, नाथ)।
२५१।६ **सुठि;** सुचि (राजा, परि)।
२६३।२ **जनि;** जिय (परि); जीनी (मन); जिन (उद); कत (पट); जषि (नर÷)।
२६४।२ **बनत उपाय करत;** करत उपाउ वनत (वड़, रघु, वाग, उद, व्रज, पट)।
२७०।१ **लोग सोक;** लोक सोक (राजा, परि, मन, खोज, नर, नाथ); सोक लोक (पट)।
२७१।२ **पुरजन;** परिजन (राजा, परि, पट); परजन (मन); वचन÷, √± (नाथ)।
२७५।४ **आवा;** पावा (रघु, वाग, उद, पट)।
२७५।६ **सोक;** सोच (राजा, परि, राम÷, नाग, मन, नर÷); सींधु (नाथ)।
२७७।२ **गुर;** गुरु (वड़); पुर (रघु, वाग, मन, उद, व्रज)।
२८१।८ **अवधि;** √(वड़, राजा, परि, राम, खोज, नर); अवध (अन्यत्र)।
२८२।१ **बिबुधसरि;** देवसरि (राजा, परि, नाग, मन, खोज, पट, नर, नाथ); बुधसरि (उद)।
२८३।२ **मत;** ⊙ (रघु÷, वाग, उद, व्रज); भरत÷, √± (खोज)।
२८६।३ **जिंति;** √(राजा, परि); जिमि (अन्यत्र)।
२६१।१० **संकट;** संकटु (वड़); संकत (राजा, राम+); संकर (वाग, खोज÷, व्रज)।
२६३।४ **साधु;** सहित (राजा, परि, पट)।
२६८।५ **समाज;** समान (परि, मन+, नर+); समाजु (नाथ)।
३०१।६ **मुनिगन;** मुनिजन (राजा, परि); ⊙ (पट)।
३०६।८ **पारु;** ⊙ (रघु÷, वाग, उद, व्रज)। **जेहिं;** जेहि विधि (वाग, मन÷, व्रज)।
३०७।३ **मुनिथल;** सुचिथल (राजा, परि); सुनिथल (वाग, नाग÷)। **सरि सर;** ॰ (राजा; परि); सरस (नाथ)।
३०८।७ **दोष;** राम (राजा, परि)।
३१०।७ **फूलि फलि;** फूलि फल (रघु, परि, वाग, उद, व्रज); फुल फुले (मन÷); फुल फल (मन+, पट, नाथ)। **तून;** ⊙ (रघु÷, वाग, मन÷, उद, व्रज, पट); मै+, रह्यौ++ (मन)।

३११।६ **दोउ भाई;** रघुराई (वाग, मन, व्रज, पट, नाथ)।
३१२।३ **सभा;** सषा (रघु, परि); शवै (मन); सव (उद); शा (पट)।
३१२।७ **सबहिँ सहेउ;** १ (राजा, परि); कहेउ शकल (मन); सवैंहि सहेउ÷, सवै सहेउ+ (खोज); शहो शोक (पट)।
३१४।७ **पुरजन;** परिंजन (राजा, परि, नाग, खोज, पट, नाथ); पुरीं जन (मन)। **रजहि;** जरहि (वाग, व्रज)।
३१५।५ **जामिक;** यामिक (वड़); जामनि (रघु); जामिनी (वाग); जामीनी÷, जामीन± (मन); जामिनि (उद)।
३१८।६ **पुरजन परिजन;** १ (रघु, बाग, मन, उद)।
३२२।३ **बर;** वय (राजा, परि); रवि (नाग); पर (खोज÷)। **बिनय;** पवन (नाग)।
३२४।१ **मुख;** मुष (रघु)।
३२४।१० **चहुँ;** वहुँ (वड़, व्रज); वहु (राम, वाग, मन, उद, नर, नाथ); शव (पट)।
३२५।१२ **सें;** ⊙ (रघु, वाग, उद, व्रज)।

तृतीय सोपान (अरण्यकांड)

दो १।१ **पुरनर;** पुरजन (वड़, नाथ±); पूरन (अल, राय, मन, पट, नाथ÷)।
१।३ **राम;** रुचिर (बाल, अल, मन, पट)।
२।१ **भाजि;** भागि (बाल, अल, मन, व्रज, पट)।
२।३ **मन;** जिय (राय); तेही (मन)।
२।६ **सुधा;** साधु (राय)।
२।१३ **कर्म;** धर्म्म (रघु, राम÷); √(राम±)।
२।१४ **आरत;** आतुर (बाल, अल, मन÷, पट); आरतु (मन±)।
३।१ **श्रुति;** अति (रघु, राय, नाथ)।
५।८ **जड़ धन;** सड धन (रघु); बंधन (राय); जड तन (पट); सठ धन (नाथ)।
७।३ **श्री;** सिय (अल); शीघ्र (मन, पट, नाथ); सीय (व्रज)।
७।४ **बन गिरि;** १ (वड़, मन++); सर गिरि (वाल); वन (मन÷)। **बर;** सब (व्रज)।
७।१० **धन्य जनम;** धन्य जन्म (वड़, परि, वाल, मन, नाथ); धन्य धन्य (अल); जन्म जन्म (पट)।
६।३ **सब;** √(रघु, राय); हीअ (मन); निज (अन्यत्र)।
१०।१ **सिष्य;** सष्य÷, √±(राम); सीष (अल, मन, पट, नाथ)।
१०।१० **भवानी;** वषानी (राय)।
१०।१७ **जाग न;** मुनिअ (रघु÷); जान न (रघु,±, वाल, पट); ग्यान न (मन÷); ज्ञान (राय, उद, व्रज, नाथ)।
१०।१८ **राम दुरावा;** प्रभु जो दुरावा (वाल); वदन देषावा (पट)।

११।८ राज; √ (रघु, वाल, राय); माल (राम÷); वाल (राम±, अन्यत्र)।
११।१० जन; सुर (वड़, परि, राम, मन, व्रज, नाथ); ⊙ (उद); जन ते (पट)।
११।१५ भुज; वल (राम÷, अल, मन÷, पट, नाथ); √ (राम±)।
वल; धन÷, √± (राम); भुज (पट)।
११।२२ राम; रघुपति (रघु, राय)।
११।२४ झूठ; रूंढ (रघु÷); ? (मन÷); हुं रुढ (उद)।
का; औ (अल); ⊙ (उद)। साचा; काचा (उद)।
११।२६ येह काम; √ (रघु); निहकाम (परि, मन÷); निष्काम (राम); ईहकाम (पट); यह काम (अन्यत्र)।
१२।१ रमानिवासा; रामनिवासा (वड़, रघु, वाल, अल, राय÷); रानेवासा÷, √± (मन)।
१२।११ बर; पर (परि, राम, व्रज, पट)।
१२।१४ महँ; मो (रघु); ⊙ (वाल, राय); भै (अल, मन÷); म्ह (मन±); सब (व्रज)।
बैठे; बैठे प्रभु (वाल); बैठे सबे (राय); बैठि करि (व्रज)।
१३।२ जानहु; जानत (वाल, अल, पट)।
१३।१० श्री; सिय (वड़, अल); शी (मन); सीग्र (नाथ)।
१३।१६ सैँ; सोँ (वड़, परि, व्रज); कहँ (वाल, अल, पट); शन (मन)। दृढ़ाइ; √ (रघु, राय); वढ़ाए (वाल); अकुलाइ (अल); दृछाइ (मन); वढ़ाइ (अन्यत्र)।
१४।७ सो; सोइ (वड़, परि, राम, मन, उद, व्रज, नाथ)।
१४।९ जीवहिं; जीव (राम, मन, उद, व्रज, पट, नाथ); जीव कहि (अल)।
१६।६ धर्म; कर्म (राम, व्रज, नाथ); क्रम (मन)।
१७।७ मधुर; √ (रघु, राय); बहुरि (वाल); बहुती (मन÷); कहत (नाथ); बहुत (मन±, अन्यत्र)।
१७।१५ व्यसनी धन; विसनी धन (वाल); बिसनी निधन (अल); व्यसनी गति (राय); बीश्वनीधान÷, बीश्वनीधन± (मन); वेशानी धनी (पट); बिसनि निधन (नाथ)।
सुभगति; भगत (अल); सुभगा (राय); सुभति (उद÷)।
१७।१६ गुनानी; गुमानी (वड़, राम, राय+, उद, व्रज, नाथ); गुनानानी (अल)।
१८।४ बरन; √ (रघु); निकर (अन्यत्र)।
२०।१ बहु; निज (रघु)।
२०।६ अपार; प्रकार (वड़, परि, राम, अल); अपारा (मन); प्रचारी (नाथ)।
२३।६ जीति रन; जीति नर (परि); रिपु तौं (अल)।
२३।१० वृंद; कंद (बाल, अल, पट); चंद (नाथ)।
२४।५ रचेउ; √ (रघु, राय); कीन्ह (मन); रचा (अन्यत्र)।
२६।४ भानसगुनी; मानसगुनी (वड़÷, राम, राय, उद, व्रज, नाथ); भ्रमासगुनी (अल); मासगुना (मन)।
२६।५ ताकिसि; ताकेसि (वड़, परि, बाल, अल, व्रज, पट, नाथ); तासु÷, ताके+ (राय)।

२७।१८ **प्रभु;** सुर (मन, व्रज, नाथ)। **गुन;** मुनि (व्रज)।
२८।३ **संकट;** कष्ट (रघु)।
२८।५ **बोला;** बोली (मन+, व्रज); बोलीं (नाथ)। **मन;** मति (मन+,व्रज)। **डोला;** डोली (मन+, व्रज, नाथ)।
२८।१० **रह;** हर (मन÷, व्रज, पट, नाथ); √(मन±)। **तन;** वल (परि)। **बल;** लव (परि, अल, व्रज)।
२८।११ **सुहाई;** सुनाई (वड़, वाल, राय+, व्रज, पट); √÷, ± ±(राय)।
२८।१६ **रिसाना;** लजाना (परि, राम, वाल, अल, पट)।
२९।१ **जगदेक;** √(राम); जगदैक (रघु, राय); जग एक (व्रज); जगदैग्र (पट); जगदेव (अन्यत्र)। **बीर;** वीरु (वड़); देव (व्रज)।
२९।५. **पुरोडास;** पुरोडाश (वड़); पूरोडास (वाल); पुरोडाभ (अल); पुडाराशी (मन÷); वुडारास (व्रज); पुराराउ÷, पुरुवस+(नाथ)।
२९।१४ **जरठ जटायू;** जठर जटायू (वाल, पट); जाशु शुजप वल÷, जरठ जटाउ+(मन); जरह जटायु (उद); जठरजाउ÷, जठर जाटाउ± (नाथ)।
३०।२० **मुख;** सुख (परि, राम, उद, नाथ); ⊙ (पट)।
३१।१ **धरि;** धर (रघु); गहि (वाल, पट)। **भीरा;** पीरा (वाल, मन÷); भी (व्रज÷)।
३२।३ **गुनप्रेरक;** प्रेरक (रघु, राय, उद)।
३३।४ **खोजन्त;** खोजत (वड़, परि, राम, अल, व्रज, पट, नाथ)।
३६।२ **दृढ़ाई;** वढ़ाई (परि, वाल, पट); देषाइ (मन)।
४०।७ **कुसुमित;** मुकुलित (मन, व्रज, नाथ); मुकलीस (पट)।
४१।२ **सुंदर बर तरु;** सुंदर बर अति तरु (रघु); सुंदर तरु बर (परि, राम); सुंदर बर तरुअरि (अल); सुंदर बर तरु अति (राय); सुंदरी तरी बर (मन); तरवर सुंदर (व्रज); शुंदर तरु बटु (पट); परम सुंदर तरु (नाथ)।
४२।१ **परम उदार;** ७' (परि, राम); सरोरुह उदार (अल); उदार नाम (मन); उदार सहज (व्रज); उदाश शामी (पट); उदार स्वामि (नाथ)।
४४।५ **देति;** दहै (परि, राम); दिऐ (वाल); देह (अल); देत (राय); ⊙(पट)। **दुख;** सुख (परि, राम, अल, मन); मुख (वाल)। **मंदा;** कंदा (पट, नाथ)।
४५।६ **जातें;** जिन्ह तें (वड़, परि, राम); जिन तें (व्रज); जा के (पट)।
४५।८ **भगतिपथ;** धरमगति (वड़, परि, राम, मन, व्रज); भगतिप्रद (राय); परमपद (पट); परम पंथ (नाथ)।
४६।४ **मुदिता;** मुदित (वाल, अल, मन÷); मुनिता (उद); उपजत (पट, नाथ)।
४६।१० **कृपाल;** कृपाल पालक (रघु, राय)।
४६।१२ **रए;** नऐ (अल); गए÷, √± (राय); भऐ (पट); रहे (नाथ)।
४६।१५ **जुवती;** जुवतिजन (वाल, मन+); जुवति रस (राय); जुवति तन (व्रज)।

चतुर्थ सोपान (किष्किंधाकांड)

मं ३।४ **मन;** मति (प्रह, नाथ)।
दो ३।४ **पति;** पितु (नाग, मन, पट, नाथ)।
५।४ **विलपाता;** विलपाता (रघु, परि, नाग)।
५।६ **तेहिं;** तेइ (वड़); सो (वाल); तेन्ह (नाग); पट (मन); तव (पट)। **दीन्हा;** चीन्हा (वाल); दीना (उद, व्रज)।
५।१० **मोहि कहहु;** मोहि कहौ (वड़); मोहि कहु (रघु); मोही कहु सव (उद); शो मोही कहु (पट); कहहु सषा (प्रह)।
७।७ **बनाई;** सुनाइ (नाग, मन±, व्रज); शुहाइ (मन÷)।
७।१३ **बालीबध की;** वालि वधव इन्ह (वड़, राम, वाल, नाग, मन, उद, व्रज, नाथ); वाली वधव की (परि); वाली वधै कह (पट); वालि वधब एन्ह (प्रह)।
७।२० **सपने;** सपनेहु (उद, प्रह, नाथ)।
७।२४ **अस;** गुन (नाग, मन)।
६।११ **राम;** राम मन÷, राम मम+(मन)। **सन;** सकल (रघु+); पूय (नाग); ⊙(मन); सदन (पट); प्रिय (प्रह)।
१२।१२ **कछु;** कछुक (वड़, परि, वाल, नाग, मन, व्रज)।
१४।२ **रह न;** रहत (वड़, अल, नाग, उद); हरन (वाल); रहती (मन); रही (व्रज, पट); रहप (प्रह)।
१५।८ **मोह;** मोद (रघ)।
१५।१० **तृन;** अंन्न÷,अन्न+(रघु)। **जिय;** √(रघु, व्रज); हि(अल); जीते(पट); हिय (अन्यत्र)।
१५।१३ **चल मारुत;** बह मारुत (बड़, राम); मारुत बस (वाल); मारुत बह (अल); चले मारुत÷, ++, चलें मारुत+ (नाग); मारुत बहत (मन); मारुत (उद); वल मारुत (व्रज, प्रह)।
१५।१४ **उपजे;** जनमे (बाल अल, मन, पट, नाथ); उपनें (उद)। **सद्धर्म;** स्वधर्म्म (वाल); सैं धर्म (अल); के धर्म (नाग); को ध्रम (मन); सधर्म (उद, नाथ); को धर्म (व्रज); कै धर्म (पट); सतधर्म (प्रह)।
१६।२ **कृत;** ऋत (रघु, व्रज); रितु (परि)।
१६।७ **असि;** अति (वड़, नाग, मन, प्रह); अस (राम, उद, व्रज, पट, नाथ); ससि (अल)।
१६।१० **जिमि;** जसि (रघु); जिम (व्रज)।
१७।५ **अति;** नहि (वाल); तन (अल); ⊙(व्रज÷); रती (पट); जल (नाथ)।
१७।८ **द्विजद्रोह;** द्विजद्वेष (वाल); द्विजदोष (अल); द्विजवधे (मन)।
२४।४ **मरन;** तजन (नाग); तजइ (मन)।
२४।६ **दीख;** देषा (वाल, पट, नाथ)। **जाइ;** जाए तहँ (बाल); तहा (प्रह)। **उपबन;** सर्वंग्य (पट)। **बर सर;** सर (रघु); ? (परि, राम); वरस (नाग); सरस रवि

(उद); सर सर÷, √±(व्रज); तव (पट); बरस रवि (प्रह)। **बिगसित;** विकसित (परि, बाल); बिकसति (उद); विगसत (व्रज); उडही तहा (पट)। **बहु;** वहु तह (रघु); ⊙ (बाल)। **कंज;** कुंज (नाग, मन÷, उद)।

२५।७ **कमल पद;** ᑎ' (रघु, उद); कमल (अल); जुगल पद (नाग, प्रह)।

२६।७ **भरि;** वह (परि, राम, अल, नाग, नाथ); वहे (प्रह)।

२६।६ **किमि;** नहि (राम, अल, व्रज, नाथ)।

२६।१५ **सुख;** √(रघु, परि, व्रज); मत÷, सत+(नाग); अश (पट); सब (अन्यत्र)।

२८।७ **ब्रह्म;** राम (अल, मन)।

२९।३ **अपार;** अगाध (बाल); अपराध (अल, मन÷, नाथ); अपी÷ √± (प्रह)।

२९।५ **उमा;** √(रघु, मन+, पट, प्रह, नाथ); गरुड (अन्यत्र)।

२९।७ **बल;** बवल÷, √+(बाल); लव (अल); तन (मन)।

३०।३ **रिछेस;** √(रघु); रीछपति (अन्यत्र)।

३०।१८ **त्रिसिरारि;** √(रघु, राम+, बाल, अल); त्रिसरारि (उद); त्रिपुरारि (अन्यत्र)।

३०।१९ **नीलोपल;** √(रघु÷, राम±, बाल) नीलोतल (अल).; नीलोत्वाल (मन); नीलोजल (नाथ); नीलोत्पल (अन्यत्र)।

पंचम सोपान (सुंदरकांड)

मं श्लो १।१ **निर्वाण;** गिर्वाण (बड़); गीर्वाण (राम, नाग, पट, नाथ)।

२।२ **निर्भरां;** निर्भरिं (दुलही); नीर्भरो (पट)।

३।१ **स्वर्ण;** हेम (दुलही)।

३।२ **वरदूतं;** प्रियभक्तं (दुलही)।

दो १।८ **एही;** योही (रघु); तेही (परि, मन, नाथ); तैसिहि (बाल); ताही (पट)।

२।८ **ठएऊ;** बयऊ (बड़); कऐउ (अल); करेउ (राय)।

२।९ **दून;** दुगुन (बाल, अल, राय, नाग, व्रज, पट, नाथ)।

२।१३ **सबु;** तुम्ह (मन, पट, नाथ)।

३।४ **सोइ;** सो (रघु, परि, मन)।

३।८ **धाइ;** कूदि (परि, बाल); जाइ (राम÷, अल); √(राम±); धाऐ (पट)।

३।१२ **सुंदरायतना;** सुंदरायततन (अल); सुंदराऐतन (मन÷, उद); √(मन±); सुंदराईत अति (व्रज); सुंदराजातन (पट); सुंदरतयना÷, सुंदराअत अती+(नाथ)।

४।१ **रूप;** देह (अल, व्रज)।

४।४ **बमत;** वमन (रघु, अल, राय, काशी, व्रज)।

८।७ **महु;** मन (परि, अल, राय, उद, पट, नाथ) मई (व्रज)।

८।९ **राम;** भए (राय, पट)। **कमल पद;** चरन महुँ (बड़, नाग, काशी); ᑎ (दुलही, उद); चरण मह (राम); चरन चित (नाथ)।

९।११ **काढ़ि असि;** कै कठिन (अल); कठीन अती (मन); काढि अस (उद); कढि असि (व्रज); ⊙ (पट, नाथ)।

१०।१ कठिन; काढि (अल, राय+, मन, व्रज, पट, नाथ); काठि (राय÷)।
१०।३ दाम; सदा (राय, मन)। भुज; मम (बाल, अल)।
१०।४ प्रवान; प्रमान (वड़, परि, बाल, अल, राय, व्रज, पट, नाथ)।
१०।५ संजातं; संतापं (वाल, राय, व्रज); संतापा (पट)।
१०।६/१ √; शीता रानी तौ अश मन धीरा (पट)।
निसित बहसि; निसि तव असि (राम, बाल, नाग, मन+); निसत बहसत (उद); निसत बहसि (व्रज); नीसि तव अस (नाथ)।
१२।११ जनि; तनु (राम±); तन (नाग, काशी); जीनी÷, ही+(मन); नीज (पट); कत (नाथ)।
१३।७ सुहाई; सुनाई (परि, बाल, अल, राय, काशी, पट); जुडाइ (मन)।
१४।१ बाढ़ी; गाढ़ी (नाग)। ठाढ़ी; वाढी (दुलही, नाग, पट); गाढी (वाल); काढी (नाथ)।
१५।४ जे हित; जेहि तरु (वड़, परि, राय, नाथ±); × (अल); जेहि तर (राम, मन, काशी); जेहि तक (व्रज); जेही तुरु (नाथ÷)। रहे; × (अल); तर रहत (राय); रहिउ (व्रज); रहेउ (पट); रहैं (नाथ)।
१५।५ घटि; घटि नहि (रघु+, परि, काशी, नाथ); कटि (वाल); घाटि (अल); बढि (राय); घाटि न (व्रज)।
१६।८ बलबीरा; रनधीरा (अल, नाथ); बलधीरा (मन)।
१७।८ भारी; धारी (रघु, मन, उद, काशी)।
२२।६ असुर; अचर (दुलही, रघु, परि, अल, उद, पट)। खाई; साँई (राम±, बाल, अल); जाइ (व्रज)।
२३।१० रघुनायक; रघुनायकहि (राय, मन, काशी, व्रज, पट, नाथ)।
२४।४ प्रगट; सकल (बाल, अल); नीकट (पट)।
२४।५ हरहु; हनहुँ÷, हनहु±(राय); हतहु (मन, व्रज, पट)।
२४।६ पठइअ; पठवहु (अल, व्रज, पट)।
२४।११ बाँधि पुनि; बांधहु (अल, मन); बांध कै पुनी (नाथ)।
२८।१ सुनि निसिचरनारी; रजनीचरनारी (वड़); रजनीस्चर भारी (अल); शुनी नीश्चर नारी (पट); स्व नीस्चर नारी (नाथ)।
२८।५ जनु; जिमि (बड़, दुलही, राम, बाल, नाग)।
२८।७ संमत; संवत (बड़); सहित (बाल, राय, काशी+, व्रज, पट, नाथ); सबन्ह (अल); समेत (नाग); शमत्र÷, शह+? (मन); ?` (काशी÷)। मधुफल; मधुरफल (बाल, अल, राय, नाग, मन, काशी+, व्रज, पट, नाथ); फलु (उद); मधफल (काशी÷)।
२८।८ बरजइ; बरजन (दुलही, परि, अल, उद, व्रज, पट, नाथ); बरिजइ (नाग)।
२६।१ कि; न (अल, काशी, व्रज); शो (मन); को (पट)।
२६।३ प्रेम; प्रीति (राम, अल, नाग, नाथ)।

२६।८ जाई; आई (बाल, अल, नाथ)।
३०।६ दिवस निसि; राति दिनु (बड़, राम, बाल, अल, नाग, व्रज, नाथ)।
३१।४ हौं; मोहि (नाग, मन, व्रज, पट, नाथ)।
३१।७ तनु; तन (बाल, मन, काशी, व्रज); आन (राय); सम (अल, पट)।
३३।६ प्रभुताई; मनुसाई (बाल, पट, नाथ)।
३३।११ प्रभाव; प्रताप (बड़, बाल, राय, काशी, व्रज, नाथ)।
३४।८ बहु; सुर (बाल, पट)। सुर; सब (बाल)।
४५।५ छबि; मन (बड़, दुलही, राम, बाल, नाग, व्रज, पट, नाथ)।
४७।४ बसत; बसति (दुलही, राम±, नाग, काशी)।
४७।८ आवा; पावा (बाल, राय, व्रज, नाथ)।
४६।४ गह; √(दुलही, रघु, उद, पट); गहिं (अन्यत्र)।
५४।८ कठिन; विकट (बड़, बाल)।
५४।६ अंगद गद; √(दुलही, राम, राय±, नाग, व्रज+, काशी); अंगदा (मन÷); अंगद (उद, व्रज÷); अंगदधिमुषा (राय÷); अंगदादि (राय++, मन±, अन्यत्र)।
५४।१० निसठ सठ; कुमुद गव (बड़, रघु, परि, मन, उद, काशी)।
५६।३ कृपा; क्रीपाल (राम÷, मन)।
५६।७ लगि; √(बड़, रघु, परि, राय, मन, उद); लही (पट); जग (अन्यत्र)।
५६।१४ सरानल; सरासन (नाग, राय, काशी, नाथ); सरान (उद); सरन अनल; (व्रज); शरन अव (पट)।

षष्ठ सोपान (लंकाकांड)

मं दो [यह दोहा बड़, परि और राम में श्लोकों के अनंतर है।]
परमानु; परवाण (बड़); प्रस्मान (रघु, बाल); परवानु (राम); परिमान (मया); परवान; (मन, उद, व्रज, पट, नाथ)।
मं श्लो १।२ योगेंद्रं; योगींद्रं (बड़, रघु, परि, राम, मन, व्रज, पट, नाथ)।
१।४ कंदावदातं; कुन्दावदंतं (राम); कुंद्रावदातं (मया÷); कुद्यदातं (पट)।
२।४ शंकरं मन्मथारिं; कंदर्पहं शंकरम् (रघु+, परि); श्रीशंकरं शंकरं (पट)।
दो १।११ कछु; √(राम, बाल, व्रज); एक (अन्यत्र)।
१।१५ गिरिपादप; तरु सैल गन (रघु, परि, नाग, मन÷, उद); जे प्रवत (पट)।
२।१ ते; तेहि (बाल, मन÷); शो (मन+); तेह (व्रज); ⊙ (पट)।
३।१ मम लोक; हरिलोक (रघु, परि, नाग, उद); ͞ (व्रज,); भवसागर (नाथ)।
३।५ जिय; मन (बड़, बाल, व्रज, पट, नाथ)।
३।६ कपिन्ह; कपि (बड़, रघु, नाग, उद)।
४।६ प्रभु आयसु पाई; कछु बरनि न जाई (बड़, रघु, परि, नाग, उद)।
५।५ अरु; अन (बड़, परि, पट, नाथ); अनु (रघु+, राम, मन); अ (रघु÷, नाग

उद) ×(मया, अल)। कुरितु; √(राम, वाल, व्रज); ऋतुहि (वड़); ×(मया, अल); रितु (अन्यत्र)। कालगति; अकालगति (रघु+, परि); ×(मया, अल)।

६।१ निज बिकलता बिचारि; √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); व्याकुलता निज समुझि (अन्यत्र)।

६।६ जिव; जिय (रघु, वाल, मन); गति (पट, नाथ)।

७।६ नयन नीर; √(राम, वाल, व्रज, नाथ); लोचन बारि (अन्यत्र)।

७।१० रघुनाथहि; √(राम, वाल, पट, नाथ); रघुनाथपद (वड़); रघुनाथ कहुं (व्रज); रघुवीरपद (अन्यत्र)। अचल होइ अहिवात; √(वड़, राम, वाल, व्रज, पट, नाथ); मम अहिवात न जात (अन्यत्र)।

८।१० सब के बचन; वचन सवहि के (वड़, रघु, नाग, मन, उद); तात बचन सुनहु मम (व्रज, पट)।

१०।८ गुनगन; गंध्रप (वड़); गंधर्व (रघु, नाग); गंध्रव (मन÷, उद)।

१०।११ सोच न; न मन कछु (वड़, मन, व्रज); न कछु मन; (रघु, परि, वाल, नाग, उद); कछु नहि (नाथ)।

११।२ सिखर एक उतंग अति; सैल शृंग एक सुंदर; (वड़, रघु, परि, नाग, मन, उद)। परम रम्य; अति उतंग (वड़, रघु, परि, नाग, मन, उद)।

११।६ कृपा रूप गुन; करुणासील गुन (वड़, रघु, नाग, मन, उद); क्रीपासींधु (पट)।

११।१० धन्य ते नर एहि ध्यान जे; ते नर धन्य जे ध्यान एहि (वड़, रघु, नाग, मन, उद); धन्य ते नर ऐह धरनी मह (पट)।

१२।११ हनुमंत; मारुतसुत (वड़, रघु, नाग, मन, उद)। प्रिय; निज (वड़÷, रघु+, परि, व्रज, पट)।

१२।१४ अवलोकि प्रभु; विलोकि प्रभु (वड़, मन, व्रज, नाथ); बिलोकि पुनि (रघु, नाग, उद); वीलोकी कै (पट)।

१३।४ उपर; √(राम, वाल, व्रज, नाथ); रुचि (उद); ऐक (पट); रुचिर (अन्यत्र)। देख; केर (वाल, मन); करै (पट)।

१३।७ मधुर; √(राम, वाल, नाथ); वरस (व्रज); ⊙ (पट); सरस (अन्यत्र)।

१३।१० सब कें देखत महि परे; देषत सब कें परे महि (रघु, नाग, मन, उद)।

१४।४ परें; √(राम, नाथ); गिरें (वाल, पट); षसे (अन्यत्र)।

१४।८ हठ मन; √(राम, उद); मन उर (वड़÷); हठ उर (परि); जीव हठ (पट); ? (अन्यत्र)।

१५।१० मनुज बास सचराचर; प्रीती करहु रघुनाथ सौ (पट)।

१५।१० सचराचर; चर अचर मय (रघु, नाग, मन÷, उद)।

१६।२ कबि; सब (राम, नाथ)।

१६।६ बिधि; मिस (वड़, रघु, नाग+); मिसे (नाग÷); मिसि (मन, उद, व्रज)। कहेहु; कहहु (वड़); कहिहि (रघु, मन÷); कहिहु (मन+); कहहि (उद)।

१६।६ **करत बिनोद बहु;** जल्पेसि सकल निसि (बड़, रघु, नाग, मन, उद); करत बीनोद नीसी (पट)। **प्रगट;** भएं (बड़, रघु, नाग, मन+, उद); भऐउ (मन÷)।

१६।१० **लंकपति;** सुलंकपति (रघु, परि, नाग, मन÷, उद)।

१६।१२ **सत;** शिव (राम, बाल); सब÷, सम+(मन); तस (उद)।

१७।१ **प्रात जागे;** विचार किन्ह (नाग)।

१७।३ **उरबासी;** गुनरासी (बड़, रघु, नाग, मन); अनुरागी÷, अनुरासी+(उद)।

१७।३'२ √; सत्यसंध प्रभु सब उरबासीं (बड़, रघु, नाग, मन, उद)।

१७।८ **सन;** सँ (रघु, नाग, उद, पट)।

१७।६ **उठेउ;** चलेउ (बाल, मन)।

१८।३ **सो;** ⊙(बड़, राम, नाथ)।

१८।५ **उठाई;** उआई (रघु, नाग, मन÷, उद)।

१६।१० **सुमिरि मन;** सुमरि उर (बड़, पट); सभारि उर (रघु, नाग, मन); पसंरि उर (उद)।

२०।३ **पूजेहु;** पूजे (रघु, राम, नाग, व्रज, पट)।

२०।४ **सब राजा;** सुर राजा (बड़, रघु, नाग, मन, उद); भुवि राजा (बाल)।

२०।१० **आरत गिरा सुनत;** सुनतहि आरत बचन (बड़, रघु, नाग, मन, उद)।

२१।३ **ही;** है (बाल, मन+, व्रज, पट); नहि (नाग, नाथ); तुम्ह शो (मन÷)।

२१।४ **रहा;** हा (बड़, रघु, परि, राम÷, बाल, मन+++, उद); हौं÷, अह+, √++ (मन); हहा (व्रज); कहा (पट); अहा (नाथ)।

२१।१२ **बधिर न;** बहिर न (रघु, परि, नाग, उद, पट); बाधी नर (मन÷)।

२२।४ **सब;** √(राम, बाल, व्रज, नाथ); मैं (अन्यत्र)। **मैं;** सब (बड़, रघु, परि, नाग, मन, उद)।

२२।६ **देखी;** देषेउँ (बड़, परि, मन); देषिउं (रघु, नाग, उद); देषत (पट)।

२२।८ **महूँ;** हमहुं (परि, राम, बाल, नाथ); अबही (पट)।

२३।३ **अनुज;** √(परि, राम, बाल, पट, नाथ); बंधु (अन्यत्र)।

२३।४ **बूढ़ा;** मूढा (रघु, नाग, उद)।

२३।६ **सुनत बचन कह;** √(राम, बाल, मन+, नाथ); अश शुनी पुनी कह (पट); सुनि हसि बोलेउ (अन्यत्र)।

२३।८ **सुनि अस बचन सत्य;** को अस झूठ सुनै (रघु, परि, नाग); को अस मुढ सुनै (मन÷); को अस रुढ सुनै (उद); शुनी अश बचन झुठ (पट)।

२३।११ **सत्य नगरु कपि जारेउ;** अब जानेउं पुर दहेउ कपि (बड़, रघु, परि, नाग, उद); अब जानेउ कपी दहेउ पुर (मन)।

२३।१२ **फिरि न गएउ सुग्रीव पहिं;** गएउ न फिरि निज नाथ पहि (बड़, रघु, परि, नाग, मन, उद)।

२४।१२ **कहु;** √(राम, बाल, मन÷, पट, नाथ); सुनु (अन्यत्र)।

२४।१५ **जिमि;** जनु (मया, मन); जीव (पट)।

२५।३ **पूजेउँ अमित बार;** (राम, बाल, पट, नाथ); अमित बार पूजेउ (अन्यत्र)।

२७।३ बृथा; मृषा (वड़, मन, पट); मुधा (रघु, परि, मया+, नाग, उद); सुधा (मया÷); म्रिथा (नाथ)। अस होइहि; √(वड़, राम, पट, नाथ); ٦ (अन्यत्र)।
२७।५ सम; √(वड़, राम, पट, नाथ); इव (अन्यत्र)।
२८।२ सब; √(राम, पट); शठ (वाल, नाथ); जड (अन्यत्र)।
२८।१० अति हरष वहु; √(राम, वाल, पट, नाथ); महुं वार वहु (अन्यत्र)। बार; √(राम, वाल, पट, नाथ); हरषित (अन्यत्र)। गौरीस; √(राम, वाल, पट, नाथ); गिरीस (अन्यत्र)।
२९।३ जरठ; जठर (राम÷, वाल, मया, पट, नाथ)।
२९।६ निज मुख निज गुन; निज गुन निज मुख (वड़, मन, व्रज)।
२९।१० इंद्रजालि; √(राम, बाल, पट, नाथ); बाजीगर (अन्यत्र)।
२९।१२ कहावहिँ; √(राम, वाल, मन+, पट, नाथ); सराहिअहि (अन्यत्र)।
३०।३ अस; √(राम, वाल, पट, नाथ); इमि (अन्यत्र)।
३०।१० तव जुवतिन्ह; √(राम, वाल, पट, नाथ); मंदोदरी (अन्यत्र)।
३१।१ नहि कछु; √(राम, बाल, पट, नाथ); ٦ (अन्यत्र)।
३१।७ अधम; √(राम, वाल, पट, नाथ); तुरत (मया); पुत (मन÷); पोच (नाग, उद); पोत (अन्यत्र)।
३१।८ बल प्रताप बुधि तेज; √(राम, बाल, पट, नाथ); बुधि बल तेज प्रताप (अन्यत्र)।
३१।९ जानि; √(राम, बाल, पट, नाथ); बिचारि (अन्यत्र)।
३१।१० निसि; √(राम, वाल, मन+, पट, नाथ); अनु (अन्यत्र)।
३२।५ सँभारि उठा दसकंधर; √(राम, बाल, पट, नाथ); दसानन उठेउ सभारी (अन्यत्र)। अतिसुंदर; √(राम, बाल, पट, नाथ); देषी कपी भागे (मन÷); षट चारी (मन±, अन्यत्र)।
३२।६ तेहि लै; बहु कर (वड़, रघु, परि, मया, नाग, उद)। सिरन्हि; करन्हि (रघु, परि, नाग, मन÷, व्रज); रन्हि÷, √+(मया)।
३२।११ तरकि पवनसुत कर गहेउ; कूदि गहे कर पवनसुत (रघु, परि, नाग, मन, उद, व्रज)।
३२।१३-१४ √; √(राम, पट, नाथ); ⊙ (बाल); उहां कहत दसकंध रिसाई धरि मारहु कपि भजि जन जाई (अन्यत्र)।
३३।२'१ √; √(राम, बाल, मन+, पट, नाथ); महिअ कीस करि फेरि दोहाई (अन्यत्र)।
३३।६ खल; √(राम, वाल, पट, नाथ); निसि (अन्यत्र)।
३४।३ तव; √(वड़, राम, बाल, नाथ); इह (व्रज); तुव (पट); यह (अन्यत्र)।
३४।८ समुझि रामप्रताप; √(राम, बाल, पट); रामप्रताप समुझि (मन); सुमिरि राम प्रताप (नाथ); रामप्रताप सुमिरि (अन्यत्र)।
३५।१ कपि के परचारे; √(राम, बाल, पट); जुवराज प्रचारे (अन्यत्र)।
३५।१५ पुलक सरीर नयन जल; √(राम, बाल, पट, नाथ); सजल सुलोचन पुलक तन (अन्यत्र)।
३५।१६ दसकंधर; √(राम, बाल, पट, नाथ); दसमौलि तब (अन्यत्र)।
३५।१७ रावनहि; √(राम, बाल, पट, नाथ÷) रावंनहि तब (नाथ+); निसाचरहि (अन्यत्र)।

३६।३ केर यह; √(राम, बाल); क अैसन (अल); केर अस (अन्यत्र)।
३६।६ सकल पुर; √(राम, बाल, पट, नाथ); नगरु सबु (अन्यत्र)।
३६।८ जनि; √(राम, बाल, पट, नाथ); जीनी (मन); पति (उद); मति (अन्यत्र)।
३६।१० भूपाला; √(राम, बाल, पट, नाथ); महिपाला (अन्यत्र)। अतुल; √(राम, बाल, पट, नाथ); गर्ब (अल); विपुल (अन्यत्र)।
३७।१० रघुनाथ; √(राम, बाल, पट, नाथ); रघुपति (वड़); × (मया); रघुपतिहि (अन्यत्र)
३८।५ कौतुक अति; √(राम, बाल); कौतुक एक (पट, नाथ); ߀ (अन्यत्र)।
३८।१२ तेहि परिहरि गुन आए; √(राम, बाल, पट, नाथ); आए गुन तजि रावनहि (अन्यत्र)।
३९।११ जय लछिमन; √(राम, बाल, पट, नाथ); भ्राता सहित (अन्यत्र)।
३९।१२ सिंघनाद; √(वड़, राम, बाल, पट, नाथ); केहरिनाद (अन्यत्र)।
४०।८ परसु; √(वड़, राम, बाल, पट, नाथ); परिघ (अन्यत्र)। परिघ; √(वड़, राम, बाल, मन+, पट, नाथ); परसु (अन्यत्र)।
४१।६ गर्जहिँ; तर्जहि (रघु, मया, अल, नाग, मन, उद, व्रज)। तर्जहिँ; गर्जहि (रघु, मया, अल, नाग, मन, उद, व्रज।)
४१।१३ निसिचर गहि; गहि रजनिचर (वड़, रघु, मया, नाग, मन, उद); गहि निसिचर (व्रज)।
४२।१ सुभट; निकट (रघु, मया, अल, नाग, मन, उद, व्रज)।
४२।३ निसाचर; तमीचर (वड़, नाग, व्रज); तिमीर (रघु); तीमीनीशीचर (मन÷); तमचर (उद)।
४२।४ बालक आतुर; आरत वालक (वड़, रघु, मया, नाग, मन, व्रज); वालक आरत (अल); आरत व्याकुल भा (उद); ߀ (नाथ)।
४२।६ तेहि; √(परि, राम, नाथ); तेइँ (बाल); ते (पट); जव (अन्यत्र)।
४२।७ सो मैँ हतब; √(परि, राम, बाल, पट, नाथ); तेहि मारिहौँ (अन्यत्र)।
४२।९ डेराने; सकाने (रघु, मया, नाग, उद, व्रज); रीशाने (मन)। चले; फिरे (रघु, मया, नाग, मन÷, उद, व्रज±); फिरि (व्रज÷)। सुभट; बीर (रघु, मया, नाग, मन÷, उद, व्रज); सकल (अल)।
४२।१२ त्रिसूलन्हि; √(परि, राम, बाल, मन+, पट, नाथ); प्रचंडन्हि (अन्यत्र)।
४३।३ बिकल; √(परि, राम, अल, पट, नाथ); ⊙ (बाल); विचल (अन्यत्र)।
४३।९ सुना; सुनेउ कि (वड़, रघु, नाग, मन÷, उद); सुनेतउ (मया÷); सुना की (अल); सुनेउ (माया+, मन+, नाथ); सुनेऊ (व्रज)।
४३।१० रन; √(परि, राम, बाल); गएउ (पट, नाथ); चढ़ा (अन्यत्र)। कपि खेल; वघमेल (पट); वगमेल (नाथ)।
४४।२ द्वौ; √(परि, राम); दोउ (बाल, मन+, पट, नाथ); तब (मन÷, अन्यत्र)।
४४।७ गर्जि; √(परि, राम, बाल, पट, नाथ); कूदि (अन्यत्र)।
४४।९ सोँ मर्दहिँ; √(परि, राम, बाल, पट, नाथ); सब मर्दहि (वड़, अल); सन मर्दि करि (अन्यत्र)।

४४।१० ते; तेइ (रघु, मया, नाग, मन, व्रज)।

४५।६ अस प्रभु सुनि; ✓(परि, राम, नाथ); अस प्रभु पुनि (बाल); अस प्रभु (अल); अश प्रभु शुजीय (पट); सुनि अस प्रभु (अन्यत्र)। न; जानि (अल); ⊙ (पट)।

४५।१० बिगतश्रम; ✓(परि, राम, बाल, पट, नाथ); प्रयास बिनु (अन्यत्र)।

४६।६ लरत; ✓(राम, बाल, पट, नाथ); रहि (रघु÷); भिरहि (व्रज) लरहि (रघु+, अन्यत्र)।

४६।७ महाबीर निसिचर; बीर तमीचर (बड़, रघु, मया, उद, व्रज); बिचरत निसिचर (नाग, मन)। सब अति; ✓(बड़, रघु, मया, नाग, उद, व्रज); शम अथी÷; शभ अति+ (मन)।

४६।८ कौतुक करत; ✓(परि, राम, बाल, अल, पट, नाथ); बिबिध प्रकार (अन्यत्र)। लरत; भिरत (बड़, रघु, नाग, मन, उद); फिरत (मया); करत (व्रज)।

४६।१३ देखइ; ✓(राम±, बाल, मन+); देषहि (परि, राम÷, पट, नाथ); देखत (अल, व्रज); देष तव (मन÷, अन्यत्र)।

४७।१ सकल; महु सब (बड़); यह सबु (रघु, नाग); एह सचु÷, एह सबु+ (मया); यह सब (मन, उद); इह सब (व्रज)। रघुनायक; राम बिसु (बड़, रघु, नाग); रामु जब (मया); राम प्रभु (मन, उद, व्रज)।

४७।४ संसय; दुष सब (रघु, मया, अल, नाग, मन, उद); सब दुष (व्रज)।

४७।५ हरषि; ✓(परि, राम, बाल, नाथ); बेगि (बड़); कपि (व्रज); ⊙ (पट); कोपि (अन्यत्र)।

४७।६ कछु मारे कछु घायल; ✓(परि, राम, पट, नाथ); मारे कछु घायल कछु (बाल); कछु घायल कछु रन परे (अन्यत्र)।

४७।१० भालु बलीमुख; ✓(परि, राम, बाल, नाथ); मर्कट भालु कपि (व्रज); भालु कपीमुष (पट); मर्कट भालु भट (अन्यत्र)।

४८।३ सचिव; ✓(परि, राम, बाल, पट, नाथ); बीर (व्रज); सुभट (अन्यत्र)।

४८।१२ सिव बिरंचि जेहि सेवहिँ; जेहि सेवहि सिव कमलभव (बड़, रघु, परि, मया, नाग, मन÷, उद); जेहि सेवहिं सिव सकल भव (अल); जा कहुं सेवहि कमल भव (व्रज)।

४९।४ कृपानिधाना; ✓(परि, राम, बाल, व्रज, पट, नाथ); श्रीभगवाना (अन्यत्र)।

४९।१६ उतरयो; ✓(परि, राम); उतरे (बाल); उतरेउ (पट, नाथ); उतरि (अन्यत्र)। बीर दुर्ग तें; ✓(परि, राम, पट, नाथ); बानर दुर्ग ते (बाल); दुर्ग ते बीर बर (अन्यत्र)।

५०।४ क्रोध; कोपि (बड़, मन, उद, व्रज); कोप (रघु, मया, अल, नाग)।

५०।७ जहँ तहँ भागि चले; ✓(परि, राम, बाल, पट, नाथ); भागे भय व्याकुल (अन्यत्र)।

५०।६ दस दस सर सब मारेसि; ✓(परि, राम, बाल, नाथ); दस दस शर प्रभु मारेशी (पट); मारेसि दस दस बिसिष सब (अन्यत्र)।

५०।१० करि गर्जा; ✓(परि, राम, बाल, पट, नाथ); गर्जत भए (अन्यत्र)। बलधीर; ✓(परि, राम, अल, पट, नाथ); महीधर (अन्यत्र)।

५१।२ सैल एक; ✓(परि, राम, बाल, पट, नाथ); राम समीप (अन्यत्र)।

५१।७ प्रताप; प्रभाउ (रघु, मया, अल, नाग, मन÷, उद, व्रज)।

५१।१० निसिचर; √(परि, राम, बाल, पट, नाथ); रजनीस्चर (अल); रजनिचर (अन्यत्र)।
५२।६ मागि; मागेउ (बड़, रघु, नाग, मन÷, उद, व्रज); मगिउ÷, मागउ+(मया); ⊙ (अल); मांगिउ (मन+)।
५२।१० क्रुद्ध होइ;√(राम, बाल, पट, नाथ); सकोप अति (अन्यत्र)।
५३।६ रुधिर गाढ़ भरि भरि जम्यो; √(परि, राम, बाल, अल, पट, नाथ); जम्यो गाढ भरि भरि रुधिरु (अन्यत्र)।
५३।१० जनु; √(राम, बाल, अल, पट, नाथ); जिडि (उद); जिमि (अन्यत्र)।
५४।१० जगदाधार; जगदाधारन (अल)। सेष; √(परि, राम, बाल, मन+, पट); ⊙ (अल); सो (नाथ); अनंत (अन्यत्र)। उठइ; उठै न (रघु, व्रज, पट); उठइ डारि (बाल); उदै (मया); उठइ बहुरि (नाथ)।
५५।६ रामपदारबिंद सिरु;√(परि, राम, बाल, पट, नाथ); रघुपति चरन सरोज सिरु (अन्यत्र)।
५६।५ मृषा; √(बड़, परि, राम, बाल, नाथ); सब मीथ्या (अल); बृथा (अन्यत्र)।
५६।७ मैं तैं मोर मूढ़ता; √(राम, बाल, पट, नाथ); अहंकार ममता सब (अल); अहंकार ममता मद (अन्यत्र)।
५८।२ कपि; √(राम, बाल, पट, नाथ); प्रभु (अन्यत्र)।
५८।३ कपि; सो (बड़, रघु, मया, नाग, मन, उद, व्रज)।
५८।१० सायक मारेउ; सर कपि मारेउ (बड़); सर तकि मारेउ कपि (रघु, मया÷, मन÷, नाग, उद); सर तकि मारेउ (मया+, मन+, व्रज)।
५९।२ तब; √(राम, बाल, पट, नाथ); उठि (अन्यत्र)।
६०।२ समास; संछेप (रघु, मया, नाग, मन, उद, व्रज)।
६०।८ प्रभाव; प्रताप (बाल, अल, व्रज, पट, नाथ)।
६०।९ प्रभु; √(राम, बाल, पट, नाथ); गोसाइँ (अन्यत्र)।
६०।१० √; √(राम, बाल, पट, नाथ); भरत हरषि तब आएसु दएऊ। पद सिरु नाइ चलत कपि भएऊ। (अन्यत्र)।
६०।१२ मन महु जात सराहत; √(परि, राम, बाल, पट); जात सराहत मनहि मन (अन्यत्र)।
६१।१६ प्रभुप्रलाप; √(परि, राम, पट, नाथ); प्रभुबिलाप (अन्यत्र)।
६२।६ आवा; √(परि, राम, बाल, पट, नाथ); गएऊ (अन्यत्र)। बिबिध जतन करि ताहि जगावा;√(परि, राम, बाल, पट, नाथ); करि बहु जतन जगावत भएऊ (अन्यत्र)।
६३।७ अंक; नयन (बड़, रघु, नाग, मन, उद)।
६३।६ सुमिरत; √(परि, राम, बाल); शुमरी तव (पट); सुमिन तब÷, सुमिर तब+(नाथ); सुमिरि मन (अन्यत्र)।
६४।३ आएउ; √(राम, बाल, मन, पट); आवा (नाथ); गएऊ (अन्यत्र)।
६४।३/२ √; पद गहि नाम कहत अस भयऊ (बड़, अल, मन); पद गहि नामु कहत निज भएऊ (रघु, मया, नाग, व्रज); पद गहि नाम निज कहत भएऊ (उद)।
६४।६ तैं; √(राम, बाल, अल, पट, नाथ); तुम्ह (अन्यत्र)।

६५।१ चला; √(वड़, राम, वाल, पट, नाथ); फिरा (अन्यत्र)।
६५।११ मुरुछित; √(राम, वाल, पट, नाथ); मुर्छेहनि (अल); धाय वस (अन्यत्र)।
६६।५ सुग्रीवहु; √(राम, वाल, पट, नाथ); कपिराजहु (अन्यत्र)।
६६।७ गहि भूमि; √(राम, वाल, पट); तेहि धरनि (परि); गहि धरनि (मया, अल, नाथ); धरि धरनि (अन्यत्र)।
६६।८/२ √; √(राम, वाल, अल, पट, नाथ); जय जय कारुनीक भगवाना (अन्यत्र)।
६६।९ काटे जिय; √(परि, वाल, पट, नाथ); काटे सो (वड़); काटेसि जिय (राम); काटेउ सो (अल); काटे सोइ (अन्यत्र)।
६६।१२ बार; √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); बार सो (वड़); बार जो (अन्यत्र)।
६७।६ सब; √(वड़, राम, वाल, पट, नाथ); रन (अन्यत्र)।
६७।९ सुग्रीव बिभीषन अनुज; √ (राम, वाल, अल, पट, नाथ); सौमित्रि कपीस तुम्ह सकल (अन्यत्र)।
६८।१ साजि; √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); बिसिष (अन्यत्र)। अरिदल दलन; √(राम, वाल, पट, नाथ); मृगपतिठवनि (अन्यत्र)।
६८।४ जहँ तहँ; √(राम); जहाँ तहाँ (वाल, अल, व्रज, पट, नाथ); अति जब (अन्यत्र)। बिपुल; √(राम, अल, व्रज, पट, नाथ); ⊙(वाल); निसित (अन्यत्र)।
६८।७ जलद; √(राम, वाल, अल, व्रज, पट, नाथ); घनद (मया); वनद (अन्यत्र)।
६८।१० रघुबीर निषंग; √(राम, वाल, अल, पट, नाथ); रघुपति के त्रोन (अन्यत्र)।
६९।१ हति; √(राम, वाल, नाथ); हनी (वड़); हते (अल, नाग, मन); हरी (पट); हती (अन्यत्र)। छन; √(राम, वाल, पट); निमिषि (अल, नाग, मन); निमष (उद, व्रज); छिनु (नाथ); निमिष (अन्यत्र)। माझ; √(राम); माह (वाल, पट, नाथ); मह (अल, मन, व्रज); मुहुं (नाग); महु (अन्यत्र)।
६९।२ भा अति; √(राम, वाल, अल, नाथ); भए (उद); भा वल (पट); भएउ (अन्यत्र)। क्रुद्ध; क्रोध (अल, मन, उद, पट, नाथ)। महा; √(राम, वाल, अल, पट, नाथ); दारुन (अन्यत्र)।
६९।६ जिमि; जनु (रघु, परि, मया, नाग, मन, उद, व्रज)।
६९।८ कपि; √(राम, वाल, अल, पट, नाथ); भट (अन्यत्र)।
६९।९ महानाद करि गर्जा; √(राम, वाल, पट, नाथ); गर्जत धाएउ नाद करि (अल); गर्जत धाएउ बेग अति (अन्यत्र)।
७०।१३ घोर अति; √(परि, राम, वाल, अल, पट, नाथ); अती घोर तव (मन); अति घोर तर (अन्यत्र)।
७०।१४ त्रासित; √(परि, राम, वाल, अल, पट, नाथ); त्रसित सब (अन्यत्र)।
७१।३ मुख सन्मुख; सन्मुख सो (रघु); सन्मुख (व्रज)।
७१।९ सुर; √(राम, वाल, पट, नाथ); नभ (अन्यत्र)। अस्तुति करहिँ सुमन बहु; √(राम, वाल, पट, नाथ); अस्तुति करहिं सुमन (अल); जय जय करि प्रसून सुर (अन्यत्र)।

७१।१२/१ √; बेगि हतौहु षलहि मुनिब्रर कह गए (रघु, नाग, मन+); ⊙ (अल); बेगि हतहु खल मुनि कहि गएउ (मया, व्रज); बेगि हतहु षलहि मुनि जनकहि गऐ (मन÷); कहि विमल जस मनिवर गए (उद)।

७१।१७ मज्ञाकर; √(राम, पट); मलायक (बाल); मलायतन (अन्यत्र)।

७२।३ सुकृत; √(राम, बाल, पट, नाथ); धर्म (अन्यत्र)।

७२।१२ मायामय; √(बड़, राम, पट, नाथ); मम्रा धरि (अल); मम्रा रची (मन); माया रचित (अन्यत्र)। गएउ; पुनि गयउ (बाल)।

७२।१३ अट्टहास करि; √(राम, बाल, नाथ); अपर हास करि (अल); प्रलऐकाल जीमी (मन); श्रींद हाश करी (पट); प्रलयपयोद जिमि (अन्यत्र)।

७३।३ दस दिसि रहे बान नभ; √(राम); दिशि दिशि रहे बाँन नभ (वाल); दहं दिस नभ बानन्ह नभ (अल); दह दीश रहे वान नभ (पट); दहं दिस रहेउ वान नभ (नाथ); रहे दसहु दिसि सायक (अन्यत्र)।

७३।४ सुनिअ धुनि; √(राम, वाल, पट, नाथ); मारुसुनि (बड़, अल); सुनहि कपि (अन्यत्र)।

७३।१४ गिरिजा जासु; √(राम, वाल, पट, नाथ); षगपति जाकर (अन्यत्र)।

७३।१५ सो कि बंध तर आवै; √(राम, बाल, पट, नाथ); सो प्रभु आव कि बंधन (नाग, मन); सो प्रभु आव कि बंध तर (अन्यत्र)।

७४।५ सठ; √(राम, वाल, मया, अल, पट, नाथ); जड (अन्यत्र)। अधम; √(राम, वाल, अल, पट, नाथ); पतित (अन्यत्र)।

७४।६ तरल; तिव्र (रघु, परि, मन+); तिग्म (मया, नाग, उद); तोवर (अल); तीग (मन÷); तग्य (व्रज)।

७४।७ भूमि; √(बड़, राम±, पट, नाथ); ⊙ (राम÷); धरनि (अन्यत्र)।

७४।११-१२ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); पन्नगारि षाए सकल छन महु व्याल बरूथ भए विगत माया तुरत हरषे बानर जूथ (अन्यत्र)।

७५।३ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); सो सुधि पाइ बिभीषनु कहई सुनु प्रभु समाचार अस अहई (अन्यत्र)।

७५।५ पुनि; √(राम, बाल); रथ÷, रप+ (मया); सो (पट); रिपु (अन्यत्र)।

७५।१० सुग्रीव; √(राम, बाल, पट, नाथ); कपिराज (अन्यत्र)।

७५।१५ रघुपति चरन नाइ सिरु; √(राम, बाल, पट, नाथ); वंदि रामपद कमल जुग (अन्यत्र)।

७५।१६ सुभट; रिषभ (रघु, परि)।

७६।२ कीन्ह कपिन्ह सब; √(राम, वाल, पट, नाथ); तब कीसन्ह कृत (अन्यत्र)।

७६।१४ √; एहि पापिहि मै बहुंत षेलावा अव बध उचित कपिन्ह भय पावा (बड़, रघु, परि, अल, उद, व्रज)।

७६।१८ धन्य तव जननी; सक्रजित मातु तव (बड़, रघु, परि, अल, उद, व्रज)।

७७।३ श्रीरघुनाथ; श्रीरघुवीर (रघु, परि, अल, उद, व्रज)।

७७।६ दसकंठ विविध; √(राम); दसकंधर विविध (बाल, पट); दसकंध विविधि (नाथ); लंकेस अनेक (अन्यत्र)।
७७।१० जगत; √(राम, बाल, पट, नाथ); प्रचंड (अल); प्रपंच (अन्यत्र)।
७८।१२ बोलहिँ; √(राम, बाल, पट, नाथ); रोवहि (अन्यत्र)।
७९।७ मरुत; पवनु (रघु, परि, मया, अल, नाग, मन, उद, व्रज)।
७९।१६ रामहि; √(बाल, पट); रामहित (राम, नाथ); रघुवीर (अल); रघुपतिहि (अन्यत्र)।
८०।६ सम जम; संजम (वड़, बाल, मन+, व्रज, नाथ); सम दम (अल, पट)।
८०।१६ दसकंधर; √(राम, बाल, पट, नाथ); दसकंध भट (अल); दसकंठ भट (अन्यत्र)।
८१।१७ बिचलत देखेसि; √(राम, बाल, पट, नाथ); विचल विलोकि तेहि (अन्यत्र)।
८१।१८ रथ चढ़ि चलेउ दसानन; √(राम, बाल, पट, नाथ); चलेउ दसानन कोपि तब (अन्यत्र)।
८२।१३ निज दल बिकल देखि; √(राम, बाल, नाथ); नीज दल बीकल बीलोकी (पट); विचल देषि अनीक (अन्यत्र)। कटि कसि; √(राम); अति कटि (बाल); कटी (पट); कपि कसि (नाथ); निज कटि (अन्यत्र)।
८२।१४ क्रुद्ध होइ; √(राम, बाल, पट); सकोप (नाग); क्रोध करि (नाथ); सरोष तब (अन्यत्र)।
८३।१३ देखि; √(राम, बाल, पट, नाथ); देषित (अन्यत्र)।
८३।१४ कपिहि हन्यो तेहिं; √(राम, बाल, पट, नाथ); तेहिं उर महुं हतेउ (अन्यत्र)।
८४।८.१ √; √(राम, बाल, पट, नाथ); धरि सर चाप चलत पुनि भए (अन्यत्र)।
८४।८.२ सन्मुख; √(राम, बाल, पट, नाथ); समीप (अन्यत्र)।
८४।१४ रामविरोधी विजय चह; √(राम, बाल, पट, नाथ); जय चाहत रघुपतिविमुष (अन्यत्र)।
८५।३ नाथ; √(राम, बाल, पट, नाथ); देव (अन्यत्र)।
८५।४ अंगद; अंग (रघु, राम)।
८५।१३ जज्ञ; √(राम, बाल, पट, नाथ); मष (अन्यत्र)।
८५।१४ निसाचर; √(राम, बाल, पट, नाथ); लंकपति (अन्यत्र)।
८६।५ अस्तुति; √(राम, बाल, पट, नाथ); विनती (अन्यत्र)।
८६।१५ सोभा देखि हरषि सुर; √(राम, बाल, पट, नाथ); हरषे देव बिलोकि छवि (अन्यत्र)।
८६।१६ √; √(राम, बाल, पट, नाथ); जय जय प्रभु गुन ज्ञान बल धाम हरन महि भार (अन्यत्र)।
८८।१२ भटन्ह ढहावहीँ; √(राम, बाल); भट रन गावही (पट); भटन्हि जगावही (नाथ); सुरपुर पावहीँ (अन्यत्र)।
८८।१३ √; √(राम, बाल, पट, नाथ); निसिचरवरूथ बिमर्दि गर्जहिं भालु कपि दर्पित भए (अन्यत्र)।
८८।१५ रावन हृदय विचारा; √(राम, बाल, पट); रावन हीदंऐ सोच भौ (नाथ); हृदय विचारेउ दसवदन (अन्यत्र)।
८९।७.२ √; √(राम, बाल, पट, नाथ); सब काहूँ मानी करि साची (अन्यत्र)।

८६।८/२ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); वहु अंगद लछिमन कपि धनी (अन्यत्र)।
८६।९ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); वहु वालिसुत लछिमन कपीस ब्रिलोकि मर्कट अपडरे (अन्यत्र)।
८६।१२ मर्कट; √(राम, बाल, पट, नाथ); वनचर (व्रज); वानर (अन्यत्र)।
९०।२ धावा; √(राम, वाल, नाथ); आवा (अन्यत्र)।
९०।४ लोकप; लोकपाल (राम, वाल, मन); लोक प्रजा (व्रज); लोकप देव (पट); लोकपति (नाथ)।
९०।५ विराध; √(राम, बाल, पट, नाथ); कबंध (अन्यत्र)।
९०।६ विहसि बचन कह; √(राम, वाल, पट, नाथ); कहेउ विहसि अस (मया); कहेउ विहसि तव (अन्यत्र)।
९०।१५ विहसा; √(राम, वाल, पट, नाथ); विहसि कह (अन्यत्र)।
९१।३ पावकसर; √(राम, वाल, पट, नाथ); अनलवान (अन्यत्र)।
९१।४ चलाई; √(राम, वाल, पट, नाथ); पठाई (अन्यत्र)।
९१।१३ तानेउ चाप; √(राम, बाल, पट, नाथ); तानि सरासन (अन्यत्र)।
९३।४ दिनकर; √(राम, वाल, मन, पट, नाथ); दिनमनि (अन्यत्र)।
९३।८ सुग्रीव; √(राम, वाल, मन, पट, नाथ); हनुमान (अन्यत्र)।
९३।१० बेधे; भेदे (रघु, परि, मया, नाग, मन÷, पट)।
९३।११ कर; √(राम, बाल, पट, नाथ); गहि (अन्यत्र)। गहि; √(राम, बाल, नाथ); वहु (मन); ⊙ (पट); कर (अन्यत्र)।
९३।१३ दसकंठ क्रुद्ध होइ; √(राम, वाल, पट, नाथ); रावन अति कोप करि (अन्यत्र)।
९४।१ अति घोरा; √(राम, बाल, पट, नाथ); षर धारा (अन्यत्र)। भंजन पन मोरा; √ (राम, वाल, पट, नाथ); हरं विरिञ्चि सभारा (अन्यत्र)।]
९४।१२ दर्पित; √(राम, वाल, पट, नाथ); गर्जित (व्रज); गर्वित (अन्यत्र)।
९४।१४/१ सो अव भिरत काल ज्यों; √(राम, वाल, पट, नाथ); भिरत सो काल समान अब (अन्यत्र)।
९५।४ कपि; √(राम, बाल, पट, नाथ); तेहि (अन्यत्र)।
९५।१३/१ तव रघुवीर पचारे; √(राम, बाल, पट, नाथ); रामप्रताप सभारि तब (व्रज); राम पचारे वीर तव (अन्यत्र)।
९५।१४ देखि; √(राम, वाल, पट, नाथ); विलोकि (अन्यत्र)।
९६।३ जहँ तहँ भजे भालु अरु; √(राम, बाल, पट, नाथ); भागे भालु विकट भट (अन्यत्र)।
९६।४ भागे बानर; √(राम, बाल, पट, नाथ); चले वलीमुख (अन्यत्र)।
९६।१४ सारंग; √(राम, वाल, पट); सरासन (नाथ); विसिषासन (अन्यत्र)।
९७।५ अस्तुति करत देव तेहिँ; √(राम); अस्तुति करत देवतन्हि (वाल, पट, नाथ); करत प्रसंसा सुर तेहि (अन्यत्र)।
९७।१३ रावन; √(राम, वाल, पट, नाथ); लंकेस (अन्यत्र)।
९७।१४ बहुत बढ़े पुनि जिमि तीरथ; √(राम, वाल, पट, नाथ); भए बहोरि जिमि कर्म मूढ़ (अन्यत्र)।

९८।३/२ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); द्रुविद कपीस पनस बलसीला (अन्यत्र)।

९८।७'१ √; √(राम) रुधिर देषि विषाद जिय्र भारी (बाल); शो देषे बीषाद अती भारी (पट); रुधिर देषि विषाद अति भारी (नाथ); रुधिरु बिलोकि सकोप सुरारी (अन्यत्र)।

९८।२० मुरुछा बिगत; √(राम, बाल, पट, नाथ); गै मुरुछा तब (अन्यत्र)।

१००।३ सिराति न राती; √(बाल, पट, नाथ); सिराती÷, न राति सिराती±(राम); बिहाति न राती (अन्यत्र)।

१०१।२५ ता के गुन गन कछु कहे; √(राम, वाल, पट, नाथ); कहे तासु गुन गन कछुक (अन्यत्र)।

१०१।२६ जिमि निज वल अनुरूप तें; √(राम, बाल, पट, नाथ); निज पौरुष अनुसार जिमि (अन्यत्र)।

१०२।१ √; काटेसिर पुनि होहिं अपारा भोग करत जिमि बाढहि मारा (√राम, बाल, पट)।

१०२।५ पियूष; √(राम, वाल, पट, नाथ); सुधा (अन्यत्र)।

१०२।७ असुभ; √(वड़, राम, बाल, पट, नाथ); असगुन (अन्यत्र)। लागे; √(वड़, राम, वाल, पट, नाथ); जगे (मया); लगे (अन्यत्र)।

१०२।११ रुदहिँ; √(राम, वाल, नाथ); श्रवहि (अन्यत्र)।

१०२।१३ नभ सुर; √(राम, वाल, पट, नाथ); सुर सुनि (नाग); सुमुति (उद); सुर मुनि (अन्यत्र)।

१०२।१५ खैँचि सरासन स्रवन; √(राम, वाल, पट, नाथ); आकरषेउ धनु कान (अन्यत्र)।

१०३।६ धरनि परेउ; √(राम, वाल, पट, नाथ); परेउ बीरु (अन्यत्र)।

१०३।१४ सुमन बरषहिँ हरष संकुल; √(राम, वाल, पट, नाथ); सिद्ध मुनि गंधर्ब हरषे (अन्यत्र)।

१०३।२१ भालु कीस सब हरषे; √(राम, वाल, पट, नाथ); हरषे बानर भालु कपि (मया); हरषे बानर भालु सब (अन्यत्र)।

१०४।३ कच नहि बपुष; √(राम, वाल, पट, नाथ); चिकुर न सरीर (अन्यत्र)।

१०४।१९ जोगिवृंद दुर्लभ; √(वड़, राम, बाल, पट, नाथ); सुर दुर्लभ जो परम (व्रज); मुनि दुर्लभ जो परम (अन्यत्र)।

१०५।४ देखी; √(राम, वाल, पट, नाथ); बिलोकि (अन्यत्र)।

१०५।५ बिलोकि; √(राम, बाल, पट); देषिअति (नाथ); देषत (अन्यत्र)। तब प्रभु अनुजहि; √(राम, बाल, पट, नाथ); राम अनुज कहु (अन्यत्र)।

१०५।६ तेहि बहु बिधि; √(राम, बाल, पट, नाथ); जाइ ताहि (अन्यत्र)।

१०५।९ मंदोदरी आदि; √(राम, बाल); मदोदरी आदि रानी (पट); मंदोदरि त्रिया आदि (नाथ); मयतनयादिक नारि (अन्यत्र)।

१०५।१० रघुपति; √(राम, वाल, पट, नाथ); रघुबीर (अन्यत्र)।

१०६।६ सारि; √(राम, बाल, पट, नाथ); कीन्ह (अन्यत्र)।

१०६।१३ प्रभु के बचन श्रवन सुनि; √(राम, बाल, पट, नाथ); सुनत राम के बचन मृदु (अन्यत्र)।

१०६।१४ सिर नावहिँ; √(राम, वाल, पट, नाथ); विलोकि मुष (अन्यत्र)।
१०७।४ पुनि; √(राम, वाल, पट); ⊙(नाथ); तिन्ह (अन्यत्र)।
१०७।१४ कोसलपति; √(राम, बाल, पट, नाथ); रघुबंसमनि (अन्यत्र)।
१०८।३ संदेसु भानुकुल; √(राम, बाल, व्रज, पट, नाथ); बानी पतंगकुल (अन्यत्र)।
१०८।६/२ √; √(राम, बाल, पट, नाथ); सादर तिन्ह सीतहि अन्हवावा (अन्यत्र)।
१०८।७ बहु प्रकार; √(राम, बाल, पट, नाथ); दिव्य वसन (अन्यत्र)।
१०८।१२ रघुनाथ; √(राम, नाथ); रघुबीर (अन्यत्र)।
१०८।१५ करुनानिधि; √(राम, बाल, पट, नाथ); करुनायतन (अन्यत्र)।
१०९।५ पावक प्रगटि; √(राम, बाल, नाथ); पावक प्रवल (पट); प्रगटि कृसानु (अन्यत्र)।
१०९।६ पावक प्रबल देखि; √(राम, वाल, पट); पावक प्रगट देषि (नाथ); प्रवल अनल विलोकि (अन्यत्र)।
१०९।१३ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); तब अनल भूसुर रूप कर गहि सत्य श्री श्रुति विदित जो (अन्यत्र)।
१०९।१७ सुर; √(राम, बाल, पट, नाथ); विबुध (अन्यत्र)।
१०९।१८ सुरबधू; √(राम, बाल, पट, नाथ); अपछरा (अन्यत्र)।
१०९।१९ जनकसुता; √(राम, बाल, पट, नाथ); श्रीजानकी (अन्यत्र)।
१०९।२० देखि; √(राम, बाल, पट, नाथ); देषत (अन्यत्र)।
११०।६ यह खल मलिन सदा; √(राम, बाल, नाथ); ⊙(पट); रावनु पाप मूल (अन्यत्र)।
११०।१०/१ √; √(राम, बाल, नाथ); ⊙(पट); सोउ कृपाल तव धाम सिधावा (अन्यत्र)।
११०।१४ अति सप्रेम; √ (राम, बाल, पट, नाथ); अति सने प्रेम (उद); अतिसय प्रेम (अन्यत्र)। तन पुलकि विधि; √ (राम+); तन पुलकित (राम÷, बाल, पट) सरोज बीधी (मन+); सरोजभव (मन÷, अन्यत्र)।
१११।१४ मुधा; √ (राम, नाथ); सुधा (बाल, पट); महा (अन्यत्र)।
१११।२३ चतुरानन; √ (राम, बाल, पट, नाथ); विधि भाति बहु (अन्यत्र)।
१११।२४ सोभासिंधु बिलोकत; √ (राम, बाल, पट, नाथ); बदनु बिलोकत राम कर (अन्यत्र)।
११२।२ बंदन; √ (राम, बाल, पट, नाथ); प्रनामु (अन्यत्र)।
११२।४ सलिल; सरीर (रघु, नाग, मन÷, उद, व्रज); सजल (मया, अल)।
११२।१० सोभा देखि; √ (राम, बाल, पट, नाथ); छबि बिलोकि (अन्यत्र)।
११४।३ खगेस; √ (परि, राम, बाल, पट); सुरेस (नाथ); षगपति (अन्यत्र)।
११४।७।२ √; √ (राम, बाल, पट, नाथ); गए ब्रह्मपद तजि सरीर रन (अन्यत्र)।
११४।१२ प्रभु; √ (राम, पट, नाथ); प्रभुहि (बाल); रामहि (अल); राम (अन्यत्र)।
११५।११ कृपासिंधु मैँ आउब; √ (राम, बाल, पट, नाथ); तब मैं आउब सुनहु प्रभु (अन्यत्र)।
११६।७ अवधपुर; √ (बड़, राम, मन, पट, नाथ); अवध प्रभु (अन्यत्र)।
११६।८ मृदु; अति (मया); प्रभु (उद, व्रज, पट)।

११६।१० भरत दसा सुमिरत; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); दसा भरत कै सुमिरि (अन्यत्र)।
११६।११ गात; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); सरीर (अन्यत्र)।
११६।१३ बीते अवधि जाउँ जौ; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); जौ जैहौं बीते अवधि (अन्यत्र)।
११६।१४ सुमिरत अनुजप्रीति; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); प्रीति भरत कै समुझि (अन्यत्र)। प्रभु; मोहि (वढ़–); अति (नाथ)।
११६।१६ पाइहहु; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); सिधाइहहु (अन्यत्र)।
११८।२ सब; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); प्रभु (अन्यत्र)।
११८।१२ सहित चले विनय विबिध बिधि; ✓ (राम, बाल, पट, नाथ); समेत तब चले बिनय बहु (अन्यत्र)।
११८।१३ ✓; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); जामवंत कपिराज नल अंगदादि हनुमान (अन्यत्र)।
११९।१२ इहाँ सेतु बाँध्यो अरु; ✓ (राम, वाल); इहा शींधु बाधेउ अरु (पट); इहां सेतवंधु कीय अरु (नाथ); यह देषु सुंदर सेतु जह (अन्यत्र)।
११९।१३ कृपानिधि; ✓ (राम, बाल, पट, नाथ); कीपातनऐ (मन); कृपायतन (अन्यत्र)।
११९।१४ कृपासिंधु; ✓ (राम, बाल, पट, नाथ); करुनासिंधु (अन्यत्र)।
१२०।१ तुरत; ✓ (राम, पट); तुरित (वाल, नाथ); सपदि (अन्यत्र)।
१२०।१० ✓; ✓ (राम, वाल, नाथ); ⊙ (पट); तब रघुनायक श्री सहित अवधहि कीन्ह प्रनामु (अन्यत्र)।
१२०।११ नयन तन पुलकित; ✓ (राम, वाल); ⊙ (पट); नऐन पुलकित तन (नाथ); विलोचन पुलक तन (अन्यत्र)।
१२०।१२ पुनि; ✓ (राम, बाल, पट, नाथ); बहुरि (अन्यत्र)।
१२०।१३ सहित बिप्रन्ह कहुँ; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); समेत महीसुरन्ह (अन्यत्र)।
१२१।६ प्रभु; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); हरि (अन्यत्र)।
१२१।२१ रघुबीर के; ✓ (राम, वाल, नाथ); रघुबीर की (पट); रघुपति (अन्यत्र)। जे सुनहिँ; ✓ (राम, पट, नाथ); जो सुनहिं (वाल); सुनहि जे सदा (अन्यत्र)।

सप्तम सोपान (उत्तरकांड)

दो २।५ पुर; प्रभु (राम, बलि, वाल, नाग, मन, व्रज, नाथ); गुन (पट)।
२।१२ काह; कहा (बलि, वाल, उद, व्रज, पट, नाथ)।
२।२० सद्गुनसिंधु; सदगुनपाथ (रघु±, व्रज)।
४।१ मनोहर; सुधाकर (नाग, मन)।
४।४ सरिस प्रिय मोहि न; पुरी सम प्रिय नहि (राम, नाग, मन,); सरिस मोहि प्रिय नहि (व्रज); पुरी शम प्रीय न (पट); पुरिम्म प्रिय्र नहिं (नाथ)।
५।३ गहे; धरे (राम, नाग, मन, पट, नाथ); गाहे (उद); गहेउ (व्रज)।
५।१३ बूझत; पूछत (बाल, पट, नाथ)।
६।१७ पुनि पुनि; पुनि (रघु, राम, वाल, नाग, उद, व्रज); बहुरी (पट)।

८।५ **लागन**; √ (रघु, परि); लागहु (अन्यत्र)। **कुसल**; √ (रघु, परि, उद); सबन्हि (नाथ); सकल (अन्यत्र)।
८।९ **सब**; सभ (राम, नाग); मन (बाल, व्रज)।
८।१३ **बर**; √ (रघु, परि, नाग); नर (अन्यत्र)।
९।१ **सजि निज**; सजि सजि (बाल, नाथ); शजी घरे (पट)।
९।१२ **नाक**; गगन (राम, बलि, मन, नाथ)।
९।१३ **भगवान**; रघुनाथ (पट, नाथ)।
१०।२ **हरि**; प्रभु हरि (परि); प्रभु (बाल, व्रज, पट)।
१०।४ **बसिष्ठ द्विज**; बसिष्ट हित (नाग, मन÷); बशठही तव (मन±); बशीश्ट द्रोप (पट)। **सुभदाई**; समुदाई (राम); शुषदाइ (पट); स्मुंदाइ (नाथ)।
१०।९ **सिरु नाइ**; हरषाइ (राम, नाग, मन, नाथ)।
११।६ **सकहिँ न गाई**; कहि न सिराई (नाग, मन)।
११।८ **कोटि छबि छाजे**; कोटि छबि लाजे (परि, व्रज, पट); देखि शत लाजे (राम, नाग, मन, नाथ); कोटि छबि राजे (बलि)।
११।११ **सोभनि**; सोभित (बलि, बाल, मन, व्रज, पट, नाथ)।
११।१२ **मातु**; सासु (वड़, व्रज, पट)।
१२।१४ **मुनिमन**; सुरमन (राम, नाग, मन)।
१३।१ √; जय सर्गुन रूप अनूप भूप बीचार बीबुध सिरोमने (रघु); जय सगुन निर्गुन रूप भूप अनूप रूप सिरोमनि (बलि); जय सगुन निर्गुन रूप अनूप भूप सिरोमने (बाल, पट); जय सगुन निगुने रूप अनुप सिरोमने (उद); जय सगुन निर्गुन रूप अनूपम भूपं सकल शिरोमने (व्रज); जऐ सगुन निर्गुन रूप भूप अनुप राम सीरोमने (नाथ)।
१३।३ **संसारभार**; संभारि कर (रघु); संसार (नाथ÷)।
१३।२५ **बेदन्ह**; देवन्ह (बाल, पट)।
१५।१२ **तिन्ह**; निसि (बलि, बाल, उद, पट); निशि तिन (व्रज)।
१९।७ **भाँति**; बहु भाति (बलि, नाग, मन); भाँति भाँति (उद); बहुतति (व्रज); बहु विधि (पट, नाथ)।
२२।१० **जीतहु**; जितहु (वड़, रघु, परि, उद, पट); जिनहु (बलि); जीतेहु (मन, व्रज)। **सुनिअ अस**; √ (राम); सुनि अस (नाग, मन, नाथ); अस जग मुनि (व्रज); अस सुनिअ जग (अन्यत्र)।
२३।११ **जेतनेहिँ**; तेज तेहि (बाल); जितनहि (बलि); जतनेहि (नाग, मन); जित तेही (उद); जीतनहि (व्रज); तेज नेही (पट); तेज नहि (नाथ)।
२४।९ **रमा**; राम (बाल, व्रज, पट)।
२६।७ **गृह होहिँ**; होहिं बेद (रघु, परि)।
२७।१३ **गृह**; रुचिर (व्रज)। **प्रति रचि**; गृह प्रति (वड़, राम, बलि, नाग, मन, नाथ); गृह (बाल); ग्रह प्रति रचि (उद); गृह गृह (व्रज); ग्रीह जो (पट)। **लिखे**; रचे (व्रज, पट)।

२८।६ **निरखहिं;** √(रघु, परि); देखै (वलि, पट); देखहिं (अन्यत्र)।
२८।९ **चारु;** चिर (वड़); चार (रघु÷); रुचिर (राम, नाग, मन, व्रज, नाथ)।
२९।४ **जिन्ह;** √(वड़, रघु, परि); तेन्ह (मन); तिन्ह (अन्यत्र)। **कीँ;** √(रघु); को (परि); की (नाग, उद); के (अन्यत्र)।
३३।९ **संत पंथ;** संत संग (परि, राम, नाग, मन, नाथ)।
३३।१० **सब;** सद (राम, वलि, वाल, नाग, मन, नाथ)।
३४।३ **जय जय गुनसागर;** जय गुननीधी सागर (रघु); जै गुनसागर (पट)।
३५।२ **कामधुक धेनु;** काम सुरधेनु (वड़, राम, नाग, मन, नाथ)।
४२।६ **अतिसय;** सुर अति (रघु)।
४३।२ **सदसि अनुज मुनि;** गुर मुनि अरु द्विज (राम, नाग, मन, पट, नाथ)।
४७।१ **सबन्हि;** परम (वलि)। **कृपाधाम;** कृपानिधान (नाग, मन÷, व्रज, पट)।
४७।८ **निज;** √(रघु, परि); निज निज (अन्यत्र)। **सुआएसु;** √(रघु, परि); आयसु (अन्यत्र)।
४८।२ **चरनोदक;** √(रघु, परि); पादोदक (अन्यत्र)।
४८।१० **सम आन;** समान (वड़, वाल, मन, व्रज, नाथ÷)।
५२।१० **कृपाल मैँ;** कृपायतन (राम, नाग, मन, पट, नाथ); कृपाल मई (वलि); कृपालय (व्रज)।
५३।९ **रामचरित;** √(रघु, परि, उद); रामचरन (अन्यत्र)।
५७।९ **ताला;** काला (परि, नाग, मन÷, उद, व्रज); तास (वलि); ×ला (मन+); साला (पट)।
५८।८ **अवतरा;** √(वड़, रघु); अवतार (अन्यत्र)।
६०।२ **उर;** अति (नाग, मन); अस (पट, नाथ)।
६१।२ **बिनीत;** विनती (राम, वलि, वाल, नाग, व्रज, पट); बिनति (उद, नाथ)।
६२।१२ **भगत;** √(वड़, रघु, परि, मन); भगति (अन्यत्र)।
६३।४ **बृद्ध बृद्ध;** बृंद वुद्ध (वाल); बृंद बृंद (उद)।
६४।३ **पूग;** पुंज (वड़, राम, व्रज, नाथ); भूष (वलि)।
६७।१ **सिधाए;** √(रघु, परि, उद); दिसि धाए (अन्यत्र)।
६८।१२ **संदोह;** सो मोह (रघु)।
७२।३ **गुनधामा;** बलधामा (राम, वलि, नाग, मन, पट, नाथ)।
७६।१ **सेवक;** सेवत (रघु, परि)।
७७।९ **चरित होति मोहि;** मोहि होति अति (राम, नाग, मन, पट, नाथ); चरित होत मन (अल)।
७८।१ **आवत;** √(रघु, परि, नाग, मन, पट, नाथ); आनत (अन्यत्र)।
७८।८ **मुधा;** दुविध (वलि); दूध (अल); मृषा (नाग); मीथ्या (मन); बुधी (उद+); पिधा (व्रज÷); दुग्ध (पट); दुगुधा (नाथ)।
८१।८ **उदारा;** अपारा (राम, अल, नाग, पट); प्रकारा (मन); अदारा (नाथ)।

८।१।२ समीर; शरीर (रघु, परि, वलि, वाल, मन÷, उद, व्रज)।
८।४।१ जाना; नाना (वड़+, रघु, नाग, मन, उद, व्रज); ⊙ (वड़÷)
८।४।२ सब; तब (रघु–, परि); वर (वाल)।
८।६।३ संसारा; परिवारा (रघु–, परि)।
८।६।७ जेहि गति मोरि न; भक्ति मोरि नहि (रघु–, परि); जेहि भगति मोरि न (नाग, मन); जेही मती मोरी न (पट, नाथ)।
८।६।९ जीवहु; जीवन (वड़, परि, वलि, अल, व्रज); जीवन्ह (वाल, उद, पट, नाथ)। मोहिं; मम (वड़, वाल); सम (अल)।
८।७।५ अयाना; सयाना (रघु–, वलि)।
८।७।७ मोर उपाया; मम उपजाया (रघु–, परि)। दाया; माया (वाल, पट)।
८।७।१० सर्बभाव; भक्ति भाव (रघु–, परि)।
८।८।१ सुमिरेसु भजेसु; सुमिरि स्वरूप (रघु–, परि)।
९।०।१० जीव; मन (रघु–, परि)। लह; लहहि (रघु–, परि); लहे (वलि); लहै (अल, उद)।
९।०।१२ रघुबीर; रणधीर (रघु–, परि, नाथ)।
९।१।४ सिव; मुनि (रघु–, उद, व्रज)।
९।२।६ रामु निगम; निगमागम (रघुं–, परि, अल)।]
९।२।१२ सुनि; ते (रघु–, परि)।
९।२।१६ सीतारवन; सीतापतिहि (रघु–, परि); सीतावरहि (अल)।
९।३।२ श्रीरघुपति; श्रीरघुवर (रघु–, परि, वलि); श्रीरघुपतीही (पट)।
९।३।६ प्रसंसि; प्रसंसेउ (रघु–, परि); प्रसंस्यौ (वलि)।
९।३।११ बूझौं; पूछौ (रघु–, परि, पट, नाथ); बूझेउ (अल)।
९।४।६ मुधा; मृषा (वड़, रघु–, परि, वलि+, नाग, मन, व्रज+); मीथ्या (अल); मुगधा (उद, व्रज÷)। सोउ; सो (रघु–, परि; वलि, अल, उद, व्रज, नाथ)।
९।५।१ परम; सहित (रघु–, परि, वलि, अल, मन)।
९।८।१ रत सब; व्रतरत (वड़, वाल, अल); रत व्रत (रघु–, परि); रत नर (वलि); व्रत रति (उद); व्रत (व्रज)।
९।८।१० जोगी; तापस (रघु÷, परि, उद, व्रज)।
९।८।११ मान्य तेइ; मान्य वहु (रघु–, परि); मान्यता (वलि); मानता (अल, उद, व्रज); मान अती (नाथ)।
९।९।३ देव; वेद (रघु–, परि, नाग, उद, व्रज)।
९।९।८ धर्म; ज्ञान (रघु–, परि)।
९।९।९ कहहिं; करहिं (अल, नाग, मन)।
९।९।१० लागि; कारन (रघु–, परि); लागे (वलि); लागि ते (नाग, मन)।
१००।३ तिन्हहूँ; औरनि (रघु–, परि); औरहि (अल); औरन्ह (उद); औरन (व्रज)।
१००।११ कलि; सकल (रघु–, परि, पट, नाथ); सब (अल)।

१०।४/२ √; अबला नहि डीठ परी जव लो (रघु–, परि); अवला मन दीष नही जव लो (अल); अवलान न डीठ परी जव लों (उद, व्रज)।

१०।६ गुनदूषक; गुण दूषन (रघु–, परि)।

१०।१२ मद; सब (रघु–, परि)।

१०।१४ धरनी; धरनि पर (वड़, रघु–, परि, नाग, मन, व्रज+); धरनि जल (वलि); धरनि मह (अल)।

१०२।८ अचार; विचार (वड़, रघु–, परि, उद, व्रज÷)।

१०२।११ काल कलि; कराल मल (रघु–, परि)। अवगुन; गुन (रघु–, परि)।

१०२।१२ गुनौ बहुत कलिजुग कर; गुन वड तौ कलिकाल के (रघु–; परि)।

१०२।१३ कृतजुग त्रेता द्वापर; कृत त्रेता द्वापर महुँ (वड़, वाल, अल, उद, व्रज); कृत त्रेता द्वापर समै (रघु–,परि); कृत त्रेता द्वापरहु मह (वलि); कृत जुग त्रेता द्वापरहुं (नाग, मन)।

१०२।१४ सो कलि हरि; सो कलि विषे (रघु–, परि); सु कलि हरी (वलि); सो कलि मह हरि (अल); कलजुग हरी (पट); कलिजुग महु हरि (नाथ)।

१०३।८ कर; जुग (रघु–, उद, व्रज); कौ (वलि)।

१०४।५ कलिप्रभाव; कलि सुभाउ (रघु–, परि)।

१०४।७ कालधर्म; √(राम, वाल, नाग, नाथ); कलि अधर्म (अल); कलधम्र÷, कल अधर्म+(मन); कालभर्म (पट); कालकर्म (अन्यत्र)। अति; रति (रघु–, परि)।

१०६।१२/२√; नृपकिरीट पुनि नयनन परई (रघु–, परि, उद, व्रज); पुनि नृप मौलि किरीटनि परई (वलि)।

१०६।१३ खगपति अस; षग षगपति (रघु–, परि)।

१०६।१४ सन; सँग (रघु–, परि, उद); सैं (अल, पट)।

१०६।१६ सो; गुर (रघु–); गुरु (परि)।

१०७।२ चित; उर (वड़, रघु–, परि, उद, व्रज)।

१०७।१२ स्वर; गिरा (वड़, रघु–, परि, वलि, बाल, उद, व्रज); सरस (नाथ)।

१०८।२० पुनि; ⊙(रघु–, परि)। बर; वर बर (वड़); अब वर (रघु–, परि, उद, व्रज); माग सो (वाल); वर तैं (अल); ⊙(वलि, पट); वर अव (नाथ)।

१०८।२२ भगति देइ प्रभु; पद्म भक्ति दृढ (रघु–, परि); भक्ति देहु प्रभु (वलि, पट)।

१०८।२४ करिअ प्रभु; कीजिये (रघु–, परि)।

१०९।२ इति; तव (रघु–, परि); इमि (अल); इव (उद, व्रज); अश (पट)।

१०९।१३ मम; √(वड़, राम, वाल, नाग, उद, व्रज); सम (अन्यत्र)।

१०९।१७ इति; तव (रघु–, परि)।

१०९।१९ काल; कालहि (वलि); वहु (अल)। बिंधि; सुबिंघ्य (रघु–); सुविंधि (परि); बिंध (बाल); विधि (अल, उद, व्रज); विंद (मन+); बेबीधी (पट); बिबिधि (नाथ)। गिरि; ग्रीह (मन÷); बीधी (पट, नाथ)।

१०९।२३ राखी; असीस (रघु–, परि); साषी (अल)।

११०।४ **सकल;** सदा (रघु–, परि)।
११०।१७ **रामचरन;** रामचरित (रघु–, परि, नाग)। **मनु लाग;** अनुराग (रघु–, परि, उद, व्रज, पट); उर लाग (अल)।
१११।१२ **अगुन निरूपा;** निर्गुन रूपा (रघु–, परि)।
१११।१९ **क्रोध कि द्वतबुद्धि बिनु;** द्वैतबुद्धि बिनु क्रोध किमि (रघु–, परि); क्रोधवंत द्वैतबुधि कै (अल)।
११२।६ **रहै;** करहि (रघु–,); रहहि (वलि, उद, व्रज, पट)।
११२।१० **कि पिसुनता सम;** ✓(राम, बाल); क्रीपीनिता राम (अल); कि विना तामस (अन्यत्र)।
११२।१९ **जे रामचरन;** राम के चरण (रघु–); जो रामचरन (अल, पट, नाथ)।
११३।३ **बच क्रम मोहि निज;** क्रम बचन मोहि (रघु–, परि, वलि, अल, नाथ)। **जन;** निज (अल, नाथ)।
११३।६ **तब;** मोहि (रघु–, परि, बलि, बाल, पट, नाथ); दीढ (अल)।
११३।७ **मुनि;** पुनि (रघु–, उद)।
११३।८ **सो;** जो (रघु–)।
११३।९ **तब;** सव (रघु–, परि, बलि, अल, उद, व्रज)।
११३।१९ **तुम्ह बसब पुनि;** तुम्ह वसहु गे (रघु–, परि); तुम वसब तुम (बलि÷); पुनि वसव तुम (बलि±, बाल, अल); तुम बसब सु पुनि (उद); तुम वसो पुनि (व्रज)।
११४।६ **बच;** ✓(वड़, रघु–, परि, राम, बाल); वचन (अन्यत्र)।
११५।१८ **विषयाबस;** विषया विवश (बड़); जो विषयबस (रघु–, परि); वीषैवस (अल)।
११७।९ **सुहाई;** लवाई (रघु–, परि); सोहाई (बाल, अल, पट)।
११७।११ **पाइ;** धेनु (रघु–, परि)।
११७।१६ **सुभग सु;** सुपरम (रघु–, परि, उद, व्रज)।
११७।१९ **विज्ञानरूपिनी;** विज्ञाननिरूपनी (बड़, बलि, नाथ); विग्यानस्वरूपिणी (रघु–); विज्ञानसरूपिनी (परि); बिग्याननीरूपम (अल); वीग्यान रुपी नीज (मन+)।
११८।२ **भेद;** देह (रघु–, परि, मन)।
११८।५ **सोई;** कोई (रघु–, परि, उद, व्रज, पट)।
११८।१२ **ते;** तेहि (रघु–, परि)। **हठि;** हठ (रघु–, परि, उद, व्रज, नाथ)।
११८।१३ **सो प्रभंजन;** सु प्रभंजन (रघु–, परि, बलि)।
११८।१४ **सो प्रकासा;** सु प्रकासा (रघु–, बलि); प्रकासा (बाल, नाथ)।
११८।१६ **बार;** करै (रघु–, परि, उद, व्रज); बांरि (बलि)।
११८।१७ **बिबिध;** सुबिविधि (रघु–, परि, व्रज)। **बिधि;** ⊙ (नाग, उद)।
१२०।५ **प्रबल;** अचल (रघु–, परि, अल)।
१२०।१० **तेइ;** ते (रघु–, अल, पट, नाथ)। **सुजतन;** सो जतन (रघु–, बलि); सुभ जतन (अल)।
१२०।२१ **काढ़हिँ;** काढिये (रघु–, परि)।
१२१।४ **सुख;** दुष (वड़, अल, पट, नाथ)।
१२१।६ **कराला;** कृपाला (रघु–, परि, मन÷); रसाल (बलि); ✓(मन±)।

१२११२ ते; जिमि (रघु–, परि); नहि (राम÷, वाल, पट); ✓(राम±); दे जे (नाग, मन); ⊙(उद); तेही÷,✓± (व्रज)।

१२११३ जग नाहीं; कहु नाहीं (वड़, रघु–, परि); कछु नाहीं (वलि, वाल, अल, उद, व्रज)।

१२११२० उदय; हृदय (रघु–, परि)।

१२११२४ जरनि सोइ; जरहि सो (रघु–); जरनि सो (वाल, उद)।

१२२११ जग; जड (रघु–, परि)।

१२२१५ सब; भव (नाग, मन, पट, नाथ)।

१२२१८ नहिं; सत (रघु–, परि, उद, व्रज)।

१२२११८ रबिहि; ससिहि (रघु–, परि); विहि (नाग); बीह (पट)।

१२३११२ रघुनायक; रघुनाथ कर (वड़, अल, व्रज+); रघुवीर के (रघु–, परि); रघुनाथ के (वलि); रघुनाथ क (उद, व्रज÷)।

१२४१६ घोर; ताप (रघु–, परि)।

१२५१५ कोउ; को (रघु–)।

१२७१७ सोइ; सो (रघु–, परि, उद, व्रज)।

१२८११ करि; मैं (रघु–, परि, अल); कै (पट)।

१२८१३ सठही; जे शठहिं (वड़); जे सठ (रघु–, परि); शठ÷,✓± (राम); सब हिठ (उद, व्रज÷); सवहि (व्रज+)।

१२८१६ तेइ; ते (रघु–, परि, अल, उद, पट, नाथ)।

१२९११ समनि; हरन÷, हरनि+ (रघु–); समन (परि, उद, नाथ); सवन (व्रज)।

१२९१७ गिरा; वचन (रघु–); अतिहिं (अल)।

१३०१७ बड़ बाना; बर बाना (रघु–, परि); भगवाना÷, प्रअवाना+ (मन)।

१३०१११ खस; सब (रघु–); षग (राम±, नाग, मन, पट, नाथ); पस्व (उद); ⊙ (व्रज÷)।

१३०११५ धरे; धरै (वड़, रघु–, परि, वलि, अल)।

१३०११६ श्री रघुबर; श्री रघुपति (वड़, रघु–, वलि, बाल, अल, उद, व्रज)। हरे; हरै (वड़, रघु–, परि, बलि, अल)।

१३०१२४ रघुनाथ; रघुवंस (रघु–)।

श्लो १/२ प्राप्यै तु; प्राप्त्यैव (वड़); प्राप्तौ तु (रघु–, राम, बाल); प्रा× (अल); प्राप्यैव (नाग, मन); प्राप्तै तु (उद, व्रज); प्राजै तु (पट); प्रापै तुं (नाथ)।

१/३ तद्रघुनाथनामनिरतं; तद्रघुनाथनामनिरतः (वड़, रघु–, उद, व्रज); तद्रघुनाथनामनिरत (राम, नाग); तद्रघुनाथनामनिरता (बाल)।

१/४ भाषाबद्धमिदं; भाषाबंधमिदं (रघु–, उद, व्रज, पट); भाषाबंधिमिदं (अल); भाषा बव्वांमिमंदं (नाथ)। मानसं; मानसः (अल, नाथ)।

२/३ ये; जे (वाल, नाग, मन, पट, नाथ); ज (अल); ते (उद, व्रज)।

---

(२) बढ़ोतरी

प्रथम सोपान (बालकांड)

श्लो ३ᵛ विनाप्यर्थैः समर्थो हि दातुमर्थचतुष्टयं
मंगलायतनं तन्मे बाल्ये यद्रामभाषितं ॥ (उद)

७ᵛ जासु नाम जपु जानि मंगलमय मंगलकरन ।
द्रवहु सकल गुन खानि बंदौं प्रथम बिद्याधरन ॥ (नर)

दोहा १ श्री सतगुर गनेस विधि हरि हर सीअ भवानि ।
बंदौं अमृत सरोज बर सदा जोरि जुग पानि ॥

सोरठा १ जौ चित चाहहु राम कस न सेवहु पद संभु को ।
तौ पावहु बिस्राम रामभजन तें भव तरिअ ॥ (नाथ)

दो ४।२ᵛ सुनत कहत पर अघ न अघाहीं । जे पृथु सेष सरिस जग माहीं ॥ (उद)

१०।१४ᵛ सोरठा। सकल सुमंगल मूल प्रथम पचीसी प्रेममय ।
सुनत समनि सब सूल संसय सोच बिमोचनी ॥ (उद)

१२।११ᵛ बेद कहहिं अस हहिं रघुराई । चहिअ भगति रति नहि चतुराई ॥
(वाल) ; १३।४ᵛ (जवा)

१४।११ᵛ तनु विचित्र कायर वचन अहि अहार मन घोर ।
तुलसी हरि भये पंछधर ता तें सबु कह मोर ॥ (उद)

१५।१३ᵛ गुर गौरीस चरन चितु लाई । जासु कृपा गति मति पति पाई ॥
सादर सुमिरि सीय रघुराऊ । सेवक सिसु पितु मातु सुभाऊ ॥
हरषि हिये हनुमानहि आनी । कहउँ राम गुन ग्राम बखानी ॥ (उद)

१७।२ᵛ दोहा। भरत लखन रिपुसुदन पद वंदि कहौं कर जोरि ।
अपने सील सुभाव गुन समुझि सुधारवि मोरि ॥ (उद)

१७।१२ᵛ सारद निगम नवौं नित तोही । रघुपतिभगति देहु दृढ़ मोही ॥ (वाल, उद)

१८।३ᵛ यह बर मैं मागौं कर जोरी । सब मिलि करहु बिमल मति मोरी ॥
अग जग जीव जंतु जग माहीं । किएँ विरुद्ध भक्ति सुख नाहीं ॥
सब सन सुहृद दीनता प्रीती । श्रुति कह यह संतन्ह कै रीती ॥
दोहा। अत्तर अरथ न जानौं नहि गुन ज्ञान उपाय ।
रामचरित कछु बरनौं सब मिलि होहु सहाय ॥ (बाल, उद)

१८।५ᵛ विनय सुनहु सब होहु कृपाला । भंजहु बिषम विपति भवजाला ॥ (वाल, उद)

२८।१३ᵛ प्रभु प्रताप, महिमा जिय जासू । मोरि ऊँचि रुचि रूचिहि तासू ॥ (उद)

३५।७ᵛ बकता संकरु सुकबि सुबानी । श्रोता मुनिगन मुख्य भवानी ॥
रामभगति मनि उमा भवानी । सिया राम जसु कलिमलहानी ॥

सुजसु बिसद वर हित सब दूषन । बकता सेष गंग विधु भूषन ॥
सुनहि गौरिथलु गिरि कैलासू । सभा पयोनिधि वीचि बिलासू ॥(उद)
३५।१०^{V} सुनत सपेम सुपंथ चढ़ावन । भगति बिराग विवेक वढ़ावन ॥
मानस सरबर रामचरित को । जनकु राम सिय प्रीति सरित को ॥(उद)
३७।१७^{V} तप जप साधन सम जम जूथा । ते विचित्र मृग विहग वरूथा ॥
अति उछाहु नित नव रितुराजू । अकथ अनूपम सकल समाजू ॥(उद)
३९।१३^{V} तीरथ सतक पुनीत पचीसी । ते सब संगम सुनद नदी सी ॥(उद)
४३।१०^{V} दोहा । भरद्वाज जिमि प्रस्न किय जागवलिक मुनि पाइ ।
प्रथम मुख्य संवाद सोइ कहिहौं हेतु बुझाइ ॥
(रघु, परि, जवा+, व्रज) ; ३०।१०^{V} (उद)
७७।१०^{V} तव रिषि तुरत गौरि पहँ गयऊ । देखि दसा मुनि बिस्मै भयऊ ॥(कुंज+)
१०९।३^{V} छल विहीन सुनि सिव मन भाई । अति प्रिय जानि प्रीति उर छाई ॥(पट, नाथ)
१४६।१०^{V} नील सरोज वदन छविसीवा । (उद)
१७०।७^{V} नृप सूकर सन मंत्र दिढ़ाई । अब तौ मीत सवै वनि आई ॥(नाथ)
१७४।१०^{V} जो करि कपट छलै जग काहू । देइहि ईसु अधम गति ताहू ॥
विप्रबचन सुनि नृप अकुलाना । उठि पुनि विनय कीन्ह विधि नाना ॥
पुनि पुनि पद गहि कहै भुआला । श्राप अनुग्रह करहु कृपाला ॥
जब तुम्ह होव निसाचर जाई । ब्रह्मबंस तामस तनु पाई ॥
अजर अमर अतुलित प्रभुताई । जग विख्यात बीर दोउ भाई ॥
होइहि जवहि पराभव चारी । तब तुम्ह सेउब देव पुरारी ॥
सिवप्रसाद बर पाइ बहोरी । होइहि सब जग प्रभुता तोरी ॥
मिलिहहिँ तोहि तव सनतकुमारा । तव तुम्ह संमुभव श्राप हमारा ॥
दोहा । पूछिउ तुम निस्तार निज सादर सुनहु नरेस ।
सब परिवार उधार तव होइहि मुनि उपदेस ॥ (जवा+, व्रज)
१७७।३^{V} नाथ कृपा करि करहु पसाऊ । समर पराभव होउ न काऊ ॥(व्रज)
१९३।८^{V} अकथ कथा कछु कहि न सिराई । खगपति जन्म लीन्ह रघुराई ॥(नाथ)
१९९।१३^{V} जेहि सुख लागि संभु तप करहीं । राज छाँडि नृप कानन चरहीं ॥
जेहि सुख चाह सनक सनकादी । जेहि जाचत परमारथवादी ॥
जेहि सुरूप मानसहि भुसुंडी । जेहि जप निस दिन सहस सुतुंडी ॥(नाथ)
१९९।१५^{V} अंग मनोहर बरनऊँ एक रहे छवि लाय ।
उपमा देत न बनय कछु देखत हृदय जुड़ाय ॥ (जवा)
२०४।४^{V} चारौ बेद सहस श्रुति गाई । (नाथ)
२२०।८^{V} नखसिख सुभग अंग सुठि नीको । मन क्रम वचन सजीवन जी को ॥(नाथ)
२२१।८^{V} सारदादि सुर मुनि वलिहारी । लोचन के लोचन सुखकारी ॥(नाथ)
२२८।८^{V} अति हरषित तनदसा विसारी । गदगद गिरा बिबस भइ भारी ॥(नाथ)

२३४।८^V पिता कीन्ह पनु निपट कठोरा । अति भयभीत होत मन मोरा ।।(नाथ)
२४२।८^V कहा कहिअ कहि जात सो नाहीं । रखा लखा जिन्ह तिन्ह उर माहीं ।।(नाथ)
२५६।८^V सुनु गिरिजा तेहि अवसरु आए । सुर नर मुनि गन गँधरब जाए ।।
देव दनुज धरि मनुजसरीरा । त्रिअन्हि समेत सकल बर बीरा ।।(नाथ)
२८४।८^V देखा गुनि तब हृदै बिचारा । निसचै भये राम औतारा ।।
हाथ जोरि करि असतुति कीन्हा । आसिरबाद बिबिधि बिधि दीन्हा ।।(जवा)
२९५।८^V एहु सुधि प्रिअ पुरबासिन्हि पाए । परम रंकु जनु नवनिधि छाए ।।(नाथ)
३०४।८^V देखि अलौकिक बास सुहावा । हरखे अमर अमित सुख पावा ।।(नाथ)
३०८।६^V पाएन्ह परत भरत उर लाए । रिपुसूदनहि भेंटि बैठाए ।।
पुनि रघुबर पूछी कुसलाता । आनँदमगन भए दोउ भ्राता ।।(पट)
दोहा । मिले सबनि रघुबंसमनि बिधवत कीन्ह प्रबोध ।
पुरबासिनी जहाँ लगि सब कर लीन्हेंउ सोध ।।
नगर लोग सभ भए सुखारी । चारु चंद एक ठौरु निहारी ।।(पट)
३०८।१०^V दोहा । मिले सबनि रघुबंसमनि बिधिवत दीन्ह प्रबोध ।
पुरबासी निज द्वार गे संकर हरि बिधि बोध ।। (कुंज+)
३१७।५^V राम मुदित मुनिबर उर लाए । किए पुन्य सब ते फल पाए ।।(पट)
३२६।३/१^V कुंकुम अगर सुबासित बोरे । (मन)
३६१।१२^V छंद । सुनु गाइ कहीं गिरीसकन्या धन्य अधिकारी सही ।
नित प्रीति नूतन सुनत हरिगुन भक्ति अनुपम तैं लही ।
रघुबीरपद अनुराग जल लोभागि बेगि बुझावई ।
येह जानि तुलसीदास मन क्रम बचन हरिगुन गावई ।।
सोरठा । कठिन काल मलग्रसित मन साधन कछु न होइ ।
यह बिचारि बिस्वास करि हरि सुमिरैं बुध सोइ ।।
मन हरिपद अनुरागु करहि त्यागु नाना कपट ।
महामोह निसि जागु सोवत बीते काल बहु ।। (रघु–, बाल, नाग)

द्वितीय सोपान (अयोध्याकांड)

२।७^V लागि श्रवन जनु कहति बुढ़ाई । रामहि राज देन हौं आई ।।(बाल, मन, व्रज)
३।६^V गुनसागर नागर श्रुति गाए । बड़े भाग मोरे गृह आए ।।
जेठे राम जगत हितकारी । सकल सराहहिं पुर नर नारी ।।
(बाल, नाग, उद, खोज, व्रज)
४।५^V भरत राम सन आयसु मागी । पंछिम गे मातुल हित लागी ।।
करहु बिचार न लावहु बारा । अब मुनि भा पन चौथ हमारा ।।(बाल, नाग)
६।१०^V सुनि सुमंत्र मन अति हरखाना । जीवन जन्म सफल करि माना ।।
जहँ तहँ धावन कोटि पठाए । मंगल द्रब्य सकल लै आए ।।

कनककलस सजि धरे दुआरे । गज रथ तुरग अनेक सँवारे ॥
बहु विधि बाँधे बंदनवारा । ध्वज पताक मनि बसन अपारा ॥
बना नगर नहि बरना जाई । सकल लोक सोभा पुर छाई ॥
(बाल, उद, खोज, व्रज)

७।१^V मुनि मन इंछा करै न पावा । सो सुमंत्र पहिलेहि लै आवा ॥
(बाल, उद, खोज, व्रज)

८।५^V बार बार गनपतिहि निहोरा । कीजै सफल मनोरथ मोरा ॥
भूपहृदय प्रभु प्रेरहु जाई । मति दिढ़ होउ जो मन महँ आई ॥
जो कछु इंछा हरिमन माहीं । सो पै होउ आन कछु नाहीं ॥
(बाल, उद, खोज, व्रज)

८।७^V करहिं कुतूहल बिबिधि बिधाना । जाइ न बरनि सुमंगल गाना ॥ (नाथ)

१३।१०^V का सोअसि सोहाग अभिमानी । निकट जहाँ भय तूं न डेरानी ॥
(बाल, नाग, उद, खोज, व्रज)

१५।८^V अति प्रिय बचन सुनाए मोही । कहु मंथरा देउँ का तोही ॥
(बाल, नाग, खोज); १५।१०^V (उद)

१५।१०^V सुनत बचन मंथरा रिसानी । बोली बचन कपट छल सानी ॥ (बाल, नाग)

२०।४^V बचन सुनत अतिसय भय मानी । दुष्टसंग तें मति बौरानी ॥
धर्म निरत गुन ग्यान गभीरा । दुष्टसंग मति रहै न थीरा ॥
(बाल, नाग, खोज, व्रज)

२७।१०^V देहु तौ जिअउँ तजउँ न तु प्राना । बचन सुनत भूपति मुसुकाना ॥ (बाल, नाग, खोज)

२९।४^V संभ्रम मुरुछि परा नृप कैसें । काटें पंख परा खग जैसें ॥
(बाल नाग, उद, खोज, व्रज)

२९।६^V अति ब्याकुल तन बिगलित केसा । करि धीरजु पुनि उठे नरेसा ॥
आगें सोइ बाघिनि जिमि ठाढ़ी । पुनि पुनि स्वास लेति अति गाढ़ी ॥
(बाल, नाग, उद, खोज)

२९।८^V गएउ सहमि सुनि बचन कठोरा । मृगी देखि जनु दौ चहुँ वोरा ॥ (खोज)

३१।५^V अब का कुमति बसी जिअ तोरें । अब लगु कहसि राम प्रिय मोरें ॥
(बाल, नाग, खोज, व्रज, नर)

३१।८^V तव सुत राज करौ सुनु रानी । राम रहहुँ गृह कहु यह बानी ॥
(बाल, नाग, खोज, व्रज)

तुम्ह जनि सोचु करहु मन माही । बचन मोरि सुत्य मिथ्या नाही ॥ (नाथ)

३१।१०^V बिनु रघुपति मम जीवन नाही । प्रिआ बिचारि देखु मन माही ॥
(बाल, नाग, खोज); ३१।५^V (उद)

३३।३^V जद्यपि नृप अति कीन्ह निहोरा । मानै नहि अति हृदय कठोरा ॥
(बाल, नाग, खोज, व्रज); ३३।४^V (उद)

३५।८^{v} दीन्ह दान फिरि मागसि राजा । परिहरि लोक वेद कै लाजा ॥
होत प्रात सुत बनहि न जाई । चौथेपन नृप सुजस नसाई ॥
(बाल, नाग, उद, खोज)

३७।८^{v} कबहि उगै रबि होइ बिहाना । देखिअ नयनन्ह कृपानिधाना ॥
गज आरूढ़ अनुज श्री संगा । सोभा तन सत कोटि अनंगा ॥
करत मनोरथ निसा सिरानी । प्रात प्रगट जागे मुनि ज्ञानी ॥
(बाल, नाग, उद, खोज)

तबहि वसिष्ठ सुमंत बोलाए । हृदय हरष आतुर चलि आए ॥
(बाल, उद, खोज) ; ३७।१०^{v} (नाग)

४०।४^{v} चरन नाइ सिर दोउ कर जोरी । बोले वचन सुधा जनु बोरी ॥
(बाल, नाग, उद, खोज)

५८।८^{v} औरौ देव दनुज जग माहीं । जेहि न सीअ प्रिअ को जग आहीं ॥ (नाथ)
६४।४^{v} तजि सकोचु गुन निपट निदानू । नहि सुख लहै बनज बिनु भानू ॥ (मन)
६६।३^{v} कहहु दुख समउ प्रान पं । (खोज)
१६८।८^{v} छंद। मन वचन कर्म कृपायतन कर दास मैं सुनु मातु री ।
उर बसत राम सुजान जानत प्रीति अरु छल चातुरी ।
अस कहत लोचन वहत जल तन पुलक नख लेखत मही ।
हिय लाय लिये वहोरि जननी जानि प्रभुपद रति सही ॥ (राम÷,बाल,उद)
संत सुर गुरु भूसुर मारे । गौवध पातक लागु हमारे ॥ (नाथ)
१७२।७^{v} दसरथ सम न भएउ जग माहीं । अहहि न होइहहि होनउ नाहीं ॥ (नाथ)
१८४।७^{v} कहु खगेस अस कौन अभागी । छाड़ि रामपद विषरस मागी ॥ (नाथ)
२१२।८^{v} सकल अमिअ करतलगत मोरे । पुरउब नाथ अनुग्रह तोरे ॥
२१६।७^{v} पुरजन प्रेम न कछु कहि जाई । एहु प्रसंगु जानहिं मुनिराई ॥ (नाथ)
२२०।८^{v} जेही गाउँ नगर मगु माहीं । कहहिं परसपर देखि सिहाहीं ॥ (नाथ)
२५५।८^{v} सेवा करौं सीय रघुनाथा । होइ किंकर पुरवौं बन साथा ॥
धन्य निषाद भाग अधिकाई । जा कहँ प्रभु लिए संग लगाई ॥ (खोज)
२७८।८^{v} भा सुख जीव सकल सिव पूजा । राम ध्यान पद और न दूजा ॥ (पट)
२९६।८^{v} सत्य सुकृत अलि मंजुलमूला । रसना अमिअ मधुप रस भूला ॥ (नाथ)

तृतीय सोपान (अरण्यकांड)

[सिरनाम^{v}]

दोहा। धरमधुरंधर रामप्रिअ ब्रह्मचर्ज ब्रत धीर ।
रटत रहत निसि बासर राम राम रघुबीर ॥
उमा जाहि रघुनाथ प्रिअ ताहि कि विषै सोहाहि ।
हंस दैववस कुसर परि कबहुँ कि संवुक खाहि ॥

पुरवासी बस प्रभु अवधि मगु चित बस लइलीन ।
जथा नवजच्छद पंख खग जननी जनक अधीन ।। (मन)

१।१०V बिनु पराध प्रभु हतै न काहू । अवसर परे असै ससि राहू ।।
जब प्रभु लिन्ह धनु सीक क बाना । क्रोध जानि भा अनल समाना ।।
(रघु, राय, व्रज, नाथ)

२।८V दोहा। जिमि जिमि भाजत सक्रसुत व्याकुल अति दुख दीन ।
तिमि तिमि धावत रामसर पाछें परम प्रवीन ।।
(रघु, परि, राय, व्रज, नाथ)

बचहि उरग बरु ग्रसे खगेसा । रघुपतिसर छुटि बचब अदेसा ।। (रघु, राय, नाथ)

२।९V दूरिहि तें कहि प्रभुप्रभुताई । भजे जात बहु बिधि समुझाई ।।
(रघु, परि, राय, नाथ)

४।२६V जनम जनम प्रभु तव पद कंजा । बढ़ौ प्रेम चकोर जिमि चंदा ।।
देखि राम मुनि बिनय प्रनामा । बिबिध भाँति पाएउ बिस्रामा ।।
(रघु, राय, व्रज, नाथ)

५।१V जे सिय सकल लोक सुखदाता । अखिल कोटि ब्रह्मांड कि माता ।।
तेउ पाइ मुनिवर मुनिभामिनि । सुखी भईं कुमुदिनि जिमि जामिनि।।
(रघु, राय, व्रज, नाथ)

५।३V जाहि निरखि दुख दूरि पराहीं । गरुड़ जानि जिमि पन्नग जाहीं ।।
दोहा। असे बसन बिचित्र सुठि दिए सीय कहुँ आनि ।
सनमानी प्रिय बचन कहि प्रीति न जाइ बखानि ।।
(रघु, राय, व्रज, नाथ)

५।११V दोहा। उत्तम मध्यम नीच लघु सकल कहउँ समुझाइ ।
आगे सुनहिं ते भव तरहिं सुनहु सीय चितु लाइ ।।
(रघु परि, राय, मन, व्रज, नाथ)

६।१८V दोहा। मुनिहु कि अस्तुति कीन्ह प्रभु दीन्ह सुभग बरदान ।
सुमनबृष्टि नभ संकुल जय जय कृपानिधान ।।
(रघु, व्रज); ६।१४V (राय, नाथ)

७।५V आश्रम बिपुल देखि मग माहीं । देवसदन तेहि पटतर नाहीं ।।
बहु तड़ाग सुंदरि अबराईं । भाँति भाँति सब मुनिन्ह लगाईं ।।
तेहि दिन तहँ प्रभु कीन्ह निवासा । सकल मुनिन्ह मिलि कीन्ह सुपासा।।
दोहा। आनि सुआसन मुदित मन पूजि पहुनई कीन्ह ।
कंद मूल फल अमिअ सम आनि राम कहुँ दीन्ह ।।
अनुज सीय सह भोजनु कीन्हा । जो जेहि भाव सुभग बरु दीन्हा ।।
होत प्रभात मुनिन्ह सिरु नावा । आसिरबाद सबन्हि सन पावा ।।
सुमिरि उमा सिव सिद्धि गनेसा । पुनि प्रभु चले सुनहु उरगेसा ।।
बन अनेक सुंदर गिरि नाना । नाघत चले जाहिं भगवाना ।। (रघु, राय)

७१६/१V । गर्जत घोर कठोर रिसाता ।।
रूप भयंकर मानहु काला । वेगवंत धाएउ जिमि ब्याला ।।
गगनदेव मुनि किंनर नाना । तेहिं छन हृदय हारि कछु माना ।।
तुरतहि सो सीतहि लै चलेऊ । रामहृदय कछु बिस्मै भएऊ ।।
समुझा हृदय केकई करनी । कहा अनुज सन वहु विधि वरनी ।।
वहुरि लखन रघुवरहि प्रबोधा । पाँच बान छाड़ा करि क्रोधा ।।

। छंदु ।

भये क्रुद्ध लखनु सँधानि धनु सर मारि तेहि ब्याकुल कियो ।
पुनि उठा निसिचर राखि सीतहि सूल लै छाड़त भयो ।
जनु कालदंड कराल धावा विकल सव खग मृग भए ।
धनु तानि श्रीरघुवंसमनि पुनि मारि तन झर्झर किए ।।

दोहा। वहुरि एक सर मारा परा धरनि धुनि माथ ।
उठेउ प्रवल पुनि गर्जेउ चलेउ जहाँ रघुनाथ ।।

असेइ कहत निसाचर धावा । अव नहि वचहु तुम्हहि मैं खावा ।।
आव प्रवल येहि विधि जनु भूधर । होइहि काह कहहिं ब्याकुल सुर ।।
तासु तेज तें मरुत ससाना । टूटहिं तरु उड़ाइ पाषाना ।।
जीव जंतु जहँ लगु रहे जेते । व्याकुल भाजि चले तहँ तेते ।।
उरग समान जोरि सर साता । (रघु, राय)
७१७V तासु अस्ति गाड़ेउ प्रभु धरनी । देवन्ह मुदित दुंदभी हनी ।।
सीता आइ चरन लपटानी । अनुज सहित तव चले भवानी ।।
इहाँ सक्र जहँ मुनि सरभंगा । आएउ सकल देव निज संगा ।।
गए कहन प्रभु देन सिखावन । दिसि वल भेद वसत जहँ रावन ।।

दोहा। सुरपतिसंसय तम सम रघुपतितेज दिनेस ।
रावनजीवन निसि सम बीतें छुटहिं कलेस ।।

सुनासीर प्रभु तेहि छन देखा । तेजनिधान सुभ्र अति वेषा ।।
तुरग चारि वल मरुत समाना । रथ रवि सम नहि जाइ वखाना ।।
छिति न परस अंतरहित रहई । स्वेत छत्र चामर सिर ढरई ।।
अनुजहि प्रियहि कहा समुझाई । सुरपति महिमा गुन प्रभुताई ।।
जेहि कारन वासव तहँ आए । सो कछु बचन कहे नहि पाए ।।
वीचहि सुनि आइव प्रभु केरा । कहि सारथिहि तुरत रथ फेरा ।।
दूरिहि तें करि प्रभुहि प्रनामा । हरषि सुरेस गएउ निज धामा ।। (रघु, राय)
१०१८V छंदु। सोउ प्रिय अति पातकी जिन्ह कवहुँ प्रभु सुमिरन करचो ।
ते आजु मैं निज नयन देखिहौं पुरित पुलकित हिय भरचो ।।
जे पद सरोज अनेक मुनि करि ध्यान कवहुँक पावहीं ।
ते राम श्रीरघुवंसमनि प्रभु प्रेम तें सुखु मानहीं ।।

दोहा। पन्नगारि सुनु प्रेम सम भजन न दूसर आन ।
यँह विचारि मुनि पुनि पुनि करत राम गुन गान ।। (रघु, राय)
१०।१६V सोरठा। रामु सुसाहिवु संत सेवक दुख दारिद दवन ।
मुनि सन प्रभु कह हंत उठु उठु द्विज मम प्रान सम ।। (रघु, राय)
११।२०V सोरठा। मायावस जस जीव रहहिं विवस संतत मगन ।
तिमि लागहुँ प्रिय राम करुनाकर सुंदर सुखद ।। (रघु, राय)
११।२१V रामभगति तजि चह कल्याना । सो नर अधम सृकाल समाना ।। (रघु, राय)
१२।१V पुनि प्रनाम करि जुग कर जोरी । सुनहु नाथ कछु विनती मोरी ।। (रघु, राय)
१२।३V चले जात मगु तव पद कंजा । देखिहौं सुनु विराध मद गंजा ।। (रघु, राय)
१२।५V आश्रम देखि महा सुचि सुंदर । सरित सरोवर हरषित भूधर ।।
वनचर जलचर जीव जहाँ तें । वैर न करहिं प्रीति सबहीं तें ।।
दोहा। तरु बहु विधि विहंग मय बोलत विविध प्रकार ।
वसहिं सिद्ध मुनि तप करहिं महिमा गुन आगार ।। (रघु, राय)
१२।१५V पाइ सुथल जल हरषित मीना । पारसु पाइ सुखी जिमि दीना ।।
प्रभुहि निरखि सुख भा एहि भाँती । चातक जिमि पाए जल स्वाती ।। (रघु, राय)
१३।३V दिजद्रोही न वचहि मुनिराई । जिमि पंकजवन हिम रितु पाई ।। (रघु, राय)
१३।५V सोरठा। भृकुटी निरखत नाथ (तव) रहत सदा पद कमल तर ।
जिन्ह डारे निज उदर (महुँ) विविध विधाता सिद्ध हर ।।
अति कराल सव पर जगु जाना । अवरौ कहौ सुनिय भगवाना ।। (रघु, राय)
१३।१३V सोरठा। जेहि जीव पर तव मया रहत तुम्हहि संतत विवस ।
तिन्हहु कि महि मन जान सेवक तुम्ह कहुँ प्रानप्रिय ।। (रघु, राय)
१३।१५V गोदावरी नदी तहँ बहई । चारिहु जुग प्रसिद्ध सो अहई ।। (रघु, राय)
१३।१८V दिव्य लता द्रुम प्रभुमन भाए । निरखि राम ते उभय सुहाए ।।
लखन राम सिय चरन निहारी । कानन अघ गा भा सुखकारी ।। (रघु, राय)
१७।१V नाथ सुने गत मम संदेहा । भएउ ज्ञान उपजेउ नव नेहा ।।
अनुजवचन सुनि प्रभुमन भाए । हरषि राम निज हृदय लगाए ।। (रघु, परि, राय)
१७।६V दोहा। अधम निसाचरि कुटिल अति चली करन उपहास ।
सुनु खगेस भावी प्रवल होइ चह निसिचरनास ।। (रघु, राय)
१७।१४V दोहा। केहरि सम नहि करिवर लवा कि वाज समान ।
प्रभु सेवक इमि जानहु मानहु वचन प्रमान ।। (रघु, राय)
१७।१९V विथुरे कच दसनन विकराला । भृकुटी कुटिल करत लगि गाला ।। (रघु, राय)
१७।२०V अनुज राममन की गति जानी । उठे रिसाइ तव सुनहु भवानी ।। (रघु, राय)
१८।१V स्याम घटा देखत घन केरी । तहँ वासवधनु मनहु उए री ।। (रघ, राय)
१८।३V चौदह सहस सुभट सँग लीन्हे । जिन्ह सपनेहु रन पीठि न दीन्हे ।। (रघु, राय)
१८।६V दोहा। निज निज वल सव मिलि कहहिं एकहि एक सुनाइ ।

बाजन लगेउ जुझाऊ हरषु न हृदय समाइ ॥ (रघु, राय)

१८।९[v] कोउ कह सुनिय सत्य हम कहहीं । कानन फिरहिं बीर कोउ अहहीं ॥
एकँ कहा मष्ट भै रहहू । खर के आगे अस जनि कहहू ॥
बहु बिधि कहत बचन रनधीरा । आए सकल जहाँ रघुबीरा ॥ (रघु, राय)
१८।११[v] घेरि रहे निसिचरसमुदाई । दंड़क खग मृग चले पराई ॥ (रघु, राय)
१९।७[v] दोहा। भए कालबस मूढ़ सब जानहिं नहि रघुबीर ।
मसकफक की मेरु डर सुनहु गरुड़ मतिधीर ॥ (रघु, राय)
१९।८[v] आजु भएउ बड़भाग हमारा । तोहरे प्रभु अस कीन्ह विचारा ॥ (रघु, राय)
१९।१३[v] समर माँह कर जो पछतावा । सो नर कबहुँ की सुभ गति पावा ॥ (नाथ)
२०।३[v] एक एक को न सँभार । करै तात भ्रात पुकार ॥
कोउ कहै खर का कीन्ह । जो जुद्ध इन्ह सन लीन्ह ॥
जाको बान अतिहि कराल । ग्रसै आइ मानहु काल ॥ (रघु, राय)
२०।५[v] दोहा। उमा एक निज प्रभुहि बस पुनि उन्ह के बड़भाग ।
तरन चहहिं प्रभुसर लगे बिना जोग जप जाग ॥ (रघु, राय)
२२।८[v] सोरठा। अति सुकुमारि पिआरि पटतर जोगु न आहि कोउ ।
मैं मन दीख बिचारि जहाँ रहै तेहि सम न कोउ ॥
अजहु जाइ देखब तुम्ह जवहीं । होइहहु बिकल तासु बस तवहीं ॥
जीवनमुक्त लोक बस ताकें । दसमुख सुनु सुंदरि असि जाकें ॥ (रघु, राय)
२२।१०[v] बिनु पराध असि हाल हमारी । अपराधी किमि बचहि सुरारी ॥ (रघु, राय)
२२।१२[v] भएउ सोच मन नहि बिश्रामा । बीतहि पल मानहु सत जामा ॥ (रघु, राय)
२३।७[v] रथ अनूप जोरे खर चारी । बेगवंत इमि जिमि उरगारी ॥
छंद। उरगारि सम अति बेगु बरनत जाइ नहि उपमा कही ।
सिर छत्र सोभित स्याम घन जनु चवर सेत बिराजही ।
एहि भाँति नाघत सरित सैल अनेक बापी सोहहीं ।
बन बाग उपबन बाटिका सुचि नगर मुनिमन मोहहीं ॥
दोहा। बहु लड़ाग सुचि बिहग मृग बोलत बिबिध प्रकार ।
एहि बिधि आएउ सिंधु तट सत जोजन बिस्तार ॥
सुंदर जीव बिबिध बिधि जाती । करहिं कोलाहल दिनु अरु राती ॥
कूदहिं ते गर्जहिं घन नाई । महाबली बल बरनि न जाई ॥
कनकबालु सुंदर सुखदाई । बैठहिं सकल जंतु तहँ जाई ॥
तेहि पर दिब्य लता द्रुम लागे । जेहि देखत मुनिमन अनुरागे ॥
गुहा बिबिध बिधि रहहि बनाई । बरनत सारदमति सकुचाई ॥
चाहिय जहाँ रिषिन्ह कर बासा । तहाँ निसाचर करहिं नेवासा ॥
दसमुख देखि सकल सकुचाने । जे जड़ जीव सजीव पराने ॥ (रघु, राय)
२४।७[v] नवनि नीच कै अंतहुँ घाता । संत पुरान निगम मत माता ॥ (नाथ)

२५।१०V रा अस नाम सुनत दसकंधर । रहत प्रान नहि मम उर अंतर ।।(रघु, राय)
२६।१४V सीता लखन सहित रघुराई । जेहि बन बसहिं मुनिन्ह सुखदाई ।।(रघु, राय)
२७।९V दोहा। अस कहि चले तहाँ प्रभु जहाँ कपटमृग नीच ।
देव हरष विस्मै विवस (जिमि) चातक वरषा वीच ।। (रघु, राय)
२८।४V सौंपि गये मोहि रघुपति थाती । जौ तजि जाउँ तोषु नहि छाती ।।
येहि जिय जानि सुनहु मम माता । पूछत कहव कवनि मैं बाता ।।(रघु, राय)
२८।५V चहुँ दिसि रेख खचाइ अहीसा । वारंवार नाइ पद सीसा ।।(रघु, राय)
२८।६V चितवहिं लखन सीय फिरि कैसें । तजत वंछ निज मातुहि जैसें ।।
दोहा। एक डरत डर राम की दुसरे सीय अकेलि ।
लखन तेज तन हत भयो जिमि डाढ़ी दव वेलि ।। (रघु, राय)
२८।१०V करि अनेक विधि छल चतुराई । मागेउ भीख दसानन जाई ।।
अतिथि जानि सिय कंद मूल फल । देन लगी तेहि कीन्ह वहुरि छल ।।
कह दसमुख सुनु सुंदरि वानी । बाँधी भीख न लेउँ सयानी ।।
विधिगति वाम कालकठिनाई । रेख नाघि सिय वाहेर आई ।।
दोहा। विस्वभरनि अघदल दलनि करनि सकल सुरकाज ।
जाना नहि तेहि समय (मह) दससीस कपट के साज ।। (रघु, राय)
२८।१५V वायस कर चह खगपतिसमता । सिंधु समान होइ किमि सरिता ।।
खरि कि होइ सुरधेनु समाना । जाहि भवन निज सुनु अज्ञाना ।।(रघु, राय)
२९।३V कैकेइ के मन जो कछु रहेऊ । सो विधि आजु मोहि दुख दएऊ ।।
पंचवटी के खग मृग जाती । दुखी भए जलचर बहु भाती ।।(रघु, राय)
२९।६V दोहा। वहु विधि करति विलाप नभ लिएँ जात दससीस ।
डरत न खल वर पाइ भल जो दीन्हो अज ईस ।। (रघु, राय)
२९।८V अहह प्रथम तनु मम वल नाही । तदपि जाइ देखौं बल ताही ।।(रघु, राय)
२९।१४V दोहा। मम भुज वल नहि जानत आवत तपन्ह सहाइ ।
समर चढ़ै तौ येहि हतौं जियत न निज थल जाइ।। (रघु, राय)
२९।१९V दसमुख उठि कृत सरसंधाना । गीध आइ काटेउ धनु बाना ।।(रघु, राय)
२९।२०V दोहा। जेहि रावन निज बस किए मुनिगन सिद्ध सुरेस ।
तेहि रावन सन समर कर धीर बीर ग्रिद्धेस ।।
सुस्त भए पुनि उठि सो धावा । मारै गीध न सन्मुख आवा ।।
कीन्हेसि वहु जब जुद्ध खगेसा । थकित भएउ तब जरठ गिधेसा ।।(रघु, राय)
२९।२२V मन महु गीध परम सुख माना । रामकाज मम लागेउ प्राना ।।(रघु, राय)
२९।२८V उहाँ विधाता मन अनुमाना । सुरपति बोलि मंत्र अस ठाना ।।
तात जनकतनया पहि जाहू । सुधि न पाव जिमि निसिचरनाहू ।।
अस कहि विधि सुंदर हबि आनी । सौंपि बहुरि बोले मृदु बानी ।।
एहि भक्षन कृत क्षुधा न प्यासा । बरष सहस एह संसय नासा ।।

सो प्रसाद लेइ आएसु पाई । चलेउ हृदय सुमिरत रघुराई ॥
कछु बासव माया निज मोई । रछक रहे गये तहँ सोई ॥
तदपि डरत सीता पहिं आएउ । करि प्रनाम निज नाम सुनाएउ ॥
निस्चय जानि सुरेस सुजाना । पिता जनक दसरथ सम माना ॥
करि परितोष दूरि करि सोका । हविषि खवाइ गयउ निज लोका ॥ (रघु, राय)
३०।३^V अहह तात भल कीन्हेहु नाहीं । सीय बिना मम जीवनु नाहीं ॥
येहि तें कवनि बिपति बड़ि भाई । छोड़ेहु सीय काननहि आई ॥
३०।६^V दोहा । कानन रहेउ तड़ाग इव चक चकई सिय राम ।
रावन निसि बिछुरन भएउ (सुख) बीते चारिउ जाम ॥
परदुख हरन सो कस दुख ताही । भा बिषाद तेन्हहुँ मन माहीं ॥ (रघु, राय)
३०।१५^V दोहा । फनि मनिहीन (दीन) मीनु जिमि त्यागत सीतल बारि ।
तिमि ब्याकुल भए लखन तहँ रघुवरदसा निहारि ॥ (रघु, राय)
धरि उर धीर बुझावहिं रामहि । तजहिं न सोक अधिक सुख धामहि ॥
३०।१७^V सरबर अमित नदी गिरि खोहा । बहु बिधि लखन राम तहँ जोहा ॥
सोच हृदय कछु कहि नहि आवा । टूट धनुष सर आगे पावा ॥
कहुँ कहुँ सोनित देखिय कैसे । सावन जल भा डबर जैसे ॥
कहत राम लछिमनहि बुझाई । काहूँ कीन्ह जुद्ध एहि ठाईं ॥ (रघु, राय)
३४।२^V दुष्टी धेनु दुहिअ सुनु भाई । साधु रासभी दुही जाई ॥
बचन ज्ञान रत सुद्र कपाली । अहहिं न तास बचन मतिसाली ॥
जउ जुठार हबि स्वान कि कागा । तेहि पर बुध न करहिं अनुरागा ॥ (उद)
३६।६^V दोहा । सब प्रकार तव भाग वड़ मम चरनन्हि अनुरागु ।
तव महिमा जेहि उर बसिहि तासु परम जग भागु ॥
बचन सुनत सबरी हरषानी । पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई ॥ (रघु, राय, मन)
बिहसी चरन कमल लपटानी । सुनि सुबचन हरष कहुँ पाई ॥ (राय, मन)
३६।११/१^V मुनिवर बिपुल रहे जहँ छाई ।
रिषि मतंग महिमा गुन भारी । जीव चराचर रहत सुखारी ॥
बैर न कर काहू सन कोऊ । जा सनु बैर प्रीति कर सोऊ ॥
सिखर सुहावन कानन फूले । खग मृग जीव जंतु अनुकूले ॥
। करहु सफल स्रम सब कर जाई ॥ (रघु, राय, मन)

चतुर्थ सोपान (किष्किंधाकांड)

१।१२^V हसि बोले रघुवंसकुमारा । बिधि को लिखा को मेटै पारा ॥ (नाग, व्रज+, ग्रह)
४।१^V बिनै बहोरि जोरि जुग पानी । प्रेम सुधा सानी मृदु बानी ॥ (व्रज)
६।१^V दुंदुभि दैत्य महा बलवाना । बधे वालि तेहि कृपानिधाना ॥ (व्रज)
६।७^V मैं निज मन तब कीन्ह बिचारा । खल बल दनुज बालि कह मारा ॥ (नाग)

७।२९[V] सोइ रघुबीर हृदय महँ आनहु । मोहहि छाड़ि कहा मम मानहु ।।(रघु, प्रह)
८।१[V] बालि दीख सुग्रीवहि ठाढ़ा । हृदय क्रोध बहु बिधि पुनि बाढ़ा ।।(रघु, व्रज+)
८।४[V] तब रघुबीर कहा समुझाई । लखि नहि परहु लरत द्वौ भाई ।।(व्रज)
९।६[V] सुनु खल तेई किए कुकर्मा । परिहरि लोक बेद कर धर्मा ।।(व्रज, पट)
९।१०[V] राम कहा जब सत्य बुझाई । तब सकुचान रहा सिरु नाई ।।
छिनु एक बहुरि बचन नहि खोलसि । तब पुनि उमा बचन अस बोलेसि ।।(नाथ)
११।२[V] पुनि पुनि तासु सीस उर धरई । बदन बिलोकि हृदय मह नई ।।
मैं पति तुम्हहि बहुत समुझावा । कालबस्य कछु मनहि न आवा ।।
अंगद कह कछु कहइ न पाएहु । बीचहि सुरपुर प्रान पठाएहु ।।(रघु,नाग, प्रह,नाथ)
१२।१०[V] गिरि सुमेर अत्यादिक जेते । करहिं बड़ाइ गुहा गिरि तेते ।।(नाथ)
२७।८[V] जो रघुपतिचरनन चित लावै । तेहि सम आन न धन्य् कहावै ।।(रघु, व्रज, पट, प्रह)
२७।९[V] तेहि देखि सब चले पराई । ठाढ़े कीन्ह ते सपथ देवाई ।।(रघु, व्रज, पट)
२८।३[V] जिमि जिमि मैं रवि निकट उड़ाऊँ । तिमि तिमि मैं ब्याकुल होइ जाऊँ ।।(रघु, व्रज, पट, प्रह)
२८।९[V] यह कहि मुनि आस्रम निज गयऊ । तेहि छिन हृदय ग्यान कछु भयऊ ।।
सदा राम कर सुमिरन करऊँ । येहि बिधि मगु जोवत मैं रहऊँ ।।
(रघु, नाग, मन, व्रज, पट, प्रह)
२९।१[V] जो कोइ करै राम कर काजू । तेहि सम धन्य आन नहि आजू ।।
(रघु, मन, व्रज, पट, प्रह, नाथ)
३०।१[V] नाहि त जलधि सपदि कै धावौं । दसमुख बाँधि तुरत लै आवौं ।।(प्रह, नाथ)
३०।११[V] एहि ते अधिक सिखावनु नाही । बेगि करहु तुम्ह धरि मन माही ।।(प्रह)

पंचम सोपान (सुंदरकांड)

श्लो ३[V] सोरठा । सुनहु उमा मन लाइ द्रिढ़ आसन कै स्रवन करु ।
रामचरित सुखदाइ सुंदरकांड बिचित्र अति ।।(नाथ)
१।९[V] दोहा । भूधर काढ़ा स्त्रिग तब कपि सौं कहा बुझाय ।
अवलंबन छिन एक कै लंका देखहु जाय ।।(नाथ)
१९।९[V] ब्रह्मफाँस सर निज कर लीना । ताहि बिलोकि कपि अहि अहीना ।।(नाथ)
२५।९[V] उठु रनिवास बिकल तजि सेजा । अति भौ प्रबल अनल कै तेजा ।।
छंद । अति अनल तेज प्रचंड ब्यापित सोह ज्यौं घन दामिनी ।
धुम छाइ रह चहु वोर नभ महि बिसरि ब्याकुल भामिनी ।
जरु नगर कंचन सगर संपति सकृत दसमुख मन भयो ।
तजि सिंघासन बसन आसन अति कोप भै कहनै लयो ।
निकट पयोधि अगाध जलनिधि बेगि आनहु नीर सो ।
देहु डारि प्रचारि अग्नि पर भवन राखहु बीर सो ।

तपहीन मति अति दीन भाषत वचन कोइ न मानई ।
दसमुख अति गर्व कोप भा निकट मृत्यु न जानई ।
तालुका अति विकल दह दिस करत नग्र पुकारई ।
अति आरत गृह पुकारत छूटत अनल फुलझारई ।
अनल व्यापित किरिनि भान सहस प्रकार होइ जारई ।
निसरु गज मद परु अलान पद अगुमन परु सो मारई ।
चिकरि महि गहि दसन दै रहि विकल दहूँ दिस भाजहीं ।
धाव क्रोधित मरुत बेग सो [प्र]लय जिमि घन गाजहीं ।
तनु दैत ताल विसाल सोभित धरति नभ धुम बाढ़हीं ।
जरु न[गर] संभारु अंबर तनै जरत न काढ़हीं ।
तुरै टापि अकुलाइ हींसहिं पटउ डोरि न टूटहीं ।
जाहि बाट तेहि हाट लागहिं लुक समान सो छूटहीं ।
प्रवल प्रचंड महिखंड पूरो मरुत चहूँ वोर तर्जहीं ।
लहलहाहि अग्नि हहाहि न भगै कपि सकोप भै गर्जहीं ॥ (अल)

३०।१०^v दोहा। वारि वारि पुर वारि कै वारि वारि गंभीर ।
जनकवारि द्रिगवारि को वारिन गा रघुवीर. ॥ (काशी, नाथ)

३०।१०^v चौपाई। चलती वार कहेसि मोहि टेरी । सुधि कराइहु सुक्रसुत केरी ॥
(व्रज, ३१।११^v काशी)

३३।१०^v चौपाई। सुनि कपिवचन वहुत सुख माना। मन क्रम बचन दास निज जाना॥ (व्रज)

३८।८^v अपजस मृत्यु वरावरि दोऊ । नासकाल रुचि ता कहँ सोऊ ॥ (राय)

५४।८^v छंद। अमितादि गज जूथादि वल अति सुभट रन गाढ़े घने ।
स्यामादि मुख अरुनादि मुख गौरादि वरनन्हि को गने ।
चरनादि आयुध मुष्टिका नख दंत कर धर भूधरा ।
एहि भाँति प्रवल प्रताप रघुपति दीख हो दसकंधरा ॥ (दुलही+)

षष्ठ सोपान (लंकाकांड)

२।१^v वाँधेउ सेत नील नल नागर । राम सुजस तिहु लोक उजागर ॥ (पट)

३।११।^v ['हनुमन्नाटक' (७।१६) के 'ये मज्जन्ति' का भ्रष्ट पाठ] (पट)

१७।६/१^v पद पंकज उर महँ [सो] धरेऊ । रोम रोम पुलकित तन भएऊ ॥ (पट)

१७।१२^v चरन वंदि अस वचन कहि भयो हरष मन तेहि ॥ (पट)

२१।५^v ['श्रीरामरामजनकात्मजा' का भ्रष्ट पाठ] (पट)

२४।१६^v वहु प्रकार मुनि ताहि सिखावा । गएउ सो पुर फिरि लाज न आवा ॥ (मया, नाग)

२६।१०^v दोहा। तव जुवतिन्ह समेत सठ जनकसुता लै जावँ ।
और मंत्र निज मंत सुनु चौपट करि तुव गावँ ॥ (पट, नाथ)

२६।१०V जरहिँ पतंग मोहवस अपने । ताहि न गनिअ सूर निसि सपने ।।(नाथ)
४१।७V रामप्रताप सहज० रन बाँके । सो कि रहत भट रोकें का के ।।(नाथ)
४६।११/१Vकाहु न सूझै आपु परारा । मारु खाहु सब करहिँ पुकारा ।।(मया, नाग, मन)
६२।६V चले जगावन महा सुभट्टा । देखत जलद सजल घनघट्टा ।।
जोजन दस लेहि भौन क द्वारा । सोवै वीर नीद विकरारा ।।
पैठो वीर भौन सब जाई । मानहु काल परा जनु आई ।।
तनस्रम जलदघटा निसि कारी । छूटत साँस जनु प्रलयवआरी ।।
अंधकाल छूटत होइ स्वासा । मुदगर दीन्ह रंध सो नासा ।।
लगे सो जतन करै वहु नाना । जागत नाहि वीर बलवाना ।।
छंद। जब न जागै करै लागै (जतन तब) करत कोटि उपाइ सो ।
गजजूथ गीरि वरूथ मानहु दयो तें तन चिन्हाइ सो ।
चितकार करि संभारि वल धरि देत तब गहि दंत सो ।
भुज जुगल फेरि अँगेरि दीठो विडरि भजु भट मंत सो ।
भरि नैन देखि कै सैन कीन्हो विकल नीद तें सोइ गयो ।
भट डरत अति मन करत भय (तन) पुनि भौन सो पैठन लयो ।
लगें जगावन विविध भावन निरखि अति ब्याकुल भयो ।
करि करि समाजा आनि वाजा स्रवन निकट[तट?]बाजन लयो ।
वहु वाज ताल म्रिदंग झालि सो हहाकार महि पुरि रही ।
नहि जाग वीर सरीर मर्दहिँ बज्र मुदगर कर गही ।
धरि धीर तन मन वीर करि सब हृदै देखु विचारि सो ।
वहु भेरि स्रौन चहुँ फेरि दै कै अरु निसान जुझारि सो ।
नर नारि सुर गंधर्ब कन्या कर सुरस झनकारि सो ।
स्रवन सवद अवाज परि गै उठा जागि सुरारि सो ।
सुनु भवानी सुमति बानी यह न दैतकलापु सो ।
जगत चखन विलंबु लागै कठिन ब्रह्मसरापु सो ।।
दोहा। उठि बैठा निसिचर[...] जनु सुमेरु संजीव ।
आयो सब समीप चलि नाइ माथ वलसीव ।। (अल)
६४।६V अपत अजामिल सो गति पावा । सुर नर मुनि मन जो सुख भावा ।।(नाथ)
६७।८V तबहिँ राम धनु सर संधाने । कहि प्रिअ वचन सवहि सन्माने ।।(नाथ)
७१।३V देखि महाभट अति बलवाना । खलदल मलन सुधारेउ वाना ।।
करि अति क्रोध बान प्रभु छाटा । दुओ जंघ केदलि सम काटा ।।
काटे जाँघ न मानै हारी । टूटिन्ह दौरै बदन पसारी ।।
जत कपि अगुमन रीछन्ह पावै । जस बक मीन पेट धरि नावै ।।
तेहि सरूप सोइ करै गरासा । मानहु काल धाव लै फाँसा ।।
रनमद अंध नैन नहि सूझा । निकट मृत्यु कछु हिए न बूझा ।।

धावै प्रलयकाल सम घट्टा । मर्दै भट धरि धीर सुभट्टा ॥
जस मैंगर पंकजवन चरई । तस रन निर्तत दानौ करई ॥
मुख वाए धावै चहुँ पासा । जत पावै तत करै गरासा ॥
देखि वहुत राकस के कर्मा । अव एुहि हतौं कपिन्ह भौ भर्मा ॥
करि विचार मन कीन्ह तिवाना । सो अव लेउँ हतौं जेइ वाना ॥(अल)
७६।४^v सनमुख भए जुद्ध कर आई । आगे देखि पिता कर भाई ॥
देखत रोस भयो दोउ नैना । लागा कहन क्रोध सैं बैना ॥
सुनहु विभीषन वचन हमारा । तुम्ह राकसकुल भएहु कुठारा ॥
भै तैं सरन राम कै लीन्हा । अधम अधीन काज तैं कीन्हा ॥
बोरेहु वंस नाम वेवहारा । निंद्य लजावन जनम तोहारा ॥
चीन्हि समर रन करतेहु जूझी । घर कर भेद कहै नहि बूझी ॥
कहै विभीषन सुनु जड़ चोरा । राज करै कर एुह मुख तोरा ॥
जब कछु कहा नीति धै ग्याना । तव होइ साथ तहूँ बौराना ॥
अब तोहि भई ग्यान कै डीठी । बूझि परी तो कहँ तव मीठी ॥
दोहा। तेहि दिन गएउ राज तुव जब उपजी एुह वात ।
देखत तोहि सभा महँ रावन मारी लात ॥
सुनत वचन क्रोधातुर धावा । चाँद राहु जनु ग्रासै आवा ॥
डोली मेदनि डगेउ सुमेरू । करि जत दाप चाँप धरि फेरू ॥
देखि वहुत दानौ कर कोपा । बीभीषन आगे पग रोपा ॥
वानफोंक दै कीन्ह सो ठाना । लागे इंद्रजीत उर वाना ॥
लागत बान क्रोध तन जारा । लै मुदगर कीन्हेसि प्रहारा ॥
दोसर घाव कै कहूँ ताका । एुहि अंतर लछिमन दिअ हाँका ॥
दिव्य वान मारेउ रिसिआई । मुदगर कर तैं गौ उड़िआई ॥
पुनि कर दानौ लीन्हो वाना । करि अति रोस धाव वलवाना ॥
पुनि दानौ किहु लघु संधाना । माझ लिलाट लाग दुइ वाना ॥
छंद। लघु वान धनु संधानु कर धरि हनै दैत प्रचारि कै ।
बहु करै घाव न दाव पावहिं विकल करै सो मारि कै ।
सर चंड अति परचंड धावहिं लगत सर अस राजहीं ।
अस देखि वीर अधीर होखहिं उड़तगन जिमि भाजहीं ॥
दोहा। महावीर रावनसुत कीन्हेसि लघु संधान ।
कपिदल आगे होत जत सभ उर लागे वान ॥
भौ सरसिथिल महावल खेता । गै तनपीर भयो कपि चेता ॥
नाना भूधर विटप प्रहारहिं । बहु बल करि कै क्रोध सँमारहिं ॥(अल)
७६।१०^v बीभीषन मन कीन्ह तिवाना । बोला मंत्र लागि सो काना ॥
बरप्रसाद एकर एुह हाला । ब्रह्मदत्त कर लेहु कराला ॥

एहि तें नास होइ जग धारा । आन वान सौं मरै न मारा ।।
सुनि मति चित्त विभीषन आना । चाँप चढ़ाइ लीन्ह सो वाना ।।(अल)
७६।१२v तव त्रिसूल डारेसिं लछिमन पर । काटि कीन्ह दसकंठ धरनि धर ।।
सिखर एक पुनि सो लेइ धायो । राम अनुज सोउ काटि खसायो ।।
दोहा। आयुध विविध छाड़ि तहँ रज सम कृत फनि ईस।
हरष विवस कपि रिंछ सव विवुध सहित सुर ईस।।
विविधायुध सो छाड़ै लागा । रन कारन छूटै जिमि नागा ।।
राम अनुज सर सिंघ समाना । उमा ग्रसत छूटिहि अभिमाना ।।(मया, नाग, मन)
७६।१५v देखिअ जिमि रवि तेज समाना । फुकरत मनहु व्याल अनुमाना ।।(मया, नाग, मन)
v कनकफाँक सर तीछन धारा । मानहु वीजुछटा उजिआरा ।।
जोति उदित धरु राकस वाना । सहस किरनि विस्तर जनु भाना ।।(अल)
७६।१६v छंद। लगत वान भौ प्रान वेकल करी अति मेदनि परे ।
नहि परत सीस फनीस डोलु गिरि लोलु सागर खरभरे ।
गिरत वीर न धीर वाँधहिं जातुधान सब भजि चले ।
गरजि कीस अहीस वर्नहिं भलेह सामी खलभले ।।(अल)
७६।१६/१v सीस भुजा काटेउ नृप नागा । घन समान सो गर्ज अभागा ।।
सीस परेउ धरनी जव हई । भुजा दाहिनी नभ सो गई ।।(मया, नाग, मन)
७६।१८v जव नीप्रान भएउ घननादा । मारुतसुत कीन्हो मरजादा ।।(अल)
v जो जम कहँ दंडक जमदंडा । हरिद्रोही सुत समर प्रचंडा ।।
महिमा अमित महा वलसीवा । जासु प्रभाउ अभय दसग्रीवा ।।
भुजवल सुरनायक वस कीन्हे । चौदह भुअन जीति जसु लीन्हे ।।
रिपु तरु लखन मूल खनि गंजेउ । जिमि गज कमल नाल गहि भंजेउ ।।
जिमि वासव गहि कुलिस कराला । कीन्ह विघट गिरिपच्छ विसाला ।।
रन सागर मह परेउ सरीरा । तरै दारु जिमि रुधिर सुनीरा ।।
दंत विकट मुख परम भयावन । चिकुर कपिस चख असुभ डेरावन ।।
रसना लाल रंग जनु जावक । दव की सिखा सोह जिमि पावक ।।
पाइ सुआएसु रिषय कपीसा । कर गहि लीन्ह वुअन कर सीसा ।।
दोहा। करि श्रम मारेउ महारिपु राम अनुज रनधीर ।
निडर सुमन वरषहिं विवुध कहि जयगिरा गभीर।। (मया, नाग, मन)
७७।५v नाइ माथ कपिराज विभीषन । जानि कुँ पुछउ मानि कुलपूजन ।।
मधुरा वचन विभीषन भाषा । कुललज्जा प्रताप प्रभु राखा ।।
नाथ सो भएउ सिंध सब काजा । बल तोरा रजनीचरराजा ।।
वर दलमलि प्रभु माया धारी । लंछन हतो बीर परचारी ।।
सुनि कपि रिंछ महावल गाजा । रावन स्रवन सो परी अवाजा ।।(अल)
७७।६v दमकि बीस भुजा महि मारी । सकुचि सेष फन रहे सँभारी ।।

कर सों खर्ग पुहमि मो डाला । अरु जिन्ह अत्र जितो दिगपाला ।। (अल)
V दुखित हृदय नयन भरि आवा । जनु सिरमनि अहिराजु गवावा ।।
हा सुत संतत अज्ञाकारी । करि विलाप दसकंठ पुकारी ।।
सक्र आदि जीतेंहु सब देवा । सुर मुनि नाग करहिं सब सेवा ।।
दूसर रहेंउ न भुजवल दापा । स्वर्ग भूमितल तपेंउ प्रतापा ।।
एहि विधि करि बिलाप लंकेसा । भएउ तेजहत सुनु उरगेसा ।। (मया, नाग, मन)
८१।६V एकन्ह एक मर्दि महि पारहिं । रामक्रिपा सब सैन सँघारहिं ।। (मन)
८३।३V देखि दसानन बोलेंउ बैना । रीसन्ह बीस अरुन भौ नैना ।। (अल)
९८।१५V केहि बिधि मरिहि बिस्व उर घाता । (मया)
९९।१२V प्रभु क्रीड़त एह मनहिं बिचारी । कोउ न जान एह केलि खरारी ।। (नाथ)
१०१।२१V लै डारु दसमुख सेन पर अति कोपि ते परलै करे ।। (मन)
१०५।१७V सुनत बिभीषन बचन क्रिपाला । म्रितक समिप आए तेंहि काला ।। (नाथ)
१०८।९V संग लिए त्रिजटा निसिचरी । चली राम पहि सुमिरत हरी ।। (रघु, परि)
११४।१२V नंदी चढ़े महागन संगा । सोभित मानु गौरि अरधंगा ।।
झलक गंग सिर चंद्र लिलारा । नील कंठ छवि गरल कि धारा ।।
कर खप्पर सिर नर उर माला । अहिकुलपति स्त्रुति गरे बिसाला ।।
तीन नयन पिंगल सिर जटा । स्वेति विभूति देह अति छटा ।।
डिमि डिमि डिमि डवरू कर वाजे । सृंगि गरे मृगछाल विराजे ।।
तरुन अरुन अंबुज सम चरना । नखदुति भगत हृदय तम हरना ।।
मनिमय भूति भुषन त्रिपुरारी । आनन सरदचंद छवि हारी ।।
एहि विधि सोह कामरिपु कैसे । धरे सरीर सांतरसु जैसे ।।
दोहा। नासि लंकपतिसयन सब बैठे कोसलधीस ।
सँग चारन गंधर्व गन आएउ तहँ गौरीस ।। (मया, नाग, मन)

सप्तम सोपान (उत्तरकांड)

४।१२V दोहा। सधन चोर मग मुदित मन धनी गही ज्यों फेंट ।
तिमि सुग्रीव बिभीषनहि भई भरत सों भेंट ।। (व्रज)
२५।४V करहिं सकल सुर दुर्लभ सेवा । नाना रूप सकल मुनि देवा ।। (पट)
२६।१०V जहाँ त्रिप[ति] श्रीराम बिराजा । सकल मुनिन्ह कै आव समाजा ।। (पट)
५९।८V मन क्रम बचन सुनेंहु उपदेसा । तव तव मेटिहि सकल कलेसा ।। (नाथ)
७५।७V नटक्रित बिकट करत रघुराया । लखि न परत मोहि निर्मित माया ।। (नाथ)
८१।५V अवधपुरी प्रति प्रति निज रूपा । देखेंउ रूप अनेक अनूपा ।। (पट)
८३।८V अति विनीत सुनत [हि] मम बानी । कीन्हि क्रिपा सो सुनहु भवानी ।। (नाथ)
९०।७V बिनु संतोष कि समता आवै । बिना ग्यान नहि मारग पावै ।। (नाथ)
९१।८V महिरज सरिस कहहिं स्त्रुति संता । कोटि जतन नहि पावहिं अंता ।। (नाथ)

९९।८^{v} दोहा। बड़े भक्त जे जगतगुर उपदेसहिँ सब काहु [काउ]।
सर्वस हम कहुँ अर्पि द्यो लेउँ जन्म कर ताउ ॥ (व्रज)
१०८।३/१^{v} नमामी सदासीवरूपं निरीहं। (अल)
१०८।३/२^{v} महाकालकालं पतीसं गौरीसं। (अल)
१०८।४/१^{v} सदा ध्यानजोगं सुजोगी दयालं। (अल)
१०८।४/२^{v} उदासी कपाली न माया न मोहं। (अल)
१०८।८/१^{v} जटाजूटसोभा वृषानं युरालं। (अल)
१०८।८/२^{v} सदा ग्यान बुंधी दिनाकार स्वामी। (अल)
१०८।१०/१^{v} प्रभावं विभावं गदाधार स्वामी। (अल)
१०८।१३/१^{v} भजामी गृजाधीस लीलाट इंदू। (अल)
१०८।१३/२^{v} सुरारी नृपाईस भग्ती वराना। (अल)
१०८।१५/१^{v} न जानामि ग्यानं [...] भावं न दूजा। (अल)
१०८।१५/२^{v} प्रसन्नं वदन्नं मयामोह भूल्यं। (अल)
१०८।१६/१^{v} चरंनं सरंनं सदा संभुध्यानं। (अल)
१०८।१६/२^{v} नमामी उमापंति पादा सुदंभो। (अल)
१२०।१५^{v} खल कामादि निकट नहि जाई। बसै भग्ति जा के उर आई*॥ (अल)
१२२।१२^{v} औरौ भऐ एक तें एका। सुर नर मुनि इत्यादि अनेका॥ (नाथ)
१२२।१३^{v} किए जोग तप ज्ञान बिरांगा। मिलहिं न रघुपति विनु अनुरागा†॥ (व्रज+)

---

* मिलाइए ७।१२०।६ से। † मिलाइए ७।६२।१ से।

---

(३) अभावसूचक सारणी

प्रथम सोपान (बालकांड)

श्लो	२।१-२	उद ।	१४।२४	उद ।
	३।१	नाथ ।	१५।१-२	उद ।
	५।१-२, ६।१-४	उद ।	१५।५-१३	नर ।
	७।१/२	पट ।	१६।१-३	नर ।
मंसो	५।१	उद ।	१६।४-५	उद, नर ।
	५।२	उद; ÷, √± पट ।	१६।६-८	नर ।
दो	२।५-६	उद ।	१६।९-१०	उद, नर ।
	३।१३-१४	उद ।	१७।१-२	नर ।
	४।८	उद, पट ।	१७।३-६	उद, नर ।
	४।९-११	उद ।	१७।७-८	नर ।
	५।३-४	उद ।	१७।९-१०	उद, नर ।
	६।३	जवा ÷ ।	१७।११-१२	नर ।
	७।१७-२०	उद ।	१८।१-२	उद ।
	८।४-५	उद ।	१८।४	उद ।
	८।८-१४	उद ।	१८।५	व्रज ।
	९।१२-१३	उद ।	१८।६	उद ।
	१०।१-९	उद ।	१८।११-१२	उद ।
	१०।१५-१६	उद ।	२०।६/२	जवा÷ ।
	११।१-११	उद ।	२३।९	जवा÷ ।
	१२।५-९/२	उद ।	२४।४	जवा ।
	१२।१०/१	वड़ ÷ ।	२७।२	नाथ ।
	१२।१०-१४	उद ।	२८।१४-१५	पट, नाथ ÷ ।
	१३।१-५	उद ।	२९।८	पट, नाथ÷ ।
	१३।१८-१२	उद ।	२९।११-१२	उद ।
	१४।१-६	उद ।	३०।११-१२	उद ।
	१४।११/२	कुंज ÷, √± ।	३१।१-६	उद ।
	१४।१३-१६	उद ।	३१।४/१	मन÷ ।
	१४।१९-२१	उद ।	३१।५/२	मन ÷ ।
	१४।२२-२३	वड़÷, उद ।	३१।६	मन ।

* संक्षिप्त होने से सारणी में 'बाल' के अभाव वाले और अयोध्या कांड में नहीं रखे गए ।

३१।८	जवा÷ ।
३२।१२/२-१३/१	पट ।
३३।१–८	उद ।
३४।१–२	उद ।
३५।८	उद ।
३५।९/१	जवा ।
३६।५	उद ।
३६।६	उद, पट ।
३७।२	उद ।
३७।९–१०	उद ।
३७।१२–१३	उद ।
३७।१४	उद, पट, नाथ÷ ।
३७।१५	उद ।
३८।१–११	उद ।
३९।१	उद, नाथ ÷।
३९।२–८	उद।
३९।९	जवा÷ ।
४३।११–१२	रघु–, जवा, उद ।
४४।७/२	उद ।
४६।२/२	उद ।
४६।३	उद ।
४६।६/२	जवा÷ ।
५५।४/२	वड़÷ ।
५८।७	वड़, राम÷,++,जवा÷, नाग, नर, पट, नाथ।
६१।१–२	राम ÷ ।
६६।७–८/१	उद ।
६७।५–६/१	नाग ।
६९।१–२/१	उद ।
७३।३/१	उद ।
७८।३	उद ।
८६।७/२–८/१	पट, नाथ ।
८७।७/२	रघु– ÷ ।
९७।६/२	नाग, उद÷ ।
९९।२	वड़÷ ।
९९	
१०५।७	पट ।
१०८।६–७	पट ।
११२।७	उद ।
११९।८	नाथ ।
१२७।१/२	जवा÷ ।
१३२।६/२	उद, व्रज÷ ।
१३५।८/२	जवा÷ ।
१३६।५	पट, नाथ÷ ।
१३६।८/२	उद, व्रज÷ ।
१४०।७	पट ।
१४१।४/२–७/१	जवा÷ ।
१४४।१	जवा ।
१४७।३/२	उद ।
१४७।५–१०,	
१४८।१–४	पट ।
१४८।७–८	राम÷ ।
१४९।५–६/१	नाग ।
१४९।५/१	पट÷ ।
१५०।३–४/१	÷, √±रघु ।
१५५।३	पट ।
१५६।५/२	जवा ।
१५८।१–३	['नृपति' से 'भानु' तक] कुंज÷ ।
१६२।९–१०	व्रज÷ ।
१७०।२	नाथ ।
१७४।१–२	उद ।
१७८।४	जवा÷ ।
१७८।११–१२	नाथ÷ ।
१८२।१६–१७	पट, नाथ÷ ।
१८६।७	राम÷,जवा÷, नाथ÷।
१८६।८	राम÷, नाथ ÷ ।
१८८।४	नाग ।
१८८।५	नाथ÷।
१९६।३	जवा÷ ।
१९६।५	पट।

२०।१।१/२–२	नाग÷ ।
२०४।३/१	पट÷, नाथ ।
२०५।६/२–७	नाग ।
२०८।२/२	उद, व्रज÷ ।
२०८।३	नाग÷ ।
२२५।५–६/१	नाग÷ ।
२२५।६/२	नाग ।
२२५।७/२–८/१	पट÷ ।
२२७।२/२	÷, √±राम ।
२२८।६	पट, नाथ ।
२२९।१०/२	नाग÷ ।
२३०।१/१	नाग÷ ।
२३२।१०	उद ।
२३३।१/१	उद, व्रज÷ ।
२३४।७/२–८/१	पट ।
२४०।६	रघु– ।
२४६।२/२	उद ।
२४७।८	उद ।
२४७।९	['येहिं' से 'लछि' तक] उद ।
२५७।६/२	जवा÷ ।
२६१।४/२	व्रज÷ ।
२६२।७	रघु– ।
२६४।२–५	जवा ।
२६४।६	रघु– ।
२६४।८	पट ।
२६६।८	पट ।
२७०।१०	नाग÷ ।
२७२।५	जवा÷ ।
२७४।१/२–२/१	÷, √±रघु– ।
२७४।८	बड़ ।
२७६।८	उद ।
२७९।१–१०	पट ।
२७९।४/२–५	जवा÷ ।
२८२।७	रघु– ।
२८३।७/२	नाग ।

२८९।२	मन ।
२९१।५/२–६/१	नाग ।
२९४।२	नाग ।
२९७।२/२	उद ।
२९७।४/२–५/१	पट ।
३०२।१	कुंज÷ ।
३०४।६/१	जवा÷ ।
३०४।६/२	उद ।
३०४।७	उद ।
३०८।६–७	जवा ।
३०९।४/२	पट ।
३११।१–२	पट ।
३१७।६	पट ।
३२०।७–३२१।८	पट ।
३२३।५/२	उद ।
३२३।६/२	उद ।
३२४।८	जवा ।
३२६।४	मन÷ ।
३२६।५/१	मन ।
३२७।१४	राम÷ ।
३२७।१६	पट÷ ।
३३०।२/२–३/१	÷, √±नाग ।
३३०।५–६/१	उद ।
३३१।६	मन ।
३३४।७	पट ।
३३५।३	['नयन' के 'यन' से 'चारीं' तक] रघु÷ ।
३३५।४	['को' से 'नयन' के पहले 'न' तक] रघु÷ ।
३३७।४	व्रज ।
३३९।२	व्रज ।
३४३।९–३४४।८	पट ।
३४५।९–१०	['विपुल' के 'पुल' से 'चारि' तक] नाग÷ ।
३४६।७–८	['सजहिं' से 'कल' तक] नाग ।

३४७।२–३	÷, √±राम ।
३४७।४	जवा ।
३५२।७–३५३।६	पट ।
३५५।३	नर ।
३५५।४	मन ।
३५८।२/२	नाग ।
३६०।२/२–३/१	जवा ।
३६१।१–३/१	['कथा' से 'भएऊ' तक] उद ।
३६१।२/२	नाग ।

द्वितीय सोपान (अयोध्याकांड)

मंश्लो १–३	अल ।
दो २।२	राजा, अल ।
३।३	÷, √±वाग ।
५।३	राजा, राम+, अल ।
६।१	['उ' से 'पानी' तक] ÷, √±रघु ।
६।२	['औषध' से 'कहें' तक] ÷, √± रघु ।
२०।४	राजा, राम+ ।
२४।७/२	खोज÷ ।
२७।६	राजा÷, राम+ ।
२९।५	रघु ।
३१।५	पट, नाथ ।
३५।१०	['तोहिं' के 'हिं' से 'मोर' तक] ÷, √± नाग ।
३६।१	÷, √± नाग ।
३६।३	['बध' से 'प्रभुताई' तक] व्रज ।
३६।४	व्रज ।
३६।५/१	['तोर' से 'मोर' तक] व्रज ।
४५।१–२	÷, √±राम ।
५२।२/२	उद ।
५३।७/२	उद ।
५७।६	रघु ।
५९।४/२	व्रज ।
६१।३/२	['हमार' के 'मार' से 'रहहू' तक] ÷, √±नाग ।
६१।४	÷, √±नाग ।
६१।५/१	['येहि' से 'नहिं' तक] ÷, √± नाग ।
७१।७–७२।२	नाग ।
७२।६/२	व्रज ।
७९।५/२	नाग ।
८७।७	['गयेऊ' से 'भयेऊ' तक] ÷, √±रघु ।
८७।८	['सुमिरत' से 'स्रमु' तक] ÷, √± रघु ।
९३।४/२–५	÷, √± पट ।
१०१।६–७	पट ।
१०४।४/२–५	व्रज ।
१०८।५	वाग ।
१०९।२–३/१	÷, √± नाग ।
११२।८	पट ।
११३।२/२–३।१	राजा÷ ।
११६।१–१०	पट ।
१२२।३	बाग, व्रज ।
१२४।४/१	÷, √± राम ।
१२८।५	पट ।
१३२।१०	['मुनि' के 'नि' से 'समेत' तक] नाग÷ ।
१३३।१	नाग÷ ।
१३३।२/१	['प्रनामु' तक] नाग÷ ।
१३३।५	÷, √±पद ।
१४०।२–३/१	नाग÷ ।

१४३१२/२–३	नाग।
१४५।२–३	÷, √±राम।
१५०।३/२	उद।
१५२।७–८।१	खोज÷।
१६२।३/२–४।१	खोज÷।
१६२।४/२	खोज÷; ÷, √± पट।
१६२।५/१	÷, √±पट।
१६७।७	नाथ।
१७३।४	÷, √±राम।
१७६।१/२–२	व्रज।
१८०।४/२–५/१	नाथ।
१८०।८	नाथ।
१८३।१/२–२/१	राजा।
१८४।३	अल
१८६।८/२	व्रज।
१८९।४/२	÷, √± खोज।
१९९।६	अल।
२००।७/२	उद।
२०१।८	नाग÷।
२०४।१–१०	पट।
२१३।१–१०	पट।
२१४।७	पट।
२१५।७	÷, √±राजा।
२१७।२	राजा।
२१७।८	पट।
२१९।४–५	व्रज।
२२१।१–८	व्रज।
२२३।१–८	व्रज।
२२४।१	नाग÷।
२२४।२	रघु, मन, नर।
२२७।६	पट।
२२८।७	['मोरा' से 'थोरा' तक] व्रज।
२२८।८	['कहँ' से 'साथ' तक] व्रज।
२३१।१–७	व्रज।
२३१।८	वाग, व्रज।
२३२।२	पट।
२३३।५	व्रज।
२३३।७	व्रज।
२३४।१–८	व्रज।
२३५।८	व्रज।
२३७।५	व्रज।
२३७।८	व्रज।
२३९।३/२–४	खोज÷।
२३९।६	व्रज।
२४०।४	व्रज।
२४१।७	व्रज।
२४२।१–१०	पट।
२४३।७–८/१	उद।
२४४।८	व्रज।
२४६।२	व्रज।
२४७।२–३	व्रज।
२४८।१–५	व्रज।
२४८।६	व्रज, पट।
२४८।७–८	व्रज।
२४९।१–१०	व्रज।
२५०।१–७	पट।
२५०।८	व्रज, पट।
२५०।९–१४	पट।
२५१।२–३	उद, पट।
२५१।५	व्रज।
२५२।१–२	व्रज।
२५२।३	उद, व्रज।
२५२।४–५	व्रज।
२५२।६/२	खोज÷।
२५२।६	व्रज।
२५२।७–८	व्रज।
२५३।५	व्रज।
२५४।७	व्रज।

२५५।२/२–३ राजा।
२५५।४/१ राजा।
२५५।४ पट।
२५७।५/२–६।१ व्रज।
२५८।१ व्रज।
२५८।७ व्रज।
२५९।२ व्रज।
२६०।३–४ व्रज।
२६२।४–५।१ उद।
२६३।७ ['तासु' के सु' से 'संकोचू' तक] ÷, √± रघु।
२६३।८/१ ['ता' से 'आयसु' के आय तक]÷, √± रघु।
२६४।७–१० व्रज।
२६५।१/२ व्रज।
२६५।२/२–३ व्रज।
२६५।६ व्रज।
२६६।३–५ व्रज।
२६७।३ व्रज।
२७०।१–२७५।८ व्रज।
२७८।५/२–६।१ राजा, परि।
२८१।१–८ व्रज।
२८१।२/१ खोज÷।
२८४।१/२ नाग÷।
२८४।५ व्रज।
२८५।४/२ व्रज।
२८५।५/२ व्रज।
२८५।६/२ व्रज।
२८५।७/२ व्रज।
२८६।१–२८७।८ व्रज।
२९०।६/२–७/१ राजा, राम+।
२९१।२ व्रज।
२९१।५/२–६ खोज÷।
२९२।५ व्रज।
२९२।८ व्रज।
२९३।२–३ व्रज।
२९५।२ रघु, बाग, नाग, मन, उद, व्रज।
२९६।१ व्रज।
२९६।२ उद, व्रज।
२९६।३ ['सोक' से 'जग' तक] उद।
२९६।३–४ व्रज।
२९६/५ उद, व्रज,।
२९६।६ ['छमब' से 'वचन' तक] उद।
२९६।६–८ व्रज।
२९७।३–४ व्रज।
२९७।६/२ व्रज।
२९८।५ व्रज।
२९८।८ व्रज।
२९९।१–८ व्रज।
३०३।५–६ व्रज।
३०४।१–८ व्रज।
३०४।१० उद।
३०५।१/१ उद।
३०५।४ व्रज।
३०८।१–८ व्रज।
३११।८ व्रज।
३१२।३/१ ÷, √± राम।
३१२।४ व्रज।
३१३।२ व्रज।
३१५।५ व्रज।
३१६।१–८ व्रज।
३१७।३ व्रज।
३१९।३ व्रज।
३२०।५ व्रज।
३२०।७ व्रज।
३२१।४ व्रज।
३२१।९–३२२।६ पट।

३२२।७	व्रज, पट ।
३२२।८	पट ।
३२३।५	मन ।
३२४/३	व्रज ।
३२४।४/२–५	उद ।
३२४।७	रघु, वाग, मन, उद, व्रज ।

तृतीय सोपान (अरण्यकांड)

मं श्लो १।१–४	वाल, मन ।
२।१–४	मन ।
मं सो १।१–२	पट ।
दो १।९–१०	वाल, मन, पट ।
४।१४	व्रज ।
६।८	नाथ ।
६।१५–१८	राय, नाथ ।
८।४/२–५/१	÷, √± राम ।
९।४–६	[‘अस्तुति’ से ‘मुनिन्ह’ तक]÷, √± रघु ।
११।१५/२–१६/१	अल, पट ।
१३।२–३/१	व्रज ।
१७।१	नाथ ।
२१।९–१०/१	उद ।
२४।९–१०	पट ।
२९।१७/२–१९/१	पट ।
२९।१९	नाथ ।
२९।२७–२८	व्रज ।
३०।१०/२–११/१	पट ।
३०।१३/२–१५/१	पट ।
३२।१०	अल, पट ।
३२।११–१३	अल ।
३८।१३–३९।६	नाथ ।
३९।७–८	व्रज, नाथ ।
३९।११–१२	वाल ।
४०।३/२–४/१	अल ।
४२।३	पट, नाथ ।
४५।११	[‘चरन’ से ‘गेह’ तक] उद ।
४६।१	[‘निज’ से ‘अधिक’ तक] उद ।

चतुर्थ सोपान (किष्किंधाकांड)

मं श्लो—मं सो	पट ।
२।७	परि ।
३।२–३	मन ।
७।१०–११/१	उद ।
१२।१०–१३।८	पट ।
१५।१०/२–११	व्रज ।
१५।१५–१६	पट ।
१६।३/२–४/१	व्रज÷ ।
१८।१	पट ।
१९।८/२–१०	[‘जहँ’ से ‘देखि’ तक] ÷, √± रघु ।
२१।२	पट ।
२३।४	मन ।
२३।५/२–६	नाग ।
२३।७	वाल, अल, मन, उद, पट ।
२३।८	मन ।
२४।७	पट ।
२५।३–४/१	नाग ।
२६।२	वड़, वाल, मन÷, उद, पट ।
२६।६–८	वड़, वाल, मन, उद, पट ।
२६।९	वड़, वाल, नाग, मन, उद, पट ।
२७।३–४	वड़, वाल, अल, मन, उद ।

२७।५	नाग।	३०।१–२०	पट।
२७।६	बड़, वाल, अल, मन, उद।	३०।३/१	मन÷।
२६।४	परि।	३०।४/१	मन।
२६।५	नाथ÷।		

पंचम सोपान (सुंदरकांड)

मं श्लो १।४	पट, नाथ।	३६।११–१२	मन, व्रज÷।
दो ३।१७	पट।	४२।६	राय।
३।१६	पट।	४२।७/२–८/१	पट।
३।२०–२१	राम÷।	४८।६–८	['नहिं' के 'हिं' से 'प्रिय' के 'प्रि' तक] दुलही÷।
२२।१/२	नाग।		
२२।१	नाथ।	४८।८/२	बड़÷।
२६।३/१	राय।	५०।६/१	÷, √± राम।
२८।५	पट, नाथ÷।	५४।१–१०	पट।
३२।७	पट।	५६।६	वाल, राय।
३५।७/२	उद।	५६।१०/२	उद।
३६।४	वाल।	५७।५–६	बड़÷।
३७।६–११	पट।	५८।२–५६।१	पट।
३६।७/२	नाग।	५६।८	व्रज÷।

षष्ठ सोपान (लंकाकांड)

दो १।१०–११	पट।	३३।६	वाल।
७।४	पट।	३४।११–१४	वाल।
८।७	पट।	३४।१५–१६	रघु, परि, नाग, उद, व्रज।
६।८–६	वाल, व्रज÷ पट,।	३५।५	पट।
१३।३/२	राम÷।	३५।१३	बाल।
१३।११–१२	व्रज÷।	३६।१–२	बाल।
१५।११–१२	रघु–, नाग, मन, उद, व्रज÷।	३६।४	बाल।
१६।११–१२	पट।	३६।५–६/१	उद।
१६।६	पट।	३६।३	बाल।
२२।११–१२	पट।	३६।७	बड़, रघु, अल, नाग, मन÷, उद, व्रज।
२३।१३–२४।८	वाल, पट।		
२६।३	पट।	४०।३	मया÷।
२६।८	पट।	४०।६–१०	बाल।
३२।१०	मन÷।	४१।६–१०	['धरि' से 'झपटहिं' तक] मया।
३२।१३	वाल।		

४३।२/२–३/१	बाल।
४६।११	वाल।
४६।६–१४	बाल।
५२।६–५३/८	अल।
५५।४	व्रज÷।
५५।५/२–६	उद।
५७।७/२–१०	मया÷।
५६।२/१–४/१	['भरतु' से 'मलीन' तक] व्रज÷।
६१।३	मया।
६१।४/१	÷, √± मया।
६१।६–१८	वाल।
६२।१२	पट।
६८।१–२	वड़।
६६।५	अल।
७०।१	मया, नाग, मन।
७०।२–५	बाल।
७०।६	अल।
७१।११/२–१२/१	अल।
७२।५	वाल।
७२।१०–११	बाल, अल।
७३।१/२–२/१	अल।
७३।७/१	अल।
७३।११–१२	वाल।
७३।११–१२/१	उद।
७४।१–२	वाल, पट।
७४।७–८	वाल।
७४।१०/१	मया।
७४।१३–१४	बाल, अल, पट, नाथ।
७५।७/२–८	पट।
७५।८	वाल।
७५।६	वड़, रघु, बाल, मया, अल, नाग, मन, उद, व्रज।
७५।६/२	पट।
७५।११–१४	वाल, पट।
७६।६–१०	वाल, पट।
७६।७/२–८	उद।
७६।११–१२	वाल, अल, पट।
७६।१३	वाल, मया, अल, नाग, मन, पट।
७७।१	मया, नाग, मन।
७६।२–६	वाल, पट।
७६।२/२–३	उद।
८०।३/२	अल।
८०।११	नाथ।
८०।१५	अल।
८१।४/२	मन।
८१।१०–११	वाल।
८६।३–४	वाल, पट।
८७।५–६/१	नाथ।
८८।६–१०	मन।
८६।३	पट।
८६।४	वड़, रघु, मया, नाग, मन, उद।
६८।११–१२/१	['करि' से 'बीरा' तक] व्रज÷।
६६।७–११	वाल, पट।
१००।१५–१६	['मारि' से 'कीन्ह' तक] मया÷।
१०१।४/२–५	मया।
१०१।८–६	पट।
१०१।१४/२–१५/१	मया, पट।
१०१।१५/२–१७	['कटकटहिं' से 'कोसलराज' तक] उद।
१०१।१६	राम÷।
१०१।२२	मन।
१०३।१०	पट।
१०४।१२	व्रज÷।
१०४।१५–१६	वाल।

१०५।४–५ ['करत' से 'अनुजहिं' के 'अनु' तक] मया÷ ।
१०७।४/२–५/१ नाथ ।
१०७।१०–११ मया ।
११०।८/२–१०/१ पट ।
१११।१४/२–१५ मया÷ ।
१११।१७/२–१९/१ पट ।
१११।१९/२–२०/१ मया÷, अल, पट ।
१११।२०/२ मया÷ ।
११३।२/२ मया ।
११३।४ मया, नाग, मन ।
११५।७/२ मया÷ ।
११९।१० पट ।
१२०।९–११ पट ।

सप्तम सोपान (उत्तरकांड)

श्लो १–३ व्रज ।
दो १।८ [चतुर्थ चरण मात्र]पट ।
३।१५–१६ व्रज÷ ।
१२।७–८ व्रज÷ ।
१२।१३–१४ ['दिनकर' से 'मुकुटांगदादि' तक] उद ।
१६।८ पट ।
१७।५–६ ÷, √±राम ।
२०।६–७ वाल ।
२२।४ पट ।
२३।७ पट, नाथ ।
२५।३–५ उद ।
२९।१ व्रज, पट ।
३०।५–६ रघु ।
३०।६/२–७/१ पट ।
३२।८ पट ।
३३।२–५ ['रघुपति' से 'देखि' तक] उद ।
३३।६/२ राम÷, व्रज÷, पट ।
३३।७/१ व्रज, पट ।
३४।५/२–७/१ नाग ।
३५।४ बलि ।
३६।८–३७/५ व्रज÷, पट ।
३९।६ व्रज÷ ।
४०।१–८ व्रज÷ ।
४२।५–६ राम÷ ।
४३।५–६/१ व्रज÷ ।
४४।१ बलि÷ ।
४४।२ बलि ।
४७।४–५ मन÷ ।
५१।७ बलि ।
५२।७/२–८/१ व्रज÷ ।
५२।१२/१ उद ।
५२।१२/२–१३ नाग, उद ।
५३।३ व्रज÷, बलि ।
५३।४/१ व्रज÷ ।
५४।३ उद ।
५४।५ बलि ।
५४।५/२–६/१ व्रज÷ ।
५७।१० व्रज÷ ।
६२।८ ÷, √±राम ।
६२।१३–१४ नाग ।
६३।११–१२ नाग ।
६४।३/२ उद ।
६४।४/२ उद ।
६५।४/२–५ रघु÷ ।
६६।५ बलि ।
६६।९–६७/७ पट ।
६८।१–८ व्रज÷ ।
७१।१ व्रज÷ ।
७१।२/२–३/१ व्रज÷ ।
७१।१०–११ बड़÷ ।

७३।५–६	व्रज÷ ।	११४।१४	नाग ।
७५।६–१०	अल, व्रज ।	११४।१६–२०	अल ।
७६।८	व्रज÷ ।	११७।५/२–६/१	अल ।
७९।३	अल ।	११७।२१–२२	पट ।
८०।१/२–२/१	अल ।	११८।७/२–६	['वुद्धिहिं' के 'हिं' से 'बुद्धि' तक] नाग ।
८१।११–१२	पट ।	११९।३	अल ।
८२।११–१२	व्रज÷ ।	१२०।४–६/१	['आवा' से 'नहिं' तक] नाग ।
८३।७–८	अल ।		
८८।३	पट ।	१२०।५/२–६/१	अल ।
८९।६	अल ।	१२१।१४	अल ।
९१।२	अल ।	१२१।२६/२–३१/१	['उपजहिं' के 'पजहिं' से 'तीनिउ' तक] नाग ।
९४।४	बलि ।		
९४।११–१२	अल ।	१२२।१५	वलि ।
९५।७	अल ।	१२२।२४–२५	अल, नाग ।
९६।६	अल ।	१२५।५	वाल ।
९८।१–८	व्रज÷ ।	१२५।१३–१४	रघु– ।
१०३।२–३	अल ।	१२६।३/२–४/१	अल ।
१०६।१२/१	बाल ।	१२७।७–८	पट, नाथ ।
११०।७	पट ।	[अंत के दोनों] श्लोक	बलि ।
११२।५	अल ।	श्लो १।३–४	मन ।
११२।११–१३	व्रज÷ ।		
११२।१५	व्रज÷ ।		

---

(४) प्रक्षेप

प्रथम सोपान (बालकांड)

कलिधर्म प्रसंग

३३।१०→ प्र (४३।१०ᵛ जवा, ३३।१०ᵛ उद)

रेवा तीर सुदेस सुगामा । बसइ बिप्र एक संकर नामा ॥
धरमसील सुचि साधुसुभाऊ । भूलि कुमग पग धरइ न काऊ ॥
सुत बिनीत पतिपूजक नारी । गृहसमाज सब साज सुखारी ॥
रेवा मज्जनु सज्जनसेवा । प्रिय गुर अतिथि पितर महिदेवा ॥ ४
सुजनसिरोमनि गुन गन गेहू । सिवसेवक हरिचरन सनेहू ॥
सुनइ निगम आगम बिधि नाना । रामायन इतिहास पुराना ॥
लोक चतुर परलोक सयाना । जीवनु धनु हरि हर गुन गाना ॥
आश्रम बरन धरम जुगधरमा । करम बिकरम सुकरम सुधरमा ॥ ८
दोहा । ज्ञान बिराग उपासना करम अनेक प्रकार ।
संकर सादर धरम सँब सुने बारही बार ॥ १ ॥
मुनिप्रनीत नृपमनि मनु बानी । नरक सरग अपबरग कहानी ॥
सब हित धरमरहस्य घनेरे । पुन्य प्रबंध बिमल बहुतेरे ॥
सुकबि सुभाषित सरल सुहाए । सुने सकल जहँ तहँ सचु पाए ॥
जुगप्रसंग कलिकाल प्रभाऊ । सुनि सुनि सोच भूमिसुरराऊ ॥ ४
मति अनुहारि कहइ कबि सोई । कलि कुचालि जग प्रगट न गोई ॥
कलिमल मलिन सकल नर नारी । बरन धरम नहिं आश्रम चारी ॥
नीच निरंकुस निठुर नृपाला । सचिव स्वारथी क्रूर कराला ॥
राजा सरिस प्रजाउ अभागी । दुसह दुरित दुख दारिद दागी ॥ ८
दोहा । दंभ सहित कलिधरम सब छल समेत बेवहार ।
स्वारथ सहित सनेह सब रुचि अनुहरत अचार ॥ २ ॥
बिप्र सुमारग पाउ न देहीं । बेचहिं बेद धरम दुहि लेहीं ॥
हरिहर परिहरि पूजहिं प्रेता । सभा सुबेष कुचालिनिकेता ॥
बोलत कोकिल करतब कागा । बित हित होम सोम जप जागा ॥
कहत करत षट करम सुजाना । सेवा करि करि लेहिं कुदाना ॥ ४
पूजत पढ़त नहात प्रबीना । छल मलीन मनु धन आधीना ॥
बासर सोमप राति सुरापी । पर अपकार परायन पापी ॥

→प्र प्रक्षेपसूचक चिह्न ।

कलि एहि बिधि बुध बिप्र बिगोए । मूढ़ बिसेषि मुढ़ाइहि खोए ॥
परहिं कूप जहँ दिन दिठिआरे । केहि अवलंबहिं अंध बिचारे ॥ ८
दोहा । धरम सुतीरथ मंत्र सुर मय महिदेव बिचारि ।
ते छलि कलि किए प्रथम बस जो गोहारि सो धारि ॥ ३ ॥
छत्री छलमय कलि मलमूला । बंचक बिप्र बेदप्रतिकूला ॥
अपने धरम न सपनेहुँ चलहीं । समर सिआर सूर छल मलहीं ॥
नीच बिचारु नीच ब्यवहारा । नीच जीविका नीच अचारा ॥
छत्रजाति अभिमान भलेहीं । करम मलेछजाति जस लेहीं ॥ ४
सूर सहाय सबल जग जेई । छत्र सुजाति कहावत तेई ॥
तीसर बरन बिसेषि बिबाकी । सब करि जीवत जीवनि जाकी ॥
मूल सुद्ध नहि सूद सुजाती । सकल बरन संकर उतपाती ॥
आश्रम मध्य मुख्य संन्यासू । तहाँ कीन्ह कलिकाल निवासू ॥ ८
दोहा । बचन बिबेक बिराग मय मानस कलिमल खानि ।
मुंडित मुंड कषाय पट दंड कमंडल पानि ॥ ४ ॥
पिसुन कलहप्रिय पातक पीना । सम जम नियम दया दम हीना ॥
ब्रह्म कहावहिं ब्रह्मनिरूपी । जगबंचक बित हित बहुरूपी ॥
बासर साधहिं जोगसमाधी । भोगपरायन राति उपाधी ॥
बोलनि बेष हंस बग करनी । पंडित बिहित जती गति बरनी ॥ ४
परम मूढ़ परमारथबादी । परमहंस बहु बेष बिषादी ॥
पढ़े बिप्र बिगरहिं जति होता । परमहंस पथ पाप निसोता ॥
आस्रमु नहिं कलि काननबासी । कुटिल कुटीचर कलिमल रासी ॥
बटु ब्रत रहित सकल गुन खाली । पढ़ि गुनि गुरकुल करहिं कुचाली ॥ ८
दोहा । निलज निरंकुस निठुर सठ पाठु थोर बड़ गालु ।
आस्रम बरन बिगोइ सब गलगाजत कलिकालु ॥ ५ ॥
गृही गृहास्रमधरम बिहीना । धरनि धाम धन सोच मलीना ॥
सुर गुर पितर अतिथि अपबादी । स्वारथरत परमारथबादी ॥
कपटी कौल कुमारगगामी । कुधन कुधाम कुभामिनिस्वामी ॥
कुमति कुसील कुजीवन जीअहिं । सुरसरि तीर कूपजल पीअहिं ॥ ४
करहिं अधरम करम मन बानी । चलहिं बामपथ ज्ञानगुमानी ॥
अवगुन अघ न अघाहिं अमापी । चहहिं सुकृतफल पावँर पापी ॥
आस्रम बरन सुधरम मलिन से । जग सर कलि हिम हये नलिन से ॥
थोर बहुत कहुँ कहुँ कोइ कोई । आस्रमु द्रुतिय बरन पहिलोई ॥ ८
दोहा । सकल धरम बिपरीत कलि कलपित कोटि कुपंथ ।
पुन्य पराइ पहार बन दुरे पुरान सुग्रंथ ॥ ६ ॥
निज निज धरम बिमुख सब लोगा । भोगहीन हत रोग बियोगा ॥

छमाछीन पटु पीन प्रकोपू । दिन दिन असुभ उदउ सुभ लोपू ॥
सत्य सनेह सील सुख बीते । सम दम दान दया जन रीते ॥
धरम पंचविध कलिमल भाँडे । सबहिं बजाइ बेदपथ छाँडे ॥ ४
करम कलाप उपासन ज्ञाना । जप तप तीरथ ब्रत बहु दाना ॥
वित हित सकल सदंभ सहेतू । छल मल निधि कलि कपटनिकेतू ॥
कलि उतपात होहिं बहुतेरे । भूमिकंप निरघात घनेरे ॥
उलकपात दिगदाह बिसाला । निसि सुरेसधनु केतु कराला ॥ ८

दोहा । काई सुरसरि बिमल जल मूरति मलिन सुथान ।
फूलहिं फलहिं कुसमय तरु सूचक असुभ निदान ॥ ७ ॥

तिन्ह कर फल दुख दुरित दुकाला । बिबिध ब्याधि बस प्रजा बिहाला ॥
ईति भीति महि कृषी मलीना । फरहिं कुबिटप सुतरु फलहीना ॥
घटहिं सुबस्तु सुनाज सुजोगा । बढ़हिं कुबस्तु कदन्न कुजोगा ॥
बिद्या बनिज कृषी सेवकाई । निपट घोर फलु श्रमु अधिकाई ॥ ४
अन्न पान फल रस लघु स्वादा । पाठ थोर बड़ बाद बिबादा ॥
धेनु थोर पय पय घृतु थोरा । अबल साधुजन खल बरजोरा ॥
सुमन मंत्र औषध गुन लोपे । कपट मंत्र बिष कलिमल रोपे ॥
बरिसहिं ऊसर सालि सुखाहीं । उलटी रीति सकल कलि माहीं ॥ ८

दोहा । गोंड गुआर गँवार नृप जमन महा महिपाल ।
साम न दाम न भेद कलि केवल दंड कराल ॥ ८ ॥

चोर चार लघु लंपट लोभी । सचिव सभासद मल महि छोभी ॥
राज सरिस सब राजसमाजी । प्रजा बिकल बड़ राज बिराजी ॥
देस उजारि नरेस प्रतापा । जरहिं जीव जग तीनिहुँ तापा ॥
भपति बँचक प्रजा अभागी । प्रजा जरहि अवनिप अघ आगी ॥ ४
प्रजा रोझ मृग बिहग समाजा । राजा बिषम बाघ बृक बाजा ॥
महिप मुदित सुनि प्रजा अकाजू । प्रजा कहहिं कब जाइहि राजू ॥
राजउ प्रजउ परसपर खोटे । जग जनमहिं करि कलिमलु मोटे ॥
सुख हित करहिं कुचालि कलेसा । सहहिं दुसह दुख देस बिदेसा ॥ ८

दोहा । प्रीति सगाई सकल गुन बनिज उपाय अनेक ।
कल बल छल कलिमल मलिन डहकत एकहि एक ॥ ९ ॥

बनिक महाजन साहु सुनामा । बोलनि दाहिनि करनी बामा ॥
उभय बरद हर करहिं किसाना । जोतहिं गोमग सर सुरथाना ॥
बाँधि बरद मुहु दावरि देहीं । तेहि अघ सब निसिचर हरि लेहीं ॥
धरनि धाम धन धरम बिहीना । प्रिय परिजन अपमान मलीना ॥ ४
असन बसन बिनु बंधु बियोगी । कुमति कुसाज कुरूप कुरोगी ॥
कलही कुटिल कठिन कटुबादी । फिरहिं बिकल बिललात बिषादी ॥

नींद भूख आलस बस कीन्हे । सुख सदगुन कलिमल हरि लीन्हे ॥
आरत अघी अनाथ अभागी । सब नर नारि जरहिं जठरागी ॥ ८
दोहा । ठाकुर कूर कुसचिव बस पुरुष नारि आधीन ।
गुर बित हित सब सिष्यवस मूरुख बिवस प्रवीन ॥ १० ॥
धनी कुलीन धनी गुनसागर । धनी साधु सब भाँति उजागर ॥
विबुध बेद गुर विप्र विरोधी । धनी पूजिअहि पापपयोधी ॥
विनु धन गुनिगन गरहिं गलानी । सहहिं निरादर घर घर मानी ॥
धन हित कहहिं दिवस कर राती । नीचहि नवहिं बड़े सब भाँती ॥ ४
साधु सुजाति सुसील सुजाना । बिनु धन जन दुख दोष निधाना ॥
कलि केवल धनमूल भलाई । वुधि बिवेक बल विनय बड़ाई ॥
प्रीति सहेतु अकारन कोही । सब पितु मातु बंधु गुर द्रोही ॥
पिसुन पाँच पंडित छलवादी । बकता लाबर कवि अपवादी ॥ ८
दोहा । चोर चतुर बटपार भट प्रभु प्रिय भड़ुवा भंड ।
सब भंछक परमारथी कलि सुपंथ पाषंड ॥ ११ ॥
सब कवि कोबिद कलानिकेता । साधक सिद्ध सधरम सचेता ॥
हम सब भाँति बड़े सब छोटे । हम विनु खोरि खरे सब खोटे ॥
सकल कहहिं हम स्ररिस न दूजा । को केहि मानइ को केहि पूजा ॥
लोक बेद मरजाद बिसारी । स्व नर नारि जथारुचिकारी ॥ ४
वकता सब कोइ सुनइ सुवानी । सब जाचक जग कोउ न दानी ॥
सब सिखवहिं जग सुनइ न कोऊ । गुर सिख अंध बधिर सम सोऊ ॥
सुत पितु मातु हाथ बिनु ब्याहे । पुनि रिपु होहिं नारिमुहु चाहे ॥
तियवस तनय बसहिं ससुरारी । परिहरि लोकलाज कुल गारी ॥ ८
दोहा । कामचारिनी करकसा घर घर नारि प्रधान ।
तिय गुन सील बिहीन सब दूषन दुरित निधान ॥ १२ ॥
बिधवा बहुत सुभागिनि थोरी । कठिन करम मन बोलत भोरी ॥
बिधवा भूषन बसन बिसेषी । सौभागिनि सिहाहिं सुनि देखी ॥
हिंदू तुरुक उभय कलि जीते । निज निज करम धरम बिपरीते ॥
गृही दरिद्र जती धनवाना । नागर कूर गँवार सुजाना ॥ ४
सूद्र पुरानिक बिप्र किसाना । जुवा जरठगुन जरठ जुवाना ॥
बिप्र चरम असि सर धनु धारी । पुस्तक पानि नीच नर नारी ॥
बिप्र कछोटी पहिरि नहाहीं । सूद्र सदरभ निमज्जन जाहीं ॥
जाति पाँति बहु भेद अचारा । एक बरन सब किए बिचारा ॥ ८

। छंद ।

सब एक बरन बिचार कीन्हे कौल कुलि कलिमल मई ।
बहु बेष बहु मत सैव साकट सौर सुरसेवा नई ।

सब जाति जती जमाति जोरहिँ जटिल भूत भयावने ।
अति रोष दोष निधान मानी खान पान अपावने ॥ १२

सोरठा । कलि पांपड प्रचार प्रबल पाप पामर पतित ।
तुलसी उभय अधार रामनाम सुरसरित जल ॥ १३ ॥

सभा सराहिय सोइ बिसेषी । स्रवन अगम कह आँखिन्हि देखी ॥
करि प्रपंच पचवै परथाती । सो बड़ धीर तासु बड़ि छाती ॥
कौड़ी कारन कहहिँ कुसाखी । रिनिआँ धनिक मरन अभिलाषी ॥
सठ सुमती साहसी जुवारा । जीवन थोर दुरास अपारा ॥ ४
साँचि बात जेहि सभा बखानी । हँसहि लोग बड़ बूबक जानी ॥
जहाँ होहिँ जप जाग पुराना । बिरति बिबेक बिबेचन नाना ॥
कथा कीरतन साधुसमाजा । तहँ बिसेषि कलिकालु बिराजा ॥

दोहा । सुरसदननि तीरथ पुरनि निपट कुचालि कुसाज । ८
मनहुँ मवासे मारि कलि राजत सहित समाज ॥ १४ ॥

बेचहिँ गाइ बेसाहहिँ छेरी । दोहगा सुतिय सोहागिन चेरी ॥
पर पुर घर सुरघर सर सेतू । दूरि करहिँ निज कीरति हेतू ॥
हरि परग्रंथ करहिँ निज ग्रंथा । चहहिँ सुजसु सुख चलहिँ कुपंथा ॥
काटहिँ सुरतरु बवहिँ धतूरे । निज घरबरहिँ बतावहिँ घूरे ॥ ४
भलि कविनास कहहिँ गत गंधा । तुलसिहिँ हँसहिँ सराहहिँ भंगा ॥
गुर पितु मातु साधु सिख पेली । तीरथ चलहिँ समाज सकेली ॥
सुथल सुतीरथ बन सुरथाना । तहाँ तुरक कलि करहिँ मसाना ॥
प्रीति प्रतीति न काहु कि काहू । सब ठग चोर महाजन साहू ॥ ८

दोहा । मंदिर मूरति मलिन कलि थान प्रधान बिचारि ।
ते सब सादर पूजिअहिँ फलहिँ भगति अनुहारि ॥ १५ ॥

बिष्नु भगति महिमा अधिकाई । चहुँ जुग बड़ि चहुँ बेद बड़ाई ॥
काल करम गुन प्रकृति सुभाऊ । भगति समीप जाहिँ नहिँ काऊ ॥
करमकदंब ज्ञान बिज्ञाना । तप जप जोग उपासन नाना ॥
भगति अनुग्रह जा पर होई । सो बड़ सबल सद्यफल सोई ॥ ४
पंछपात नहि कहँउ सुभाऊ । लोक बेद बड़ भगतिप्रभाऊ ॥
आपु बिमल कलिकाल मलीना । अस बिचारि हरिभगति प्रबीना ॥
अलख अनूप निरूपि न जाई । रही सुथल लघु रूप समाई ॥
बस भागवत सुग्रंथ सयानी । जिमि माधुरी रसालस मानी ॥ ८

दोहा । तुलसीकानन साधुमन गुरुपद प्रेम प्रनाम ।
भरतचरित सुरसरित जल रामभगति बिश्राम ॥ १६ ॥

अमल भगतिथल अगम अनेका । लखहिँ बिमल जन बिमल बिबेका ॥
भगत बिसेष भगति बिश्रामा । ते थोरे जग जलधि ललामा ॥

भगतिनिवास भगतजन देखी । कलिहिँ सकुच संताप बिसेषी ॥
भगति भानु कलि कलुष उलूका । सोच बिलोकत लोचनहू का ॥ ४
भगतिबास सब सूक समाना । बाम देत कलि कपट सयाना ॥
रामभगत कहुँ कहुँ दुइ चारी । अनघ अमान अमल अविकारी ॥
ते महिमंडल मंगलरूपा । प्रीति रामपद अचल अनूपा ॥
तिन्ह कहँ कलि कृतजुग सम साजू । सुकृतिन्ह सुखद जथा जमराजू ॥ ८
दोहा । जो हरिभगत कहाइ जग बित हित करत कुफेर ।
दंभ कपट पाषंड भट पठइ किये कलि जेर ॥ १७ ॥
ते कलिवस बहु नाचहिँ नाचा । भूलि न बोलहिँ सपनेहु साँचा ॥
तिलक विचित्र मनोहर माला । बसन विभूषन बचन रसाला ॥
मिलत मधुर गावत मृदु बानी । करम कठिन नहिँ जात बखानी ॥
गूढ़ गरब अघ अवगुन गरुए । रामपेम परमारथ हरुए ॥ ४
देव पितर महिदेव बिरोधी । मोह लोभ बस लंपट क्रोधी ॥
ज्ञान बिराग सुनत जरि मरहीँ । आश्रम बरन धरम परिहरहीँ ॥
तजि सुकरम कुलरीति सुहाई । कलपि कुपंथ कुचालि चलाई ॥
खान पान, कर थोर विचारू । एकादसी विसेष अहारू ॥ ८
दोहा । बड़े भाग तजेँ जगतगुर उपदेसहिँ सब काहु ।
सरवस गुरहि समर्पि अव लेहु जनम कर लाहु ॥ १८ ॥
हिंदू तुरुक नारि नर हीजा । सब कहुँ देहिँ सुमंत्र सबीजा ॥
बेँचि नीच हरिनाम नगीना । लोलुप लेहिँ बिषय कटु पीना ॥
वेद पुरान भागवत गीता । पढ़ि गुनि कहहिँ अरथ विपरीता ॥
सधन सनारि धनी वस होई । पुरुषारथु परमारथु सोई ॥ ४
बेष बचन हरिभगति बिराजा । हिय हुलसत कलि सहित समाजा ॥
संकर नाम सुनत मरि जाहीँ । सेवत जवन सुजनम सिराहीँ ॥
बित हित अंग बंग मग वासी । बित बिनु चाइ लगावहिँ कासी ॥
दोहा । उपदेसक आचरनु अस पढ़हिँ सुनहिँ सदग्रंथ । ८
तिन्ह उपदेसे नारि नर काहे न चलहिँ कुपंथ ॥ १९ ॥
जे गुर बड़े नीच उपदेसे । काल पाइ पछिताहिँ ठगे से ॥
गुर गुन दिये न अव गयु गाँठी । खाइ बेचि तमहंडी टाठी ॥
बिनु बित भगति न भगत सोहाहीँ । सब संताप सोच मन माहीँ ॥
बहुत उपाय किये धनु लागी । दिन दिन दूनि दुरासइ बागी ॥ ४
सुमति न सुनिय न स्वामि सखाऊ । बिनु बित सब हित मीत बटाऊ ॥
होइ न कृषी बनिज बनि सेवा । गए कुदेस भए गुरदेवा ॥
अँचई उभय लोक गति घोरी । बिष्नु सधरम तजे तिनु तोरी ॥
सिष्य कहाइ बड़े गुर केरे । करि छल दंभ कपट बहुतेरे ॥ ८

दोहा । जेंहि विधि डहके आपु गुर सहस भाँति सोइ रीति ।
करि प्रपंच बंचत सबहि डरत न करत अनीति ॥ २० ॥
सधन सधरम नारि नर भोरे । लोक बेद गति सामुझि थोरे ॥
ते करि सिष्य सकल अपनाए । कलपि भगतिमय बचन सुनाए ॥
गुर विमूढ़ सिख निपट कुमेधा । जुरा समाज बांम भयें बेधा ॥
सोइ विधि कहहिं जाहि जोइ भावा । सोइ निषेध जोइ नहि होइ आवा ॥
आपु गए गुर गए बिगारे । बातुल बानर बीछी मारे ॥
सो बरनिअ कुचालि केहि भाँती । एक पाँति जेवहिं सब जाती ॥
कोरि चमार गोड़ गुरदेवा । तिन्ह कइ करहिं महीसुर सेवा ॥
भजहिं जबहि तजि जाति जनेऊ । तब सराहि सिख करिअहिं तेऊ ॥
दोहा । साखी सबदी दोहरा कहि कहनी उपखान ।
भगति निरूपत भगत कलि निंदहिं बेद पुरान ॥ २१ ॥
नाम सुनाम बाम पथ गामी । कायर कूर कुतरकी कामी ॥
सकल सुमारग निंदक मंदा । कुलकुठारि तिय नरकुल बंदा ॥
कलि पाषंड प्रचंड प्रचारा । संड भंड सब विधि ब्यवहारा ॥
भगत कहाइ अछाइ अनेरे । देखत कोमल करम करेरे ॥
भगत नारि नर भगति विहीना । दंभ निधान प्रपंच प्रवीना ॥
लोकहु वेद भगतिपथ मेटा । जिन्ह कै लिए लाग सोउ खोटा ॥
तिन्ह के करतब किमि कहि जाहीं । एकहि आँक भलाई नाहीं ॥
कहंत सकल कलिकाल कुचाली । बाढ़इ कथा होइ सिरु खाली ॥
दोहा । तेहि तें कही सहेतु कलि कथा समास समेत ।
सुनि सदंभ सठ सकुचिहहिं होइहहिं सुजन सचेत ॥ २२ ॥
कलिगुन कहउँ सुमति अनुहारी । सुनेउँ अनुभएउँ ते दुउ चारी ॥
कलिजुग मानसपातक नाहीं । पुन्य पुनीत मनोरथ माहीं ॥
बांछिक पाप जाहिं पछिताने । सिव सुमिरत सुरसरित नहाने ॥
कायिक कलुष कठिन कलिकाला । सद्य फलहिं परिनाम कराला ॥
पुनि संसरगदोषु कलि थोरा । करतहि कहँ गति घोर कठोरा ॥
करत जो संगु समान सलोभा । जानब हठि करि ता सम सोभा ॥
हरि संकरहि भाय भजि भोरे । पावहिं सुजन सुफल श्रम थोरे ॥
जो छलु छाँडि धरमरत होई । फलइ सुसाधन सिद्ध रसोई ॥
दोहा । अन्नदान सब जग्य मय निरुपधि धरमनिधान ।
तप तीरथ सुरसरिता दरसन मज्जन पान ॥ २३ ॥
कलि केवल परमारथ हेतू । रामनाम भवसागर सेतू ॥
साधन नामु सिद्धि फलु नामू । जिहि न प्रतीति ताहि बिधि बामू ॥
कृतजुग जो गति जोगसमाधी । त्रेता करम धरम निरुपाधी ॥

द्वापर हरिपद पूजि सप्रीती । पावहिं परगति नर जगु जीती ॥ ४
कलि जपि नाम सरुचि बिस्वासा । सो फलु सुलभ सबहिं अनयासा ॥
ते सुकृती सुचि साधु सुजाना । सदगुनसागर सीलनिधाना ॥
जे हरिनाम जपहिं दिन राती । प्रीति प्रतीति समेत सुभाँती ॥
राममहातमु चहुँ जुग भारी । कलि बिसेषि दायक फल चारी ॥ ८
दोहा । जथा भूमि सब बीजमय नखतनिवासु अकास ।
रामनाम सब धरम मय जानत तुलसीदास ॥ २४ ॥
यह बिस्वासु जासु जिय नाहीं । जानब जारजात जग माहीं ॥
धरम छीन कलि पातक पीना । जथा ढोलधुनि सुनिअ न बीना ॥
बिच बिच होइहि कलिहुँ भलाई । पुन्यसील पुहमीपति पाई ॥
चहुँ जुग काल भूप अनुहारी । होइ अमंगल मंगलकारी ॥ ४
नृप आधीन काल गुन दोषा । लोक बेद मत नाहिन धोखा ॥
भये बेनु महिषादि कुराजा । पुन्यकाल कलिकालु बिराजा ॥
बिक्रमादि अवनिप कलि जाए । कृत त्रेता सम धरम चलाए ॥
कालचालि महिपाल अधीना । कहत पुराबिद नीतिप्रबीना ॥ ८
दोहा । जथा अमल पावनु पवनु पाइ कुसंग सुसंग ।
कहिअ कुबास सुबास तिमि काल महीस प्रसंग ॥ २५ ॥
संकर कालचालि सुनि देखी । दिन दिन बढ़त बिषाद बिसेषी ॥
बिप्रजनमु गृहभारु बिसाला । करमभूमि कलिकालु कराला ॥
सबहि भाँति सबु संघटु पोचा । सुमिरि संभु सिव संकरु सोचा ॥
कृस तनु नीद भख भइ थोरी । गृहकृत करत होति मति भोरी ॥ ४
जागत वागत सोवत सपने । सुमिरि सिवहि सोचत मन अपने ॥
बिनु श्रम अमर अगम तनु लाधा । गयेउ जाय परलोक न साधा ॥
खेलत खात बालपन बीता । भये तरुन तरुनी मनु जीता ॥
बढ़त बयस अति बढ़त दुरासा । बुधि बिबेक बलु तेजु हरासा ॥ ८
दोहा । हम हमार अबिचारु बड़ भूरि भार धरि सीस ।
हठि सठ परबस भयउ जिमि कीर कोस कृमि कीस ॥
सोरठा । कहि संकर मति संत बेद पुरान बिचारि सब ।
भजउ जानकीकंत तब छूटै संसारभय ॥ १२
अब बिनवौं मन तोहि होहि रामपद कमल रत ।
अपथ न प्रेरहि मोहि सुनहि सिखावनु परम हित ॥ २६ ॥

सीताप्राकट्य प्रसंग

१८२।१९→प्र (१८१।१०ᵛ जवा, १८३।१३ᵛ नाग, १८२।१९ᵛ नर, १८२।१७ᵛ व्रज)

नारद मिले कहिसि मुसकाई । देव कहा मुनिदेव दिखाई ॥
सुनत अनखु नारदहि न भावा । सेत दीप तेहि तुरत पठावा ॥

सागर उतरि पार सो गयऊ । नारिबृंद तहँ देखत भयऊ ॥
तिन सन कहिसि पतिन पैं जाहू । कहिहु कि आएउ निसिचरनाहू ॥ ४
तव मैं तिन्हहि जीति संग्रामा । लै जैहौं तुम कहँ निज धामा ॥
सुनत वचन इक जरठ रिसानी । धाइ चरन गहि गगन उड़ानी ॥
गई दूरि धरि धरि झकझोरा । डारेसि सिंधु मध्य अति जोरा ॥
दोहा । गयो पताल अचेत होइ मरै न विप्रप्रसाद । ८
सावधान उठि गर्जि पुनि हिये न हरष विषाद ॥ १ ॥
जीतिसि नाग नगर सब भारी । गयो बहुरि बलिलोक सुरारी ॥
बावन रावन आवत जाना । किए देवरिषि सन अभिमाना ॥
खेलत हुते नगर सिसु नाना । निज बल तिन्हहिं दीन्ह भगवाना ॥
जाइ धरा तिन्ह पुर लै आए । नगर नारि नर देखन धाए ॥ ४
बीस बाहु दसकंधर जाही । विधि यह गढ़नि कहाँ कै आही ॥
राखेन्हि बाँधि खिझावहिं भारी । नामु न कहै सहै बरु गारी ॥
वामन दीख बहुत सकुचाना । तब छोड़ाइ दिय कृपानिधाना ॥
चला तुरंत निसाचरनाहा । लाज संक कछु नहिं मन माहा ॥ ८
दोहा । बालक बल हिय सुमरि कै चला बहुरि पछिताइ ।
.... निसंक धावन जाइ ॥ २ ॥
तब तुरंत पंपापुर आवा । बालि नाम कपिपति जेहि ठावा ॥
देखा जाइ सरोवर सोभा । जेहि मन महामुनिन कर छोभा ॥
तहाँ कपीस करै निज ध्याना । आदर सौं संध्या सनमाना ॥
जाइ ठाढ़ तहँ भा रजनीसा । ठोका बाहु गरजि भुज बीसा ॥ ४
तब कपीस चितवा मुसुकाई । ध्यान कै अवसर रिस बिसराई ॥
तब रावनु बोला करि क्रोधा । बकध्यानी कपि सठ सुनु बोधा ॥
। दोहा ।
मोहि जीते बिनु समर सुनु ना करु ध्यान कपीस ।
अंजलि देन न पावहु सपथ करौं अज ईस ॥ ३ ॥ ८
तब बाली बोला बिहसाई । बलु तुम्हार अैसइ है भाई ॥
रवि अंजलि मैं देउँ सप्रीती । ठाढ़ होहु जाएहु मोहि जीती ॥
तब निसिचरपति उठा रिसाई । दै कपि जुद्ध छाड़ि कदराई ॥
तब कपीसपति मनहिं बिचारा । सिव बलु दीन्ह मरिहि नहिं मारा ॥ ४
दसकंधर घर जाहु बिचारी । अजय तुम्हारि जानि भुज भारी ॥
बहुत भाँति बाली समुझावा । कवनिहुँ भाँति बोधु नहिं आवा ॥
तब सकोप होइ उठा कपीसा । धरि तिहि काख चापि दससीसा ॥
अंजुलि दीन्हि रबिहिं मन जानी । अचवा सात दीप कर पानी ॥ ८
जपेउ आदिसंकर मन जानी । तेहि खन संध्या बंदि सिरानी ॥

दोहा । आवा घरहि कपीस तव काख रहा लंकेस ।
इहि बिधि बीते मास षट पावै बहुत कलेस ॥ ४ ॥
बाहुप्रसेहु कखरि महँ जामा । अधिक बास ता कहँ भइ धामा ॥
कलमलाइ रिस दसनन्ह काटा । कपि कर जीव मनहुँ भ्रम छाटा ॥
एक दिवस रबि अंजुलि साजा । काख तें निकरि महाधुनि गाजा ॥
सो पुनि धरि कपीस तव बाँधा । लै आवा अंगद के राँधा ॥ ४
बीस भुजा दससीसु सुधारा । चरन छुऔ धरि पुनि उर मारा ॥
धरि समेटि झालरि सम कीन्हा । बाँधि सेज पर सोभा दीन्हा ॥
अंगद खेल लात सिर मारी । किलकिलाइ किलकै किलकारी ॥
दोहा । तारा चीन्हेउ रावनहि तिहि छिन दीन छुड़ाइ । ८
जाहु तुरत लंकेस गृह बहुरि धरिहि कपिराइ ॥ ५ ॥
पुनि रावनु आवा तिहि ठाईं । सहसबाहु जहँ रास बनाईं ॥
जलक्रीड़ा करि सँग सब नारी । बिबिध भाँति सोभा अति भारी ॥
आइ रचा तहँ मंडल रेवा । सुर नर नाग करहिं सब सेवा ॥
जाइ दीख रावन सुख माना । हरष समेत हृदय सकुचाना ॥ ४
तहँ लंकेस जाइ सिव देखा । मनहु बिरंचि रचा बहु रेखा ॥
तुलसीपत्र कमल बहु आना । बिल्वपत्र अमिपुष्प प्रमाना ॥
जुइ तब जलु छोभा दससीसा । थाँभेउ सँवरि मंत्र गौरीसा ॥
दोहा । जब प्रचंड जलु छोभा बूड़ा सबै समाज । ८
सहसबाहु अति संक मन सकल त्रियन उर लाज ॥ ६ ॥
तब राजा सन बोली नारी । अति सुंदरि सब राजकुँवारी ॥
सुनौ नृपति आएउ कोउ गाढ़ा । आकसमात महानदु बाढ़ा ॥
सुनि राजहि भा क्रोध अपारा । जस त्रिनेत्र त्रिपुर अरि जारा ॥
जाइ दीख रावन तहँ ठाढ़ा । जासु मंत्र जनु जलनिधि बाढ़ा ॥ ४
माया प्रबल महा बल भारी । लंकेसुर कहँ धरा पचारी ॥
लै पुनि बाँधि गएउ त्रिय पासा । गढ़नि देख सब परम हुलासा ॥
करि अस्नान पूजि गौरीसा । हयसाला बाँधा दससीसा ॥
दोहा । सुनु भुसुंडि गिरिजा सुनौ अब यह कथा रसाल । ८
लै हयसाला बाँधेनि बीस बाहु दसभाल ॥ ७ ॥
सकल आइ देखहिं नर नारी । मारहिं लात हसैं दै तारी ॥
नामु न कहै रहै सकुचाना । बहु बिधि पूछहि नृपति सुजाना ॥
नृत्य करहिं रंभादिक नारी । दसहुँ सीस दस दीपक बारी ॥
कछु बासर इहि भाँति गँवावा । सो पुलस्ति मुनि जाइ छड़ावा ॥ ४
चला तुरंत महा अभिमानी । सिव की श्राप आइ नियरानी ॥
मारग जात दीख बिबुधारी । अति अनूप सुंदरि बर नारी ॥

चंदन पुहुप पत्र कर थारी । पूजन चली जाहि तिपुरारी ॥
देखि उरवसी[१] मन सकुचानी । तब रावन बोला मृदु बानी ॥ ८
दोहा । निकट जाइ दसकंधर अंक भामिनी लीन्ह ।
पुत्रबधू कुवेर कै नहिं बिचारु कछु कीन्ह ॥ ८ ॥
चीन्हि त्रियहि बिसमै उर भयऊ । लंकेसुर लंका कहँ गयऊ ॥
चली उरवसी आई तहाँ । अलकापुरि नल कूबलु जहाँ ॥
समाचार सब पतिहि सुनाए । सुनी कथा मन अति दुख पाए ॥
दीन्ह श्राप करि क्रोध अपारा । रावन बंस होइ खैकारा ॥ ४
चली श्राप लंका महँ आई । दसकंधर बैठा तिहि ठाई ॥
आगै आइ ठाढ़ि भै श्रापा । तब लंकेसुर अति भै काँपा ॥
सडर कोप चितवति तिहि ओरा । नल कूबल कै श्राप अघोरा ॥
दोहा । श्रापहि अंगीकार करि मन मौ कीन बिचार । ८
रिषिनि दंड नहिं दीन कछु रोषा लंकभुवार ॥ ९ ॥
दूत चारि तहँ पठए भवानी । भरद्वाज मुनि कथा बखानी ॥
आए दूत रिषिनि के गेहा । दीख सबन के भयो सँदेहा ॥
पूछा रिषिय कहाँ पगु धारा । कहहु कुसल लंकेस भुवारा ॥
तात、 कुसल अब भै बिपरीता । तुम सन मागेसि दंड अभीता ॥ ४
देहु दंडु अस कहेनि रिसाई । की गिरि कंदर जाहु पराई ॥
सुनि अस बचन सबहि दुख पावा । तुरत बेगि इकु पात्र मँगावा ॥
सबन बिचार कीन इकठाई । भरि घट रुधिर रिषिय लै आई ॥
तब तिन कहँ सौंपा मन जानी । तुम सकोप बोले मृदु बानी ॥ ८
दोहा । घट उघरत छय होइहि सकल सहित परिवार ।
लेइ दूत तहँ आए जहँ रह लंकभुवार ॥ १० ॥
आगे आनि धरा घट भारी । देखि सकल लंकापति धारी ॥
बोला बचन आहि का भाई । सकल कथा तिहि नृपहि सुनाई ॥
इहि घट तें लंकापतिनासा । सब दूतन अस बचन प्रकासा ॥
यहु घट लै उत्तर दिसि जाहू । जतन समेत देहु लै काहू ॥ ४
सुनि नृपबचन चले सब ईसा । जनकराइ के बाग पईसा ॥
जहँ घट धरि कै चलै बिचारी । तहाँ प्रगट भइ देवकुवारी ॥[V]

[V]जब तें दूतन्ह सो बिधि करेऊ । जनकनगर महँ सूखा परेऊ ॥
बारह बरष अबरषन भएऊ । नर बिनु अन्न सूखि सब गएऊ ॥
नर सब मरहिं अन्न बिनु भूखा । त्रिन नहिं हरित सूख बन रूखा ॥
दोहा । जनकराय मुनिबर सकल पंडित बिप्र बोलाय । ४
कहेउ अबरषन भयेउ अब कीजै कहा उपाय ॥ १ ॥

जग जननिहिँ बरनै को पारा । राजा जनक तहाँ पगु धारा ॥
कन्या देखि अनूप भवानी । सुता भाँति राजः गृह आनी ॥ ८
नाम जानकी परम पुनीता । नारद आइ कहा तहँ सीता ॥
दोहा । सकल कथा तव जनक सन नारद कहा बखानि ।
सकल सुलंछनि लंछिगुन जगदंबिका सुजानि ॥ ११ ॥v
*कही कथा रिषिराउ सिधाए । वहुरि दूत लंकापुर आए ॥
कहेंनि जाइ अैसे हम राखी । सो संकर गिरिजा सन भाषी ॥
जागवलिक सन कथा रसाला । साधसंग सुनि परम कृपाला ॥

तव मुनिबरन्ह बेदविधि खोले । सोधि सुमृति निगमागम वोले ॥
जो कंचन हल भूप गढ़ावहु । कपिल बरन जुग बृषभ नधावहु ॥
अपनें हाथ गहहु हल राजा । बरषै वारि होइ सव काजा ॥
सुनि, अस भूप मौन होइ रहेंऊ । आनन निरखि मुनिन पुनि कहेंऊ ॥ ४
पर उपकार लागि इह करनी । होइ सुखी नर सज्जन धरनी ॥
वेदं संत मुनि कहहिँ विचारी । धन्य सो नर जो पर उपकारी ॥
तेंहि महँ नृप तुम्ह नर प्रतिपाला । धरमरासि जग तेज बिसाला ॥
पुनि जग जनक नाम तुव नीका । लोकहु बेद विदित की लीका ॥ ८
सुनि मुनिवचन भूप हरषाना । परँ उपकार लाग भल माना ॥
करि उपाय सोइ नृप जग हेतू । जोतन लगे आइ करि खेतू ॥
दूतन्ह घट गाड़यो जेहि ठाईं । धार फार अटकेंउ तेंहि आई ॥
उमा तुरंत निकसि घट आवा । यह चरित्र केंहु जान न पावा ॥ १२
सोरठा । भइ अति बृष्टि अपार भरद्वाज सादर सुनहु ।
कोउ न मेटनहार करता जो कछु कीन्ह चह ॥ २ ॥
कलस विलोकि भएउ सुख भारी । तत छिन कोउ न सकेंउ उघारी ॥
भूप जनक के वंस न रहेंऊ । तिहिँ गिरिजा बाचा सब कहेंऊ ॥
जो वाला तौ कन्या मोरी । जौ वालक तौ तनय वहोरी ॥
सुनत बचन उघरेंउ घट जवहीँ । सुंदरि सीता प्रगटीँ तवहीँ ॥ ४ (नर)
vबरषेंउ देव सुखी सब भएऊ । राजा जनक दान वहु दएऊ ॥
बरषे बिबुध सुमन उर लाई । सब देवन्ह दुंदुभी वजाई ॥
जागबलिक कह कथा रसाला । जाई जगत जानकी वाला ॥
जानकिजन्म भयेंउ इहि कारन । जनपालन दानवसंहारन ॥ ४ (नर)

*['जवा' में १८२।५v पर निम्नलिखित पंक्तियों का भी प्रक्षेप है—]
चढ़ें मत्त गज जिमि लघु तरनी । कंपत सुधि सरीर नहि धरनी ॥
दोहा । सप्त दीप नव खंड लगि सप्त पताल अकास ।
कंपमान धरनी धिक सु सरितपतिहि मन त्रास ॥

पुनि पुनि कहा कथा उपदेसा । जग जीता सब लंकनरेसा ॥ ४
चारि ठाव ह्वरे भय त्रासा । सकल देव कीन्हे निज दासा ॥

गंगोत्पत्ति प्रसंग

२१२।१→प्र (जवा, मन, २१०।१४[V], उद, नर, व्रज, नाथ) ।

अनुज सहित प्रभु कीन प्रनामा । बहु प्रकार सुख पावा रामा ॥
पुनि सुरसरि उतपति रघुराई । कौसिक कहँ पूछा सिरु नाई ॥
कह मुनि प्रभु तुव कुल इक राजा । नाम सगर तिहुँ लोक बिराजा ॥
तेहि नृप के भामिनि सुकुमारी । एक केसिनि सुमती लघु प्यारी ॥ ४
सब प्रकार संपति गुन भ्राजा । सुत विहून मन बिस्मै राजा ॥
एक समय भामिनि दोउ साथा । नृप तप हित बन गए रघुनाथा ॥
सघन सुफल तरु सुंदर नाना । भृगु मुनि बस तप तेज निधाना ॥[1V]
दोहा । सहित नारि नृप मुदितमन तहाँ बरष सत एक । ८
कीन्हेँ तप भल देखि भृगु अस्तुति कीन्ह अनेक ॥ १ ॥
आये भृगु तप देखि अपारा । कहा मागु बर बहुत उदारा ॥
कहि निज दुख प्रनाम तिहिं कीन्हा । दै असीस तब मुनिबर दीन्हा ॥
नृपघरनी सन मुनि अस भाषा । लेहु सुबरु जेहि जो अभिलाषा ॥
सुनि मुनि वचन सीसु तिन्ह नाह्वा । देहु नाथ तुम कहँ जो भावा ॥ ४
एकहि एक कहा सुत होना । दुसरिहि सहस साठि गुन लोना ॥
हरषित भयउ सुभग वरु पाई । हाथ जोरि चरनन्हि सिरु नाई ॥
सहित भामिनी अवधहि आवा । हरष सहित कछु दिवस गवावा ॥
जानि घरी सुंदर सुखदाई । नामु केसिनि असमंजस पाई ॥[2V] ८
सुमति प्रसा तुंबरि एक सोई । भे सुत प्रगट कहे मुनि जोई ॥
हरष सहित दय दान नरेसा । पूजि बिप्र गुर गौरि गनेसा ॥
घृतघट सुंदर बिबिध मँगाए । ते सब सुत नृप तिन्ह मह्व नाए ॥
दोहा । इहि बिधि सकल भए सुत पूजे सब मनकाम । १२
जाहिं दिवस निसि हरषवस सुनहु राम घनस्याम ॥ २ ॥
परिजन सब घर घरनि नरेसू । अति आनँद तन मिटा कलेसू ॥
होइ सुकाम सकल मनचीते । इहि सुख बसत बहुत दिन बीते ॥
सरऊ नदी अवध जो अहई । बिमल सलिल उत्तर दिस बहई ॥

[1V] बन सोभा सब भाँति अनूपा । तहँ बिचरहिँ बहु खग मृग रूपा ॥
कंद मूल फल अमिय समाना । सर पंकज बिकसे बिधि नाना ॥
तेहि आस्रम तप कर मुनिराया । हरिपद लीन न ब्यापै माया ॥
और अनेक बसहिँ मुनि तहँवा । निज निज आस्रम जा कर जहँवा ॥ ४ (नाथ)
[2V] प्रगटे सुत जानत सब कोई । (व्रज)

प्रजा लोग के बालक नाना । नित उठि तहाँ करहिं असनाना ॥ ४
असमंजस तहँ तरनी आनी । तिन्हहि चढ़ाइ बोर निज पानी ॥
भए प्रजा सब परम दुखारी । बालकवध सुनि सुनहु खरारी ॥
सकल गए जहँ बैठ नृपाला । बोले बचन नाइ पद भाला ॥
तुम नृप चह हमही प्रतिपाला । सुत तुम्हार भा सब कर काला ॥ ८
तजव देसु अब सुनौ नरेसा । विना तजे नहिं मिटिहि कलेसा ॥
दोहा । तव सुत कीन्हे पाप बहु मारे बालकवृंद ।
तुम कहँ प्रान समान यह हम कहँ तौ क्रिमि मंद ॥ ३ ॥
प्रजागिरा सुनि धीरजु दीन्हा । सुतहि देस तें बाहिर कीन्हा ॥
तासु तनय जगबिदित प्रभाऊ । गुननिधि अंसुमान तिहि नाऊ ॥
बसत हृदै नृप के सो कैसें । फनि मनि मीन सलिल रह जैसें ॥
गए प्रजा सब निज निज धामा । भए निसोच मन कहुँ विश्रामा ॥ ४
बहुरि नृपति मन कीन्ह विचारा । आइ भयउ पन चौथ हमारा ॥
द्विज मंत्री गुंर सुतनि बुलाई । होम जग्य विधि बुधि तंव आई ॥
रुचिर बेदिका एक बनाई । पेखत बनै बरनि नहि जाई ॥
मख अरंभ छाँडा तव तुरगा । बेगवंत देखिय जनु उरगा ॥ ८
दोहा । सुरपति सुनि मख दारुन मन मह करि अनुमान ।
आइ तुरग तब लीन्हा मरम न कोऊ जान ॥ ४ ॥
राखा आनि कपिल मुनि पाहीं । कोउ न जान काहु गम नाहीं ॥[१४]
तिन सब आनि कहा नृप पाहीं । महाराज हम कहत डराहीं ॥
लीन्ह तुरँग कछु जान न कोऊ । कहा करिय कछु आयसु होऊ ॥
सुनत बचन नृप बिस्मय पाए । सकल सुतन कहँ तुरत बुलाए ॥ ४
जाहु तुरग तुम देखौ जाई । सकल चले चरनन सिरु नाई ॥
सुरपति सम देखिय बलबीरा । सकल धर्मरत अति रनधीरा ॥
तिन्हहि चलत धरनी अकुलाई । बलिपसु जीव भये सब आई ॥
सुमनबाटिका उपवन बागा । सरित कूप बापिका तड़ागा ॥ ८
नगर गाउँ मुनि अस्थल नाना । गिरि कानन कंदर अस्थाना ॥
सोरठा । सोधि न तुरगै पाइ आए सब मिलि भूप पहिं ।
चरनन्हि माथौ नाइ बोले प्रभु कहुँ अस्व नहिं ॥ ५ ॥
खोदहु महि सुत फेरि पठाए । चले सकल पूरब दिसि आए ॥
तिन्ह के कर जिमि कुलिस समाना । जोजन भरि खोदहिं बलवाना ॥[१५]

---

[१४]जोगवत रहे जो सुभट सयाना । लेत तुरंग तिन्हहु नहि जाना ॥
(मन, उद, नर, व्रज, नाथ)

[१५]सुनु गिरिजा कछु कारन आना । जो कछु चरित रचा भगवाना । (नाथ)

देखि अतुल बल विबुध डराने । मरिहहिं कहि बिरंचि सनमाने ।।
सोधत महि पताल तव आए । दिग्गज एक देखि सिरु नाए ।। ४
तेहि पूछा सबँ कथा सुनाए । बहुरि सकल दछिन दिस आए ।।
इहि विधि पुनि दूसर गज देखा । अति उतंग गुन बिमल बिसेषा ।।
ताहू कहँ प्रनामु पुनि कीन्हा । चले सकल पछिम मन दीन्हा ।।
तिसरेहि देखि प्रदछिन कीन्हा । पुनि उत्तर दिस सोधै लीन्हा ।। ८
दिग्गज चौथ निरखि सुख पाए । सकल कपिल मुनि पहिं पुनि आए ।।
खोदिन्ह महि कोउ पारु न पावा । आश्रम चहुँ दिस जलधि सुहावा ।।
दोहा । देखा आइ तुरग तब बाँधा मुनिबर पास ।
बोले बचन सक्रोध तब भा चह सब कर नास ।।६।। १२
खोदि मही हम चतुरङ्घु कोधा । रे रे दुष्ट बहुत तुहि सोधा ।।
कोउ कह चोर दीख वहु होई । इहि सम छली औरु नहि कोई ।।
सुनत वचन मुनि चितवा जवहीं । भए भसम छन महँ सब तबहीं ।।[1v]
पावक जानि कर धरहिं जो प्रानी । जरहिं न काहे ते अभिमानी ।। ४
जानि गरल जे संग्रह करहीं । सुनहु राम ते काहे न मरहीं ।।
क्रोधु कीन्ह बिन करे बिचारा । भए सकल तिहि तें जरि छारा ।।
इहाँ नृपति अँसुमान बुलाए । नहि आए सब तिन्हहिं पठाए ।।[2v]
दोहा । दीन्ही नृपति असीस तव अति हित वारहि बार । ८
बेगि फिरहु सुत तुरग लै मेरे प्रान अधार ।।७।।
चला नाइ पद सीस कुमारा । बिष्नुभक्त तेहि कुल उजियारा ।।
जहँ कहुँ निरख मुनिन के धामा । पूछि खबरि करि दंड प्रनामा ।।
गौरि गनेसहि पाइ असीसा । चहुँ दिग्गजन नाइ पद सीसा ।।
इहि विधि सोधत मग महँ जाता । मिले गरुड़ सों मति करि भ्रांता ।। ४
चरन परत तव आसिष दएऊ । जरे सकल जेहि बिधि सो कहेऊ ।।
सुनतहि वचन सोच भा भारी । लै खगेस देखा थल चारी ।।
अंसुमान तहँ मंजन कीन्हा । क्रम क्रम सबहि तिलांजुलि दीन्हा ।।
बहुरि गरुड़ बोले सुनु ताता । मैं तुहि कहौं करौ सो बाता ।। ८
सोरठा । करि सुत सोइ उपाइ गंगा आवै अवनि महँ ।
दरसन तें अघ जाइ मंजनु कीन्हे परम सुख ।।८।।
सहसा सब तरिहहिं एही बिधि । गंगा पाइ परम पावन निधि ।।
सुनि अस बचन हृदय मन भाए । सहित गरुड़ मुनिबर पहिं आए ।।

[1v]मुनीनेत्र ज्वाला अति भएऊ । तेजप्रताप सकल जरि गएऊ ।। (नाथ)
[2v]भौ. बिलंबु कछु जानि न जाई । तेहि कारन नृप सुतहि बुलाई ।।
दिन समीप जग रहा हमारा । सो करु सुत जेहिं सुजस तुम्हारा ।। (नाथ)

तब खगेस चरनन सिरु नावा । पुरवकथा नृप केरि सुनावा ।।
आसिष देइ तुरग मुनि दीन्हा । हरषा हृदै गवन तव कीन्हा ।। ४
नगर समीप गरुड़ पहुँचाई । गए भवन निज तव रघुराई ।।
इहाँ तुरग लै नृप सिरु नाई । व्याख्या सह सब कथा सुनाई ।।
बिस्मै हरष बिबस नृप भएऊ । कीन्हा याग दान बहु दएऊ ।।
बहु बिधि नृपति राजु तब कीन्हा । प्रजा लोग कहुँ अति सुख दीन्हा ।। ८
दोहा । मनु कहँ राजु देइ नृप आपु गए सुरधाम ।
सुरसरि बिन आए मही मनु न लहै बिश्राम ।। ९ ।।
तासु तनय दलीप नृप भएऊ । मनु तप हेत उतर दिसि गएऊ ।।
अतिहि अगम तपु कीन्ह नृपाला । बहु बासर बीते बहु[बस?]काला ।।
कहौ कवन दलीपु नृपु भएऊ । सेवा जास नृपति बहु रहेऊ ।।
जीवत जेहि मुख सुरपति रहई । महिम तासु कबि केहि बिधि कहई ।। ४
भागीरथ अस सुत भए जासू । पितु समान नित अधिक हुलासू ।।
तिन्हहि समर्पि दीन्ह नृप राजू । आप चला उठि तप के काजू ।।
मन मह करत पंथ अनुमाना । सुरसरि आव तजौं न त प्राना ।।
जिमि तनु मनु दीन्हेउ तिमि देऊँ । फिरि निजु नगर क नामु न लेऊँ ।।[१४] ८
सोरठा । इहि बिधि करत बिचार जाइ कीन्ह नृप परम तप ।
बीते कछु इक काल देह तजी कोउ प्रगट नहि ।। १० ।।
जेहि सुरसरि लगि तजि तन भूपा । सो तजि मूढ़ पियत जल कूपा ।।
इहाँ भगीरथमन अस भएऊ । पितु न आव बहु दिन चलि गएऊ ।।
काकुथ नाम तनय कर रहेऊ । दीन्हा राज नीति बहु कहेऊ ।।
कहि तब पूर्बकथा सुत पाहा । दीन्हि असीस चला नरनाहा ।। ४
निकसत नगर सगुन भल पाए । अतिहि निबिड़ बन तहँ चलि आए ।।
देखि भगीरथ बन सुख पावा । सुरसरि हित तप कहँ मनु लावा ।।
एक चरन दोउ भुजा उठाए । रबि सनमुख चितवै मनु लाए ।।
बरस सहस बीते इहि भाँती । जात न जाने दिन अरु राती ।। ८
देखि उग्र तपु अज चलि आए । बोले नृप सन बचन सुहाए ।।
चहहि नृपति सो लै बरदाना । बोले नृप करि अजहि प्रनामा ।।
जो माँगौं सो जानत अहहू । मो सन माँगन कस, तुम कहहू ।।
दोहा । तदपि कहौं बरु देहु प्रभु मम संतन कर संग । १२
दूसर माँगौं जोरि कर आवै अवनी गंग ।। ११ ।।[१५]
एवमस्तु कहि पुनि सो कहई । सुरसरि देउँ राखि को सकई ।।

---

[१४]बारमवार इहै ब्रत ठाना । पुनि हरि प्रेम मगन न्रिप ध्याना ।।(नाथ)
[१५]गंगा कारन एह तपु कीन्हा । देहू नाथ जानि जन दीना ।।(नाथ)

छूटि जाइ पुनि तुरत रसातल । फिरै न बहुरि सुनौ नृप भूतल ।।
तेहि तें कहौं एकु तुहि पाहीं । अति दयाल संकर मन माहीं ।।
संकरु राखिहि सुरसरि आजू । उन्हहिं जपे तव होइहि काजू ।। ४
अस कहि नृप अंतरहित भए । पुनि भागीरथ सिव पहँ गए ।।
विबुधवरष अंगुष्ठ अधारा । बार बार सिव नामु उचारा ।।
सिव दयाल प्रगटे तव आई । हाथ जोरि नृप बात सुनाई ।।
हम राखव सुरसरि कहँ पासा । बहुरि उमापति गे कयलासा ।। ८
दोहा। उहाँ देवसरि सिववचन सुनि मन कीन विचारु ।
जाउ रसातल सिव सहित जात न लागइ बार ।। १२ ।।
अंतर सिव अस रचा उपाई । निज सिर जटा सों आप बनाई ।।
इहाँ भगीरथ अस्तुति कीन्ही । सुनि मृदु गिरा छाँडि विधि दीन्ही ।।
छूटे सोरु भयो अति भारी । चकित देव अहीस गज चारी ।।
सुरसरि आइ सिवजटा समानी । एक बरस तव रही भुलानी ।। ४
कौतुक देखि सकल सुर हरषे । कहि कहि जयति सुमन तिन बरषे ।।
पुनि भागीरथ सुमिरन कीन्हा । जटा टारि सिव तब तजि दीन्हा ।।
तेहि तें भई तीनि तब धारा । गइ नभ एक एक पातारा ।।
नभ सो गई अघनि की साँपिनि । देवनि धार नाम मंदाकिनि ।। ८
सोरठा। दूसरि गई पताल नाम प्रभावति हरन दुख ।
तीसरि भइ सो गंग संतन कहँ करनी सुखद ।। १३ ।।
आइ भगीरथ तब सिर नाए । बोली सुरसरि बचन सुहाए ।।
वेगवंत तुरंत रथ आनू । तुरग मरुत सुभ्रम जिमि भानू ।।
तिहि रथ चढ़ि चलु नृप मम आगे । चलिहौं मैं तुव पाछे लागे ।।
सुनि नृप तुरत दिब्य रथ आना । चढ़ा हृदय सुमिरत भगवाना ।। ४
चली अग्र करि नृप सुरसरी । देवन मुदित दुंदुभी करी ।।
चलत तेजु कछु बरनि न जाई । टूटहिं तरु गिरि सिला सुहाई ।।
करहिं कुलाहल जिव बहु जाती । कमठ नक्र झष ब्याल बहु भाँती ।।[१४] ८
मंजन करैं देव मुनि आई । मुनिगन सिद्ध रहे सब छाई ।।[२४]

---

[१४]चले नृपति सो अति उर हरषे । देवन्ह मुदित सुमन बहु बरषे ।। (नाथ)
[२४] अति परम पुनीता जगतबंदिता प्रगट कीन्ह पद कमल हरी ।
महिमा तिन्ह केरी सब जग हेरी थकेउ लखेउ सिव सीस धरी ।
प्रभु परम कृपाला दीनदयाला (जनप्रतिपाला) भागीरथ कहँ दया करी ।
सुरसरि कहँ दीन्हा जेहि सब चीन्हा जानत मुनि सम दृष्टि भरी । ४
परिवार अपारा अघ कीं धारा महा बिकल भव माह परी ।
तेहि कारन माँगा पद अनुरागा कीन्ह महातप कस न खरी ।

दोहा । तरपन करहिं विविध बिधि हरष न हृदय समाइ ।
दरसन तें जिहि जग तरिहि अस सब मुनी कहाइ ॥ १४ ॥

करै जो मंजन जपु मन लाई । तेहि की महिमा कही न जाई ॥
स्यंदन पर नृप सोहै कैसे । तेजवंत रवि देखिय जैसे ॥
नाक्त सैल सुहावन देसा । पीछे सुरसरि अग्र नरेसा ॥
हरिद्वारे समीप तव आए । तिरथ देखि सुरसरि मंन आए ॥ ४
तीरथहू मन भा सुख भारी । आइ प्रयाग पहुँची अघहारी ॥
तहँ मंजन कीन्हे दुंख जाई । वहुरि देवसरि कासी आई ॥
सो सिवपुरी सहज सुखदाई । बरनि न जाइ मनोहरताई ॥v
तीरथ और विविधि बिधि जानी । गई तहाँ यह कहौं बखानी ॥ ८
मग लोगन कहँ करहु सनाथा । जाइ चली इहि विधि रघुनाथा ॥

। दोहा ।

मिली सु वहुरि उदधिही (गई) उदधि हृदै हरषान ।
लगेउ सराहन भगिरथहि तुम सम धन्य न आन ॥ १५ ॥

कीन्ही ऐसी करै न कोई । तप महिमा कस नहि अस होई ॥
सगरतनय तारे ततकाला । हरषवंत तव भएउ भुआला ॥
अब लौं रहे ज कुल मैं कोऊ । तिन के संग तरे सव वोऊ ॥
सकल सुरन सँग तहाँ विधाता । नृप कहँ आइ कही असि बाता ॥ ४
धनि भागीरथ जसु जग जयऊ । तुम समान नृप आन न भयऊ ॥
आपनि संचि प्रतिग्या कयऊ । सुमृति बेद जीवन सुख दयऊ ॥
गंगासागर सबु कोउ कहई । अघ उलूक देखत रवि डरई ॥
भागिरथी अस नामु कहैहैं । सुर मुनि सिद्ध नाग जसु गैहैं ॥ ८
अस कहि बिधि निज लोक सिधाए । इहाँ भगीरथ अति सुख पाए ॥

भइ नभ बानी अंमृत सानी अब पूरे सब काम हरी ।
राखेउ ब्रिद बाना प्रभु मुसुकाना हरषित भवबंधन छोरी ॥ ८

सोरठा । अस प्रभु दीनदयाल हरि राखत जन परन अस ।
भगतवस्य भगवान तुलसी तजि मद राम भजु ॥ १ ॥ (नाथ)

vपुनि सुरसरि चलि आई तहाँ । रहे रनबीर रिसेस्वर जहाँ ॥
भागीरथ पुनि कहा प्रचारी । गंगा आवहिं अवनि मझारी ॥
आवत गंग रिषै तव देखा । सोखि गए जल काहुँ न देखा ॥
भागीरथ मन महँ पछताई । सेवा करत बेर नहिं लाई ॥
भए प्रसन्न रिषि कहा बुलाई । माँगसि का तपसा कहु आई ॥ ४
माँगउँ रिषि गंगा अव सोई । जा तें पित्रतरन महि होई ॥
जंघा फारि रिषै तव दीन्हा । हर्षि भगीरथ कर गहि लीन्हा ॥ (नाथ)

छंद । सुख पाइ अमित बहोरि पूजी सुरसरिहि मनु लाइ कै ।
तब दीन्ह आसिष मुदित गंगा भवन गे सुखु पाइ कै ।
इहि भाँति सुनि गंगाकथा तब राम रिषि चरनन नए । १२
कह दास तुलसी राम लखनहि महामुनि आसिष दए ।[v]
दोहा । कौसिक आसिष सुधा सम सुनि हरषे रघुनाथ ।
प्रभु सुखु पाइ कहा पुनि बेगि चलिय रिषिनाथ ॥१६॥
राम नाम तें संसय जाई । देह धरे कर यह फलु भाई ॥ १६

द्वितीय सोपान (अयोध्याकांड)

ब्रह्माविनय प्रसंग

१।१०→म (बाल, बाग, नाग, उद, खोज, व्रज)

एक बार जानकी समेता । बैठे प्रभु निज रुचिर निकेता ॥
भुज प्रलंब उर नयन बिसाला । पीत बसन तन स्याम तमाला ॥
कोटि मनोज देखि छबि मोहा । सीताकर चामरबर सोहा ॥
तेहि अवसर नारद तहँ आए । सुरहित लागि बिरंचि पठाए ॥ ४
तेजपुंज तन करतल बीना । हरि गुन गान करत लयलीना ॥
देखि राम सहसा उठि धाए । करि दंडवत हृदय मुनि लाए ॥
सादर निज आसन बैठारे । जनकसुता तब चरन पखारे ॥
तेहि चरनोदक भवन सिचावा । जगपावन हरि सीस चढ़ावा ॥ ८
सुनु मुनि बिषय निरत जे प्रानी । हम सारिखे देह अभिमानी ॥
तिन्ह कहँ सतसंगति तब होई । करै कृपा जा कहँ प्रभु सोई ॥
ता कहँ मुनि नाहिन भव आगे । जेहि बिनु हेतु संत प्रिय लागे ॥
ता तें नारद मैं बड़भागी । जद्यपि गृह कुटुंब अनुरागी ॥ १२
दोहा । सुनि हरिबचन मधुर प्रिय करि बिचार मुनि धीर ।
परम कृपाल लोकहित लागि कहत रघुबीर ॥ १ ॥
कह मुनि तव महिमा रघुराया । मैं जानौं कछु तुम्हरिहि दाया ॥
बचन कहेहु प्राकृत की नाईं । ता तें नहि कछु घट्यो गोसाईं ॥
प्रभु यह तुम्हहिं सदा बनि आई* । निज लघुता जन केरि बड़ाई ॥
सहज सुभाव प्रनत अनुरागी । नरतनु धरेहु दासहित लागी ॥ ४
माया गुन जो ज्ञान अतीता । अजित नाम सो दासन्ह जीता ॥
तेहि प्रभु सम अतिसय कोउ नाही । ब्यापक अज समान सब माही ॥

---

[v]दोहा । कौसिक बानी अमिअ सम सुनि हरषे रघुराज ।
प्रभुसंसय सब इमि गए लवा निरखि जिमि बाज ॥(मन, उद, नर, व्रज)

* १।१/१—२।३/१ ×(नाग) ।

उदर चराचर मेलि जो सोवा । अस्तनपान लागि सो रोवा ।।
नाम रूप गुन बरन न भेदा । अविगत अकल नेति कह वेदा ।। ८
निर्मम मुक्त निरामय जोई । दसरथसुत कहि गाइअ सोई ।।
तप जप जोग जज्ञ ब्रत दाना । विमल विराग ग्यान विग्याना ।।
करहिं जतन मुनि पाव न कोई । देखा प्रगट भक्तिवस सोई ।।
हठवस सठ साधन बहु करहीं । भगतिहीन भवसिंधु न तरहीं ।। १२
दोहा । जानि सकहु तौ जानहु निर्गुन सगुन सरूप ।
मम हृदि कंज भ्रिंग इव बसहु राम नरभूप ।। २ ।।
ब्रह्मभवन मैं रहेउँ कृपाला । गावत तव गुन दीनदयाला ।।
असि इंछा उपजी मन माहीं । देखेउँ चरन बहुत दिन नाहीं ।।
जद्यपि प्रभु सर्वत्र समाना । सगुनरूप मोरे मन माना ।।
अवध चलत बिरंचि मोहि जाना । कीन्ही विनय लागि मम काना ।। ४
प्रभु जानत सब अंतरजामी । भगतबछल विनती यह स्वामी ।।
जेहि निति लीन्ह मनुज अवतारा । नाथ वेगि सो करिअ सँभारा ।।
सुनत बचन रघुपति मुसुकाने । मुनि अजहूँ बिरंचि भय माने ।।
कहेहु तात ब्रह्महि समुझाई । कछु दिन बीते देखेहु आई ।। ८
बार बार चरनन्हि सिरु नाई । ब्रह्मानंद न हृदय समाई ।।
रामरूप उर धरि मुनि नारद । चले करत गुनगान विसारद ।।
तव रघुपति सीतहि समुझावा । चाहत करन सो चरित बनावा ।।
सुरहित्त लागि सो करिअ उपाई । जाइ अवनि परिहरि ठकुराई ।। १२
दोहा । जग संभव अस्थिति लय जाकी भृकुटि बिलास ।
सो प्रभु जतन बिचारत केहि विधि निसिचरनास ।। ३ ।।

तृतीय सोपान (अरण्यकांड)

कबंध-कथा

२७१४→ग्र (अल)

(कवंध उवाच)

अनुज समेत बचन अनुरागी । कर्मभोग तेहि दरसन लागी ।।
नाम कवंध जो दैत अपारा । वर्नि न जाइ ताको बिस्तारा ।।
दोइ भुजा दुइ दिसा पसारै । जो जिव जंतु परै मुह डारै ।।
म्रिग औ सिंघ बाघ मैमंता । भुज सैं खैंचि लै आव तुरंता ।। ४
बाघ भालु औरउ नर बंदर । कोटि जंतु धरि लीलै कवंधर ।।
अति अनेक निस्चर संघारै । जोजन डेढ़ लहि भुजा पसारै ।।
दूनौ भुजा पसारे भारी । अनुज सहित सो परे खरारी ।।

भुजा माह प्रभु जाइ समाने । खैंचत प्रभु तव सो मुसुकाने ॥ ८
कह लछुमन एह आहै कौना । प्रभु मुसुकाइ रहे भै मौना ॥
बदन समीप जवहिं प्रभु आए । मुंख पसारि ततछन धाए ॥
छंद । सनमुंख धाए मुंख बाए मनहु ग्रासन चाहई ।
मन जानि अति अनुमानि रघुपति हाँक दै सर गाहई । १२
कौन बिर धै धीर बोलहि बान कर धर मारऊँ ।
हौं राम, काम तुँ गर्ब भूलहि हृदै तोर धै फारऊँ ॥
दोहा । प्रभु को नाम सुनत खन तव सो भएउ सचेत ।
तेहि खन दानव बिहसै धन्य तुं क्रिपानिकेत ॥ १ ॥ १६
बिहसत बदन सो बर्नौं काहा । जनु धौलागिरि पर्बत आहा ॥
बोइ करै बहु गंध्रबसाई । रघुपति बहुतै जिय अकुलाई ॥
जव आपन सो कह बिरतंता । सुनु प्रभु स्रवन प्रबुज निज मंता ॥
जेहि तें गति कै आभा भएऊ । प्रभु सैं चरित कहै सब लएऊ ॥ ४
राजपुत्र मैं खेलौं नाथा । वहु बालक रह मोरे साथा ॥
रिषि दुर्बासा तप रह साधे । धरे ध्यान मन पौन सो बाँधे ॥
हौं बालकसँग चला सो आई । तपा रहे जहँ आन [ध्यान?] लगाई ॥
बालक बिपुल बुंधि के कहई । अलपबुंधि प्रभुग्यान न अहई ॥ ८
पोवा सर्प एक तहँ पावा । लै कै तासु गीव लपटावा ॥
अरु लपटावहिं, धै सौ बारा । धरि कै ग्रीव सो देहिं पछारा ॥
रिषै ध्यान तबहूँ नहि टूटहि । तस बस बालक बहु रस फूलहि ॥
टूटे ध्यान देखु रिष जागी । बाल बिधंस करहिं गिव लागी ॥ १२
अस विधि कै लीखा रह आगा । रिषै पास हम गए सभागा ॥
रिषै कोह कै मारेउ थापा । सिर सैं कंध उदरि गै झापा ॥
दोहा । क्रोधवंत भै स्रापेउ नाम कबंध तोहारि ।
जाएहु सैलमध्य सो दानौभेस खसरि ॥ २ ॥ १६
तव मैं कहा मोछ कह देवा । पावौं मुक्ति सो, कहु रिषि भेवा ॥
तव रिषि कहा बचन सुनि लीजै । जैसे मुक्ति भाव सो कीजै ॥
कतेको काल रहेहु बन जाई । भूर्ना अस गति बहुत लँबाई ॥
जव सो होइहै प्रभु औतारा । तब कै कथा कहौं सुनु बारा ॥ ४
रावन रिपु अस होइ अपारा । लंकापति सो महा जुझारा ॥
देव दनुज औ गंध्रप नागा । सभै बस्य करि रखिहै जागा ॥
प्रिथक प्रिथक सेवा सब करिहै । महादुष्ट जग महँ अवतरिहै ॥
दोहा । तासु उधार करै कहँ प्रभु अवतरिहैं आइ । ८
बहुत अगति गति पैहहिं देवन्ह सुंख रहाइ ॥ ३ ॥
न्रिप दसरथ कुल होइ औतारू । पितु अग्या बनखंड सिधारू ॥

प्रभूसुभाव जानि नहि जैहै । अगतिन्ह के गति भाव रहैहै ॥
तेहि कारन विधि रचा बनाई । सभ क उधार करै प्रभु आई ॥
तेहि सँग होइहि मोंछ जे तोरा । जौ प्रभुचरन मिलव कर जोरा ॥ ४
सो अव प्रभु के दरसन पाए । मोंछ भए अव भाग सोहाए ॥
रिषि कै स्राप आइ नित्रराने । अव मोर भाग वहुत सुख माने ॥
दुर्वासै मोहि दीन्ह सरापा । प्रभुपद देखि मिटा सव पापा ॥
पुर्बिल बात मैं तुमहि सुनाई । जेहि तें अगतिंन्ह कै गति पाई ॥ ८
अब प्रभु तन मोर कीजै दाहा । जेहि तें मुक्ति होइ नरनाहा ॥
जौ प्रभु देहदाह मोर करिहहु । पाछिल कांति अग्नि सँ पैहहु ॥
जो प्रभु मैं कछु बकतौं बैना । सो सब करव औ देखब नैना ॥
जो मैं कहा सत्य सो करिहौ । निस्चर जानि झूठ मन धरिहौ ॥ १२
अब प्रभु मोरा कीजै दाहा । जेहिं तें मुकुति होइ नरनाहा ॥
जो कछ असुर कहो विरतंता । सो प्रभु चरित कीन्ह हरषंता ॥
बंध कधै तहँ गाड़ सँवारी । काठ अनेग दीन्ह तहँ डारी ॥
ताके बीच सो देह समावा । तेहि पर काठ बहुत कै लावा ॥ १६
तब बैसंदर मन संचरेऊ । हर्षवंत भै अस्तुति करेऊ ॥
पाँव परसि कै अग्या माँगी । कौन कर्म प्रभु हम बिनु खागी ॥
दिहु अग्या प्रभु पौन प्रसंगा । तब वैसंदर लाग सो अंगा ॥
जरै काठ बैसंदर बाढ़ा । सोब्रन कांति भै बालक ठाढ़ा ॥ २०
अति सुंदर देखत मन मोहा । प्रभु तन देखि भएउ अति छोहा ॥
तब प्रभु सँ बोलै कछु बैना । जो मैं कहा देखेहु प्रभु नैना ॥
है बंदर सुग्रीव सो बीरा । तिनहि गुं भेंटब पर्वत तीरा ॥
यह प्रभु जनि जानहु है बंदर । करब मइत्री कहै कवंधर ॥ २४
औ प्रभु तासौं अनुनै करिहौ । उन्ह सौं चित्त हिए सुध धरिहौ ॥
जो कछु होइहि करिही भै आगे । रिछ बंदर सौं सँग तेहि लागे ॥
उदयाचल चलाचल भौना । तहँ लेहि प्रभु सीता कों गौना ॥
जो चित आहि सोइ पै धरिहौ । जौ प्रभुबचन हमारो करिहौ ॥ २८
इहै बचन सुनि भौ मन माना । अग्या भै अब रहहु बेवाना ॥
अस अनंद होइ रघुपति कहा । अब इंद्रासन जाइ जो रहा ॥

पंचम सोपान (सुंदरकांड)

लंकादहन प्रसंग

२५।११→अ (राय)

छंद । कोपेउ हनू आकास तहँ मरुत चल अोनचास ।
परेउ झपि जिमि होइ ग्राह लगि रावनाग्रह दाह ।

व्याकुल भई रनिवास भजि चली अनिलतरास ।
जैसे रही जेहि भेस लटि वियुरि छूटे केस । ४
संभरत बनै न चीर खरभर नगर अति भीर ।
तजि माइ भागी पूत विभ्रमत रच्छसिनि जूथ ।
पति सौं पुकारहि वीर करि वोक मागहि नीर ।
समुझै न को किहि केर बहु धूमघटा अँधेर । ८
चहुँ ओर पवन ससात वहि चलत अटा अघात ।
आवर्ज रावन देखि नहि अग्नि प्रलय विसेषि ।
जो सेवतौ धरि देह सो किमि जरावै गेह ।
जो करै निर्मल पौरि सो चलै वल चहुँ ओरि । १२
सुनि कह मदोवरि रानि अब निज भई कुलहानि ।
नर कपि निसाचर भच्छ सो प्रलै कर लखि अच्छ ।
तुव नारि तन मतिहीन आसक्त भोग अधीन ।
अब मिटा मम संदेह कपि कीन्ह परम अनेह ॥ १६

सोरठा । कह लछिमन कह राम मारि कटक जीत्यौ समर ।
सिय आन्यौं जिहि काम करौ सँजुग कारज सबै ॥ १ ॥

छंद त्रोटक । निहसंक अति हनिमंत्त किए बहु निसाचर अंत ।
फेरा लगूर प्रचंड गयो कुंभकरन के खंड ।
लाई अगिनि चहुँ ओर निसिचर जरहिँ करि सोर ।
सक कोउ न काहु सम्हारि भागी रुदनु करि नारि । ४
सीचहि निसाचर बारि हाथनि उदधि परचारि ।
द्विज मनहु आहुति देत होइ अग्नि सन्मुख लेत ।
परिवार निसिचर जरत सुर सर्व जै जै करत ।
ज्वाला उठत आकूत फटि लूक परे जमदूत । ८
ग्रह मेघनाद के जाइ लागे चहूँ दिस धाइ ।
नैरुक्त की सुधि कीन्ह दूतनि जगावन लीन्ह ।
जागै नही वस स्राप ब्यापै नही तन ताप ।
सहि सक न निसिचर आँच भगि चलै नट ज्यौं नाच । १२
जा कह्यौ रावन पास जरैं बंधु मध्य अवास ।
करि थके बहु बल जोर खोलैं न लोचन कोर ।
बहु तेज सहिअ न जाइ अधजरे पहुँचे आइ ।
दससीस यह सुनि बात अकुलाइ उठा धुनि माथ ॥ १६

। सोरठा ।

मेघनाद बहु नाति सुत निसिचर बहु धनुषधर ।
दैत्यमंडली साथ चलि आयो नैरुत्त ग्रह ॥ २ ॥

छंद त्रोटक । झर्पे अनिल झर झारि धरि सक न कोउ पग धारि ।
फूटहि फटिक फटि खंभ अररहि गिरि धर थंभ ।
उड़ि लगहि निसिचरगात कोउ अग्नि नहि समुहात ।
भट आवै नहि मुख बात भयो क्रोध निसिचरगात । ४
बोल्यो बचन दससीस बाननि हनहु किन कीस ।
कहि पैठि मंदिर धाइ तहँ दीख अनुजहि जाइ ।
सोवत सुमेर ससान चलै स्वास घन घहरान ।
भरि भुज उठावन चाह नहि उठे बहु बल बाहु । ८
गहि पद कठोर निकारि पुनि गह्यौ बहु बल धारि ।
लै चले सुभट उठाइ देखत हनू मुसुकाइ ।
यह दैत्य महा अपार दिग्गज न इहि आकार ।
जोधा सहस दस साथ गहि भुजा कोउ पद माथ । १२
करकत कसमसत कंध लिये जात रावन बंध ।
रावन अनुज करि अग्र लै राख बाहेर नग्र ।
हनुमान फेरि लगूर उड़ि बैठ कोट कगूर ।
देखेउ नगर बहु भाँति कटकटत कसमसै दाँत ॥ १६
सोरठा । हाटक मनिमय हाट घाट बाट जगमगत सब ।
देखि हनू अस ठाट कहसि कहा यह करौं अब ॥ ३ ॥

। छंद त्रोटक ।

तहँ कूदि परेउ उड़ाइ चहुँ वोर अग्नि लगाइ ।
घर घर पवनसुत जाइ जारत लगूर फिराइ ।
होरी करी सब लंक गर्जंत हनू निहसंक ।
निसिचर करत पुकार तन सिथिल बच बिकरार । ४
त्रिय रावनहि दै गारि जनु होलिकाखिल बारि ।
चहुँ वोर लागी आगि नहि ठौर जहँ बचै भागि ।
फिरि लंक हनू बिलोक मन मह रहे करि सोक ।
करि श्रम त्रिकूटहि जारि अति द्युति कनक उजिआरि । ८
गए बंदि जेहि ग्रह देव करै रामपद की सेव ।
दीन्ही दोहाई राम तब हनू कीन्ह प्रनाम ।
पूछेउ तिन्हहि हनुमान तुम देवरूप सुजान ।
लंका जरी बहु भाति अति द्युति किही बिरताति । १२
यह कनकपुरी त्रिकूट लगे अग्नि गो मल छूटि ।
जो दिष्टि सनि की परे सो स्याम लंका करे ।
सिल खोलि कपि सनि गहा लंका धरौ जहँ रहा ।
कपि देखि लंका स्याम पुलकित कह्यौ जै राम ॥ १६

सोरठा । साधुबचन परवान अस्थिति उतपति प्रलय जिहि ।
बहु तन्न किय हनुमान सुनहु उमा प्रभुताइ प्रभु ॥ ४ ॥

षष्ठ सोपान (लंकाकांड)

१६।१०→३ **कपिदलवर्णन प्रसंग** (नाग)

दोहा । मंत्रिन्ह सहित लँकेस्वर चढ़ेउ धवरहर जाइ ।
सुक सारन कहँ राजसै देखहु दलसमुदाइ ॥ १ ॥
यह जो सिंहनाद किलिलाई । तरुग्रर सप्त समान उँचाई ॥
सहस कोटि सत संकु समाना । एहि के सँग बानर परिमाना ॥
रन अजीत औ अति निहसंका । नाद सुने काँपति है लंका ॥
लाग अकास को चूर लँगूरा । जनु महि पावस धनुष अँकूरा ॥ ४
बिसकर्मा के सुत अभिमानी । एन्ह सागर बाँधा अनुमानी ॥
बसहिं तांब्रगिरि कंदर माहीं । गोदावरी बिमल जल पाहीं ॥
अति बल आगे धावहिं बीरा । ए दुइ सेनापति नल नीला ॥
दोहा । पदुम अठारह कपिदल चल एन्ह के भुज छाँह । ८
अपने हाथ पुष्प लेइ रघुपति पूजी बाँह ॥ २ ॥
यह जे आवत अचल समाना । चौदह तार ऊँच परिमाना ॥
बास पुलिंदा के तट करई । अंबुद ऊपर एह संचरई ॥
तात कमलकेसरि असि देहा । जनु अकास संध्या कर मेहा ॥
मेदिनि हति लंगूर भवाई । लंका सौंह चितइ जनु खाई ॥ ४
तारासुवन बालि को जायो । अति जुझार रघुपतिमन भायो ॥
मन महँ जपै राम कर नाऊँ । दिन निसि एकर इहै सुभाऊ ॥
करै बज्र बासव कर भंगा । उदया जेही उग्रइ पतंगा ॥
सेनापति ए सब के आगे । रघुपति कृपा करत बड़भागे ॥ ८
दोहा । पाउ भूमि जौ चापै पन्नग होइ अकाज ।
पाँच पदुम बानर सँग यह अंगद जुवराज ॥ ३ ॥
एह जो सेत लसै तनु रेखा । जनु रूपे कर सृंग सुरेखा ॥
दीर्घ केस दारुन भुजदंडा । पाय चपल पलवंग प्रचंडा ॥
बास करै जलनिधि के तीरा । पान करै गोमति कर नीरा ॥
राजा सुग्रिव कर अधिकारी । सबल ब्यूह सय रचै सँवारी ॥ ४
बल औ बुद्धि न एहि समाना । एन्ह कर पुरुषारथ जग जाना ॥
जेहि दिन जन्मेउ बल अधिकाई । चढ़ेउ चूर गोमंत के धाई ॥
चंद्रहि धरै गगन उछरेऊ । सत्तरि जोजन तें फिरि परेऊ ॥

दोहा । बानर पचास कोटि सँग सबु दिन एकै साथ । ८
कालहु सै रन जूझै कुमुद आदि कपिनाथ ॥ ४ ॥
यह देखहु जो घटा सुहाई । जस भर भादौं कर बहुताई ॥
नील बरन सुबेल होइ गएऊ । अवनि अकास एकरस भएऊ ॥
आगे पाछे दस दिसि धावहिं । सिला सृंग तरु तोरत आवहिं ॥
सहस नाग बल संकु समाना । सप्त पदुम एन्ह कर परिमाना ॥ ४
ए रिछवत कासी के वासी । अजर अजीत अचल अविनासी ॥
तिछन दंत नख आयुध धारी । मारहिं गज धरि दंत उपारी ॥
एन्ह रिंछन कर जूथ अपारा । धूम्रकेतु ए पालनिहारा ॥
इन्ह कर जेष्ठ बंधु जमवंता । जेन्ह के बल कर आहि न अंता ॥ ८
तीनि लोक सै जूझै पारै । संकट परे सुबेल उपारै ॥
बास कै नरमदा के तीरा । वज्र समान अभेद सरीरा ॥
दोहा । राजा कर यह मंत्री रघुपति कर निज दास ।
कालहु सै रन जूझै नेकु न लेइ उसाँस ॥ ५ ॥ १२
अब देखहु यह जूथ अपारा । पीत बर्न होइ चलेउ पहारा ॥
बाल अरुन रबि किरिन सि फूटी । कुंकुम माट दिसा जनु छटी ॥
चौविस अर्बुद एन्ह कर जूहा । सहस बृंद सै कोटि समूहा ॥
सिला सृंग जे आगे परईं । पार्वन्ह मीजि किरिकिरा करईं ॥ ४
कंचनगिरि कँदरा के बासी । एन्ह कर जुथप नाथ अविनासी ॥
अति बल बासव कर हितकारी । सुग्रिव सखा समरभुअ भारी ॥
पान करहिं गंगा कर नीरा । पर्बतसृंग समान सरीरा ॥
छन छन सिंघनाद जो होई । यह गर्जत आवत है सोई ॥ ८
दोहा । जस तिहु गंड गलित गज बल कर आहि न अंत ।
यह कपिराज केसरी जे कर सुत हनुमंत ॥ ६ ॥
घंटा एक आवत है जूटी । जनु मधुसिंधु चलेउ मिति फूटी ॥
भूमि अकास अचल अब सोने । उत्तर तें जनु दंछिन गवने ॥
येहि महँ जूथप नाथ जे अहहीं । अति बल राजा के सँग रहहीं ॥
कपि के रूप अचल अविनासी । ए दुइ पारियत्र के बासी ॥ ४
अति सुंदर औ समर बिपंछा । महावीर ए गवौ गवंछा ॥
पीवहिं तुंगभद्रा कर नीरा । ए मर्दन मैंध मा दुइ बीरा ॥
हस्ती साठि सहस बल जाही । एहि महँ एक कहौं मैं ताही ॥
भेरी नाद सिंघ कर ठाना । विक्रम सारदूल अनुमाना ॥ ८
दोहा । देवन्ह महँ जस सुरपति तेजन्ह महँ जस भानु ।
पनस नाम एह बानर अतिबल निंज निधानु ॥ ७ ॥
यह जो कमलपत्र असि देहा । जनु कैलास सृंग कै रेहा ॥

लोचन मधु पिंगट अति लोने । कामचारि चितवै चहुँ कोने ॥
लंका सौंहि लँगूर भवाई । गर्जत आवै वज्र कि नाई ॥
सुरपति के सँग जुद्ध के गएऊ । तव तें कामरूप यह भएऊ ॥ ४
ऐसै वास वसै जे मिताई । तेहि तें यह देवन्ह कर भाई ॥
सहस कोटि कपि इन्ह के संगा । रात पीत सित [औ] वहु रंगा ॥
दोहा । गिरिबर ढापत आवै ऊड़त आवै रेनु ।
तरनि तेज यह रूधै तारातनय सुखेनु ॥ ८ ॥ ८
एहि कपि कर देखहु तनुफेरा । जनु सपंछ होइ चलेउ सुमेरा ॥
एक वार लंका एन्ह जारी । पुनि गर्जत आवै एहि पारी ॥
जेंहि दिन गर्भ अंजनै जाए । वाल अरुन लीलइ कहँ धाए ॥
तीन सहस जोजन उछरेऊ । उदयाचल ऊपर भै गएऊ ॥ ४
मुहँ की चौह जे वज्र समाना । मारुति नाम धरेउ हनुमाना ॥
कामरूप कोटिन्ह बल एही । काल क दंड कुलिस सम देही ॥
वेगवंत तस गरुड़ उड़ाही । बुद्धिवंत दूसर अस नाही ॥
विद्या पढ़इ दिवाकर पहि जाई । उलटि गति सँमुख रविहि उड़ाई ॥ ८
नाक नाग नर पुर गति कारी । महा अवधि तप तेज पुरारी ॥
वारिधि नाघेउ गोपद जैसे । एहि कपीस सै जूझव कैसे ॥
दोहा । तेज तरुन इव पावक पवन तें बेग अपार ।
कंधे लिए प्रभु श्रीपति श्रीरघुवंस कुमार ॥ ९ ॥ १२
अतसी वरन कुसुम तनु देखत । धन्य सो जन महिमा जो बिदत ॥
मत्त गयंद सुंड भुजदंडा । धनुष वान असि धरन प्रचंडा ॥
उर विसाल अति उन्नत कंधर । कंबु कंठ रेखा प्रसन्नतर ॥
मुखछवि की उपमा कवि जोहइ । ससि सरोष सम कहे न सोहइ ॥ ४
दसनपाँति की काँति कहै को । ललकत मन पटतरहि लहै को ॥
देखत अधरन की अरुनाई । बिंवाफल बंधूक लजाई ॥
सुकतुंडहिं नासिका लजावइ । थके सुकवि नहि पटतर पावइ ॥
सीस जटा के मुकुट वनाए । भाल बिसाल तिलक अति भाए ॥ ८
दंछिन दिसि लछिमनु रनवीरा । राम वाह औ प्रान समीरा ॥
दोहा । बाम भाग बिंभीषन सिर अभिषेका राज ।
बीजमंत्र सब जानै अब कस करै अकाज ॥ १० ॥
अब देखहु सैन्या यह आई । जस भर भादौं कर मेघवाई ॥
रात पीत औ स्वेत सिआहा । सिलासृंग तरवर कै छाहा ॥
कन्या एक ब्रह्म उपजाई । नयन भूरि औ रूप लोनाई ॥
वाल भाय दिनकर बल दीन्हा । रितु जाने बासव रति कीन्हा ॥ ४
जातक जबर बीर दुइ जाए । देव अंस बानर होइ आए ॥

किहकिंधा इन्ह कर अस्थाना। देब सरिस मधुवन उद्याना ॥
रिछमूक इन्ह कर विश्रामा। चारि मास निवसे जहँ रामा ॥
बालि जेठ बँधु राम रन मारा। एहि सिर सौंपेउ राज क भारा ॥
तारा तासु पाट कै रानी। जे कर सुत अंगद अभिमानी ॥
सवा लाख कपि कोटिकु नाना। सहस कोटि कर संकु समाना ॥
सहस संकु कर अरबुद एका। अरबुद सहस क वृंद बिसेका ॥
सहस बृंद जौ होइ अमाना। महापद्म ते कर परिमाना ॥
अैसे पदुम अठारह साजा। (एह) विग्रह बढ़ेउ राम के काजा ॥
बीर बसन अरु नयन बिसाला। कंबु कंठ है मोति क माला ॥
दोहा। हस्ती साठि सहस्र बल सदा धर्म कै सींव।
स्वेत छत्र सिर सोभित यह राजा सुग्रीव ॥ ११ ॥
एहि विधि सकल देखाएउ सुक सारन कपिजूह।
गनै न रावन कालबस महा गर्ब संबूह ॥

२४।१२]→प्र

विविध रावण कथा

(मया, नाग)

रावन एकु महा बल गर्वा। जीतन चलेउ सुरासुर सर्वा ॥
सागर उतरि पार सो गएऊ। नारिबृंद सो देखत भएऊ ॥
तेन्ह सन कहेसि पतिन्ह पह जाहू। कहेहु कि आएउ निसिचरनाहू ॥
तब मैं तेन्हहि जीति संग्रामा। लेइँ जैहौं तुम्ह कहँ निज धामा ॥
सुनत बचन एक जरठ रिसानी। धाइ चरन गहि गगन उड़ानी ॥
गई हरी धरि धरि झकझोरा। डारेसि सिंधु मध्य अति जोरा ॥
दोहा। गएउ अगाध अचेत होइ मरै न विप्रप्रसाद।
सावधान उठि चलेउ पुनि हिय हरषेउ न विषाद ॥ १ ॥*
एक रावन कै कहौं कहानी। जीतै चलेउ ससिहि अभिमानी ॥
गएउ निकट अति सित बहु ब्यापे। कंपित गात बिकल भय ब्यापे ॥

५८।६]→प्र

संजीवनी-मूरि प्रसंग

(अल)

कीन्ह तेज सम प्रलय मरुता। सैल समिप गो पवन को पूता ॥
जाइ निकट जौं देखु पहारा। अति दीरघ साम्रा बिस्तारा ॥
रस अरु वेद जोजन उँचाई। बत्तिस कोस हेठ चकराई ॥
तेहि ऊपर करु वास गँधर्वा। नाना औषधि रहै जो सर्वा ॥
थरु तहँ रहै सजीवनि मूरी। जा तें साल सक्ति होइ दूरी ॥
तीनि कोटि गँधरब बरिआरा। अरु दुइ तहाँ रहैं सरदारा ॥
देखि कीस जिय अचरज माना। बाँदर कहाँ आव एहि थाना ॥

---

* मिलाइए 'बालकांड' के 'सीताप्राकट्य' (१।३ से १।९) प्रक्षेप से।

रे कपि सत कहु आपन नाँऊँ । केहि कारन आएहु मम ठाँऊँ ॥ ८
तव हनिवंत वचन अस भाषा । सत्य देव हम हहिं म्रिगसाखा ॥
किहिंकिंधा है देस हमारा । राजा तहँ सुग्रीव भुआरा ॥
राम लछन आहहिं दुइ भाई । अग्या पिता लीन्ह वन आई ॥
दोहा । वालि मारि सुग्रीव कहँ राज दीन्ह रघुनाथ । १२
राजा सहित सबै कपि भए राम के साथ ॥ १ ॥
रावन पाप कीन्ह अति भारी । चोरी हरेसि राम कै नारी ॥
तेहि लगि जुध्य कीन्ह नरनाहा । लागी सक्ति लछन उर माहा ॥
सक्ति घाव लछुमन रन सोआ । औ रघुनाथ चहत तन खोआ ॥
बैद सुषेन कहा परकारा । जेहि तें जिऐ सकति कर मारा ॥ ४
सो विसलकरनी है मूरी । देहु तुरंत पंथ है दूरी ॥
सुरपति जहाँ करहिं विस्रामा । वानर केर कौनु दहुँ कामा ॥
द्रुद्रू कैसभन्ह जो भाषा । तव अति भए क्रोध म्रिगसाखा ॥
करि अति क्रोध गरजु हनुमाना । लीन्ह गँधर्व धनुक गुन वाना ॥ ८
अति प्रचंड करहीं रन जूझा । करि तीवान पवनसुत बूझा ॥
अव का करौं सवै अरुझाना । करत जूझि ऊगै जौं भाना ॥
तौ सव महिमा मिटिहै मोरी । होइ अकाज अति लागै जोरी ॥
दोहा । मारहिं वान खर्ग औ कपि उर रोम न टूट । १२
डारेउ कोपि लगूर कपि इंद्रतेज सम छूट ॥ २ ॥
सुमिरि रामपद भरि बौसाऊ । करि अटहास लगूर वढ़ाऊ ॥
लाग लगूर सवन्ह के साथा । परे मुछि धरनी धरि हाथा ॥
फेरि लगूर सबन्ह घै मारा । राखे जिअत दोउ सरदारा ॥
तिनहिं बाँधि कँदरा दिहु डारी । खोजहिं मुरी बीर बल भारी ॥ ४

७७।५→३ **सुलोचना सती कथा** (मया, नाग, मन)

प्रभुहि बिलोकि सीस पद नाए । उठे हरषि भाइहि उर लाए ॥
कृपादृष्टि प्रभु अनुजहि हेरे । बिगत घाय कीन्हा कर फेरे ॥
बानबिद्ध तनु देखिअ कैसा । कनकतून सरपूरित जैसा ॥
मुखप्रसन्नता देखि लखी सब । रिपुबध कहेउ बिभीषनहू तब ॥ ४
धरेउ सो सीस आनि प्रभु आगे । बानर भालु बिलोकन लागे ॥
प्रभु कौतुकी निरखि सो सीसा । राखन कहेउ कोसलाधीसा ॥
दोहा । प्रभु आयेसु सुनि कीसपति राखेउ जतनु कराइ ।
कटक सहित रघुबंसमनि सोभित दूनौ भाइ ॥ १ ॥ ८
कृपादृष्टि सब कटकु निहारे । भे श्रम रहित राम बैठारे ॥

सुनहु उमा एहि बिधि रिपु मारे । सुर मुनिगन सब भए सुखारे ॥
अब सो सुनहु बाहु तेहि केरी । खग ज्यों लंक गई सरप्रेरी ॥
मेघनाद अंगन महँ परी । बानबिद्ध सोनित सों भरी ॥ ४
देखति तहाँ सुलोचना बैसी । रति तें रुचिर रूप गुन सैसी ॥
नागसुता दसकंठपतोहू । बासवरिपु तिय छबिमय जोहू ॥
हेम सिंघासन सोहति बाला । सेवहिं बिद्याधर तिय माला ॥
पूजहिं बिबिध बिनय करि ताही । सुख प्रमोद को सकै सराही ॥ ८
तहँ पतिभुजा परी पबि भाँती । मनहु सकल सुखतरु की काँती ॥
दोहा । तहँ दस दासी देखि करि स्रोन स्रवत भुजदंड ।
भयेउ समर आचरजमय मनहुँ अखंडल खंड ॥ २ ॥
सुनि करि सकल सखीमुख बैना । तजि सिंघासन उठी सुनैना ॥
पेम सुभाय धकधकी धरकी । सूचक असुभ दहिन भुज फरकी ॥
होत महा हव रावन रामहि । बीरधुरीन मोर पिअ ता महिं ॥
सकल सुरासुर सकहिं न जूझी । बिधि बामता परै नहि सूझी ॥ ४
इतना कहत गई चलि आपू । पतिभुज लखि करि कोटि बिलापू ॥
कंकन मनिगन भूषन सोई । महाबिटप सम आन न होई ॥
देखति मनहि न आवत तेही । तासु प्रभाउ सुनेउ पहिलेही ॥
नीद नारि भोजन परिहरई । बारह बरष तासु कर मरई ॥ ८
दोहा । करि बिचार मन ठीक दै मैं पतिदैवत नारि ।
भुज कहि मेटहि दुचितई सुनि कर दीन्ह पसारि ॥ ३ ॥
लखि रुख तासु सखी उठि धाई । तुरतहि खोजि खरी लेइ आई ॥
दीन्ह हाथ पर मनि अगनाई । लिखत लखन कीरत्ति रुचिराई ॥
नीद नारि भोजन सत कोटिक । तजे तासु महिमा यह छोटिक ॥
अछय अब्यय अज अबिनासी । अतुल अमित घट घट के बासी ॥ ४
प्रगटहिं पालहिं पुनि जग हरहीं । त्रिगुन रूप त्रय मूरति करहीं ॥
जो कालहु कर काल भयंकर । बरनत सुजसु सारदा संकर ॥
लीलातनु सुर सेवक हेतू । जासु नाउँ भवसागर सेतू ॥
मुनिमन पुंडरीक जा के घर । बचन बिबेक बिचार बुद्धि पर ॥ ८
दोहा । कोटि कलप बरनत निगम अगम जासु गुनगाथ ।
तम सरीर जड़ जीह बिनु क्यों बरनै लिखि हाथ ॥ ४ ॥
मम सिर गयेउ दरस रघुराई । तव बचनन्हि लखि भुजहिं पठाई ॥
एहि बिधि लिखे सकल भुज बाता । परेउ भूमितल अति बिकलाता ॥
बाँचि सकल भुजलिखित जथारथ । लछिमन राम जानि परमारथ ॥
तीयसुभाय तदपि बहु भाँती । बिलपहिं मिलि सब सखिन्ह कि पाँती ॥ ४
गुनगन साहस सील नाह के । कहि रोवहिं बल बिजय बाहु के ॥

जेहि भुजबल सुरनाथ बिगोए । सो प्रभु समरभूमि मह सोए ॥
मनिगन भूषन , बसन बिसारहि । महि लोटहि करतल सिर मारहि ॥
मगन बिपति सरीरसुधि नाही । दारुन बिपति कहहि केहि पाही ॥ ८
छनक प्रबोध सखी कोउ करई । बहुरि सोक दावानल जरई ॥
छन छन उठति परति धरनीतल । पुनि पुनि सुनि सराहि पति के बल ॥
दोहा । तेन्ह मह सखी सयानि एक कहि समुझाई बैन ।
सोक छाड़ि पतिदेवता सुरति करिय मन चैन ॥ ५ ॥ १२
सुनि कह सहसानन तनु जाता । सत्य कहा तुम्ह सखी सुमाता ॥
बिधिनिरमित दुख मो कहँ लाहू । सुख परिपूरि भुग्रन सब काहू ॥
बिजय राम लछिमन कर आएउ । सुजस सकल मरकट कुल पाएउ ॥
कुलकलंक बड़ लहेउ बिभीषन । कुलकुठार अस सुनेउ न दीख न ॥ ४
छूटि बंदि अब सुरगन केरी । निज निज पुरनि दोहाई फेरी ॥
मुनि पुलस्ति कर भा कुलनासू । अब रबि ससि सुख करहु प्रकासू ॥
तेजवंत पावक परिहरि दुख । बहिहि समीर आजु अपने सुख ॥
सलिल गगनतल निर्मल आजू । सुबस बसिहि सुरनायकराजू ॥ ८
दोहा । जम कुबेरु दिसिपाल सब प्रमुदित सुर नर नाग ।
खाइ अघाइ बिहाइ सुख पाइ सुजग्यबिभाग ॥ ६ ॥
इतना कहि मंदिर महँ आई । देखत मनिगन धनबहुताई ॥
सुरपतिभवन न पटतर ताही । जहँ रिधि सिधि बिधि सहित कमाही ॥
देखत बिषय न मन अनुरागेउ । पतिपद नेह निपुन मति पागेउ ॥
दीन्हेउ मनिगन भूषन चीरा । धेनु धरनि गज हाटक हीरा ॥ ४
मनिमय सिबिका रची बनाई । भुज चढ़ाइ पहिराव बनाई ॥
आपुन चढ़त भई पुनि आई । सुरदुर्लभ सुखसदन बिहाई ॥
बीतराग तनु तजेउ बिषयगन । सहस भाँति पतिपद लागेउ मन ॥
सुक सारिका सुलोचन ज्याए । कनकपिंजरन्हि राखि पढ़ाए ॥ ८
ब्याकुल कहहिं कहाँ सूनैना । सुनि धीरजु परिहरें सुजनमना ॥
भए बिकल खग मृग एहि भाँती । अपर दसा कैसे कहि जाती ॥
प्रजा लोग सब तजि सँग लागे । प्रेम उमगि लोचन जल त्यागे ॥
दोहा । बाजन लगे निसान घन ढोल दुंदुभी भेरि । १२
पुरजन परिजन संग सब चले पालकी घेरि ॥ ७ ॥
देखि भीर दसकंधदुआरे । सजग भए सब बीर प्रचारे ॥
जानहिं कटक रिपुन्ह की आई । अस्त्र सस्त्र कर धरहु बनाई ॥
धनु चढ़ाइ तरकस कटि बाँधहिं । गहि असि चर्म समर बर काँधहिं ॥
तोमर परसु प्रचंड गदा गहि । रोषत चोखे सूल सक्ति लहि ॥ ४
मारु मारु धरु कहि कहि धावहिं । प्रगट दसाननबिजय सुनावहिं ॥

गरजि तरजि कहि गिरा गभीरा । समर भयंकर निसिचर बीरा ॥
निपटहि निकट पालकी आई । चीन्हि सकल भट रहे लजाई ॥[V]
दोहा । भई रजायसु बेगिही लेहु सो ताहि बोलाइ । ८
द्वारपाल दसकंध कहँ समय सुनाएन्हि जाइ ॥
तेहि अवसरहि सुलोचना गह्यो चरन सिरु नाइ ।
राखि भुजा घननाद की करुनावचन सुनाइ ॥ ८ ॥
तुम्हहि अछत असि हाल हमारी । सुख तजि भई सोक अधिकारी ॥
नभतल मग भुज मम गृह परी । संसय देखि दीन्ह कर खरी ॥
लिखी राम लछिमन महिमा एन्ह । क्रम सो सब बिधि कथा कही तिन्ह ॥
ठगि सी रही बाँचि गुनगाथा । जरौं संग जौ पावौं माथा ॥ ४
रन कबंध भुज मम गृह आई । सिर तहँ जहँ नरेस दोउ भाई ॥
करिअ सो जतन मिलै मोहि सीसा । तुम्ह सर्बग्य चराचर ईसा ॥
सुनत कुलिस सम गिरा बहू की । ज़ीवन आस दसानन मूकी ॥
तदपि धीर धरि करत प्रबोधा । कहु कहँ मोहि समान जग जोधा ॥ ८
दोहा । राम लखन सुग्रीव नल नील दुबिद हनुमंत ।
माथ बिभीषन रिषभ के आन उपारि तुरंत ॥ ९ ॥
अब तें रहेउ भरोसा भारी । कुंभकरन घननाद सुरारी ॥
हमहु आजु लगि कीन्ह न जूझी । इन्ह सब कै पुरुषारथ बूझी ॥
मुए तें नर बानर के मारे । बात सुनत बड़ि लाज हमारे ॥
गनती कवन बीर महँ एन्ह कै । असि दुरदसा कीन्ह कपि जेन्ह कै ॥ ४
छाँड़ु सोच कुलबधू पतोहू । जानहि तेन्ह समान जनि मोहू ॥
पुत्रि बिलंब करहि घरि चारी । देखहि मोरि भयंकर मारी ॥
आनि सीस सब सत्रुन्ह केरा । बिनु प्रयास लागिहै न बेरा ॥
भोगवहि जनु पुराकृत भोगा । न त कत निसिचर बनचर जोगा ॥ ८
दोहा । मेरु उखारि निहार जे धराधरहि कर बीच ।
ते भट खाए मसकसिसु कालकुटिलता नीच ॥ १० ॥
क्रोधाबेस प्रगट बल बोलइ । हृदय सोक तरु अचलु न डोलइ ॥
समाधान नहि मानति सोई । सुनि प्रताप परितोष न होई ॥
नर बानर पुरुषारथ देखत । बड़ पर प्रबल छोट करि लेखत ॥
कूदि सिंधु लंका कपि जारी । लघु करि मानत ताहि सुरारी ॥ ४
कुंभकरन अतिकाय महोदर । मम पति गरेउ ससैन सहोदर ॥
जे रिपु चहै दसानन जीती । देखिअ महामोह कइ रीती ॥
उतरु देउँ तौ पातक होई । का बिबाद अब सरबस खोई ॥

[V] देखि जोहारि नागपतिकन्या । सतीसिरोमनि त्रिभुअन धन्या ॥ (मन, नाग)

फिरेउँ राज तौ मोहि न काजू । बिनु पिअ सकल नरक कर साजू ॥ ८
दोहा । तुरतहि उठी सुलोचना गई मयसुता पास ।
पद गहि रोवति सकल कहि प्रगट सोक उपहास ॥ ११ ॥
आदिहि तें सव कथा वखानी । सुनि सुनि रोवहि रावनरानी ॥
कही सुपतिभुज लिखी वहोरी । राम लखन महिमा नहि थोरी ॥
कहेउ वहुरि दसकंधरक्रोधा । मुएहु बिडंबित कीन्ह सुजोधा ॥
सुनी सुपुत्रवधू की वानी । वोली दुखित मँदोदरि रानी ॥ ४
कहाँ सो मानव सत्य सयानी । सुनी जो नारदमुख की वानी ॥
पीछिलि वात भई सव साँची । अनुभव कीन्ह न एकौ वाँची ॥
देखि न होइ बृथा रिषिभाषित । अपने महामोह मन माखित ॥
आगिलि कथा समास समेता । सुनहि पुत्रि रिषि वरनेउ जेता ॥ ८
वीरभाव दसकंधर जूझिहि । प्रानहु गए नीति नहि बूझिहि ॥
सीय सोक संकट तें छूटिहि । बानर भालु राजघर लूटिहि ॥
सुरमनि भूषन वसन बिमाना । भोग करिहि बनचरकुल नाना ॥
दोहा । राज बिभीषन पाइहै अमर कलप निरबाहि । १२
भावीवस सुख दुख जगत उपदेसिअ कहु काहि ॥ १२ ॥
मुनिवरवचन कि मोहि प्रतीती । अनुभव सदा हारि अरु जीती ॥
तुहूँ पुत्री परिहरि अब सोका । पतिसँग तुरत साधि परलोका ॥
जाहि राम पह पतिसिर लागी । तजि सकोच किन आनहि मागी ॥
होइ लाजु नहि आजु क भूषन । समयहीन गुनगन गनि दूषन ॥ ४
एकनारि ब्रत रघुपति केरा । लखन सुजस तैं सुना घनेरा ॥
है पुनि ससुर बिभीषन तोरा । बालिसुअन बालक हइ मोरा ॥
जामवंत मंत्री सुग्रीवा । दुबिद मयंद महा बलसीवा ॥
जानिअ ब्रह्मचर्ज हनुमंता । सिवसरूप भयहर भगवंता ॥ ८
सदा नीतिरत राम नरेसा । तहाँ जात कहुँ कवन कलेसा ॥
दोहा । बिदित तोहि पतिभुज लिखित लछिमन राम प्रभाउ ।
महूँ सुरिषिभाषित कहेउँ अब बिलंब नहि लाउ ॥ १३ ॥
सुनत सासुमुख की हितबानी । जाउँ राम पह एहु मन आनी ॥
बार बार चरनन्ह सिरु नाई । चलत भै जहँ लछिमन रघुराई ॥
देखी कटक भालु कपि केरी । सिंधु सुबेल महीधर घेरी ॥
उमगेउ मनहु महोदधि दूसर । हरित पिंग कपि धूमिल धूसर ॥ ४
लूमलालिमा सकिअ न हेरी । मनहु लपट बड़वानल केरी ॥
गिरि तरु धर भुज सहज भयंकर । जहँ तहँ प्रगट होत जनु जलधर ॥
लछिमन सेस सुअंक सीस धरि । कटक जलधि सोवत राघव हरि ॥
अक्षयबट तहँ बढ़िहि बिभीषन । अस सुकृती श्रुति सुनेउ न दीख न ॥ ८

दोहा । देखत डरति सुलोचना धीरज धरति बहोरि ।
महाराज रघुबरहि को बिनय सुनाइहि मोरि ।। १४ ।।
बानर सकल उठे अस बोली । अरिपुर तें आवत यह डोली ।।
जानि परत रावन अब बूझा । भइ मति मेघनाद जब जूझा ।।
हठ तजि सीतहि दीन्ह पठाई । तजहु सोक अब मिटी लराई ।।
जेहि लगि प्रगट कीन्ह पुर आगी । बाँधेउ सेतु हेतु जेहि लागी ।।
सो सीता जो बिनु श्रम पाई । जानव बिधि अनुकूल अघाई ।।
बिजय राम सुग्रीवहि आएउ । सुजस बीर बानरकुल पाएउ ।।
बिरह राम लछिमन कर छूटेउ । बिनु कलेस लंका गढ़ टूटेउ ।।
जुग जुग कीरति रहिहि हमारी । कत रन कत हम लघु बनचारी ।।
दोहा । एहिबिधि चारु बिचारु करि दई ठीक मन माहि ।
भएउ काज रघुराज कर बात दूसरी नाहि ।। १५ ।।
पइठत कटक अतिहि सकुचाई । अनचिन्हार जिमि परघर जाई ।।
आगे जाइ देखि रघुबीरहि । छबिमय स्यामल गौर सरीरहि ।।
मरकत कनक छबिहि जनु निंदत । धन्य सो जन महिमा जो बिंदत ।।
मत्त गयंद सुंड भुजदंडा । धनुक बान असि धरन प्रचंडा ।।
उर बिसाल अति उन्नत कंधर । कंबु कंठ रेखा प्रसन्नतर ।।
मुखछबि की उपमा कबि जोहइ । ससि सरोज सम कहँ न सोहइ ।।
दसनपाँति की काँति कहै को । ललकत मन पटतरहि लहै को ।।
देखत अधरन की अरुनाई । बिंबाफल बंधूक लजाई ।।
सुकतुंडहि नासिका लजावइ । थके सुकबि नहि पटतर पावइ ।।
दोहा । छबिमय गुनमय तेजमय राम उदधि अवगाह ।
जहाँ न पावहिं पार सुर क्यों बरनिअ करि थाह ।। १६ ।।
भृकुटी बिकट कपोल सुहाए । सीस जटा के मुकुट बनाए ।।
भाल बिसाल तिलकजुत सोहइ । ध्यानसमै मुनिमानस मोहइ ।।
बलकलबसन तून कटि बाँधे । कर सर सुभग सरासन काँधे ।।
बीरासन आसन मृगछाला । नव पल्लव प्रसून कै माला ।।
चरन सरोज बरनि नहि जाहीं । जहँ मुनि मधुकर सदा लोभाहीं ।।
प्रगट भई जेहि थल तें गंगा । श्रुति पुरान कह कथाप्रसंगा ।।
नवहिं महेस बिरंचि जाहि कहँ । लोचनगोचर होहिं काहि कहँ ।।
जन आरति भंजन कहँ जो हित । भवसागर तारन कहँ बोहित ।।
दोहा । प्रनतपाल बिरिदावली जिन्ह चरनन्ह कै बानि ।
सोचहरनि संसयदरनि करनि सुमंगलखानि ।। १७ ।।
कर जोरें अंगद हनुमाना । द्विबिद मयंद कुमुद बलवाना ।।
जामवंत कपिपति बलसीला । रिषभ सुषेन सहित नल नीला ।।

महावीर बानर सब राजहिं । लखन विभीषन दुहुँ दिसि भ्राजहिं ॥
मितभाषी सर्वज्ञ सुसेवक । चितवहिं रुख रघुनंदन देव क ॥ ४
सभामध्य सोभित रघुनंदन । कीन्हेसि सफल निरखि निज ईखन ॥
कर दंडवत सीस धरि धरनी । सुचरितकथा विभीषन बरनी ॥
पुत्रवधू दसकंधर की है । पतिदैवत सुलोचना ती है ॥
मेघनाद की नारि सुसीला । यह गति तव बिरोध की लीला ॥ ८
दोहा । मुए ज्ञान पतिभुजहि भा लखि समुझाएसि मोहि ।
महाराज रघुवंसमनि जाचन आइउँ तोहि ॥ १८ ॥
करति प्रनति आदर नहि थोरे । करुनाबचन कहति कर जोरे ॥
परसत पद्ु पावन सोकनसावन प्रनत भई तपपुंज सही ।
देखत रघुनायक जन सुखदायक सन्मुख होइ कर जोरि रही ।
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहि आवै बचन कही । ४
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुग नैनन्हि जलधार बही ।
धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहँ चीन्हा रघुपतिकृपा भगति पाई ।
अति निर्मलि बानी अस्तुति ठानी ज्ञानगम्य जय रघुराई ।
मैं नारि अपावन प्रभु जगपावन रावनरिपु जनसुखदाई । ८
राजीव बिलोचन भवभय मोचन पाहि पाहि सरनहि आई ।
भुज मोहि उपदेसा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना ।
देखेउँ भरि लोचन हरि भवमोचन इहै लाभ संकर जाना ।
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न बर मागौं आना । १२
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ।
एहि भाँति सुनयना अस्तुति बयना बार बार हरिचरन परी ।
जो अति मन भावा सो बर पावा चरन नाइ महि सीस धरी ॥*
दोहा । अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित कृपाल । १६
तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल ॥ १९ ॥
तुम्ह अंतरजामी भगवाना । प्रभुता आदि अंत अवसाना ॥
करुनाबचन सुनत रघुबीरा । पुलक रोम भए सिथिलसरीरा ॥
देउँ जिआइ तोर पति आजू । भूजै लंक कलप सत राजू ॥
छाड़ि सोच अब मन हरषाही । तुरत भवन अपने फिरि जाही ॥ ४
सुनि अस सत्यसंध कै बानी । मन मह बनचरचमू डेरानी ॥
कहि न सकहिं कछु प्रभुरुख देखी । कहा करिहि करतार अलेखी ॥
सीयसोच कर फल नहि होइहि । जौ करि कृपा राम एहि जोइहि ॥
दोहा । राज बिभीषन लंक कर करिहहिं केहि बिधि भाइ । ८
समुझि बयर घननाद जब गही सरासन जाइ ॥ २० ॥

* मिलाइए १।२११/१-१६ से।

मुखरुख लखि करि कपि सब जाना । प्रनतपाल भगवंत समाना ॥
देखि वहुत रघुवर की छोहू । विनय करति दसकंधपतोहू ॥
तुम्ह उदार दीबे सब लायक । करुनामय देखिअ रघुनायक ॥
महुँ बिचार कीन्ह मन माही । जीवन तें यह मरन सराही ॥ ४
जिति भुजवल लोकप वस कीन्हेसि । चौदह भुअन भोग करि लीन्हेसि ॥
रन तीरथ जाचक विधि कीन्हेसि । प्रान सुधन लछिमनकर दीन्हेसि ॥
अव न उचित वित दै अपहारा । तेहि पर अधिक जो दरस तुम्हारा ॥
जानिअ महुँ मरव सत साधी । मिलव तुम्हहि जस मिलहि समाधी ॥ ८
दोहा । निर्मल गति अवसर भएउ सुनिअ सत्य रघुवीर ।
तुम्हहि मिले नहि होइ भव जथा सिंधुगत नीर ॥ २१ ॥
मन की जाननिहार सुदेवा । भवसागर तारिहि एहि खेवा ॥
लीन्हेउ रिषभ कपीस बोलाई । मेघनादसिर दीन्ह मगाई ॥
पाइ कृतारथ मानेसि आपू । मिटा बिरहसंभव परितापू ॥
अंचल पोछति मुख कै धूरी । कहि मम प्रान सजीवनि मूरी ॥ ४
देखि कहत संदेह सुग्रीवा । भुज महि लिखइ सो मोहि न सीवा ॥
हसै बदन तउ तिय यह साँची । नतरु निसिचरी माया नाची ॥
कत एह ग्यान मृतकभुज गावै । जो मुनिवर साधनहु न पावै ॥
प्रभु अस कहेउ हसिहि एह सीसा । किएँ कुतरक न उचित कपीसा ॥ ८
दोहा । सिर सों कहति सुलोचना हसहि बेगि मम नाथ ।
नतरु प्रतीति न मानिहैं लिखा जो तुम्हरे हाथ ॥ २२ ॥
छनकु बिलंबु कीन्ह नहि बोलइ । मृतक सो मुख मुद्रित नहि खोलइ ॥
पुनि पुनि कहत सो नागकुमारी । स्रमित भएहु रन महुँ करि मारी ॥
लगेउ लखनसर छोभ बढ़ावहि । प्रभु समीप कत मोहि लजावहि ॥
जौ मन बचन करम एह देही । पतिदेवता न आन सनेही ॥ ४
तौ प्रभु सभाबीच सिर बोलइ । रहि जाइहि जग सुजस अमोलइ ॥
जौ जनतिउँ तव एह गति साँईं । बोलि पठवतिउँ पितहि सहाई ॥
सुनि तियबचन हसेउ हठि सीसा । चउके चकृत भालु भट कीसा ॥
हसेउ ठठाइ बदन सब देखत । बिस्मय भएउ सकल जन पेखत ॥ ८
कुलिस सरिस पुनि सुनि नहि जाई । रहेउ सो वदन बहुरि अरगाई ॥
सकुच कपीसहि तोषेउ नारिहि । बड़ आचरज भएउ वनचारिहि ॥
पूछा कपिपति चरन [पद?] सिरु नाई । कारनं कवन हसा सिर साँईं ॥
दोहा । सीस नाइ प्रभुचरन महि वहु विधि बिनय सुनाइ । १२
आजु क दिन रन परिहरव मम हित कोसलराइ ॥ २३ ॥
वहुरि बिभीषन पदहि नमति सो । रघुबर गुन गन हृदय रमति सो ॥
तुम्ह पितु सम दसकंधर नाईं । एहि कुल की तोहि लगी बड़ाई ॥

मुनि पुलस्ति परिवार क दीपक । पाएहु फल रघुबीर समीप क ॥
महूँ मोहवस ,अनभल मानेउँ । ग्यान भए तव गुन पहिचानेउँ ॥ ४
जुग जुग करब अकंटक राजू । सहित सुकीरति सुकृतसमाजू ॥
सुमिरत तुम्हहि सुजन गति पाइहि । रघुपतिचरित संग करि गाइहि ॥
सुनत बिभीषन मन करुना भरि । प्रगट न करत समय अटकर करि ॥
काल करम गति कहि समुझाएउ । चली तुरंत गुर आयसु पाएउ ॥ ८
दोहा । बाहेर करि कपिकटक तें फिरे बिभीषन आपु ।
विसरेउ दसकंधरबयरु होत निरखि संतापु ॥ २४ ॥
सिर चढ़ाइ पालकी चढ़ी सो । रघुपति कृपा प्रभाव बढ़ी सो ॥
हृदय राखि मूरति घनस्यामहि । रसना रटति निरंतर नामहि ॥
सरित सिंधु संगम जहँ पावन । यह सुधि पाइ आइ गए रावन ॥
संग मँदोदरि सब रनिवासू । मनहु सोक रबि कीन्ह प्रकासू ॥ ४
पाइ रजाएसु सेवक धाए । चंदन अगर भार बहु लाए ॥
रचि दृढ़ दारुन्ह चिता बनाई । जनु सुरलोकनिसेनी लाई ॥
करि प्रनाम सब जन परितोषे । धीरज धरि सुमिरत चित चोखे ॥
सिर भुज धरि बैठी करि आसन । भइ जनु जोगसिद्धि कर बासन ॥ ८
दोहा । दीन्ह अगिनि ज्वाला बढ़ी लपट गगन लगि जाइ ।
लखी न काहू जात तेहि सुरपुर पहुँची जाइ ॥ २५ ॥

अहिरावण-कथा प्रसंग

७।१२→ उ (माया, नाग, मन)

देखि चरित पुनीत सुर गावहिं । बरषि सुमन दुंदुभी बजावहिं ॥
तासु क्रिया करि निसिचरनाहा । भएउ सोचबस अति उर माहा ॥
सचिव आइ सब लगे बुझावन । बादि बिषाद करिअ जिअ रावन ॥
सुत बित नारि बिबिध सुख कैसे । उपजहि घटा जाहि नभ जैसे ॥ ४
तड़ितदमक देखिअ घन माहीं । रहहिं न थिर ते बहुरि छपाहीं ॥
यह जिअ जानि सुनिय दसभाला । बचहि न कोउ जग आए काला ॥
अब प्रभु जतन बिचारहु सोई । रिपु कर नास जवनि बिधि होई ॥
बचन सुनत किछु तेहि सुख माना । काल बिबस जिमि तीरथ ग्याना ॥ ८
दोहा । लागेउ करन बिचार पुनि बहु प्रकार दससीस ।
समुझि हृदय अहिरावनहि आएउ जहँ मृढ़ ईस ॥ १ ॥
दंड चारि निसि तहँ तब बीती । संध्याबंदनु कीन्ह सप्रीती ॥
लागेउं करन ध्यान दससीसा । बहुरि हरषि जोरेउ कर बीसा ॥
सिवसेवक सो. अति अनुरागी । सुनु खगेस तेहि तें बड़भागी ॥
करषनमंत्र जपे दसभाला । अहिरावनचित डोलु पताला ॥ ४

लगेउ करन सो अति अनुमाना । किमि कारन दसमुख अकुलाना ॥
निसिचरनाह भुवन बस जा कें । जीतन कहूँ न बीरु कोउ ता कें ॥
मन क्रम बचन आन नहि सेवी । धरेउ ध्यान उर कामद देवी ॥
चलेउ बहुरि आऐउ सो तहँवा । सिवमंडप दसमुख रह जहँवा ॥ ८
निसिचरपति कहँ तेन्ह सिर नाए । कर गहि सुभ आसन बैठाए ॥
दोहा । अहिरावन तब रावनहि पूछत कुसल सप्रीति ।
प्रथम कहा सो सब कथा भगिनी कीन्हि अनीति ॥ २ ॥
बध खर दूषन जिमि सुधि पाई । मारिच कपटमृग कथा सुनाई ॥
कहेसि बहुरि सीता कर हरना । पवनतनयबल लंकादहना ॥
सेतु बाँधि जिमि प्रभु चलि आएउ । बालितनय संबाद सुनाएउ ॥
अनिप अकंपन अरु अतिकाया । परे समरमहि सुनु अहिराया ॥ ४
तात कुसल अब आइ सिरानी । कटकु निसाचर सकल खुटानी ॥
कुंभकरन घननादौ मारे । राम लखन ते मनुज बिचारे ॥
आनेउँ बोलि तोहिं निज पासा । करु सोइ जतनु होइ रिपुनासा ॥
सुनत बचन कह केतिक बाता । हरि लेइ जैहों दूनौ भ्राता ॥ ८
लै पताल देविहि बलि देऊँ । जस पूरन निसिचर महँ लेऊँ ॥
लेइ जब जाएउ जानेहु तबही । रबि सम तेज होइ निसि जबही ॥
दोहा । कहि अस बचन प्रबोध करि सीस नाइ बल भाषि ।
आएउ रघुपतिकटक तब निज देवी उर राखि ॥ ३ ॥ १२
सूझ न कर निसि अति अँधियारी । मर्कटभट जागहिं तहँ भारी ॥
कहहिं जयति जय जयति कृपाला । अति हिंस्र अगमन देखि अकाला ॥
तहँ मारुतसुत रची उपाई । निज लँगूर की कोट बनाई ॥
सो सोभा कछु बरनि न जाई । जनु भुजंगपति रहे तहँ आई ॥ ४
अरु जिमि देखिअ सैल समाना । दरवाजे मुख कृत हनुमाना ॥
देखि हृदय अहिरावन हारा । जिमि रबि उए न तमपैसारा ॥
एकौ जुगुति न मन ठहरानी । कपटबेष तेइँ कीन्ह भवानी ॥
बेष बिभीषन सब अनुहारी । पवनसुअन यह भा छलकारी ॥ ८
दोहा । सहज प्रतापी पवनसुत पुनि सुरपतिपति दास ।
तिन्हहिं निदरि चल्यो राम पहि मूढ़ हृदय नहि त्रास ॥ ४ ॥
मरमु न जानै कछु सुत पवना । रूप बिभीषन करि तब गवना ॥
ठाढ़ भएउ बोलेउ सुनु भ्राता । चलेउँ जहाँ कृपाल जनत्राता ॥
मैं रघुपति सन आएसु पाई । संध्या करन गएउँ सुनु भाई ॥
तेहि तें तुरित चलेउँ प्रभु पाहीं । भै बिलंब जनि राम रिसाहीं ॥ ४
सत्य बचन कपि निज मन जाना । सुनु खगेस भावी बलवाना ॥
कपटचतुर गति जानि न जाई । पर मनु हरै हरै धनु भाई ॥

आएसु पाइ गएउ सो तहँवा । फनिपति प्रभु दूनौ रह जहँवा ॥
कपिपति जामवंत नल नीला । बालितनय सुषेन बलसीला ॥ ८
दोहा । द्विविद मयंद कपीस गन जे गवाछ कपिबीर ।
सहित बिभीषन अपर भट सोए सब रनधीर ॥ ५ ॥
तहाँ मध्य रावन ससि राहू । एक सँग सोए फनिमनिनाहू ॥
दहिनी दिसि सोवत रघुनाथा । अनुज बाम दिसि तेहि पर हाथा ॥
प्रभुकर उर पर राजत कैसे । जातरूप पर फनिपति जैसे ॥
कपि सब भे जिमि सागर छीरा । तहँ सोए मानहु दोउ बीरा ॥ ४
सुभग बान धनु धरे बनाई । लखन सहित समीप रघुराई ॥
अहिरावन मन किये प्रनामा । देखि राम घन सुंदर स्यामा ॥
ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावहिं । मुनि महेस पूजा मन लावहिं ॥
करहिं बिबिध बिधि जोग बिरागी । रटहिं निरंतर दिनु निसि जागी ॥ ८
सो प्रभु तेइँ देखा भरि लोचन । कृपासिंधु सेवकभय मोचन ॥
बहुरि हृदय अस कीन्ह बिचारा । रावनकाज करौं अनुसारा ॥
कछु निज माया कृत गुनि आई । कवनी भाँति जाहिं दोउ भाई ॥
दोहा । मोहन तें मोहेसि सबहि स्तंभन तें मुख मूदि । १२
भएउ अदृस्य उचाट करि प्रभुहि चलेउ लइ कूदि ॥ ६ ॥
एहि बिधि प्रभुहि गएउ लेइ सोई । नभमारग प्रताप अति सोई ॥
सो प्रकास जब रावन देखा । बचन प्रमान तासु करि लेखा ॥
मन महँ हरष करै अति भारी । अहिरावन लै गा असुरारी ॥
लेइ निज लोक गएउ छन माही । सोर भएउ तब कपिदल माही ॥ ४
जागे बानर श्रीहत झारी । देखिअ जिमि सरिता बिनु बारी ॥
अरु देखिअ जिमि निसि बिनु इंदू । तेजहीन बासर जिमि चंदू ॥
रबि बिनु दिन जीवन बिनु देहा । जिमि दीपक बिनु देखिअ गेहा ॥
एकहि एक लगे तब पूछन । कहाँ गए त्रैलोक्यबिभूषन ॥ ८
दोहा । सोधा सबहिन कटकु सब नहि पाए दोउ बीर ।
भे ब्याकुल सब भालु कपि मनु जलचर बिनु नीर ॥ ७ ॥
सकल कहहिं एहि बिधि का कीन्हा । रघुपति बिना प्रान अब लीन्हा ॥
सोकग्रसित धरि सकहिं न धीरा । कहाँ राम लछिमन बलबीरा ॥
करुना करहिं कपीस अपारा । बनी बात बिधि काह बिगारा ॥
कटक निसाचर सकल सँहारी । रहा एक रिपु रावन भारी ॥ ४
सोउ न रहत प्रभुसर के लागे । भाइहु हम सम कोउ न अभागे ॥
कबहुँक जौ दससीसहि जीतहि । उत्तरु कवन देब हम सीतहि ॥
यह कहि बिकल मुरुछि महि परेऊ । लागे बज्र सैल जनु गिरेऊ ॥
बीभीषनगति कहि नहि जाई । फेकरत बछ जिमि धेनु लवाई ॥ ८

दोहा । सहित पवनसुत रिच्छपति दुख मन भा बहु भाँति ।
खगपति सूझ न कतहु कछु तम अपार तेंहि राति ।। ८ ।।

पवनतनय पुनि कह सब पाहीं । बिस्मय एक होइ मन माहीं ।।
कोउ एक आइ विभीषनभेषा । प्रभु के निकट जात मैं देखा ।।
पूछत बचन कहेसि अति नीका । कपट न जानौं निसिचर जी का ।।
वचन सुनत बोलेउ लंकेसा । अहिरावन लेइ गा अवधेसा ।। ४
पन्नगलोक वसत है सोई । मम तनु बेष अवर नहि होई ।।
महावली जानै बहु माया । निस्चय ओहि दससीस पठाया ।।
जेहि बल होइ उहाँ सो जाई । ताहि जीति आनै दोउ भाई ।।
कहै भालुपति सुनु हनुमाना । तव बल तात सकल जगु जाना ।। ८
बेगि सो जतनु विचारहु ताता । कृपासिंधु आनहु दोउ भ्राता ।।

दोहा । बिलखि कहेउ कपिपति बहुरि मारुतसुत सुनु तात ।
विनु रघुपति धिग जीवन पल जुग सैं सम जात ।। ९ ।।

त्रिषित मीन बिनु वारि दुखारी । तैसे हम सब बिना खरारी ।।
रबि बिनु पंकज होइ मलाना । तैसे हम सब भे हनुमाना ।।
सीतासुधि जिमि औषधि आनी । तेहि प्रकार आनहु गुनखानी ।।
यह सुनि बहुरि पवनसुत बोला । चित थिर करहु सैन नहि डोला ।। ४
भुअन चारि दस तीनिहुँ लोका । अनिहौं प्रभुहि तजहु तुम्ह सोका ।।
तब तें सजग रहेहु सब भाई । लरेहु काल जौ रन चढ़ि आई ।।
एह कहि गर्जि चलेउ हनुमाना । प्रलयसमय के मेघ समाना ।।
चले जात एक तरु तर गएऊ । गीधिनि गीध कहत अस भएऊ ।। ८
तासु बचन सुनि खग अस कहेऊ । अहिरावन राघव लइ गएऊ ।।
देइहि बलि देविहि सो जाई । बड़े भाग आमिष सो पाई ।।
कवनेहु जतन देव मैं आनी । अस कहि गीध नारि सनमानी ।।
जबहि पवनसुत यह सुधि पाई । चलेउ हृदय सुमिरत रघुराई ।। १२
तुरत पतालहि तेहि छन गएऊ । अहिरावनपुर प्रबिसत भएऊ ।।
द्वारपाल मकरध्वज कीसा । कपि सन डाटि कहत बहु रीसा ।।
निदरि चलेसि मोहि तोहि डरु नाहीं । जिमि दीपहि न पतंग डेराहीं ।।
मैं मारुतसुत कर हौं बालक । स्वामिभक्त भंजन मुख काल क ।। १६

सोरठा । सुनत वयन हनुमान विस्मयबस वोलत भए ।
अरे मूढ़ अग्यान मोरे सुत सपनेहु नहीं ।। १० ।।

कहत बचन सठ तोहि नहि खोरी । काम बिबस मति कब भै मोरी ।।
मम सुत होहि मूढ़ केहि काजा । एतना कहत तोहि नहि लाजा ।।
केहि प्रकार तैं मम सुत भएसी । निज उतपति मोहि सन किन कहसी ।।
सुनत कहइ मकरध्वज वचना । किहेहु तात जब लंकादहना ।। ४

तव आएहु चलि, जलधि समीपा । भयेउ प्रसेद तुम्हहि कपिदीपा ॥
छटे प्रसेद सागर महँ चलेऊ । सो झष पियेउ तहाँ मैं भयेऊ ॥
एहि प्रकार तव सुत मैं ताता । गोवौं नहि निज पिता न माता ॥
अहिरावनसेवा मैं करऊँ । प्रभु आएसु एहि द्वारे रहऊँ ॥
दोहा । सत्य वचन हनुमान कहि पूछा पुनि फिरि बात ।
आनेउ राम लखन कहँ काह करत हहि तात ॥ ११ ॥
कहहु तात तेहि अस्थल नाऊँ । जानत हौं मैं निज प्रभु ठाऊँ ॥
यह बृतांत जानत नहि ताता । अस मैं श्रवन सुनेउँ किछु बाता ॥
सीतापति अरु फनिमनिनाथा । सो लेइ आएउ निसिचरनाथा ॥
करत सो अहइ होम दहु आजू । देविहि बलि देइहि नृपराजू ॥
जो कछु निज श्रवनन्हि सुनि पाएउँ । तात तुम्हहि मैं सकल सुनाएउँ ॥
निज प्रभु काज लागि दुख सहहू । मोहि सन सत्य बचन किमि कहहू ॥
जान कहहु पै जान न देऊँ । प्रभु अग्या तजि अपजस लेऊँ ॥
सुनि अस पेलि चलेउ हनुमाना । मकरध्वज रिस करि बलवाना ॥
दोहा । कपि कहँ हनेसि मुष्टिका कपि पुनि मारा ताहि ।
एकहि एक हनै तव बल जुग सम घटि नाहि ॥ १२ ॥
एकुहि एक सकइ नहि पारी । मारुतसुत सुत दोउ भट भारी ॥
सुत कि पूछि सुत बाँधि भवानी । चले बहुरि बिलंब बड़ि जानी ॥
धरि लघु रूप होम गै देखा । जीव सजीव परै नहि लेखा ॥
देवी कर तहँ मंडप रहई । सोनितघट बहु को कहि सकई ॥
बिबिध भाँति मेवा पकवाना । धरे आनि देवी अस्थाना ॥
मालिनि तहाँ सुमन लेइ आई । सुमनमध्य प्रबिसे कपि जाई ॥
सुमनहु तें अति कृत हलुकाई । सो लेइ सुमन मंडपहि आई ॥
सुमन सकल देवी पर चढ़ेऊ । बिकट रूप तहँ तब कपि भएऊ ॥
दोहा । छुअत चरन देवी तब धरनी गई समाइ ।
वदनु पसारि ठाढ़ भए कपिछबि निरखि न जाइ ॥ १३ ॥
रूप देखि भा आनँद भारी । करहिं बिचार निसाचर झारी ॥
कहहिं कि देवि प्रगट भै आजू । बड़भागी भा निसिचरराजू ॥
करि प्रनाम पुनि पूजा करहीं । जो कछु आव सो कपिमुख भरहीं ॥
रही जो सकल बस्तुसमुदाई । बची न एकौ सब कपि खाई ॥
कपि खेलार भए अनुचर बारा । भा चह निसिचरकुल संघारा ॥
अहिरावन उर भा सुख कैसे । चढ़े काँध होइ बलिपसु जैसे ॥
सबन्हौ होम सिद्ध सब जाना । लछिमन राम तुरत तहँ आना ॥
ठाढ़ कीन्ह तहँ प्रभु कहुँ आनी । निसिचर गहे बहु आयुध पानी ॥
धरे गदा कोउ अरु धनु बाना । सक्ति सूल तरवारि कृपाना ॥

दोहा । तोमर मुद्गल परसु असि पास फाँसि अरु बेत ।
ओड़न खाँड धनुष सर देखत रहे न चेत ॥ १४ ॥
मायाबल ते सकल बिच्छन । अति बिकराल सोइ जनु लंछन ॥
एहि बिधि सकल बीर तहँ रहहीं । अहिरावन अग्या अनुसरहीं ॥
आएसु पाइ खड्ग तिन्ह काढ़े । मारन कहँ प्रभु पर भए ठाढ़े ॥
कोउ कह राजनीति अनुसरहू । तीनि दंड बिलंब अब करहू ॥ ४
सुनि अस मूढ़ लगे इमि कहई । सुमिरु जो कोउ तोरें कहुँ अहई ॥
नहि त काल पहुँचा अब आई । निसि सपना सम हहु दोउ भाई ॥
कहहिं मूढ़ प्रभु कहँ बहु बानी । कहत सकुच मोहि तहाँ भवानी ॥
दोहा । फनिपति चितवहिं राम कहँ राम निरख अहिराज । ८
प्रभु कर कौतुक कहिअ किमि सुनहु गरुड़ खगराज ॥ १५ ॥
पुनि छुहुँ बँधु मन कीन्ह बिचारा । जपइ सकल जगु नाम हमारा ॥
एहि अवसर कहुँ रह हनुमाना । निकट न आहि बीर बलवाना ॥
अस बिचारि केहि सुमिरन करहीं । सो परि होइ जो बिधि कछु करहीं ॥
हसि सबन्हौ तब मारन लएऊ । घन समान कपि गर्जत भएऊ ॥ ४
निसिचर सकल त्रसित भये भारी । कहहिं बचन निज हृदय बिचारी ॥
अहिरावन भल कीन्ह न काऊ । आनेउ इहाँ मनुज सुरराऊ ॥
तेहि तें देवि क्रुद्ध भइ आजू । अब भा सब कर परम अकाजू ॥
भए तेजहत निसिचर भारी । हुसरे कपि गर्जेउ अति भारी ॥ ८
दोहा । प्रगट रूप करि पवनसुत अट्टहास गंभीर ।
अति भयत्रसित निसाचर सुनहु उमा मतिधीर ॥ १६ ॥
डगमग भे सब इमि अभिमानी । मारुत बह जिमि सायरपानी ॥
तेहि छन कपि लीन्हे दोउ भाई । हतन लगे निसिचरसमुदाई ॥
खड्ग छुड़ाइ लीन्ह हनुमानू । कटन लगे उर सिर भुज जानू ॥
काहुहि नाक श्रवन बिनु कीन्हा । धरि पद डारि अनल महु दीन्हा ॥ ४
निज लंगूर कि बेढ़ बनावा । जेहि तें कोउ भाजै नहि पावा ॥
एहि बिधि सब निसिचर संघारे । अहिरावन तब बचन उचारे ॥
रे कपि ढीठ त्रास नहि तोही । अहिरावन मैं जान न मोही ॥
जंबुमालि कहँ जिमि तुम्ह मारा । अरु रावनसुत हतेउ बिचारा ॥ ८
दोहा । कालनेमि सम मैं नहि सुनहि बचन हनुमान ।
तीनि लोक मैं बिजयजस जानत सकल जहान ॥ १७ ॥
लेइ असि ताहि पवनसुत मारा । काटेउ सीस अनल महुँ डारा ॥
पूर्नाहुति करि तहँ सो सीसा । तब प्रभु कहँ लेइ चलेऊ कीसा ॥
मकरध्वज तब बिनती कीन्हा । बंधन छोरि राज तेहि दीन्हा ॥
इहाँ क राज करहु तुम्ह ताता । सेएहु मम प्रभु दूनौ भ्राता ॥ ४

अस कहि कपि निज दल महु आवा । हरषी कटक परम सुख पावा ॥
मृतकसरीर प्रान फिरि आवै । गइ मनि फनिक मनहु फिरि पावै ॥
बिछुरा मिलै बहुरि जिमि आई । इमि सब भए निरखे दोउ भाई ॥
मिले कपीस चरन धरि माथा । पुनि पद धरेउ निसाचरनाथा ॥ ८
दोहा । जामवान अंगद सहित मिले भालु अरु कीस ।
सनमाने प्रिय बचन कहि लखन कोसलाधीस ॥ १८ ॥
बहुरि सबन्हि भेटे हनुमाना । कहहिं तात तुम्ह राखे प्राना ॥
देवन्ह सुमनबृष्टि तब कीन्ही । प्रमुदित हृदय दुंदुभी दीन्ही ॥
अनुज सहित हरखे रघुबीरा । बोले बचन सुनु तनय समीरा ॥
तोहि समान नहि कोउ हितकारी । सुर मुनि सिद्ध जो कोउ तनुधारी ॥ ४
जस तुम्हार त्रिभुअन महँ भयेऊ । सुनि अस बचन चरन कपि परेऊ ॥
नाथ करहु तुम्ह मैं केहि लेखे । तरनिउ चलै अगम जलु पेखे ॥
तैसैं सब प्रताप तव नाथा । सुनि असि कपिहि मिले रघुनाथा ॥
कटक सहित हरखे दोउ भाई । तेहिं अवसर सुख कहि किमि जाई ॥ ८
उहाँ दसानन सब सुधि पाई । दूतन्ह कहा खबरि सब जाई ॥
अहिरावन क मरन सुनि काना । भएउ तेजहत अति अकुलाना ॥
बचन बान सम लागे ताही । संभ्रम रुहि परेउ महि माही ॥
मुख सुखाइ लोचन जलु बहईं । बचनु न आवै पुनि सिर धुनई ॥ १२
दोहा । मयतनया तब आइ करि बहु प्रकार समुझाव ।
मान न मूढ़ कालबस परम क्रोध कहँ पाव ॥ १९ ॥
रावन उर अवरै कछु बसेऊ । मेटि को सकइ जो बिधि निरमयेऊ ॥
प्रभुबिरोध करि चह कल्याना । मूढ़ मोहबस अति अग्याना ॥
कृपासिंधु सेवक भय हारी । तेहि बिरोधि सुख चहत सुरारी ॥

रामचरितमानस के भाषांतर

संस्कृत

अनुवादक—रामू द्विवेद। हस्तलेख। रचनाकाल संवत् १६६२ के पूर्व। प्राप्ति-स्थान—सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी; रायल एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता; इंडिया आफिस लाइब्रेरी, लंदन।

फारसी

अनु०—देवीदास कायस्थ। हस्तलेख, सन् १८०४। प्राप्ति०—ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन।

अनु०—मन्नालाल कायस्थ। हस्तलेख, सन् १८८४। प्राप्ति०—मुंशी शिवनाथप्रसाद हनुमानफाटक, वाराणसी।

अनु०—रामसरनसिंह। हस्तलेख, सन् १८८६। प्राप्ति०—मन्नूलाल पुस्तकालय, गया।

मुद्रित, सन् १९०२। कानपुर से प्रकाशित।

अनु०—हरलाल रुसवा। मुद्रित, सन् १८८५। लखनऊ से प्रकाशित।

उर्दू

हस्तलेख, सन् १८८५। प्राप्ति०—श्रीकैलाससिंह; ग्राम कथा, उन्नाव।

हस्तलेख। प्राप्ति०—यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, केंब्रिज, इँगलैंड।

अनु०—रामस्वरूप कौशल। मुद्रित, सन् १९२६। लाहौर से प्रकाशित।

अनु०—शंकरदयाल फरहत। मुद्रित, सन् १८६६–१८७७। नवलकिशोर प्रेस से प्रकाशित।

अनु०—जगन्नाथ कुश्तर। मुद्रित, सन् १८६०। कानपुर से तथा नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से प्रकाशित।

अँगरेजी

अनु०—एफ० एस० ग्राउस। मुद्रित। रामनारायणलाल, पुस्तकविक्रेता, इलाहबाद द्वारा प्रकाशित।

अनु०—ए० जी० आटकिंस। मुद्रित। दि हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस, दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

अनु०—डब्ल्यू० डगलस पी० हिल। मुद्रित। आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, लंदन से प्रकाशित।

अनु०—पॉल वाल्टर। हस्तलेख। प्राप्ति०—'कलेक्शन ऑव दि फॉरमर प्रूशियन स्टेट अकदमी, ओरियंटल डिपार्टमेंट, मारबर्क, जर्मनी (पश्चिमी जर्मनी के पुस्तकालय में)।

फ्रेंच

अनु०—चार्लोते वादेविले, यूनिवर्सिटी दे पेरिस। मुद्रित।

जर्मन

संग्रह—ग्रंथों में कुछ स्थलों का अनुवाद। मुद्रित। बर्लिन, १९२५।

संग्रह—ग्रंथों में कतिपय अंशों का अनुवाद। मुद्रित। बैसले, १९५४।

रूसी

अनु०—वाराग्निकोव। मुद्रित, सन् १९४८।

नेपाली

अनु०—कुलचंद्र गौतम। मुद्रित, सं० १९९६। ज्ञानमंडल यंत्रालय, वाराणसी से मुद्रित।

गुजराती

अनु०—गिरिजाशंकर मयाशंकर। मुद्रित, सं० २००९। सस्ता साहित्य मुद्रणालय, रायखड, अमदावाद से प्रकाशित।

मराठी

अनुवादक और प्रकाशक—रामचंद्र चिंतामण श्रीखंडे, मंगलवार पेठ, कोल्हापुर।

अनु०—श्रीयादवशंकर जामदार। मुद्रक और प्रकाशक—शंकर नरहर जोशी, चित्रशाला प्रेस, १०२६ सदाशिव पेठ, पूना २।

बँगला

अनु०—सतीशचंद्र दासगुप्त। प्रकाशक—श्रीहेमप्रभादेवी, खादी प्रतिष्ठान, १५ कालिज स्क्वायर, कलकत्ता।

अनु०—श्रीराधिकाप्रसाद वंद्योपाध्याय, भारतधर्म महामंडल, वाराणसी।

असमिया

अमुद्रित

तमिल

मुद्रित

तेलुगु

अनु०—श्रीनिवास शर्मा। प्रकाशक—वाविल्ल रामस्वामि शास्त्रुलु एंड संस, मद्रास।

कन्नड़

संपादक, मुद्रक, प्रकाशक—वेंकटेश तिरको कुलकरणि गल्लगनाक वनकनरस्र, अध्यापक, ट्रेनिंग कालिज, धारवाड़।

अनु०—श्रीदत्तात्रेय कृष्ण भारद्वाज। प्रकाशक—श्रीतुलसीरामायण कार्यालय, बेंगलूर सिटी।

केरली

अनु०—वेल्लिवकुब्लम् सी० एन० गोपाल कुरुप। प्रकाशक—मलयाल मनोरम कंपनी क्लिप्तम्।

अनु०—काउंगल् नीलकंठ पिल्ल अवरकल। प्रकाशक—के० जी० परमेश्वरन् पिल्ल, श्री रामविलास प्रेस, कोल्लम्।

मूल का शुद्धिपत्र

पृष्ठ	छंदसंख्या	अशुद्ध	शुद्ध
९	१६।१	नसावनि	नसावनि
२५	५३।८	केहि	केहि
३७	८७।३	बिसिष	बिसिख
६५	१५९।८	अँधियारा	अँधिआरा
८१	१९९।३	नूपर	नूपुर
९५	२३५।८	बिस्ब	बिस्व
१०२	२५४।४	नेवारे	नेवारे
११०	२७८।४	डेराहीँ	डेराहीँ
११२	२८२।३	गोसाईँ	गोसाईँ
११२	२८२।५	कहा	कहाँ
११२	२८२।५	कह	कहँ
११२	२८४।२	लराह	लरहिँ
११६	२९४।५	सुकृत	सुकृती
१२५	३१७।५	डेवढ़	डेवढ़
१३४	३३४।८	रचा	रची
१४०	३५०।९	पावाह	पावहिँ
१४६	४।५	जेहिँ	जेहिँ
१५०	१४।८	तब	तव
१६२	४६।९	स्रवाह	स्रवहिँ
१६३	५१।७	गोसाईँ	गोसाईँ
१६५	५५।९	राज	राजु
१६७	६१।५	अधिक	अधिकु
१६८	६४।९	बिन	बिनु
१७०	६८।१०	हिय	हियँ
१७१	७३।३	आये	आए
१७१	७३।३	पाये	पाए
१७३	७६।८	भयेउ	भएउ
१७६	८५।१	भयेउ	भएउ
१७६	८७।३	सुख	सुखु
१७६	८७।३	पायेउ	पाएउ
१८९	१२०।९	मीजहि	मीजहिँ
१९०	१२३।१	राम	रामु
१९०	१२३।३	देखि	देखि
१९०	१२४।२	सनमान	सनमानु
२०२	१५७।८	मनहु	मनहुँ
२०२	१५७।८	सबन्ह	सबन्हि
२०८	१७३।७	आग्या	अग्या
२१५	१९३।१०	राम	रामु
२२०	२०७।१	जीवन	जीवनु
२३२	२४०।३	सुपेम	सु पेमु
२३६	२४९।१०	हमाह	हमहिँ
२४०	२६०।६	बिन	बिनु
२४४	२७३।८	जिन्हाह	जिन्हहिँ
२५३	२९७।९	भलाई	भलाईँ
२५५	३०२।८	अधिकाई	अधिकाईँ
२६९	६।१६	रहाह	रहहिँ

पृष्ठ	छंदसंख्या	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	छंदसंख्या	अशुद्ध	शुद्ध
२९८	११।५	तव	तव	४०६	२१।२	करहि	करहिँ
३०७	पुष्पिका	श्रीमद्राम	श्रीराम	४०६	२१।२	चलाह	चलहिँ
३१३	६।६	सूने	सूनेँ	४२३	६३।१	अंकठ	अकुंठ
३१७	१८।६	रचनीचर	रजनीचर	४२९	७७।१०	देखावहि	देखावहिँ
३५३	४१।५	गनाह	गनहिँ	४३७	९५।६	कहाह	कहहिँ
४००	८।१०	पुनितिन्ह	पुनि तिन्ह	४३९	१००।४	दूषहि	दूषहिँ
४०६	२०।१०	चलाह	चलहिँ	४४९	११६।५	सानकूल	सानुकूल
४०६	२०।१०	पावांह	पावहिँ	४५३	१२१।३८	मराह	मरहिँ

सूचना—छपते समय ही अशुद्धियों को सुधारने का प्रयास किया गया है। इसलिए कुछ अशुद्धियाँ कहीं नहीं भी हो सकतीं। मात्राओं आदि के छूटने, टूटने-फूटने की अशुद्धियाँ कदाचित् अन्यत्र भी हो गई हों। पाठक उन्हें कृपया सुधार लें।